

HOLY BIBLE

Greek New Testament
(Scrivener 1894)





The Holy Bible: Greek New Testament (Scrivener 1894)

Author(s): Anonymous

Publisher: Grand Rapids, MI: Christian Classics Ethereal Library

Description: This Bible translation was converted automatically from data files made available by the Unbound Bible project. Book names, introductions, titles, paragraphs, and the like were not available, so standard English names have been used. Therefore this file would benefit from additional work by someone who has access to a print edition.

Contents

| | |
|---------------|----|
| Title Page | 1 |
| New Testament | 2 |
| Matthew | 3 |
| Matthew 1 | 4 |
| Matthew 2 | 6 |
| Matthew 3 | 8 |
| Matthew 4 | 9 |
| Matthew 5 | 11 |
| Matthew 6 | 14 |
| Matthew 7 | 16 |
| Matthew 8 | 18 |
| Matthew 9 | 20 |
| Matthew 10 | 22 |
| Matthew 11 | 24 |
| Matthew 12 | 26 |
| Matthew 13 | 29 |
| Matthew 14 | 32 |
| Matthew 15 | 34 |
| Matthew 16 | 36 |
| Matthew 17 | 38 |
| Matthew 18 | 40 |
| Matthew 19 | 42 |
| Matthew 20 | 44 |
| Matthew 21 | 46 |
| Matthew 22 | 49 |
| Matthew 23 | 51 |

| | |
|------------|-----|
| Matthew 24 | 53 |
| Matthew 25 | 56 |
| Matthew 26 | 59 |
| Matthew 27 | 63 |
| Matthew 28 | 66 |
| Mark | 67 |
| Mark 1 | 68 |
| Mark 2 | 71 |
| Mark 3 | 73 |
| Mark 4 | 75 |
| Mark 5 | 77 |
| Mark 6 | 79 |
| Mark 7 | 82 |
| Mark 8 | 84 |
| Mark 9 | 86 |
| Mark 10 | 89 |
| Mark 11 | 92 |
| Mark 12 | 94 |
| Mark 13 | 97 |
| Mark 14 | 99 |
| Mark 15 | 103 |
| Mark 16 | 105 |
| Luke | 106 |
| Luke 1 | 107 |
| Luke 2 | 111 |
| Luke 3 | 114 |
| Luke 4 | 116 |
| Luke 5 | 118 |
| Luke 6 | 120 |
| Luke 7 | 123 |
| Luke 8 | 126 |
| Luke 9 | 129 |

| | |
|---------|-----|
| Luke 10 | 133 |
| Luke 11 | 135 |
| Luke 12 | 138 |
| Luke 13 | 141 |
| Luke 14 | 143 |
| Luke 15 | 145 |
| Luke 16 | 147 |
| Luke 17 | 149 |
| Luke 18 | 151 |
| Luke 19 | 153 |
| Luke 20 | 156 |
| Luke 21 | 158 |
| Luke 22 | 160 |
| Luke 23 | 164 |
| Luke 24 | 167 |
| John | 170 |
| John 1 | 171 |
| John 2 | 174 |
| John 3 | 176 |
| John 4 | 178 |
| John 5 | 181 |
| John 6 | 184 |
| John 7 | 188 |
| John 8 | 191 |
| John 9 | 194 |
| John 10 | 196 |
| John 11 | 198 |
| John 12 | 201 |
| John 13 | 204 |
| John 14 | 206 |
| John 15 | 208 |
| John 16 | 210 |

| | |
|---------|-----|
| John 17 | 212 |
| John 18 | 214 |
| John 19 | 216 |
| John 20 | 219 |
| John 21 | 221 |
| Acts | 223 |
| Acts 1 | 224 |
| Acts 2 | 226 |
| Acts 3 | 229 |
| Acts 4 | 231 |
| Acts 5 | 233 |
| Acts 6 | 236 |
| Acts 7 | 237 |
| Acts 8 | 240 |
| Acts 9 | 242 |
| Acts 10 | 245 |
| Acts 11 | 248 |
| Acts 12 | 250 |
| Acts 13 | 252 |
| Acts 14 | 255 |
| Acts 15 | 257 |
| Acts 16 | 259 |
| Acts 17 | 261 |
| Acts 18 | 263 |
| Acts 19 | 265 |
| Acts 20 | 268 |
| Acts 21 | 270 |
| Acts 22 | 273 |
| Acts 23 | 275 |
| Acts 24 | 277 |
| Acts 25 | 279 |
| Acts 26 | 281 |

| | |
|------------------|-----|
| Acts 27 | 283 |
| Acts 28 | 286 |
| Romans | 288 |
| Romans 1 | 289 |
| Romans 2 | 291 |
| Romans 3 | 293 |
| Romans 4 | 295 |
| Romans 5 | 297 |
| Romans 6 | 299 |
| Romans 7 | 300 |
| Romans 8 | 302 |
| Romans 9 | 304 |
| Romans 10 | 306 |
| Romans 11 | 307 |
| Romans 12 | 309 |
| Romans 13 | 310 |
| Romans 14 | 311 |
| Romans 15 | 313 |
| Romans 16 | 315 |
| 1 Corinthians | 317 |
| 1 Corinthians 1 | 318 |
| 1 Corinthians 2 | 320 |
| 1 Corinthians 3 | 321 |
| 1 Corinthians 4 | 322 |
| 1 Corinthians 5 | 323 |
| 1 Corinthians 6 | 324 |
| 1 Corinthians 7 | 325 |
| 1 Corinthians 8 | 327 |
| 1 Corinthians 9 | 328 |
| 1 Corinthians 10 | 330 |
| 1 Corinthians 11 | 332 |
| 1 Corinthians 12 | 334 |

| | |
|------------------|-----|
| 1 Corinthians 13 | 336 |
| 1 Corinthians 14 | 337 |
| 1 Corinthians 15 | 339 |
| 1 Corinthians 16 | 342 |
| 2 Corinthians | 343 |
| 2 Corinthians 1 | 344 |
| 2 Corinthians 2 | 346 |
| 2 Corinthians 3 | 347 |
| 2 Corinthians 4 | 348 |
| 2 Corinthians 5 | 349 |
| 2 Corinthians 6 | 350 |
| 2 Corinthians 7 | 351 |
| 2 Corinthians 8 | 352 |
| 2 Corinthians 9 | 354 |
| 2 Corinthians 10 | 355 |
| 2 Corinthians 11 | 356 |
| 2 Corinthians 12 | 358 |
| 2 Corinthians 13 | 360 |
| Galatians | 361 |
| Galatians 1 | 362 |
| Galatians 2 | 364 |
| Galatians 3 | 366 |
| Galatians 4 | 368 |
| Galatians 5 | 370 |
| Galatians 6 | 371 |
| Ephesians | 372 |
| Ephesians 1 | 373 |
| Ephesians 2 | 375 |
| Ephesians 3 | 376 |
| Ephesians 4 | 377 |
| Ephesians 5 | 379 |
| Ephesians 6 | 381 |

| | |
|-------------------|-----|
| Philippians | 383 |
| Philippians 1 | 384 |
| Philippians 2 | 386 |
| Philippians 3 | 388 |
| Philippians 4 | 390 |
| Colossians | 391 |
| Colossians 1 | 392 |
| Colossians 2 | 394 |
| Colossians 3 | 396 |
| Colossians 4 | 398 |
| 1 Thessalonians | 399 |
| 1 Thessalonians 1 | 400 |
| 1 Thessalonians 2 | 401 |
| 1 Thessalonians 3 | 403 |
| 1 Thessalonians 4 | 404 |
| 1 Thessalonians 5 | 405 |
| 2 Thessalonians | 406 |
| 2 Thessalonians 1 | 407 |
| 2 Thessalonians 2 | 408 |
| 2 Thessalonians 3 | 409 |
| 1 Timothy | 410 |
| 1 Timothy 1 | 411 |
| 1 Timothy 2 | 412 |
| 1 Timothy 3 | 413 |
| 1 Timothy 4 | 414 |
| 1 Timothy 5 | 415 |
| 1 Timothy 6 | 417 |
| 2 Timothy | 419 |
| 2 Timothy 1 | 420 |
| 2 Timothy 2 | 421 |
| 2 Timothy 3 | 423 |
| 2 Timothy 4 | 424 |

| | |
|------------|-----|
| Titus | 425 |
| Titus 1 | 426 |
| Titus 2 | 427 |
| Titus 3 | 428 |
| Philemon | 429 |
| Philemon 1 | 430 |
| Hebrews | 431 |
| Hebrews 1 | 432 |
| Hebrews 2 | 433 |
| Hebrews 3 | 434 |
| Hebrews 4 | 435 |
| Hebrews 5 | 436 |
| Hebrews 6 | 437 |
| Hebrews 7 | 438 |
| Hebrews 8 | 440 |
| Hebrews 9 | 441 |
| Hebrews 10 | 443 |
| Hebrews 11 | 445 |
| Hebrews 12 | 447 |
| Hebrews 13 | 449 |
| James | 451 |
| James 1 | 452 |
| James 2 | 454 |
| James 3 | 456 |
| James 4 | 457 |
| James 5 | 458 |
| 1 Peter | 459 |
| 1 Peter 1 | 460 |
| 1 Peter 2 | 462 |
| 1 Peter 3 | 464 |
| 1 Peter 4 | 466 |
| 1 Peter 5 | 467 |

| | |
|---------------|-----|
| 2 Peter | 468 |
| 2 Peter 1 | 469 |
| 2 Peter 2 | 471 |
| 2 Peter 3 | 473 |
| 1 John | 474 |
| 1 John 1 | 475 |
| 1 John 2 | 476 |
| 1 John 3 | 478 |
| 1 John 4 | 480 |
| 1 John 5 | 482 |
| 2 John | 484 |
| 2 John 1 | 485 |
| 3 John | 486 |
| 3 John 1 | 487 |
| Jude | 488 |
| Jude 1 | 489 |
| Revelation | 491 |
| Revelation 1 | 492 |
| Revelation 2 | 494 |
| Revelation 3 | 496 |
| Revelation 4 | 498 |
| Revelation 5 | 499 |
| Revelation 6 | 500 |
| Revelation 7 | 501 |
| Revelation 8 | 502 |
| Revelation 9 | 503 |
| Revelation 10 | 505 |
| Revelation 11 | 506 |
| Revelation 12 | 508 |
| Revelation 13 | 510 |
| Revelation 14 | 512 |
| Revelation 15 | 514 |

| | |
|---------------|-----|
| Revelation 16 | 515 |
| Revelation 17 | 517 |
| Revelation 18 | 519 |
| Revelation 19 | 521 |
| Revelation 20 | 523 |
| Revelation 21 | 524 |
| Revelation 22 | 526 |



This PDF file is from the Christian Classics Ethereal Library, www.ccel.org. The mission of the CCEL is to make classic Christian books available to the world.

- This book is available in PDF, HTML, and other formats. See <http://www.ccel.org/ccel/bible/gntscr.html>.
- Discuss this book online at <http://www.ccel.org/node/3445>.

The CCEL makes CDs of classic Christian literature available around the world through the Web and through CDs. We have distributed thousands of such CDs free in developing countries. If you are in a developing country and would like to receive a free CD, please send a request by email to cd-request@ccel.org.

The Christian Classics Ethereal Library is a self supporting non-profit organization at Calvin College. If you wish to give of your time or money to support the CCEL, please visit <http://www.ccel.org/give>.

This PDF file is copyrighted by the Christian Classics Ethereal Library. It may be freely copied for non-commercial purposes as long as it is not modified. All other rights are reserved. Written permission is required for commercial use.

Holy Bible

Greek New Testament (Scrivener 1894)

New Testament

Matthew

Chapter 1

- ¹βιβλος γενεσεως ιησου χριστου υιου δαβιδ υιου αβρααμ
²αβρααμ εγεννησεν τον ισαακ ισαακ δε εγεννησεν τον ιακωβ ιακωβ δε εγεννησεν τον ιουδαν και τους αδελφους αυτου
³ιουδας δε εγεννησεν τον φαρες και τον ζαρα εκ της θαμαρ φαρες δε εγεννησεν τον εσρωμ εσρωμ δε εγεννησεν τον αραμ
⁴αραμ δε εγεννησεν τον αμιναδαβ αμιναδαβ δε εγεννησεν τον ναασσων ναασσων δε εγεννησεν τον σαλμων
⁵σαλμων δε εγεννησεν τον βοοζ εκ της ραχαβ βοοζ δε εγεννησεν τον ωβηδ εκ της ρουθ ωβηδ δε εγεννησεν τον ιεσσαι
⁶ιεσσαι δε εγεννησεν τον δαβιδ τον βασιλεα δαβιδ δε ο βασιλευς εγεννησεν τον σολομωντα εκ της του ουριου
⁷σολομων δε εγεννησεν τον ροβοαμ ροβοαμ δε εγεννησεν τον αβια αβια δε εγεννησεν τον ασα
⁸ασα δε εγεννησεν τον ιωσαφατ ιωσαφατ δε εγεννησεν τον ιωραμ ιωραμ δε εγεννησεν τον οζιαν
⁹οζιας δε εγεννησεν τον ιωαθαμ ιωαθαμ δε εγεννησεν τον αχαζ αχαζ δε εγεννησεν τον εζεκιαν
¹⁰εζεκιας δε εγεννησεν τον μανασση μανασσης δε εγεννησεν τον αμων αμων δε εγεννησεν τον ιωσιαν
¹¹ιωσιας δε εγεννησεν τον ιεχονιαν και τους αδελφους αυτου επι της μετοικεσιας βαβυλωνος
¹²μετα δε την μετοικεσιαν βαβυλωνος ιεχονιας εγεννησεν τον σαλαθιηλ σαλαθιηλ δε εγεννησεν τον ζοροβαβελ
¹³ζοροβαβελ δε εγεννησεν τον αβιουδ αβιουδ δε εγεννησεν τον ελιακειμ ελιακειμ δε εγεννησεν τον αζωρ
¹⁴αζωρ δε εγεννησεν τον σαδωκ σαδωκ δε εγεννησεν τον αχειμ αχειμ δε εγεννησεν τον ελιουδ
¹⁵ελιουδ δε εγεννησεν τον ελεαζαρ ελεαζαρ δε εγεννησεν τον ματθαν ματθαν δε εγεννησεν τον ιακωβ
¹⁶ιακωβ δε εγεννησεν τον ιωσηφ τον ανδρα μαριας εξ ης εγεννηθη ιησους ο λεγομενος χριστος
¹⁷πασαι ουν αι γενεαι απο αβρααμ εως δαβιδ γενεαι δεκατεσσαρες και απο δαβιδ εως της μετοικεσιας βαβυλωνος γενεαι δεκατεσσαρες και απο της μετοικεσιας βαβυλωνος εως του χριστου γενεαι δεκατεσσαρες
¹⁸του δε ιησου χριστου η γεννησις ουτως ην μνηστευθεισης γαρ της μητρος αυτου μαριας τω ιωσηφ πριν η συνελθειν αυτους ευρεθη εν γαστρι εχουσα εκ πνευματος αγιου

¹⁹ιωσηφ δε ο ανηρ αυτης δικαιος ων και μη θελων αυτην παραδειγματισαι εβουληθη λαθρα απολυσαι αυτην

²⁰ταυτα δε αυτου ενθυμηθεντος ιδου αγγελος κυριου κατ οναρ εφανη αυτω λεγων ιωσηφ υιος δαβιδ μη φοβηθης παραλαβειν μαριαμ την γυναικα σου το γαρ εν αυτη γεννηθεν εκ πνευματος εστιν αγιου

²¹τεξεται δε υιον και καλεσεις το ονομα αυτου ιησουν αυτος γαρ σωσει τον λαον αυτου απο των αμαρτιων αυτων

²²τουτο δε ολον γεγονεν ινα πληρωθη το ρηθεν υπο του κυριου δια του προφητου λεγοντος

²³ιδου η παρθενος εν γαστρι εξει και τεξεται υιον και καλεσουσιν το ονομα αυτου εμμανουηλ ο εστιν μεθερμηνευομενον μεθ ημων ο θεος

²⁴διεγερθεις δε ο ιωσηφ απο του υπνου εποιησεν ως προσεταξεν αυτω ο αγγελος κυριου και παρελαβεν την γυναικα αυτου

²⁵και ουκ εγινωσκεν αυτην εως ου ετεκεν τον υιον αυτης τον πρωτοτοκον και εκαλεσεν το ονομα αυτου ιησουν

Chapter 2

¹του δε ιησου γεννηθεντος εν βηθλεεμ της ιουδαιας εν ημεραις ηρωδου του βασιλεως ιδου μαγοι απο ανατολων παρεγενοντο εις ιεροσολυμα

²λεγοντες που εστιν ο τεχθεις βασιλευς των ιουδαιων ειδομεν γαρ αυτου τον αστερα εν τη ανατολη και ηλθομεν προσκυνησαι αυτω

³ακουσας δε ηρωδης ο βασιλευς εταραχθη και πασα ιεροσολυμα μετ αυτου

⁴και συναγαγων παντας τους αρχιερεις και γραμματεις του λαου επυνθανετο παρ αυτων που ο χριστος γενναιται

⁵οι δε ειπον αυτω εν βηθλεεμ της ιουδαιας ουτως γαρ γεγραπται δια του προφητου

⁶και συ βηθλεεμ γη ιουδα ουδαμως ελαχιστη ει εν τοις ηγεμοσιν ιουδα εκ σου γαρ εξελευσεται ηγουμενος οστις ποιμανει τον λαον μου τον ισραηλ

⁷τοτε ηρωδης λαθρα καλεσας τους μαγους ηκριβωσεν παρ αυτων τον χρονον του φαινομενου αστερος

⁸και πεμφας αυτους εις βηθλεεμ ειπεν πορευθεντες ακριβως εξετασατε περι του παιδιου επαν δε ευρητε απαγγειλατε μοι οπως καγω ελθων προσκυνησω αυτω

⁹οι δε ακουσαντες του βασιλεως επορευθησαν και ιδου ο αστηρ ον ειδον εν τη ανατολη προηγεν αυτους εως ελθων εστη επανω ου ην το παιδιον

¹⁰ιδοντες δε τον αστερα εχαρησαν χαραν μεγαλην σφοδρα

¹¹και ελθοντες εις την οικιαν ειδον το παιδιον μετα μαριας της μητρος αυτου και πεσοντες προσεκυνησαν αυτω και ανοιξαντες τους θησαυρους αυτων προσηνεγκαν αυτω δωρα χρυσον και λιβανον και σμυρναν

¹²και χρηματισθεντες κατ οναρ μη ανακαμψαι προς ηρωδην δι αλλης οδου ανεχωρησαν εις την χωραν αυτων

¹³αναχωρησαντων δε αυτων ιδου αγγελος κυριου φαινεται κατ οναρ τω ιωσηφ λεγων εγερθεις παραλαβε το παιδιον και την μητερα αυτου και φευγε εις αιγυπτον και ισθι εκει εως αν ειπω σοι μελλει γαρ ηρωδης ζητειν το παιδιον του απολεσαι αυτο

¹⁴ο δε εγερθεις παρελαβεν το παιδιον και την μητερα αυτου νυκτος και ανεχωρησεν εις αιγυπτον

¹⁵και ην εκει εως της τελευτης ηρωδου ινα πληρωθη το ρηθεν υπο του κυριου δια του προφητου λεγοντος εξ αιγυπτου εκαλεσα τον υιον μου

¹⁶τοτε ηρωδης ιδων οτι ενεπαιχθη υπο των μαγων εθυμωθη λιαν και αποστειλας ανειλεν παντας τους παιδας τους εν βηθλεεμ και εν πασιν τοις οριοις αυτης απο διετους και κατωτερω κατα τον χρονον ον ηκριβωσεν παρα των μαγων

¹⁷τοτε επληρωθη το ρηθεν υπο ιερεμιου του προφητου λεγοντος

¹⁸φωνη εν ραμα ηκουσθη θρηνος και κλαυθμος και οδυρμος πολυς ραχηλ κλαιουσα τα τεκνα αυτης και ουκ ηθελεν παρακληθηναι οτι ουκ εισιν

¹⁹τελευτησαντος δε του ηρωδου ιδου αγγελος κυριου κατ οναρ φαινεται τω ιωσηφ εν αιγυπτω

²⁰λεγων εγερθεις παραλαβε το παιδιον και την μητερα αυτου και πορευου εις γην ισραηλ
τεθνηκασιν γαρ οι ζητουντες την ψυχην του παιδιου

²¹ο δε εγερθεις παρελαβεν το παιδιον και την μητερα αυτου και ηλθεν εις γην ισραηλ

²²ακουσας δε οτι αρχελαος βασιλευει επι της ιουδαιας αντι ηρωδου του πατρος αυτου
εφοβηθη εκει απελθειν χρηματισθεις δε κατ οναρ ανεχωρησεν εις τα μερη της γαλιλαιας

²³και ελθων κατωκησεν εις πολιν λεγομενην ναζαρεθ οπως πληρωθη το ρηθεν δια των
προφητων οτι ναζωραιος κληθησεται

Chapter 3

- ¹εν δε ταις ημεραις εκειναις παραγινεται ιωαννης ο βαπτιστης κηρυσσων εν τη ερημω της ιουδαιας
- ²και λεγων μετανοειτε ηγγικεν γαρ η βασιλεια των ουρανων
- ³ουτος γαρ εστιν ο ρηθεις υπο ησαιου του προφητου λεγοντος φωνη βοωντος εν τη ερημω ετοιμασατε την οδον κυριου ευθειας ποιειτε τας τριβους αυτου
- ⁴αυτος δε ο ιωαννης ειχεν το ενδυμα αυτου απο τριχων καμηλου και ζωνην δερματινην περι την οσφυν αυτου η δε τροφη αυτου ην ακριδες και μελι αγριον
- ⁵τοτε εξεπορευετο προς αυτον ιεροσολυμα και πασα η ιουδαια και πασα η περιχωρος του ιορδανου
- ⁶και εβαπτιζοντο εν τω ιορδανη υπ αυτου εξομολογουμενοι τας αμαρτιας αυτων
- ⁷ιδων δε πολλους των φαρισαιων και σαδδουκαιων ερχομενους επι το βαπτισμα αυτου ειπεν αυτοις γεννηματα εχιδνων τις υπεδειξεν υμιν φυγειν απο της μελλουσης οργης
- ⁸ποιησατε ουν καρπους αξιους της μετανοιας
- ⁹και μη δοξητε λεγειν εν εαυτοις πατερα εχομεν τον αβρααμ λεγω γαρ υμιν οτι δυναται ο θεος εκ των λιθων τουτων εγειραι τεκνα τω αβρααμ
- ¹⁰ηδη δε και η αξινη προς την ριζαν των δενδρων κειται παν ουν δενδρον μη ποιουν καρπον καλον εκκοπτεται και εις πυρ βαλλεται
- ¹¹εγω μεν βαπτιζω υμας εν υδατι εις μετανοιαν ο δε οπισω μου ερχομενος ισχυροτερος μου εστιν ου ουκ ειμι ικανος τα υποδηματα βαστασαι αυτος υμας βαπτισει εν πνευματι αγιω και πυρι
- ¹²ου το πτυον εν τη χειρι αυτου και διακαθαριει την αλωνα αυτου και συναξει τον σιτον αυτου εις την αποθηκην το δε αχυρον κατακαυσει πυρι ασβεστω
- ¹³τοτε παραγινεται ο ιησους απο της γαλιλαιας επι τον ιορδανην προς τον ιωαννην του βαπτισθηναι υπ αυτου
- ¹⁴ο δε ιωαννης διεκωλυεν αυτον λεγων εγω χρειαν εχω υπο σου βαπτισθηναι και συ ερχη προς με
- ¹⁵αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν προς αυτον αφες αρτι ουτως γαρ πρεπον εστιν ημιν πληρωσαι πασαν δικαιοσυνην τοτε αφησιν αυτον
- ¹⁶και βαπτισθεις ο ιησους ανεβη ευθυς απο του υδατος και ιδου ανεωχθησαν αυτω οι ουρανοι και ειδεν το πνευμα του θεου καταβαινον ωσει περιστεραν και ερχομενον επ αυτον
- ¹⁷και ιδου φωνη εκ των ουρανων λεγουσα ουτος εστιν ο υιος μου ο αγαπητος εν ω ευδοκησα

Chapter 4

- ¹τότε ο ιησους ανηχθη εις την ερημον υπο του πνευματος πειρασθηναι υπο του διαβολου
- ²και νηστευσας ημερας τεσσαρακοντα και νυκτας τεσσαρακοντα υστερον επεινασεν
- ³και προσελθων αυτω ο πειραζων ειπεν ει υιος ει του θεου ειπε ινα οι λιθοι ουτοι αρτοι γενωνται
- ⁴ο δε αποκριθεις ειπεν γεγραπται ουκ επ αρτω μονω ζησεται ανθρωπος αλλ επι παντι ρηματι εκπορευομενω δια στοματος θεου
- ⁵τότε παραλαμβανει αυτον ο διαβολος εις την αγιαν πολιν και ιστησιν αυτον επι το πτερυγιον του ιερου
- ⁶και λεγει αυτω ει υιος ει του θεου βαλε σεαυτον κατω γεγραπται γαρ οτι τοις αγγελιοις αυτου εντελειται περι σου και επι χειρων αρουσιν σε μηποτε προσκοψης προς λιθον τον ποδα σου
- ⁷εφη αυτω ο ιησους παλιν γεγραπται ουκ εκπειρασεις κυριον τον θεον σου
- ⁸παλιν παραλαμβανει αυτον ο διαβολος εις ορος υψηλον λιαν και δεικνυσιν αυτω πασας τας βασιλειας του κοσμου και την δοξαν αυτων
- ⁹και λεγει αυτω ταυτα παντα σοι δωσω εαν πεσων προσκυνησης μοι
- ¹⁰τότε λεγει αυτω ο ιησους υπαγε σατανα γεγραπται γαρ κυριον τον θεον σου προσκυνησεις και αυτω μονω λατρευσεις
- ¹¹τότε αφησιν αυτον ο διαβολος και ιδου αγγελοι προσηλθον και διηκονουν αυτω
- ¹²ακουσας δε ο ιησους οτι ιωαννης παρεδοθη ανεχωρησεν εις την γαλιλαιαν
- ¹³και καταλιπων την ναζαρεθ ελθων κατωκησεν εις καπερναουμ την παραθαλασσιαν εν οριοις ζαβουλων και νεφθαλειμ
- ¹⁴ινα πληρωθη το ρηθεν δια ησαιου του προφητου λεγοντος
- ¹⁵γη ζαβουλων και γη νεφθαλειμ οδον θαλασσης περαν του ιορδανου γαλιλαια των εθνων
- ¹⁶ο λαος ο καθημενος εν σκοτει ειδε φως μεγα και τοις καθημενοις εν χωρα και σκια θανατου φως ανετειλεν αυτοις
- ¹⁷απο τοτε ηρξατο ο ιησους κηρυσσειν και λεγειν μετανοειτε ηγγικεν γαρ η βασιλεια των ουρανων
- ¹⁸περιπατων δε ο ιησους παρα την θαλασσαν της γαλιλαιας ειδεν δυο αδελφους σιμωνα τον λεγομενον πετρον και ανδρεαν τον αδελφον αυτου βαλλοντας αμφιβληστρον εις την θαλασσαν ησαν γαρ αλιεις
- ¹⁹και λεγει αυτοις δευτε οπισω μου και ποιησω υμας αλιεις ανθρωπων
- ²⁰οι δε ευθεως αφεντες τα δικτυα ηκολουθησαν αυτω
- ²¹και προβας εκειθεν ειδεν αλλους δυο αδελφους ιακωβον τον του ζεβεδαιου και ιωαννην τον αδελφον αυτου εν τω πλοιω μετα ζεβεδαιου του πατρος αυτων καταρτιζοντας τα δικτυα αυτων και εκαλεσεν αυτους
- ²²οι δε ευθεως αφεντες το πλοιον και τον πατερα αυτων ηκολουθησαν αυτω

²³ και περιηγεν ολην την γαλιλαιαν ο ιησους διδασκων εν ταις συναγωγαίς αυτων και κηρυσσων το ευαγγελιον της βασιλειας και θεραπειων πασαν νοσον και πασαν μαλακίαν εν τω λαω

²⁴ και απηλθεν η ακοη αυτου εις ολην την συριαν και προσηνεγκαν αυτω παντας τους κακως εχοντας ποικιλαις νοσοις και βασανοις συνεχομενους και δαιμονιζομενους και σεληνιαζομενους και παραλυτικους και εθεραπευσεν αυτους

²⁵ και ηκολουθησαν αυτω οχλοι πολλοι απο της γαλιλαιας και δεκαπολεως και ιεροσολυμων και ιουδαιας και περαν του ιορδανου

Chapter 5

¹ιδων δε τους οχλους ανεβη εις το ορος και καθισαντος αυτου προσηλθον αυτω οι μαθηται αυτου
²και ανοιξας το στομα αυτου εδιδασκεν αυτους λεγων
³μακαριοι οι πτωχοι τω πνευματι οτι αυτων εστιν η βασιλεια των ουρανων
⁴μακαριοι οι πενθουντες οτι αυτοι παρακληθησονται
⁵μακαριοι οι πραεις οτι αυτοι κληρονομησουσιν την γην
⁶μακαριοι οι πεινωντες και διψωντες την δικαιοσυνην οτι αυτοι χορτασθησονται
⁷μακαριοι οι ελεημονες οτι αυτοι ελεηθησονται
⁸μακαριοι οι καθαροι τη καρδια οτι αυτοι τον θεον οψονται
⁹μακαριοι οι ειρηνοποιοι οτι αυτοι υιοι θεου κληθησονται
¹⁰μακαριοι οι δεδιωγμενοι ενεκεν δικαιοσυνης οτι αυτων εστιν η βασιλεια των ουρανων
¹¹μακαριοι εστε οταν ονειδισωσιν υμας και διωξωσιν και ειπωσιν παν πονηρον ρημα καθ υμων ψευδομενοι ενεκεν εμου
¹²χαιρετε και αγαλλιασθε οτι ο μισθος υμων πολυς εν τοις ουρανοις ουτως γαρ εδιωξαν τους προφητας τους προ υμων
¹³υμεις εστε το αλας της γης εαν δε το αλας μωρανθη εν τινι αλισθησεται εις ουδεν ισχυει ετι ει μη βληθηναι εξω και καταπατεισθαι υπο των ανθρωπων
¹⁴υμεις εστε το φως του κοσμου ου δυναται πολις κρυβηναι επανω ορους κειμενη
¹⁵ουδε καιουσιν λυχνον και τιθεασιν αυτον υπο τον μοδιον αλλ επι την λυχνιαν και λαμπει πασιν τοις εν τη οικια
¹⁶ουτως λαμψατω το φως υμων εμπροσθεν των ανθρωπων οπως ιδωσιν υμων τα καλα εργα και δοξασωσιν τον πατερα υμων τον εν τοις ουρανοις
¹⁷μη νομισητε οτι ηλθον καταλυσαι τον νομον η τους προφητας ουκ ηλθον καταλυσαι αλλα πληρωσαι
¹⁸αμην γαρ λεγω υμιν εως αν παρελθη ο ουρανος και η γη ιωτα εν η μια κεραια ου μη παρελθη απο του νομου εως αν παντα γενηται
¹⁹ος εαν ουν λυση μιαν των εντολων τουτων των ελαχιστων και διδαξη ουτως τους ανθρωπους ελαχιστος κληθησεται εν τη βασιλεια των ουρανων ος δ αν ποιηση και διδαξη ουτος μεγας κληθησεται εν τη βασιλεια των ουρανων
²⁰λεγω γαρ υμιν οτι εαν μη περισσευση η δικαιοσυνη υμων πλειον των γραμματεων και φαρισαιων ου μη εισελθητε εις την βασιλειαν των ουρανων
²¹ηκουσατε οτι ερρεθη τοις αρχαιοις ου φονευσεις ος δ αν φονευση ενοχος εσται τη κρισει
²²εγω δε λεγω υμιν οτι πας ο οργιζομενος τω αδελφω αυτου εικη ενοχος εσται τη κρισει ος δ αν ειπη τω αδελφω αυτου ρακα ενοχος εσται τω συνεδριω ος δ αν ειπη μωρε ενοχος εσται εις την γεενναν του πυρος
²³εαν ουν προσφερης το δωρον σου επι το θυσιαστηριον κακει μνησθης οτι ο αδελφος σου εχει τι κατα σου

²⁴αφες εκει το δωρον σου εμπροσθεν του θυσιαστηριου και υπαγε πρωτον διαλλαγηθι τω αδελφω σου και τοτε ελθων προσφερε το δωρον σου

²⁵ισθι ευνων τω αντιδικω σου ταχυ εως οτου ει εν τη οδω μετ αυτου μηποτε σε παραδω ο αντιδικος τω κριτη και ο κριτης σε παραδω τω υπηρετη και εις φυλακην βληθηση

²⁶αμην λεγω σοι ου μη εξελθης εκειθεν εως αν αποδωσ τον εσχατον κοδραντην

²⁷ηκουσατε οτι ερρεθη τοις αρχαιοις ου μοιχευσεις

²⁸εγω δε λεγω υμιν οτι πας ο βλεπων γυναικα προς το επιθυμησαι αυτης ηδη εμοιχευσεν αυτην εν τη καρδια αυτου

²⁹ει δε ο οφθαλμος σου ο δεξιος σκανδαλιζει σε εξελε αυτον και βαλε απο σου συμφερει γαρ σοι ινα αποληται εν των μελων σου και μη ολον το σωμα σου βληθη εις γεενναν

³⁰και ει η δεξια σου χειρ σκανδαλιζει σε εκκοψον αυτην και βαλε απο σου συμφερει γαρ σοι ινα αποληται εν των μελων σου και μη ολον το σωμα σου βληθη εις γεενναν

³¹ερρεθη δε οτι ος αν απολυση την γυναικα αυτου δοτω αυτη αποστασιον

³²εγω δε λεγω υμιν οτι ος αν απολυση την γυναικα αυτου παρεκτος λογου πορνειας ποιει αυτην μοιχασθαι και ος εαν απολελυμενην γαμηση μοιχεται

³³παλιν ηκουσατε οτι ερρεθη τοις αρχαιοις ουκ επιορκησεις αποδωσεις δε τω κυριω τους ορκους σου

³⁴εγω δε λεγω υμιν μη ομοσαι ολως μητε εν τω ουρανω οτι θρονος εστιν του θεου

³⁵μητε εν τη γη οτι υποποδιον εστιν των ποδων αυτου μητε εις ιεροσολυμα οτι πολις εστιν του μεγαλου βασιλεως

³⁶μητε εν τη κεφαλη σου ομοσης οτι ου δυνασαι μιαν τριχα λευκην η μελαιναν ποιησαι

³⁷εστω δε ο λογος υμων ναι ναι ου ου το δε περισσον τουτων εκ του πονηρου εστιν

³⁸ηκουσατε οτι ερρεθη οφθαλμον αντι οφθαλμου και οδοντα αντι οδοντος

³⁹εγω δε λεγω υμιν μη αντιστηναι τω πονηρω αλλ οστις σε ραπισει επι την δεξιαν σου σιαγονα στρεψον αυτω και την αλλην

⁴⁰και τω θελοντι σοι κριθηναι και τον χιτωνα σου λαβειν αφες αυτω και το ιματιον

⁴¹και οστις σε αγγαρευσει μιλιον εν υπαγε μετ αυτου δυο

⁴²τω αιτουντι σε διδου και τον θελοντα απο σου δανεισασθαι μη αποστραφης

⁴³ηκουσατε οτι ερρεθη αγαπησεις τον πλησιον σου και μισησεις τον εχθρον σου

⁴⁴εγω δε λεγω υμιν αγαπατε τους εχθρους υμων ευλογειτε τους καταρωμενους υμας καλως ποιειτε τους μισουντας υμας και προσευχεσθε υπερ των επηρεαζοντων υμας και διωκοντων υμας

⁴⁵οπως γενησθε υιοι του πατρος υμων του εν ουρανοις οτι τον ηλιον αυτου ανατελλει επι πονηρους και αγαθους και βρεχει επι δικαιους και αδικους

⁴⁶εαν γαρ αγαπησητε τους αγαπωντας υμας τινα μισθον εχετε ουχι και οι τελωναι το αυτο ποιουσιν

⁴⁷ και εαν ασπασησθε τους αδελφους υμων μονον τι περισσον ποιειτε ουχι και οι τελωναι ουτως ποιουσιν

⁴⁸ εσεσθε ουν υμεις τελειοι ωσπερ ο πατηρ υμων ο εν τοις ουρανοις τελειος εστιν

Chapter 6

¹προσεχετε την ελεημοσυνην υμων μη ποιειν εμπροσθεν των ανθρωπων προς το θεαθηναι αυτοις ει δε μηγε μισθον ουκ εχετε παρα τω πατρι υμων τω εν τοις ουρανοις
²οταν ουν ποιης ελεημοσυνην μη σαλπισης εμπροσθεν σου ωσπερ οι υποκριται ποιουσιν εν ταις συναγωγαις και εν ταις ρυμαις οπως δοξασθωσιν υπο των ανθρωπων αμην λεγω υμιν απεχουσιν τον μισθον αυτων
³σου δε ποιουντος ελεημοσυνην μη γνωτω η αριστερα σου τι ποιει η δεξια σου
⁴οπως η σου η ελεημοσυνη εν τω κρυπτω και ο πατηρ σου ο βλεπων εν τω κρυπτω αυτος αποδωσει σοι εν τω φανερω
⁵και οταν προσευχη ουκ εση ωσπερ οι υποκριται οτι φιλουσιν εν ταις συναγωγαις και εν ταις γωνιαις των πλατειων εστωτες προσευχεσθαι οπως αν φανωσιν τοις ανθρωποις αμην λεγω υμιν οτι απεχουσιν τον μισθον αυτων
⁶συ δε οταν προσευχη εισελθε εις το ταμειον σου και κλεισας την θυραν σου προσευξαι τω πατρι σου τω εν τω κρυπτω και ο πατηρ σου ο βλεπων εν τω κρυπτω αποδωσει σοι εν τω φανερω
⁷προσευχομενοι δε μη βαττολογησητε ωσπερ οι εθνικοι δοκουσιν γαρ οτι εν τη πολυλογια αυτων εισακουσθησονται
⁸μη ουν ομοιωθητε αυτοις οιδεν γαρ ο πατηρ υμων ων χρειαν εχετε προ του υμας αιτησαι αυτον
⁹ουτως ουν προσευχεσθε υμεις πατερ ημων ο εν τοις ουρανοις αγιασθητω το ονομα σου
¹⁰ελθετω η βασιλεια σου γενηθητω το θελημα σου ως εν ουρανω και επι της γης
¹¹τον αρτον ημων τον επιουσιονδος ημιν σημερον
¹²και αφες ημιν τα οφειληματα ημων ως και ημεις αφιεμεν τοις οφειλεταις ημων
¹³και μη εισενεγκης ημας εις πειρασμον αλλα ρυσαι ημας απο του πονηρου οτι σου εστιν η βασιλεια και η δυναμις και η δοξα εις τους αιωνας αμην
¹⁴εαν γαρ αφητε τοις ανθρωποις τα παραπτωματα αυτων αφησει και υμιν ο πατηρ υμων ο ουρανιος
¹⁵εαν δε μη αφητε τοις ανθρωποις τα παραπτωματα αυτων ουδε ο πατηρ υμων αφησει τα παραπτωματα υμων
¹⁶οταν δε νηστευητε μη γινεσθε ωσπερ οι υποκριται σκυθρωποι αφανιζουσιν γαρ τα προσωπα αυτων οπως φανωσιν τοις ανθρωποις νηστευοντες αμην λεγω υμιν οτι απεχουσιν τον μισθον αυτων
¹⁷συ δε νηστευων αλειψαι σου την κεφαλην και το προσωπον σου νιψαι
¹⁸οπως μη φανης τοις ανθρωποις νηστευων αλλα τω πατρι σου τω εν τω κρυπτω και ο πατηρ σου ο βλεπων εν τω κρυπτω αποδωσει σοι εν τω φανερω
¹⁹μη θησαυριζετε υμιν θησαυρους επι της γης οπου σης και βρωσις αφανιζει και οπου κλεπται διορυσουσιν και κλεπτουσιν

- ²⁰θησαυριζετε δε υμιν θησαυρους εν ουρανω οπου ουτε σης ουτε βρωσις αφανιζει και οπου κλεπται ου διορυσσουσιν ουδε κλεπτουσιν
- ²¹οπου γαρ εστιν ο θησαυρος υμων εκει εσται και η καρδια υμων
- ²²ο λυχνος του σωματος εστιν ο οφθαλμος εαν ουν ο οφθαλμος σου απλους η ολον το σωμα σου φωτεινον εσται
- ²³εαν δε ο οφθαλμος σου πονηρος η ολον το σωμα σου σκοτεινον εσται ει ουν το φως το εν σοι σκοτος εστιν το σκοτος ποσον
- ²⁴ουδεις δυναται δυσι κυριοις δουλευειν η γαρ τον ενα μισησει και τον ετερον αγαπησει η ενος ανθεξεται και του ετερου καταφρονησει ου δυνασθε θεω δουλευειν και μαμμωνα
- ²⁵δια τουτο λεγω υμιν μη μεριμνατε τη ψυχη υμων τι φαγητε και τι πιητε μηδε τω σωματι υμων τι ενδυσηθε ουχι η ψυχη πλειον εστιν της τροφης και το σωμα του ενδυματος
- ²⁶εμβλεψατε εις τα πετεινα του ουρανου οτι ου σπειρουσιν ουδε θεριζουσιν ουδε συναγουσιν εις αποθηκας και ο πατηρ υμων ο ουρανιος τρεφει αυτα ουχ υμεις μαλλον διαφερετε αυτων
- ²⁷τις δε εξ υμων μεριμνων δυναται προσθειναι επι την ηλικιαν αυτου πηχυν ενα
- ²⁸και περι ενδυματος τι μεριμνατε καταμαθετε τα κρινα του αγρου πως αυξανει ου κοπια ουδε νηθει
- ²⁹λεγω δε υμιν οτι ουδε σολομων εν παση τη δοξη αυτου περιεβαλετο ως εν τουτων
- ³⁰ει δε τον χορτον του αγρου σημερον οντα και αυριον εις κλιβανον βαλλομενον ο θεος ουτως αμφιεννυσιν ου πολλω μαλλον υμας ολιγοπιστοι
- ³¹μη ουν μεριμνησητε λεγοντες τι φαγωμεν η τι πιωμεν η τι περιβαλωμεθα
- ³²παντα γαρ ταυτα τα εθνη επιζητει οιδεν γαρ ο πατηρ υμων ο ουρανιος οτι χρηζετε τουτων απαντων
- ³³ζητειτε δε πρωτον την βασιλειαν του θεου και την δικαιοσυνην αυτου και ταυτα παντα προστεθησεται υμιν
- ³⁴μη ουν μεριμνησητε εις την αυριον η γαρ αυριον μεριμνησει τα εαυτης αρκετον τη ημερα η κακια αυτης

Chapter 7

- ¹μη κρινετε ινα μη κριθητε
²εν ω γαρ κριματι κρινετε κριθησεσθε και εν ω μετρω μετρειτε αντιμετρηθησεται υμιν
³τι δε βλεπεις το καρφος το εν τω οφθαλμω του αδελφου σου την δε εν τω σω οφθαλμω δοκον ου κατανοεις
⁴η πως ερεις τω αδελφω σου αφες εκβαλω το καρφος απο του οφθαλμου σου και ιδου η δοκος εν τω οφθαλμω σου
⁵υποκριτα εκβαλε πρωτον την δοκον εκ του οφθαλμου σου και τοτε διαβλεψεις εκβαλειν το καρφος εκ του οφθαλμου του αδελφου σου
⁶μη δωτε το αγιον τοις κυσιν μηδε βαλητε τους μαργαριτας υμων εμπροσθεν των χοιρων μηποτε καταπατησωσιν αυτους εν τοις ποσιν αυτων και στραφεντες ρηξωσιν υμας
⁷αιτειτε και δοθησεται υμιν ζητειτε και ευρησετε κρουετε και ανοιγησεται υμιν
⁸πας γαρ ο αιτων λαμβανει και ο ζητων ευρισκει και τω κρουοντι ανοιγησεται
⁹η τις εστιν εξ υμων ανθρωπος ον εαν αιτηση ο υιος αυτου αρτον μη λιθον επιδωσει αυτω
¹⁰και εαν ιχθυον αιτηση μη οφιν επιδωσει αυτω
¹¹ει ουν υμεις πονηροι οντες οιδατε δοματα αγαθα διδοναι τοις τεκνοις υμων ποσω μαλλον ο πατηρ υμων ο εν τοις ουρανοις δωσει αγαθα τοις αιτουσιν αυτον
¹²παντα ουν οσα αν θελητε ινα ποιωσιν υμιν οι ανθρωποι ουτως και υμεις ποιειτε αυτοις ουτος γαρ εστιν ο νομος και οι προφηται
¹³εισελθετε δια της στενης πυλης οτι πλατεια η πυλη και ευρυχωρος η οδος η απαγουσα εις την απωλειαν και πολλοι εισιν οι εισερχομενοι δι αυτης
¹⁴οτι στενη η πυλη και τεθλιμμενη η οδος η απαγουσα εις την ζωην και ολιγοι εισιν οι ευρισκοντες αυτην
¹⁵προσεχετε δε απο των ψευδοπροφητων οιτινες ερχονται προς υμας εν ενδυμασιν προβατων εσωθεν δε εισιν λυκοι αρπαγες
¹⁶απο των καρπων αυτων επιγνωσεσθε αυτους μητι συλλεγουσιν απο ακανθων σταφυλην η απο τριβολων συκα
¹⁷ουτως παν δενδρον αγαθον καρπους καλους ποιει το δε σαπρον δενδρον καρπους πονηρους ποιει
¹⁸ου δυναται δενδρον αγαθον καρπους πονηρους ποιειν ουδε δενδρον σαπρον καρπους καλους ποιειν
¹⁹παν δενδρον μη ποιουν καρπον καλον εκκοπτεται και εις πυρ βαλλεται
²⁰αραγε απο των καρπων αυτων επιγνωσεσθε αυτους
²¹ου πας ο λεγων μοι κυριε κυριε εισελευσεται εις την βασιλειαν των ουρανων αλλ ο ποιων το θελημα του πατρος μου του εν ουρανοις
²²πολλοι ερουσιν μοι εν εκεινη τη ημερα κυριε κυριε ου τω σω ονοματι προεφητευσαμεν και τω σω ονοματι δαιμονια εξεβαλομεν και τω σω ονοματι δυναμεις πολλας εποιησαμεν

²³ και τότε ομολογησω αυτοις οτι ουδεποτε εγνων υμας αποχωρειτε απ εμου οι εργαζομενοι την ανομιαν

²⁴ πας ουν οστις ακουει μου τους λογους τουτους και ποιει αυτους ομοιωσω αυτον ανδρι φρονιμω οστις ωκοδομησεν την οικιαν αυτου επι την πετραν

²⁵ και κατεβη η βροχη και ηλθον οι ποταμοι και επνευσαν οι ανεμοι και προσεπεσον τη οικια εκεινη και ουκ επεσεν τεθεμελιωτο γαρ επι την πετραν

²⁶ και πας ο ακουων μου τους λογους τουτους και μη ποιων αυτους ομοιωθησεται ανδρι μωρω οστις ωκοδομησεν την οικιαν αυτου επι την αμμον

²⁷ και κατεβη η βροχη και ηλθον οι ποταμοι και επνευσαν οι ανεμοι και προσεκοψαν τη οικια εκεινη και επεσεν και ην η πτωσις αυτης μεγαλη

²⁸ και εγενετο οτε συνετελεσεν ο ιησους τους λογους τουτους εξεπλησσαντο οι οχλοι επι τη διδαχη αυτου

²⁹ ην γαρ διδασκων αυτους ως εξουσιαν εχων και ουχ ως οι γραμματεις

Chapter 8

- ¹καταβαντι δε αυτω απο του ορους ηκολουθησαν αυτω οχλοι πολλοι
²και ιδου λεπρος ελθων προσεकुνει αυτω λεγων κυριε εαν θελης δυνασαι με καθαρισαι
³και εκτεινας την χειρα ηψατο αυτου ο ιησους λεγων θελω καθαρισθητι και ευθεως
εκαθαρισθη αυτου η λεπρα
⁴και λεγει αυτω ο ιησους ορα μηδενι ειπης αλλ υπαγε σεαυτον δειξον τω ιερει και
προσενεγκε το δωρον ο προσεταξεν μωσης εις μαρτυριον αυτοις
⁵εισελθοντι δε τω ιησου εις καπερναουμ προσηλθεν αυτω εκατονταρχος παρακαλων αυτον
⁶και λεγων κυριε ο παις μου βεβληται εν τη οικια παραλυτικος δεινως βασανιζομενος
⁷και λεγει αυτω ο ιησους εγω ελθων θεραπευσω αυτον
⁸και αποκριθεις ο εκατονταρχος εφη κυριε ουκ ειμι ικανος ινα μου υπο την στεγην εισελθης
αλλα μονον ειπε λογον και ιαθησεται ο παις μου
⁹και γαρ εγω ανθρωπος ειμι υπο εξουσιαν εχων υπ εμαυτον στρατιωτας και λεγω τουτω
πορευθητι και πορευεται και αλλω ερχου και ερχεται και τω δουλω μου ποιησον τουτο
και ποιει
¹⁰ακουσας δε ο ιησους εθαυμασεν και ειπεν τοις ακολουθουσιν αμην λεγω υμιν ουδε εν
τω ισραηλ τοσαυτην πιστιν ευρον
¹¹λεγω δε υμιν οτι πολλοι απο ανατολων και δυσμων ηξουσιν και ανακλιθησονται μετα
αβρααμ και ισαακ και ιακωβ εν τη βασιλεια των ουρανων
¹²οι δε υιοι της βασιλειας εκβληθησονται εις το σκοτος το εξωτερου εκει εσται ο κλαυθμος
και ο βρυγμος των οδοντων
¹³και ειπεν ο ιησους τω εκατονταρχω υπαγε και ως επιστευσας γενηθητω σοι και ιαθη ο
παις αυτου εν τη ωρα εκεινη
¹⁴και ελθων ο ιησους εις την οικιαν πετρου ειδεν την πενθεραν αυτου βεβλημενην και
πυρεσσουσαν
¹⁵και ηψατο της χειρος αυτης και αφηκεν αυτην ο πυρετος και ηγερθη και διηκονει αυτοις
¹⁶οψιας δε γενομενης προσηνεγκαν αυτω δαιμονιζομενους πολλους και εξεβαλεν τα
πνευματα λογω και παντας τους κακως εχοντας εθεραπευσεν
¹⁷οπως πληρωθη το ρηθεν δια ησαιου του προφητου λεγοντος αυτος τας ασθeneιας ημων
ελαβεν και τας νοσους εβαστασεν
¹⁸ιδων δε ο ιησους πολλους οχλους περι αυτον εκελευσεν απελθειν εις το περαν
¹⁹και προσελθων εις γραμματευσ ειπεν αυτω διδασκαλε ακολουθησω σοι οπου εαν απερχη
²⁰και λεγει αυτω ο ιησους αι αλωπεκες φωλεους εχουσιν και τα πετεινα του ουρανου
κατασκηνωσεις ο δε υιος του ανθρωπου ουκ εχει που την κεφαλην κλινη
²¹ετερος δε των μαθητων αυτου ειπεν αυτω κυριε επιτρεψον μοι πρωτον απελθειν και
θαψαι τον πατερα μου
²²ο δε ιησους ειπεν αυτω ακολουθει μοι και αφες τους νεκρους θαψαι τους εαυτων νεκρους
²³και εμβαντι αυτω εις το πλοιον ηκολουθησαν αυτω οι μαθηται αυτου

- ²⁴ και ιδου σεισμος μεγας εγενετο εν τη θαλασση ωστε το πλοιον καλυπτεσθαι υπο των κυματων αυτος δε εκαθευδεν
- ²⁵ και προσελθοντες οι μαθηται αυτου ηγειραν αυτον λεγοντες κυριε σωσον ημας απολλυμεθα
- ²⁶ και λεγει αυτοις τι δειλοι εστε ολιγοπιστοι τοτε εγερθεις επετιμησεν τοις ανεμοις και τη θαλασση και εγενετο γαληνη μεγαλη
- ²⁷ οι δε ανθρωποι εθαυμασαν λεγοντες ποταπος εστιν ουτος οτι και οι ανεμοι και η θαλασσα υπακουουσιν αυτω
- ²⁸ και ελθοντι αυτω εις το περαν εις την χωραν των γεργησηνων υπηντησαν αυτω δυο δαιμονιζομενοι εκ των μνημειων εξερχομενοι χαλεποι λιαν ωστε μη ισχυειν τινα παρελθειν δια της οδου εκεινης
- ²⁹ και ιδου εκραξαν λεγοντες τι ημιν και σοι ιησου υιε του θεου ηλθες ωδε προ καιρου βασανισαι ημας
- ³⁰ ην δε μακραν απ αυτων αγελη χοιρων πολλων βοσκομενη
- ³¹ οι δε δαιμονες παρεκαλουν αυτον λεγοντες ει εκβαλλεις ημας επιτρεψον ημιν απελθειν εις την αγελην των χοιρων
- ³² και ειπεν αυτοις υπαγετε οι δε εξελθοντες απηλθον εις την αγελην των χοιρων και ιδου ωρμησεν πασα η αγελη των χοιρων κατα του κρημνου εις την θαλασσαν και απεθανον εν τοις υδασιν
- ³³ οι δε βοσκοντες εφυγον και απελθοντες εις την πολιν απηγειλαν παντα και τα των δαιμονιζομενων
- ³⁴ και ιδου πασα η πολις εξηλθεν εις συναντησιν τω ιησου και ιδοντες αυτον παρεκαλεσαν οπως μεταβη απο των οριων αυτων

Chapter 9

- ¹ και εμβας εις το πλοιον διεπερασεν και ηλθεν εις την ιδιαν πολιν
- ² και ιδου προσεφερον αυτω παραλυτικον επι κλινης βεβλημενον και ιδων ο ιησους την πιστιν αυτων ειπεν τω παραλυτικω θαρσει τεκνον αφεωνται σοι αι αμαρτια σου
- ³ και ιδου τινες των γραμματεων ειπον εν εαυτοις ουτος βλασφημει
- ⁴ και ιδων ο ιησους τας ενθυμησεις αυτων ειπεν ινα τι υμεις ενθυμεισθε πονηρα εν ταις καρδιαις υμων
- ⁵ τι γαρ εστιν ευκοπωτερον ειπειν αφεωνται σοι αι αμαρτια η ειπειν εγειραι και περιπατει
- ⁶ ινα δε ειδητε οτι εξουσιαν εχει ο υιος του ανθρωπου επι της γης αφιεναι αμαρτιας τοτε λεγει τω παραλυτικω εγερθεις αρον σου την κλινην και υπαγε εις τον οικον σου
- ⁷ και εγερθεις απηλθεν εις τον οικον αυτου
- ⁸ ιδοντες δε οι οχλοι εθαυμασαν και εδοξασαν τον θεον τον δοντα εξουσιαν τοιαυτην τοις ανθρωποις
- ⁹ και παραγων ο ιησους εκειθεν ειδεν ανθρωπον καθημενον επι το τελωνιον ματθαιον λεγομενον και λεγει αυτω ακολουθει μοι και αναστας ηκολουθησεν αυτω
- ¹⁰ και εγενετο αυτου ανακειμενου εν τη οικια και ιδου πολλοι τελωναι και αμαρτωλοι ελθοντες συνανεκειντο τω ιησου και τοις μαθηταις αυτου
- ¹¹ και ιδοντες οι φαρισαιοι ειπον τοις μαθηταις αυτου διατι μετα των τελωνων και αμαρτωλων εσθιει ο διδασκαλος υμων
- ¹² ο δε ιησους ακουσας ειπεν αυτοις ου χριαν εχουσιν οι ισχυοντες ιατρου αλλ οι κακως εχοντες
- ¹³ πορευθεντες δε μαθετε τι εστιν ελεον θελω και ου θυσιαν ου γαρ ηλθον καλεσαι δικαιους αλλ αμαρτωλους εις μετανοιαν
- ¹⁴ τοτε προσερχονται αυτω οι μαθηται ιωαννου λεγοντες διατι ημεις και οι φαρισαιοι νηστευομεν πολλα οι δε μαθηται σου ου νηστευουσιν
- ¹⁵ και ειπεν αυτοις ο ιησους μη δυνανται οι υιοι του νυμφωνος πενθειν εφ οσον μετ αυτων εστιν ο νυμφιος ελευσονται δε ημεραι οταν απαρθη απ αυτων ο νυμφιος και τοτε νηστευσουσιν
- ¹⁶ ουδεις δε επιβαλλει επιβλημα ρακους αγναφου επι ιματιω παλαιω αιρει γαρ το πληρωμα αυτου απο του ιματιου και χειρον σχισμα γινεται
- ¹⁷ ουδε βαλλουσιν οινον νεον εις ασκους παλαιους ει δε μηγε ρηγνυνται οι ασκοι και ο οινος εκχειται και οι ασκοι απολουνται αλλα βαλλουσιν οινον νεον εις ασκους καινους και αμφοτερα συντηρουνται
- ¹⁸ ταυτα αυτου λαλουντος αυτοις ιδου αρχων εις ελθων προσεकुνει αυτω λεγων οτι η θυγατηρ μου αρτι ετελευτησεν αλλα ελθων επιθες την χειρα σου επ αυτην και ζησεται
- ¹⁹ και εγερθεις ο ιησους ηκολουθησεν αυτω και οι μαθηται αυτου
- ²⁰ και ιδου γυνη αιμορροουσα δωδεκα ετη προσελθουσα οπισθεν ηψατο του κρασπεδου του ιματιου αυτου

- ²¹ελεγεν γαρ εν εαυτη εαν μονον αφωμαι του ιματιου αυτου σωθησομαι
²²ο δε ιησους επιστραφεις και ιδων αυτην ειπεν θαρσει θυγατερ η πιστις σου σεσωκεν σε και εσωθη η γυνη απο της ωρας εκεινης
²³και ελθων ο ιησους εις την οικιαν του αρχοντος και ιδων τους αυλητας και τον οχλον θορυβουμενον
²⁴λεγει αυτοις αναχωρειτε ου γαρ απεθανεν το κορασιον αλλα καθευδει και κατεγελων αυτου
²⁵οτε δε εξεβληθη ο οχλος εισελθων εκρατησεν της χειρος αυτης και ηγερθη το κορασιον
²⁶και εξηλθεν η φημη αυτη εις ολην την γην εκεινην
²⁷και παραγοντι εκειθεν τω ιησου ηκολουθησαν αυτω δυο τυφλοι κραζοντες και λεγοντες ελεησον ημας υιε δαβιδ
²⁸ελθοντι δε εις την οικιαν προσηλθον αυτω οι τυφλοι και λεγει αυτοις ο ιησους πιστευετε οτι δυναμαι τουτο ποιησαι λεγουσιν αυτω ναι κυριε
²⁹τοτε ηψατο των οφθαλμων αυτων λεγων κατα την πιστιν υμων γενηθητω υμιν
³⁰και ανεωχθησαν αυτων οι οφθαλμοι και ενεβριμησατο αυτοις ο ιησους λεγων ορατε μηδεις γινωσκετω
³¹οι δε εξελθοντες διεφημισαν αυτον εν ολη τη γη εκεινη
³²αυτων δε εξερχομενων ιδου προσηνεγκαν αυτω ανθρωπον κωφον δαιμονιζομενον
³³και εκβληθεντος του δαιμονιου ελαλησεν ο κωφος και εθαυμασαν οι οχλοι λεγοντες ουδεποτε εφανεη ουτως εν τω ισραηλ
³⁴οι δε φαρισαιοι ελεγον εν τω αρχοντι των δαιμονιων εκβαλλει τα δαιμονια
³⁵και περιηγεν ο ιησους τας πολεις πασας και τας κωμας διδασκων εν ταις συναγωγαις αυτων και κηρυσσων το ευαγγελιον της βασιλειας και θεραπειων πασαν νοσον και πασαν μαλακιαν εν τω λαω
³⁶ιδων δε τους οχλους εσπλαγχνισθη περι αυτων οτι ησαν εκκελυμενοι και ερριμμενοι ωσει προβατα μη εχοντα ποιμενα
³⁷τοτε λεγει τοις μαθηταις αυτου ο μεν θερισμος πολυς οι δε εργαται ολιγοι
³⁸δεηθητε ουν του κυριου του θερισμου οπως εκβαλη εργατας εις τον θερισμον αυτου

Chapter 10

¹ και προσκαλεσαμενος τους δωδεκα μαθητας αυτου εδωκεν αυτοις εξουσιαν πνευματων ακαθαρτων ωστε εκβαλλειν αυτα και θεραπευειν πασαν νοσον και πασαν μαλακιαν
² των δε δωδεκα αποστολων τα ονοματα εστιν ταυτα πρωτος σιμων ο λεγομενος πετρος και ανδρεας ο αδελφος αυτου ιακωβος ο του ζεβεδαιου και ιωαννης ο αδελφος αυτου
³ φιλιππος και βαρθολομαιος θωμας και ματθαιος ο τελωνης ιακωβος ο του αλφαιου και λεββαιος ο επικληθεις θαδδαιος
⁴ σιμων ο κανανιτης και ιουδας ισκαριωτης ο και παραδους αυτον
⁵ τουτους τους δωδεκα απεστειλεν ο ιησους παραγγειλας αυτοις λεγων εις οδον εθνων μη απελθητε και εις πολιν σαμαρειτων μη εισελθητε
⁶ πορευεσθε δε μαλλον προς τα προβατα τα απολωλοτα οικου ισραηλ
⁷ πορευομενοι δε κηρυσσετε λεγοντες οτι ηγγικεν η βασιλεια των ουρανων
⁸ ασθενουντας θεραπευετε λεπρους καθαριζετε νεκρους εγειρετε δαιμονια εκβαλλετε δωρεαν ελαβετε δωρεαν δοτε
⁹ μη κτησησθε χρυσον μηδε αργυρον μηδε χαλκον εις τας ζωνας υμων
¹⁰ μη πηραν εις οδον μηδε δυο χιτωνας μηδε υποδηματα μηδε ραβδους αξιος γαρ ο εργατης της τροφης αυτου εστιν
¹¹ εις ην δ αν πολιν η κωμην εισελθητε εξετασατε τις εν αυτη αξιος εστιν κακει μεινατε εως αν εξελθητε
¹² εισερχομενοι δε εις την οικιαν ασπασασθε αυτην
¹³ και εαν μεν η η οικια αξια ελθετω η ειρηνη υμων επ αυτην εαν δε μη η αξια η ειρηνη υμων προς υμας επιστραφητω
¹⁴ και ος εαν μη δεξηται υμας μηδε ακουση τους λογους υμων εξερχομενοι της οικιας η της πολεως εκεινης εκτιναξατε τον κονιορτον των ποδων υμων
¹⁵ αμην λεγω υμιν ανεκτοτερον εσται γη σοδομων και γομορρων εν ημερα κρισεως η τη πολει εκεινη
¹⁶ ιδου εγω αποστελλω υμας ως προβατα εν μεσω λυκων γινεσθε ουν φρονιμοι ως οι οφεις και ακεραιοι ως αι περιστεραι
¹⁷ προσεχετε δε απο των ανθρωπων παραδωσουσιν γαρ υμας εις συνεδρια και εν ταις συναγωγαις αυτων μαστιγωσουσιν υμας
¹⁸ και επι ηγεμονας δε και βασιλεις αχθησεσθε ενεκεν εμου εις μαρτυριον αυτοις και τοις εθνεσιν
¹⁹ οταν δε παραδιδωσιν υμας μη μεριμνησητε πως η τι λαλησητε δοθησεται γαρ υμιν εν εκεινη τη ωρα τι λαλησετε
²⁰ ου γαρ υμεις εστε οι λαλουντες αλλα το πνευμα του πατρος υμων το λαλουν εν υμιν
²¹ παραδωσει δε αδελφος αδελφον εις θανατον και πατηρ τεκνον και επαναστησονται τεκνα επι γονεις και θανατωσουσιν αυτους

- ²² και εσεσθε μισουμενοι υπο παντων δια το ονομα μου ο δε υπομεινας εις τελος ουτος σωθησεται
- ²³ οταν δε διωκωσιν υμας εν τη πολει ταυτη φευγετε εις την αλλην αμην γαρ λεγω υμιν ου μη τελεσητε τας πολεις του ισραηλ εως αν ελθη ο υιος του ανθρωπου
- ²⁴ ουκ εστιν μαθητης υπερ τον διδασκαλον ουδε δουλος υπερ τον κυριον αυτου
- ²⁵ αρκετον τω μαθητη ινα γενηται ως ο διδασκαλος αυτου και ο δουλος ως ο κυριος αυτου ει τον οικοδεσποτην βεελζεβουβ εκαλεσαν ποσω μαλλον τους οικιακους αυτου
- ²⁶ μη ουν φοβηθητε αυτους ουδεν γαρ εστιν κεκαλυμμενον ο ουκ αποκαλυφθησεται και κρυπτον ο ου γνωσθησεται
- ²⁷ ο λεγω υμιν εν τη σκοτια ειπατε εν τω φωτι και ο εις το ους ακουετε κηρυξατε επι των δωματων
- ²⁸ και μη φοβηθητε απο των αποκτεινοντων το σωμα την δε ψυχην μη δυναμενων αποκτειναι φοβηθητε δε μαλλον τον δυναμενον και ψυχην και σωμα απολεσαι εν γεεννη
- ²⁹ ουχι δυο στρουθια ασσαριου πωλειται και εν εξ αυτων ου πεσειται επι την γην ανευ του πατρος υμων
- ³⁰ υμων δε και αι τριχες της κεφαλης πασαι ηριθμημεναι εισιν
- ³¹ μη ουν φοβηθητε πολλων στρουθιων διαφερετε υμεις
- ³² πας ουν οστις ομολογησει εν εμοι εμπροσθεν των ανθρωπων ομολογησω καγω εν αυτω εμπροσθεν του πατρος μου του εν ουρανοις
- ³³ οστις δ αν αρνησηται με εμπροσθεν των ανθρωπων αρνησομαι αυτον καγω εμπροσθεν του πατρος μου του εν ουρανοις
- ³⁴ μη νομισητε οτι ηλθον βαλειν ειρηνην επι την γην ουκ ηλθον βαλειν ειρηνην αλλα μαχαιραν
- ³⁵ ηλθον γαρ διχασαι ανθρωπον κατα του πατρος αυτου και θυγατερα κατα της μητρος αυτης και νυμφην κατα της πενθερας αυτης
- ³⁶ και εχθροι του ανθρωπου οι οικιακοι αυτου
- ³⁷ ο φιλων πατερα η μητερα υπερ εμε ουκ εστιν μου αξιος και ο φιλων υιον η θυγατερα υπερ εμε ουκ εστιν μου αξιος
- ³⁸ και ος ου λαμβανει τον σταυρον αυτου και ακολουθει οπισω μου ουκ εστιν μου αξιος
- ³⁹ ο ευρων την ψυχην αυτου απολεσει αυτην και ο απολεσας την ψυχην αυτου ενεκεν εμου ευρησει αυτην
- ⁴⁰ ο δεχομενος υμας εμε δεχεται και ο εμε δεχομενος δεχεται τον αποστειλαντα με
- ⁴¹ ο δεχομενος προφητην εις ονομα προφητου μισθον προφητου ληψεται και ο δεχομενος δικαιον εις ονομα δικαιου μισθον δικαιου ληψεται
- ⁴² και ος εαν ποτιση ενα των μικρων τούτων ποτηριον ψυχρου μονον εις ονομα μαθητου αμην λεγω υμιν ου μη απολεση τον μισθον αυτου

Chapter 11

¹ και εγενετο οτε ετελεσεν ο ιησους διατασων τοις δωδεκα μαθηταις αυτου μετεβη εκειθεν του διδασκειν και κηρυσσειν εν ταις πολεσιν αυτων

² ο δε ιωαννης ακουσας εν τω δεσμωτηριω τα εργα του χριστου πεμψας δυο των μαθητων αυτου

³ ειπεν αυτω συ ει ο ερχομενος η ετερον προσδοκωμεν

⁴ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις πορευθεντες απαγγειλατε ιωαννη α ακουετε και βλεπετε

⁵ τυφλοι αναβλεπουσιν και χωλοι περιπατουσιν λεπροι καθαριζονται και κωφοι ακουουσιν νεκροι εγειρονται και πτωχοι ευαγγελιζονται

⁶ και μακαριος εστιν ος εαν μη σκανδαλισθη εν εμοι

⁷ τουτων δε πορευομενων ηρξατο ο ιησους λεγειν τοις οχλοις περι ιωαννου τι εξηλθετε εις την ερημον θεασασθαι καλαμον υπο ανεμου σαλευομενον

⁸ αλλα τι εξηλθετε ιδειν ανθρωπον εν μαλακοις ιματιοις ημφιεσμενον ιδου οι τα μαλακα φορουντες εν τοις οικοις των βασιλεων εισιν

⁹ αλλα τι εξηλθετε ιδειν προφητην ναι λεγω υμιν και περισσοτερον προφητου

¹⁰ ουτος γαρ εστιν περι ου γεγραπται ιδου εγω αποστελλω τον αγγελον μου προ προσωπου σου ος κατασκευασει την οδον σου εμπροσθεν σου

¹¹ αμην λεγω υμιν ουκ εγηγερται εν γεννητοις γυναικων μειζων ιωαννου του βαπτιστου ο δε μικροτερος εν τη βασιλεια των ουρανων μειζων αυτου εστιν

¹² απο δε των ημερων ιωαννου του βαπτιστου εως αρτι η βασιλεια των ουρανων βιαζεται και βιασται αρπαζουσιν αυτην

¹³ παντες γαρ οι προφηται και ο νομος εως ιωαννου προεφητευσαν

¹⁴ και ει θελετε δεξασθαι αυτος εστιν ηλιας ο μελλων ερχεσθαι

¹⁵ ο εχων ωτα ακουειν ακουετω

¹⁶ τινη δε ομοιωσω την γενεαν ταυτην ομοια εστιν παιδαριοις εν αγοραις καθημενοις και προσφωνουσιν τοις εταιροις αυτων

¹⁷ και λεγουσιν ηυλησαμεν υμιν και ουκ ωρησασθε εθρηνησαμεν υμιν και ουκ εκοψασθε

¹⁸ ηλθεν γαρ ιωαννης μητε εσθιων μητε πινων και λεγουσιν δαιμονιον εχει

¹⁹ ηλθεν ο υιος του ανθρωπου εσθιων και πινων και λεγουσιν ιδου ανθρωπος φαγος και οينوποτης τελωνων φιλος και αμαρτωλων και εδικαιωθη η σοφια απο των τεκνων αυτης

²⁰ τοτε ηρξατο ονειδιζειν τας πολεις εν αις εγενοντο αι πλεισται δυναμεις αυτου οτι ου μετενοησαν

²¹ ουαι σοι χοραζιν ουαι σοι βηθσαιδα οτι ει εν τυρω και σιδωνι εγενοντο αι δυναμεις αι γενομεναι εν υμιν παλαι αν εν σακκω και σποδω μετενοησαν

²² πλην λεγω υμιν τυρω και σιδωνι ανεκτοτερον εσται εν ημερα κρισεως η υμιν

²³ και συ καπερναουμ η εως του ουρανου υψωθεις εως αδου καταβιβασθηση οτι ει εν σοδομοις εγενοντο αι δυναμεις αι γενομεναι εν σοι εμειναν αν μεχρι της σημερον

- ²⁴πλην λεγω υμιν οτι γη σοδομων ανεκτοτερον εσται εν ημερα κρισεως η σοι
- ²⁵εν εκεινω τω καιρω αποκριθεις ο ιησους ειπεν εξομολογουμαι σοι πατερ κυριε του ουρανου και της γης οτι απεκρυψας ταυτα απο σοφων και συνετων και απεκαλυψας αυτα νηπιοις
- ²⁶ναι ο πατηρ οτι ουτως εγενετο ευδοκια εμπροσθεν σου
- ²⁷παντα μοι παρεδοθη υπο του πατρος μου και ουδεις επιγινωσκει τον υιον ει μη ο πατηρ ουδε τον πατερα τις επιγινωσκει ει μη ο υιος και ω εαν βουληται ο υιος αποκαλυψαι
- ²⁸δευτε προς με παντες οι κοπιωντες και πεφορτισμενοι καγω αναπαυσω υμας
- ²⁹αρατε τον ζυγον μου εφ υμας και μαθετε απ εμου οτι πραος ειμι και ταπεινος τη καρδια και ευρησετε αναπαυσιν ταις ψυχαις υμων
- ³⁰ο γαρ ζυγος μου χρηστος και το φορτιον μου ελαφρον εστιν

Chapter 12

¹εν εκεινω τω καιρω επορευθη ο ιησους τοις σαββασιν δια των σποριμων οι δε μαθηται αυτου επεινασαν και ηρξαντο τιλλειν σταχυας και εσθιειν
²οι δε φαρισαιοι ιδοντες ειπον αυτω ιδου οι μαθηται σου ποιουσιν ο ουκ εξεστιν ποιειν εν σαββατω
³ο δε ειπεν αυτοις ουκ ανεγνωτε τι εποιησεν δαβιδ οτε επεινασεν αυτος και οι μετ αυτου
⁴πως εισηλθεν εις τον οικον του θεου και τους αρτους της προθεσεως εφαγεν ους ουκ εξον ην αυτω φαγειν ουδε τοις μετ αυτου ει μη τοις ιερουσιν μονοις
⁵η ουκ ανεγνωτε εν τω νομω οτι τοις σαββασιν οι ιερεις εν τω ιερω το σαββατον βεβηλουσιν και αναιτιοι εισιν
⁶λεγω δε υμιν οτι του ιερου μειζων εστιν ωδε
⁷ει δε εγνωκειτε τι εστιν ελεον θελω και ου θυσιαν ουκ αν κατεδικασατε τους αναιτιους
⁸κυριος γαρ εστιν και του σαββατου ο υιος του ανθρωπου
⁹και μεταβας εκειθεν ηλθεν εις την συναγωγην αυτων
¹⁰και ιδου ανθρωπος ην την χειρα εχων ξηραν και επηρωτησαν αυτον λεγοντες ει εξεστιν τοις σαββασιν θεραπευειν ινα κατηγορησωσιν αυτου
¹¹ο δε ειπεν αυτοις τις εσται εξ υμων ανθρωπος ος εξει προβατον εν και εαν εμπεση τουτο τοις σαββασιν εις βοθυνον ουχι κρατησει αυτο και εγερει
¹²ποσω ουν διαφερει ανθρωπος προβατου ωστε εξεστιν τοις σαββασιν καλως ποιειν
¹³τοτε λεγει τω ανθρωπω εκτεινον την χειρα σου και εξετεινεν και αποκατεσταθη υγιης ως η αλλη
¹⁴οι δε φαρισαιοι συμβουλιον ελαβον κατ αυτου εξελθοντες οπως αυτον απολεσωσιν
¹⁵ο δε ιησους γνους ανεχωρησεν εκειθεν και ηκολουθησαν αυτω οχλοι πολλοι και εθεραπευσεν αυτους παντας
¹⁶και επετιμησεν αυτοις ινα μη φανερον αυτον ποιησωσιν
¹⁷οπως πληρωθη το ρηθεν δια ησαιου του προφητου λεγοντος
¹⁸ιδου ο παις μου ον ηρετισα ο αγαπητος μου εις ον ευδοκησεν η ψυχη μου θησω το πνευμα μου επ αυτον και κρισιν τοις εθνεσιν απαγγελει
¹⁹ουκ ερισει ουδε κραυγασει ουδε ακουσει τις εν ταις πλατειαις την φωνην αυτου
²⁰καλαμον συντετριμμενον ου κατεαξει και λινον τυφομενον ου σβεσει εως αν εκβαλη εις νικος την κρισιν
²¹και εν τω ονοματι αυτου εθνη ελπιουσιν
²²τοτε προσηνεχθη αυτω δαιμονιζομενος τυφλος και κωφος και εθεραπευσεν αυτον ωστε τον τυφλον και κωφον και λαλειν και βλεπειν
²³και εξισταντο παντες οι οχλοι και ελεγον μητι ουτος εστιν ο υιος δαβιδ
²⁴οι δε φαρισαιοι ακουσαντες ειπον ουτος ουκ εκβαλλει τα δαιμονια ει μη εν τω βεελζεβουλ αρχοντι των δαιμονιων

²⁵ειδως δε ο ιησους τας ενθυμησεις αυτων ειπεν αυτοις πασα βασιλεια μερισθεισα καθ
εαυτης ερημουται και πασα πολις η οικια μερισθεισα καθ εαυτης ου σταθησεται
²⁶και ει ο σατανας τον σαταναν εκβαλλει εφ εαυτον εμερισθη πως ουν σταθησεται η
βασιλεια αυτου
²⁷και ει εγω εν βεελζεβουλ εκβαλλω τα δαιμονια οι υιοι υμων εν τινι εκβαλλουσιν δια
τουτο αυτοι υμων εσονται κριται
²⁸ει δε εγω εν πνευματι θεου εκβαλλω τα δαιμονια αρα εφθασεν εφ υμας η βασιλεια του
θεου
²⁹η πως δυναται τις εισελθειν εις την οικιαν του ισχυρου και τα σκευη αυτου διαρπασαι
εαν μη πρωτον δηση τον ισχυρον και τοτε την οικιαν αυτου διαρπασει
³⁰ο μη των μετ εμου κατ εμου εστιν και ο μη συναγων μετ εμου σκορπιζει
³¹δια τουτο λεγω υμιν πασα αμαρτια και βλασφημια αφεθησεται τοις ανθρωποις η δε του
πνευματος βλασφημια ουκ αφεθησεται τοις ανθρωποις
³²και ος αν ειπη λογον κατα του υιου του ανθρωπου αφεθησεται αυτω ος δ αν ειπη κατα
του πνευματος του αγιου ουκ αφεθησεται αυτω ουτε εν τουτω τω αιωνι ουτε εν τω μελλοντι
³³η ποιησατε το δενδρον καλον και τον καρπον αυτου καλον η ποιησατε το δενδρον σαπρον
και τον καρπον αυτου σαπρον εκ γαρ του καρπου το δενδρον γινωσκεται
³⁴γεννηματα εχιδνων πως δυνασθε αγαθα λαλειν πονηροι οντες εκ γαρ του περισσευματος
της καρδιας το στομα λαλει
³⁵ο αγαθος ανθρωπος εκ του αγαθου θησαυρου της καρδιας εκβαλλει τα αγαθα και ο
πονηρος ανθρωπος εκ του πονηρου θησαυρου εκβαλλει πονηρα
³⁶λεγω δε υμιν οτι παν ρημα αργον ο εαν λαλησωσιν οι ανθρωποι αποδωσουσιν περι αυτου
λογον εν ημερα κρισεως
³⁷εκ γαρ των λογων σου δικαιωθησιν και εκ των λογων σου καταδικασθησιν
³⁸τοτε απεκριθησαν τινες των γραμματεων και φαρισαιων λεγοντες διδασκαλε θελομεν
απο σου σημειον ιδειν
³⁹ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις γενεα πονηρα και μοιχαλις σημειον επιζητει και σημειον
ου δοθησεται αυτη ει μη το σημειον ιωνα του προφητου
⁴⁰ωσπερ γαρ ην ιωνας εν τη κοιλια του κητους τρεις ημερας και τρεις νυκτας ουτως εσται
ο υιος του ανθρωπου εν τη καρδια της γης τρεις ημερας και τρεις νυκτας
⁴¹ανδρες νινευιται αναστησονται εν τη κρισει μετα της γενεας ταυτης και κατακρινουσιν
αυτην οτι μετενοησαν εις το κηρυγμα ιωνα και ιδου πλειον ιωνα ωδε
⁴²βασιλισσα νοτου εγερθησεται εν τη κρισει μετα της γενεας ταυτης και κατακρινει αυτην
οτι ηλθεν εκ των περατων της γης ακουσαι την σοφιαν σολομωντος και ιδου πλειον
σολομωντος ωδε
⁴³οταν δε το ακαθαρτον πνευμα εξελθη απο του ανθρωπου διερχεται δι ανυδρων τοπων
ζητουν αναπαυσιν και ουχ ευρισκει

⁴⁴ τότε λεγει επιστρεψω εις τον οικον μου οθεν εξηλθον και ελθον ευρισκει σχολαζοντα σεσαρωμενον και κεκοσμημενον

⁴⁵ τότε πορευεται και παραλαμβανει μεθ εαυτου επτα ετερα πνευματα πονηροτερα εαυτου και εισελθοντα κατοικει εκει και γινεται τα εσχατα του ανθρωπου εκεινου χειρονα των πρωτων ουτως εσται και τη γενεα ταυτη τη πονηρα

⁴⁶ ετι δε αυτου λαλουντος τοις οχλοις ιδου η μητηρ και οι αδελφοι αυτου εισηκεισαν εξω ζητουντες αυτω λαλησαι

⁴⁷ ειπεν δε τις αυτω ιδου η μητηρ σου και οι αδελφοι σου εξω εστηκασιν ζητουντες σοι λαλησαι

⁴⁸ ο δε αποκριθεις ειπεν τω ειποντι αυτω τις εστιν η μητηρ μου και τινες εισιν οι αδελφοι μου

⁴⁹ και εκτεινας την χειρα αυτου επι τους μαθητας αυτου ειπεν ιδου η μητηρ μου και οι αδελφοι μου

⁵⁰ οστις γαρ αν ποιηση το θελημα του πατρος μου του εν ουρανοις αυτος μου αδελφος και αδελφη και μητηρ εστιν

Chapter 13

¹εν δε τη ημερα εκεινη εξελθων ο ιησους απο της οικιας εκαθητο παρα την θαλασσαν
²και συνηχθησαν προς αυτον οχλοι πολλοι ωστε αυτον εις το πλοιον εμβαντα καθησθαι
και πας ο οχλος επι τον αιγιαλον εισηκει
³και ελαλησεν αυτοις πολλα εν παραβολαις λεγων ιδου εξηλθεν ο σπειρων του σπειρειν
⁴και εν τω σπειρειν αυτον α μεν επεσεν παρα την οδον και ηλθεν τα πετεινα και κατεφαγεν
αυτα
⁵αλλα δε επεσεν επι τα πετρωδη οπου ουκ ειχεν γην πολλην και ευθεως εξανετειλεν δια
το μη εχειν βαθος γης
⁶ηλιου δε ανατειλαντος εκαυματισθη και δια το μη εχειν ριζαν εξηρανθη
⁷αλλα δε επεσεν επι τας ακανθας και ανεβησαν αι ακανθαι και απεπνιξαν αυτα
⁸αλλα δε επεσεν επι την γην την καλην και εδιδου καρπον ο μεν εκατον ο δε εξηκοντα ο
δε τριακοντα
⁹ο εχων ωτα ακουειν ακουετω
¹⁰και προσελθοντες οι μαθηται ειπον αυτω διατι εν παραβολαις λαλεις αυτοις
¹¹ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις οτι υμιν δεδοται γνωνα τα μυστηρια της βασιλειας των
ουρανων εκεινοις δε ου δεδοται
¹²οστις γαρ εχει δοθησεται αυτω και περισσευθησεται οστις δε ουκ εχει και ο εχει αρθησεται
απ αυτου
¹³δια τουτο εν παραβολαις αυτοις λαλω οτι βλεποντες ου βλεπουσιν και ακουοντες ουκ
ακουουσιν ουδε συνιουσιν
¹⁴και αναπληρουται επ αυτοις η προφητεια ησαιου η λεγουσα ακοη ακουσετε και ου μη
συνητε και βλεποντες βλεψετε και ου μη ιδητε
¹⁵επαχυνθη γαρ η καρδια του λαου τουτου και τοις ωσιν βαρεως ηκουσαν και τους
οφθαλμους αυτων εκαμμυσαν μηποτε ιδωσιν τοις οφθαλμοις και τοις ωσιν ακουσωσιν
και τη καρδια συνωσιν και επιστρεψωσιν και ιασωμαι αυτους
¹⁶υμων δε μακαριοι οι οφθαλμοι οτι βλεπουσιν και τα ωτα υμων οτι ακουει
¹⁷αμην γαρ λεγω υμιν οτι πολλοι προφηται και δικαιοι επεθυμησαν ιδειν α βλεπετε και
ουκ ειδον και ακουσαι α ακουετε και ουκ ηκουσαν
¹⁸υμεις ουν ακουσατε την παραβολην του σπειροντος
¹⁹παντος ακουοντος τον λογον της βασιλειας και μη συνιεντος ερχεται ο πονηρος και
αρπαζει το εσπαρμενον εν τη καρδια αυτου ουτος εστιν ο παρα την οδον σπαρεις
²⁰ο δε επι τα πετρωδη σπαρεις ουτος εστιν ο τον λογον ακουων και ευθυσ μετα χαρας
λαμβανων αυτον
²¹ουκ εχει δε ριζαν εν εαυτω αλλα προσκαιρος εστιν γενομενης δε θλιψεως η διωγμου δια
τον λογον ευθυσ σκανδαλιζεται
²²ο δε εις τας ακανθας σπαρεις ουτος εστιν ο τον λογον ακουων και η μεριμνα του αιωνος
τουτου και η απατη του πλουτου συμπνιγει τον λογον και ακαρπος γινεται

- ²³ ο δε επι την γην την καλην σπαρεις ουτος εστιν ο τον λογον ακουων και συνιων ος δη καρποφορει και ποιει ο μεν εκατον ο δε εξηκοντα ο δε τριακοντα
- ²⁴ αλλην παραβολην παρεθηκεν αυτοις λεγων ωμοιωθη η βασιλεια των ουρανων ανθρωπω σπειραντι καλον σπερμα εν τω αγρω αυτου
- ²⁵ εν δε τω καθευδειν τους ανθρωπους ηλθεν αυτου ο εχθρος και εσπειρεν ζιζανια ανα μεσον του σιτου και απηλθεν
- ²⁶ οτε δε εβλαστησεν ο χορτος και καρπον εποιησεν τοτε εφανη και τα ζιζανια
- ²⁷ προσελθοντες δε οι δουλοι του οικοδεσποτου ειπον αυτω κυριε ουχι καλον σπερμα εσπειρας εν τω σω αγρω ποθεν ουν εχει τα ζιζανια
- ²⁸ ο δε εφη αυτοις εχθρος ανθρωπος τουτο εποιησεν οι δε δουλοι ειπον αυτω θελεις ουν απελθοντες συλλεξωμεν αυτα
- ²⁹ ο δε εφη ου μηποτε συλλεγοντες τα ζιζανια εκριζωσητε αμα αυτοις τον σιτον
- ³⁰ αφετε συναυξανεσθαι αμφοτερα μεχρι του θερισμου και εν τω καιρω του θερισμου ερω τοις θερισταις συλλεξατε πρωτον τα ζιζανια και δησατε αυτα εις δεσμας προς το κατακαυσαι αυτα τον δε σιτον συναγαγετε εις την αποθηκην μου
- ³¹ αλλην παραβολην παρεθηκεν αυτοις λεγων ομοια εστιν η βασιλεια των ουρανων κοκκω σιναπεως ον λαβων ανθρωπος εσπειρεν εν τω αγρω αυτου
- ³² ο μικροτερον μεν εστιν παντων των σπερματων οταν δε αυξηθη μειζον των λαχανων εστιν και γινεται δενδρον ωστε ελθειν τα πετεινα του ουρανου και κατασκηνουν εν τοις κλαδοις αυτου
- ³³ αλλην παραβολην ελαλησεν αυτοις ομοια εστιν η βασιλεια των ουρανων ζυμη ην λαβουσα γυνη ενεκρυψεν εις αλευρου σατα τρια εως ου εξυμωθη ολον
- ³⁴ ταυτα παντα ελαλησεν ο ιησους εν παραβολαις τοις οχλοις και χωρις παραβολης ουκ ελαλει αυτοις
- ³⁵ οπως πληρωθη το ρηθεν δια του προφητου λεγοντος ανοιξω εν παραβολαις το στομα μου ερευξομαι κεκρυμμενα απο καταβολης κοσμου
- ³⁶ τοτε αφεις τους οχλους ηλθεν εις την οικιαν ο ιησους και προσηλθον αυτω οι μαθηται αυτου λεγοντες φρασον ημιν την παραβολην των ζιζανιων του αγρου
- ³⁷ ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις ο σπειρων το καλον σπερμα εστιν ο υιος του ανθρωπου
- ³⁸ ο δε αγρος εστιν ο κοσμος το δε καλον σπερμα ουτοι εισιν οι υιοι της βασιλειας τα δε ζιζανια εισιν οι υιοι του πονηρου
- ³⁹ ο δε εχθρος ο σπειρας αυτα εστιν ο διαβολος ο δε θερισμος συντελεια του αιωνος εστιν οι δε θερισται αγγελοι εισιν
- ⁴⁰ ωσπερ ουν συλλεγεται τα ζιζανια και πυρι κατακαιεται ουτως εσται εν τη συντελεια του αιωνος τουτου
- ⁴¹ αποστελει ο υιος του ανθρωπου τους αγγελους αυτου και συλλεξουσιν εκ της βασιλειας αυτου παντα τα σκανδαλα και τους ποιουντας την ανομιαν

- ⁴² και βαλουσιν αυτους εις την καμινον του πυρος εκει εσται ο κλαυθμος και ο βρυγμος των οδοντων
- ⁴³ τοτε οι δικαιοι εκλαμψουσιν ως ο ηλιος εν τη βασιλεια του πατρος αυτων ο εχων ωτα ακουειν ακουετω
- ⁴⁴ παλιν ομοια εστιν η βασιλεια των ουρανων θησαυρω κεκρυμμενω εν τω αγρω ον ευρων ανθρωπος εκρυψεν και απο της χαρας αυτου υπαγει και παντα οσα εχει πωλει και αγοραζει τον αγρον εκεινον
- ⁴⁵ παλιν ομοια εστιν η βασιλεια των ουρανων ανθρωπω εμπορω ζητουντι καλους μαργαριτας
- ⁴⁶ ος ευρων ενα πολυτιμον μαργαριτην απελθων πεπρακεν παντα οσα ειχεν και ηγορασεν αυτον
- ⁴⁷ παλιν ομοια εστιν η βασιλεια των ουρανων σαγηνη βληθειση εις την θαλασσαν και εκ παντος γενους συναγαγουση
- ⁴⁸ ην οτε επληρωθη αναβιβασαντες επι τον αιγιαλον και καθισαντες συνελεξαν τα καλα εις αγγεια τα δε σαπρα εξω εβαλον
- ⁴⁹ ουτως εσται εν τη συντελεια του αιωνος εξελευσονται οι αγγελοι και αφοριουσιν τους πονηρους εκ μεσου των δικαιων
- ⁵⁰ και βαλουσιν αυτους εις την καμινον του πυρος εκει εσται ο κλαυθμος και ο βρυγμος των οδοντων
- ⁵¹ λεγει αυτοις ο ιησους συνηκατε ταυτα παντα λεγουσιν αυτω ναι κυριε
- ⁵² ο δε ειπεν αυτοις δια τουτο πας γραμματευσ μαθητευθεις εις την βασιλειαν των ουρανων ομοιος εστιν ανθρωπω οικοδεσποτη οστις εκβαλλει εκ του θησαυρου αυτου καινα και παλαια
- ⁵³ και εγενετο οτε ετελεσεν ο ιησους τας παραβολας ταυτας μετηρεν εκειθεν
- ⁵⁴ και ελθων εις την πατριδα αυτου εδιδασκεν αυτους εν τη συναγωγη αυτων ωστε εκπληττεσθαι αυτους και λεγειν ποθεν τουτω η σοφια αυτη και αι δυναμεις
- ⁵⁵ ουχ ουτος εστιν ο του τεκτονος υιος ουχι η μητηρ αυτου λεγεται μαριαμ και οι αδελφοι αυτου ιακωβος και ιωσης και σιμων και ιουδας
- ⁵⁶ και αι αδελφαι αυτου ουχι πασαι προς ημας εισιν ποθεν ουν τουτω ταυτα παντα
- ⁵⁷ και εσκανδαλιζοντο εν αυτω ο δε ιησους ειπεν αυτοις ουκ εστιν προφητης ατιμος ει μη εν τη πατριδι αυτου και εν τη οικια αυτου
- ⁵⁸ και ουκ εποιησεν εκει δυναμεις πολλας δια την απιστιαν αυτων

Chapter 14

- ¹εν εκεινω τω καιρω ηκουσεν ηρωδης ο τετραρχης την ακοην ιησου
- ²και ειπεν τοις παισιν αυτου ουτος εστιν ιωαννης ο βαπτιστης αυτος ηγεθη απο των νεκρων και δια τουτο αι δυναμεις ενεργουσιν εν αυτω
- ³ο γαρ ηρωδης κρατησας τον ιωαννην εδησεν αυτον και εθετο εν φυλακη δια ηρωδιαδα την γυναικα φιλιππου του αδελφου αυτου
- ⁴ελεγεν γαρ αυτω ο ιωαννης ουκ εξεστιν σοι εχειν αυτην
- ⁵και θελων αυτον αποκτειναι εφοβηθη τον οχλον οτι ως προφητην αυτον ειχον
- ⁶γενεσιων δε αγομενων του ηρωδου ωρχησατο η θυγατηρ της ηρωδιαδος εν τω μεσω και ηρσεεν τω ηρωδη
- ⁷οθεν μεθ ορκου ωμολογησεν αυτη δουναι ο εαν αιτησηται
- ⁸η δε προβιβασθεισα υπο της μητρος αυτης δος μοι φησιν ωδε επι πινακι την κεφαλην ιωαννου του βαπτιστου
- ⁹και ελυπηθη ο βασιλευς δια δε τους ορκους και τους συνανακειμενους εκελευσεν δοθηναι
- ¹⁰και πεμψας απεκεφαλισεν τον ιωαννην εν τη φυλακη
- ¹¹και ηνεχθη η κεφαλη αυτου επι πινακι και εδοθη τω κορασιω και ηνεγκεν τη μητρι αυτης
- ¹²και προσελθοντες οι μαθηται αυτου ηραν το σωμα και εθαψαν αυτο και ελθοντες απηγγειλαν τω ιησου
- ¹³και ακουσας ο ιησους ανεχωρησεν εκειθεν εν πλοιω εις ερημον τοπον κατ ιδιαν και ακουσαντες οι οχλοι ηκολουθησαν αυτω πεζη απο των πολεων
- ¹⁴και εξελθων ο ιησους ειδεν πολυν οχλον και εσπλαγχνισθη επ αυτους και εθεραπευσεν τους αρρωστους αυτων
- ¹⁵οψιας δε γενομενης προσηλθον αυτω οι μαθηται αυτου λεγοντες ερημος εστιν ο τοπος και η ωρα ηδη παρηλθεν απολυσον τους οχλους ινα απελθοντες εις τας κωμας αγορασωσιν εαυτοις βρωματα
- ¹⁶ο δε ιησους ειπεν αυτοις ου χρειαν εχουσιν απελθειν δοτε αυτοις υμεις φαγειν
- ¹⁷οι δε λεγουσιν αυτω ουκ εχομεν ωδε ει μη πεντε αρτους και δυο ιχθυας
- ¹⁸ο δε ειπεν φερετε μοι αυτους ωδε
- ¹⁹και κελευσας τους οχλους ανακλιθηναι επι τους χορτους και λαβων τους πεντε αρτους και τους δυο ιχθυας αναβλειψας εις τον ουρανον ευλογησεν και κλασας εδωκεν τοις μαθηταις τους αρτους οι δε μαθηται τοις οχλοις
- ²⁰και εφαγον παντες και εχορτασθησαν και ηραν το περισσευον των κλασματων δωδεκα κοφινους πληρεις
- ²¹οι δε εσθιοντες ησαν ανδρες ωσει πεντακιςχιλιοι χωρις γυναικων και παιδιων
- ²²και ευθεως ηναγκασεν ο ιησους τους μαθητας αυτου εμβηναι εις το πλοιον και προαγειν αυτον εις το περαν εως ου απολυση τους οχλους
- ²³και απολυσας τους οχλους ανεβη εις το ορος κατ ιδιαν προσευξασθαι οψιας δε γενομενης μονος ην εκει

²⁴το δε πλοιον ηδη μεσον της θαλασσης ην βασανιζομενον υπο των κυματων ην γαρ εναντιος ο ανεμος
²⁵τεταρτη δε φυλακη της νυκτος απηλθεν προς αυτους ο ιησους περιπατων επι της θαλασσης
²⁶και ιδοντες αυτον οι μαθηται επι την θαλασσαν περιπατουντα εταραχθησαν λεγοντες οτι φαντασμα εστιν και απο του φοβου εκραξαν
²⁷ευθεως δε ελαλησεν αυτοις ο ιησους λεγων θαρσειτε εγω ειμι μη φοβεισθε
²⁸αποκριθεις δε αυτω ο πετρος ειπεν κυριε ει συ ει κελευσον με προς σε ελθειν επι τα υδατα
²⁹ο δε ειπεν ελθε και καταβας απο του πλοιου ο πετρος περιεπατησεν επι τα υδατα ελθειν προς τον ιησουν
³⁰βλεπων δε τον ανεμον ισχυρον εφοβηθη και αρξαμενος καταποντιζεσθαι εκραξεν λεγων κυριε σωσον με
³¹ευθεως δε ο ιησους εκτεινας την χειρα επελαβετο αυτου και λεγει αυτω ολιγοπιστε εις τι εδιστασας
³²και εμβαντων αυτων εις το πλοιον εκοπασεν ο ανεμος
³³οι δε εν τω πλοιω ελθοντες προσεκυνησαν αυτω λεγοντες αληθως θεου υιος ει
³⁴και διαπερασαντες ηλθον εις την γην γεννησαρετ
³⁵και επιγνοντες αυτον οι ανδρες του τοπου εκεινου απεστειλαν εις ολην την περιχωρον εκεινην και προσηνεγκαν αυτω παντας τους κακως εχοντας
³⁶και παρεκαλουν αυτον ινα μονον αφωνται του κρασπεδου του ιματιου αυτου και οσοι ηψαντο διεσωθησαν

Chapter 15

¹τοτε προσερχονται τω ιησου οι απο ιεροσολυμων γραμματεις και φαρισαιοι λεγοντες
²διατι οι μαθηται σου παραβαινουσιν την παραδοσιν των πρεσβυτερων ου γαρ νιπτονται
τας χειρας αυτων οταν αρτον εσθιωσιν
³ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις διατι και υμεις παραβαινετε την εντολην του θεου δια την
παραδοσιν υμων
⁴ο γαρ θεος ενετειλατο λεγων τιμα τον πατερα σου και την μητερα και ο κακολογων πατερα
η μητερα θανατω τελευτατω
⁵υμεις δε λεγετε ος αν ειπη τω πατρι η τη μητρι δωρον ο εαν εξ εμου ωφεληθης και ου μη
τιμηση τον πατερα αυτου η την μητερα αυτου
⁶και ηκυρωσατε την εντολην του θεου δια την παραδοσιν υμων
⁷υποκριται καλως προεφητευσεν περι υμων ησαιας λεγων
⁸εγγιζει μοι ο λαος ουτος τω στοματι αυτων και τοις χειλεσιν με τιμα η δε καρδια αυτων
πορρω απεχει απ εμου
⁹ματην δε σεβονται με διδασκοντες διδασκαλιας ενταλματα ανθρωπων
¹⁰και προσκαλεσαμενος τον οχλον ειπεν αυτοις ακουετε και συνιετε
¹¹ου το εισερχομενον εις το στομα κοινοι τον ανθρωπον αλλα το εκπορευομενον εκ του
στοματος τουτου κοινοι τον ανθρωπον
¹²τοτε προσελθοντες οι μαθηται αυτου ειπον αυτω οιδας οτι οι φαρισαιοι ακουσαντες τον
λογον εσκανδαλισθησαν
¹³ο δε αποκριθεις ειπεν πασα φυτεια ην ουκ εφυτευσεν ο πατηρ μου ο ουρανιος
εκριζωθησεται
¹⁴αφετε αυτους οδηγοι εισιν τυφλοι τυφλων τυφλος δε τυφλον εαν οδηγη αμφοτεροι εις
βοθυνον πεσουνται
¹⁵αποκριθεις δε ο πετρος ειπεν αυτω φρασον ημιν την παραβολην ταυτην
¹⁶ο δε ιησους ειπεν ακμην και υμεις ασυνετοι εστε
¹⁷ουπω νοειτε οτι παν το εισπορευομενον εις το στομα εις την κοιλιαν χωρει και εις
αφεδρωνα εκβαλλεται
¹⁸τα δε εκπορευομενα εκ του στοματος εκ της καρδιας εξερχεται κακεινα κοινοι τον
ανθρωπον
¹⁹εκ γαρ της καρδιας εξερχονται διαλογισμοι πονηροι φονοι μοιχειαι πορνειαι κλοπαι
ψευδομαρτυριαι βλασφημιαι
²⁰ταυτα εστιν τα κοινουντα τον ανθρωπον το δε ανιπτοις χερσιν φαγειν ου κοινοι τον
ανθρωπον
²¹και εξελθων εκειθεν ο ιησους ανεχωρησεν εις τα μερη τυρου και σιδωνος
²²και ιδου γυνη χαναναια απο των οριων εκεινων εξελθουσα εκραυγασεν αυτω λεγουσα
ελεησον με κυριε υιε δαβιδ η θυγατηρ μου κακως δαιμονιζεται

- ²³ο δε ουκ απεκριθη αυτη λογον και προσελθοντες οι μαθηται αυτου ηρωτων αυτον λεγοντες απολυσον αυτην οτι κραζει οπισθεν ημων
- ²⁴ο δε αποκριθεις ειπεν ουκ απεσταλην ει μη εις τα προβατα τα απολωλοτα οικου ισραηλ
- ²⁵η δε ελθουσα προσεκυνη αυτω λεγουσα κυριε βοηθει μοι
- ²⁶ο δε αποκριθεις ειπεν ουκ εστιν καλον λαβειν τον αρτον των τεκνων και βαλειν τοις κυναριοις
- ²⁷η δε ειπεν ναι κυριε και γαρ τα κυναρια εσθιει απο των ψιχιων των πιπτοντων απο της τραπεζης των κυριων αυτων
- ²⁸τοτε αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτη ω γυναι μεγαλη σου η πιστις γενηθητω σοι ως θελεις και ιαθη η θυγατηρ αυτης απο της ωρας εκεινης
- ²⁹και μεταβας εκειθεν ο ιησους ηλθεν παρα την θαλασσαν της γαλιλαιας και αναβας εις το ορος εκαθητο εκει
- ³⁰και προσηλθον αυτω οχλοι πολλοι εχοντες μεθ εαυτων χωλους τυφλους κωφους κυλλους και ετερους πολλους και ερριψαν αυτους παρα τους ποδας του ιησου και εθεραπευσεν αυτους
- ³¹ωστε τους οχλους θαυμασαι βλεποντας κωφους λαλουντας κυλλους υγεις χωλους περιπατουντας και τυφλους βλεποντας και εδοξασαν τον θεον ισραηλ
- ³²ο δε ιησους προσκαλεσαμενος τους μαθητας αυτου ειπεν σπλαγχνιζομαι επι τον οχλον οτι ηδη ημερας τρεις προσμενουσιν μοι και ουκ εχουσιν τι φαγωσιν και απολυσαι αυτους νηστεις ου θελω μηποτε εκλυθωσιν εν τη οδω
- ³³και λεγουσιν αυτω οι μαθηται αυτου ποθεν ημιν εν ερημια αρτοι τοσουτοι ωστε χορτασαι οχλον τοσουτον
- ³⁴και λεγει αυτοις ο ιησους ποσους αρτους εχετε οι δε ειπον επτα και ολιγα ιχθυδια
- ³⁵και εκελευσεν τοις οχλοις αναπεσειν επι την γην
- ³⁶και λαβων τους επτα αρτους και τους ιχθυας ευχαριστησας εκλασεν και εδωκεν τοις μαθηταις αυτου οι δε μαθηται τω οχλω
- ³⁷και εφαγον παντες και εχορτασθησαν και ηραν το περισσευον των κλασματων επτα σπυριδας πληρεις
- ³⁸οι δε εσθιοντες ησαν τετρακισχιλιοι ανδρες χωρις γυναικων και παιδιων
- ³⁹και απολυσας τους οχλους ενεβη εις το πλοιον και ηλθεν εις τα ορια μαγδαλα

Chapter 16

¹και προσελθοντες οι φαρισαιοι και σαδδουκαιοι πειραζοντες επηρωτησαν αυτον σημειον εκ του ουρανου επιδειξαι αυτοις
²ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις οψιας γενομενης λεγετε ευδια πυρραζει γαρ ο ουρανος
³και πρωι σημερον χειμων πυρραζει γαρ στυγναζων ο ουρανος υποκριται το μεν προσωπον του ουρανου γινωσκετε διακρινειν τα δε σημεια των καιρων ου δυνασθε
⁴γενεα πονηρα και μοιχαλις σημειον επιζητει και σημειον ου δοθησεται αυτη ει μη το σημειον ιωνα του προφητου και καταλιπων αυτους απηλθεν
⁵και ελθοντες οι μαθηται αυτου εις το περαν επελαθοντο αρτους λαβειν
⁶ο δε ιησους ειπεν αυτοις ορατε και προσεχετε απο της ζυμης των φαρισαιων και σαδδουκαιων
⁷οι δε διελογιζοντο εν εαυτοις λεγοντες οτι αρτους ουκ ελαβομεν
⁸γνους δε ο ιησους ειπεν αυτοις τι διαλογιζεσθε εν εαυτοις ολιγοπιστοι οτι αρτους ουκ ελαβετε
⁹ουπω νοειτε ουδε μνημονευετε τους πεντε αρτους των πεντακισχιλιων και ποσους κοφινους ελαβετε
¹⁰ουδε τους επτα αρτους των τετρακισχιλιων και ποσας σφυριδας ελαβετε
¹¹πως ου νοειτε οτι ου περι αρτου ειπον υμιν προσεχειν απο της ζυμης των φαρισαιων και σαδδουκαιων
¹²τοτε συνηκαν οτι ουκ ειπεν προσεχειν απο της ζυμης του αρτου αλλ απο της διδαχης των φαρισαιων και σαδδουκαιων
¹³ελθων δε ο ιησους εις τα μερη καισαρειας της φιλιππου ηρωτα τους μαθητας αυτου λεγων τινα με λεγουσιν οι ανθρωποι ειναι τον υιον του ανθρωπου
¹⁴οι δε ειπον οι μεν ιωαννην τον βαπτιστην αλλοι δε ηλιαν ετεροι δε ιερεμιαν η ενα των προφητων
¹⁵λεγει αυτοις υμεις δε τινα με λεγετε ειναι
¹⁶αποκριθεις δε σιμων πετρος ειπεν συ ει ο χριστος ο υιος του θεου του ζωντος
¹⁷και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτω μακαριος ει σιμων βαρ ιωνα οτι σαρξ και αιμα ουκ απεκαλυψεν σοι αλλ ο πατηρ μου ο εν τοις ουρανοις
¹⁸καγω δε σοι λεγω οτι συ ει πετρος και επι ταυτη τη πετρα οικοδομησω μου την εκκλησιαν και πυλαι αδου ου κατισχουσιν αυτης
¹⁹και δωσω σοι τας κλεις της βασιλειας των ουρανων και ο εαν δησης επι της γης εσται δεδεμενον εν τοις ουρανοις και ο εαν λυσης επι της γης εσται λελυμενον εν τοις ουρανοις
²⁰τοτε διεστειλατο τοις μαθηταις αυτου ινα μηδενι ειπωσιν οτι αυτος εστιν ιησους ο χριστος
²¹απο τοτε ηρξατο ο ιησους δεικνυειν τοις μαθηταις αυτου οτι δει αυτον απελθειν εις ιεροσολυμα και πολλα παθειν απο των πρεσβυτερων και αρχιερων και γραμματεων και αποκτανθηναι και τη τριτη ημερα εγερθηναι

²² και προσλαβομενος αυτον ο πετρος ηρξατο επιτιμαν αυτω λεγων ιλεως σοι κυριε ου μη εσται σοι τουτο

²³ ο δε στραφεις ειπεν τω πετρω υπαγε οπισω μου σατανα σκανδαλον μου ει οτι ου φρονεις τα του θεου αλλα τα των ανθρωπων

²⁴ τοτε ο ιησους ειπεν τοις μαθηταις αυτου ει τις θελει οπισω μου ελθειν απαρνησασθω εαυτον και αρατω τον σταυρον αυτου και ακολουθειτω μοι

²⁵ ος γαρ αν θελη την ψυχην αυτου σωσαι απολεσει αυτην ος δε αν απολεση την ψυχην αυτου ενεκεν εμου ευρησει αυτην

²⁶ τι γαρ ωφελειται ανθρωπος εαν τον κοσμον ολον κερδηση την δε ψυχην αυτου ζημιωθη η τι δωσει ανθρωπος ανταλλαγμα της ψυχης αυτου

²⁷ μελλει γαρ ο υιος του ανθρωπου ερχεσθαι εν τη δοξη του πατρος αυτου μετα των αγγελων αυτου και τοτε αποδωσει εκαστω κατα την πραξιν αυτου

²⁸ αμην λεγω υμιν εισιν τινες των ωδε εστηκοτων οιτινες ου μη γευσωνται θανατου εως αν ιδωσιν τον υιον του ανθρωπου ερχομενον εν τη βασιλεια αυτου

Chapter 17

- ¹ και μεθ ημερας εξ παραλαμβανει ο ιησους τον πετρον και ιακωβον και ιωαννην τον αδελφον αυτου και αναφερει αυτους εις ορος υψηλον κατ ιδιαν
- ² και μετεμορφωθη εμπροσθεν αυτων και ελαμψεν το προσωπον αυτου ως ο ηλιος τα δε ιματια αυτου εγενετο λευκα ως το φως
- ³ και ιδου ωφθησαν αυτοις μωσης και ηλιας μετ αυτου συλλαλουντες
- ⁴ αποκριθεις δε ο πετρος ειπεν τω ιησου κυριε καλον εστιν ημας ωδε ειναι ει θελεις ποιησωμεν ωδε τρεις σκηνας σοι μιαν και μωση μιαν και μιαν ηλια
- ⁵ ετι αυτου λαλουντος ιδου νεφελη φωτεινη επεσκιασεν αυτους και ιδου φωνη εκ της νεφελης λεγουσα ουτος εστιν ο υιος μου ο αγαπητος εν ω ευδοκησα αυτου ακουετε
- ⁶ και ακουσαντες οι μαθηται επεσον επι προσωπον αυτων και εφοβηθησαν σφοδρα
- ⁷ και προσελθων ο ιησους ηψατο αυτων και ειπεν εγερθητε και μη φοβεισθε
- ⁸ επαραντες δε τους οφθαλμους αυτων ουδενα ειδον ει μη τον ιησουν μονον
- ⁹ και καταβαινοντων αυτων απο του ορους ενετειλατο αυτοις ο ιησους λεγων μηδενι ειπητε το οραμα εως ου ο υιος του ανθρωπου εκ νεκρων αναστη
- ¹⁰ και επηρωτησαν αυτον οι μαθηται αυτου λεγοντες τι ουν οι γραμματαις λεγουσιν οτι ηλιαν δει ελθειν πρωτον
- ¹¹ ο δε ιησους αποκριθεις ειπεν αυτοις ηλιας μεν ερχεται πρωτον και αποκαταστησει παντα
- ¹² λεγω δε υμιν οτι ηλιας ηδη ηλθεν και ουκ επεγνωσαν αυτον αλλ εποιησαν εν αυτω οσα ηθελησαν ουτως και ο υιος του ανθρωπου μελλει πασχειν υπ αυτων
- ¹³ τοτε συνηκαν οι μαθηται οτι περι ιωαννου του βαπτιστου ειπεν αυτοις
- ¹⁴ και ελθοντων αυτων προς τον οχλον προσηλθεν αυτω ανθρωπος γονυπετων αυτω
- ¹⁵ και λεγων κυριε ελεησον μου τον υιον οτι σεληνιαζεται και κακως πασχει πολλακις γαρ πιπτει εις το πυρ και πολλακις εις το υδωρ
- ¹⁶ και προσηνεγκα αυτον τοις μαθηταις σου και ουκ ηδυνηθησαν αυτον θεραπευσαι
- ¹⁷ αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν ω γενεα απιστος και διεστραμμενη εως ποτε εσομαι μεθ υμων εως ποτε ανεξομαι υμων φερετε μοι αυτον ωδε
- ¹⁸ και επετιμησεν αυτω ο ιησους και εξηλθεν απ αυτου το δαιμονιον και εθεραπευθη ο παις απο της ωρας εκεινης
- ¹⁹ τοτε προσελθοντες οι μαθηται τω ιησου κατ ιδιαν ειπον διατι ημεις ουκ ηδυνηθημεν εκβαλειν αυτο
- ²⁰ ο δε ιησους ειπεν αυτοις δια την απιστιαν υμων αμην γαρ λεγω υμιν εαν εχητε πιστιν ως κοκκον σιναπεως ερειτε τω ορει τουτω μεταβηθι εντευθεν εκει και μεταβησεται και ουδεν αδυνατησει υμιν
- ²¹ τουτο δε το γενοσ ουκ εκπορευεται ει μη εν προσευχη και νηστεια
- ²² αναστρεφομενων δε αυτων εν τη γαλιλαια ειπεν αυτοις ο ιησους μελλει ο υιος του ανθρωπου παραδιδοσθαι εις χειρας ανθρωπων
- ²³ και αποκτενουσιν αυτον και τη τριτη ημερα εγερθησεται και ελυπηθησαν σφοδρα

²⁴ελθοντων δε αυτων εις καπερναουμ προσηλθον οι τα διδραχμα λαμβανοντες τω πετρω και ειπον ο διδασκαλος υμων ου τελει τα διδραχμα

²⁵λεγει ναι και οτε εισηλθεν εις την οικιαν προεφθασεν αυτον ο ιησους λεγων τι σοι δοκει σιμων οι βασιλεις της γης απο τινων λαμβανουσιν τελη η κηνσον απο των υιων αυτων η απο των αλλοτριων

²⁶λεγει αυτω ο πετρος απο των αλλοτριων εφη αυτω ο ιησους αραγε ελευθεροι εισιν οι υιοι

²⁷ινα δε μη σκανδαλισωμεν αυτους πορευθεις εις την θαλασσαν βαλε αγκιστρον και τον αναβαντα πρωτον ιχθυν αρων και ανοιξας το στομα αυτου ευρησεις στατηρα εκεινον λαβωνδος αυτοις αντι εμου και σου

Chapter 18

¹εν εκεινη τη ωρα προσηλθον οι μαθηται τω ιησου λεγοντες τις αρα μειζων εστιν εν τη βασιλεια των ουρανων
²και προσκαλεσαμενος ο ιησους παιδιον εστησεν αυτο εν μεσω αυτων
³και ειπεν αμην λεγω υμιν εαν μη στραφητε και γενησθε ως τα παιδια ου μη εισελθητε εις την βασιλειαν των ουρανων
⁴οστις ουν ταπεινωση εαυτον ως το παιδιον τουτο ουτος εστιν ο μειζων εν τη βασιλεια των ουρανων
⁵και ος εαν δεξηται παιδιον τοιουτον εν επι τω ονοματι μου εμε δεχεται
⁶ος δ αν σκανδαλιση ενα των μικρων τουτων των πιστευοντων εις εμε συμφερει αυτω ινα κρεμασθη μυλος ονικος επι τον τραχηλον αυτου και καταποντισθη εν τω πελαγει της θαλασσης
⁷ουαι τω κοσμω απο των σκανδαλων αναγκη γαρ εστιν ελθειν τα σκανδαλα πλην ουαι τω ανθρωπω εκεινω δι ου το σκανδαλον ερχεται
⁸ει δε η χειρ σου η ο πους σου σκανδαλιζει σε εκκοψον αυτα και βαλε απο σου καλον σοι εστιν εισελθειν εις την ζωην χωλον η κυλλον η δυο χειρας η δυο ποδας εχοντα βληθηναι εις το πυρ το αιωνιον
⁹και ει ο οφθαλμος σου σκανδαλιζει σε εξελε αυτον και βαλε απο σου καλον σοι εστιν μονοφθαλμον εις την ζωην εισελθειν η δυο οφθαλμους εχοντα βληθηναι εις την γεενναν του πυρος
¹⁰ορατε μη καταφρονησητε ενος των μικρων τουτων λεγω γαρ υμιν οτι οι αγγελοι αυτων εν ουρανοις δια παντος βλεπουσιν το προσωπον του πατρος μου του εν ουρανοις
¹¹ηλθεν γαρ ο υιος του ανθρωπου σωσαι το απολωλος
¹²τι υμιν δοκει εαν γενηται τινι ανθρωπω εκατον προβατα και πλανηθη εν εξ αυτων ουχι αφεις τα εννενηκονταεννεα επι τα ορη πορευθεις ζητει το πλανωμενον
¹³και εαν γενηται ευρειν αυτο αμην λεγω υμιν οτι χαιρει επ αυτω μαλλον η επι τοις εννενηκονταεννεα τοις μη πεπλανημενοις
¹⁴ουτως ουκ εστιν θελημα εμπροσθεν του πατρος υμων του εν ουρανοις ινα αποληται εις των μικρων τουτων
¹⁵εαν δε αμαρτηση εις σε ο αδελφος σου υπαγε και ελεγξον αυτον μεταξυ σου και αυτου μονου εαν σου ακουση εκερδησας τον αδελφον σου
¹⁶εαν δε μη ακουση παραλαβε μετα σου ετι ενα η δυο ινα επι στοματος δυο μαρτυρων η τριων σταθη παν ρημα
¹⁷εαν δε παρακουση αυτων ειπε τη εκκλησια εαν δε και της εκκλησιας παρακουση εστω σοι ωσπερ ο εθνικος και ο τελωνης
¹⁸αμην λεγω υμιν οσα εαν δησητε επι της γης εσται δεδεμενα εν τω ουρανω και οσα εαν λυσητε επι της γης εσται λελυμενα εν τω ουρανω

¹⁹παλιν λεγω υμιν οτι εαν δυο υμων συμφωνησωσιν επι της γης περι παντος πραγματος ου εαν αιτησωνται γενησεται αυτοις παρα του πατρος μου του εν ουρανοις
²⁰ου γαρ εισιν δυο η τρεις συνηγμενοι εις το εμον ονομα εκει ειμι εν μεσω αυτων
²¹τοτε προσελθων αυτω ο πετρος ειπεν κυριε ποσακις αμαρτησει εις εμε ο αδελφος μου και αφησω αυτω εως επτακις
²²λεγει αυτω ο ιησους ου λεγω σοι εως επτακις αλλ εως εβδομηκοντακις επτα
²³δια τουτο ωμοιωθη η βασιλεια των ουρανων ανθρωπω βασιλει ος ηθελησεν συναραι λογον μετα των δουλων αυτου
²⁴αρξαμενου δε αυτου συναρειν προσηνεχθη αυτω εις οφειλετης μυριων ταλαντων
²⁵μη εχοντος δε αυτου αποδουнай εκελευσεν αυτον ο κυριος αυτου πραθηναι και την γυναικα αυτου και τα τεκνα και παντα οσα ειχεν και αποδοθηναι
²⁶πεσων ουν ο δουλος προσεκυνη αυτω λεγων κυριε μακροθυμησον επ εμοι και παντα σοι αποδωσω
²⁷σπλαγχνισθεις δε ο κυριος του δουλου εκεινου απελυσεν αυτον και το δανειον αφηκεν αυτω
²⁸εξελθων δε ο δουλος εκεινος ευρεν ενα των συνδουλων αυτου ος ωφειλεν αυτω εκατον δηναρια και κρατησας αυτον επινιγεν λεγων αποδος μοι ο τι οφειλεις
²⁹πεσων ουν ο συνδουλος αυτου εις τους ποδας αυτου παρεκαλει αυτον λεγων μακροθυμησον επ εμοι και παντα αποδωσω σοι
³⁰ο δε ουκ ηθελεν αλλ απελθων εβαλεν αυτον εις φυλακην εως ου αποδω το οφειλομενον
³¹ιδοντες δε οι συνδουλοι αυτου τα γενομενα ελυπηθησαν σφοδρα και ελθοντες διεσαφησαν τω κυριω αυτων παντα τα γενομενα
³²τοτε προσκαλεσαμενος αυτον ο κυριος αυτου λεγει αυτω δουλε πονηρε πασαν την οφειλην εκεινην αφηκα σοι επει παρεκαλεσας με
³³ουκ εδει και σε ελεησαι τον συνδουλον σου ως και εγω σε ηλεησα
³⁴και οργισθεις ο κυριος αυτου παρεδωκεν αυτον τοις βασανισταις εως ου αποδω παν το οφειλομενον αυτω
³⁵ουτως και ο πατηρ μου ο επουρανιος ποιησει υμιν εαν μη αφητε εκαστος τω αδελφω αυτου απο των καρδιων υμων τα παραπτωματα αυτων

Chapter 19

- ¹ και εγενετο οτε ετελεσεν ο ιησους τους λογους τουτους μετηρεν απο της γαλιλαιας και ηλθεν εις τα ορια της ιουδαιας περαν του ιορδανου
- ² και ηκολουθησαν αυτω οχλοι πολλοι και εθεραπευσεν αυτους εκει
- ³ και προσηλθον αυτω οι φαρισαιοι πειραζοντες αυτον και λεγοντες αυτω ει εξεστιν ανθρωπω απολυσαι την γυναικα αυτου κατα πασαν αιτιαν
- ⁴ ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις ουκ ανεγνωτε οτι ο ποιησας απ αρχης αρσεν και θηλυ εποιησεν αυτους
- ⁵ και ειπεν ενεκεν τουτου καταλειπει ανθρωπος τον πατερα και την μητερα και προσκολληθησεται τη γυναικι αυτου και εσονται οι δυο εις σαρκα μιαν
- ⁶ ωστε ουκετι εισιν δυο αλλα σαρξ μια ο ουν ο θεος συνεζευξεν ανθρωπος μη χωριζετω
- ⁷ λεγουσιν αυτω τι ουν μωσης εντειλατο δουναι βιβλιον αποστασιου και απολυσαι αυτην
- ⁸ λεγει αυτοις οτι μωσης προς την σκληροκαρδιαν υμων επετρεψεν υμιν απολυσαι τας γυναικας υμων απ αρχης δε ου γεγονεν ουτως
- ⁹ λεγω δε υμιν οτι ος αν απολυση την γυναικα αυτου ει μη επι πορνεια και γαμηση αλλην μοιχαται και ο απολελυμενην γαμησας μοιχαται
- ¹⁰ λεγουσιν αυτω οι μαθηται αυτου ει ουτως εστιν η αιτια του ανθρωπου μετα της γυναικος ου συμφερει γαμησαι
- ¹¹ ο δε ειπεν αυτοις ου παντες χωρουσιν τον λογον τουτον αλλ οις δεδοται
- ¹² εισιν γαρ ευνουχοι οιτινες εκ κοιλιας μητρος εγεννηθησαν ουτως και εισιν ευνουχοι οιτινες ευνουχισθησαν υπο των ανθρωπων και εισιν ευνουχοι οιτινες ευνουχισαν εαυτους δια την βασιλειαν των ουρανων ο δυναμενος χωρειν χωρειτω
- ¹³ τοτε προσηνεχθη αυτω παιδια ινα τας χειρας επιθη αυτοις και προσευξηται οι δε μαθηται επετιμησαν αυτοις
- ¹⁴ ο δε ιησους ειπεν αφετε τα παιδια και μη κωλυετε αυτα ελθειν προς με των γαρ τοιουτων εστιν η βασιλεια των ουρανων
- ¹⁵ και επιθεις αυτοις τας χειρας επορευθη εκειθεν
- ¹⁶ και ιδου εις προσελθων ειπεν αυτω διδασκαλε αγαθε τι αγαθον ποιησω ινα εχω ζωην αιωνιον
- ¹⁷ ο δε ειπεν αυτω τι με λεγεις αγαθον ουδεις αγαθος ει μη εις ο θεος ει δε θελεις εισελθειν εις την ζωην τηρησον τας εντολας
- ¹⁸ λεγει αυτω ποιας ο δε ιησους ειπεν το ου φονευσεις ου μοιχευσεις ου κλεψεις ου ψευδομαρτυρησεις
- ¹⁹ τιμα τον πατερα σου και την μητερα και αγαπησεις τον πλησιον σου ως σεαυτον
- ²⁰ λεγει αυτω ο νεανισκος παντα ταυτα εφυλαξαμην εκ νεοτητος μου τι ετι υστερω
- ²¹ εφη αυτω ο ιησους ει θελεις τελειος ειναι υπαγε πωλησον σου τα υπαρχοντα καιδος πτωχοις και εξεις θησαυρον εν ουρανω και δευρο ακολουθει μοι
- ²² ακουσας δε ο νεανισκος τον λογον απηλθεν λυπουμενος ην γαρ εχων κτηματα πολλα

²³ ο δε ιησους ειπεν τοις μαθηταις αυτου αμην λεγω υμιν οτι δυσκολως πλουσιος εισελουεται εις την βασιλειαν των ουρανων

²⁴ παλιν δε λεγω υμιν ευκοπωτερον εστιν καμηλον δια τρυπηματος ραφιδος διελθειν η πλουσιον εις την βασιλειαν του θεου εισελθειν

²⁵ ακουσαντες δε οι μαθηται αυτου εξεπλησσοντο σφοδρα λεγοντες τις αρα δυναται σωθηναι

²⁶ εμβλεψας δε ο ιησους ειπεν αυτοις παρα ανθρωποις τουτο αδυνατον εστιν παρα δε θεω παντα δυνατα εστιν

²⁷ τοτε αποκριθεις ο πετρος ειπεν αυτω ιδου ημεις αφηκαμεν παντα και ηκολουθησαμεν σοι τι αρα εσται ημιν

²⁸ ο δε ιησους ειπεν αυτοις αμην λεγω υμιν οτι υμεις οι ακολουθησαντες μοι εν τη παλιγγενεσια οταν καθιση ο υιος του ανθρωπου επι θρονου δοξης αυτου καθισεσθε και υμεις επι δωδεκα θρονους κρινοντες τας δωδεκα φυλας του ισραηλ

²⁹ και πας ος αφηκεν οικιας η αδελφους η αδελφας η πατερα η μητερα η γυναικα η τεκνα η αγρους ενεκεν του ονοματος μου εκατονταπλασιονα ληψεται και ζωην αιωνιον κληρονομησει

³⁰ πολλοι δε εσονται πρωτοι εσχατοι και εσχατοι πρωτοι

Chapter 20

¹ομοια γαρ εστιν η βασιλεια των ουρανων ανθρωπω οικοδεσποτη οστις εξηλθεν αμα πρωι μισθωσασθαι εργατας εις τον αμπελωνα αυτου
²συμφωνησας δε μετα των εργατων εκ δηναριου την ημεραν απεστειλεν αυτους εις τον αμπελωνα αυτου
³και εξελθων περι την τριτην ωραν ειδεν αλλους εστωτας εν τη αγορα αργους
⁴κακεινοις ειπεν υπαγετε και υμεις εις τον αμπελωνα και ο εαν η δικαιον δωσω υμιν
⁵οι δε απηλθον παλιν εξελθων περι εκτην και εννατην ωραν εποιησεν ωσαυτως
⁶περι δε την ενδεκατην ωραν εξελθων ευρεν αλλους εστωτας αργους και λεγει αυτοις τι ωδε εστηκατε ολην την ημεραν αργοι
⁷λεγουσιν αυτω οτι ουδεις ημας εμισθωσατο λεγει αυτοις υπαγετε και υμεις εις τον αμπελωνα και ο εαν η δικαιον ληψησθε
⁸οψιας δε γενομενης λεγει ο κυριος του αμπελωνος τω επιτροπω αυτου καλεσον τους εργατας και αποδος αυτοις τον μισθον αρξαμενος απο των εσχατων εως των πρωτων
⁹και ελθοντες οι περι την ενδεκατην ωραν ελαβον ανα δηναριον
¹⁰ελθοντες δε οι πρωτοι ενομισαν οτι πλειονα ληψονται και ελαβον και αυτοι ανα δηναριον
¹¹λαβοντες δε εγογγυζον κατα του οικοδεσποτου
¹²λεγοντες οτι ουτοι οι εσχατοι μιαν ωραν εποιησαν και ισους ημιν αυτους εποιησας τοις βαστασασιν το βαρος της ημερας και τον καυσωνα
¹³ο δε αποκριθεις ειπεν ενι αυτων εταιρε ουκ αδικω σε ουχι δηναριου συνεφωνησας μοι
¹⁴αρρον το σον και υπαγε θελω δε τουτω τω εσχατω δουναι ως και σοι
¹⁵η ουκ εξεστιν μοι ποιησαι ο θελω εν τοις εμοις ει ο οφθαλμος σου πονηρος εστιν οτι εγω αγαθος ειμι
¹⁶ουτως εσονται οι εσχατοι πρωτοι και οι πρωτοι εσχατοι πολλοι γαρ εισιν κλητοι ολιγοι δε εκλεκτοι
¹⁷και αναβαινων ο ιησους εις ιεροσολυμα παρελαβεν τους δωδεκα μαθητας κατ ιδιαν εν τη οδω και ειπεν αυτοις
¹⁸ιδου αναβαινομεν εις ιεροσολυμα και ο υιος του ανθρωπου παραδοθησεται τοις αρχιερευσιν και γραμματευσιν και κατακρινουσιν αυτον θανατω
¹⁹και παραδωσουσιν αυτον τοις εθνεσιν εις το εμπαιξαι και μαστιγωσαι και σταυρωσαι και τη τριτη ημερα αναστησεται
²⁰τοτε προσηλθεν αυτω η μητηρ των υιων ζεβεδαιου μετα των υιων αυτης προσκυνουσα και αιτουσα τι παρ αυτου
²¹ο δε ειπεν αυτη τι θελεις λεγει αυτω ειπε ινα καθισωσιν ουτοι οι δυο υιοι μου εις εκ δεξιων σου και εις εξ ευωνυμων εν τη βασιλεια σου
²²αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν ουκ οιδατε τι αιτεισθε δυνασθε πειν το ποτηριον ο εγω μελλω πινειν και το βαπτισμα ο εγω βαπτιζομαι βαπτισθηναι λεγουσιν αυτω δυναμεθα

- ²³ και λεγει αυτοις το μεν ποτηριον μου πιεσθε και το βαπτισμα ο εγω βαπτιζομαι βαπτισθησεσθε το δε καθισαι εκ δεξιων μου και εξ ευωνυμων μου ουκ εστιν εμον δουναι αλλ οις ητοιμασται υπο του πατρος μου
- ²⁴ και ακουσαντες οι δεκα ηγανακτησαν περι των δυο αδελφων
- ²⁵ ο δε ιησους προσκαλεσαμενος αυτους ειπεν οιδατε οτι οι αρχοντες των εθνων κατακυριεουσιν αυτων και οι μεγαλοι κατεξουσιαζουσιν αυτων
- ²⁶ ουχ ουτως δε εσται εν υμιν αλλ ος εαν θελη εν υμιν μεγας γενεσθαι εστω υμων διακονος
- ²⁷ και ος εαν θελη εν υμιν ειναι πρωτος εστω υμων δουλος
- ²⁸ ωσπερ ο υιος του ανθρωπου ουκ ηλθεν διακονηθηναι αλλα διακονησαι και δουναι την ψυχην αυτου λυτρον αντι πολλων
- ²⁹ και εκπορευομενων αυτων απο ιεριχω ηκολουθησεν αυτω οχλος πολυς
- ³⁰ και ιδου δυο τυφλοι καθημενοι παρα την οδον ακουσαντες οτι ιησους παραγει εκραξαν λεγοντες ελεησον ημας κυριε υιος δαβιδ
- ³¹ ο δε οχλος επετιμησεν αυτοις ινα σιωπησωσιν οι δε μειζον εκραζον λεγοντες ελεησον ημας κυριε υιος δαβιδ
- ³² και στας ο ιησους εφωνησεν αυτους και ειπεν τι θελετε ποιησω υμιν
- ³³ λεγουσιν αυτω κυριε ινα ανοιχθωσιν ημων οι οφθαλμοι
- ³⁴ σπλαγχνισθεις δε ο ιησους ηψατο των οφθαλμων αυτων και ευθεως ανεβλεψαν αυτων οι οφθαλμοι και ηκολουθησαν αυτω

Chapter 21

- ¹ και οτε ηγγισαν εις ιεροσολυμα και ηλθον εις βηθφαγη προς το ορος των ελαιων τοτε ο ιησους απεστειλεν δυο μαθητας
- ² λεγων αυτοις πορευθητε εις την κωμην την απεναντι υμων και ευθεως ευρησετε ονον δεδεμενην και πωλον μετ αυτης λυσαντες αγαγετε μοι
- ³ και εαν τις υμιν ειπη τι ερειτε οτι ο κυριος αυτων χρειαν εχει ευθεως δε αποστελει αυτους
- ⁴ τουτο δε ολον γεγονεν ινα πληρωθη το ρηθεν δια του προφητου λεγοντος
- ⁵ ειπατε τη θυγατρι σιων ιδου ο βασιλευς σου ερχεται σοι πραυς και επιβεβηκως επι ονον και πωλον υιον υποζυγιου
- ⁶ πορευθεντες δε οι μαθηται και ποιησαντες καθως προσεταξεν αυτοις ο ιησους
- ⁷ ηγαγον την ονον και τον πωλον και επεθηκαν επανω αυτων τα ιματια αυτων και επεκαθισαν επανω αυτων
- ⁸ ο δε πλειστος οχλος εστρωσαν εαυτων τα ιματια εν τη οδω αλλοι δε εκοπτον κλαδους απο των δενδρων και εστρωννυον εν τη οδω
- ⁹ οι δε οχλοι οι προαγοντες και οι ακολουθουντες εκραζον λεγοντες ωσαννα τω υιω δαβιδ ευλογημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυριου ωσαννα εν τοις υψιστοις
- ¹⁰ και εισελθοντος αυτου εις ιεροσολυμα εσεισθη πασα η πολις λεγουσα τις εστιν ουτος
- ¹¹ οι δε οχλοι ελεγον ουτος εστιν ιησους ο προφητης ο απο ναζαρεθ της γαλιλαιας
- ¹² και εισηλθεν ο ιησους εις το ιερον του θεου και εξεβαλεν παντας τους πωλουντας και αγοραζοντας εν τω ιερω και τας τραπεζας των κολλυβιστων κατεστρεψεν και τας καθεδρας των πωλουντων τας περιστερας
- ¹³ και λεγει αυτοις γεγραπται ο οικος μου οικος προσευχης κληθησεται υμεις δε αυτον εποιησατε σπηλαιον ληστων
- ¹⁴ και προσηλθον αυτω τυφλοι και χωλοι εν τω ιερω και εθεραπευσεν αυτους
- ¹⁵ ιδοντες δε οι αρχιερεις και οι γραμματεις τα θαυμασια α εποιησεν και τους παιδας κραζοντας εν τω ιερω και λεγοντας ωσαννα τω υιω δαβιδ ηγανακτησαν
- ¹⁶ και ειπον αυτω ακουεις τι ουτοι λεγουσιν ο δε ιησους λεγει αυτοις ναι ουδεποτε ανεγνωτε οτι εκ στοματος νηπιων και θηλαζοντων κατηρτισω αινον
- ¹⁷ και καταλιπων αυτους εξηλθεν εξω της πολεως εις βηθανιαν και ηυλισθη εκει
- ¹⁸ πρωιας δε επαναγων εις την πολιν επεινασεν
- ¹⁹ και ιδων συκην μιαν επι της οδου ηλθεν επ αυτην και ουδεν ευρεν εν αυτη ει μη φυλλα μονον και λεγει αυτη μηκετι εκ σου καρπος γενηται εις τον αιωνα και εξηρανθη παραχρημα η συκη
- ²⁰ και ιδοντες οι μαθηται εθαυμασαν λεγοντες πως παραχρημα εξηρανθη η συκη
- ²¹ αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν αυτοις αμην λεγω υμιν εαν εχητε πιστιν και μη διακριθητε ου μονον το της συκης ποιησετε αλλα καν τω ορει τουτω ειπητε αρθητι και βληθητι εις την θαλασσαν γενησεται
- ²² και παντα οσα αν αιτησητε εν τη προσευχη πιστευοντες ληψεσθε

²³ και ελθοντι αυτω εις το ιερον προσηλθον αυτω διδασκοντι οι αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι του λαου λεγοντες εν ποια εξουσια ταυτα ποιεις και τις σοι εδωκεν την εξουσιαν ταυτην
²⁴ αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν αυτοις ερωτησω υμας καγω λογον ενα ον εαν ειπητε μοι καγω υμιν ερω εν ποια εξουσια ταυτα ποιω
²⁵ το βαπτισμα ιωαννου ποθεν ην εξ ουρανου η εξ ανθρωπων οι δε διελογιζοντο παρ εαυτοις λεγοντες εαν ειπωμεν εξ ουρανου ερει ημιν διατι ουν ουκ επιστευσατε αυτω
²⁶ εαν δε ειπωμεν εξ ανθρωπων φοβουμεθα τον οχλον παντες γαρ εχουσιν τον ιωαννην ως προφητην
²⁷ και αποκριθεντες τω ιησου ειπον ουκ οιδαμεν εφη αυτοις και αυτος ουδε εγω λεγω υμιν εν ποια εξουσια ταυτα ποιω
²⁸ τι δε υμιν δοκει ανθρωπος ειχεν τεκνα δυο και προσελθων τω πρωτω ειπεν τεκνον υπαγε σημερον εργαζου εν τω αμπελωνι μου
²⁹ ο δε αποκριθεις ειπεν ου θελω υστερον δε μεταμεληθεις απηλθεν
³⁰ και προσελθων τω δευτερω ειπεν ωσαυτως ο δε αποκριθεις ειπεν εγω κυριε και ουκ απηλθεν
³¹ τις εκ των δυο εποιησεν το θελημα του πατρος λεγουσιν αυτω ο πρωτος λεγει αυτοις ο ιησους αμην λεγω υμιν οτι οι τελωναι και αι πορναι προαγουσιν υμας εις την βασιλειαν του θεου
³² ηλθεν γαρ προς υμας ιωαννης εν οδω δικαιοσυνης και ουκ επιστευσατε αυτω οι δε τελωναι και αι πορναι επιστευσαν αυτω υμεις δε ιδοντες ου μετεμεληθητε υστερον του πιστευσαι αυτω
³³ αλλην παραβολην ακουσατε ανθρωπος τις ην οικοδεσποτης οστις εφυτευσεν αμπελωνα και φραγμαν αυτω περιεθηκεν και ωρυξεν εν αυτω ληνον και ωκοδομησεν πυργον και εξεδото αυτον γεωργοις και απεδημησεν
³⁴ οτε δε ηγγισεν ο καιρος των καρπων απεστειλεν τους δουλους αυτου προς τους γεωργους λαβειν τους καρπους αυτου
³⁵ και λαβοντες οι γεωργοι τους δουλους αυτου ον μεν εδειραν ον δε απεκτειναν ον δε ελιθοβολησαν
³⁶ παλιν απεστειλεν αλλους δουλους πλειονας των πρωτων και εποιησαν αυτοις ωσαυτως
³⁷ υστερον δε απεστειλεν προς αυτους τον υιον αυτου λεγων εντραπησονται τον υιον μου
³⁸ οι δε γεωργοι ιδοντες τον υιον ειπον εν εαυτοις ουτος εστιν ο κληρονομος δευτε αποκτεινωμεν αυτον και κατασχωμεν την κληρονομιαν αυτου
³⁹ και λαβοντες αυτον εξεβαλον εξω του αμπελωνος και απεκτειναν
⁴⁰ οταν ουν ελθη ο κυριος του αμπελωνος τι ποιησει τοις γεωργοις εκεινοις
⁴¹ λεγουσιν αυτω κακους κακως απολεσει αυτους και τον αμπελωνα εκδοσεται αλλοις γεωργοις οιτινες αποδωσουσιν αυτω τους καρπους εν τοις καιροις αυτων

⁴²λεγει αυτοις ο ιησους ουδεποτε ανεγνωτε εν ταις γραφαις λιθον ον απεδοκιμασαν οι οικοδομουντες ουτος εγενηθη εις κεφαλην γωνιας παρα κυριου εγενετο αυτη και εστιν θαυμαστη εν οφθαλμοις ημων

⁴³δια τουτο λεγω υμιν οτι αρθησεται αφ υμων η βασιλεια του θεου και δοθησεται εθνει ποιουντι τους καρπους αυτης

⁴⁴και ο πεσων επι τον λιθον τουτον συνθλασθησεται εφ ον δ αν πεση λικμησει αυτον

⁴⁵και ακουσαντες οι αρχιερεις και οι φαρισαιοι τας παραβολας αυτου εγνωσαν οτι περι αυτων λεγει

⁴⁶και ζητουντες αυτον κρατησαι εφοβηθησαν τους οχλους επειδη ως προφητην αυτον ειχον

Chapter 22

¹ και αποκριθεις ο ιησους παλιν ειπεν αυτοις εν παραβολαις λεγων
² ωμοιωθη η βασιλεια των ουρανων ανθρωπω βασιλει οστις εποιησεν γαμους τω υιω αυτου
³ και απεστειλεν τους δουλους αυτου καλεσαι τους κεκλημενους εις τους γαμους και ουκ ηθελον ελθειν
⁴ παλιν απεστειλεν αλλους δουλους λεγων ειπατε τοις κεκλημενοις ιδου το αριστον μου ητοιμασα οι ταυροι μου και τα σιτιστα τεθυμενα και παντα ετοιμα δευτε εις τους γαμους
⁵ οι δε αμελησαντες απηλθον ο μεν εις τον ιδιον αγρον ο δε εις την εμποριαν αυτου
⁶ οι δε λοιποι κρατησαντες τους δουλους αυτου υβρισαν και απεκτειναν
⁷ ακουσας δε ο βασιλευς ωργισθη και πεμφσας τα στρατευματα αυτου απωλεσεν τους φονεις εκεινους και την πολιν αυτων ενεπρησεν
⁸ τοτε λεγει τοις δουλοις αυτου ο μεν γαμος ετοιμος εστιν οι δε κεκλημενοι ουκ ησαν αξιοι
⁹ πορευεσθε ουν επι τας διεξοδους των οδων και οσους αν ευρητε καλεσατε εις τους γαμους
¹⁰ και εξελθοντες οι δουλοι εκεινοι εις τας οδους συνηγαγον παντας οσους ευρον πονηρους τε και αγαθους και επλησθη ο γαμος ανακειμενων
¹¹ εισελθων δε ο βασιλευς θεασασθαι τους ανακειμενους ειδεν εκει ανθρωπον ουκ ενδεδυμενον ενδυμα γαμου
¹² και λεγει αυτω εταιρε πως εισηλθες ωδε μη εχων ενδυμα γαμου ο δε εφिमωθη
¹³ τοτε ειπεν ο βασιλευς τοις διακονοις δησαντες αυτου ποδας και χειρας αρατε αυτον και εκβαλετε εις το σκοτος το εξωτερρον εκει εσται ο κλαυθμος και ο βρυγγμος των οδοντων
¹⁴ πολλοι γαρ εισιν κλητοι ολιγοι δε εκλεκτοι
¹⁵ τοτε πορευθεντες οι φαρισαιοι συμβουλιον ελαβον οπως αυτον παγιδευσωσιν εν λογω
¹⁶ και αποστελλουσιν αυτω τους μαθητας αυτων μετα των ηρωδιανων λεγοντες διδασκαλε οιδαμεν οτι αληθης ει και την οδον του θεου εν αληθεια διδασκεις και ου μελει σοι περι ουδενος ου γαρ βλεπεις εις προσωπον ανθρωπων
¹⁷ ειπε ουν ημιν τι σοι δοκει εξεστιν δουναι κηνσον καισαρι η ου
¹⁸ γνους δε ο ιησους την πονηριαν αυτων ειπεν τι με πειραζετε υποκριται
¹⁹ επιδειξατε μοι το νομισμα του κηνσου οι δε προσηνεγκαν αυτω δηναριον
²⁰ και λεγει αυτοις τινος η εικων αυτη και η επιγραφη
²¹ λεγουσιν αυτω καισαρος τοτε λεγει αυτοις αποδοτε ουν τα καισαρος καισαρι και τα του θεου τω θεω
²² και ακουσαντες εθαυμασαν και αφεντες αυτον απηλθον
²³ εν εκεινη τη ημερα προσηλθον αυτω σαδδουκαιιοι οι λεγοντες μη ειναι αναστασιν και επηρωτησαν αυτον
²⁴ λεγοντες διδασκαλε μωσης ειπεν εαν τις αποθανη μη εχων τεκνα επιγαμβρευσει ο αδελφος αυτου την γυναικα αυτου και αναστησει σπερμα τω αδελφω αυτου

²⁵ησαν δε παρ ημιν επτα αδελφοι και ο πρωτος γαμησας ετελευτησεν και μη εχων σπερμα
αφηκεν την γυναικα αυτου τω αδελφω αυτου
²⁶ομοιως και ο δευτερος και ο τριτος εως των επτα
²⁷υστερον δε παντων απεθανεν και η γυνη
²⁸εν τη ουν αναστασει τινος των επτα εσται γυνη παντες γαρ εσχον αυτην
²⁹αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν αυτοις πλανασθε μη ειδοτες τας γραφας μηδε την δυναμιν
του θεου
³⁰εν γαρ τη αναστασει ουτε γαμουσιν ουτε εκγαμιζονται αλλ ως αγγελοι του θεου εν
ουρανω εισιν
³¹περι δε της αναστασεως των νεκρων ουκ ανεγνωτε το ρηθεν υμιν υπο του θεου λεγοντος
³²εγω ειμι ο θεος αβρααμ και ο θεος ισαακ και ο θεος ιακωβ ουκ εστιν ο θεος θεος νεκρων
αλλα ζωντων
³³και ακουσαντες οι οχλοι εξεπλησσοντο επι τη διδαχη αυτου
³⁴οι δε φαρισαιοι ακουσαντες οτι επιμωσεν τους σαδδουκαιους συνηχθησαν επι το αυτο
³⁵και επηρωτησεν εις εξ αυτων νομικος πειραζων αυτον και λεγων
³⁶διδασκαλε ποια εντολη μεγαλη εν τω νομω
³⁷ο δε ιησους ειπεν αυτω αγαπησεις κυριον τον θεον σου εν ολη τη καρδια σου και εν ολη
τη ψυχη σου και εν ολη τη διανοια σου
³⁸αυτη εστιν πρωτη και μεγαλη εντολη
³⁹δευτερα δε ομοια αυτη αγαπησεις τον πλησιον σου ως σεαυτον
⁴⁰εν ταυταις ταις δυσιν εντολαις ολος ο νομος και οι προφηται κρεμανται
⁴¹συνηγμενων δε των φαρισαιων επηρωτησεν αυτους ο ιησους
⁴²λεγων τι υμιν δοκει περι του χριστου τινος υιος εστιν λεγουσιν αυτω του δαβιδ
⁴³λεγει αυτοις πως ουν δαβιδ εν πνευματι κυριον αυτον καλει λεγων
⁴⁴ειπεν ο κυριος τω κυριω μου καθου εκ δεξιων μου εως αν θω τους εχθρους σου υποποδιον
των ποδων σου
⁴⁵ει ουν δαβιδ καλει αυτον κυριον πως υιος αυτου εστιν
⁴⁶και ουδεις εδυνατο αυτω αποκριθηαι λογον ουδε ετολμησεν τις απ εκεινης της ημερας
επερωτησαι αυτον ουκετι

Chapter 23

- ¹τοτε ο ιησους ελαλησεν τοις οχλοις και τοις μαθηταις αυτου
- ²λεγων επι της μωσεως καθεδρας εκαθισαν οι γραμματεις και οι φαρισαιοι
- ³παντα ουν οσα αν ειπωσιν υμιν τηρειν τηρειτε και ποιειτε κατα δε τα εργα αυτων μη ποιειτε λεγουσιν γαρ και ου ποιουσιν
- ⁴δεσμεουσιν γαρ φορτια βαρεα και δυσβαστακτα και επιτιθεασιν επι τους ωμους των ανθρωπων τω δε δακτυλω αυτων ου θελουσιν κινησαι αυτα
- ⁵παντα δε τα εργα αυτων ποιουσιν προς το θεαθηναι τοις ανθρωποις πλατυνουσιν δε τα φυλακτηρια αυτων και μεγαλυνουσιν τα κρασπεδα των ιματιων αυτων
- ⁶φιλουσιν τε την πρωτοκλισιαν εν τοις δειπνοις και τας πρωτοκαθεδριας εν ταις συναγωγαις
- ⁷και τους ασπασμους εν ταις αγοραις και καλεισθαι υπο των ανθρωπων ραββι ραββι
- ⁸υμεις δε μη κληθητε ραββι εις γαρ εστιν υμων ο καθηγητης ο χριστος παντες δε υμεις αδελφοι εστε
- ⁹και πατερα μη καλεσητε υμων επι της γης εις γαρ εστιν ο πατηρ υμων ο εν τοις ουρανοις
- ¹⁰μηδε κληθητε καθηγηται εις γαρ υμων εστιν ο καθηγητης ο χριστος
- ¹¹ο δε μειζων υμων εσται υμων διακονος
- ¹²οστις δε υψωσει εαυτον ταπεινωθησεται και οστις ταπεινωσει εαυτον υψωθησεται
- ¹³(23:14) ουαι δε υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι κατεσθιετε τας οικιας των χηρων και προφασει μακρα προσευχομενοι δια τουτο ληψεσθε περισσοτερον κριμα
- ¹⁴(23:13) ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι κλειετε την βασιλειαν των ουρανων εμπροσθεν των ανθρωπων υμεις γαρ ουκ εισερχεσθε ουδε τους εισερχομενους αφιετε εισελθειν
- ¹⁵ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι περιαγετε την θαλασσαν και την ξηραν ποιησαι ενα προσηλυτον και οταν γενηται ποιειτε αυτον υιον γεεννης διπλοτερον υμων
- ¹⁶ουαι υμιν οδηγοι τυφλοι οι λεγοντες ος αν ομοση εν τω ναω ουδεν εστιν ος δ αν ομοση εν τω χρυσω του ναου οφειλει
- ¹⁷μωροι και τυφλοι τις γαρ μειζων εστιν ο χρυσος η ο ναος ο αγιαζων τον χρυσον
- ¹⁸και ος εαν ομοση εν τω θυσιαστηριω ουδεν εστιν ος δ αν ομοση εν τω δωρω τω επανω αυτου οφειλει
- ¹⁹μωροι και τυφλοι τι γαρ μειζον το δωρον η το θυσιαστηριον το αγιαζον το δωρον
- ²⁰ο ουν ομοσας εν τω θυσιαστηριω ομνυει εν αυτω και εν πασιν τοις επανω αυτου
- ²¹και ο ομοσας εν τω ναω ομνυει εν αυτω και εν τω κατοικουντι αυτον
- ²²και ο ομοσας εν τω ουρανω ομνυει εν τω θρονω του θεου και εν τω καθημενω επανω αυτου
- ²³ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι αποδεκατουτε το ηδυοσμον και το ανηθον και το κυμινον και αφηκατε τα βαρυτερα του νομου την κρισιν και τον ελεον και την πιστιν ταυτα εδει ποιησαι κακεινα μη αφιεναι

- ²⁴οδηγοι τυφλοι οι διυλιζοντες τον κωνωπα την δε καμηλον καταπινοντες
²⁵ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι καθαριζετε το εξωθεν του ποτηριου και της παροψιδος εσωθεν δε γεμουσιν εξ αρπαγης και ακρασιας
²⁶φαρισαιε τυφλε καθαρισον πρωτον το εντος του ποτηριου και της παροψιδος ινα γενηται και το εκτος αυτων καθαρον
²⁷ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι παρομοιαζετε ταφοις κεκονιαμενοις οιτινες εξωθεν μεν φαινονται ωραιοι εσωθεν δε γεμουσιν οστων νεκρων και πασης ακαθαρσιας
²⁸ουτως και υμεις εξωθεν μεν φαινεσθε τοις ανθρωποις δικαιοι εσωθεν δε μεστοι εστε υποκρισεως και ανομιας
²⁹ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι οικοδομειτε τους ταφους των προφητων και κοσμειτε τα μνημεια των δικαιων
³⁰και λεγετε ει ημεν εν ταις ημεραις των πατερων ημων ουκ αν ημεν κοινωνοι αυτων εν τω αιματι των προφητων
³¹ωστε μαρτυρειτε εαυτοις οτι υιοι εστε των φονευσαντων τους προφητας
³²και υμεις πληρωσατε το μετρον των πατερων υμων
³³οφεις γεννηματα εχιδνων πως φυγητε απο της κρισεως της γεεννης
³⁴δια τουτο ιδου εγω αποστελλω προς υμας προφητας και σοφους και γραμματεις και εξ αυτων αποκτενειτε και σταυρωσετε και εξ αυτων μαστιγωσετε εν ταις συναγωγαις υμων και διωξετε απο πολεως εις πολιν
³⁵οπως ελθη εφ υμας παν αιμα δικαιον εκχυνομενον επι της γης απο του αιματος αβελ του δικαιου εως του αιματος ζαχαριου υιου βαραχιου ον εφονευσατε μεταξυ του ναου και του θυσιαστηριου
³⁶αμην λεγω υμιν ηξει ταυτα παντα επι την γενεαν ταυτην
³⁷ιερουσαλημ ιερουσαλημ η αποκτεινουσα τους προφητας και λιθοβολουσα τους απεσταλμενους προς αυτην ποσακις ηθελησα επισυναγαγειν τα τεκνα σου ον τροπον επισυναγει ορνις τα νοσσια εαυτης υπο τας πτερυγας και ουκ ηθελησατε
³⁸ιδου αφιεται υμιν ο οικος υμων ερημος
³⁹λεγω γαρ υμιν ου μη με ιδητε απ αρτι εως αν ειπητε ευλογημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυριου

Chapter 24

- ¹ και εξελθων ο ιησους επορευετο απο του ιερου και προσηλθον οι μαθηται αυτου επιδειξαι αυτω τας οικοδομας του ιερου
- ² ο δε ιησους ειπεν αυτοις ου βλεπετε παντα ταυτα αμην λεγω υμιν ου μη αφεθη ωδε λιθος επι λιθον ος ου μη καταλυθησεται
- ³ καθημενου δε αυτου επι του ορους των ελαιων προσηλθον αυτω οι μαθηται κατ ιδιαν λεγοντες ειπε ημιν ποτε ταυτα εσται και τι το σημειον της σης παρουσιας και της συντελειας του αιωνος
- ⁴ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις βλεπετε μη τις υμας πλανηση
- ⁵ πολλοι γαρ ελευσονται επι τω ονοματι μου λεγοντες εγω ειμι ο χριστος και πολλους πλανησουσιν
- ⁶ μελλησετε δε ακουειν πολεμους και ακοας πολεμων ορατε μη θροεισθε δει γαρ παντα γενεσθαι αλλ ουπω εστιν το τελος
- ⁷ εγερθησεται γαρ εθνος επι εθνος και βασιλεια επι βασιλειαν και εσονται λιμοι και λοιμοι και σεισμοι κατα τοπους
- ⁸ παντα δε ταυτα αρχη ωδινων
- ⁹ τοτε παραδωσουσιν υμας εις θλιψιν και αποκτενουσιν υμας και εσεσθε μισουμενοι υπο παντων των εθνων δια το ονομα μου
- ¹⁰ και τοτε σκανδαλισθησονται πολλοι και αλληλους παραδωσουσιν και μισησουσιν αλληλους
- ¹¹ και πολλοι ψευδοπροφηται εγερθησονται και πλανησουσιν πολλους
- ¹² και δια το πληθυνθηναι την ανομιαν ψυγησεται η αγαπη των πολλων
- ¹³ ο δε υπομεινας εις τελος ουτος σωθησεται
- ¹⁴ και κηρυχθησεται τουτο το ευαγγελιον της βασιλειας εν ολη τη οικουμενη εις μαρτυριον πασιν τοις εθνεσιν και τοτε ηξει το τελος
- ¹⁵ οταν ουν ιδητε το βδελυγμα της ερημωσεως το ρηθεν δια δανηλ του προφητου εστω εν τοπω αγιω ο αναγιωσκων νοειτω
- ¹⁶ τοτε οι εν τη ιουδαια φευγετωσαν επι τα ορη
- ¹⁷ ο επι του δωματος μη καταβαινετω αραι τι εκ της οικιας αυτου
- ¹⁸ και ο εν τω αγρω μη επιστρεψατω οπισω αραι τα ιματια αυτου
- ¹⁹ ουαι δε ταις εν γαστρι εχουσαις και ταις θηλαζουσαις εν εκειναις ταις ημεραις
- ²⁰ προσευχεσθε δε ινα μη γενηται η φυγη υμων χειμωνος μηδε εν σαββατω
- ²¹ εσται γαρ τοτε θλιψις μεγαλη οια ου γεγονεν απ αρχης κοσμου εως του νυν ουδ ου μη γενηται
- ²² και ει μη εκολοβωθησαν αι ημεραι εκειναι ουκ αν εσωθη πασα σαρξ δια δε τους εκλεκτους κολοβωθησονται αι ημεραι εκειναι
- ²³ τοτε εαν τις υμιν ειπη ιδου ωδε ο χριστος η ωδε μη πιστευσητε

- ²⁴εγερθησονται γαρ ψευδοχριστοι και ψευδοπροφηται και δωσουσιν σημεια μεγαλα και τερατα ωστε πλανησαι ει δυνατον και τους εκλεκτους
- ²⁵ιδου προειρηκα υμιν
- ²⁶εαν ουν ειπωσιν υμιν ιδου εν τη ερημω εστιν μη εξελθητε ιδου εν τοις ταμειοις μη πιστευσητε
- ²⁷ωσπερ γαρ η αστραπη εξερχεται απο ανατολων και φαινεται εως δυσμων ουτως εσται και η παρουσια του υιου του ανθρωπου
- ²⁸οπου γαρ εαν η το πτωμα εκει συναχθησονται οι αετοι
- ²⁹ευθεως δε μετα την θλιψιν των ημερων εκεινων ο ηλιος σκοτισθησεται και η σεληνη ου δωσει το φεγγος αυτης και οι αστερες πεσουνται απο του ουρανου και αι δυναμεις των ουρανων σαλευθησονται
- ³⁰και τοτε φανησεται το σημειον του υιου του ανθρωπου εν τω ουρανω και τοτε κοψονται πασαι αι φυλαι της γης και οψονται τον υιον του ανθρωπου ερχομενον επι των νεφελων του ουρανου μετα δυναμεως και δοξης πολλης
- ³¹και αποστελει τους αγγελους αυτου μετα σαλπιγγος φωνης μεγαλης και επισυναξουσιν τους εκλεκτους αυτου εκ των τεσσαρων ανεμων απ ακρων ουρανων εως ακρων αυτων
- ³²απο δε της συκης μαθετε την παραβολην οταν ηδη ο κλαδος αυτης γενηται απαλος και τα φυλλα εκφυη γινωσκετε οτι εγγυς το θερος
- ³³ουτως και υμεις οταν ιδητε παντα ταυτα γινωσκετε οτι εγγυς εστιν επι θυραις
- ³⁴αμην λεγω υμιν ου μη παρελθη η γενεα αυτη εως αν παντα ταυτα γενηται
- ³⁵ο ουρανος και η γη παρελευσονται οι δε λογοι μου ου μη παρελθωσιν
- ³⁶περι δε της ημερας εκεινης και της ωρας ουδεις οιδεν ουδε οι αγγελοι των ουρανων ει μη ο πατηρ μου μονος
- ³⁷ωσπερ δε αι ημεραι του νωε ουτως εσται και η παρουσια του υιου του ανθρωπου
- ³⁸ωσπερ γαρ ησαν εν ταις ημεραις ταις προ του κατακλυσμου τρωγοντες και πινοντες γαμουντες και εκγαμιζοντες αχρι ης ημερας εισηλθεν νωε εις την κιβωτον
- ³⁹και ουκ εγνωσαν εως ηλθεν ο κατακλυσμος και ηρεν απαντας ουτως εσται και η παρουσια του υιου του ανθρωπου
- ⁴⁰τοτε δυο εσονται εν τω αγρω ο εις παραλαμβανεται και ο εις αφιεται
- ⁴¹δυο αληθουσαι εν τω μυλωνι μια παραλαμβανεται και μια αφιεται
- ⁴²γρηγορειτε ουν οτι ουκ οιδατε ποια ωρα ο κυριος υμων ερχεται
- ⁴³εκεινο δε γινωσκετε οτι ει ηδει ο οικοδεσποτης ποια φυλακη ο κλεπτης ερχεται εγρηγορησεν αν και ουκ αν ειασεν διορυγηναι την οικιαν αυτου
- ⁴⁴δια τουτο και υμεις γινεσθε ετοιμοι οτι η ωρα ου δοκειτε ο υιος του ανθρωπου ερχεται
- ⁴⁵τις αρα εστιν ο πιστος δουλος και φρονιμος ον κατεστησεν ο κυριος αυτου επι της θεραπειας αυτου του διδοναι αυτοις την τροφην εν καιρω
- ⁴⁶μακαριος ο δουλος εκεινος ον ελθων ο κυριος αυτου ευρησει ποιουντα ουτως

⁴⁷ αμην λεγω υμιν οτι επι πασιν τοις υπαρχουσιν αυτου καταστησει αυτον
⁴⁸ εαν δε ειπη ο κακος δουλος εκεινος εν τη καρδια αυτου χρονιζει ο κυριος μου ελθειν
⁴⁹ και αρξηται τυπτειν τους συνδουλους εσθιειν δε και πινειν μετα των μεθουοντων
⁵⁰ ηξει ο κυριος του δουλου εκεινου εν ημερα η ου προσδοκα και εν ωρα η ου γινωσκει
⁵¹ και διχοτομησει αυτον και το μερος αυτου μετα των υποκριτων θησει εκει εσται ο κλαυθμος και ο βρυγμος των οδοντων

Chapter 25

¹τοτε ομοιωθησεται η βασιλεια των ουρανων δεκα παρθενοι αιτινες λαβουσαι τας λαμπαδας αυτων εξηλθον εις απαντησιν του νυμφιου
²πεντε δε ησαν εξ αυτων φρονιμοι και αι πεντε μωραι
³αιτινες μωραι λαβουσαι τας λαμπαδας εαυτων ουκ ελαβον μεθ εαυτων ελαιον
⁴αι δε φρονιμοι ελαβον ελαιον εν τοις αγγειοις αυτων μετα των λαμπαδων αυτων
⁵χρονιζοντος δε του νυμφιου ενυσταξαν πασαι και εκαθευδον
⁶μεσης δε νυκτος κραυγη γεγονεν ιδου ο νυμφιος ερχεται εξερχεσθε εις απαντησιν αυτου
⁷τοτε ηγερθησαν πασαι αι παρθενοι εκειναι και εκοσμησαν τας λαμπαδας αυτων
⁸αι δε μωραι ταις φρονιμοις ειπον δοτε ημιν εκ του ελαιου υμων οτι αι λαμπαδες ημων σβεννυνται
⁹απεκριθησαν δε αι φρονιμοι λεγουσαι μηποτε ουκ αρκεση ημιν και υμιν πορευεσθε δε μαλλον προς τους πωλουντας και αγορασατε εαυταις
¹⁰απερχομενων δε αυτων αγορασαι ηλθεν ο νυμφιος και αι ετοιμοι εισηλθον μετ αυτου εις τους γαμους και εκλεισθη η θυρα
¹¹υστερον δε ερχονται και αι λοιπαι παρθενοι λεγουσαι κυριε κυριε ανοιξον ημιν
¹²ο δε αποκριθεις ειπεν αμην λεγω υμιν ουκ οιδα υμας
¹³γρηγορειτε ουν οτι ουκ οιδατε την ημεραν ουδε την ωραν εν η ο υιος του ανθρωπου ερχεται
¹⁴ωσπερ γαρ ανθρωπος αποδημων εκαλεσεν τους ιδιους δουλους και παρεδωκεν αυτοις τα υπαρχοντα αυτου
¹⁵και ω μεν εδωκεν πεντε ταλαντα ω δε δυο ω δε εν εκαστω κατα την ιδιαν δυναμιν και απεδημησεν ευθεως
¹⁶πορευθεις δε ο τα πεντε ταλαντα λαβων ειργασατο εν αυτοις και εποιησεν αλλα πεντε ταλαντα
¹⁷ωσαυτως και ο τα δυο εκερδησεν και αυτος αλλα δυο
¹⁸ο δε το εν λαβων απελθων ωρυξεν εν τη γη και απεκρυψεν το αργυριον του κυριου αυτου
¹⁹μετα δε χρονον πολυν ερχεται ο κυριος των δουλων εκεινων και συναρει μετ αυτων λογον
²⁰και προσελθων ο τα πεντε ταλαντα λαβων προσηνεγκεν αλλα πεντε ταλαντα λεγων κυριε πεντε ταλαντα μοι παρεδωκας ιδε αλλα πεντε ταλαντα εκερδησα επ αυτοις
²¹εφη δε αυτω ο κυριος αυτου ευ δουλε αγαθε και πιστε επι ολιγα ης πιστος επι πολλων σε καταστησω εισελθε εις την χαραν του κυριου σου
²²προσελθων δε και ο τα δυο ταλαντα λαβων ειπεν κυριε δυο ταλαντα μοι παρεδωκας ιδε αλλα δυο ταλαντα εκερδησα επ αυτοις
²³εφη αυτω ο κυριος αυτου ευ δουλε αγαθε και πιστε επι ολιγα ης πιστος επι πολλων σε καταστησω εισελθε εις την χαραν του κυριου σου

- ²⁴προσελθων δε και ο το εν ταλαντον ειληφως ειπεν κυριε εγνων σε οτι σκληρος ει ανθρωπος θεριζων οπου ουκ εσπειρας και συναγων οθεν ου διεσκορπισας
- ²⁵και φοβηθεις απελθων εκρυψα το ταλαντον σου εν τη γη ιδε εχεις το σον
- ²⁶αποκριθεις δε ο κυριος αυτου ειπεν αυτω πονηρε δουλε και οκνηρε ηδεις οτι θεριζω οπου ουκ εσπειρα και συναγω οθεν ου διεσκορπισα
- ²⁷εδει ουν σε βαλειν το αργυριον μου τοις τραπεζιταις και ελθων εγω εκομισαμην αν το εμον συν τοκω
- ²⁸αρατε ουν απ αυτου το ταλαντον και δοτε τω εχοντι τα δεκα ταλαντα
- ²⁹τω γαρ εχοντι παντι δοθησεται και περισσευθησεται απο δε του μη εχοντος και ο εχει αρθησεται απ αυτου
- ³⁰και τον αχρειον δουλων εκβαλλετε εις το σκοτος το εξωτερων εκει εσται ο κλαυθμος και ο βρυγμος των οδοντων
- ³¹οταν δε ελθη ο υιος του ανθρωπου εν τη δοξη αυτου και παντες οι αγιοι αγγελοι μετ αυτου τοτε καθισει επι θρονου δοξης αυτου
- ³²και συναχθησεται εμπροσθεν αυτου παντα τα εθνη και αφορει αυτους απ αλληλων ωσπερ ο ποιμην αφοριζει τα προβατα απο των εριφων
- ³³και στησει τα μεν προβατα εκ δεξιων αυτου τα δε εριφια εξ ευωνυμων
- ³⁴τοτε ερει ο βασιλευς τοις εκ δεξιων αυτου δευτε οι ευλογημενοι του πατρος μου κληρονομησατε την ητοιμασμενην υμιν βασιλειαν απο καταβολης κοσμου
- ³⁵επεινασα γαρ και εδωκατε μοι φαγειν εδιψησα και εποτισατε με ξενος ημην και συνηγαγετε με
- ³⁶γυμνος και περιεβαλετε με ησθηνησα και επεσκεψασθε με εν φυλακη ημην και ηλθετε προς με
- ³⁷τοτε αποκριθησονται αυτω οι δικαιοι λεγοντες κυριε ποτε σε ειδομεν πεινωντα και εθρεψαμεν η διψωντα και εποτισαμεν
- ³⁸ποτε δε σε ειδομεν ξενον και συνηγαγομεν η γυμνον και περιεβαλομεν
- ³⁹ποτε δε σε ειδομεν ασθηνη η εν φυλακη και ηλθομεν προς σε
- ⁴⁰και αποκριθεις ο βασιλευς ερει αυτοις αμην λεγω υμιν εφ οσον εποιησατε ενι τουτων των αδελφων μου των ελαχιστων εμοι εποιησατε
- ⁴¹τοτε ερει και τοις εξ ευωνυμων πορευεσθε απ εμου οι κατηραμενοι εις το πυρ το αιωνιον το ητοιμασμενον τω διαβολω και τοις αγγελιοις αυτου
- ⁴²επεινασα γαρ και ουκ εδωκατε μοι φαγειν εδιψησα και ουκ εποτισατε με
- ⁴³ξενος ημην και ου συνηγαγετε με γυμνος και ου περιεβαλετε με ασθηνης και εν φυλακη και ουκ επεσκεψασθε με
- ⁴⁴τοτε αποκριθησονται αυτω και αυτοι λεγοντες κυριε ποτε σε ειδομεν πεινωντα η διψωντα η ξενον η γυμνον η ασθηνη η εν φυλακη και ου διηκονησαμεν σοι
- ⁴⁵τοτε αποκριθησεται αυτοις λεγων αμην λεγω υμιν εφ οσον ουκ εποιησατε ενι τουτων των ελαχιστων ουδε εμοι εποιησατε

⁴⁶ και απελευσονται ουτοι εις κολασιν αιωνιον οι δε δικαιοι εις ζωην αιωνιον

Chapter 26

- ¹ και εγενετο οτε ετελεσεν ο ιησους παντας τους λογους τουτους ειπεν τοις μαθηταις αυτου
- ² οιδατε οτι μετα δυο ημερας το πασχα γινεται και ο υιος του ανθρωπου παραδιδοται εις το σταυρωθηναι
- ³ τοτε συνηχθησαν οι αρχιερεις και οι γραμματεις και οι πρεσβυτεροι του λαου εις την αυλην του αρχιερεως του λεγομενου καιαφα
- ⁴ και συνεβουλευσαντο ινα τον ιησουν κρατησωσιν δολω και αποκτεινωσιν
- ⁵ ελεγον δε μη εν τη εορτη ινα μη θορυβος γενηται εν τω λαω
- ⁶ του δε ιησου γενομενου εν βηθανια εν οικια σιμωνος του λεπρου
- ⁷ προσηλθεν αυτω γυνη αλαβαστρον μυρου εχουσα βαρυτιμου και κατεχεεν επι την κεφαλην αυτου ανακειμενου
- ⁸ ιδοντες δε οι μαθηται αυτου ηγανακτησαν λεγοντες εις τι η απωλεια αυτη
- ⁹ ηδυνατο γαρ τουτο το μυρον πραθηναι πολλου και δοθηναι πτωχοις
- ¹⁰ γνους δε ο ιησους ειπεν αυτοις τι κοπους παρεχετε τη γυναικι εργον γαρ καλον ειργασατο εις εμε
- ¹¹ παντοτε γαρ τους πτωχους εχετε μεθ εαυτων εμε δε ου παντοτε εχετε
- ¹² βαλουσα γαρ αυτη το μυρον τουτο επι του σωματος μου προς το ενταφιασαι με εποιησεν
- ¹³ αμην λεγω υμιν οπου εαν κηρυχθη το ευαγγελιον τουτο εν ολω τω κοσμω λαληθησεται και ο εποιησεν αυτη εις μνημοσυνον αυτης
- ¹⁴ τοτε πορευθεις εις των δωδεκα ο λεγομενος ιουδας ισκαριωτης προς τους αρχιερεις
- ¹⁵ ειπεν τι θελετε μοι δουναι καγω υμιν παραδωσω αυτον οι δε εστησαν αυτω τριακοντα αργυρια
- ¹⁶ και απο τοτε εζητει ευκαιριαν ινα αυτον παραδω
- ¹⁷ τη δε πρωτη των αζυμων προσηλθον οι μαθηται τω ιησου λεγοντες αυτω που θελεις ετοιμασωμεν σοι φαγειν το πασχα
- ¹⁸ ο δε ειπεν υπαγετε εις την πολιν προς τον δεινα και ειπατε αυτω ο διδασκαλος λεγει ο καιρος μου εγγυς εστιν προς σε ποιω το πασχα μετα των μαθητων μου
- ¹⁹ και εποιησαν οι μαθηται ως συνεταξεν αυτοις ο ιησους και ητοιμασαν το πασχα
- ²⁰ οψιας δε γενομενης ανεκειτο μετα των δωδεκα
- ²¹ και εσθιοντων αυτων ειπεν αμην λεγω υμιν οτι εις εξ υμων παραδωσει με
- ²² και λυπουμενοι σφοδρα ηρξαντο λεγειν αυτω εκαστος αυτων μητι εγω ειμι κυριε
- ²³ ο δε αποκριθεις ειπεν ο εμβασφας μετ εμου εν τω τρυβλιω την χειρα ουτος με παραδωσει
- ²⁴ ο μεν υιος του ανθρωπου υπαγει καθως γεγραπται περι αυτου ουαι δε τω ανθρωπω εκεινω δι ου ο υιος του ανθρωπου παραδιδοται καλον ην αυτω ει ουκ εγεννηθη ο ανθρωπος εκεινος
- ²⁵ αποκριθεις δε ιουδας ο παραδιδους αυτον ειπεν μητι εγω ειμι ραββι λεγει αυτω συ ειπας

²⁶ εσθιοντων δε αυτων λαβων ο ιησους τον αρτον και ευλογησας εκλασεν και εδιδου τοις μαθηταις και ειπεν λαβετε φαγετε τουτο εστιν το σωμα μου
²⁷ και λαβων το ποτηριον και ευχαριστησας εδωκεν αυτοις λεγων πιετε εξ αυτου παντες
²⁸ τουτο γαρ εστιν το αιμα μου το της καινης διαθηκης το περι πολλων εκχυνομενον εις αφεσιν αμαρτιων
²⁹ λεγω δε υμιν οτι ου μη πιω απ αρτι εκ τουτου του γεννηματος της αμπελου εως της ημερας εκεινης οταν αυτο πινω μεθ υμων καινον εν τη βασιλεια του πατρος μου
³⁰ και υμνησαντες εξηλθον εις το ορος των ελαιων
³¹ τοτε λεγει αυτοις ο ιησους παντες υμεις σκανδαλισθησεσθε εν εμοι εν τη νυκτι ταυτη γεγραπται γαρ παταξω τον ποιμενα και διασκορπισθησεται τα προβατα της ποιμνης
³² μετα δε το εγερθηναι με προαξω υμας εις την γαλιλαιαν
³³ αποκριθεις δε ο πετρος ειπεν αυτω ει και παντες σκανδαλισθησονται εν σοι εγω ουδεποτε σκανδαλισθησομαι
³⁴ εφη αυτω ο ιησους αμην λεγω σοι οτι εν ταυτη τη νυκτι πριν αλεκτορα φωνησαι τρις απαρνηση με
³⁵ λεγει αυτω ο πετρος καν δεη με συν σοι αποθανειν ου μη σε απαρνησομαι ομοιως και παντες οι μαθηται ειπον
³⁶ τοτε ερχεται μετ αυτων ο ιησους εις χωριον λεγομενον γεθσημανη και λεγει τοις μαθηταις καθισατε αυτου εως ου απελθων προσευξωμαι εκει
³⁷ και παραλαβων τον πετρον και τους δυο υιους ζεβεδαιου ηρξατο λυπεισθαι και αδημονειν
³⁸ τοτε λεγει αυτοις περιλυπος εστιν η ψυχη μου εως θανατου μεινατε ωδε και γρηγορειτε μετ εμου
³⁹ και προελθων μικρον επεσεν επι προσωπον αυτου προσευχομενος και λεγων πατερ μου ει δυνατον εστιν παρελθετω απ εμου το ποτηριον τουτο πλην ουχ ως εγω θελω αλλ ως συ
⁴⁰ και ερχεται προς τους μαθητας και ευρισκει αυτους καθευδοντας και λεγει τω πετρω ουτως ουκ ισχυσατε μιαν ωραν γρηγορησαι μετ εμου
⁴¹ γρηγορειτε και προσευχεσθε ινα μη εισελθητε εις πειρασμον το μεν πνευμα προθυμον η δε σαρξ ασθενης
⁴² παλιν εκ δευτερου απελθων προσηυξατο λεγων πατερ μου ει ου δυναται τουτο το ποτηριον παρελθειν απ εμου εαν μη αυτο πιω γενηθητω το θελημα σου
⁴³ και ελθων ευρισκει αυτους παλιν καθευδοντας ησαν γαρ αυτων οι οφθαλμοι βεβαρημενοι
⁴⁴ και αφεις αυτους απελθων παλιν προσηυξατο εκ τριτου τον αυτον λογον ειπων
⁴⁵ τοτε ερχεται προς τους μαθητας αυτου και λεγει αυτοις καθευδετε το λοιπον και αναπαυεσθε ιδου ηγγικεν η ωρα και ο υιος του ανθρωπου παραδιδοται εις χειρας αμαρτων
⁴⁶ εγειρεσθε αγωμεν ιδου ηγγικεν ο παραδιδους με

- ⁴⁷ και ετι αυτου λαουντος ιδου ιουδας εις των δωδεκα ηλθεν και μετ αυτου οχλος πολυς μετα μαχαιρων και ξυλων απο των αρχιερων και πρεσβυτερων του λαου
- ⁴⁸ ο δε παραδιδους αυτον εδωκεν αυτοις σημειον λεγων ον αν φιλησω αυτος εστιν κρατησατε αυτον
- ⁴⁹ και ευθεως προσελθων τω ιησου ειπεν χαιρε ραββι και κατεφιλησεν αυτον
- ⁵⁰ ο δε ιησους ειπεν αυτω εταιρε εφ ω παρει τοτε προσελθοντες επεβαλον τας χειρας επι τον ιησουν και εκρατησαν αυτον
- ⁵¹ και ιδου εις των μετα ιησου εκτεινας την χειρα απεσπασεν την μαχαιραν αυτου και παταξας τον δουλον του αρχιερεως αφειλεν αυτου το ωτιον
- ⁵² τοτε λεγει αυτω ο ιησους αποστρεψον σου την μαχαιραν εις τον τοπον αυτης παντες γαρ οι λαβοντες μαχαιραν εν μαχαιρα απολουνται
- ⁵³ η δοκεισ οτι ου δυναμαι αρτι παρακαλεσαι τον πατερα μου και παραστησει μοι πλειους η δωδεκα λεγεωνας αγγελων
- ⁵⁴ πως ουν πληρωθωσιν αι γραφαι οτι ουτως δει γενεσθαι
- ⁵⁵ εν εκεινη τη ωρα ειπεν ο ιησους τοις οχλοις ως επι ληστην εξηλθετε μετα μαχαιρων και ξυλων συλλαβειν με καθ ημεραν προς υμας εκαθεζομην διδασκων εν τω ιερω και ουκ εκρατησατε με
- ⁵⁶ τουτο δε ολον γεγονεν ινα πληρωθωσιν αι γραφαι των προφητων τοτε οι μαθηται παντες αφεντες αυτον εφυγον
- ⁵⁷ οι δε κρατησαντες τον ιησουν απηγαγον προς καιαφαν τον αρχιερα οπου οι γραμματεις και οι πρεσβυτεροι συνηχθησαν
- ⁵⁸ ο δε πετρος ηκολουθει αυτω απο μακροθεν εως της αυλης του αρχιερεως και εισελθων εσω εκαθητο μετα των υπηρετων ιδειν το τελος
- ⁵⁹ οι δε αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι και το συνεδριον ολον εζητουν ψευδομαρτυριαν κατα του ιησου οπως αυτον θανατωσωσιν
- ⁶⁰ και ουχ ευρον και πολλων ψευδομαρτυρων προσελθοντων ουχ ευρον
- ⁶¹ υστερον δε προσελθοντες δυο ψευδομαρτυρες ειπον ουτος εφη δυναμαι καταλυσαι τον ναον του θεου και δια τριων ημερων οικοδομησαι αυτον
- ⁶² και αναστας ο αρχιερευς ειπεν αυτω ουδεν αποκρινη τι ουτοι σου καταμαρτυρουσιν
- ⁶³ ο δε ιησους εσιωπα και αποκριθεις ο αρχιερευς ειπεν αυτω εξορκιζω σε κατα του θεου του ζωντος ινα ημιν ειπης ει συ ει ο χριστος ο υιος του θεου
- ⁶⁴ λεγει αυτω ο ιησους συ ειπας πλην λεγω υμιν απ αρτι οψεσθε τον υιον του ανθρωπου καθημενον εκ δεξιων της δυναμεως και ερχομενον επι των νεφελων του ουρανου
- ⁶⁵ τοτε ο αρχιερευς διερρηξεν τα ιματια αυτου λεγων οτι εβλασφημησεν τι ετι χρειαν εχομεν μαρτυρων ιδε νυν ηκουσατε την βλασφημιαν αυτου
- ⁶⁶ τι υμιν δοκει οι δε αποκριθεντες ειπον ενοχος θανατου εστιν
- ⁶⁷ τοτε ενεπτυσαν εις το προσωπον αυτου και εκολαφισαν αυτον οι δε ερραπισαν
- ⁶⁸ λεγοντες προφητευσον ημιν χριστε τις εστιν ο παισας σε

⁶⁹ ο δε πετρος εξω εκαθητο εν τη αυλη και προσηλθεν αυτω μια παιδισκη λεγουσα και συ ησθα μετα ιησου του γαλιλαιου

⁷⁰ ο δε ηρνησατο εμπροσθεν παντων λεγων ουκ οιδα τι λεγεις

⁷¹ εξελθοντα δε αυτον εις τον πυλωνα ειδεν αυτον αλλη και λεγει τοις εκει και ουτος ην μετα ιησου του ναζωραιου

⁷² και παλιν ηρνησατο μεθ ορκου οτι ουκ οιδα τον ανθρωπον

⁷³ μετα μικρον δε προσελθοντες οι εστωτες ειπον τω πετρω αληθως και συ εξ αυτων ει και γαρ η λαλια σου δηλον σε ποιει

⁷⁴ τοτε ηρξατο καταναθεματιζειν και ομνυειν οτι ουκ οιδα τον ανθρωπον και ευθεως αλεκτωρ εφωνησεν

⁷⁵ και εμνησθη ο πετρος του ρηματος του ιησου ειρηκοτος αυτω οτι πριν αλεκτορα φωνησαι τρις απαρνηση με και εξελθων εξω εκλαυσεν πικρως

Chapter 27

- ¹πρωιας δε γενομενης συμβουλιον ελαβον παντες οι αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι του λαου κατα του ιησου ωστε θανατωσαι αυτον
- ²και δησαντες αυτον απηγαγον και παρεδωκαν αυτον ποντιω πιλατω τω ηγεμονι
- ³τοτε ιδων ιουδας ο παραδιδους αυτον οτι κατεκριθη μεταμεληθεις απεστρεψεν τα τριακοντα αργυρια τοις αρχιερευσιν και τοις πρεσβυτεροις
- ⁴λεγων ημαρτον παραδους αιμα αθων οι δε ειπον τι προς ημας συ οψει
- ⁵και ριψας τα αργυρια εν τω ναω ανεχωρησεν και απελθων απηγγατο
- ⁶οι δε αρχιερεις λαβοντες τα αργυρια ειπον ουκ εξεστιν βαλειν αυτα εις τον κορβαναν επει τιμη αιματος εστιν
- ⁷συμβουλιον δε λαβοντες ηγορασαν εξ αυτων τον αγρον του κεραμεως εις ταφην τοις ξενοις
- ⁸διο εκληθη ο αγρος εκεινος αγρος αιματος εως της σημερον
- ⁹τοτε πληρωθη το ρηθεν δια ιερεμιου του προφητου λεγοντος και ελαβον τα τριακοντα αργυρια την τιμην του τετιμημενου ον ετιμησαντο απο υιων ισραηλ
- ¹⁰και εδωκαν αυτα εις τον αγρον του κεραμεως καθα συνεταξεν μοι κυριος
- ¹¹ο δε ιησους εστη εμπροσθεν του ηγεμονος και επηρωτησεν αυτον ο ηγεμων λεγων συ ει ο βασιλευς των ιουδαιων ο δε ιησους εφη αυτω συ λεγεις
- ¹²και εν τω κατηγορεισθαι αυτον υπο των αρχιερων και των πρεσβυτερων ουδεν απεκρινατο
- ¹³τοτε λεγει αυτω ο πιλατος ουκ ακουεις ποσα σου καταμαρτυρουσιν
- ¹⁴και ουκ απεκριθη αυτω προς ουδε εν ρημα ωστε θαυμαζειν τον ηγεμονα λιαν
- ¹⁵κατα δε εορτην ειωθει ο ηγεμων απολυειν ενα τω οχλω δεσμιον ον ηθελον
- ¹⁶ειχον δε τοτε δεσμιον επισημον λεγομενον βαραββαν
- ¹⁷συνηγγμενων ουν αυτων ειπεν αυτοις ο πιλατος τινα θελετε απολυσω υμιν βαραββαν η ιησουν τον λεγομενον χριστον
- ¹⁸ηδει γαρ οτι δια φθονον παρεδωκαν αυτον
- ¹⁹καθημενου δε αυτου επι του βηματος απεστειλεν προς αυτον η γυνη αυτου λεγουσα μηδεν σοι και τω δικαιω εκεινω πολλα γαρ επαθον σημερον κατ οναρ δι αυτον
- ²⁰οι δε αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι επεισαν τους οχλους ινα αιτησωνται τον βαραββαν τον δε ιησουν απολεσωσιν
- ²¹αποκριθεις δε ο ηγεμων ειπεν αυτοις τινα θελετε απο των δυο απολυσω υμιν οι δε ειπον βαραββαν
- ²²λεγει αυτοις ο πιλατος τι ουν ποιησω ιησουν τον λεγομενον χριστον λεγουσιν αυτω παντες σταυρωθητω
- ²³ο δε ηγεμων εφη τι γαρ κακον εποιησεν οι δε περισσως εκραζον λεγοντες σταυρωθητω

²⁴ιδων δε ο πιλατος οτι ουδεν ωφελει αλλα μαλλον θορυβος γινεται λαβων υδωρ απενιψατο
 τας χειρας απεναντι του οχλου λεγων αθως ειμι απο του αιματος του δικαιου τουτου
 υμεις οψεσθε
²⁵και αποκριθεις πας ο λαος ειπεν το αιμα αυτου εφ ημας και επι τα τεκνα ημων
²⁶τοτε απελυσεν αυτοις τον βαραββαν τον δε ιησουν φραγελλωσας παρεδωκεν ινα
 σταυρωθη
²⁷τοτε οι στρατιωται του ηγεμονος παραλαβοντες τον ιησουν εις το πραιτωριον συνηγαγον
 επ αυτον ολην την σπειραν
²⁸και εκδυσαντες αυτον περιεθηκαν αυτω χλαμυδα κοκκινην
²⁹και πλεξαντες στεφανον εξ ακανθων επεθηκαν επι την κεφαλην αυτου και καλαμον επι
 την δεξιαν αυτου και γονυπετησαντες εμπροσθεν αυτου ενεπαιζον αυτω λεγοντες χαιρε
 ο βασιλευς των ιουδαιων
³⁰και εμπτυσαντες εις αυτον ελαβον τον καλαμον και ετυπτον εις την κεφαλην αυτου
³¹και οτε ενεπαιζαν αυτω εξεδυσαν αυτον την χλαμυδα και ενεδυσαν αυτον τα ιματια
 αυτου και απηγαγον αυτον εις το σταυρωσαι
³²εξερχομενοι δε ευρον ανθρωπον κυρηναιον ονοματι σιμωνα τουτον ηγγαρευσαν ινα
 αρη τον σταυρον αυτου
³³και ελθοντες εις τοπον λεγομενον γολγοθα ος εστιν λεγομενος κρανιου τοπος
³⁴εδωκαν αυτω πειν οξος μετα χολης μεμιγμενον και γευσαμενος ουκ ηθελεν πειν
³⁵σταυρωσαντες δε αυτον διεμερισαντο τα ιματια αυτου βαλλοντες κληρον ινα πληρωθη
 το ρηθεν υπο του προφητου διεμερισαντο τα ιματια μου εαυτοις και επι τον ιματισμον μου
 εβαλον κληρον
³⁶και καθημενοι ετηρουν αυτον εκει
³⁷και επεθηκαν επανω της κεφαλης αυτου την αιτιαν αυτου γεγραμμενην ουτος εστιν
 ιησους ο βασιλευς των ιουδαιων
³⁸τοτε σταυρουνται συν αυτω δυο λησται εις εκ δεξιων και εις εξ ευωνυμων
³⁹οι δε παραπορευομενοι εβλασφημουν αυτον κινουντες τας κεφαλαις αυτων
⁴⁰και λεγοντες ο καταλυων τον ναον και εν τρισιν ημεραις οικοδομων σωσον σεαυτον ει
 υιος ει του θεου καταβηθι απο του σταυρου
⁴¹ομοιως δε και οι αρχιερεις εμπαιζοντες μετα των γραμματεων και πρεσβυτερων ελεγον
⁴²αλλους εσωσεν εαυτον ου δυναται σωσαι ει βασιλευς ισραηλ εστιν καταβατω νυν απο
 του σταυρου και πιστευσομεν αυτω
⁴³πεποιθεν επι τον θεον ρυσασθω νυν αυτον ει θελει αυτον ειπεν γαρ οτι θεου ειμι υιος
⁴⁴το δ αυτο και οι λησται οι συσταυρωθεντες αυτω ωνειδιζον αυτω
⁴⁵απο δε εκτης ωρας σκοτος εγενετο επι πασαν την γην εως ωρας εννατης
⁴⁶περι δε την εννατην ωραν ανεβοησεν ο ιησους φωνη μεγαλη λεγων ηλι ηλι λαμα
 σαβαχθανι τουτ εστιν θεε μου θεε μου ινατι με εγκατελιπες

- ⁴⁷τινες δε των εκει εστωτων ακουσαντες ελεγον οτι ηλιαν φωνει ουτος
⁴⁸και ευθεως δραμων εις εξ αυτων και λαβων σπογγον πλησας τε οξους και περιθεις
καλαμω εποτιζεν αυτον
⁴⁹οι δε λοιποι ελεγον αφες ιδωμεν ει ερχεται ηλιας σωσων αυτον
⁵⁰ο δε ιησους παλιν κραξας φωνη μεγαλη αφηκεν το πνευμα
⁵¹και ιδου το καταπετασμα του ναου εσχισθη εις δυο απο ανωθεν εως κατω και η γη εσεισθη
και αι πετραι εσχισθησαν
⁵²και τα μνημεια ανεωχθησαν και πολλα σωματα των κεκοιμημενων αγιων ηγερθη
⁵³και εξελθοντες εκ των μνημειων μετα την εγερσιν αυτου εισηλθον εις την αγιαν πολιν
και ενεφανισθησαν πολλοις
⁵⁴ο δε εκατονταρχος και οι μετ αυτου τηρουντες τον ιησουν ιδοντες τον σεισμον και τα
γενομενα εφοβηθησαν σφοδρα λεγοντες αληθως θεου υιος ην ουτος
⁵⁵ησαν δε εκει γυναικες πολλαι απο μακροθεν θεωρουσαι αιτινες ηκολουθησαν τω ιησου
απο της γαλιλαιας διακονουσαι αυτω
⁵⁶εν αις ην μαρια η μαγδαληνη και μαρια η του ιακωβου και ιωση μητηρ και η μητηρ των
υιων ζεβεδαιου
⁵⁷οψιας δε γενομενης ηλθεν ανθρωπος πλουσιος απο αριμαθαιας τουνομα ιωσηφ ος και
αυτος εμαθητευσεν τω ιησου
⁵⁸ουτος προσελθων τω πιλατω ητησατο το σωμα του ιησου τοτε ο πιλατος εκελευσεν
αποδοθηναι το σωμα
⁵⁹και λαβων το σωμα ο ιωσηφ ενετυλιξεν αυτο σινδονι καθαρα
⁶⁰και εθηκεν αυτο εν τω καινω αυτου μνημειω ο ελατομησεν εν τη πετρα και προσκυλισας
λιθον μεγαν τη θυρα του μνημειου απηλθεν
⁶¹ην δε εκει μαρια η μαγδαληνη και η αλλη μαρια καθημεναι απεναντι του ταφου
⁶²τη δε επαυριον ητις εστιν μετα την παρασκευην συνηχθησαν οι αρχιερεις και οι φαρισαιοι
προς πιλατον
⁶³λεγοντες κυριε εμνησθημεν οτι εκεινος ο πλανος ειπεν ετι ζων μετα τρεις ημερας
εγειρομαι
⁶⁴κελευσον ουν ασφαλισθηναι τον ταφον εως της τριτης ημερας μηποτε ελθοντες οι
μαθηται αυτου νυκτος κλειψωσιν αυτον και ειπωσιν τω λαω ηγερθη απο των νεκρων και
εσται η εσχατη πλανη χειρων της πρωτης
⁶⁵εφη δε αυτοις ο πιλατος εχετε κουστωδιαν υπαγετε ασφαλισασθε ως οιδατε
⁶⁶οι δε πορευθεντες ησφαλισαντο τον ταφον σφραγισαντες τον λιθον μετα της κουστωδιας

Chapter 28

¹οψε δε σαββατων τη επιφωσκουση εις μιαν σαββατων ηλθεν μαρια η μαγδαληνη και η αλλη μαρια θεωρησαι τον ταφον
²και ιδου σεισμος εγενετο megas αγγελος γαρ κυριου καταβας εξ ουρανου προσελθων απεκυλισεν τον λιθον απο της θυρας και εκαθητο επανω αυτου
³ην δε η ιδεα αυτου ως αστραπη και το ενδυμα αυτου λευκον ωσει χιων
⁴απο δε του φοβου αυτου εσεισθησαν οι τηρουντες και εγενοντο ωσει νεκροι
⁵αποκριθεις δε ο αγγελος ειπεν ταις γυναιξιν μη φοβεισθε υμεις οιδα γαρ οτι ιησουν τον εσταυρωμενον ζητειτε
⁶ουκ εστιν ωδε ηγερθη γαρ καθως ειπεν δευτε ιδετε τον τοπον οπου εκειτο ο κυριος
⁷και ταχυ πορευθεισαι ειπατε τοις μαθηταις αυτου οτι ηγερθη απο των νεκρων και ιδου προαγει υμας εις την γαλιλαιαν εκει αυτον οψεσθε ιδου ειπον υμιν
⁸και εξελθουσαι ταχυ απο του μνημειου μετα φοβου και χαρας μεγαλης εδραμον απαγγελιαι τοις μαθηταις αυτου
⁹ως δε επορευοντο απαγγελιαι τοις μαθηταις αυτου και ιδου ο ιησους απηνητησεν αυταις λεγων χαιρετε αι δε προσελθουσαι εκρατησαν αυτου τους ποδας και προσεκυνησαν αυτω
¹⁰τοτε λεγει αυταις ο ιησους μη φοβεισθε υπαγετε απαγγειλατε τοις αδελφοις μου ινα απελθωσιν εις την γαλιλαιαν κακει με οψονται
¹¹πορευομενων δε αυτων ιδου τινες της κουστωδιας ελθοντες εις την πολιν απηγγειλαν τοις αρχιερευσιν απαντα τα γενομενα
¹²και συναχθεντες μετα των πρεσβυτερων συμβουλιον τε λαβοντες αργυρια ικανα εδωκαν τοις στρατιωταις
¹³λεγοντες ειπατε οτι οι μαθηται αυτου νυκτος ελθοντες εκλεψαν αυτον ημων κοιμωμενων
¹⁴και εαν ακουσθη τουτο επι του ηγεμονος ημεις πεισομεν αυτον και υμας αμεριμνους ποιησομεν
¹⁵οι δε λαβοντες τα αργυρια εποιησαν ως εδιδαχθησαν και διεφημισθη ο λογος ουτος παρα ιουδαιοις μεχρι της σημερον
¹⁶οι δε ενδεκα μαθηται επορευθησαν εις την γαλιλαιαν εις το ορος ου εταξατο αυτοις ο ιησους
¹⁷και ιδοντες αυτον προσεκυνησαν αυτω οι δε εδιστασαν
¹⁸και προσελθων ο ιησους ελαλησεν αυτοις λεγων εδοθη μοι πασα εξουσια εν ουρανω και επι γης
¹⁹πορευθεντες ουν μαθητευσατε παντα τα εθνη βαπτιζοντες αυτους εις το ονομα του πατρος και του υιου και του αγιου πνευματος
²⁰διδασκοντες αυτους τηρειν παντα οσα ενετειλαμην υμιν και ιδου εγω μεθ υμων ειμι πασας τας ημερας εως της συντελειας του αιωνος αμην

Mark

Chapter 1

- ¹αρχη του ευαγγελιου ιησου χριστου υιου του θεου
²ως γεγραπται εν τοις προφηταις ιδου εγω αποστελλω τον αγγελον μου προ προσωπου σου ος κατασκευασει την οδον σου εμπροσθεν σου
³φωνη βοωντος εν τη ερημω ετοιμασατε την οδον κυριου ευθειας ποιειτε τας τριβους αυτου
⁴εγενετο ιωαννης βαπτιζων εν τη ερημω και κηρυσσων βαπτισμα μετανοιας εις αφεσιν αμαρτιων
⁵και εξεπορευετο προς αυτον πασα η ιουδαια χωρα και οι ιεροσολυμιται και εβαπτιζοντο παντες εν τω ιορδανη ποταμω υπ αυτου εξομολογουμενοι τας αμαρτιας αυτων
⁶ην δε ιωαννης ενδεδυμενος τριχας καμηλου και ζωνην δερματινην περι την οσφυν αυτου και εσθιων ακριδας και μελι αγριον
⁷και εκηρυσσεν λεγων ερχεται ο ισχυροτερος μου οπισω μου ου ουκ ειμι ικανος κυψας λυσαι τον ιμαντα των υποδηματων αυτου
⁸εγω μεν εβαπτισα υμας εν υδατι αυτος δε βαπτισει υμας εν πνευματι αγιω
⁹και εγενετο εν εκειναις ταις ημεραις ηλθεν ιησους απο ναζαρεθ της γαλιλαιας και εβαπτισθη υπο ιωαννου εις τον ιορδανην
¹⁰και ευθεως αναβαινων απο του υδατος ειδεν σχιζομενους τους ουρανους και το πνευμα ωσει περιστεραν καταβαινον επ αυτον
¹¹και φωνη εγενετο εκ των ουρανων συ ει ο υιος μου ο αγαπητος εν ω ευδοκησα
¹²και ευθυσ το πνευμα αυτον εκβαλλει εις την ερημον
¹³και ην εκει εν τη ερημω ημερας τεσσαρακοντα πειραζομενος υπο του σατανα και ην μετα των θηριων και οι αγγελοι διηκονουν αυτω
¹⁴μετα δε το παραδοθηναι τον ιωαννην ηλθεν ο ιησους εις την γαλιλαιαν κηρυσσων το ευαγγελιον της βασιλειας του θεου
¹⁵και λεγων οτι πεπληρωται ο καιρος και ηγγικεν η βασιλεια του θεου μετανοειτε και πιστευετε εν τω ευαγγελιω
¹⁶περιπατων δε παρα την θαλασσαν της γαλιλαιας ειδεν σιμωνα και ανδρεαν τον αδελφον αυτου βαλλοντας αμφιβληστρον εν τη θαλασση ησαν γαρ αλιεις
¹⁷και ειπεν αυτοις ο ιησους δευτε οπισω μου και ποιησω υμας γενεσθαι αλιεις ανθρωπων
¹⁸και ευθεως αφεντες τα δικτυα αυτων ηκολουθησαν αυτω
¹⁹και προβας εκειθεν ολιγον ειδεν ιακωβον τον του ζεβεδαιου και ιωαννην τον αδελφον αυτου και αυτους εν τω πλοιω καταρτιζοντας τα δικτυα
²⁰και ευθεως εκαλεσεν αυτους και αφεντες τον πατερα αυτων ζεβεδαιον εν τω πλοιω μετα των μισθωτων απηλθον οπισω αυτου
²¹και εισπορευονται εις καπερναουμ και ευθεως τοις σαββασιν εισελθων εις την συναγωγην εδιδασκεν

²² και εξεπλησσοντο επι τη διδαχη αυτου ην γαρ διδασκων αυτους ως εξουσιαν εχων και ουχ ως οι γραμματεις
²³ και ην εν τη συναγωγη αυτων ανθρωπος εν πνευματι ακαθαρτω και ανεκραξεν
²⁴ λεγων εα τι ημιν και σοι ιησου ναζαρηνε ηλθες απολεσαι ημας οйда σε τις ει ο αγιος του θεου
²⁵ και επετιμησεν αυτω ο ιησους λεγων φιμωθητι και εξελθε εξ αυτου
²⁶ και σπαραξαν αυτον το πνευμα το ακαθαρτον και κραξαν φωνη μεγαλη εξηλθεν εξ αυτου
²⁷ και εθαμβηθησαν παντες ωστε συζητειν προς αυτους λεγοντας τι εστιν τουτο τις η διδαχη η καινη αυτη οτι κατ εξουσιαν και τοις πνευμασιν τοις ακαθαρμοις επιτασσει και υπακουουσιν αυτω
²⁸ εξηλθεν δε η ακοη αυτου ευθως εις ολην την περιχωρον της γαλιλαιας
²⁹ και ευθεως εκ της συναγωγης εξελθοντες ηλθον εις την οικιαν σιμωνος και ανδρεου μετα ιακωβου και ιωαννου
³⁰ η δε πενθερα σιμωνος κατεκειτο πυρεσσοουσα και ευθεως λεγουσιν αυτω περι αυτης
³¹ και προσελθων ηγειρεν αυτην κρατησας της χειρος αυτης και αφηκεν αυτην ο πυρετος ευθεως και διηκονει αυτοις
³² οψιας δε γενομενης οτε εδυ ο ηλιος εφερον προς αυτον παντας τους κακως εχοντας και τους δαιμονιζομενους
³³ και η πολις ολη επισυνηγμενη ην προς την θυραν
³⁴ και εθεραπευσεν πολλους κακως εχοντας ποικιλαις νοσοις και δαιμονια πολλα εξεβαλεν και ουκ ηφιεν λαλειν τα δαιμονια οτι ηδεισαν αυτον
³⁵ και πρωι εννυχον λιαν αναστας εξηλθεν και απηλθεν εις ερημον τοπον κακει προσηυχето
³⁶ και κατεδιωξαν αυτον ο σιμων και οι μετ αυτου
³⁷ και ευροντες αυτον λεγουσιν αυτω οτι παντες ζητουσιν σε
³⁸ και λεγει αυτοις αγωμεν εις τας εχομενας κωμπολεις ινα κακει κηρυξω εις τουτο γαρ εξηληλυθα
³⁹ και ην κηρυσσων εν ταις συναγωγαίς αυτων εις ολην την γαλιλαιαν και τα δαιμονια εκβαλλων
⁴⁰ και ερχεται προς αυτον λεπρος παρακαλων αυτον και γονυπετων αυτον και λεγων αυτω οτι εαν θελης δυνασαι με καθαρισαι
⁴¹ ο δε ιησους σπλαγχνισθεις εκτεινας την χειρα ηψατο αυτου και λεγει αυτω θελω καθαρισθητι
⁴² και ειποντος αυτου ευθεως απηλθεν απ αυτου η λεπρα και εκαθαρισθη
⁴³ και εμβριμησαμενος αυτω ευθεως εξεβαλεν αυτον
⁴⁴ και λεγει αυτω ορα μηδενι μηδεν ειπης αλλ υπαγε σεαυτον δειξον τω ιερει και προσενεγκε περι του καθαρισμου σου α προσεταξεν μωσης εις μαρτυριον αυτοις

⁴⁵ο δε εξελθων ηρξατο κηρυσσειν πολλα και διαφημιζειν τον λογον ωστε μηκει αυτον δυνασθαι φανερωσ εις πολιν εισελθειν αλλ εξω εν ερημοις τοποις ην και ηρχοντο προς αυτον πανταχοθεν

Chapter 2

- ¹και παλιν εισηλθεν εις καπερναουμ δι ημερων και ηκουσθη οτι εις οικον εστιν
²και ευθεως συνηχθησαν πολλοι ωστε μηκετι χωρειν μηδε τα προς την θυραν και ελαλει αυτοις τον λογον
³και ερχονται προς αυτον παραλυτικον φεροντες αιρομενον υπο τεσσαρων
⁴και μη δυναμενοι προσεγγισαι αυτω δια τον οχλον απεστεγασαν την στεγην οπου ην και εξορυξαντες χαλωσιν τον κραββατον εν ω ο παραλυτικος κατεκειτο
⁵ιδων δε ο ιησους την πιστιν αυτων λεγει τω παραλυτικω τεκνον αφεωνται σοι αι αμαρτια σου
⁶ησαν δε τινες των γραμματεων εκει καθημενοι και διαλογιζομενοι εν ταις καρδιαις αυτων
⁷τι ουτος ουτως λαλει βλασφημιας τις δυναται αφιεναι αμαρτιας ει μη εις ο θεος
⁸και ευθεως επιγνους ο ιησους τω πνευματι αυτου οτι ουτως διαλογιζονται εν εαυτοις ειπεν αυτοις τι ταυτα διαλογιζεσθε εν ταις καρδιαις υμων
⁹τι εστιν ευκοπωτερον ειπειν τω παραλυτικω αφεωνται σοι αι αμαρτια η ειπειν εγειραι και αρον σου τον κραββατον και περιπατει
¹⁰ινα δε ειδητε οτι εξουσιαν εχει ο υιος του ανθρωπου αφιεναι επι της γης αμαρτιας λεγει τω παραλυτικω
¹¹σοι λεγω εγειραι και αρον τον κραββατον σου και υπαγε εις τον οικον σου
¹²και ηγερθη ευθεως και αρας τον κραββατον εξηλθεν εναντιον παντων ωστε εξιστασθαι παντας και δοξαζειν τον θεον λεγοντας οτι ουδεποτε ουτως ειδομεν
¹³και εξηλθεν παλιν παρα την θαλασσαν και πας ο οχλος ηρχετο προς αυτον και εδιδασκεν αυτους
¹⁴και παραγων ειδεν λευιν τον του αλφαιου καθημενον επι το τελωνιον και λεγει αυτω ακολουθει μοι και αναστας ηκολουθησεν αυτω
¹⁵και εγενετο εν τω κατακεισθαι αυτον εν τη οικια αυτου και πολλοι τελωναι και αμαρτωλοι συνανεκειντο τω ιησου και τοις μαθηταις αυτου ησαν γαρ πολλοι και ηκολουθησαν αυτω
¹⁶και οι γραμματεις και οι φαρισαιοι ιδοντες αυτον εσθιοντα μετα των τελωνων και αμαρτωλων ελεγον τοις μαθηταις αυτου τι οτι μετα των τελωνων και αμαρτωλων εσθιει και πινει
¹⁷και ακουσας ο ιησους λεγει αυτοις ου χριαν εχουσιν οι ισχυοντες ιατρου αλλ οι κακως εχοντες ουκ ηλθον καλεσαι δικαιους αλλα αμαρτωλους εις μετανοian
¹⁸και ησαν οι μαθηται ιωαννου και οι των φαρισαιων νηστευοντες και ερχονται και λεγουσιν αυτω διατι οι μαθηται ιωαννου και οι των φαρισαιων νηστεουσιν οι δε σοι μαθηται ου νηστεουσιν
¹⁹και ειπεν αυτοις ο ιησους μη δυνανται οι υιοι του νυμφωνος εν ω ο νυμφιος μετ αυτων εστιν νηστευειν οσον χρονον μεθ αυτων εχουσιν τον νυμφιον ου δυνανται νηστευειν

²⁰ ελευσονται δε ημεραι οταν απαρθη απ αυτων ο νυμφιος και τοτε νηστευσουσιν εν εκειναις ταις ημεραις

²¹ και ουδεις επιβλημα ρακους αγναφου επιραπτει επι ιματιω παλαιω ει δε μη αιρει το πληρωμα αυτου το καινον του παλαιου και χειρον σχισμα γινεται

²² και ουδεις βαλλει οινον νεον εις ασκους παλαιους ει δε μη ρησει ο οινος ο νεος τους ασκους και ο οινος εκχειται και οι ασκοι απολουνται αλλα οινον νεον εις ασκους καινους βλητεον

²³ και εγενετο παραπορευεσθαι αυτον εν τοις σαββασιν δια των σποριμων και ηρξαντο οι μαθηται αυτου οδον ποιειν τιλλοντες τους σταχυας

²⁴ και οι φαρισαιοι ελεγον αυτω ιδε τι ποιουσιν εν τοις σαββασιν ο ουκ εξεστιν

²⁵ και αυτος ελεγεν αυτοις ουδεποτε ανεγνωτε τι εποιησεν δαβιδ οτε χρειαν εσχεν και επεινασεν αυτος και οι μετ αυτου

²⁶ πως εισηλθεν εις τον οικον του θεου επι αβιαθαρ του αρχιερεως και τους αρτους της προθεσεως εφαγεν ους ουκ εξεστιν φαγειν ει μη τοις ιερουσιν και εδωκεν και τοις συν αυτω ουσιν

²⁷ και ελεγεν αυτοις το σαββατον δια τον ανθρωπον εγενετο ουχ ο ανθρωπος δια το σαββατον

²⁸ ωστε κυριος εστιν ο υιος του ανθρωπου και του σαββατου

Chapter 3

¹και εισηλθεν παλιν εις την συναγωγην και ην εκει ανθρωπος εξηραμμενην εχων την χειρα
²και παρετηρουν αυτον ει τοις σαββασιν θεραπευσει αυτον ινα κατηγορησωσιν αυτου
³και λεγει τω ανθρωπω τω εξηραμμενην εχοντι την χειρα εγειραι εις το μεσον
⁴και λεγει αυτοις εξεστιν τοις σαββασιν αγαθοποιησαι η κακοποιησαι ψυχην σωσαι η αποκτειναι οι δε εσιωπων
⁵και περιβλεψαμενος αυτους μετ οργης συλλυπουμενος επι τη πωρωσει της καρδιας αυτων λεγει τω ανθρωπω εκτεινον την χειρα σου και εξετεινεν και αποκατεσταθη η χειρ αυτου υγιης ως η αλλη
⁶και εξελθοντες οι φαρισαιοι ευθεως μετα των ηρωδιανων συμβουλιον εποιουν κατ αυτου οπως αυτον απολεσωσιν
⁷και ο ιησους ανεχωρησεν μετα των μαθητων αυτου προς την θαλασσαν και πολυ πληθος απο της γαλιλαιας ηκολουθησαν αυτω και απο της ιουδαιας
⁸και απο ιεροσολυμων και απο της ιδουμιας και περαν του ιορδανου και οι περι τυρον και σιδωνα πληθος πολυ ακουσαντες οσα εποιει ηλθον προς αυτον
⁹και ειπεν τοις μαθηταις αυτου ινα πλοιαριον προσκαρτερη αυτω δια τον οχλον ινα μη θλιβωσιν αυτον
¹⁰πολλους γαρ εθεραπευσεν ωστε επιπιπτειν αυτω ινα αυτου αφωνται οσοι ειχον μαστιγας
¹¹και τα πνευματα τα ακαθαρτα οταν αυτον εθεωρει προσεπιπτεν αυτω και εκραζεν λεγοντα οτι συ ει ο υιος του θεου
¹²και πολλα επετιμα αυτοις ινα μη αυτον φανερον ποιησωσιν
¹³και αναβαινει εις το ορος και προσκαλειται ους ηθελεν αυτος και απηλθον προς αυτον
¹⁴και εποιησεν δωδεκα ινα ωσιν μετ αυτου και ινα αποστελλη αυτους κηρυσσειν
¹⁵και εχειν εξουσιαν θεραπευειν τας νοσους και εκβαλλειν τα δαιμονια
¹⁶και επεθηκεν τω σιμωνι ονομα πετρον
¹⁷και ιακωβον τον του ζεβεδαιου και ιωαννην τον αδελφον του ιακωβου και επεθηκεν αυτοις ονοματα βοανεργες ο εστιν υιοι βροντης
¹⁸και ανδρεαν και φιλιππον και βαρθολομαιον και ματθαιον και θωμαν και ιακωβον τον του αλφαιου και θαδδαιον και σιμωνα τον κανανιτην
¹⁹και ιουδαν ισκαριωτην ος και παρεδωκεν αυτον και ερχονται εις οικον
²⁰και συνερχεται παλιν οχλος ωστε μη δυνασθαι αυτους μητε αρτον φαγειν
²¹και ακουσαντες οι παρ αυτου εξηλθον κρατησαι αυτον ελεγον γαρ οτι εξεστη
²²και οι γραμματεις οι απο ιεροσολυμων καταβαντες ελεγον οτι βεελζεβουλ εχει και οτι εν τω αρχοντι των δαιμονιων εκβαλλει τα δαιμονια
²³και προσκαλεσαμενος αυτους εν παραβολαις ελεγεν αυτοις πως δυναται σατανας σαταναν εκβαλλειν

²⁴ και εαν βασιλεια εφ εαυτην μερισθη ου δυναται σταθηναι η βασιλεια εκεινη
²⁵ και εαν οικια εφ εαυτην μερισθη ου δυναται σταθηναι η οικια εκεινη
²⁶ και ει ο σατανας ανεστη εφ εαυτον και μεμερισται ου δυναται σταθηναι αλλα τελος εχει
²⁷ ου δυναται ουδεις τα σκευη του ισχυρου εισελθων εις την οικιαν αυτου διαρπασαι εαν
μη πρωτον τον ισχυρον δηση και τοτε την οικιαν αυτου διαρπασει
²⁸ αμην λεγω υμιν οτι παντα αφεθησεται τα αμαρτηματα τοις υιοις των ανθρωπων και
βλασφημιαι οσας αν βλασφημησωσιν
²⁹ ος δ αν βλασφημηση εις το πνευμα το αγιον ουκ εχει αφεσιν εις τον αιωνα αλλ ενοχος
εστιν αιωνιου κρισεως
³⁰ οτι ελεγον πνευμα ακαθαρτον εχει
³¹ ερχονται ουν οι αδελφοι και η μητηρ αυτου και εξω εστωτες απεστειλαν προς αυτον
φωνουντες αυτον
³² και εκαθητο οχλος περι αυτον ειπον δε αυτω ιδου η μητηρ σου και οι αδελφοι σου εξω
ζητουσιν σε
³³ και απεκριθη αυτοις λεγων τις εστιν η μητηρ μου η οι αδελφοι μου
³⁴ και περιβλεψαμενος κυκλω τους περι αυτον καθημενους λεγει ιδε η μητηρ μου και οι
αδελφοι μου
³⁵ ος γαρ αν ποιηση το θελημα του θεου ουτος αδελφος μου και αδελφη μου και μητηρ
εστιν

Chapter 4

¹και παλιν ηρξατο διδασκειν παρα την θαλασσαν και συνηχθη προς αυτον οχλος πολυς
ωστε αυτον εμβαντα εις το πλοιον καθησθαι εν τη θαλασση και πας ο οχλος προς την
θαλασσαν επι της γης ην
²και εδιδασκεν αυτους εν παραβολαις πολλα και ελεγεν αυτοις εν τη διδαχη αυτου
³ακουετε ιδου εξηλθεν ο σπειρων του σπειραι
⁴και εγενετο εν τω σπειρειν ο μεν επεσεν παρα την οδον και ηλθεν τα πετεινα του ουρανου
και κατεφαγεν αυτο
⁵αλλο δε επεσεν επι το πετρωδες οπου ουκ ειχεν γην πολλην και ευθεως εξανειλεν δια
το μη εχειν βαθος γης
⁶ηλιου δε ανατειλαντος εκαυματισθη και δια το μη εχειν ριζαν εξηρανθη
⁷και αλλο επεσεν εις τας ακανθας και ανεβησαν αι ακανθαι και συνεπιξαν αυτο και
καρπον ουκ εδωκεν
⁸και αλλο επεσεν εις την γην την καλην και εδιδου καρπον αναβαινοντα και αυξανοντα
και εφερεν εν τριακοντα και εν εξηκοντα και εν εκατον
⁹και ελεγεν αυτοις ο εχων ωτα ακουειν ακουετω
¹⁰οτε δε εγενετο καταμονας ηρωτησαν αυτον οι περι αυτον συν τοις δωδεκα την παραβολην
¹¹και ελεγεν αυτοις υμιν δεδοται γνωναι το μυστηριον της βασιλειας του θεου εκεινοις
δε τοις εξω εν παραβολαις τα παντα γινεται
¹²ινα βλεποντες βλεπωσιν και μη ιδωσιν και ακουοντες ακουωσιν και μη συνιωσιν μηποτε
επιστρεψωσιν και αφεθη αυτοις τα αμαρτηματα
¹³και λεγει αυτοις ουκ οιδατε την παραβολην ταυτην και πως πασας τας παραβολας
γνωσεσθε
¹⁴ο σπειρων τον λογον σπειρει
¹⁵ουτοι δε εισιν οι παρα την οδον οπου σπειρεται ο λογος και οταν ακουσωσιν ευθεως
ερχεται ο σατανας και αιρει τον λογον τον εσπαρμενον εν ταις καρδιαις αυτων
¹⁶και ουτοι εισιν ομοιως οι επι τα πετρωδη σπειρομενοι οι οταν ακουσωσιν τον λογον
ευθεως μετα χαρας λαμβανουσιν αυτον
¹⁷και ουκ εχουσιν ριζαν εν εαυτοις αλλα προσκαιροι εισιν ειτα γενομενης θλιψεως η
διωγμου δια τον λογον ευθεως σκανδαλιζονται
¹⁸και ουτοι εισιν οι εις τας ακανθας σπειρομενοι οι τον λογον ακουοντες
¹⁹και αι μεριμναι του αιωνος τουτου και η απατη του πλουτου και αι περι τα λοιπα επιθυμια
εισπορευομεναι συμπιγουσιν τον λογον και ακαρπος γινεται
²⁰και ουτοι εισιν οι επι την γην την καλην σπαρεντες οιτινες ακουουσιν τον λογον και
παραδεχονται και καρποφορουσιν εν τριακοντα και εν εξηκοντα και εν εκατον
²¹και ελεγεν αυτοις μητι ο λυχνος ερχεται ινα υπο τον μοδιον τεθη η υπο την κλινην ουχ
ινα επι την λυχνιαν επιτεθη

- ²²ου γαρ εστιν τι κρυπτον ο εαν μη φανερωθη ουδε εγενετο αποκρυφον αλλ ινα εις φανερον ελθη
- ²³ει τις εχει ωτα ακουειν ακουετω
- ²⁴και ελεγεν αυτοις βλεπετε τι ακουετε εν ω μετρω μετρειτε μετρηθησεται υμιν και προστεθησεται υμιν τοις ακουουσιν
- ²⁵ος γαρ αν εχη δοθησεται αυτω και ος ουκ εχει και ο εχει αρθησεται απ αυτου
- ²⁶και ελεγεν ουτως εστιν η βασιλεια του θεου ως εαν ανθρωπος βαλη τον σπορον επι της γης
- ²⁷και καθευδη και εγειρηται νυκτα και ημεραν και ο σπορος βλαστανη και μηκυνηται ως ουκ οιδεν αυτος
- ²⁸αυτοματη γαρ η γη καρποφορει πρωτον χορτον ειτα σταχυν ειτα πληρη σιτον εν τω σταχυι
- ²⁹οταν δε παραδω ο καρπος ευθεως αποστελλει το δρεπανον οτι παρεστηκεν ο θερισμος
- ³⁰και ελεγεν τινι ομοιωσωμεν την βασιλειαν του θεου η εν ποια παραβολη παραβαλωμεν αυτην
- ³¹ως κοκκω σιναπεως ος οταν σπαρη επι της γης μικροτερος παντων των σπερματων εστιν των επι της γης
- ³²και οταν σπαρη αναβαινει και γινεται παντων των λαχανων μειζων και ποιει κλαδους μεγαλους ωστε δυνασθαι υπο την σκιαν αυτου τα πετεινα του ουρανου κατασκηνουν
- ³³και τοιαυταις παραβολαις πολλαις ελαλει αυτοις τον λογον καθως ηδυναντο ακουειν
- ³⁴χωρις δε παραβολης ουκ ελαλει αυτοις κατ ιδιαν δε τοις μαθηταις αυτου επελυεν παντα
- ³⁵και λεγει αυτοις εν εκεινη τη ημερα οψιας γενομενης διελθωμεν εις το περαν
- ³⁶και αφεντες τον οχλον παραλαμβανουσιν αυτον ως ην εν τω πλοιω και αλλα δε πλοιαρια ην μετ αυτου
- ³⁷και γινεται λαιλαψ ανεμου μεγαλη τα δε κυματα επεβαλλεν εις το πλοιον ωστε αυτο ηδη γεμιζεσθαι
- ³⁸και ην αυτος επι τη πρυμνη επι το προσκεφαλαιον καθευδων και διεγειρουσιν αυτον και λεγουσιν αυτω διδασκαλε ου μελει σοι οτι απολλυμεθα
- ³⁹και διεγερθεις επετιμησεν τω ανεμω και ειπεν τη θαλασση σιωπα πεφιμωσο και εκοπασεν ο ανεμος και εγενετο γαληνη μεγαλη
- ⁴⁰και ειπεν αυτοις τι δειλοι εστε ουτως πως ουκ εχετε πιστιν
- ⁴¹και εφοβηθησαν φοβον μεγαν και ελεγον προς αλληλους τις αρα ουτος εστιν οτι και ο ανεμος και η θαλασσα υπακουουσιν αυτω

Chapter 5

¹και ηλθον εις το περαν της θαλασσης εις την χωραν των γαδαρηνων
²και εξελθοντι αυτω εκ του πλοιου ευθεως απηνητησεν αυτω εκ των μνημειων ανθρωπος εν πνευματι ακαθαρτω
³ος την κατοικησιν ειχεν εν τοις μνημειοις και ουτε αλυσεσιν ουδεις ηδυνατο αυτον δησαι
⁴δια το αυτον πολλακις πεδαις και αλυσεσιν δεδεσθαι και διεσπασθαι υπ αυτου τας αλυσεις και τας πεδας συντετριφθαι και ουδεις αυτον ισχυεν δαμασαι
⁵και διαπαντος νυκτος και ημερας εν τοις ορεσιν και εν τοις μνημασιν ην κραζων και κατακοπτων εαυτον λιθοις
⁶ιδων δε τον ιησουν απο μακροθεν εδραμεν και προσεκυνησεν αυτω
⁷και κραξας φωνη μεγαλη ειπεν τι εμοι και σοι ιησου υιε του θεου του υψιστου ορκιζω σε τον θεον μη με βασανισης
⁸ελεγεν γαρ αυτω εξελθε το πνευμα το ακαθαρτον εκ του ανθρωπου
⁹και επηρωτα αυτον τι σοι ονομα και απεκριθη λεγων λεγεων ονομα μοι οτι πολλοι εσμεν
¹⁰και παρεκαλει αυτον πολλα ινα μη αυτους αποστειλη εξω της χωρας
¹¹ην δε εκει προς τα ορη αγελη χοιρων μεγαλη βοσκομενη
¹²και παρεκαλεσαν αυτον παντες οι δαιμονες λεγοντες πεμψον ημας εις τους χοιρους ινα εις αυτους εισελθωμεν
¹³και επετρεψεν αυτοις ευθεως ο ιησους και εξελθοντα τα πνευματα τα ακαθαρτα εισηλθον εις τους χοιρους και ωρμησεν η αγελη κατα του κρημου εις την θαλασσαν ησαν δε ως δισχιλιοι και επνιγοντο εν τη θαλασση
¹⁴οι δε βοσκοντες τους χοιρους εφυγον και ανηγγειλαν εις την πολιν και εις τους αγρους και εξηλθον ιδειν τι εστιν το γεγονος
¹⁵και ερχονται προς τον ιησουν και θεωρουν τον δαιμονιζομενον καθημενον και ιματισμενον και σωφρονουντα τον εσχηκοτα τον λεγεωνα και εφοβηθησαν
¹⁶και διηγησαντο αυτοις οι ιδοντες πως εγενετο τω δαιμονιζομενω και περι των χοιρων
¹⁷και ηρξαντο παρακαλειν αυτον απελθειν απο των οριων αυτων
¹⁸και εμβαντος αυτου εις το πλοιον παρεκαλει αυτον ο δαιμονισθεις ινα η μετ αυτου
¹⁹ο δε ιησους ουκ αφηκεν αυτον αλλα λεγει αυτω υπαγε εις τον οικον σου προς τους σους και αναγγειλον αυτοις οσα σοι ο κυριος εποιησεν και ηλεησεν σε
²⁰και απηλθεν και ηρξατο κηρυσσειν εν τη δεκαπολει οσα εποιησεν αυτω ο ιησους και παντες εθαυμαζον
²¹και διαπερασαντος του ιησου εν τω πλοιω παλιν εις το περαν συνηχθη οχλος πολυς επ αυτον και ην παρα την θαλασσαν
²²και ιδου ερχεται εις των αρχισυναγωγων ονοματι ιαειρος και ιδων αυτον πιπτει προς τους ποδας αυτου
²³και παρεκαλει αυτον πολλα λεγων οτι το θυγατριον μου εσχατως εχει ινα ελθων επιθης αυτη τας χειρας οπως σωθη και ζησεται

- ²⁴ και απηλθεν μετ αυτου και ηκολουθει αυτω οχλος πολυς και συνεθλιβον αυτον
²⁵ και γυνη τις ουσα εν ρυσει αιματος ετη δωδεκα
²⁶ και πολλα παθουσα υπο πολλων ιατρων και δαπανησασα τα παρ εαυτης παντα και μηδεν ωφεληθεισα αλλα μαλλον εις το χειρον ελθουσα
²⁷ ακουσασα περι του ιησου ελθουσα εν τω οχλω οπισθεν ηψατο του ιματιου αυτου
²⁸ ελεγεν γαρ οτι καν των ιματιων αυτου αφωμαι σωθησομαι
²⁹ και ευθεως εξηρανθη η πηγη του αιματος αυτης και εγνω τω σωματι οτι ιαται απο της μαστιγος
³⁰ και ευθεως ο ιησους επιγνους εν εαυτω την εξ αυτου δυναμιν εξελθουσαν επιστραφεις εν τω οχλω ελεγεν τις μου ηψατο των ιματιων
³¹ και ελεγον αυτω οι μαθηται αυτου βλεπεις τον οχλον συνθλιβοντα σε και λεγεις τις μου ηψατο
³² και περιεβλεπετο ιδειν την τουτο ποιησασαν
³³ η δε γυνη φοβηθεισα και τρεμουσα ειδουα ο γεγονεν επ αυτη ηλθεν και προσεπεσεν αυτω και ειπεν αυτω πασαν την αληθειαν
³⁴ ο δε ειπεν αυτη θυγατερ η πιστις σου σεσωκεν σε υπαγε εις ειρηνην και ισθι υγιης απο της μαστιγος σου
³⁵ ετι αυτου λαλουντος ερχονται απο του αρχισυναγωγου λεγοντες οτι η θυγατηρ σου απεθανεν τι ετι σκυλλεις τον διδασκαλον
³⁶ ο δε ιησους ευθεως ακουσας τον λογον λαλουμενον λεγει τω αρχισυναγωγω μη φοβου μονον πιστευε
³⁷ και ουκ αφηκεν ουδενα αυτω συνακολουθησαι ει μη πετρον και ιακωβον και ιωαννην τον αδελφον ιακωβου
³⁸ και ερχεται εις τον οικον του αρχισυναγωγου και θεωρει θορυβον και κλαιοντας και αλαλαζοντας πολλα
³⁹ και εισελθων λεγει αυτοις τι θορυβεισθε και κλαιετε το παιδιον ουκ απεθανεν αλλα καθευδει
⁴⁰ και κατεγελων αυτου ο δε εκβαλων απαντας παραλαμβανει τον πατερα του παιδιου και την μητερα και τους μετ αυτου και εισπορευεται οπου ην το παιδιον ανακειμενον
⁴¹ και κρατησας της χειρος του παιδιου λεγει αυτη ταλιθα κουμι ο εστιν μεθερμηνευομενον το κορασιον σοι λεγω εγειραι
⁴² και ευθεως ανεστη το κορασιον και περιεπατει ην γαρ ετων δωδεκα και εξεστησαν εκστασει μεγαλη
⁴³ και διεστειλατο αυτοις πολλα ινα μηδεις γνω τουτο και ειπεν δοθηναι αυτη φαγειν

Chapter 6

¹και εξηλθεν εκειθεν και ηλθεν εις την πατριδα αυτου και ακολουθουσιν αυτω οι μαθηται αυτου
²και γενομενου σαββατου ηρξατο εν τη συναγωγη διδασκειν και πολλοι ακουοντες εξεπλησσοντο λεγοντες ποθεν τουτω ταυτα και τις η σοφια η δοθεισα αυτω οτι και δυναμεις τοιαυται δια των χειρων αυτου γινονται
³ουκ ουτος εστιν ο τεκτων ο υιος μαριας αδελφος δε ιακωβου και ιωση και ιουδα και σιμωνος και ουκ εισιν αι αδελφαι αυτου ωδε προς ημας και εσκανδαλιζοντο εν αυτω
⁴ελεγεν δε αυτοις ο ιησους οτι ουκ εστιν προφητης ατιμος ει μη εν τη πατριδι αυτου και εν τοις συγγενεσιν και εν τη οικια αυτου
⁵και ουκ ηδυνατο εκει ουδεμιαν δυναμιν ποιησαι ει μη ολιγοις αρρωστοις επιθεις τας χειρας εθεραπευσεν
⁶και εθαυμαζεν δια την απιστιαν αυτων και περιηγεν τας κωμας κυκλω διδασκων
⁷και προσκαλειται τους δωδεκα και ηρξατο αυτους αποστελλειν δυο δυο και εδιδου αυτοις εξουσιαν των πνευματων των ακαθαρτων
⁸και παρηγγειλεν αυτοις ινα μηδεν αιρωσιν εις οδον ει μη ραβδον μονον μη πηραν μη αρτον μη εις την ζωνην χαλκον
⁹αλλ υποδεδεμενους σανδαλια και μη ενδυσασθαι δυο χιτωνας
¹⁰και ελεγεν αυτοις οπου εαν εισελθητε εις οικιαν εκει μενετε εως αν εξελθητε εκειθεν
¹¹και οσοι αν μη δεξωνται υμας μηδε ακουσωσιν υμων εκπορευομενοι εκειθεν εκτιναξατε τον χουν τον υποκατω των ποδων υμων εις μαρτυριον αυτοις αμην λεγω υμιν ανεκτοτερον εσται σοδομοις η γομορροις εν ημερα κρισεως η τη πολει εκεινη
¹²και εξελθοντες εκηρυσσον ινα μετανοησωσιν
¹³και δαιμονια πολλα εξεβαλλον και ηλειφον ελαιω πολλους αρρωστους και εθεραπευον
¹⁴και ηκουσεν ο βασιλευς ηρωδης φανερον γαρ εγενετο το ονομα αυτου και ελεγεν οτι ιωαννης ο βαπτιζων εκ νεκρων ηγερθη και δια τουτο ενεργουσιν αι δυναμεις εν αυτω
¹⁵αλλοι ελεγον οτι ηλιας εστιν αλλοι δε ελεγον οτι προφητης εστιν η ως εις των προφητων
¹⁶ακουσας δε ο ηρωδης ειπεν οτι ον εγω απεκεφαλισα ιωαννην ουτος εστιν αυτος ηγερθη εκ νεκρων
¹⁷αυτος γαρ ο ηρωδης αποστειλας εκρατησεν τον ιωαννην και εδησεν αυτον εν τη φυλακη δια ηρωδιαδα την γυναικα φιλιππου του αδελφου αυτου οτι αυτην εγαμησεν
¹⁸ελεγεν γαρ ο ιωαννης τω ηρωδη οτι ουκ εξεστιν σοι εχειν την γυναικα του αδελφου σου
¹⁹η δε ηρωδιας ενειχεν αυτω και ηθελεν αυτον αποκτειναι και ουκ ηδυνατο
²⁰ο γαρ ηρωδης εφοβειτο τον ιωαννην ειδως αυτον ανδρα δικαιον και αγιον και συνετηρει αυτον και ακουσας αυτου πολλα εποιει και ηδεως αυτου ηκουεν
²¹και γενομενης ημερας ευκαιρου οτε ηρωδης τοις γενεσιοις αυτου δειπνον εποιει τοις μεγιστασιν αυτου και τοις χιλιαρχοις και τοις πρωτοις της γαλιλαιας

²² και εισελθουσης της θυγατρος αυτης της ηρωδιαδος και ορχησαμενης και αρεσασης τω ηρωδη και τοις συνανακειμενοις ειπεν ο βασιλευς τω κορασιω αιτησον με ο εαν θελης και δωσω σοι

²³ και ωμοσεν αυτη οτι ο εαν με αιτησης δωσω σοι εως ημισους της βασιλειας μου

²⁴ η δε εξελθουσα ειπεν τη μητρι αυτης τι αιτησομαι η δε ειπεν την κεφαλην ιωαννου του βαπτιστου

²⁵ και εισελθουσα ευθεως μετα σπουδης προς τον βασιλεα ητησατο λεγουσα θελω ινα μοι δως εξ αυτης επι πινακι την κεφαλην ιωαννου του βαπτιστου

²⁶ και περιλυπος γενομενος ο βασιλευς δια τους ορκους και τους συνανακειμενους ουκ ηθελησεν αυτην αθετησαι

²⁷ και ευθεως αποστειλας ο βασιλευς σπεκουλατωρα επεταξεν ενεχθηναι την κεφαλην αυτου

²⁸ ο δε απελθων απεκεφαλισεν αυτον εν τη φυλακη και ηνεγκεν την κεφαλην αυτου επι πινακι και εδωκεν αυτην τω κορασιω και το κορασιον εδωκεν αυτην τη μητρι αυτης

²⁹ και ακουσαντες οι μαθηται αυτου ηλθον και ηραν το πτωμα αυτου και εθηκαν αυτο εν μνημειω

³⁰ και συναγονται οι αποστολοι προς τον ιησουν και απηγγειλαν αυτω παντα και οσα εποιησαν και οσα εδιδαξαν

³¹ και ειπεν αυτοις δευτε υμεις αυτοι κατ ιδιαν εις ερημον τοπον και αναπαυεσθε ολιγον ησαν γαρ οι ερχομενοι και οι υπαγοντες πολλοι και ουδε φαγειν ηυκαιρουν

³² και απηλθον εις ερημον τοπον τω πλοιω κατ ιδιαν

³³ και ειδον αυτους υπαγοντας οι οχλοι και επεγνωσαν αυτον πολλοι και πεζη απο πασων των πολεων συνεδραμον εκει και προηλθον αυτους και συνηλθον προς αυτον

³⁴ και εξελθων ειδεν ο ιησους πολυν οχλον και εσπλαγχνισθη επ αυτοις οτι ησαν ως προβατα μη εχοντα ποιμενα και ηρξατο διδασκειν αυτους πολλα

³⁵ και ηδη ωρας πολλης γενομενης προσελθοντες αυτω οι μαθηται αυτου λεγουσιν οτι ερημος εστιν ο τοπος και ηδη ωρα πολλη

³⁶ απολυσον αυτους ινα απελθοντες εις τους κυκλω αγρους και κωμας αγορασωσιν εαυτοις αρτους τι γαρ φαγωσιν ουκ εχουσιν

³⁷ ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις δοτε αυτοις υμεις φαγειν και λεγουσιν αυτω απελθοντες αγορασωμεν διακοσιων δηναριων αρτους και δωμεν αυτοις φαγειν

³⁸ ο δε λεγει αυτοις ποσους αρτους εχετε υπαγετε και ιδετε και γνοντες λεγουσιν πεντε και δυο ιχθυας

³⁹ και επεταξεν αυτοις ανακλιναι παντας συμποσια συμποσια επι τω χλωρω χορτω

⁴⁰ και ανεπεσον πρασαι πρασαι ανα εκατον και ανα πεντηκοντα

⁴¹ και λαβων τους πεντε αρτους και τους δυο ιχθυας αναβλεψας εις τον ουρανον ευλογησεν και κατεκλασεν τους αρτους και εδιδου τοις μαθηταις αυτου ινα παραθωσιν αυτοις και τους δυο ιχθυας εμερισεν πασιν

⁴² και εφαγον παντες και εχορτασθησαν
⁴³ και ηραν κλασματων δωδεκα κοφινους πληρεις και απο των ιχθυων
⁴⁴ και ησαν οι φαγοντες τους αρτους ωσει πεντακιςχιλιοι ανδρες
⁴⁵ και ευθεως ηναγκασεν τους μαθητας αυτου εμβηναι εις το πλοιον και προαγειν εις το περαν προς βηθσαιδα εως αυτος απολυση τον οχλον
⁴⁶ και αποταξαμενος αυτοις απηλθεν εις το ορος προσευξασθαι
⁴⁷ και οψιας γενομενης ην το πλοιον εν μεσω της θαλασσης και αυτος μονος επι της γης
⁴⁸ και ειδεν αυτους βασανιζομενους εν τω ελαυνειν ην γαρ ο ανεμος εναντιος αυτοις και περι τεταρτην φυλακην της νυκτος ερχεται προς αυτους περιπατων επι της θαλασσης και ηθελεν παρελθειν αυτους
⁴⁹ οι δε ιδοντες αυτον περιπατουντα επι της θαλασσης εδοξαν φαντασμα ειναι και ανεκραξαν
⁵⁰ παντες γαρ αυτον ειδον και εταραχθησαν και ευθεως ελαλησεν μετ αυτων και λεγει αυτοις θαρσειτε εγω ειμι μη φοβεισθε
⁵¹ και ανεβη προς αυτους εις το πλοιον και εκοπασεν ο ανεμος και λιαν εκ περισσου εν εαυτοις εξισταντο και εθαυμαζον
⁵² ου γαρ συνηκαν επι τοις αρτοις ην γαρ η καρδια αυτων πεπωρωμενη
⁵³ και διαπερασαντες ηλθον επι την γην γεννησαρετ και προσωρμισθησαν
⁵⁴ και εξελθοντων αυτων εκ του πλοιου ευθεως επιγοντες αυτον
⁵⁵ περιδραμοντες ολην την περιχωρον εκεινην ηρξαντο επι τοις κραββατοις τους κακως εχοντας περιφερειν οπου ηκουον οτι εκει εστιν
⁵⁶ και οπου αν εισεπορευετο εις κωμας η πολεις η αγρους εν ταις αγοραις ετιθουν τους ασθενουντας και παρεκαλουν αυτον ινα καν του κρασπεδου του ιματιου αυτου αφωνται και οσοι αν ηπτοντο αυτου εσωζοντο

Chapter 7

¹και συναγονται προς αυτον οι φαρισαιοι και τινες των γραμματεων ελθοντες απο ιεροσολυμων
²και ιδοντες τινας των μαθητων αυτου κοινας χερσιν τουτ εστιν ανιπτοις εσθιοντας αρτους εμεμψαντο
³οι γαρ φαρισαιοι και παντες οι ιουδαιοι εαν μη πυγμα νιψωνται τας χειρας ουκ εσθιουσιν κρατουντες την παραδοσιν των πρεσβυτερων
⁴και απο αγορας εαν μη βαπτισωνται ουκ εσθιουσιν και αλλα πολλα εστιν α παρελαβον κρατειν βαπτισμους ποτηριων και ξεστων και χαλκιων και κλινων
⁵επειτα επερωτωσιν αυτον οι φαρισαιοι και οι γραμματεις διατι οι μαθηται σου ου περιπατουσιν κατα την παραδοσιν των πρεσβυτερων αλλα ανιπτοις χερσιν εσθιουσιν τον αρτον
⁶ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις οτι καλως προεφητευσεν ησαιας περι υμων των υποκριτων ως γεγραπται ουτος ο λαος τοις χειλεσιν με τιμα η δε καρδια αυτων πορρω απεχει απ εμου
⁷ματην δε σεβονται με διδασκοντες διδασκαλιας ενταλματα ανθρωπων
⁸αφεντες γαρ την εντολην του θεου κρατειτε την παραδοσιν των ανθρωπων βαπτισμους ξεστων και ποτηριων και αλλα παρομοια τοιαυτα πολλα ποιειτε
⁹και ελεγεν αυτοις καλως αθετειτε την εντολην του θεου ινα την παραδοσιν υμων τηρησητε
¹⁰μωσης γαρ ειπεν τιμα τον πατερα σου και την μητερα σου και ο κακολογων πατερα η μητερα θανατω τελευτατω
¹¹υμεις δε λεγετε εαν ειπη ανθρωπος τω πατρι η τη μητρι κορβαν ο εστιν δωρον ο εαν εξ εμου ωφεληθης
¹²και ουκετι αφιετε αυτον ουδεν ποιησαι τω πατρι αυτου η τη μητρι αυτου
¹³ακυρουντες τον λογον του θεου τη παραδοσει υμων η παρεδωκατε και παρομοια τοιαυτα πολλα ποιειτε
¹⁴και προσκαλεσαμενος παντα τον οχλον ελεγεν αυτοις ακουετε μου παντες και συνιετε
¹⁵ουδεν εστιν εξωθεν του ανθρωπου εισπορευομενον εις αυτον ο δυναται αυτον κοινωσαι αλλα τα εκπορευομενα απ αυτου εκεινα εστιν τα κοινουντα τον ανθρωπον
¹⁶ει τις εχει ωτα ακουειν ακουετω
¹⁷και οτε εισηλθεν εις οικον απο του οχλου επηρωτων αυτον οι μαθηται αυτου περι της παραβολης
¹⁸και λεγει αυτοις ουτως και υμεις ασυνετοι εστε ου νοειτε οτι παν το εξωθεν εισπορευομενον εις τον ανθρωπον ου δυναται αυτον κοινωσαι
¹⁹οτι ουκ εισπορευεται αυτου εις την καρδιαν αλλ εις την κοιλιαν και εις τον αφεδρωνα εκπορευεται καθαριζον παντα τα βρωματα
²⁰ελεγεν δε οτι το εκ του ανθρωπου εκπορευομενον εκεινο κοινοι τον ανθρωπον
²¹εσωθεν γαρ εκ της καρδιας των ανθρωπων οι διαλογισμοι οι κακοι εκπορευονται μοιχειαι πορνειαι φονοι

- ²² κλοπαι πλεονεξιαι πονηριαι δολος ασελγεια οφθαλμος πονηρος βλασφημια υπερηφανια αφροσυνη
- ²³ παντα ταυτα τα πονηρα εσωθεν εκπορευεται και κοινοι τον ανθρωπον
- ²⁴ και εκειθεν αναστας απηλθεν εις τα μεθορια τυρου και σιδωνος και εισελθων εις την οικιαν ουδενα ηθελεν γνωναι και ουκ ηδυνηθη λαθειν
- ²⁵ ακουσασα γαρ γυνη περι αυτου ης ειχεν το θυγατριον αυτης πνευμα ακαθαρτον ελθουσα προσεπεσεν προς τους ποδας αυτου
- ²⁶ ην δε η γυνη ελληνις συροφοιניσσα τω γενει και ηρωτα αυτον ινα το δαιμονιον εκβαλλη εκ της θυγατρος αυτης
- ²⁷ ο δε ιησους ειπεν αυτη αφες πρωτον χορτασθηναι τα τεκνα ου γαρ καλον εστιν λαβειν τον αρτον των τεκνων και βαλειν τοις κυναριοις
- ²⁸ η δε απεκριθη και λεγει αυτω ναι κυριε και γαρ τα κυναρια υποκατω της τραπεζης εσθιει απο των ψιχιων των παιδιων
- ²⁹ και ειπεν αυτη δια τουτον τον λογον υπαγε εξεληλυθεν το δαιμονιον εκ της θυγατρος σου
- ³⁰ και απελθουσα εις τον οικον αυτης ευρεν το δαιμονιον εξεληλυθος και την θυγατερα βεβλημενην επι της κλινης
- ³¹ και παλιν εξελθων εκ των οριων τυρου και σιδωνος ηλθεν προς την θαλασσαν της γαλιλαιας ανα μεσον των οριων δεκαπολεως
- ³² και φερουσιν αυτω κωφον μογιλαλον και παρακαλουσιν αυτον ινα επιθη αυτω την χειρα
- ³³ και απολαβομενος αυτον απο του οχλου κατ ιδιαν εβαλεν τους δακτυλους αυτου εις τα ωτα αυτου και πτυσας ηψατο της γλωσσης αυτου
- ³⁴ και αναβλεψας εις τον ουρανον εστεναξεν και λεγει αυτω εφφαθα ο εστιν διανοιχθητι
- ³⁵ και ευθεως διηνοιχθησαν αυτου αι ακοαι και ελυθη ο δεσμος της γλωσσης αυτου και ελαλει ορθως
- ³⁶ και διεστειλατο αυτοις ινα μηδενι ειπωσιν οσον δε αυτος αυτοις διεστελλετο μαλλον περισσοτερον εκηρυσσον
- ³⁷ και υπερπερισσως εξεπλησσαντο λεγοντες καλως παντα πεποιηκεν και τους κωφους ποιει ακουειν και τους αλαλους λαλειν

Chapter 8

¹εν εκειναις ταις ημεραις παμπολλου οχλου οντος και μη εχοντων τι φαγωσιν προσκαλεσαμενος ο ιησους τους μαθητας αυτου λεγει αυτοις
²σπλαγχνιζομαι επι τον οχλον οτι ηδη ημερας τρεις προσμενουσιν μοι και ουκ εχουσιν τι φαγωσιν
³και εαν απολυσω αυτους νηστεις εις οικον αυτων εκλυθησονται εν τη οδω τινες γαρ αυτων μακροθεν ηκασιν
⁴και απεκριθησαν αυτω οι μαθηται αυτου ποθεν τουτους δυνησεται τις ωδε χορτασαι αρτων επ ερημιας
⁵και επηρωτα αυτους ποσους εχετε αρτους οι δε ειπον επτα
⁶και παρηγγειλεν τω οχλω αναπεσειν επι της γης και λαβων τους επτα αρτους ευχαριστησας εκλασεν και εδιδου τοις μαθηταις αυτου ινα παραθωσιν και παρεθηκαν τω οχλω
⁷και ειχον ιχθυδια ολιγα και ευλογησας ειπεν παραθειναι και αυτα
⁸εφαγον δε και εχορτασθησαν και ηραν περισσευματα κλασματων επτα σπυριδας
⁹ησαν δε οι φαγοντες ως τετρακιςχιλιοι και απελυσεν αυτους
¹⁰και ευθεως εμβας εις το πλοιον μετα των μαθητων αυτου ηλθεν εις τα μερη δαλμανουθα
¹¹και εξηλθον οι φαρισαιοι και ηρξαντο συζητειν αυτω ζητουντες παρ αυτου σημειον απο του ουρανου πειραζοντες αυτον
¹²και αναστεναξας τω πνευματι αυτου λεγει τι η γενεα αυτη σημειον επιζητει αμην λεγω υμιν ει δοθησεται τη γενεα ταυτη σημειον
¹³και αφεις αυτους εμβας παλιν εις το πλοιον απηλθεν εις το περαν
¹⁴και επελαθοντο οι μαθηται λαβειν αρτους και ει μη ενα αρτον ουκ ειχον μεθ εαυτων εν τω πλοιω
¹⁵και διεστελλετο αυτοις λεγων ορατε βλεπετε απο της ζυμης των φαρισαιων και της ζυμης ηρωδου
¹⁶και διελογιζοντο προς αλληλους λεγοντες οτι αρτους ουκ εχομεν
¹⁷και γνους ο ιησους λεγει αυτοις τι διαλογιζεσθε οτι αρτους ουκ εχετε ουπω νοειτε ουδε συνιετε επι πεπωρωμενην εχετε την καρδιαν υμων
¹⁸οφθαλμους εχοντες ου βλεπετε και ωτα εχοντες ουκ ακουετε και ου μνημονευετε
¹⁹οτε τους πεντε αρτους εκλασα εις τους πεντακιςχιλιους ποσους κοφινους πληρεις κλασματων ηρατε λεγουσιν αυτω δωδεκα
²⁰οτε δε τους επτα εις τους τετρακιςχιλιους ποσων σπυριδων πληρωματα κλασματων ηρατε οι δε ειπον επτα
²¹και ελεγεν αυτοις πως ου συνιετε
²²και ερχεται εις βηθσαιδα και φερουσιν αυτω τυφλον και παρακαλουσιν αυτον ινα αυτου αψηται
²³και επιλαβομενος της χειρος του τυφλου εξηγαγεν αυτον εξω της κωμης και πτυσας εις τα ομματα αυτου επιθεις τας χειρας αυτω επηρωτα αυτον ει τι βλεπει

²⁴ και αναβλεψας ελεγεν βλεπω τους ανθρωπους ως δενδρα περιπατουντας
²⁵ ειτα παλιν επεθηκεν τας χειρας επι τους οφθαλμους αυτου και εποιησεν αυτον αναβλεψαι και αποκατεσταθη και ενεβλεψεν τηλαυγως απαντας
²⁶ και απεστειλεν αυτον εις τον οικον αυτου λεγων μηδε εις την κωμην εισελθης μηδε ειπης τινι εν τη κωμη
²⁷ και εξηλθεν ο ιησους και οι μαθηται αυτου εις τας κωμας καισαρειας της φιλιππου και εν τη οδω επηρωτα τους μαθητας αυτου λεγων αυτοις τινα με λεγουσιν οι ανθρωποι εινα
²⁸ οι δε απεκριθησαν ιωαννην τον βαπτιστην και αλλοι ηλιαν αλλοι δε ενα των προφητων
²⁹ και αυτος λεγει αυτοις υμεις δε τινα με λεγετε εινα αποκριθεις δε ο πετρος λεγει αυτω συ ει ο χριστος
³⁰ και επετιμησεν αυτοις ινα μηδενι λεγωσιν περι αυτου
³¹ και ηρξατο διδασκειν αυτους οτι δει τον υιον του ανθρωπου πολλα παθειν και αποδοκιμασθηναι απο των πρεσβυτερων και αρχιερων και γραμματεων και αποκτανθηναι και μετα τρεις ημερας αναστηναι
³² και παρηρησια τον λογον ελαλει και προσλαβομενος αυτον ο πετρος ηρξατο επιτιμαν αυτω
³³ ο δε επιστραφεις και ιδων τους μαθητας αυτου επετιμησεν τω πετρω λεγων υπαγε οπισω μου σατανα οτι ου φρονεις τα του θεου αλλα τα των ανθρωπων
³⁴ και προσκαλεσαμενος τον οχλον συν τοις μαθηταις αυτου ειπεν αυτοις οστις θελει οπισω μου ελθειν απαρνησασθω εαυτον και αρατω τον σταυρον αυτου και ακολουθειτω μοι
³⁵ ος γαρ αν θελη την ψυχην αυτου σωσαι απολεσει αυτην ος δ αν απολεση την ψυχην αυτου ενεκεν εμου και του ευαγγελιου ουτος σωσει αυτην
³⁶ τι γαρ ωφελησει ανθρωπον εαν κερδηση τον κοσμον ολον και ζημιωθη την ψυχην αυτου
³⁷ η τι δωσει ανθρωπος ανταλλαγμα της ψυχης αυτου
³⁸ ος γαρ αν επαισχυνθη με και τους εμους λογους εν τη γενεα ταυτη τη μοιχαλιδι και αμαρτωλω και ο υιος του ανθρωπου επαισχυνθησεται αυτον οταν ελθη εν τη δοξη του πατρος αυτου μετα των αγγελων των αγιων

Chapter 9

¹ και ελεγεν αυτοις αμην λεγω υμιν οτι εισιν τινες των ωδε εστηκοτων οιτινες ου μη γευσωνται θανατου εως αν ιδωσιν την βασιλειαν του θεου εληλυθυιαν εν δυναμει
² και μεθ ημερας εξ παραλαμβανει ο ιησους τον πετρον και τον ιακωβον και τον ιωαννην και αναφερει αυτους εις ορος υψηλον κατ ιδιαν μονους και μετεμορφωθη εμπροσθεν αυτων
³ και τα ιματια αυτου εγενετο στιλβοντα λευκα λιαν ως χιων οια γναφους επι της γης ου δυναται λευκαναι
⁴ και ωφθη αυτοις ηλιας συν μωσει και ησαν συλλαλουντες τω ιησου
⁵ και αποκριθεις ο πετρος λεγει τω ιησου ραββι καλον εστιν ημας ωδε ειναι και ποιησωμεν σκηνας τρεις σοι μιαν και μωσει μιαν και ηλια μιαν
⁶ ου γαρ ηδει τι λαληση ησαν γαρ εκφοβοι
⁷ και εγενετο νεφελη επισκιαζουσα αυτοις και ηλθεν φωνη εκ της νεφελης λεγουσα ουτος εστιν ο υιος μου ο αγαπητος αυτου ακουετε
⁸ και εξαπινα περιβλεψαμενοι ουκετι ουδενα ειδον αλλα τον ιησουν μονον μεθ εαυτων
⁹ καταβαινοντων δε αυτων απο του ορους διεστειλατο αυτοις ινα μηδενι διηγησωνται α ειδον ει μη οταν ο υιος του ανθρωπου εκ νεκρων αναστη
¹⁰ και τον λογον εκρατησαν προς εαυτους συζητουντες τι εστιν το εκ νεκρων αναστηναι
¹¹ και επηρωτων αυτον λεγοντες οτι λεγουσιν οι γραμματαις οτι ηλιαν δει ελθειν πρωτον
¹² ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις ηλιας μεν ελθων πρωτον αποκαθιστα παντα και πως γεγραπται επι τον υιον του ανθρωπου ινα πολλα παθη και εξουδενωθη
¹³ αλλα λεγω υμιν οτι και ηλιας εληλυθεν και εποιησαν αυτω οσα ηθελησαν καθως γεγραπται επ αυτον
¹⁴ και ελθων προς τους μαθητας ειδεν οχλον πολυν περι αυτους και γραμματαις συζητουντας αυτοις
¹⁵ και ευθεως πας ο οχλος ιδων αυτον εξεθαμβηθη και προστρεχοντες ησπαζοντο αυτον
¹⁶ και επηρωτησεν τους γραμματαις τι συζητειτε προς αυτους
¹⁷ και αποκριθεις εις εκ του οχλου ειπεν διδασκαλε ηνεγκα τον υιον μου προς σε εχοντα πνευμα αλαλον
¹⁸ και οπου αν αυτον καταλαβη ρησσει αυτον και αφριζει και τριζει τους οδοντας αυτου και ξηραινεται και ειπον τοις μαθηταις σου ινα αυτο εκβαλωσιν και ουκ ισχυσαν
¹⁹ ο δε αποκριθεις αυτω λεγει ω γενεα απιστος εως ποτε προς υμας εσομαι εως ποτε ανεξομαι υμων φερετε αυτον προς με
²⁰ και ηνεγκαν αυτον προς αυτον και ιδων αυτον ευθεως το πνευμα εσπαραξεν αυτον και πεσων επι της γης εκυλιετο αφριζων
²¹ και επηρωτησεν τον πατερα αυτου ποσος χρονος εστιν ως τουτο γεγονεν αυτω ο δε ειπεν παιδιοθεν

²² και πολλακις αυτον και εις πυρ εβαλεν και εις υδατα ινα απολεση αυτον αλλ ει τι δυνασαι βοηθησον ημιν σπλαγχνισθεις εφ ημας

²³ ο δε ιησους ειπεν αυτω το ει δυνασαι πιστευσαι παντα δυνατα τω πιστευοντι

²⁴ και ευθεωσ κραξας ο πατηρ του παιδιου μετα δακρυων ελεγεν πιστευ κυριε βοηθει μου τη απιστια

²⁵ ιδων δε ο ιησους οτι επισυντρεχει οχλος επετιμησεν τω πνευματι τω ακαθαρτω λεγων αυτω το πνευμα το αλαλον και κωφον εγω σοι επιτασσω εξελθε εξ αυτου και μηκετι εισελθης εις αυτον

²⁶ και κραξαν και πολλα σπαραξαν αυτον εξηλθεν και εγενετο ωσει νεκρος ωστε πολλους λεγειν οτι απεθανεν

²⁷ ο δε ιησους κρατησας αυτον της χειρος ηγειρεν αυτον και ανεστη

²⁸ και εισελθοντα αυτον εις οικον οι μαθηται αυτου επηρωτων αυτον κατ ιδιαν οτι ημεις ουκ ηδυνηθημεν εκβαλειν αυτο

²⁹ και ειπεν αυτοις τουτο το γενοσ εν ουδενι δυναται εξελθειν ει μη εν προσευχη και νηστεια

³⁰ και εκειθεν εξελθοντες παρεπορευοντο δια της γαλιλαιας και ουκ ηθελεν ινα τις γνω

³¹ εδιδασκεν γαρ τους μαθητας αυτου και ελεγεν αυτοις οτι ο υιοσ του ανθρωπου παραδιδοται εις χειρας ανθρωπων και αποκτενουσιν αυτον και αποκτανθεις τη τριτη ημερα αναστησεται

³² οι δε ηγνοουν το ρημα και εφοβουντο αυτον επρωτησαι

³³ και ηλθεν εις καπερναουμ και εν τη οικια γενομενοσ επρωτα αυτους τι εν τη οδω προς εαυτους διελογιζεσθε

³⁴ οι δε εσιωπων προς αλληλους γαρ διελεχθησαν εν τη οδω τις μειζων

³⁵ και καθισασ εφωνησεν τους δωδεκα και λεγει αυτοις ει τις θελει πρωτοσ ειναι εσται παντων εσχατοσ και παντων διακονοσ

³⁶ και λαβων παιδιον εστησεν αυτο εν μεσω αυτων και εναγκαλισαμενοσ αυτο ειπεν αυτοις

³⁷ οσ εαν εν των τοιουτων παιδιων δεζηται επι τω ονοματι μου εμε δεχεται και οσ εαν εμε δεζηται ουκ εμε δεχεται αλλα τον αποστειλαντα με

³⁸ απεκριθη δε αυτω ο ιωαννης λεγων διδασκαλε ειδομεν τινα εν τω ονοματι σου εκβαλλοντα δαιμονια οσ ουκ ακολουθει ημιν και εκωλυσαμεν αυτον οτι ουκ ακολουθει ημιν

³⁹ ο δε ιησους ειπεν μη κωλυετε αυτον ουδεις γαρ εστιν οσ ποιησει δυναμιν επι τω ονοματι μου και δυνησεται ταχυ κακολογησαι με

⁴⁰ οσ γαρ ουκ εστιν καθ ημων υπερ ημων εστιν

⁴¹ οσ γαρ αν ποτιση υμασ ποτηριον υδατοσ εν τω ονοματι μου οτι χριστου εστε αμην λεγω υμιν ου μη απολεση τον μισθον αυτου

⁴² και οσ αν σκανδαλιση ενα των μικρων τουτων των πιστευοντων εις εμε καλον εστιν αυτω μαλλον ει περικειται λιθοσ μυλικοσ περι τον τραχηλον αυτου και βεβληται εις την θαλασσαν

⁴³ και εαν σκανδαλιζη σε η χειρ σου αποκοψον αυτην καλον σοι εστιν κυλλον εις την ζωην εισελθειν η τας δυο χειρας εχοντα απελθειν εις την γεενναν εις το πυρ το ασβεστον

⁴⁴ οπου ο σκωληξ αυτων ου τελευτα και το πυρ ου σβεννυται

⁴⁵ και εαν ο πους σου σκανδαλιζη σε αποκοψον αυτον καλον εστιν σοι εισελθειν εις την ζωην χωλον η τους δυο ποδας εχοντα βληθηναι εις την γεενναν εις το πυρ το ασβεστον

⁴⁶ οπου ο σκωληξ αυτων ου τελευτα και το πυρ ου σβεννυται

⁴⁷ και εαν ο οφθαλμος σου σκανδαλιζη σε εκβαλε αυτον καλον σοι εστιν μονοφθαλμον εισελθειν εις την βασιλειαν του θεου η δυο οφθαλμους εχοντα βληθηναι εις την γεενναν του πυρος

⁴⁸ οπου ο σκωληξ αυτων ου τελευτα και το πυρ ου σβεννυται

⁴⁹ πας γαρ πυρι αλισθησεται και πασα θυσια αλι αλισθησεται

⁵⁰ καλον το αλας εαν δε το αλας αναλον γενηται εν τινι αυτο αρτυσετε εχετε εν εαυτοις αλας και ειρηνευετε εν αλληλοις

Chapter 10

¹κακειθεν αναστας ερχεται εις τα ορια της ιουδαιας δια του περαν του ιορδανου και συμπορευονται παλιν οχλοι προς αυτον και ως ειωθει παλιν εδιδασκεν αυτους
²και προσελθοντες οι φαρισαιοι επηρωτησαν αυτον ει εξεστιν ανδρι γυναικα απολυσαι πειραζοντες αυτον
³ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις τι υμιν εντειλατο μωσης
⁴οι δε ειπον μωσης επετρεψεν βιβλιον αποστασιου γραψαι και απολυσαι
⁵και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις προς την σκληροκαρδιαν υμων εγραψεν υμιν την εντολην ταυτην
⁶απο δε αρχης κτισεως αρσεν και θηλυ εποιησεν αυτους ο θεος
⁷ενεκεν τουτου καταλειπει ανθρωπος τον πατερα αυτου και την μητερα και προσκολληθησεται προς την γυναικα αυτου
⁸και εσονται οι δυο εις σαρκα μιαν ωστε ουκετι εισιν δυο αλλα μια σαρξ
⁹ο ουν ο θεος συνεζευξεν ανθρωπος μη χωριζετω
¹⁰και εν τη οικια παλιν οι μαθηται αυτου περι του αυτου επηρωτησαν αυτον
¹¹και λεγει αυτοις ος εαν απολυση την γυναικα αυτου και γαμηση αλλην μοιχεται επ αυτην
¹²και εαν γυνη απολυση τον ανδρα αυτης και γαμηθη αλλω μοιχεται
¹³και προσεφερον αυτω παιδια ινα αφηται αυτων οι δε μαθηται επετιμων τοις προσφερουσιν
¹⁴ιδων δε ο ιησους ηγανακτησεν και ειπεν αυτοις αφετε τα παιδια ερχεσθαι προς με και μη κωλυετε αυτα των γαρ τοιουτων εστιν η βασιλεια του θεου
¹⁵αμην λεγω υμιν ος εαν μη δεξηται την βασιλειαν του θεου ως παιδιον ου μη εισελθη εις αυτην
¹⁶και εναγκαλισαμενος αυτα τιθεις τας χειρας επ αυτα ηυλογει αυτα
¹⁷και εκπορευομενου αυτου εις οδον προσδραμων εις και γονυπετησας αυτον επηρωτα αυτον διδασκαλε αγαθε τι ποιησω ινα ζωην αιωνιον κληρονομησω
¹⁸ο δε ιησους ειπεν αυτω τι με λεγεις αγαθον ουδεις αγαθος ει μη εις ο θεος
¹⁹τας εντολας οιδας μη μοιχευσης μη φονευσης μη κλεψης μη ψευδομαρτυρησης μη αποστερησης τιμα τον πατερα σου και την μητερα
²⁰ο δε αποκριθεις ειπεν αυτω διδασκαλε ταυτα παντα εφυλαξαμην εκ νεοτητος μου
²¹ο δε ιησους εμβλεψας αυτω ηγαπησεν αυτον και ειπεν αυτω εν σοι υστερει υπαγε οσα εχεις πωλησον καιδος τοις πτωχοις και εξεις θησαυρον εν ουρανω και δευρο ακολουθει μοι αρας τον σταυρον
²²ο δε στυγνασας επι τω λογω απηλθεν λυπουμενος ην γαρ εχων κτηματα πολλα
²³και περιβλεψαμενος ο ιησους λεγει τοις μαθηταις αυτου πως δυσκολως οι τα χρηματα εχοντες εις την βασιλειαν του θεου εισελευσονται

- ²⁴οι δε μαθηται εθαμβουντο επι τοις λογοις αυτου ο δε ιησους παλιν αποκριθεις λεγει αυτοις τεκνα πως δυσκολον εστιν τους πεποιθοτας επι τοις χρημασιν εις την βασιλειαν του θεου εισελθειν
- ²⁵ευκοπωτερον εστιν καμηλον δια της τρυμαλιας της ραφιδος διελθειν η πλουσιον εις την βασιλειαν του θεου εισελθειν
- ²⁶οι δε περισσως εξεπλησσαντο λεγοντες προς εαυτους και τις δυναται σωθηναι
- ²⁷εμβλειψας δε αυτοις ο ιησους λεγει παρα ανθρωποις αδυνατον αλλ ου παρα τω θεω παντα γαρ δυνατα εστιν παρα τω θεω
- ²⁸και ηρξατο ο πετρος λεγειν αυτω ιδου ημεις αφηκαμεν παντα και ηκολουθησαμεν σοι
- ²⁹αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν αμην λεγω υμιν ουδεις εστιν ος αφηκεν οικιαν η αδελφους η αδελφας η πατερα η μητερα η γυναικα η τεκνα η αγρους ενεκεν εμου και του ευαγγελιου
- ³⁰εαν μη λαβη εκατονταπλασιονα νυν εν τω καιρω τουτω οικιας και αδελφους και αδελφας και μητερας και τεκνα και αγρους μετα διωγμων και εν τω αιωνι τω ερχομενω ζων η αιωνιον
- ³¹πολλοι δε εσονται πρωτοι εσχατοι και οι εσχατοι πρωτοι
- ³²ησαν δε εν τη οδω αναβαινοντες εις ιεροσολυμα και ην προαγων αυτους ο ιησους και εθαμβουντο και ακολουθουντες εφοβουντο και παραλαβων παλιν τους δωδεκα ηρξατο αυτοις λεγειν τα μελλοντα αυτω συμβαινειν
- ³³οτι ιδου αναβαινομεν εις ιεροσολυμα και ο υιος του ανθρωπου παραδοθησεται τοις αρχιερευσιν και τοις γραμματευσιν και κατακρινουσιν αυτον θανατω και παραδωσουσιν αυτον τοις εθνεσιν
- ³⁴και εμπαιξουσιν αυτω και μαστιγωσουσιν αυτον και εμπτυσουσιν αυτω και αποκτενουσιν αυτον και τη τριτη ημερα αναστησεται
- ³⁵και προσπορευονται αυτω ιακωβος και ιωαννης οι υιοι ζεβεδαιου λεγοντες διδασκαλε θελομεν ινα ο εαν αιτησωμεν ποιησης ημιν
- ³⁶ο δε ειπεν αυτοις τι θελετε ποιησαι με υμιν
- ³⁷οι δε ειπον αυτω δος ημιν ινα εις εκ δεξιων σου και εις εξ ευωνυμων σου καθισωμεν εν τη δοξη σου
- ³⁸ο δε ιησους ειπεν αυτοις ουκ οιδατε τι αιτεισθε δυνασθε πειν το ποτηριον ο εγω πινω και το βαπτισμα ο εγω βαπτιζομαι βαπτισθηναι
- ³⁹οι δε ειπον αυτω δυναμεθα ο δε ιησους ειπεν αυτοις το μεν ποτηριον ο εγω πινω πιεσθε και το βαπτισμα ο εγω βαπτιζομαι βαπτισθησεσθε
- ⁴⁰το δε καθισαι εκ δεξιων μου και εξ ευωνυμων μου ουκ εστιν εμον δουναι αλλ οις ητοιμασται
- ⁴¹και ακουσαντες οι δεκα ηρξαντο αγανακτειν περι ιακωβου και ιωαννου
- ⁴²ο δε ιησους προσκαλεσαμενος αυτους λεγει αυτοις οιδατε οτι οι δοκουντες αρχειν των εθνων κατακυριευουσιν αυτων και οι μεγαλοι αυτων κατεξουσιαζουσιν αυτων
- ⁴³ουχ ουτως δε εσται εν υμιν αλλ ος εαν θελη γενεσθαι μεγας εν υμιν εσται διακονος υμων

- ⁴⁴ και ος αν θελη υμων γενεσθαι πρωτος εσται παντων δουλος
- ⁴⁵ και γαρ ο υιος του ανθρωπου ουκ ηλθεν διακονηθηναι αλλα διακονησαι και δουναι την ψυχην αυτου λυτρον αντι πολλων
- ⁴⁶ και ερχονται εις ιεριχω και εκπορευομενου αυτου απο ιεριχω και των μαθητων αυτου και οχλου ικανου υιος τιμαιου βαρτιμαιος ο τυφλος εκαθητο παρα την οδον προσαιτων
- ⁴⁷ και ακουσας οτι ιησους ο ναζωραιος εστιν ηρξατο κραζειν και λεγειν ο υιος δαβιδ ιησου ελεησον με
- ⁴⁸ και επετιμων αυτω πολλοι ινα σιωπηση ο δε πολλω μαλλον εκραζεν υιε δαβιδ ελεησον με
- ⁴⁹ και στας ο ιησους ειπεν αυτον φωνηθηναι και φωνουσιν τον τυφλον λεγοντες αυτω θαρσει εγειραι φωνει σε
- ⁵⁰ ο δε αποβαλων το ιματιον αυτου αναστας ηλθεν προς τον ιησουν
- ⁵¹ και αποκριθεις λεγει αυτω ο ιησους τι θελεις ποιησω σοι ο δε τυφλος ειπεν αυτω ραββوني ινα αναβλεψω
- ⁵² ο δε ιησους ειπεν αυτω υπαγε η πιστις σου σεσωκεν σε και ευθεως ανεβλεψεν και ηκολουθει τω ιησου εν τη οδω

Chapter 11

- ¹ και οτε εγγιζουσιν εις ιερουσαλημ εις βηθφαγη και βηθανιαν προς το ορος των ελαιων αποστελλει δυο των μαθητων αυτου
- ² και λεγει αυτοις υπαγετε εις την κωμην την κατεναντι υμων και ευθεως εισπορευομενοι εις αυτην ευρησετε πωλον δεδεμενον εφ ον ουδεις ανθρωπων κεκαθικεν λυσαντες αυτον αγαγετε
- ³ και εαν τις υμιν ειπη τι ποιειτε τουτο ειπατε οτι ο κυριος αυτου χρειαν εχει και ευθεως αυτον αποστελει ωδε
- ⁴ απηλθον δε και ευρον τον πωλον δεδεμενον προς την θυραν εξω επι του αμφοδου και λουσιν αυτον
- ⁵ και τινες των εκει εστηκοτων ελεγον αυτοις τι ποιειτε λυοντες τον πωλον
- ⁶ οι δε ειπον αυτοις καθως ενετειλατο ο ιησους και αφηκαν αυτους
- ⁷ και ηγαγον τον πωλον προς τον ιησουν και επεβαλον αυτω τα ιματια αυτων και εκαθισεν επ αυτω
- ⁸ πολλοι δε τα ιματια αυτων εστρωσαν εις την οδον αλλοι δε στοιβαδας εκοπτον εκ των δενδρων και εστρωννυον εις την οδον
- ⁹ και οι προαγοντες και οι ακολουθουντες εκραζον λεγοντες ωσαννα ευλογημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυριου
- ¹⁰ ευλογημενη η ερχομενη βασιλεια εν ονοματι κυριου του πατρος ημων δαβιδ ωσαννα εν τοις υψιστοις
- ¹¹ και εισηλθεν εις ιεροσολυμα ο ιησους και εις το ιερον και περιβλεψαμενος παντα οψιας ηδη ουσης της ωρας εξηλθεν εις βηθανιαν μετα των δωδεκα
- ¹² και τη επαυριον εξελθοντων αυτων απο βηθανιας επεινασεν
- ¹³ και ιδων συκτην μακροθεν εχουσαν φυλλα ηλθεν ει αρα ευρησει τι εν αυτη και ελθων επ αυτην ουδεν ευρεν ει μη φυλλα ου γαρ ην καιρος συκων
- ¹⁴ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτη μηκετι εκ σου εις τον αιωνα μηδεις καρπον φαγοι και ηκουον οι μαθηται αυτου
- ¹⁵ και ερχονται εις ιεροσολυμα και εισελθων ο ιησους εις το ιερον ηρξατο εκβαλλειν τους πωλουντας και αγοραζοντας εν τω ιερω και τας τραπεζας των κολλυβιστων και τας καθεδρας των πωλουντων τας περιστερας κατεστρεψεν
- ¹⁶ και ουκ ηφιεν ινα τις διενεγκη σκευος δια του ιερου
- ¹⁷ και εδιδασκεν λεγων αυτοις ου γεγραπται οτι ο οικος μου οικος προσευχης κληθησεται πασιν τοις εθνεσιν υμεις δε εποιησατε αυτον σπηλαιον ληστων
- ¹⁸ και ηκουσαν οι γραμματεις και οι αρχιερεις και εζητουν πως αυτον απολεσουσιν εφοβουντο γαρ αυτον οτι πας ο οχλος εξεπλησσετο επι τη διδαχη αυτου
- ¹⁹ και οτε οψε εγενετο εξεπορευετο εξω της πολεως
- ²⁰ και πρωι παραπορευομενοι ειδον την συκτην εξηραμμενην εκ ριζων
- ²¹ και αναμνησθεις ο πετρος λεγει αυτω ραββι ιδε η συκτη ην κατηρασω εξηρανται

- ²² και αποκριθεις ιησους λεγει αυτοις εχετε πιστιν θεου
²³ αμην γαρ λεγω υμιν οτι ος αν ειπη τω ορει τουτω αρθητι και βληθητι εις την θαλασσαν και μη διακριθη εν τη καρδια αυτου αλλα πιστευση οτι α λεγει γινεται εσται αυτω ο εαν ειπη
²⁴ δια τουτο λεγω υμιν παντα οσα αν προσευχομενοι αιτεισθε πιστευετε οτι λαμβανετε και εσται υμιν
²⁵ και οταν στηκητε προσευχομενοι αφιετε ει τι εχετε κατα τινος ινα και ο πατηρ υμων ο εν τοις ουρανοις αφη υμιν τα παραπτωματα υμων
²⁶ ει δε υμεις ουκ αφιετε ουδε ο πατηρ υμων ο εν τοις ουρανοις αφησει τα παραπτωματα υμων
²⁷ και ερχονται παλιν εις ιεροσολυμα και εν τω ιερω περιπατουντος αυτου ερχονται προς αυτον οι αρχιερεις και οι γραμματεις και οι πρεσβυτεροι
²⁸ και λεγουσιν αυτω εν ποια εξουσια ταυτα ποιεις και τις σοι την εξουσιαν ταυτην εδωκεν ινα ταυτα ποιης
²⁹ ο δε ιησους αποκριθεις ειπεν αυτοις επερωτησω υμας καγω ενα λογον και αποκριθητε μοι και ερω υμιν εν ποια εξουσια ταυτα ποιω
³⁰ το βαπτισμα ιωαννου εξ ουρανου ην η εξ ανθρωπων αποκριθητε μοι
³¹ και ελογιζοντο προς εαυτους λεγοντες εαν ειπωμεν εξ ουρανου ερει διατι ουν ουκ επιστευσατε αυτω
³² αλλ εαν ειπωμεν εξ ανθρωπων εφοβουντο τον λαον απαντες γαρ ειχον τον ιωαννην οτι οντως προφητης ην
³³ και αποκριθεντες λεγουσιν τω ιησου ουκ οιδαμεν και ο ιησους αποκριθεις λεγει αυτοις ουδε εγω λεγω υμιν εν ποια εξουσια ταυτα ποιω

Chapter 12

¹και ηρξατο αυτοις εν παραβολαις λεγειν αμπελωνα εφυτευσεν ανθρωπος και περιεθηκεν φραγμα και ωρυξεν υποληνιον και ωκοδομησεν πυργον και εξεδото αυτον γεωργοις και απεδημησεν

²και απεστειλεν προς τους γεωργους τω καιρω δουλον ινα παρα των γεωργων λαβη απο του καρπου του αμπελωνος

³οι δε λαβοντες αυτον εδειραν και απεστειλαν κενον

⁴και παλιν απεστειλεν προς αυτους αλλον δουλον κακεινον λιθοβολησαντες κεφαλαιωσαν και απεστειλαν ητιμωμενον

⁵και παλιν αλλον απεστειλεν κακεινον απεκτειναν και πολλους αλλους τους μεν δερνοντες τους δε αποκτεινοντες

⁶ετι ουν ενα υιον εχων αγαπητον αυτου απεστειλεν και αυτον προς αυτους εσχατον λεγων οτι εντραπησονται τον υιον μου

⁷εκεινοι δε οι γεωργοι ειπον προς εαυτους οτι ουτος εστιν ο κληρονομος δευτε αποκτεινωμεν αυτον και ημων εσται η κληρονομια

⁸και λαβοντες αυτον απεκτειναν και εξεβαλον εξω του αμπελωνος

⁹τι ουν ποιησει ο κυριος του αμπελωνος ελευσεται και απολεσει τους γεωργους και δωσει τον αμπελωνα αλλοις

¹⁰ουδε την γραφην ταυτην ανεγνωτε λιθον ον απεδοκιμασαν οι οικοδομουντες ουτος εγενηθη εις κεφαλην γωνιας

¹¹παρα κυριου εγενετο αυτη και εστιν θαυμαστη εν οφθαλμοις ημων

¹²και εξητουν αυτον κρατησαι και εφοβηθησαν τον οχλον εγνωσαν γαρ οτι προς αυτους την παραβολην ειπεν και αφεντες αυτον απηλθον

¹³και αποστελλουσιν προς αυτον τινας των φαρισαιων και των ηρωδιανων ινα αυτον αγρευσωσιν λογω

¹⁴οι δε ελθοντες λεγουσιν αυτω διδασκαλε οιδαμεν οτι αληθης ει και ου μελει σοι περι ουδενος ου γαρ βλεπεις εις προσωπον ανθρωπων αλλ επ αληθειας την οδον του θεου διδασκεις εξεστιν κησον καισαρι δουναι η ου

¹⁵δωμεν η μη δωμεν ο δε ειδως αυτων την υποκρισιν ειπεν αυτοις τι με πειραζετε φερετε μοι δηναριον ινα ιδω

¹⁶οι δε ηνεγκαν και λεγει αυτοις τινος η εικων αυτη και η επιγραφη οι δε ειπον αυτω καισαρος

¹⁷και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις αποδοτε τα καισαρος καισαρι και τα του θεου τω θεω και εθαυμασαν επ αυτω

¹⁸και ερχονται σαδδουκαιοι προς αυτον οιτινες λεγουσιν αναστασιν μη ειναι και επηρωτησαν αυτον λεγοντες

- ¹⁹ διδασκαλε μωσης εγραψεν ημιν οτι εαν τινος αδελφος αποθानη και καταλιπη γυναικα και τεκνα μη αφη ινα λαβη ο αδελφος αυτου την γυναικα αυτου και εξαναστηση σπερμα τω αδελφω αυτου
- ²⁰ επτα ουν αδελφοι ησαν και ο πρωτος ελαβεν γυναικα και αποθνησκων ουκ αφηκεν σπερμα
- ²¹ και ο δευτερος ελαβεν αυτην και απεθανεν και ουδε αυτος αφηκεν σπερμα και ο τριτος ωσαυτως
- ²² και ελαβον αυτην οι επτα και ουκ αφηκαν σπερμα εσχατη παντων απεθανεν και η γυνη
- ²³ εν τη ουν αναστασει οταν αναστωσιν τινος αυτων εσται γυνη οι γαρ επτα εσχον αυτην γυναικα
- ²⁴ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις ου δια τουτο πλανασθε μη ειδοτες τας γραφας μηδε την δυναμιν του θεου
- ²⁵ οταν γαρ εκ νεκρων αναστωσιν ουτε γαμουσιν ουτε γαμισκονται αλλ εισιν ως αγγελιοι οι εν τοις ουρανοις
- ²⁶ περι δε των νεκρων οτι εγειρονται ουκ ανεγνωτε εν τη βιβλω μωσεως επι της βατου ως ειπεν αυτω ο θεος λεγων εγω ο θεος αβρααμ και ο θεος ισαακ και ο θεος ιακωβ
- ²⁷ ουκ εστιν ο θεος νεκρων αλλα θεος ζωντων υμεις ουν πολυ πλανασθε
- ²⁸ και προσελθων εις των γραμματεων ακουσας αυτων συζητουτων ειδως οτι καλως αυτοις απεκριθη επηρωτησεν αυτον ποια εστιν πρωτη πασων εντολη
- ²⁹ ο δε ιησους απεκριθη αυτω οτι πρωτη πασων των εντολων ακουε ισραηλ κυριος ο θεος ημων κυριος εις εστιν
- ³⁰ και αγαπησεις κυριον τον θεον σου εξ ολης της καρδιας σου και εξ ολης της ψυχης σου και εξ ολης της διανοιας σου και εξ ολης της ισχυος σου αυτη πρωτη εντολη
- ³¹ και δευτερα ομοια αυτη αγαπησεις τον πλησιον σου ως σεαυτον μειζων τουτων αλλη εντολη ουκ εστιν
- ³² και ειπεν αυτω ο γραμματευσ καλως διδασκαλε επ αληθειας ειπας οτι εις εστιν θεος και ουκ εστιν αλλος πλην αυτου
- ³³ και το αγαπαν αυτον εξ ολης της καρδιας και εξ ολης της συνεσεως και εξ ολης της ψυχης και εξ ολης της ισχυος και το αγαπαν τον πλησιον ως εαυτον πλειον εστιν παντων των ολοκαυτωματων και των θυσιων
- ³⁴ και ο ιησους ιδων αυτον οτι νουνεχως απεκριθη ειπεν αυτω ου μακραν ει απο της βασιλειας του θεου και ουδεις ουκετι ετολμα αυτον επερωτησαι
- ³⁵ και αποκριθεις ο ιησους ελεγεν διδασκων εν τω ιερω πως λεγουσιν οι γραμματεις οτι ο χριστος υιος εστιν δαβιδ
- ³⁶ αυτος γαρ δαβιδ ειπεν εν τω πνευματι τω αγιω ειπεν ο κυριος τω κυριω μου καθου εκ δεξιων μου εως αν θω τους εχθρους σου υποποδιον των ποδων σου
- ³⁷ αυτος ουν δαβιδ λεγει αυτον κυριον και ποθεν υιος αυτου εστιν και ο πολυς οχλος ηκουεν αυτου ηδεως

³⁸ και ελεγεν αυτοις εν τη διδαχη αυτου βλεπετε απο των γραμματεων των θελοντων εν στολαις περιπατειν και ασπασμους εν ταις αγοραις

³⁹ και πρωτοκαθεδριας εν ταις συναγωγαις και πρωτοκλισιας εν τοις δειπνοις

⁴⁰ οι κατεσθιοντες τας οικιας των χηρων και προφασει μακρα προσευχομενοι ουτοι ληφονται περισσοτερον κριμα

⁴¹ και καθισας ο ιησους κατεναντι του γαζοφυλακιου εθεωρει πως ο οχλος βαλλει χαλκον εις το γαζοφυλακιον και πολλοι πλουσιοι εβαλλον πολλα

⁴² και ελθουσα μια χηρα πτωχη εβαλεν λεπτα δυο ο εστιν κοδραντης

⁴³ και προσκαλεσαμενος τους μαθητας αυτου λεγει αυτοις αμην λεγω υμιν οτι η χηρα αυτη η πτωχη πλειον παντων βεβληκεν των βαλοντων εις το γαζοφυλακιον

⁴⁴ παντες γαρ εκ του περισσευοντος αυτοις εβαλον αυτη δε εκ της υστερησεως αυτης παντα οσα ειχεν εβαλεν ολον τον βιον αυτης

Chapter 13

¹ και εκπορευομενου αυτου εκ του ιερου λεγει αυτω εις των μαθητων αυτου διδασκαλε ιδε ποταποι λιθοι και ποταπαι οικοδομαι
² και ο ιησους αποκριθεις ειπεν αυτω βλεπεις ταυτας τας μεγαλας οικοδομας ου μη αφεθη λιθος επι λιθω ος ου μη καταλυθη
³ και καθημενου αυτου εις το ορος των ελαιων κατεναντι του ιερου επηρωτων αυτον κατα ιδιαν πετρος και ιακωβος και ιωαννης και ανδρεας
⁴ ειπε ημιν ποτε ταυτα εσται και τι το σημειον οταν μελλη παντα ταυτα συντελεισθαι
⁵ ο δε ιησους αποκριθεις αυτοις ηρξατο λεγειν βλεπετε μη τις υμας πλανηση
⁶ πολλοι γαρ ελευσονται επι τω ονοματι μου λεγοντες οτι εγω ειμι και πολλους πλανησουσιν
⁷ οταν δε ακουσητε πολεμους και ακοας πολεμων μη θροεισθε δει γαρ γενεσθαι αλλ ουπω το τελος
⁸ εγερθησεται γαρ εθνος επι εθνος και βασιλεια επι βασιλειαν και εσονται σεισμοι κατα τοπους και εσονται λιμοι και ταραχαι αρχαι ωδινων ταυτα
⁹ βλεπετε δε υμεις εαυτους παραδωσουσιν γαρ υμας εις συνεδρια και εις συναγωγας δαρησεσθε και επι ηγεμονων και βασιλεων αχθησεσθε ενεκεν εμου εις μαρτυριον αυτοις
¹⁰ και εις παντα τα εθνη δει πρωτον κηρυχθηναι το ευαγγελιον
¹¹ οταν δε αγαγωσιν υμας παραδιδοντες μη προμεριμνατε τι λαλησητε μηδε μελετατε αλλ ο εαν δοθη υμιν εν εκεινη τη ωρα τουτο λαλειτε ου γαρ εστε υμεις οι λαλουντες αλλα το πνευμα το αγιον
¹² παραδωσει δε αδελφος αδελφον εις θανατον και πατηρ τεκνον και επαναστησονται τεκνα επι γονεις και θανατωσουσιν αυτους
¹³ και εσεσθε μισουμενοι υπο παντων δια το ονομα μου ο δε υπομεινας εις τελος ουτος σωθησεται
¹⁴ οταν δε ιδητε το βδελυγμα της ερημωσεως το ρηθεν υπο δανιηλ του προφητου εστωσ οπου ου δει ο αναγινωσκων νοειτω τοτε οι εν τη ιουδαια φυγετωσαν εις τα ορη
¹⁵ ο δε επι του δωματος μη καταβατω εις την οικιαν μηδε εισελθετω αραι τι εκ της οικιας αυτου
¹⁶ και ο εις τον αγρον ων μη επιστρεψατω εις τα οπισω αραι το ιματιον αυτου
¹⁷ ουαι δε ταις εν γαστρι εχουσαις και ταις θηλαζουσαις εν εκειναις ταις ημεραις
¹⁸ προσευχεσθε δε ινα μη γενηται η φυγη υμων χειμωνος
¹⁹ εσονται γαρ αι ημεραι εκειναι θλιψις οια ου γεγονεν τοιαυτη απ αρχης κτισεως ης εκτισεν ο θεος εως του νυν και ου μη γενηται
²⁰ και ει μη κυριος εκολοβωσεν τας ημερας ουκ αν εσωθη πασα σαρξ αλλα δια τους εκλεκτους ους εξελεξατο εκολοβωσεν τας ημερας
²¹ και τοτε εαν τις υμιν ειπη ιδου ωδε ο χριστος η ιδου εκει μη πιστευσητε
²² εγερθησονται γαρ ψευδοχριστοι και ψευδοπροφηται και δωσουσιν σημεια και τερατα προς το αποπλαναν ει δυνατον και τους εκλεκτους

- ²³ υμεις δε βλεπετε ιδου προειρηκα υμιν παντα
²⁴ αλλ εν εκειναις ταις ημεραις μετα την θλιψιν εκεινην ο ηλιος σκοτισθησεται και η σεληνη ου δωσει το φεγγος αυτης
²⁵ και οι αστερες του ουρανου εσονται εκπιπτοντες και αι δυναμεις αι εν τοις ουρανοις σαλευθησονται
²⁶ και τοτε οψονται τον υιον του ανθρωπου ερχομενον εν νεφελαις μετα δυναμεως πολλης και δοξης
²⁷ και τοτε αποστελει τους αγγελους αυτου και επισυναξει τους εκλεκτους αυτου εκ των τεσσαρων ανεμων απ ακρου γης εως ακρου ουρανου
²⁸ απο δε της συκης μαθετε την παραβολην οταν αυτης ηδη ο κλαδος απαλος γενηται και εκφυη τα φυλλα γινωσκετε οτι εγγυς το θερος εστιν
²⁹ ουτως και υμεις οταν ταυτα ιδητε γινομενα γινωσκετε οτι εγγυς εστιν επι θυραις
³⁰ αμην λεγω υμιν οτι ου μη παρελθη η γενεα αυτη μεχρις ου παντα ταυτα γενηται
³¹ ο ουρανος και η γη παρελευσονται οι δε λογοι μου ου μη παρελθωσιν
³² περι δε της ημερας εκεινης και της ωρας ουδεις οιδεν ουδε οι αγγελοι οι εν ουρανω ουδε ο υιος ει μη ο πατηρ
³³ βλεπετε αγρυπνειτε και προσευχεσθε ουκ οιδατε γαρ ποτε ο καιρος εστιν
³⁴ ως ανθρωπος αποδημος αφεις την οικιαν αυτου και δους τοις δουλοις αυτου την εξουσιαν και εκαστω το εργον αυτου και τω θυρωρω ενειλειτο ινα γρηγορη
³⁵ γρηγορειτε ουν ουκ οιδατε γαρ ποτε ο κυριος της οικιας ερχεται οψε η μεσονυκτιου η αλεκτοροφωνιας η πρωι
³⁶ μη ελθων εξαιφνης ευρη υμας καθευδοντας
³⁷ α δε υμιν λεγω πασιν λεγω γρηγορειτε

Chapter 14

¹ην δε το πασχα και τα αζυμα μετα δυο ημερας και εζητουν οι αρχιερεις και οι γραμματεις πως αυτον εν δολω κρατησαντες αποκτεινωσιν
²ελεγον δε μη εν τη εορτη μηποτε θορυβος εσται του λαου
³και οντος αυτου εν βηθανια εν τη οικια σιμωνος του λεπρου κατακειμενου αυτου ηλθεν γυνη εχουσα αλαβαστρον μυρου ναρδου πιστικης πολυτελους και συντριψασα το αλαβαστρον κατεχεεν αυτου κατα της κεφαλης
⁴ησαν δε τινες αγανακτουντες προς εαυτους και λεγοντες εις τι η απωλεια αυτη του μυρου γεγονεν
⁵ηδυνато γαρ τουτο πραθηναι επανω τριακοσιων δηναριων και δοθηναι τοις πτωχοις και ενεβριμωντο αυτη
⁶ο δε ιησους ειπεν αφετε αυτην τι αυτη κοπους παρεχετε καλον εργον ειργασατο εις εμε
⁷παντοτε γαρ τους πτωχους εχετε μεθ εαυτων και οταν θελητε δυνασθε αυτους ευ ποιησαι εμε δε ου παντοτε εχετε
⁸ο ειχεν αυτη εποιησεν προελαβεν μυρισαι μου το σωμα εις τον ενταφιασμον
⁹αμην λεγω υμιν οπου αν κηρυχθη το ευαγγελιον τουτο εις ολον τον κοσμον και ο εποιησεν αυτη λαληθησεται εις μνημοσυνον αυτης
¹⁰και ο ιουδας ο ισκαριωτης εις των δωδεκα απηλθεν προς τους αρχιερεις ινα παραδω αυτον αυτοις
¹¹οι δε ακουσαντες εχαρησαν και επηγγειλαντο αυτω αργυριον δουναι και εζητει πως ευκαιρωσ αυτον παραδω
¹²και τη πρωτη ημερα των αζυμων οτε το πασχα εθουν λεγουσιν αυτω οι μαθηται αυτου που θελεις απελθοντες ετοιμασωμεν ινα φαγησ το πασχα
¹³και αποστελλει δυο των μαθητων αυτου και λεγει αυτοις υπαγετε εις την πολιν και απαντησει υμιν ανθρωπος κεραμιον υδατος βασταζων ακολουθησατε αυτω
¹⁴και οπου εαν εισελθη ειπατε τω οικοδεσποτη οτι ο διδασκαλος λεγει που εστιν το καταλυμα οπου το πασχα μετα των μαθητων μου φαγω
¹⁵και αυτος υμιν δειξει ανωγειον μεγα εστρωμενον ετοιμον εκει ετοιμασατε ημιν
¹⁶και εξηλθον οι μαθηται αυτου και ηλθον εις την πολιν και ευρον καθως ειπεν αυτοις και ητοιμασαν το πασχα
¹⁷και οψιασ γενομενης ερχεται μετα των δωδεκα
¹⁸και ανακειμενων αυτων και εσθιοντων ειπεν ο ιησους αμην λεγω υμιν οτι εις εξ υμων παραδωσει με ο εσθιων μετ εμου
¹⁹οι δε ηρξαντο λυπεισθαι και λεγειν αυτω εις καθ εις μητι εγω και αλλος μητι εγω
²⁰ο δε αποκριθεις ειπεν αυτοις εις εκ των δωδεκα ο εμβαπτομενος μετ εμου εις το τρυβλιον
²¹ο μεν υιος του ανθρωπου υπαγει καθως γεγραπται περι αυτου ουαι δε τω ανθρωπω εκεινω δι ου ο υιος του ανθρωπου παραδιδοται καλον ην αυτω ει ουκ εγεννηθη ο ανθρωπος εκεινος

²² και εσθιοντων αυτων λαβων ο ιησους αρτον ευλογησας εκλασεν και εδωκεν αυτοις και ειπεν λαβετε φαγετε τουτο εστιν το σωμα μου
²³ και λαβων το ποτηριον ευχαριστησας εδωκεν αυτοις και επιον εξ αυτου παντες
²⁴ και ειπεν αυτοις τουτο εστιν το αιμα μου το της καινης διαθηκης το περι πολλων εκχυνομενον
²⁵ αμην λεγω υμιν οτι ουκετι ου μη πιω εκ του γεννηματος της αμπελου εως της ημερας εκεινης οταν αυτο πινω καινον εν τη βασιλεια του θεου
²⁶ και υμνησαντες εξηλθον εις το ορος των ελαιων
²⁷ και λεγει αυτοις ο ιησους οτι παντες σκανδαλισθησεσθε εν εμοι εν τη νυκτι ταυτη οτι γεγραπται παταξω τον ποιμενα και διασκορπισθησεται τα προβατα
²⁸ αλλα μετα το εγερθηναι με προαξω υμας εις την γαλιλαιαν
²⁹ ο δε πετρος εφη αυτω και ει παντες σκανδαλισθησονται αλλ ουκ εγω
³⁰ και λεγει αυτω ο ιησους αμην λεγω σοι οτι σημερον εν τη νυκτι ταυτη πριν η δις αλεκτορα φωνησαι τρις απαρνηση με
³¹ ο δε εκ περισσου ελεγεν μαλλον εαν με δεη συναποθανειν σοι ου μη σε απαρνησομαι ωσαυτως δε και παντες ελεγον
³² και ερχονται εις χωριον ου το ονομα γεθσημανη και λεγει τοις μαθηταις αυτου καθισατε ωδε εως προσευξωμαι
³³ και παραλαμβανει τον πετρον και τον ιακωβον και ιωαννην μεθ εαυτου και ηρξατο εκθαμβεισθαι και αδημονειν
³⁴ και λεγει αυτοις περιλυπος εστιν η ψυχη μου εως θανατου μεινατε ωδε και γρηγορειτε
³⁵ και προελθων μικρον επεσεν επι της γης και προσηυχετο ινα ει δυνατον εστιν παρελθη απ αυτου η ωρα
³⁶ και ελεγεν αββα ο πατηρ παντα δυνατα σοι παρενεγκε το ποτηριον απ εμου τουτο αλλ ου τι εγω θελω αλλα τι συ
³⁷ και ερχεται και ευρισκει αυτους καθευδοντας και λεγει τω πετρω σιμων καθευδεις ουκ ισχυσας μιαν ωραν γρηγορησαι
³⁸ γρηγορειτε και προσευχεσθε ινα μη εισελθητε εις πειρασμον το μεν πνευμα προθυμον η δε σαρξ ασθενης
³⁹ και παλιν απελθων προσηυξατο τον αυτον λογον ειπων
⁴⁰ και υποστρεψας ευρεν αυτους παλιν καθευδοντας ησαν γαρ οι οφθαλμοι αυτων βεβαρημενοι και ουκ ηδεισαν τι αυτω αποκριθωσιν
⁴¹ και ερχεται το τριτον και λεγει αυτοις καθευδετε το λοιπον και αναπαυεσθε απεχει ηλθεν η ωρα ιδου παραδιδοται ο υιος του ανθρωπου εις τας χειρας των αμαρτωλων
⁴² εγειρεσθε αγωμεν ιδου ο παραδιδους με ηγγικεν
⁴³ και ευθεως ετι αυτου λαλουντος παραγινεται ιουδας εις ων των δωδεκα και μετ αυτου οχλος πολυς μετα μαχαιρων και ξυλων παρα των αρχιερεων και των γραμματεων και των πρεσβυτερων

⁴⁴δεδωκει δε ο παραδιδους αυτον συσημον αυτοις λεγων ον αν φιλησω αυτος εστιν κρατησατε αυτον και απαγαγετε ασφαλως
⁴⁵και ελθων ευθεως προσελθων αυτω λεγει ραββι ραββι και κατεφιλησεν αυτον
⁴⁶οι δε επεβαλον επ αυτον τας χειρας αυτων και εκρατησαν αυτον
⁴⁷εις δε τις των παρεστηκοτων σπασαμενος την μαχαιραν επαισεν τον δουλον του αρχιερεως και αφειλεν αυτου το ωτιον
⁴⁸και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις ως επι ληστην εξηλθετε μετα μαχαιρων και ξυλων συλλαβειν με
⁴⁹καθ ημεραν ημην προς υμας εν τω ιερω διδασκων και ουκ εκρατησατε με αλλ ινα πληρωθωσιν αι γραφαι
⁵⁰και αφεντες αυτον παντες εφυγον
⁵¹και εις τις νεανισκος ηκολουθει αυτω περιβεβλημενος σινδονα επι γυμνου και κρατουσιν αυτον οι νεανισκοι
⁵²ο δε καταλιπων την σινδονα γυμνος εφυγεν απ αυτων
⁵³και απηγαγον τον ιησουν προς τον αρχιερεα και συνερχονται αυτω παντες οι αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι και οι γραμματεις
⁵⁴και ο πετρος απο μακροθεν ηκολουθησεν αυτω εως εσω εις την αυλην του αρχιερεως και ην συγκαθημενος μετα των υπηρετων και θερμαινομενος προς το φως
⁵⁵οι δε αρχιερεις και ολον το συνεδριον εξητουν κατα του ιησου μαρτυριαν εις το θανατωσαι αυτον και ουχ ευρισκον
⁵⁶πολλοι γαρ εψευδομαρτυρουν κατ αυτου και ισαι αι μαρτυριαι ουκ ησαν
⁵⁷και τινες ανασταντες εψευδομαρτυρουν κατ αυτου λεγοντες
⁵⁸οτι ημεις ηκουσαμεν αυτου λεγοντος οτι εγω καταλυσω τον ναον τουτον τον χειροποιητον και δια τριων ημερων αλλον αχειροποιητον οικοδομησω
⁵⁹και ουδε ουτως ιση ην η μαρτυρια αυτων
⁶⁰και αναστας ο αρχιερευς εις το μεσον επηρωτησεν τον ιησουν λεγων ουκ αποκρινη ουδεν τι ουτοι σου καταμαρτυρουσιν
⁶¹ο δε εσιωπα και ουδεν απεκρινατο παλιν ο αρχιερευς επηρωτα αυτον και λεγει αυτω συ ει ο χριστος ο υιος του ευλογητου
⁶²ο δε ιησους ειπεν εγω ειμι και οψεσθε τον υιον του ανθρωπου καθημενον εκ δεξιων της δυναμεως και ερχομενον μετα των νεφελων του ουρανου
⁶³ο δε αρχιερευς διαρρηξας τους χιτωνας αυτου λεγει τι ετι χρειαν εχομεν μαρτυρων
⁶⁴ηκουσατε της βλασφημιας τι υμιν φαινεται οι δε παντες κατεκριναν αυτον ειναι ενοχον θανατου
⁶⁵και ηρξαντο τινες εμπτυειν αυτω και περικαλυπτειν το προσωπον αυτου και κολαφιζειν αυτον και λεγειν αυτω προφητευσον και οι υπηρεται ραπισμασιν αυτον εβαλλον
⁶⁶και οντος του πετρου εν τη αυλη κατω ερχεται μια των παιδισκων του αρχιερεως

⁶⁷ και ιδουσα τον πετρον θερμαινομενον εμβλεψασα αυτω λεγει και συ μετα του ναζαρηνου ιησου ησθα

⁶⁸ ο δε ηρνησατο λεγων ουκ οιδα ουδε επισταμαι τι συ λεγεις και εξηλθεν εξω εις το προαυλιον και αλεκτωρ εφωνησεν

⁶⁹ και η παιδισκη ιδουσα αυτον παλιν ηρξατο λεγειν τοις παρεστηκοσιν οτι ουτος εξ αυτων εστιν

⁷⁰ ο δε παλιν ηρνειτο και μετα μικρον παλιν οι παρεστωτες ελεγον τω πετρω αληθως εξ αυτων ει και γαρ γαλιλαιος ει και η λαλια σου ομοιαζει

⁷¹ ο δε ηρξατο αναθεματιζειν και ομνυειν οτι ουκ οιδα τον ανθρωπον τουτον ον λεγετε

⁷² και εκ δευτερου αλεκτωρ εφωνησεν και ανεμνησθη ο πετρος του ρηματος ου ειπεν αυτω ο ιησους οτι πριν αλεκτορα φωνησαι δις απαρνηση με τρις και επιβαλων εκλαιεν

Chapter 15

- ¹και ευθεως επι το πρωι συμβουλιον ποιησαντες οι αρχιερεις μετα των πρεσβυτερων και γραμματεων και ολον το συνεδριον δησαντες τον ιησουν απηνεγκαν και παρεδωκαν τω πιλατω
- ²και επηρωτησεν αυτον ο πιλατος συ ει ο βασιλευς των ιουδαιων ο δε αποκριθεις ειπεν αυτω συ λεγεις
- ³και κατηγορουν αυτου οι αρχιερεις πολλα αυτος δε ουδεν απεκρινατο
- ⁴ο δε πιλατος παλιν επηρωτησεν αυτον λεγων ουκ αποκρινη ουδεν ιδε ποσα σου καταμαρτυρουσιν
- ⁵ο δε ιησους ουκετι ουδεν απεκριθη ωστε θαυμαζειν τον πιλατον
- ⁶κατα δε εορτην απελυεν αυτοις ενα δεσμιον ονπερ ητουντο
- ⁷ην δε ο λεγομενος βαραββας μετα των συστασιαστων δεδεμενος οιτινες εν τη στασει φονον πεποιηκεισαν
- ⁸και αναβοησας ο οχλος ηρξατο αιτεισθαι καθως αιει εποιει αυτοις
- ⁹ο δε πιλατος απεκριθη αυτοις λεγων θελετε απολυσω υμιν τον βασιλεα των ιουδαιων
- ¹⁰εγινωσκεν γαρ οτι δια φθονον παραδεδωκεισαν αυτον οι αρχιερεις
- ¹¹οι δε αρχιερεις ανεσεισαν τον οχλον ινα μαλλον τον βαραββαν απολυση αυτοις
- ¹²ο δε πιλατος αποκριθεις παλιν ειπεν αυτοις τι ουν θελετε ποιησω ον λεγετε βασιλεα των ιουδαιων
- ¹³οι δε παλιν εκραξαν σταυρωσον αυτον
- ¹⁴ο δε πιλατος ελεγεν αυτοις τι γαρ κακον εποιησεν οι δε περισσοτερω εκραξαν σταυρωσον αυτον
- ¹⁵ο δε πιλατος βουλομενος τω οχλω το ικανον ποιησαι απελυσεν αυτοις τον βαραββαν και παρεδωκεν τον ιησουν φραγελλωσας ινα σταυρωθη
- ¹⁶οι δε στρατιωται απηγαγον αυτον εσω της αυλης ο εστιν πραιτωριον και συγκαλουσιν ολην την σπειραν
- ¹⁷και ενδυουσιν αυτον πορφυραν και περιτιθεασιν αυτω πλεξαντες ακανθινον στεφανον
- ¹⁸και ηρξαντο ασπαζεσθαι αυτον χαιρε βασιλευ των ιουδαιων
- ¹⁹και ετυπτον αυτου την κεφαλην καλαμω και ενεπτυον αυτω και τιθεντες τα γονατα προσεκυνουν αυτω
- ²⁰και οτε ενεπαιξαν αυτω εξεδυσαν αυτον την πορφυραν και ενεδυσαν αυτον τα ιματια τα ιδια και εξαγουσιν αυτον ινα σταυρωσωσιν αυτον
- ²¹και αγγαρευουσιν παραγοντα τινα σιμωνα κυρηναιον ερχομενον απ αγρου τον πατερα αλεξανδρου και ρουφου ινα αρη τον σταυρον αυτου
- ²²και φερουσιν αυτον επι γολγοθα τοπον ο εστιν μεθερμηνευομενον κρανιου τοπος
- ²³και εδιδουν αυτω πιειν εσμυρνισμενον οινον ο δε ουκ ελαβεν

²⁴ και σταυρωσαντες αυτον διεμεριζον τα ιματια αυτου βαλλοντες κληρον επ αυτα τις τι
αρη
²⁵ ην δε ωρα τριτη και εσταυρωσαν αυτον
²⁶ και ην η επιγραφη της αιτιας αυτου επιγεγραμμενη ο βασιλευς των ιουδαιων
²⁷ και συν αυτω σταυρουσιν δυο ληστας ενα εκ δεξιων και ενα εξ ευωνυμων αυτου
²⁸ και πληρωθη η γραφη η λεγουσα και μετα ανομων ελογισθη
²⁹ και οι παραπορευομενοι εβλασφημουν αυτον κινουντες τας κεφαλας αυτων και λεγοντες
ουα ο καταλυων τον ναον και εν τρισιν ημεραις οικοδομων
³⁰ σωσον σεαυτον και καταβα απο του σταυρου
³¹ ομοιως δε και οι αρχιερεις εμπαιζοντες προς αλληλους μετα των γραμματεων ελεγον
αλλους εσωσεν εαυτον ου δυναται σωσαι
³² ο χριστος ο βασιλευς του ισραηλ καταβατω νυν απο του σταυρου ινα ιδωμεν και
πιστευσωμεν και οι συνεσταυρωμενοι αυτω ωνειδιζον αυτον
³³ γενομενης δε ωρας εκτης σκοτος εγενετο εφ ολην την γην εως ωρας εννατης
³⁴ και τη ωρα τη εννατη εβοησεν ο ιησους φωνη μεγαλη λεγων ελωι ελωι λαμμα σαβαχθανι
ο εστιν μεθερμηνευομενον ο θεος μου ο θεος μου εις τι με εγκατελιπες
³⁵ και τινες των παρεστηκοτων ακουσαντες ελεγον ιδου ηλιαν φωνει
³⁶ δραμων δε εις και γεμισας σπογγον οξους περιθεις τε καλαμω εποτιζεν αυτον λεγων
αφετε ιδωμεν ει ερχεται ηλιας καθελειν αυτον
³⁷ ο δε ιησους αφεις φωνην μεγαλην εξεπνευσεν
³⁸ και το καταπετασμα του ναου εσχισθη εις δυο απο ανωθεν εως κατω
³⁹ ιδων δε ο κεντυριων ο παρεστηκως εξ εναντιας αυτου οτι ουτως κραξας εξεπνευσεν
ειπεν αληθως ο ανθρωπος ουτος υιος ην θεου
⁴⁰ ησαν δε και γυναικες απο μακροθεν θεωρουσαι εν αις ην και μαρια η μαγδαληνη και
μαρια η του ιακωβου του μικρου και ιωση μητηρ και σαλωμη
⁴¹ αι και οτε ην εν τη γαλιλαια ηκολουθουν αυτω και διηκονουν αυτω και αλλαι πολλαι
αι συναναβασαι αυτω εις ιεροσολυμα
⁴² και ηδη οψιας γενομενης επει ην παρασκευη ο εστιν προσαββατον
⁴³ ηλθεν ιωσηφ ο απο αριμαθαιας ευσημων βουλευτης ος και αυτος ην προσδεχομενος
την βασιλειαν του θεου τολμησας ειηλθεν προς πιλατον και ητησατο το σωμα του ιησου
⁴⁴ ο δε πιλατος εθαυμασεν ει ηδη τεθνηκεν και προσκαλεσαμενος τον κεντυριωνα
επηρωτησεν αυτον ει παλαι απεθανεν
⁴⁵ και γνους απο του κεντυριωνος εδωρησατο το σωμα τω ιωσηφ
⁴⁶ και αγορασας σινδονα και καθελων αυτον ενειλησεν τη σινδονι και κατεθηκεν αυτον
εν μνημειω ο ην λελατομημενον εκ πετρας και προσεκυλισεν λιθον επι την θυραν του
μνημειου
⁴⁷ η δε μαρια η μαγδαληνη και μαρια ιωση εθεωρουν που τιθεται

Chapter 16

¹και διαγενομενου του σαββατου μαρια η μαγδαληνη και μαρια η του ιακωβου και σαλωμη ηγορασαν αρωματα ινα ελθουσαι αλειψωσιν αυτον
²και λιαν πρωι της μιας σαββατων ερχονται επι το μνημειον ανατειλαντος του ηλιου
³και ελεγον προς εαυτας τις αποκυλισει ημιν τον λιθον εκ της θυρας του μνημειου
⁴και αναβλεψασαι θεωρουσιν οτι αποκεκυλισται ο λιθος ην γαρ μεγας σφοδρα
⁵και εισελθουσαι εις το μνημειον ειδον νεανισκον καθημενον εν τοις δεξιαις περιβεβλημενον στολην λευκην και εξεθαμβηθησαν
⁶ο δε λεγει αυταις μη εκθαμβεισθε ιησουν ζητειτε τον ναζαρηνον τον εσταυρωμενον ηγερθη ουκ εστιν ωδε ιδε ο τοπος οπου εθηκαν αυτον
⁷αλλ υπαγετε ειπατε τοις μαθηταις αυτου και τω πετρω οτι προαγει υμας εις την γαλιλαιαν εκει αυτον οψεσθε καθως ειπεν υμιν
⁸και εξελθουσαι ταχυ εφυγον απο του μνημειου ειχεν δε αυτας τρομος και εκστασις και ουδενι ουδεν ειπον εφοβουντο γαρ
⁹αναστας δε πρωι πρωτη σαββατου εφανη πρωτον μαρια τη μαγδαληνη αφ ης εκβεβληκει επτα δαιμονια
¹⁰εκεινη πορευθεισα απηγγειλεν τοις μετ αυτου γενομενοις πενθουσιν και κλαιουσιν
¹¹κακεινοι ακουσαντες οτι ζη και εθεαθη υπ αυτης ηπιστησαν
¹²μετα δε ταυτα δυσιν εξ αυτων περιπατουσιν εφανερωθη εν ετερα μορφη πορευομενοις εις αγρον
¹³κακεινοι απελθοντες απηγγειλαν τοις λοιποις ουδε εκεινοις επιστευσαν
¹⁴υστερον ανακειμενοις αυτοις τοις ενδεκα εφανερωθη και ωνειδισεν την απιστιαν αυτων και σκληροκαρδιαν οτι τοις θεασαμενοις αυτον εγηγερμενον ουκ επιστευσαν
¹⁵και ειπεν αυτοις πορευθεντες εις τον κοσμον απαντα κηρυξατε το ευαγγελιον παση τη κτισει
¹⁶ο πιστευσας και βαπτισθεις σωθησεται ο δε απιστησας κατακριθησεται
¹⁷σημεια δε τοις πιστευσασιν ταυτα παρακολουθησει εν τω ονοματι μου δαιμονια εκβαλουσιν γλωσσαις λαλησουσιν καιναις
¹⁸οφεις αρουσιν καν θανασιμον τι πιωσιν ου μη αυτους βλαψει επι αρρωστους χειρας επιθησουσιν και καλως εξουσιν
¹⁹ο μεν ουν κυριος μετα το λαλησαι αυτοις ανεληφθη εις τον ουρανον και εκαθισεν εκ δεξιων του θεου
²⁰εκεινοι δε εξελθοντες εκηρυξαν πανταχου του κυριου συνεργουντος και τον λογον βεβαιουντος δια των επακολουθουντων σημειων αμην

Luke

Chapter 1

¹ επειδηπερ πολλοι επεχειρησαν αναταξασθαι διγησιν περι των πεπληροφορημενων εν ημιν πραγματων
² καθως παρεδσαν ημιν οι απ αρχης αυτοπται και υπηρεται γενομενοι του λογου
³ εδοξεν καμοι παρηκολουθηκοτι ανωθεν πασιν ακριβως καθεξης σοι γραψαι κρατιστε θεοφιλε
⁴ ινα επιγνως περι ων κατηχηθης λογων την ασφαλειαν
⁵ εγενετο εν ταις ημεραις ηρωδου του βασιλεως της ιουδαιας ιερευς τις ονοματι ζαχαριας εξ εφημεριας αβια και η γυνη αυτου εκ των θυγατερων ααρων και το ονομα αυτης ελισαβετ
⁶ ησαν δε δικαιοι αμφοτεροι ενωπιον του θεου πορευομενοι εν πασαις ταις εντολαις και δικαιωμασιν του κυριου αμεμπτοι
⁷ και ουκ ην αυτοις τεκνον καθοτι η ελισαβετ ην στειρα και αμφοτεροι προβεβηκοτες εν ταις ημεραις αυτων ησαν
⁸ εγενετο δε εν τω ιερατευειν αυτον εν τη ταξει της εφημεριας αυτου εναντι του θεου
⁹ κατα το εθος της ιερατειας ελαχεν του θυμιασαι εισελθων εις τον ναον του κυριου
¹⁰ και παν το πληθος του λαου ην προσευχομενον εξω τη ωρα του θυμιαματος
¹¹ ωφθη δε αυτω αγγελος κυριου εστως εκ δεξιων του θυσιαστηριου του θυμιαματος
¹² και εταραχθη ζαχαριας ιδων και φοβος επεπεσεν επ αυτον
¹³ ειπεν δε προς αυτον ο αγγελος μη φοβου ζαχαρια διοτι εισηκουσθη η δεησις σου και η γυνη σου ελισαβετ γεννησει υιον σοι και καλεσεις το ονομα αυτου ιωαννην
¹⁴ και εσται χαρα σοι και αγαλλιασις και πολλοι επι τη γεννησει αυτου χαρησονται
¹⁵ εσται γαρ μεγας ενωπιον του κυριου και οινον και σικερα ου μη πιη και πνευματος αγιου πλησθησεται ετι εκ κοιλιας μητρος αυτου
¹⁶ και πολλους των υιων ισραηλ επιστρεψει επι κυριον τον θεον αυτων
¹⁷ και αυτος προελευσεται ενωπιον αυτου εν πνευματι και δυναμει ηλιου επιστρεψαι καρδιας πατερων επι τεκνα και απειθεις εν φρονησει δικαιων ετοιμασαι κυριω λαον κατεσκευασμενον
¹⁸ και ειπεν ζαχαριας προς τον αγγελον κατα τι γνωσομαι τουτο εγω γαρ ειμι πρεσβυτης και η γυνη μου προβεβηκυια εν ταις ημεραις αυτης
¹⁹ και αποκριθεις ο αγγελος ειπεν αυτω εγω ειμι γαβριηλ ο παρεστηκως ενωπιον του θεου και απεσταλην λαλησαι προς σε και ευαγγελισασθαι σοι ταυτα
²⁰ και ιδου εση σιωπων και μη δυναμενος λαλησαι αχρι ης ημερας γενηται ταυτα ανθ ων ουκ επιστευσας τοις λογοις μου οιτινες πληρωθησονται εις τον καιρον αυτων
²¹ και ην ο λαος προσδοκων τον ζαχαριαν και εθαυμαζον εν τω χρονιζειν αυτον εν τω ναω
²² εξελθων δε ουκ ηδυνατο λαλησαι αυτοις και επεγνωσαν οτι οπτασιαν εωρακεν εν τω ναω και αυτος ην διανευων αυτοις και διεμενεν κωφος
²³ και εγενετο ως επλησθησαν αι ημεραι της λειτουργιας αυτου απηλθεν εις τον οικον αυτου

- ²⁴μετα δε ταυτας τας ημερας συνελαβεν ελισαβητ η γυνη αυτου και περιεκρυβεν εαυτην μηνας πεντε λεγουσα
- ²⁵οτι ουτως μοι πεποιηκεν ο κυριος εν ημεραις αις επειδεν αφελειν το ονειδος μου εν ανθρωποις
- ²⁶εν δε τω μηνι τω εκτω απεσταλη ο αγγελος γαβριηλ υπο του θεου εις πολιν της γαλιλαιας η ονομα ναζαρεθ
- ²⁷προς παρθενον μεμνηστευμενην ανδρι ω ονομα ιωσηφ εξ οικου δαβιδ και το ονομα της παρθενου μαριαμ
- ²⁸και εισελθων ο αγγελος προς αυτην ειπεν χαιρε κεχαριτωμενη ο κυριος μετα σου ευλογημενη συ εν γυναιξιν
- ²⁹η δε ιδουσα διαταραχθη επι τω λογω αυτου και διελογιζετο ποταπος ειη ο ασπασμος ουτος
- ³⁰και ειπεν ο αγγελος αυτη μη φοβου μαριαμ ευρες γαρ χαριν παρα τω θεω
- ³¹και ιδου συλληψη εν γαστρι και τεξη υιον και καλεσεις το ονομα αυτου ιησουν
- ³²ουτος εσται μεγας και υιος υψιστου κληθησεται και δωσει αυτω κυριος ο θεος τον θρονον δαβιδ του πατρος αυτου
- ³³και βασιλευσει επι τον οικον ιακωβ εις τους αιωνας και της βασιλειας αυτου ουκ εσται τελος
- ³⁴ειπεν δε μαριαμ προς τον αγγελον πως εσται τουτο επει ανδρα ου γινωσκω
- ³⁵και αποκριθεις ο αγγελος ειπεν αυτη πνευμα αγιον επελευσεται επι σε και δυναμις υψιστου επισκιασει σοι διο και το γεννωμενον εκ σου αγιον κληθησεται υιος θεου
- ³⁶και ιδου ελισαβητ η συγγενης σου και αυτη συνειληφουια υιον εν γηρα αυτης και ουτος μην εκτος εστιν αυτη τη καλουμενη στειρα
- ³⁷οτι ουκ αδυνατησει παρα τω θεω παν ρημα
- ³⁸ειπεν δε μαριαμ ιδου η δουλη κυριου γενοιτο μοι κατα το ρημα σου και απηλθεν απ αυτης ο αγγελος
- ³⁹αναστασα δε μαριαμ εν ταις ημεραις ταυταις επορευθη εις την ορεινην μετα σπουδης εις πολιν ιουδα
- ⁴⁰και εισηλθεν εις τον οικον ζαχαριου και ησπασατο την ελισαβητ
- ⁴¹και εγενετο ως ηκουσεν η ελισαβητ τον ασπασμον της μαριας εσκιρτησεν το βρεφος εν τη κοιλια αυτης και επλησθη πνευματος αγιου η ελισαβητ
- ⁴²και ανεφωνησεν φωνη μεγαλη και ειπεν ευλογημενη συ εν γυναιξιν και ευλογημενος ο καρπος της κοιλιας σου
- ⁴³και ποθεν μοι τουτο ινα ελθη η μητηρ του κυριου μου προς με
- ⁴⁴ιδου γαρ ως εγενετο η φωνη του ασπασμου σου εις τα ωτα μου εσκιρτησεν εν αγαλλιασει το βρεφος εν τη κοιλια μου
- ⁴⁵και μακαρια η πιστευσασα οτι εσται τελειωσις τοις λελαλημενοις αυτη παρα κυριου
- ⁴⁶και ειπεν μαριαμ μεγαλυνει η ψυχη μου τον κυριον

⁴⁷ και ηγαλλιασεν το πνευμα μου επι τω θεω τω σωτηρι μου
⁴⁸ οτι επεβλεψεν επι την ταπεινωσιν της δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακαριουσιν με πασαι αι γενεαι
⁴⁹ οτι εποιησεν μοι μεγαλεια ο δυνατος και αγιον το ονομα αυτου
⁵⁰ και το ελεος αυτου εις γενεας γενεων τοις φοβουμενοις αυτον
⁵¹ εποιησεν κρατος εν βραχιονι αυτου διεσκορπισεν υπερηφανους διανοια καρδιας αυτων
⁵² καθειλεν δυναστας απο θρονων και υψωσεν ταπεινους
⁵³ πεινωντας ενεπλησεν αγαθων και πλουτουντας εξαπεστειλεν κενους
⁵⁴ αντελαβετο ισραηλ παιδος αυτου μνησθηναι ελεους
⁵⁵ καθως ελαλησεν προς τους πατερας ημων τω αβρααμ και τω σπερματι αυτου εις τον αιωνα
⁵⁶ εμεινεν δε μαριαμ συν αυτη ωσει μηνας τρεις και υπεστρεψεν εις τον οικον αυτης
⁵⁷ τη δε ελισαβητ επλησθη ο χρονος του τεκειν αυτην και εγεννησεν υιον
⁵⁸ και ηκουσαν οι περιοικοι και οι συγγενεις αυτης οτι εμεγαλυνεν κυριος το ελεος αυτου μετ αυτης και συνεχαιρον αυτη
⁵⁹ και εγενετο εν τη ογδοη ημερα ηλθον περιτεμειν το παιδιον και εκαλουν αυτο επι τω ονοματι του πατρος αυτου ζαχαριαν
⁶⁰ και αποκριθεισα η μητηρ αυτου ειπεν ουχι αλλα κληθησεται ιωαννης
⁶¹ και ειπον προς αυτην οτι ουδεις εστιν εν τη συγγενεια σου ος καλειται τω ονοματι τουτω
⁶² ενενευον δε τω πατρι αυτου το τι αν θελοι καλεισθαι αυτον
⁶³ και αιτησας πινακιδιον εγραψεν λεγων ιωαννης εστιν το ονομα αυτου και εθαυμασαν παντες
⁶⁴ ανεωχθη δε το στομα αυτου παραχρημα και η γλωσσα αυτου και ελαλει ευλογων τον θεον
⁶⁵ και εγενετο επι παντας φοβος τους περιοικουντας αυτους και εν ολη τη ορεινη της ιουδαιας διελαλειτο παντα τα ρηματα ταυτα
⁶⁶ και εθεντο παντες οι ακουσαντες εν τη καρδια αυτων λεγοντες τι αρα το παιδιον τουτο εσται και χειρ κυριου ην μετ αυτου
⁶⁷ και ζαχαριας ο πατηρ αυτου επλησθη πνευματος αγιου και προεφητευσεν λεγων
⁶⁸ ευλογητος κυριος ο θεος του ισραηλ οτι επεσκεψατο και εποιησεν λυτρωσιν τω λαω αυτου
⁶⁹ και ηγειρεν κερας σωτηριας ημιν εν τω οικω δαβιδ του παιδος αυτου
⁷⁰ καθως ελαλησεν δια στοματος των αγιων των απ αιωνος προφητων αυτου
⁷¹ σωτηριαν εξ εχθρων ημων και εκ χειρος παντων των μισουντων ημας
⁷² ποιησαι ελεος μετα των πατερων ημων και μνησθηναι διαθηκης αγιας αυτου
⁷³ ορκον ον ωμοσεν προς αβρααμ τον πατερα ημων του δουναι ημιν
⁷⁴ αφοβως εκ χειρος των εχθρων ημων ρυσθεντας λατρευειν αυτω

- ⁷⁵εν οσιοτητι και δικαιοσυνη ενωπιον αυτου πασας τας ημερας της ζωης ημων
⁷⁶και συ παιδιον προφητης υψιστου κληθηση προπορευση γαρ προ προσωπου κυριου
ετοιμασαι οδους αυτου
⁷⁷του δουναι γνωσιν σωτηριας τω λαω αυτου εν αφεσει αμαρτιων αυτων
⁷⁸δια σπλαγχνα ελεους θεου ημων εν οις επεσκεψατο ημας ανατολη εξ υψους
⁷⁹επιφαναι τοις εν σκοτει και σκια θανατου καθημενοις του κατευθυναι τους ποδας ημων
εις οδον ειρηνης
⁸⁰το δε παιδιον ηυξανεν και εκραταιουτο πνευματι και ην εν ταις ερημοις εως ημερας
αναδειξεως αυτου προς τον ισραηλ

Chapter 2

¹εγενετο δε εν ταις ημεραις εκειναις εξηλθεν δογμα παρα καισαρος αυγουστου απογραφεσθαι πασαν την οικουμενην
²αυτη η απογραφη πρωτη εγενετο ηγεμονευοντος της συριας κυρηνιου
³και επορευοντο παντες απογραφεσθαι εκαστος εις την ιδιαν πολιν
⁴ανεβη δε και ιωσηφ απο της γαλιλαιας εκ πολεως ναζαρεθ εις την ιουδαιαν εις πολιν δαβιδ ητις καλειται βηθλεεμ δια το ειναι αυτον εξ οικου και πατριας δαβιδ
⁵απογραψασθαι συν μαριαμ τη μεμνηστευμενη αυτω γυναικι ουση εγκυω
⁶εγενετο δε εν τω ειναι αυτους εκει επλησθησαν αι ημεραι του τεκειν αυτην
⁷και ετεκεν τον υιον αυτης τον πρωτοτοκον και εσπαργανωσεν αυτον και ανεκλινεν αυτον εν τη φατνη διοτι ουκ ην αυτοις τοπος εν τω καταλυματι
⁸και ποιμενες ησαν εν τη χωρα τη αυτη αγραυλουντες και φυλασσοντες φυλακας της νυκτος επι την ποιμνην αυτων
⁹και ιδου αγγελος κυριου επεστη αυτοις και δοξα κυριου περιελαμψεν αυτους και εφοβηθησαν φοβον μεγαν
¹⁰και ειπεν αυτοις ο αγγελος μη φοβεισθε ιδου γαρ ευαγγελιζομαι υμιν χαραν μεγαλην ητις εσται παντι τω λαω
¹¹οτι ετεχθη υμιν σημερον σωτηρ ος εστιν χριστος κυριος εν πολει δαβιδ
¹²και τουτο υμιν το σημειον ευρησετε βρεφος εσπαργανωμενον κειμενον εν τη φατνη
¹³και εξαιφνης εγενετο συν τω αγγελω πληθος στρατιας ουρανιου αινουντων τον θεον και λεγοντων
¹⁴δοξα εν υψιστοις θεω και επι γης ειρηνη εν ανθρωποις ευδοκια
¹⁵και εγενετο ως απηλθον απ αυτων εις τον ουρανον οι αγγελοι και οι ανθρωποι οι ποιμενες ειπον προς αλληλους διελθωμεν δη εως βηθλεεμ και ιδωμεν το ρημα τουτο το γεγονος ο ο κυριος εγνωρισεν ημιν
¹⁶και ηλθον σπευσαντες και ανευρον την τε μαριαμ και τον ιωσηφ και το βρεφος κειμενον εν τη φατνη
¹⁷ιδοντες δε διεγνωρισαν περι του ρηματος του λαληθεντος αυτοις περι του παιδιου τουτου
¹⁸και παντες οι ακουσαντες εθαυμασαν περι των λαληθεντων υπο των ποιμενων προς αυτους
¹⁹η δε μαριαμ παντα συνετηρει τα ρηματα ταυτα συμβαλλουσα εν τη καρδια αυτης
²⁰και επεστρεψαν οι ποιμενες δοξαζοντες και αινουντες τον θεον επι πασιν οις ηκουσαν και ειδον καθως ελαληθη προς αυτους
²¹και οτε επλησθησαν ημεραι οκτω του περιτεμειν το παιδιον και εκληθη το ονομα αυτου ιησους το κληθεν υπο του αγγελου προ του συλληφθηναι αυτον εν τη κοιλια
²²και οτε επλησθησαν αι ημεραι του καθαρισμου αυτης κατα τον νομον μωσεως ανηγαγον αυτον εις ιεροσολυμα παραστησαι τω κυριω

- ²³ καθως γεγραπται εν νομω κυριου οτι παν αρσεν διανοιγον μητραν αγιον τω κυριω κληθησεται
- ²⁴ και του δουναι θυσιαν κατα το ειρημενον εν νομω κυριου ζευγος τρυγωνων η δυο νεοσσους περιστερων
- ²⁵ και ιδου ην ανθρωπος εν ιερουσαλημ ω ονομα σιμεων και ο ανθρωπος ουτος δικαιος και ευλαβης προσδεχομενος παρακλησιν του ισραηλ και πνευμα αγιον ην επ αυτον
- ²⁶ και ην αυτω κεχηματισμενον υπο του πνευματος του αγιου μη ιδειν θανατον πριν η ιδη τον χριστον κυριου
- ²⁷ και ηλθεν εν τω πνευματι εις το ιερον και εν τω εισαγαγειν τους γονεις το παιδιον ιησουν του ποιησαι αυτους κατα το ειθισμενον του νομου περι αυτου
- ²⁸ και αυτος εδεξατο αυτο εις τας αγκαλας αυτου και ευλογησεν τον θεον και ειπεν
- ²⁹ νυν απολυεις τον δουλον σου δεσποτα κατα το ρημα σου εν ειρηνη
- ³⁰ οτι ειδον οι οφθαλμοι μου το σωτηριον σου
- ³¹ ο ητοιμασας κατα προσωπον παντων των λαων
- ³² φως εις αποκαλυψιν εθνων και δοξαν λαου σου ισραηλ
- ³³ και ην ιωσηφ και η μητηρ αυτου θαυμαζοντες επι τοις λαλουμενοις περι αυτου
- ³⁴ και ευλογησεν αυτους σιμεων και ειπεν προς μαριαμ την μητερα αυτου ιδου ουτος κειται εις πτωσιν και αναστασιν πολλων εν τω ισραηλ και εις σημειον αντιλεγομενον
- ³⁵ και σου δε αυτης την ψυχην διελευσεται ρομφαια οπως αν αποκαλυφθωσιν εκ πολλων καρδιων διαλογισμοι
- ³⁶ και ην αννα προφητις θυγατηρ φανουηλ εκ φυλης ασηρ αυτη προβεβηκυια εν ημεραις πολλαις ζησασα ετη μετα ανδρος επτα απο της παρθενιας αυτης
- ³⁷ και αυτη χηρα ως ετων ογδοηκονταεσσαρων η ουκ αφιστατο απο του ιερου νηστειαις και δεησεσιν λατρευουσα νυκτα και ημεραν
- ³⁸ και αυτη αυτη τη ωρα επιστασα ανθρωμολογειτο τω κυριω και ελαλει περι αυτου πασιν τοις προσδεχομενοις λυτρωσιν εν ιερουσαλημ
- ³⁹ και ως ετελεσαν απαντα τα κατα τον νομον κυριου υπεστρεψαν εις την γαλιλαιαν εις την πολιν αυτων ναζαρεθ
- ⁴⁰ το δε παιδιον ηυξανεν και εκραταιουτο πνευματι πληρουμενον σοφιας και χαρις θεου ην επ αυτο
- ⁴¹ και επορευοντο οι γονεις αυτου κατ ετος εις ιερουσαλημ τη εορτη του πασχα
- ⁴² και οτε εγενετο ετων δωδεκα αναβαντων αυτων εις ιεροσολυμα κατα το εθος της εορτης
- ⁴³ και τελειωσαντων τας ημερας εν τω υποστρεφειν αυτους υπεμεινεν ιησους ο παις εν ιερουσαλημ και ουκ εγνω ιωσηφ και η μητηρ αυτου
- ⁴⁴ νομισαντες δε αυτον εν τη συνοδια ειναι ηλθον ημερας οδον και ανεζητουν αυτον εν τοις συγγενεσιν και εν τοις γνωστοις
- ⁴⁵ και μη ευροντες αυτον υπεστρεψαν εις ιερουσαλημ ζητουντες αυτον

⁴⁶ και εγενετο μεθ ημερας τρεις ευρον αυτον εν τω ιερω καθεζομενον εν μεσω των διδασκαλων και ακουοντα αυτων και επερωτωντα αυτους

⁴⁷ εξισταντο δε παντες οι ακουοντες αυτου επι τη συνεσει και ταις αποκρισεσιν αυτου

⁴⁸ και ιδοντες αυτον εξεπλαγησαν και προς αυτον η μητηρ αυτου ειπεν τεκνον τι εποιησας ημιν ουτως ιδου ο πατηρ σου καγω οδυνωμενοι εζητουμεν σε

⁴⁹ και ειπεν προς αυτους τι οτι εζητειτε με ουκ ηδειτε οτι εν τοις του πατρος μου δει ειναι με

⁵⁰ και αυτοι ου συνηκαν το ρημα ο ελαλησεν αυτοις

⁵¹ και κατεβη μετ αυτων και ηλθεν εις ναζαρεθ και ην υποτασσομενος αυτοις και η μητηρ αυτου διετηρει παντα τα ρηματα ταυτα εν τη καρδια αυτης

⁵² και ιησους προεκοπτεν σοφια και ηλικια και χαριτι παρα θεω και ανθρωποις

Chapter 3

¹εν ετει δε πεντεκαιδεκατω της ηγεμονιας τιβεριου καισαρος ηγεμονευοντος ποντιου πιλατου της ιουδαιας και τετραρχουντος της γαλιλαιας ηρωδου φιλιππου δε του αδελφου αυτου τετραρχουντος της ιτουραιας και τραχωνιτιδος χωρας και λυσανιου της αβιληνης τετραρχουντος

²επ αρχιερεων αννα και καιαφα εγενετο ρημα θεου επι ιωαννην τον του ζαχαριου υιον εν τη ερημω

³και ηλθεν εις πασαν την περιχωρον του ιορδανου κηρυσσων βαπτισμα μετανοιας εις αφεσιν αμαρτιων

⁴ως γεγραπται εν βιβλω λογων ησαιου του προφητου λεγοντος φωνη βοωντος εν τη ερημω ετοιμασατε την οδον κυριου ευθειας ποιειτε τας τριβους αυτου

⁵πασα φαραγξ πληρωθησεται και παν ορος και βουνος ταπεινωθησεται και εσται τα σκολια εις ευθειαν και αι τραχειαι εις οδους λειας

⁶και οψεται πασα σαρξ το σωτηριον του θεου

⁷ελεγεν ουν τοις εκπορευομενοις οχλοις βαπτισθηναι υπ αυτου γεννηματα εχιδνων τις υπεδειξεν υμιν φυγειν απο της μελλουσης οργης

⁸ποιησατε ουν καρπους αξιους της μετανοιας και μη αρξησθε λεγειν εν εαυτοις πατερα εχομεν τον αβρααμ λεγω γαρ υμιν οτι δυναται ο θεος εκ των λιθων τουτων εγειραι τεκνα τω αβρααμ

⁹ηδη δε και η αξινη προς την ριζαν των δενδρων κειται παν ουν δενδρον μη ποιουν καρπον καλον εκκοπτεται και εις πυρ βαλλεται

¹⁰και επηρωτων αυτον οι οχλοι λεγοντες τι ουν ποιησομεν

¹¹αποκριθεις δε λεγει αυτοις ο εχων δυο χιτωνας μεταδοτω τω μη εχοντι και ο εχων βρωματα ομοιωσ ποιειτω

¹²ηλθον δε και τελωναι βαπτισθηναι και ειπον προς αυτον διδασκαλε τι ποιησομεν

¹³ο δε ειπεν προς αυτους μηδεν πλεον παρα το διατεταγμενον υμιν πρασσετε

¹⁴επηρωτων δε αυτον και στρατευομενοι λεγοντες και ημεις τι ποιησομεν και ειπεν προς αυτους μηδενα διασεισητε μηδε συκοφαντησητε και αρκεισθε τοις οψωνιοις υμων

¹⁵προσδοκωντος δε του λαου και διαλογιζομενων παντων εν ταις καρδιαις αυτων περι του ιωαννου μηποτε αυτος ειη ο χριστος

¹⁶απεκρινατο ο ιωαννης απασιν λεγων εγω μεν υδατι βαπτιζω υμας ερχεται δε ο ισχυροτερος μου ου ουκ ειμι ικανος λυσαι τον ιμαντα των υποδηματων αυτου αυτος υμας βαπτισει εν πνευματι αγιω και πυρι

¹⁷ου το πτυον εν τη χειρι αυτου και διακαθαριει την αλωνα αυτου και συναξει τον σιτον εις την αποθηκην αυτου το δε αχυρον κατακαυσει πυρι ασβεστω

¹⁸πολλα μεν ουν και ετερα παρακαλων ευηγγελιζετο τον λαον

¹⁹ο δε ηρωδης ο τετραρχης ελεγχομενος υπ αυτου περι ηρωδιαδος της γυναικος φιλιππου του αδελφου αυτου και περι παντων ων εποιησεν πονηρων ο ηρωδης

- ²⁰προσεθηκεν και τουτο επι πασιν και κατεκλεισεν τον ιωαννην εν τη φυλακη
²¹εγενετο δε εν τω βαπτισθηναι απαντα τον λαον και ιησου βαπτισθεντος και
προσευχομενου ανεωχθηναι τον ουρανον
²²και καταβηναι το πνευμα το αγιον σωματικω ειδει ωσει περιστεραν επ αυτον και φωνην
εξ ουρανου γενεσθαι λεγουσαν συ ει ο υιος μου ο αγαπητος εν σοι ηυδοκησα
²³και αυτος ην ο ιησους ωσει ετων τριακοντα αρχομενος ων ως ενομιζετο υιος ιωσηφ του
ηλι
²⁴του ματθατ του λευι του μελχι του ιαννα του ιωσηφ
²⁵του ματταθιου του αμωσ του ναουμ του εσλι του ναγγαι
²⁶του μααθ του ματταθιου του σεμει του ιωσηφ του ιουδα
²⁷του ιωαννα του ρησα του ζοροβαβελ του σαλαθιηλ του νηρι
²⁸του μελχι του αδδι του κωσαμ του ελμωδαμ του ηρ
²⁹του ιωσηφ του ελιεζερ του ιωρειμ του ματθατ του λευι
³⁰του σιμεων του ιουδα του ιωσηφ του ιωναν του ελιακειμ
³¹του μελεα του μεναμ του ματταθα του ναθαν του δαβιδ
³²του ιεσσαι του ωβηδ του βοοζ του σαλμων του ναασων
³³του αμιναδαβ του αραμ του εσρωμ του φαρες του ιουδα
³⁴του ιακωβ του ισαακ του αβρααμ του θαρα του ναχωρ
³⁵του σαρουχ του ραγαυ του φαλεκ του εβερ του σαλα
³⁶του καιναν του αρφαξαδ του σημ του νωε του λαμεχ
³⁷του μαθουσαλα του ενωχ του ιαρεδ του μαλελεηλ του καιναν
³⁸του ενως του σηθ του αδαμ του θεου

Chapter 4

¹ιησους δε πνευματος αγιου πληρης υπεστρεψεν απο του ιορδανου και ηγετο εν τω πνευματι εις την ερημον
²ημερας τεσσαρακοντα πειραζομενος υπο του διαβολου και ουκ εφαγεν ουδεν εν ταις ημεραις εκειναις και συντελεσθεισων αυτων υστερον επεινασεν
³και ειπεν αυτω ο διαβολος ει υιος ει του θεου ειπε τω λιθω τουτω ινα γενηται αρτος
⁴και απεκριθη ιησους προς αυτον λεγων γεγραπται οτι ουκ επ αρτω μονω ζησεται ο ανθρωπος αλλ επι παντι ρηματι θεου
⁵και αναγαγων αυτον ο διαβολος εις ορος υψηλον εδειξεν αυτω πασας τας βασιλειας της οικουμενης εν στιγμή χρονου
⁶και ειπεν αυτω ο διαβολος σοι δωσω την εξουσιαν ταυτην απασαν και την δοξαν αυτων οτι εμοι παραδεδοται και ω εαν θελω διδωμι αυτην
⁷συ ουν εαν προσκυνησης ενωπιον μου εσται σου παντα
⁸και αποκριθεις αυτω ειπεν ο ιησους υπαγε οπισω μου σατανα γεγραπται γαρ προσκυνησεις κυριον τον θεον σου και αυτω μονω λατρευσεις
⁹και ηγαγεν αυτον εις ιερουσαλημ και εστησεν αυτον επι το πτερυγιον του ιερου και ειπεν αυτω ει ο υιος ει του θεου βαλε σεαυτον εντευθεν κατω
¹⁰γεγραπται γαρ οτι τοις αγγελιοις αυτου εντελειται περι σου του διαφυλαξαι σε
¹¹και οτι επι χειρων αρουσιν σε μηποτε προσκοψης προς λιθον τον ποδα σου
¹²και αποκριθεις ειπεν αυτω ο ιησους οτι ειρηται ουκ εκπειρασεις κυριον τον θεον σου
¹³και συντελεσας παντα πειρασμον ο διαβολος απεστη απ αυτου αχρι καιρου
¹⁴και υπεστρεψεν ο ιησους εν τη δυναμει του πνευματος εις την γαλιλαιαν και φημη εξηλθεν καθ ολης της περιχωρου περι αυτου
¹⁵και αυτος εδιδασκεν εν ταις συναγωγαις αυτων δοξαζομενος υπο παντων
¹⁶και ηλθεν εις την ναζαρεθ ου ην τεθραμμενος και εισηλθεν κατα το ειωθος αυτω εν τη ημερα των σαββατων εις την συναγωγην και ανεστη αναγνωνας
¹⁷και επεδοθη αυτω βιβλιον ησαιου του προφητου και αναπτυξας το βιβλιον ευρεν τον τοπον ου ην γεγραμμενον
¹⁸πνευμα κυριου επ εμε ου ενεκεν εχρισεν με ευαγγελιζεσθαι πτωχοις απεσταλκεν με ιασασθαι τους συντετριμμενους την καρδιαν κηρυξαι αιχμαλωτοις αφεσιν και τυφλοις αναβλεψιν αποστειλαι τεθραυσμενους εν αφεσει
¹⁹κηρυξαι ενιαυτον κυριου δεκτον
²⁰και πτυξας το βιβλιον αποδους τω υπηρετη εκαθισεν και παντων εν τη συναγωγη οι οφθαλμοι ησαν ατενιζοντες αυτω
²¹ηρξατο δε λεγειν προς αυτους οτι σημερον πεπληρωται η γραφη αυτη εν τοις ωσιν υμων
²²και παντες εμαρτυρουν αυτω και εθαυμαζον επι τοις λογοις της χαριτος τοις εκπορευομενοις εκ του στοματος αυτου και ελεγον ουχ ουτος εστιν ο υιος ιωσηφ

²³ και ειπεν προς αυτους παντως ερειτε μοι την παραβολην ταυτην ιατρε θεραπευσον σεαυτον οσα ηκουσαμεν γενομενα εν τη καπερναουμ ποιησον και ωδε εν τη πατριδι σου
²⁴ ειπεν δε αμην λεγω υμιν οτι ουδεις προφητης δεκτος εστιν εν τη πατριδι αυτου
²⁵ επ αληθειας δε λεγω υμιν πολλαι χηραι ησαν εν ταις ημεραις ηλιου εν τω ισραηλ οτε εκλεισθη ο ουρανος επι ετη τρια και μηνας εξ ως εγενετο λιμος μεγας επι πασαν την γην
²⁶ και προς ουδεμιαν αυτων επεμφθη ηλιας ει μη εις σαρεπτα της σιδωνος προς γυναικα χηραν
²⁷ και πολλοι λεπροι ησαν επι ελισσαιου του προφητου εν τω ισραηλ και ουδεις αυτων εκαθαρισθη ει μη νεεμαν ο συρος
²⁸ και επλησθησαν παντες θυμου εν τη συναγωγη ακουοντες ταυτα
²⁹ και ανασταντες εξεβαλον αυτον εξω της πολεως και ηγαγον αυτον εως της οφρουο του ορους εφ ου η πολις αυτων ωκοδομητο εις το κατακρημνισαι αυτον
³⁰ αυτος δε διελθων δια μεσου αυτων επορευετο
³¹ και κατηλθεν εις καπερναουμ πολιν της γαλιλαιας και ην διδασκων αυτους εν τοις σαββασιν
³² και εξεπλησσοντο επι τη διδαχη αυτου οτι εν εξουσια ην ο λογος αυτου
³³ και εν τη συναγωγη ην ανθρωπος εχων πνευμα δαιμονιου ακαθαρτου και ανεκραξεν φωνη μεγαλη
³⁴ λεγων εα τι ημιν και σοι ιησου ναζαρηνη ηλθες απολεσαι ημας οιδα σε τις ει ο αγιος του θεου
³⁵ και επετιμησεν αυτω ο ιησους λεγων φιμωθητι και εξελθε εξ αυτου και ριψαν αυτον το δαιμονιον εις το μεσον εξηλθεν απ αυτου μηδεν βλαψαν αυτον
³⁶ και εγενετο θαμβος επι παντας και συνελαλουν προς αλληλους λεγοντες τις ο λογος ουτος οτι εν εξουσια και δυναμει επιτασσει τοις ακαθαρτοις πνευμασιν και εξερχονται
³⁷ και εξεπορευετο ηχος περι αυτου εις παντα τοπον της περιχωρου
³⁸ αναστας δε εκ της συναγωγης εισηλθεν εις την οικιαν σιμωνος η πενθερα δε του σιμωνος ην συνεχομενη πυρετω μεγαλω και ηρωτησαν αυτον περι αυτης
³⁹ και επιστας επανω αυτης επετιμησεν τω πυρετω και αφηκεν αυτην παραχρημα δε αναστασα διηκονει αυτοις
⁴⁰ δυνοντος δε του ηλιου παντες οσοι ειχον ασθενουντας νοσοις ποικιλαις ηγαγον αυτους προς αυτον ο δε ενι εκαστω αυτων τας χειρας επιθεις εθεραπευσεν αυτους
⁴¹ εξηρχετο δε και δαιμονια απο πολλων κραζοντα και λεγοντα οτι συ ει ο χριστος ο υιος του θεου και επιτιμων ουκ εια αυτα λαλειν οτι ηδεισαν τον χριστον αυτον ειναι
⁴² γενομενης δε ημερας εξελθων επορευθη εις ερημον τοπον και οι οχλοι εζητουν αυτον και ηλθον εως αυτου και κατειχον αυτον του μη πορευεσθαι απ αυτων
⁴³ ο δε ειπεν προς αυτους οτι και ταις ετεραις πολεσιν ευαγγελισασθαι με δει την βασιλειαν του θεου οτι εις τουτο απεσταλμαι
⁴⁴ και ην κηρυσσων εν ταις συναγωγαίς της γαλιλαιας

Chapter 5

- ¹εγενετο δε εν τω τον οχλον επικεισθαι αυτω του ακουειν τον λογον του θεου και αυτος ην εστωσ παρα την λιμνην γεννησαρετ
- ²και ειδεν δυο πλοια εστωτα παρα την λιμνην οι δε αλιεις αποβαντες απ αυτων απεπλυναν τα δικτυα
- ³εμβας δε εις εν των πλοιων ο ην του σιμωνος ηρωτησεν αυτον απο της γης επαναγαγειν ολιγον και καθισας εδιδασκεν εκ του πλοιου τους οχλους
- ⁴ως δε επαυσατο λαλων ειπεν προς τον σιμωνα επαναγαγε εις το βαθος και χαλασατε τα δικτυα υμων εις αγραν
- ⁵και αποκριθεις ο σιμων ειπεν αυτω επιστατα δι ολης της νυκτος κοπιασαντες ουδεν ελαβομεν επι δε τω ρηματι σου χαλασω το δικτυον
- ⁶και τουτο ποιησαντες συνεκλεισαν ιχθυων πληθος πολυ διερρηγνυτο δε το δικτυον αυτων
- ⁷και κατενευσαν τοις μετοχοις τοις εν τω ετερω πλοιω του ελθοντασ συλλαβεσθαι αυτοις και ηλθον και επλησαν αμφοτερα τα πλοια ωστε βυθιζεσθαι αυτα
- ⁸ιδων δε σιμων πετροσ προσεπεσεν τοις γονασιν του ιησου λεγων εξελθε απ εμου οτι ανηρ αμαρτωλοσ ειμι κυριε
- ⁹θαμβοσ γαρ περιεσχεν αυτον και παντασ τους συν αυτω επι τη αγρα των ιχθυων η συνελαβον
- ¹⁰ομοιωσ δε και ιακωβον και ιωαννην υιουσ ζεβεδαιου οι ησαν κοινωνοι τω σιμωνι και ειπεν προς τον σιμωνα ο ιησοσ μη φοβου απο του νυν ανθρωπουσ εση ζωγων
- ¹¹και καταγαγοντεσ τα πλοια επι την γην αφεντεσ απαντα ηκολουθησαν αυτω
- ¹²και εγενετο εν τω ειναι αυτον εν μια των πολεων και ιδου ανηρ πληρησ λεπρασ και ιδων τον ιησοσν πεσων επι προσωπον εδεηθη αυτου λεγων κυριε εαν θελησ δυνασαι με καθαρισαι
- ¹³και εκτεινασ την χειρα ηψατο αυτου ειπων θελω καθαρισθητι και ευθεωσ η λεπρα απηλθεν απ αυτου
- ¹⁴και αυτοσ παρηγγειλεν αυτω μηδενι ειπειν αλλα απελθων δειξον σεαυτον τω ιερει και προσενεγκε περι του καθαρισμου σου καθωσ προσεταξεν μωσησ εις μαρτυριον αυτοις
- ¹⁵διηρχετο δε μαλλον ο λογοσ περι αυτου και συνηρχοντο οχλοι πολλοι ακουειν και θεραπευεσθαι υπ αυτου απο των ασθeneiων αυτων
- ¹⁶αυτοσ δε ην υποχωρων εν ταισ ερημοις και προσευχομενοσ
- ¹⁷και εγενετο εν μια των ημερων και αυτοσ ην διδασκων και ησαν καθημενοι φαρισαιοι και νομοδιδασκαλοι οι ησαν εληλυθοτεσ εκ πασησ κωμησ της γαλιλαιασ και ιουδαιασ και ιερουσαλημ και δυναμισ κυριου ην εις το ιασθαι αυτοσ
- ¹⁸και ιδου ανδρεσ φεροντεσ επι κλινησ ανθρωπον οσ ην παραλελυμενοσ και εζητουν αυτον εισενεγκειν και θειναι ενωπιον αυτου
- ¹⁹και μη ευροντεσ δια ποιασ εισενεγκωσιν αυτον δια τον οχλον αναβαντεσ επι το δωμα δια των κεραμων καθηκαν αυτον συν τω κλινιδιω εις το μεσον εμπροσθεν του ιησου
- ²⁰και ιδων την πιστιν αυτων ειπεν αυτω ανθρωπε αφεωνται σοι αι αμαρτια σου

- ²¹ και ηρξαντο διαλογιζεσθαι οι γραμματεις και οι φαρισαιοι λεγοντες τις εστιν ουτος ος λαλει βλασφημιας τις δυναται αφιεναι αμαρτιας ει μη μονος ο θεος
- ²² επιγνους δε ο ιησους τους διαλογισμους αυτων αποκριθεις ειπεν προς αυτους τι διαλογιζεσθε εν ταις καρδιαις υμων
- ²³ τι εστιν ευκοπωτερον ειπειν αφεωνται σοι αι αμαρτια σου η ειπειν εγειραι και περιπατει
- ²⁴ ινα δε ειδητε οτι εξουσιαν εχει ο υιος του ανθρωπου επι της γης αφιεναι αμαρτιας ειπεν τω παραλελυμενω σοι λεγω εγειραι και αρας το κλινιδιον σου πορευου εις τον οικον σου
- ²⁵ και παραχρημα αναστας ενωπιον αυτων αρας εφ ω κατεκειτο απηλθεν εις τον οικον αυτου δοξαζων τον θεον
- ²⁶ και εκστασις ελαβεν απαντας και εδοξαζον τον θεον και επλησθησαν φοβου λεγοντες οτι ειδομεν παραδοξα σημερον
- ²⁷ και μετα ταυτα εξηλθεν και εθεασατο τελωνην ονοματι λευιν καθημενον επι το τελωνιον και ειπεν αυτω ακολουθει μοι
- ²⁸ και καταλιπων απαντα αναστας ηκολουθησεν αυτω
- ²⁹ και εποιησεν δοχην μεγαλην ο λευις αυτω εν τη οικια αυτου και ην οχλος τελωνων πολυς και αλλων οι ησαν μετ αυτων κατακειμενοι
- ³⁰ και εγογγυζον οι γραμματεις αυτων και οι φαρισαιοι προς τους μαθητας αυτου λεγοντες διατι μετα τελωνων και αμαρτωλων εσθιετε και πινετε
- ³¹ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν προς αυτους ου χρειαν εχουσιν οι υγιαिनοντες ιατρου αλλ οι κακως εχοντες
- ³² ουκ εληλυθα καλεσαι δικαιους αλλα αμαρτωλους εις μετανοιαν
- ³³ οι δε ειπον προς αυτον διατι οι μαθηται ιωαννου νηστεουσιν πυκνα και δεησεις ποιουνται ομοιως και οι των φαρισαιων οι δε σοι εσθιουσιν και πινουσιν
- ³⁴ ο δε ειπεν προς αυτους μη δυνασθε τους υιους του νυμφωνος εν ω ο νυμφιος μετ αυτων εστιν ποιησαι νηστευειν
- ³⁵ ελευσονται δε ημεραι και οταν απαρθη απ αυτων ο νυμφιος τοτε νηστεουσιν εν εκειναις ταις ημεραις
- ³⁶ ελεγεν δε και παραβολην προς αυτους οτι ουδεις επιβλημα ιματιου καινου επιβαλλει επι ιματιον παλαιον ει δε μηγε και το καινον σχιζει και τω παλαιω ου συμφωνει επιβλημα το απο του καινου
- ³⁷ και ουδεις βαλλει οινον νεον εις ασκους παλαιους ει δε μηγε ρηξει ο νεος οινος τους ασκους και αυτος εκχυθησεται και οι ασκοι απολουνται
- ³⁸ αλλα οινον νεον εις ασκους καινους βλητεον και αμφοτεροι συντηρουνται
- ³⁹ και ουδεις πινω παλαιον ευθεως θελει νεον λεγει γαρ ο παλαιος χρηστοτερος εστιν

Chapter 6

¹εγενετο δε εν σαββατω δευτεροπρωτω διαπορευεσθαι αυτον δια των σοριμων και ετιλλον οι μαθηται αυτου τους σταχυας και ησθιον ψωχοντες ταις χερσιν
²τινες δε των φαρισαιων ειπον αυτοις τι ποιειτε ο ουκ εξεστιν ποιειν εν τοις σαββασιν
³και αποκριθεις προς αυτους ειπεν ο ιησους ουδε τουτο ανεγνωτε ο εποιησεν δαβιδ οποτε επεινασεν αυτος και οι μετ αυτου οντες
⁴ως εισηλθεν εις τον οικον του θεου και τους αρτους της προθεσεως ελαβεν και εφαγεν και εδωκεν και τοις μετ αυτου ους ουκ εξεστιν φαγειν ει μη μονους τους ιερεις
⁵και ελεγεν αυτοις οτι κυριος εστιν ο υιος του ανθρωπου και του σαββατου
⁶εγενετο δε και εν ετερω σαββατω εισελθειν αυτον εις την συναγωγην και διδασκειν και ην εκει ανθρωπος και η χειρ αυτου η δεξια ην ξηρα
⁷παρητηρουν δε αυτον οι γραμματεις και οι φαρισαιοι ει εν τω σαββατω θεραπευσει ινα ευρωσιν κατηγοριαν αυτου
⁸αυτος δε ηδει τους διαλογισμους αυτων και ειπεν τω ανθρωπω τω ξηραν εχοντι την χειρα εγειραι και στηθι εις το μεσον ο δε αναστας εστη
⁹ειπεν ουν ο ιησους προς αυτους επερωτησω υμας τι εξεστιν τοις σαββασιν αγαθοποιησαι η κακοποιησαι ψυχην σωσαι η απολεσαι
¹⁰και περιβλεψαμενος παντας αυτους ειπεν τω ανθρωπω εκτεινον την χειρα σου ο δε εποιησεν ουτως και αποκατεσταθη η χειρ αυτου υγιης ως η αλλη
¹¹αυτοι δε επλησθησαν ανοιας και διελαλουν προς αλληλους τι αν ποιησειαν τω ιησου
¹²εγενετο δε εν ταις ημεραις ταυταις εξηλθεν εις το ορος προσευξασθαι και ην διανυκτερευων εν τη προσευχη του θεου
¹³και οτε εγενετο ημερα προσεφωνησεν τους μαθητας αυτου και εκλεξαμενος απ αυτων δωδεκα ους και αποστολους ωνομασεν
¹⁴σιμωνα ον και ωνομασεν πετρον και ανδρεαν τον αδελφον αυτου ιακωβον και ιωαννην φιλιππον και βαρθολομαιον
¹⁵ματθαιον και θωμαν ιακωβον τον του αλφαιου και σιμωνα τον καλουμενον ζηλωτην
¹⁶ιουδαν ιακωβου και ιουδαν ισκαριωτην ος και εγενετο προδοτης
¹⁷και καταβας μετ αυτων εστη επι τοπου πεδινου και οχλος μαθητων αυτου και πληθος πολυ του λαου απο πασης της ιουδαιας και ιερουσαλημ και της παραλιου τυρου και σιδωνος οι ηλθον ακουσαι αυτου και ιαθηναι απο των νοσων αυτων
¹⁸και οι οχλουμενοι υπο πνευματων ακαθαρτων και εθεραπευοντο
¹⁹και πας ο οχλος εζητει απτεσθαι αυτου οτι δυναμις παρ αυτου εξηρχετο και ιατο παντας
²⁰και αυτος επαρας τους οφθαλμους αυτου εις τους μαθητας αυτου ελεγεν μακαριοι οι πτωχοι οτι υμετερα εστιν η βασιλεια του θεου
²¹μακαριοι οι πεινωντες νυν οτι χορτασθησεσθε μακαριοι οι κλαιοντες νυν οτι γελασετε
²²μακαριοι εστε οταν μισησωσιν υμας οι ανθρωποι και οταν αφορισωσιν υμας και ονειδισωσιν και εκβαλωσιν το ονομα υμων ως πονηρον ενεκα του υιου του ανθρωπου

- ²³χαιρετε εν εκεινη τη ημερα και σκιρτησατε ιδου γαρ ο μισθος υμων πολυς εν τω ουρανω
κατα ταυτα γαρ εποιουν τοις προφηταις οι πατερες αυτων
- ²⁴πλην ουαι υμιν τοις πλουσιοις οτι απεχετε την παρακλησιν υμων
- ²⁵ουαι υμιν οι εμπεπλησμενοι οτι πεινασετε ουαι υμιν οι γελωντες νυν οτι πενθησετε και
κλαυσετε
- ²⁶ουαι υμιν οταν καλως υμας ειπωσιν παντες οι ανθρωποι κατα ταυτα γαρ εποιουν τοις
ψευδοπροφηταις οι πατερες αυτων
- ²⁷αλλ υμιν λεγω τοις ακουουσιν αγαπατε τους εχθρους υμων καλως ποιειτε τοις μισουσιν
υμας
- ²⁸ευλογειτε τους καταρωμενους υμιν και προσευχεσθε υπερ των επηρεαζοντων υμας
- ²⁹τω τυπτοντι σε επι την σιαγονα παρεχε και την αλλην και απο του αιροντος σου το
ιματιον και τον χιτωνα μη κωλυσης
- ³⁰παντι δε τω αιτουντι σε δίδου και απο του αιροντος τα σα μη απαιτει
- ³¹και καθως θελετε ινα ποιωσιν υμιν οι ανθρωποι και υμεις ποιειτε αυτοις ομοιως
- ³²και ει αγαπατε τους αγαπωντας υμας ποια υμιν χαρις εστιν και γαρ οι αμαρτωλοι τους
αγαπωντας αυτους αγαπωσιν
- ³³και εαν αγαθοποιητε τους αγαθοποιουντας υμας ποια υμιν χαρις εστιν και γαρ οι
αμαρτωλοι το αυτο ποιουσιν
- ³⁴και εαν δανειζητε παρ ων ελπιζετε απολαβειν ποια υμιν χαρις εστιν και γαρ οι αμαρτωλοι
αμαρτωλοις δανειζουσιν ινα απολαβωσιν τα ισα
- ³⁵πλην αγαπατε τους εχθρους υμων και αγαθοποιειτε και δανειζετε μηδεν απελπιζοντες
και εσται ο μισθος υμων πολυς και εσεσθε υιοι του υψιστου οτι αυτος χρηστος εστιν επι
τους αχαριστους και πονηρους
- ³⁶γινεσθε ουν οικτιριμονες καθως και ο πατηρ υμων οικτιριμων εστιν
- ³⁷μη κρινετε και ου μη κριθητε μη καταδικαζετε και ου μη καταδικασθητε απολυετε και
απολυθησεσθε
- ³⁸διδοτε και δοθησεται υμιν μετρον καλον πεπιεσμενον και σεσαλευμενον και
υπερεκχυνομενον δωσουσιν εις τον κολπον υμων τω γαρ αυτω μετρω ω μετρειτε
αντιμετρηθησεται υμιν
- ³⁹ειπεν δε παραβολην αυτοις μητι δυναται τυφλος τυφλον οδηγειν ουχι αμφοτεροι εις
βοθυνον πεσουνται
- ⁴⁰ουκ εστιν μαθητης υπερ τον διδασκαλον αυτου κατηρτισμενος δε πας εσται ως ο
διδασκαλος αυτου
- ⁴¹τι δε βλεπεις το καρφος το εν τω οφθαλμω του αδελφου σου την δε δοκον την εν τω
ιδιω οφθαλμω ου κατανοεις
- ⁴²η πως δυνασαι λεγειν τω αδελφω σου αδελφε αφες εκβαλω το καρφος το εν τω οφθαλμω
σου αυτος την εν τω οφθαλμω σου δοκον ου βλεπων υποκριτα εκβαλε πρωτον την δοκον

εκ του οφθαλμου σου και τοτε διαβλεψεις εκβαλειν το καρφος το εν τω οφθαλμω του αδελφου σου

⁴³ου γαρ εστιν δενδρον καλον ποιουν καρπον σαπρον ουδε δενδρον σαπρον ποιουν καρπον καλον

⁴⁴εκαστον γαρ δενδρον εκ του ιδιου καρπου γινωσκεται ου γαρ εξ ακανθων συλλεγουσιν σκα ουδε εκ βατου τρυγωσιν σταφυλην

⁴⁵ο αγαθος ανθρωπος εκ του αγαθου θησαυρου της καρδιας αυτου προφερει το αγαθον και ο πονηρος ανθρωπος εκ του πονηρου θησαυρου της καρδιας αυτου προφερει το πονηρον εκ γαρ του περισσευματος της καρδιας λαλει το στομα αυτου

⁴⁶τι δε με καλειτε κυριε κυριε και ου ποιειτε α λεγω

⁴⁷πας ο ερχομενος προς με και ακουων μου των λογων και ποιων αυτους υποδειξω υμιν τινι εστιν ομοιος

⁴⁸ομοιος εστιν ανθρωπω οικοδομουντι οικιαν ος εσκαψεν και εβαθυνεν και εθηκεν θεμελιον επι την πετραν πλημμυρας δε γενομενης προσερρηξεν ο ποταμος τη οικια εκεινη και ουκ ισχυσεν σαλευσαι αυτην τεθεμελιωτο γαρ επι την πετραν

⁴⁹ο δε ακουσας και μη ποιησας ομοιος εστιν ανθρωπω οικοδομησαντι οικιαν επι την γην χωρις θεμελιου η προσερρηξεν ο ποταμος και ευθεως επεσεν και εγενετο το ρηγμα της οικιας εκεινης μεγα

Chapter 7

¹επει δε επληρωσεν παντα τα ρηματα αυτου εις τας ακοας του λαου εισηλθεν εις καπερναουμ
²εκατονταρχου δε τινος δουλος κακως εχων ημελλεν τελευταν ος ην αυτω εντιμος
³ακουσας δε περι του ιησου απεστειλεν προς αυτον πρεσβυτερους των ιουδαιων ερωτων αυτον οπως ελθων διασωση τον δουλον αυτου
⁴οι δε παραγενομενοι προς τον ιησουν παρεκαλουν αυτον σπουδαιως λεγοντες οτι αξιος εστιν ω παρεξει τουτο
⁵αγαπα γαρ το εθνος ημων και την συναγωγην αυτος ωκοδομησεν ημιν
⁶ο δε ιησους επορευετο συν αυτοις ηδη δε αυτου ου μακραν απεχοντος απο της οικιας επεμψεν προς αυτον ο εκατονταρχος φιλους λεγων αυτω κυριε μη σκυλλου ου γαρ ειμι ικανος ινα υπο την στεγην μου εισελθης
⁷διο ουδε εμαυτον ηξιωσα προς σε ελθειν αλλα ειπε λογω και ιαθησεται ο παις μου
⁸και γαρ εγω ανθρωπος ειμι υπο εξουσιαν τασσομενος εχων υπ εμαυτον στρατιωτας και λεγω τουτω πορευθητι και πορευεται και αλλω ερχου και ερχεται και τω δουλω μου ποιησον τουτο και ποιει
⁹ακουσας δε ταυτα ο ιησους εθαυμασεν αυτον και στραφεις τω ακολουθουντι αυτω οχλω ειπεν λεγω υμιν ουδε εν τω ισραηλ τοσαυτην πιστιν ευρον
¹⁰και υποστρεψαντες οι πεμφθεντες εις τον οικον ευρον τον ασθενουντα δουλον υγαινοντα
¹¹και εγενετο εν τη εξης επορευετο εις πολιν καλουμενην ναιν και συνεπορευοντο αυτω οι μαθηται αυτου ικανοι και οχλος πολυς
¹²ως δε ηγγισεν τη πυλη της πολεως και ιδου εξεκομιζετο τεθνηκως υιος μονογενης τη μητρι αυτου και αυτη ην χηρα και οχλος της πολεως ικανος ην συν αυτη
¹³και ιδων αυτην ο κυριος εσπλαγχνισθη επ αυτη και ειπεν αυτη μη κλαιε
¹⁴και προσελθων ηψατο της σορου οι δε βασταζοντες εστησαν και ειπεν νεανισκε σοι λεγω εγερθητι
¹⁵και ανεκαθισεν ο νεκρος και ηρξατο λαλειν και εδωκεν αυτον τη μητρι αυτου
¹⁶ελαβεν δε φοβος απαντας και εδοξαζον τον θεον λεγοντες οτι προφητης μεγας εγηγερται εν ημιν και οτι επεσκεψατο ο θεος τον λαον αυτου
¹⁷και εξηλθεν ο λογος ουτος εν ολη τη ιουδαια περι αυτου και εν παση τη περιχωρω
¹⁸και απηγγειλαν ιωαννη οι μαθηται αυτου περι παντων τουτων
¹⁹και προσκαλεσαμενος δυο τινας των μαθητων αυτου ο ιωαννης επεμψεν προς τον ιησουν λεγων συ ει ο ερχομενος η αλλον προσδοκωμεν
²⁰παραγενομενοι δε προς αυτον οι ανδρες ειπον ιωαννης ο βαπτιστης απεσταλκεν ημας προς σε λεγων συ ει ο ερχομενος η αλλον προσδοκωμεν
²¹εν αυτη δε τη ωρα εθεραπευσεν πολλους απο νοσων και μαστιγων και πνευματων πονηρων και τυφλοις πολλοις εχαρισατο το βλεπειν

²² και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις πορευθεντες απαγγειλατε ιωαννη α ειδετε και ηκουσατε οτι τυφλοι αναβλεπουσιν χωλοι περιπατουσιν λεπροι καθαριζονται κωφοι ακουουσιν νεκροι εγειρονται πτωχοι ευαγγελιζονται

²³ και μακαριος εστιν ος εαν μη σκανδαλισθη εν εμοι

²⁴ απελθοντων δε των αγγελων ιωαννου ηρξατο λεγειν προς τους οχλους περι ιωαννου τι εξεληλυθατε εις την ερημον θεασασθαι καλαμον υπο ανεμου σαλευομενον

²⁵ αλλα τι εξεληλυθατε ιδειν ανθρωπον εν μαλακοις ιματιοις ημφιεσμενον ιδου οι εν ιματισμω ενδοξω και τρυφη υπαρχοντες εν τοις βασιλαιοις εισιν

²⁶ αλλα τι εξεληλυθατε ιδειν προφητην ναι λεγω υμιν και περισσοτερον προφητου

²⁷ ουτος εστιν περι ου γεγραπται ιδου εγω αποστελλω τον αγγελον μου προ προσωπου σου ος κατασκευασει την οδον σου εμπροσθεν σου

²⁸ λεγω γαρ υμιν μειζων εν γεννητοις γυναικων προφητης ιωαννου του βαπτιστου ουδεις εστιν ο δε μικροτερος εν τη βασιλεια του θεου μειζων αυτου εστιν

²⁹ και πας ο λαος ακουσας και οι τελωναι εδικαιωσαν τον θεον βαπτισθεντες το βαπτισμα ιωαννου

³⁰ οι δε φαρισαιοι και οι νομικοι την βουλην του θεου ηθετησαν εις εαυτους μη βαπτισθεντες υπ αυτου

³¹ ειπεν δε ο κυριος τι νουν ομοιωσω τους ανθρωπους της γενεας ταυτης και τι ναι εισιν ομοιοι

³² ομοιοι εισιν παιδιοις τοις εν αγορα καθημενοις και προσφωνουσιν αλληλοις και λεγουσιν ηυλησαμεν υμιν και ουκ ωρχησασθε εθρηνησαμεν υμιν και ουκ εκλαυσατε

³³ εληλυθεν γαρ ιωαννης ο βαπτιστης μητε αρτον εσθιων μητε οινον πινων και λεγετε δαιμονιον εχει

³⁴ εληλυθεν ο υιος του ανθρωπου εσθιων και πινων και λεγετε ιδου ανθρωπος φαγος και οينوποτης τελωνων φιλος και αμαρτωλων

³⁵ και εδικαιωθη η σοφια απο των τεκνων αυτης παντων

³⁶ ηρωτα δε τις αυτον των φαρισαιων ινα φαγη μετ αυτου και εισελθων εις την οικιαν του φαρισαιου ανεκλιθη

³⁷ και ιδου γυνη εν τη πολει ητις ην αμαρτωλος επιγνουσα οτι ανακειται εν τη οικια του φαρισαιου κομισασα αλαβαστρον μυρου

³⁸ και στασα παρα τους ποδας αυτου οπισω κλαιουσα ηρξατο βρεχειν τους ποδας αυτου τοις δακρυσιν και ταις θριξιν της κεφαλης αυτης εξεμασσεν και κατεφιλει τους ποδας αυτου και ηλειφεν τω μυρω

³⁹ ιδων δε ο φαρισαιος ο καλεσας αυτον ειπεν εν εαυτω λεγων ουτος ει ην προφητης εγινωσκεν αν τις και ποταπη η γυνη ητις απτεται αυτου οτι αμαρτωλος εστιν

⁴⁰ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν προς αυτον σιμων εχω σοι τι ειπειν ο δε φησιν διδασκαλε ειπε

⁴¹δύο χρωφειλεται ησαν δανειστη τινι ο εις ωφειλεν δηναρια πεντακοσια ο δε ετερος πεντηκοντα

⁴²μη εχοντων δε αυτων αποδουναι αμφοτεροις εχαρισατο τις ουν αυτων ειπε πλειον αυτον αγαπησει

⁴³αποκριθεις δε ο σιμων ειπεν υπολαμβανω οτι ω το πλειον εχαρισατο ο δε ειπεν αυτω ορθως εκρινας

⁴⁴και στραφεις προς την γυναικα τω σιμωνι εφη βλεπεις ταυτην την γυναικα εισηλθον σου εις την οικιαν υδωρ επι τους ποδας μου ουκ εδωκας αυτη δε τοις δακρυσιν εβρεξεν μου τους ποδας και ταις θριξιν της κεφαλης αυτης εξεμαξεν

⁴⁵φιλημα μοι ουκ εδωκας αυτη δε αφ ης εισηλθον ου διελιπεν καταφιλουσα μου τους ποδας

⁴⁶ελαιω την κεφαλην μου ουκ ηλειψας αυτη δε μυρω ηλειψεν μου τους ποδας

⁴⁷ου χαριν λεγω σοι αφεωνται αι αμαρτιαι αυτης αι πολλαι οτι ηγαπησεν πολυ ω δε ολιγον αφιεται ολιγον αγαπα

⁴⁸ειπεν δε αυτη αφεωνται σου αι αμαρτιαι

⁴⁹και ηρξαντο οι συνανακειμενοι λεγειν εν εαυτοις τις ουτος εστιν ος και αμαρτιας αφησιν

⁵⁰ειπεν δε προς την γυναικα η πιστις σου σεσωκεν σε πορευου εις ειρηνην

Chapter 8

¹ και εγενετο εν τω καθεξης και αυτος διωδευεν κατα πολιν και κωμην κηρυσσων και ευαγγελιζομενος την βασιλειαν του θεου και οι δωδεκα συν αυτω
² και γυναικες τινες αι ησαν τεθεραπευμεναι απο πνευματων πονηρων και ασθeneiων μαρια η καλουμενη μαγδαλινη αφ ης δαιμονια επτα εξεληλυθει
³ και ιωαννα γυνη χουζα επιτροπου ηρωδου και σουσαννα και ετεραι πολλαι αιτινες διηκουνουν αυτω απο των υπαρχοντων αυταις
⁴ συνιοντος δε οχλου πολλου και των κατα πολιν επιπορευομενων προς αυτον ειπεν δια παραβολης
⁵ εξηλθεν ο σπειρων του σπειραι τον σπορον αυτου και εν τω σπειρειν αυτον ο μεν επεσεν παρα την οδον και κατεπατηθη και τα πετεινα του ουρανου κατεφαγεν αυτο
⁶ και ετερον επεσεν επι την πετραν και φυεν εξηρανθη δια το μη εχειν ικμαδα
⁷ και ετερον επεσεν εν μεσω των ακανθων και συμφυεισαι αι ακανθαι απεπνιξαν αυτο
⁸ και ετερον επεσεν επι την γην την αγαθην και φυεν εποησεν καρπον εκατονταπλασιονα ταυτα λεγων εφωνει ο εχων ωτα ακουειν ακουετω
⁹ επηρωτων δε αυτον οι μαθηται αυτου λεγοντες τις ειη η παραβολη αυτη
¹⁰ ο δε ειπεν υμιν δεδοται γνωναι τα μυστηρια της βασιλειας του θεου τοις δε λοιποις εν παραβολαις ινα βλεποντες μη βλεπωσιν και ακουοντες μη συνιωσιν
¹¹ εστιν δε αυτη η παραβολη ο σπορος εστιν ο λογος του θεου
¹² οι δε παρα την οδον εισιν οι ακουοντες ειτα ερχεται ο διαβολος και αιρει τον λογον απο της καρδιας αυτων ινα μη πιστευσαντες σωθωσιν
¹³ οι δε επι της πετρας οι οταν ακουσωσιν μετα χαρας δεχονται τον λογον και ουτοι ριζαν ουκ εχουσιν οι προς καιρον πιστεουσιν και εν καιρω πειρασμου αφιστανται
¹⁴ το δε εις τας ακανθας πεσον ουτοι εισιν οι ακουσαντες και υπο μεριμνων και πλουτου και ηδωνων του βιου πορευομενοι συμπνιγονται και ου τελεσφορουσιν
¹⁵ το δε εν τη καλη γη ουτοι εισιν οιτινες εν καρδια καλη και αγαθη ακουσαντες τον λογον κατεχουσιν και καρποφορουσιν εν υπομονη
¹⁶ ουδεις δε λυχνον αφας καλυπτει αυτον σκευει η υποκατω κλινης τιθησιν αλλ επι λυχνιας επιτιθησιν ινα οι εισπορευομενοι βλεπωσιν το φως
¹⁷ ου γαρ εστιν κρυπτον ο ου φανερον γενησεται ουδε αποκρυφον ο ου γνωσθησεται και εις φανερον ελθη
¹⁸ βλεπετε ουν πως ακουετε ος γαρ αν εχη δοθησεται αυτω και ος αν μη εχη και ο δοκει εχειν αρθησεται απ αυτου
¹⁹ παρεγενοντο δε προς αυτον η μητηρ και οι αδελφοι αυτου και ουκ ηδυναντο συντυχειν αυτω δια τον οχλον
²⁰ και απηγγελη αυτω λεγοντων η μητηρ σου και οι αδελφοι σου εστηκασιν εξω ιδειν σε θελοντες

- ²¹ο δε αποκριθεις ειπεν προς αυτους μητηρ μου και αδελφοι μου ουτοι εισιν οι τον λογον του θεου ακουοντες και ποιουντες αυτον
- ²²και εγενετο εν μια των ημερων και αυτος ενεβη εις πλοιον και οι μαθηται αυτου και ειπεν προς αυτους διελθωμεν εις το περαν της λιμνης και ανηχθησαν
- ²³πλεοντων δε αυτων αφυπνωσεν και κατεβη λαιλαψ ανεμου εις την λιμνην και συνεπληρουντο και εκινδυνευον
- ²⁴προσελθοντες δε διηγειραν αυτον λεγοντες επιστατα επιστατα απολλυμεθα ο δε εγερθεις επετιμησεν τω ανεμω και τω κλυδωνι του υδατος και επαυσαντο και εγενετο γαληνη
- ²⁵ειπεν δε αυτοις που εστιν η πιστις υμων φοβηθεντες δε εθαυμασαν λεγοντες προς αλληλους τις αρα ουτος εστιν οτι και τοις ανεμοις επιτασσει και τω υδατι και υπακουουσιν αυτω
- ²⁶και κατεπλευσαν εις την χωραν των γαδαρηνων ητις εστιν αντιπεραν της γαλιλαιας
- ²⁷εξελθοντι δε αυτω επι την γην υπηνητησεν αυτω ανηρ τις εκ της πολεως ος ειχεν δαιμονια εκ χρονων ικανων και ιματιον ουκ ενεδιδυσκετο και εν οικια ουκ εμενεν αλλ εν τοις μνημασιν
- ²⁸ιδων δε τον ιησουν και ανακραξας προσεπεσεν αυτω και φωνη μεγαλη ειπεν τι εμοι και σοι ιησου υιε του θεου του υψιστου δεομαι σου μη με βασανισης
- ²⁹παρηγγειλεν γαρ τω πνευματι τω ακαθαρτω εξελθειν απο του ανθρωπου πολλοις γαρ χρονοις συνηρακει αυτον και εδεσμειτο αλυσεσιν και πεδαις φυλασσομενος και διαρρησων τα δεσμα ηλαυνετο υπο του δαιμονος εις τας ερημους
- ³⁰επηρωτησεν δε αυτον ο ιησους λεγων τι σοι εστιν ονομα ο δε ειπεν λεγων οτι δαιμονια πολλα εισηλθεν εις αυτον
- ³¹και παρεκαλουν αυτον ινα μη επιταξη αυτοις εις την αβυσσον απελθειν
- ³²ην δε εκει αγελη χοιρων ικανων βοσκομενων εν τω ορει και παρεκαλουν αυτον ινα επιτρεψη αυτοις εις εκεινους εισελθειν και επετρεψεν αυτοις
- ³³εξελθοντα δε τα δαιμονια απο του ανθρωπου εισηλθεν εις τους χοιρους και ωρμησεν η αγελη κατα του κρημνου εις την λιμνην και απεπνιγη
- ³⁴ιδοντες δε οι βοσκοντες το γεγενημενον εφυγον και απελθοντες απηγγειλαν εις την πολιν και εις τους αγρους
- ³⁵εξηλθον δε ιδειν το γεγονος και ηλθον προς τον ιησουν και ευρον καθημενον τον ανθρωπον αφ ου τα δαιμονια εξεληλυθει ιματισμενον και σωφρονουντα παρα τους ποδας του ιησου και εφοβηθησαν
- ³⁶απηγγειλαν δε αυτοις και οι ιδοντες πως εσωθη ο δαιμονισθεις
- ³⁷και ηρωτησαν αυτον απαν το πληθος της περιχωρου των γαδαρηνων απελθειν απ αυτων οτι φοβω μεγαλω συνειχοντο αυτος δε εμβας εις το πλοιον υπεστρεψεν
- ³⁸εδεετο δε αυτου ο ανηρ αφ ου εξεληλυθει τα δαιμονια ειναι συν αυτω απελυσεν δε αυτον ο ιησους λεγων

- ³⁹ υποστρεφε εις τον οικον σου και διηγου οσα εποιησεν σοι ο θεος και απηλθεν καθ ολην την πολιν κηρυσσων οσα εποιησεν αυτω ο ιησους
- ⁴⁰ εγενετο δε εν τω υποστρεψαι τον ιησουν απεδεξατο αυτον ο οχλος ησαν γαρ παντες προσδοκωντες αυτον
- ⁴¹ και ιδου ηλθεν ανηρ ω ονομα ιαειρος και αυτος αρχων της συναγωγης υπηρχεν και πεσων παρα τους ποδας του ιησου παρεκαλει αυτον εισελθειν εις τον οικον αυτου
- ⁴² οτι θυγατηρ μονογενης ην αυτω ως ετων δωδεκα και αυτη απεθνησκειν εν δε τω υπαγειν αυτον οι οχλοι συνεπνιγον αυτον
- ⁴³ και γυνη ουσα εν ρυσει αιματος απο ετων δωδεκα ητις εις ιατροους προσαναλωσασα ολον τον βιον ουκ ισχυσεν υπ ουδενος θεραπευθηναι
- ⁴⁴ προσελθουσα οπισθεν ηψατο του κρασπεδου του ιματιου αυτου και παραχρημα εστη η ρυσις του αιματος αυτης
- ⁴⁵ και ειπεν ο ιησους τις ο αψαμενος μου αρνουμενων δε παντων ειπεν ο πετρος και οι μετ αυτου επιστατα οι οχλοι συνεχουσιν σε και αποθλιβουσιν και λεγεις τις ο αψαμενος μου
- ⁴⁶ ο δε ιησους ειπεν ηψατο μου τις εγω γαρ εγνω δυναμιν εξελθουσαν απ εμου
- ⁴⁷ ιδουσα δε η γυνη οτι ουκ ελαθεν τρεμουσα ηλθεν και προσπεσουσα αυτω δι ην αιτιαν ηψατο αυτου απηγγειλεν αυτω ενωπιον παντος του λαου και ως ιαθη παραχρημα
- ⁴⁸ ο δε ειπεν αυτη θαρσει θυγατερ η πιστις σου σεσωκεν σε πορευου εις ειρηνην
- ⁴⁹ ετι αυτου λαλουντος ερχεται τις παρα του αρχισυναγωγου λεγων αυτω οτι τεθνηκεν η θυγατηρ σου μη σκυλλε τον διδασκαλον
- ⁵⁰ ο δε ιησους ακουσας απεκριθη αυτω λεγων μη φοβου μονον πιστευε και σωθησεται
- ⁵¹ εισελθων δε εις την οικιαν ουκ αφηκεν εισελθειν ουδενα ει μη πετρον και ιακωβον και ιωαννην και τον πατερα της παιδος και την μητερα
- ⁵² εκλαιον δε παντες και εκοπτοντο αυτην ο δε ειπεν μη κλαιετε ουκ απεθανεν αλλα καθευδει
- ⁵³ και κατεγγελων αυτου ειδοτες οτι απεθανεν
- ⁵⁴ αυτος δε εκβαλων εξω παντας και κρατησας της χειρος αυτης εφωνησεν λεγων η παις εγειρου
- ⁵⁵ και επεστρεψεν το πνευμα αυτης και ανεστη παραχρημα και διεταξεν αυτη δοθηναι φαγειν
- ⁵⁶ και εξεστησαν οι γονεις αυτης ο δε παρηγγειλεν αυτοις μηδενι ειπειν το γεγονος

Chapter 9

¹συγκαλεσαμενος δε τους δωδεκα μαθητας αυτου εδωκεν αυτοις δυναμιν και εξουσιαν επι παντα τα δαιμονια και νοσους θεραπευειν
²και απεστειλεν αυτους κηρυσσειν την βασιλειαν του θεου και ιασθαι τους ασθενουντας
³και ειπεν προς αυτους μηδεν αιρετε εις την οδον μητε ραβδους μητε πηραν μητε αρτον μητε αργυριον μητε ανα δυο χιτωνας εχειν
⁴και εις ην αν οικιαν εισελθητε εκει μενετε και εκειθεν εξερχεσθε
⁵και οσοι αν μη δεξωνται υμας εξερχομενοι απο της πολεως εκεινης και τον κονιορτον απο των ποδων υμων αποτιναξατε εις μαρτυριον επ αυτους
⁶εξερχομενοι δε διηρχοντο κατα τας κωμας ευαγγελιζομενοι και θεραπευοντες πανταχου
⁷ηκουσεν δε ηρωδης ο τετραρχης τα γινομενα υπ αυτου παντα και διηπορει δια το λεγεσθαι υπο τινων οτι ιωαννης εγηγερται εκ νεκρων
⁸υπο τινων δε οτι ηλιας εφανη αλλων δε οτι προφητης εις των αρχαιων ανεστη
⁹και ειπεν ο ηρωδης ιωαννην εγω απεκεφαλισα τις δε εστιν ουτος περι ου εγω ακουω τοιαυτα και εζητει ιδειν αυτον
¹⁰και υποστρεψαντες οι αποστολοι διηγησαντο αυτω οσα εποιησαν και παραλαβων αυτους υπεχωρησεν κατ ιδιαν εις τοπον ερημον πολεως καλουμενης βηθσαιδα
¹¹οι δε οχλοι γνοντες ηκολουθησαν αυτω και δεξαμενος αυτους ελαλει αυτοις περι της βασιλειας του θεου και τους χρεϊαν εχοντας θεραπειας ιατο
¹²η δε ημερα ηρξατο κλινειν προσελθοντες δε οι δωδεκα ειπον αυτω απολυσον τον οχλον ινα απελθοντες εις τας κυκλω κωμας και τους αγρους καταλυσωσιν και ευρωσιν επισιτισμον οτι ωδε εν ερημω τοπω εσμεν
¹³ειπεν δε προς αυτους δοτε αυτοις υμεις φαγειν οι δε ειπον ουκ εισιν ημιν πλειον η πεντε αρτοι και δυο ιχθυες ει μητι πορευθεντες ημεις αγορασωμεν εις παντα τον λαον τουτον βρωματα
¹⁴ησαν γαρ ωσει ανδρες πεντακισχιλιοι ειπεν δε προς τους μαθητας αυτου κατακλινατε αυτους κλισιας ανα πεντηκοντα
¹⁵και εποιησαν ουτως και ανεκλιναν απαντας
¹⁶λαβων δε τους πεντε αρτους και τους δυο ιχθυας αναβλεψας εις τον ουρανον ευλογησεν αυτους και κατεκλασεν και εδιδου τοις μαθηταις παρατιθεναι τω οχλω
¹⁷και εφαγον και εχορτασθησαν παντες και ηρθη το περισσευσαν αυτοις κλασματων κοφινου δωδεκα
¹⁸και εγενετο εν τω ειναι αυτον προσευχομενον καταμονας συνησαν αυτω οι μαθηται και επηρωτησεν αυτους λεγων τινα με λεγουσιν οι οχλοι ειναι
¹⁹οι δε αποκριθεντες ειπον ιωαννην τον βαπτιστην αλλοι δε ηλιαν αλλοι δε οτι προφητης τις των αρχαιων ανεστη
²⁰ειπεν δε αυτοις υμεις δε τινα με λεγετε ειναι αποκριθεις δε ο πετρος ειπεν τον χριστον του θεου

- ²¹ο δε επιτιμησας αυτοις παρηγγειλεν μηδενι ειπειν τουτο
- ²²ειπων οτι δει τον υιον του ανθρωπου πολλα παθειν και αποδοκιμασθηναι απο των πρεσβυτερων και αρχιερων και γραμματεων και αποκτανθηναι και τη τριτη ημερα εγερθηναι
- ²³ελεγεν δε προς παντας ει τις θελει οπισω μου ελθειν απαρνησασθω εαυτον και αρατω τον σταυρον αυτου καθ ημεραν και ακολουθειτω μοι
- ²⁴ος γαρ αν θελη την ψυχην αυτου σωσαι απολεσει αυτην ος δ αν απολεση την ψυχην αυτου ενεκεν εμου ουτος σωσει αυτην
- ²⁵τι γαρ ωφελειται ανθρωπος κερδησας τον κοσμον ολον εαυτον δε απολεσας η ζημιωθεις
- ²⁶ος γαρ αν επαισχυνθη με και τους εμους λογους τουτον ο υιος του ανθρωπου επαισχυνθησεται οταν ελθη εν τη δοξη αυτου και του πατρος και των αγιων αγγελων
- ²⁷λεγω δε υμιν αληθως εισιν τινες των ωδε εστηκοτων οι ου μη γευσονται θανατου εως αν ιδωσιν την βασιλειαν του θεου
- ²⁸εγενετο δε μετα τους λογους τουτους ωσει ημεραι οκτω και παραλαβων τον πετρον και ιωαννην και ιακωβον ανεβη εις το ορος προσευξασθαι
- ²⁹και εγενετο εν τω προσευχεσθαι αυτον το ειδος του προσωπου αυτου ετερον και ο ιματισμος αυτου λευκος εξαστραπτων
- ³⁰και ιδου ανδρες δυο συνελαλουν αυτω οιτινες ησαν μωσης και ηλιας
- ³¹οι οφθεντες εν δοξη ελεγον την εξοδον αυτου ην εμελλεν πληρουν εν ιερουσαλημ
- ³²ο δε πετρος και οι συν αυτω ησαν βεβαρημενοι υπνω διαγρηγορησαντες δε ειδον την δοξαν αυτου και τους δυο ανδρας τους συνεστωτας αυτω
- ³³και εγενετο εν τω διαχωριζεσθαι αυτους απ αυτου ειπεν ο πετρος προς τον ιησουν επιστατα καλον εστιν ημας ωδε ειναι και ποιησωμεν σκηνας τρεις μιαν σοι και μωσει μιαν και μιαν ηλια μη ειδως ο λεγει
- ³⁴ταυτα δε αυτου λεγοντος εγενετο νεφελη και επεσκιασεν αυτους εφοβηθησαν δε εν τω εκεινους εισελθειν εις την νεφελην
- ³⁵και φωνη εγενετο εκ της νεφελης λεγουσα ουτος εστιν ο υιος μου ο αγαπητος αυτου ακουετε
- ³⁶και εν τω γενεσθαι την φωνην ευρεθη ο ιησους μονος και αυτοι εσιγησαν και ουδενι απηγγειλαν εν εκειναις ταις ημεραις ουδεν ων εωρακασιν
- ³⁷εγενετο δε εν τη εξης ημερα κατελθοντων αυτων απο του ορους συνηντησεν αυτω οχλος πολυς
- ³⁸και ιδου ανηρ απο του οχλου ανεβοησεν λεγων διδασκαλε δεομαι σου επιβλεψον επι τον υιον μου οτι μονογενης εστιν μοι
- ³⁹και ιδου πνευμα λαμβανει αυτον και εξαιφνης κραζει και σπαρασσει αυτον μετα αφρου και μογισ αποχωρει απ αυτου συντριβον αυτον
- ⁴⁰και εδεηθη των μαθητων σου ινα εκβαλλωσιν αυτο και ουκ ηδυνηθησαν

⁴¹ αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν ω γενεα απιστος και διεστραμμενη εως ποτε εσομαι προς υμας και ανεξομαι υμων προσαγαγε ωδε τον υιον σου

⁴² ετι δε προσερχομενου αυτου ερρηξεν αυτον το δαιμονιον και συνεσπαραξεν επετιμησεν δε ο ιησους τω πνευματι τω ακαθαρτω και ιασατο τον παιδα και απεδωκεν αυτον τω πατρι αυτου

⁴³ εξεπλησσαντο δε παντες επι τη μεγαλειοτητι του θεου παντων δε θαυμαζοντων επι πασιν οις εποιησεν ο ιησους ειπεν προς τους μαθητας αυτου

⁴⁴ θεσθε υμεις εις τα ωτα υμων τους λογους τουτους ο γαρ υιος του ανθρωπου μελλει παραδιδοσθαι εις χειρας ανθρωπων

⁴⁵ οι δε ηγνουσαν το ρημα τουτο και ην παρακεκαλυμμενον απ αυτων ινα μη αισθωνται αυτο και εφοβοντο ερωτησαι αυτον περι του ρηματος τουτου

⁴⁶ εισηλθεν δε διαλογισμος εν αυτοις το τις αν ειη μειζων αυτων

⁴⁷ ο δε ιησους ιδων τον διαλογισμον της καρδιας αυτων επιλαβομενος παιδιου εστησεν αυτο παρ εαυτω

⁴⁸ και ειπεν αυτοις ος εαν δεζηται τουτο το παιδιον επι τω ονοματι μου εμε δεχεται και ος εαν εμε δεζηται δεχεται τον αποστειλαντα με ο γαρ μικροτερος εν πασιν υμιν υπαρχων ουτος εσται μεγας

⁴⁹ αποκριθεις δε ο ιωαννης ειπεν επιστατα ειδομεν τινα επι τω ονοματι σου εκβαλλοντα τα δαιμονια και εκωλυσαμεν αυτον οτι ουκ ακολουθει μεθ ημων

⁵⁰ και ειπεν προς αυτον ο ιησους μη κωλυετε ος γαρ ουκ εστιν καθ ημων υπερ ημων εστιν

⁵¹ εγενετο δε εν τω συμπληρουσθαι τας ημερας της αναληψεως αυτου και αυτος το προσωπον αυτου εστηριξεν του πορευεσθαι εις ιερουσαλημ

⁵² και απεστειλεν αγγελους προ προσωπου αυτου και πορευθεντες εισηλθον εις κωμην σαμαρειτων ωστε ετοιμασαι αυτω

⁵³ και ουκ εδεξαντο αυτον οτι το προσωπον αυτου ην πορευομενον εις ιερουσαλημ

⁵⁴ ιδοντες δε οι μαθηται αυτου ιακωβος και ιωαννης ειπον κυριε θελεις ειπωμεν πυρ καταβηναι απο του ουρανου και αναλωσαι αυτους ως και ηλιας εποιησεν

⁵⁵ στραφεις δε επετιμησεν αυτοις και ειπεν ουκ οιδατε οιου πνευματος εστε υμεις

⁵⁶ ο γαρ υιος του ανθρωπου ουκ ηλθεν ψυχας ανθρωπων απολεσαι αλλα σωσαι και επορευθησαν εις ετεραν κωμην

⁵⁷ εγενετο δε πορευομενων αυτων εν τη οδω ειπεν τις προς αυτον ακολουθησω σοι οπου αν απερχη κυριε

⁵⁸ και ειπεν αυτω ο ιησους αι αλωπεκες φωλεους εχουσιν και τα πετεινα του ουρανου κατασκηνωσεις ο δε υιος του ανθρωπου ουκ εχει που την κεφαλην κλινη

⁵⁹ ειπεν δε προς ετερον ακολουθει μοι ο δε ειπεν κυριε επιτρεψον μοι απελθοντι πρωτον θαψαι τον πατερα μου

⁶⁰ ειπεν δε αυτω ο ιησους αφες τους νεκρους θαψαι τους εαυτων νεκρους συ δε απελθων διαγγελλε την βασιλειαν του θεου

⁶¹ειπεν δε και ετερος ακολουθησω σοι κυριε πρωτον δε επιτρεψον μοι αποταξασθαι τοις
εις τον οικον μου

⁶²ειπεν δε προς αυτον ο ιησους ουδεις επιβαλων την χειρα αυτου επ αροτρον και βλεπων
εις τα οπισω ευθετος εστιν εις την βασιλειαν του θεου

Chapter 10

¹μετα δε ταυτα ανεδειξεν ο κυριος και ετερους εβδομηκοντα και απεστειλεν αυτους ανα δυο προ προσωπου αυτου εις πασαν πολιν και τοπον ου εμελλεν αυτος ερχεσθαι
²ελεγεν ουν προς αυτους ο μεν θερισμος πολυς οι δε εργαται ολιγοι δεηθητε ουν του κυριου του θερισμου οπως εκβαλλη εργατας εις τον θερισμον αυτου
³υπαγετε ιδου εγω αποστελλω υμας ως αρνας εν μεσω λυκων
⁴μη βασταζετε βαλαντιον μη πηραν μηδε υποδηματα και μηδενα κατα την οδον ασπασθησε
⁵εις ην δ αν οικιαν εισερχησθε πρωτον λεγετε ειρηνη τω οικω τουτω
⁶και εαν μεν η εκει ο υιος ειρηνης επαναπαυσεται επ αυτον η ειρηνη υμων ει δε μηγε εφ υμας ανακαμψει
⁷εν αυτη δε τη οικια μενετε εσθιοντες και πινοντες τα παρ αυτων αξιος γαρ ο εργατης του μισθου αυτου εστιν μη μεταβαινετε εξ οικιας εις οικιαν
⁸και εις ην δ αν πολιν εισερχησθε και δεχωνται υμας εσθιετε τα παρατιθεμενα υμιν
⁹και θεραπευετε τους εν αυτη ασθενεις και λεγετε αυτοις ηγγικεν εφ υμας η βασιλεια του θεου
¹⁰εις ην δ αν πολιν εισερχησθε και μη δεχωνται υμας εξελθοντες εις τας πλατειας αυτης ειπατε
¹¹και τον κονιορτον τον κολληθεντα ημιν εκ της πολεως υμων απομασσομεθα υμιν πλην τουτο γινωσκετε οτι ηγγικεν εφ υμας η βασιλεια του θεου
¹²λεγω δε υμιν οτι σοδομοις εν τη ημερα εκεινη ανεκτοτερον εσται η τη πολει εκεινη
¹³ουαι σοι χωραζιν ουαι σοι βηθσαιδα οτι ει εν τυρω και σιδωνι εγενοντο αι δυναμεις αι γενομεναι εν υμιν παλαι αν εν σακκω και σποδω καθημεναι μετενοησαν
¹⁴πλην τυρω και σιδωνι ανεκτοτερον εσται εν τη κρισει η υμιν
¹⁵και συ καπερναουμ η εως του ουρανου υψωθεις εως αδου καταβιβασθηση
¹⁶ο ακουων υμων εμου ακουει και ο αθετων υμας εμε αθετει ο δε εμε αθετων αθετει τον αποστειλαντα με
¹⁷υπεστρεψαν δε οι εβδομηκοντα μετα χαρας λεγοντες κυριε και τα δαιμονια υποτασεται ημιν εν τω ονοματι σου
¹⁸ειπεν δε αυτοις εθεωρουν τον σαταναν ως αστραπην εκ του ουρανου πεσοντα
¹⁹ιδου διδωμι υμιν την εξουσιαν του πατειν επανω οφεων και σκορπιων και επι πασαν την δυναμιν του εχθρου και ουδεν υμας ου μη αδικησει
²⁰πλην εν τουτω μη χαιρετε οτι τα πνευματα υμιν υποτασεται χαιρετε δε μαλλον οτι τα ονοματα υμων εγραφη εν τοις ουρανοις
²¹εν αυτη τη ωρα ηγαλλιασατο τω πνευματι ο ιησους και ειπεν εξομολογουμαι σοι πατερ κυριε του ουρανου και της γης οτι απεκρυψας ταυτα απο σοφων και συνετων και απεκαλυψας αυτα νηπιοις ναι ο πατηρ οτι ουτως εγενετο ευδοκια εμπροσθεν σου
²²παντα παρεδοθη μοι υπο του πατρος μου και ουδεις γινωσκει τις εστιν ο υιος ει μη ο πατηρ και τις εστιν ο πατηρ ει μη ο υιος και ω εαν βουληται ο υιος αποκαλυψαι

²³ και στραφεις προς τους μαθητας κατ ιδιαν ειπεν μακαριοι οι οφθαλμοι οι βλεποντες α βλεπετε
²⁴ λεγω γαρ υμιν οτι πολλοι προφηται και βασιλεις ηθελησαν ιδειν α υμεις βλεπετε και ουκ ειδον και ακουσαι α ακουετε και ουκ ηκουσαν
²⁵ και ιδου νομικος τις ανεστη εκπειραζων αυτον και λεγων διδασκαλε τι ποιησας ζων αιωνιον κληρονομησω
²⁶ ο δε ειπεν προς αυτον εν τω νομω τι γεγραπται πως αναγινωσκεις
²⁷ ο δε αποκριθεις ειπεν αγαπησεις κυριον τον θεον σου εξ ολης της καρδιας σου και εξ ολης της ψυχης σου και εξ ολης της ισχυος σου και εξ ολης της διανοιας σου και τον πλησιον σου ως σεαυτον
²⁸ ειπεν δε αυτω ορθως απεκριθης τουτο ποιει και ζηση
²⁹ ο δε θελων δικαιοουν εαυτον ειπεν προς τον ιησουν και τις εστιν μου πλησιον
³⁰ υπολαβων δε ο ιησους ειπεν ανθρωπος τις κατεβαινεν απο ιερουσαλημ εις ιεριχω και λησταις περιεπεσεν οι και εκδυσαντες αυτον και πληγας επιθεντες απηλθον αφεντες ημιθανη τυγχανοντα
³¹ κατα συγκυριαν δε ιερευς τις κατεβαινεν εν τη οδω εκεινη και ιδων αυτον αντιπαρηλθεν
³² ομοιως δε και λευιτης γενομενος κατα τον τοπον ελθων και ιδων αντιπαρηλθεν
³³ σαμαρειτης δε τις οδευων ηλθεν κατ αυτον και ιδων αυτον εσπλαγχνισθη
³⁴ και προσελθων κατεδησεν τα τραυματα αυτου επιχεων ελαιον και οινον επιβιβασας δε αυτον επι το ιδιον κτηνος ηγαγεν αυτον εις πανδοχειον και επεμεληθη αυτου
³⁵ και επι την αυριον εξελθων εκβαλων δυο δηναρια εδωκεν τω πανδοχει και ειπεν αυτω επιμεληθητι αυτου και ο τι αν προσδαπανησης εγω εν τω επανερχεσθαι με αποδωσω σοι
³⁶ τις ουν τουτων των τριων δοκει σοι πλησιον γεγονεναι του εμπεσοντος εις τους ληστας
³⁷ ο δε ειπεν ο ποιησας το ελεος μετ αυτου ειπεν ουν αυτω ο ιησους πορευου και συ ποιει ομοιως
³⁸ εγενετο δε εν τω πορευεσθαι αυτους και αυτος εισηλθεν εις κωμην τινα γυνη δε τις ονοματι μαρθα υπεδεξατο αυτον εις τον οικον αυτης
³⁹ και τηδε ην αδελφη καλουμενη μαρια η και παρακαθισασα παρα τους ποδας του ιησου ηκουεν τον λογον αυτου
⁴⁰ η δε μαρθα περιεσπατο περι πολλην διακονιαν επιστασα δε ειπεν κυριε ου μελει σοι οτι η αδελφη μου μονην με κατελιπεν διακονειν ειπε ουν αυτη ινα μοι συναντιλαβηται
⁴¹ αποκριθεις δε ειπεν αυτη ο ιησους μαρθα μαρθα μεριμνας και τυρβαζη περι πολλα
⁴² ενος δε εστιν χρεια μαρια δε την αγαθην μεριδα εξελεξατο ητις ουκ αφαιρεθησεται απ αυτης

Chapter 11

¹και εγενετο εν τω ειναι αυτον εν τοπω τινι προσευχομενον ως επαυσατο ειπεν τις των μαθητων αυτου προς αυτον κυριε διδαξον ημας προσευχεσθαι καθως και ιωαννης εδιδαξεν τους μαθητας αυτου

²ειπεν δε αυτοις οταν προσευχησθε λεγετε πατερ ημων ο εν τοις ουρανοις αγιασθητω το ονομα σου ελθετω η βασιλεια σου γενηθητω το θελημα σου ως εν ουρανω και επι της γης

³τον αρτον ημων τον επιουσιον διδου ημιν το καθ ημεραν

⁴και αφες ημιν τας αμαρτιας ημων και γαρ αυτοι αφιεμεν παντι οφειλοντι ημιν και μη εισενεγκης ημας εις πειρασμον αλλα ρυσαι ημας απο του πονηρου

⁵και ειπεν προς αυτους τις εξ υμων εξει φιλον και πορευσεται προς αυτον μεσονυκτιου και ειπη αυτω φιλε χρησον μοι τρεις αρτους

⁶επειδη φιλος μου παρεγενετο εξ οδου προς με και ουκ εχω ο παραθησω αυτω

⁷κακεινος εσωθεν αποκριθεις ειπη μη μοι κοπους παρεχε ηδη η θυρα κεκλεισται και τα παιδια μου μετ εμου εις την κοιτην εισιν ου δυναμαι αναστας δουναι σοι

⁸λεγω υμιν ει και ου δωσει αυτω αναστας δια το ειναι αυτου φιλον δια γε την αναιδειαν αυτου εγερθεις δωσει αυτω οσων χρηζει

⁹καγω υμιν λεγω αιτειτε και δοθησεται υμιν ζητειτε και ευρησετε κρουετε και ανοιγησεται υμιν

¹⁰πας γαρ ο αιτων λαμβανει και ο ζητων ευρισκει και τω κρουοντι ανοιγησεται

¹¹τινα δε υμων τον πατερα αιτησει ο υιος αρτον μη λιθον επιδωσει αυτω ει και ιχθυν μη αντι ιχθυος οφιν επιδωσει αυτω

¹²η και εαν αιτηση ων μη επιδωσει αυτω σκορπιον

¹³ει ουν υμεις πονηροι υπαρχοντες οιδατε αγαθα δοματα διδοναι τοις τεκνοις υμων ποσω μαλλον ο πατηρ ο εξ ουρανου δωσει πνευμα αγιον τοις αιτουσιν αυτον

¹⁴και ην εκβαλλων δαιμονιον και αυτο ην κωφον εγενετο δε του δαιμονιου εξελθοντος ελαλησεν ο κωφος και εθαυμασαν οι οχλοι

¹⁵τινες δε εξ αυτων ειπον εν βεελζεβουλ αρχοντι των δαιμονιων εκβαλλει τα δαιμονια

¹⁶ετεροι δε πειραζοντες σημειον παρ αυτου εζητουν εξ ουρανου

¹⁷αυτος δε ειδως αυτων τα διανοηματα ειπεν αυτοις πασα βασιλεια εφ εαυτην διαμερισθαισα ερημουται και οικος επι οικον πιπτει

¹⁸ει δε και ο σατανας εφ εαυτον διεμερισθη πως σταθησεται η βασιλεια αυτου οτι λεγετε εν βεελζεβουλ εκβαλλειν με τα δαιμονια

¹⁹ει δε εγω εν βεελζεβουλ εκβαλλω τα δαιμονια οι υιοι υμων εν τινι εκβαλλουσιν δια τουτο κριται υμων αυτοι εσονται

²⁰ει δε εν δακτυλω θεου εκβαλλω τα δαιμονια αρα εφθασεν εφ υμας η βασιλεια του θεου

²¹οταν ο ισχυρος καθωπλισμενος φυλασση την εαυτου αυλην εν ειρηνη εστιν τα υπαρχοντα αυτου

²² επαν δε ο ισχυροτερος αυτου επελθων νικηση αυτον την πανοπλιαν αυτου αιρει εφ η επεποιθει και τα σκυλα αυτου διαδιδωσιν
²³ ο μη ων μετ εμου κατ εμου εστιν και ο μη συναγων μετ εμου σκορπιζει
²⁴ οταν το ακαθαρτον πνευμα εξελθη απο του ανθρωπου διερχεται δι ανυδρων τοπων ζητουν αναπαυσιν και μη ευρισκον λεγει υποστρεψω εις τον οικον μου οθεν εξηλθον
²⁵ και ελθον ευρισκεει σεσαρωμενον και κεκοσμημενον
²⁶ τοτε πορευεται και παραλαμβάνει επτα ετερα πνευματα πονηροτερα εαυτου και εισελθοντα κατοικει εκει και γινεται τα εσχατα του ανθρωπου εκεινου χειρονα των πρωτων
²⁷ εγενετο δε εν τω λεγειν αυτον ταυτα επαρασα τις γυνη φωνην εκ του οχλου ειπεν αυτω μακαρια η κοιλια η βαστασασα σε και μαστοι ους εθηλασας
²⁸ αυτος δε ειπεν μενουγγε μακαριοι οι ακουοντες τον λογον του θεου και φυλασσοντες αυτον
²⁹ των δε οχλων επαθροιζομενων ηρξατο λεγειν η γενεα αυτη πονηρα εστιν σημειον επιζητει και σημειον ου δοθησεται αυτη ει μη το σημειον ιωνα του προφητου
³⁰ καθως γαρ εγενετο ιωνας σημειον τοις νινευιταις ουτως εσται και ο υιος του ανθρωπου τη γενεα ταυτη
³¹ βασιλισσα νοτου εγερθησεται εν τη κρισει μετα των ανδρων της γενεας ταυτης και κατακρινει αυτους οτι ηλθεν εκ των περατων της γης ακουσαι την σοφιαν σολομωντος και ιδου πλειον σολομωντος ωδε
³² ανδρες νινευι αναστησονται εν τη κρισει μετα της γενεας ταυτης και κατακρινουσιν αυτην οτι μετενοησαν εις το κηρυγμα ιωνα και ιδου πλειον ιωνα ωδε
³³ ουδεις δε λυχνον αφας εις κρυπτον τιθησιν ουδε υπο τον μοδιον αλλ επι την λυχνιαν ινα οι εισπορευομενοι το φεγγος βλεπωσιν
³⁴ ο λυχνος του σωματος εστιν ο οφθαλμος οταν ουν ο οφθαλμος σου απλους η και ολον το σωμα σου φωτεινον εστιν επαν δε πονηρος η και το σωμα σου σκοτεινον
³⁵ σκοπει ουν μη το φως το εν σοι σκοτος εστιν
³⁶ ει ουν το σωμα σου ολον φωτεινον μη εχον τι μερος σκοτεινον εσται φωτεινον ολον ως οταν ο λυχνος τη αστραπη φωτιζη σε
³⁷ εν δε τω λαλησαι ηρωτα αυτον φαρισαιος τις οπως αριστηση παρ αυτω εισελθων δε ανεπεσεν
³⁸ ο δε φαρισαιος ιδων εθαυμασεν οτι ου πρωτον εβαπτισθη προ του αριστου
³⁹ ειπεν δε ο κυριος προς αυτον νυν υμεις οι φαρισαιοι το εξωθεν του ποτηριου και του πινακος καθαριζετε το δε εσωθεν υμων γεμει αρπαγης και πονηριας
⁴⁰ αφρονες ουχ ο ποιησας το εξωθεν και το εσωθεν εποιησεν
⁴¹ πλην τα ενοντα δοτε ελεημοσυνην και ιδου παντα καθαρα υμιν εστιν
⁴² αλλ ουαι υμιν τοις φαρισαιοις οτι αποδεκατουτε το ηδυσσμον και το πηγανον και παν λαχανον και παρερχεσθε την κρισιν και την αγαπην του θεου ταυτα εδει ποιησαι κακεινα μη αφιεναι

- ⁴³ ουαι υμιν τοις φαρισαιοις οτι αγαπατε την πρωτοκαθεδριαν εν ταις συναγωγαις και τους ασπασμους εν ταις αγοραις
- ⁴⁴ ουαι υμιν γραμματεις και φαρισαιοι υποκριται οτι εστε ως τα μνημεια τα αδηλα και οι ανθρωποι οι περιπατουντες επανω ουκ οιδασιν
- ⁴⁵ αποκριθεις δε τις των νομικων λεγει αυτω διδασκαλε ταυτα λεγων και ημας υβριζεις
- ⁴⁶ ο δε ειπεν και υμιν τοις νομικοις ουαι οτι φορτιζετε τους ανθρωπους φορτια δυσβαστακτα και αυτοι ενι των δακτυλων υμων ου προσψαυετε τοις φορτιοις
- ⁴⁷ ουαι υμιν οτι οικοδομειτε τα μνημεια των προφητων οι δε πατερες υμων απεκτειναν αυτους
- ⁴⁸ αρα μαρτυρειτε και συνευδοκειτε τοις εργοις των πατερων υμων οτι αυτοι μεν απεκτειναν αυτους υμεις δε οικοδομειτε αυτων τα μνημεια
- ⁴⁹ δια τουτο και η σοφια του θεου ειπεν αποστελω εις αυτους προφητας και αποστολους και εξ αυτων αποκτενουσιν και εκδιωξουσιν
- ⁵⁰ ινα εκζητηθη το αιμα παντων των προφητων το εκχυνομενον απο καταβολης κοσμου απο της γενεας ταυτης
- ⁵¹ απο του αιματος αβελ εως του αιματος ζαχαριου του απολομενου μεταξυ του θυσιαστηριου και του οικου ναι λεγω υμιν εκζητηθησεται απο της γενεας ταυτης
- ⁵² ουαι υμιν τοις νομικοις οτι ηρατε την κλειδα της γνωσεως αυτοι ουκ εισηλθετε και τους εισερχομενους εκωλυσατε
- ⁵³ λεγοντος δε αυτου ταυτα προς αυτους ηρξαντο οι γραμματεις και οι φαρισαιοι δεινωσ ενεχειν και αποστοματιζειν αυτον περι πλειονων
- ⁵⁴ ενεδρευοντες αυτον και ζητουντες θηρευσαι τι εκ του στοματος αυτου ινα κατηγορησωσιν αυτου

Chapter 12

- ¹εν οἰς επισυναχθεισῶν τῶν μυριάδων τοῦ οὄλου ὥστε καταπατεῖν ἀλλήλους ἤρξατο λέγειν πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ πρῶτον προσεχετε ἑαυτοὺς ἀπο τῆς ζυμῆς τῶν φαρισαίων ἣτις ἐστὶν ὑποκρισις
- ²οὐδὲν δὲ συγκεκαλυμμένον ἐστὶν ὃ οὐκ ἀποκαλυφθήσεται καὶ κρυπτόν ὃ οὐ γνωσθήσεται
- ³ἀνθ' ὧν ὅσα ἐν τῇ σκοτίᾳ εἶπατε ἐν τῷ φωτὶ ἀκουσθήσεται καὶ ὃ πρὸς τοὺς ἐλαλήσατε ἐν τοῖς ταμίοις κηρυχθήσεται ἐπὶ τῶν δωματίων
- ⁴λέγω δὲ ὑμῖν τοῖς φίλοις μου μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τῶν ἀποκτείνοντων τὸ σῶμα καὶ μετὰ ταῦτα μὴ ἔχοντων περισσότερον τι ποιῆσαι
- ⁵ὑποδείξω δὲ ὑμῖν τίνα φοβηθῆτε φοβηθῆτε τὸν μετὰ τὸ ἀποκτεῖναι ἐξουσίαν ἔχοντα ἐμβαλεῖν εἰς τὴν γέενναν ναι λέγω ὑμῖν τοῦτον φοβηθῆτε
- ⁶οὐχὶ πέντε στρουθία πωλεῖται ἀσσαρίων δύο καὶ ἐν ἐξ αὐτῶν οὐκ ἐστὶν ἐπιλεησμένον ἐνώπιον τοῦ θεοῦ
- ⁷ἀλλὰ καὶ αἱ τρίχες τῆς κεφαλῆς ὑμῶν πασαι ἠριθμῆνται μὴ οὖν φοβείσθε πολλῶν στρουθίων διαφερέτε
- ⁸λέγω δὲ ὑμῖν πας ὃς ἀνὴρ ὁμολογήσῃ ἐν ἐμοὶ ἐμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὁμολογήσῃ ἐν αὐτῷ ἐμπροσθεν τῶν ἀγγέλων τοῦ θεοῦ
- ⁹ὁ δὲ ἀρνήσασθαι με ἐνώπιον τῶν ἀνθρώπων ἀπαρνήθησεται ἐνώπιον τῶν ἀγγέλων τοῦ θεοῦ
- ¹⁰καὶ πας ὃς ἐρεῖ λόγον εἰς τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἀφεθήσεται αὐτῷ τῷ δὲ εἰς τὸ ἅγιον πνεῦμα βλασφημήσαντι οὐκ ἀφεθήσεται
- ¹¹ὅταν δὲ προσφερῶσιν ὑμᾶς ἐπὶ τὰς συναγωγὰς καὶ τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ἐξουσίας μὴ μεριμνατε πῶς ἢ τί ἀπολογησῆσθε ἢ τί εἰπῆτε
- ¹²τὸ γὰρ ἅγιον πνεῦμα διδάξει ὑμᾶς ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἃ δεῖ εἰπεῖν
- ¹³εἶπεν δὲ τίς αὐτῷ ἐκ τοῦ οὄλου διδάσκαλε εἶπε τῷ ἀδελφῷ μου μερισασθαι μετ' ἐμοῦ τὴν κληρονομίαν
- ¹⁴ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ ἀνθρώπε τίς με κατέστησεν δικαστὴν ἢ μεριστὴν ἐφ' ὑμᾶς
- ¹⁵εἶπεν δὲ πρὸς αὐτοὺς ὁρατε καὶ φυλάσσεσθε ἀπὸ τῆς πλεονεξίας ὅτι οὐκ ἐν τῷ περισσεύειν τίτι ἢ ζωὴ αὐτοῦ ἐστὶν ἐκ τῶν ὑπαρχόντων αὐτοῦ
- ¹⁶εἶπεν δὲ παραβολὴν πρὸς αὐτοὺς λέγων ἀνθρώπου τίνος πλουσίου εὐφορήσεν ἡ χώρα
- ¹⁷καὶ διελογίζετο ἐν ἑαυτῷ λέγων τί ποιήσω ὅτι οὐκ ἔχω πού συναξῶ τοὺς καρπούς μου
- ¹⁸καὶ εἶπεν τοῦτο ποιήσω καθέλω μου τὰς ἀποθήκας καὶ μείζονας οἰκοδομήσω καὶ συναξῶ ἐκεῖ πάντα τὰ γεννημὰ μου καὶ τὰ ἀγαθὰ μου
- ¹⁹καὶ ἐρῶ τῇ ψυχῇ μου ψυχὴ ἔχεις πολλὰ ἀγαθὰ κείμενα εἰς ἐτὴ πολλὰ ἀναπαυοῦ φαγε πίε εὐφραίνου
- ²⁰εἶπεν δὲ αὐτῷ ὁ θεὸς ἀφρον ταυτὴ τῇ νυκτὶ τὴν ψυχὴν σου ἀπαιτοῦσιν ἀπὸ σου ἃ δεῖ ἠτοιμάσας τίτι ἐστὶ
- ²¹οὕτως ὁ θησαυρίζων ἑαυτῷ καὶ μὴ εἰς θεὸν πλουτῶν

²²ειπεν δε προς τους μαθητας αυτου δια τουτο υμιν λεγω μη μεριμνατε τη ψυχη υμων τι φαγητε μηδε τω σωματι τι ενδυσησθε
²³η ψυχη πλειον εστιν της τροφης και το σωμα του ενδυματος
²⁴κατανοησατε τους κορακας οτι ου σπειρουσιν ουδε θεριζουσιν οις ουκ εστιν ταμειον ουδε αποθηκη και ο θεος τρεφει αυτους ποσω μαλλον υμεις διαφερετε των πετεινων
²⁵τις δε εξ υμων μεριμνων δυναται προσθειναι επι την ηλικιαν αυτου πηχυν ενα
²⁶ει ουν ουτε ελαχιστον δυνασθε τι περι των λοιπων μεριμνατε
²⁷κατανοησατε τα κρινα πως αυξανει ου κοπια ουδε νηθει λεγω δε υμιν ουδε σολομων εν παση τη δοξη αυτου περιεβαλετο ως εν τουτων
²⁸ει δε τον χορτον εν τω αγρω σημερον οντα και αυριον εις κλιβανον βαλλομενον ο θεος ουτως αμφιεννυσιν ποσω μαλλον υμας ολιγοπιστοι
²⁹και υμεις μη ζητειτε τι φαγητε η τι πιητε και μη μετεωριζεσθε
³⁰ταυτα γαρ παντα τα εθνη του κοσμου επιζητει υμων δε ο πατηρ οιδεν οτι χρηζετε τουτων
³¹πλην ζητειτε την βασιλειαν του θεου και ταυτα παντα προστεθησεται υμιν
³²μη φοβου το μικρον ποιμνιον οτι ευδοκησεν ο πατηρ υμων δουναι υμιν την βασιλειαν
³³πωλησατε τα υπαρχοντα υμων και δοτε ελεημοσυνην ποιησατε εαυτοις βαλαντια μη παλαιουμενα θησαυρον ανεκλειπτον εν τοις ουρανοις οπου κλεπτης ουκ εγγιζει ουδε σης διαφθειρει
³⁴οπου γαρ εστιν ο θησαυρος υμων εκει και η καρδια υμων εσται
³⁵εστωσαν υμων αι οσφρες περιεζωσμεναι και οι λυχνοι καιομενοι
³⁶και υμεις ομοιοι ανθρωποις προσδεχομενοις τον κυριον εαυτων ποτε αναλυσει εκ των γαμων ινα ελθοντος και κρουσαντος ευθεως ανοιξωσιν αυτω
³⁷μακαριοι οι δουλοι εκεινοι ους ελθων ο κυριος ευρησει γρηγορουντας αμην λεγω υμιν οτι περιζωσεται και ανακλινει αυτους και παρελθων διακονησει αυτοις
³⁸και εαν ελθη εν τη δευτερα φυλακη και εν τη τριτη φυλακη ελθη και ευρη ουτως μακαριοι εισιν οι δουλοι εκεινοι
³⁹τουτο δε γινωσκετε οτι ει ηδει ο οικοδεσποτης ποια ωρα ο κλεπτης ερχεται εγρηγορησεν αν και ουκ αν αφηκεν διορυγηναι τον οικον αυτου
⁴⁰και υμεις ουν γινεσθε ετοιμοι οτι η ωρα ου δοκειτε ο υιος του ανθρωπου ερχεται
⁴¹ειπεν δε αυτω ο πετρος κυριε προς ημας την παραβολην ταυτην λεγεις η και προς παντας
⁴²ειπεν δε ο κυριος τις αρα εστιν ο πιστος οικονομος και φρονιμος ον καταστησει ο κυριος επι της θεραπειας αυτου του διδοναι εν καιρω το σιτομετριον
⁴³μακαριος ο δουλος εκεινος ον ελθων ο κυριος αυτου ευρησει ποιουντα ουτως
⁴⁴αληθως λεγω υμιν οτι επι πασιν τοις υπαρχουσιν αυτου καταστησει αυτον
⁴⁵εαν δε ειπη ο δουλος εκεινος εν τη καρδια αυτου χρονιζει ο κυριος μου ερχεσθαι και αρξηται τυπτειν τους παιδας και τας παιδισκας εσθιειν τε και πινειν και μεθυσκεσθαι

- ⁴⁶ηξει ο κυριος του δουλου εκεινου εν ημερα η ου προσδοκα και εν ωρα η ου γινωσκει και διχοτομησει αυτον και το μερος αυτου μετα των απιστων θησει
- ⁴⁷εκεινος δε ο δουλος ο γνους το θελημα του κυριου εαυτου και μη ετοιμασας μηδε ποιησας προς το θελημα αυτου δαρησεται πολλας
- ⁴⁸ο δε μη γνους ποιησας δε αξια πληγων δαρησεται ολιγας παντι δε ω εδοθη πολυ πολυ ζητηθησεται παρ αυτου και ω παρεθεντο πολυ περισσοτερον αιτησουσιν αυτον
- ⁴⁹πυρ ηλθον βαλειν εις την γην και τι θελω ει ηδη ανηφθη
- ⁵⁰βαπτισμα δε εχω βαπτισθηναι και πως συνεχομαι εως ου τελεσθη
- ⁵¹δοκειτε οτι ειρηνην παρεγενομην δουναι εν τη γη ουχι λεγω υμιν αλλ η διαμερισμον
- ⁵²εσονται γαρ απο του νυν πεντε εν οικω ενι διαμεμερισμενοι τρεις επι δυσιν και δυο επι τρισιν
- ⁵³διαμερισθησεται πατηρ εφ υιω και υιος επι πατρι μητηρ επι θυγατρι και θυγατηρ επι μητρι πενθερα επι την νυμφην αυτης και νυμφη επι την πενθεραν αυτης
- ⁵⁴ελεγεν δε και τοις οχλοις οταν ιδητε την νεφελην ανατελλουσαν απο δυσμων ευθεως λεγετε ομβρος ερχεται και γινεται ουτως
- ⁵⁵και οταν νοτον πνεοντα λεγετε οτι καυσων εσται και γινεται
- ⁵⁶υποκριται το προσωπον του ουρανου και της γης οιδατε δοκιμαζειν τον δε καιρον τουτον πως ου δοκιμαζετε
- ⁵⁷τι δε και αφ εαυτων ου κρινετε το δικαιον
- ⁵⁸ως γαρ υπαγεις μετα του αντιδικου σου επ αρχοντα εν τη οδω δος εργασιαν απηλλαχθαι απ αυτου μηποτε κατασυρη σε προς τον κριτην και ο κριτης σε παραδω τω πρακτορι και ο πρακτωρ σε βαλλη εις φυλακην
- ⁵⁹λεγω σοι ου μη εξελθης εκειθεν εως ου και το εσχατον λεπτον αποδως

Chapter 13

¹παρησαν δε τινες εν αυτω τω καιρω απαγγελοντες αυτω περι των γαλιλαιων ων το αιμα πιλατος εμιξεν μετα των θυσιων αυτων
²και αποκριθεις ο ιησους ειπεν αυτοις δοκειτε οτι οι γαλιλαιοι ουτοι αμαρτωλοι παρα παντας τους γαλιλαιους εγενοντο οτι τοιαυτα πεπονθασιν
³ουχι λεγω υμιν αλλ εαν μη μετανοητε παντες ωσαυτως απολεισθε
⁴η εκεινοι οι δεκα και οκτω εφ ους επεσεν ο πυργος εν τω σιλωαμ και απεκτεινεν αυτους δοκειτε οτι ουτοι οφειλεται εγενοντο παρα παντας ανθρωπους τους κατοικουντας εν ιερουσαλημ
⁵ουχι λεγω υμιν αλλ εαν μη μετανοητε παντες ομοιως απολεισθε
⁶ελεγεν δε ταυτην την παραβολην συκη ειχεν τις εν τω αμπελωνι αυτου πεφυτευμενην και ηλθεν καρπον ζητων εν αυτη και ουχ ευρεν
⁷ειπεν δε προς τον αμπελουργον ιδου τρια ετη ερχομαι ζητων καρπον εν τη συκη ταυτη και ουχ ευρισκω εκκοψον αυτην ινατι και την γην καταργει
⁸ο δε αποκριθεις λεγει αυτω κυριε αφες αυτην και τουτο το ετος εως οτου σκαψω περι αυτην και βαλω κοπριαν
⁹καν μεν ποιηση καρπον ει δε μηγε εις το μελλον εκκοψεις αυτην
¹⁰ην δε διδασκων εν μια των συναγωγων εν τοις σαββασιν
¹¹και ιδου γυνη ην πνευμα εχουσα ασθeneιας ετη δεκα και οκτω και ην συγκυπτουσα και μη δυναμενη ανακυψαι εις το παντελες
¹²ιδων δε αυτην ο ιησους προσεφωνησεν και ειπεν αυτη γυναι απολελυσαι της ασθeneιας σου
¹³και επεθηκεν αυτη τας χειρας και παραχρημα ανωρθωθη και εδοξαζεν τον θεον
¹⁴αποκριθεις δε ο αρχισυναγωγος αγανακτων οτι τω σαββατω εθεραπευσεν ο ιησους ελεγεν τω οχλω εξ ημεραι εισιν εν αις δει εργαζεσθαι εν ταυταις ουν ερχομενοι θεραπευεσθε και μη τη ημερα του σαββατου
¹⁵απεκριθη ουν αυτω ο κυριος και ειπεν υποκριτα εκαστος υμων τω σαββατω ου λυει τον βουν αυτου η τον ονον απο της φατνης και απαγαγων ποτιζει
¹⁶ταυτην δε θυγατερα αβρααμ ουσαν ην εδησεν ο σατανας ιδου δεκα και οκτω ετη ουκ εδει λυθηναι απο του δεσμου τουτου τη ημερα του σαββατου
¹⁷και ταυτα λεγοντος αυτου κατησχυνοντο παντες οι αντικειμενοι αυτω και πας ο οχλος εχαιρεν επι πασιν τοις ενδοξοις τοις γινομενοις υπ αυτου
¹⁸ελεγεν δε τινι ομοια εστιν η βασιλεια του θεου και τινι ομοιωσω αυτην
¹⁹ομοια εστιν κοκκω σιναπεως ον λαβων ανθρωπος εβαλεν εις κηπον εαυτου και ηυξησεν και εγενετο εις δενδρον μεγα και τα πετεινα του ουρανου κατεσκηνωσεν εν τοις κλαδοις αυτου
²⁰και παλιν ειπεν τινι ομοιωσω την βασιλειαν του θεου

- ²¹ομοια εστιν ζυμη ην λαβουσα γυνη ενεκρυψεν εις αλευρου σατα τρια εως ου εξυμωθη ολον
- ²²και διεπορευετο κατα πολεις και κωμας διδασκων και πορειαν ποιουμενος εις ιερουσαλημ
- ²³ειπεν δε τις αυτω κυριε ει ολιγοι οι σωζομενοι ο δε ειπεν προς αυτους
- ²⁴αγωνιζεσθε εισελθειν δια της στενης πυλης οτι πολλοι λεγω υμιν ζητησουσιν εισελθειν και ουκ ισχουσιν
- ²⁵αφ ου αν εγερθη ο οικοδεσποτης και αποκλειση την θυραν και αρξησθε εξω εσταναι και κρουειν την θυραν λεγοντες κυριε κυριε ανοιξον ημιν και αποκριθεις ερει υμιν ουκ οίδα υμας ποθεν εστε
- ²⁶τοτε αρξεσθε λεγειν εφαγομεν ενωπιον σου και επιομεν και εν ταις πλατειαις ημων εδιδαξας
- ²⁷και ερει λεγω υμιν ουκ οίδα υμας ποθεν εστε αποστητε απ εμου παντες οι εργαται της αδικιας
- ²⁸εκει εσται ο κλαυθος και ο βρυγμος των οδοντων οταν οψησθε αβρααμ και ισαακ και ιακωβ και παντας τους προφητας εν τη βασιλεια του θεου υμας δε εκβαλλομενους εξω
- ²⁹και ηξουσιν απο ανατολων και δυσμων και απο βορρα και νοτου και ανακλιθησονται εν τη βασιλεια του θεου
- ³⁰και ιδου εισιν εσχατοι οι εσονται πρωτοι και εισιν πρωτοι οι εσονται εσχατοι
- ³¹εν αυτη τη ημερα προσηλθον τινες φαρισαιοι λεγοντες αυτω εξελθε και πορευου εντευθεν οτι ηρωδης θελει σε αποκτειναι
- ³²και ειπεν αυτοις πορευθεντες ειπατε τη αλωπεκι ταυτη ιδου εκβαλλω δαιμονια και ιασεις επιτελω σημερον και αυριον και τη τριτη τελειουμαι
- ³³πλην δει με σημερον και αυριον και τη εχομενη πορευεσθαι οτι ουκ ενδεχεται προφητην απολεσθαι εξω ιερουσαλημ
- ³⁴ιερουσαλημ ιερουσαλημ η αποκτεινουσα τους προφητας και λιθοβολουσα τους απεσταλμενους προς αυτην ποσακις ηθελησα επισυναξαι τα τεκνα σου ον τροπον ορνις την εαυτης νοσσιαν υπο τας πτερυγας και ουκ ηθελησατε
- ³⁵ιδου αφιεται υμιν ο οικος υμων ερημος αμην δε λεγω υμιν οτι ου μη με ιδητε εως αν ηξη οτε ειπητε ευλογημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυριου

Chapter 14

- ¹ και εγενετο εν τω ελθειν αυτον εις οικον τινος των αρχοντων των φαρισαιων σαββατω φαγειν αρτον και αυτοι ησαν παρατηρουμενοι αυτον
- ² και ιδου ανθρωπος τις ην υδρωπικος εμπροσθεν αυτου
- ³ και αποκριθεις ο ιησους ειπεν προς τους νομικους και φαρισαιους λεγων ει εξεστιν τω σαββατω θεραπευειν
- ⁴ οι δε ησυχασαν και επιλαβομενος ιασατο αυτον και απελυσεν
- ⁵ και αποκριθεις προς αυτους ειπεν τινος υμων ονος η βους εις φρεαρ εμπεσειται και ουκ ευθεως ανασπασει αυτον εν τη ημερα του σαββατου
- ⁶ και ουκ ισχυσαν ανταποκριθηναι αυτω προς ταυτα
- ⁷ ελεγεν δε προς τους κεκλημενους παραβολην επεχων πως τας πρωτοκλισιας εξελεγοντο λεγων προς αυτους
- ⁸ οταν κληθης υπο τινος εις γαμους μη κατακλιθης εις την πρωτοκλισιαν μηποτε εντιμοτερος σου η κεκλημενος υπ αυτου
- ⁹ και ελθων ο σε και αυτον καλεσας ερει σοι δος τουτω τοπον και τοτε αρξη μετ αισχυνης τον εσχατον τοπον κατεχειν
- ¹⁰ αλλ οταν κληθης πορευθεις αναπεσον εις τον εσχατον τοπον ινα οταν ελθη ο κεκληκως σε ειπη σοι φιλε προσαναβηθι ανωτερον τοτε εσται σοι δοξα ενωπιον των συνανακειμενων σοι
- ¹¹ οτι πας ο υψων εαυτον ταπεινωθησεται και ο ταπεινων εαυτον υψωθησεται
- ¹² ελεγεν δε και τω κεκληκοτι αυτον οταν ποιης αριστον η δειπνον μη φωνει τους φιλους σου μηδε τους αδελφους σου μηδε τους συγγενεις σου μηδε γειτονας πλουσιους μηποτε και αυτοι σε αντικαλεσωσιν και γενηται σοι ανταποδομα
- ¹³ αλλ οταν ποιης δοχην καλει πτωχους αναπηρους χωλους τυφλους
- ¹⁴ και μακαριος εση οτι ουκ εχουσιν ανταποδουναι σοι ανταποδοθησεται γαρ σοι εν τη αναστασει των δικαιων
- ¹⁵ ακουσας δε τις των συνανακειμενων ταυτα ειπεν αυτω μακαριος ος φαγεται αρτον εν τη βασιλεια του θεου
- ¹⁶ ο δε ειπεν αυτω ανθρωπος τις εποιησεν δειπνον μεγα και εκαλεσεν πολλους
- ¹⁷ και απεστειλεν τον δουλων αυτου τη ωρα του δειπνου ειπειν τοις κεκλημενοις ερχεσθε οτι ηδη ετοιμα εστιν παντα
- ¹⁸ και ηρξαντο απο μιας παραιτεισθαι παντες ο πρωτος ειπεν αυτω αγρον ηγορασα και εχω αναγκην εξελθειν και ιδειν αυτον ερωτω σε εχε με παρητημενον
- ¹⁹ και ετερος ειπεν ζευγη βωων ηγορασα πεντε και πορευομαι δοκιμασαι αυτα ερωτω σε εχε με παρητημενον
- ²⁰ και ετερος ειπεν γυναικα εγημα και δια τουτο ου δυναμαι ελθειν

- ²¹ και παραγενομενος ο δουλος εκεινος απηγγειλεν τω κυριω αυτου ταυτα τοτε οργισθεις ο οικοδεσποτης ειπεν τω δουλω αυτου εξελθε ταχεως εις τας πλατειας και ρυμας της πολεως και τους πτωχους και αναπηρους και χωλους και τυφλους εισαγαγε ωδε
- ²² και ειπεν ο δουλος κυριε γεγονεν ως επεταξας και ετι τοπος εστιν
- ²³ και ειπεν ο κυριος προς τον δουλον εξελθε εις τας οδους και φραγμους και αναγκασον εισελθειν ινα γεμισθη ο οικος μου
- ²⁴ λεγω γαρ υμιν οτι ουδεις των ανδρων εκεινων των κεκλημενων γευσεται μου του δειπνου
- ²⁵ συνεπορευοντο δε αυτω οχλοι πολλοι και στραφεις ειπεν προς αυτους
- ²⁶ ει τις ερχεται προς με και ου μισει τον πατερα εαυτου και την μητερα και την γυναικα και τα τεκνα και τους αδελφους και τας αδελφας ετι δε και την εαυτου ψυχην ου δυναται μου μαθητης ειναι
- ²⁷ και οστις ου βασταζει τον σταυρον αυτου και ερχεται οπισω μου ου δυναται μου ειναι μαθητης
- ²⁸ τις γαρ εξ υμων θελων πυργον οικοδομησαι ουχι πρωτον καθισας ψηφιζει την δαπανην ει εχει τα προς απαρτισμον
- ²⁹ ινα μηποτε θεντος αυτου θεμελιον και μη ισχυοντος εκτελεσαι παντες οι θεωρουντες αρξωνται εμπαιζειν αυτω
- ³⁰ λεγοντες οτι ουτος ο ανθρωπος ηρξατο οικοδομειν και ουκ ισχυσεν εκτελεσαι
- ³¹ η τις βασιλευς πορευομενος συμβαλειν ετερω βασιλει εις πολεμον ουχι καθισας πρωτον βουλευεται ει δυνατος εστιν εν δεκα χιλιασιν απαντησαι τω μετα εικοσι χιλιαδων ερχομενω επ αυτον
- ³² ει δε μηγε ετι αυτου πορρω οντος πρεσβειαν αποστειλας ερωτα τα προς ειρηνην
- ³³ ουτως ουν πας εξ υμων ος ουκ αποτασσεται πασιν τοις εαυτου υπαρχουσιν ου δυναται μου ειναι μαθητης
- ³⁴ καλον το αλας εαν δε το αλας μωρανθη εν τινι αρτυθησεται
- ³⁵ ουτε εις γην ουτε εις κοπριαν ευθετον εστιν εξω βαλλουσιν αυτο ο εχων ωτα ακουειν ακουετω

Chapter 15

¹ησαν δε εγγιζοντες αυτω παντες οι τελωναι και οι αμαρτωλοι ακουειν αυτου
²και διεγογγυζον οι φαρισαιοι και οι γραμματεις λεγοντες οτι ουτος αμαρτωλους προσδεχεται και συνεσθιει αυτοις
³ειπεν δε προς αυτους την παραβολην ταυτην λεγων
⁴τις ανθρωπος εξ υμων εχων εκατον προβατα και απολεσας εν εξ αυτων ου καταλειπει τα εννενηκονταεννεα εν τη ερημω και πορευεται επι το απολωλος εως ευρη αυτο
⁵και ευρων επιτιθησιν επι τους ωμους εαυτου χαιρων
⁶και ελθων εις τον οικον συγκαλει τους φιλους και τους γειτονας λεγων αυτοις συγχαρητε μοι οτι ευρον το προβατον μου το απολωλος
⁷λεγω υμιν οτι ουτως χαρα εσται εν τω ουρανω επι ενι αμαρτωλω μετανοουντι η επι εννενηκονταεννεα δικαιοις οιτινες ου χριαν εχουσιν μετανοιας
⁸η τις γυνη δραχμας εχουσα δεκα εαν απολεση δραχμην μιαν ουχι απτει λυχνον και σαροι την οικιαν και ζητει επιμελως εως οτου ευρη
⁹και ευρουσα συγκαλειται τας φιλας και τας γειτονας λεγουσα συγχαρητε μοι οτι ευρον την δραχμην ην απωλεσα
¹⁰ουτως λεγω υμιν χαρα γινεται ενωπιον των αγγελων του θεου επι ενι αμαρτωλω μετανοουντι
¹¹ειπεν δε ανθρωπος τις ειχεν δυο υιους
¹²και ειπεν ο νεωτερος αυτων τω πατρι πατερ δος μοι το επιβαλλον μερος της ουσιας και διειλεν αυτοις τον βιον
¹³και μετ ου πολλας ημερας συναγαγων απαντα ο νεωτερος υιος απεδημησεν εις χωραν μακραν και εκει διεσκορπισεν την ουσιαν αυτου ζων ασωτως
¹⁴δαπανησαντος δε αυτου παντα εγενετο λιμος ισχυρος κατα την χωραν εκεινην και αυτος ηρξατο υστερεισθαι
¹⁵και πορευθεις εκολληθη ενι των πολιτων της χωρας εκεινης και επεμψεν αυτον εις τους αγρους αυτου βοσκειν χοιρους
¹⁶και επεθυμει γεμισαι την κοιλιαν αυτου απο των κερατιων ων ησθιον οι χοιροι και ουδεις εδιδου αυτω
¹⁷εις εαυτον δε ελθων ειπεν ποσοι μισθιοι του πατρος μου περισσεουσιν αρτων εγω δε λιμω απολλυμαι
¹⁸αναστας πορευσομαι προς τον πατερα μου και ερω αυτω πατερ ημαρτον εις τον ουρανον και ενωπιον σου
¹⁹και ουκετι ειμι αξιος κληθηναι υιος σου ποιησον με ως ενα των μισθιων σου
²⁰και αναστας ηλθεν προς τον πατερα εαυτου ετι δε αυτου μακραν απεχοντος ειδεν αυτον ο πατηρ αυτου και εσπλαγχνισθη και δραμων επεπεσεν επι τον τραχηλον αυτου και κατεφιλησεν αυτον

²¹ειπεν δε αυτω ο υιος πατερ ημαρτον εις τον ουρανον και ενωπιον σου και ουκετι ειμι αξιος κληθηναι υιος σου
²²ειπεν δε ο πατηρ προς τους δουλους αυτου εξενεγκατε την στολην την πρωτην και ενδυσατε αυτον και δοτε δακτυλιον εις την χειρα αυτου και υποδηματα εις τους ποδας
²³και ενεγκαντες τον μοσχον τον σιτευτον θυσατε και φαγοντες ευφρανθωμεν
²⁴οτι ουτος ο υιος μου νεκρος ην και ανεζησεν και απολωλως ην και ευρεθη και ηρξαντο ευφραινεσθαι
²⁵ην δε ο υιος αυτου ο πρεσβυτερος εν αγρω και ως ερχομενος ηγγισεν τη οικια ηκουσεν συμφωνιας και χορων
²⁶και προσκαλεσαμενος ενα των παιδων επυνθανετο τι ειη ταυτα
²⁷ο δε ειπεν αυτω οτι ο αδελφος σου ηκει και εθυσεν ο πατηρ σου τον μοσχον τον σιτευτον οτι υγιαινοντα αυτον απελαβεν
²⁸ωργισθη δε και ουκ ηθελεν εισελθειν ο ουν πατηρ αυτου εξελθων παρεκαλει αυτον
²⁹ο δε αποκριθεις ειπεν τω πατρι ιδου τοσαυτα ετη δουλευω σοι και ουδεποτε εντολην σου παρηλθον και εμοι ουδεποτε εδωκας εριφον ινα μετα των φιλων μου ευφρανθω
³⁰οτε δε ο υιος σου ουτος ο καταφαγων σου τον βιον μετα πορνων ηλθεν εθυσας αυτω τον μοσχον τον σιτευτον
³¹ο δε ειπεν αυτω τεκνον συ παντοτε μετ εμου ει και παντα τα εμα σα εστιν
³²ευφρανθησαι δε και χαρησαι εδει οτι ο αδελφος σου ουτος νεκρος ην και ανεζησεν και απολωλως ην και ευρεθη

Chapter 16

- ¹ελεγεν δε και προς τους μαθητας αυτου ανθρωπος τις ην πλουσιος ος ειχεν οικονομον και ουτος διεβληθη αυτω ως διασκορπιζων τα υπαρχοντα αυτου
- ²και φωνησας αυτον ειπεν αυτω τι τουτο ακουω περι σου αποδος τον λογον της οικονομιας σου ου γαρ δυναση ετι οικονομειν
- ³ειπεν δε εν εαυτω ο οικονομος τι ποιησω οτι ο κυριος μου αφαιρειται την οικονομιαν απ εμου σκαπτειν ουκ ισχυω επαιτειν αισχυνομαι
- ⁴εγνων τι ποιησω ινα οταν μετασταθω της οικονομιας δεξωνται με εις τους οικους αυτων
- ⁵και προσκαλεσαμενος ενα εκαστον των χρεωφειλετων του κυριου εαυτου ελεγεν τω πρωτω ποσον οφειλεις τω κυριω μου
- ⁶ο δε ειπεν εκατον βατους ελαιου και ειπεν αυτω δεξαι σου το γραμμα και καθισας ταχεως γραψον πεντηκοντα
- ⁷επειτα ετερω ειπεν συ δε ποσον οφειλεις ο δε ειπεν εκατον κορους σιτου και λεγει αυτω δεξαι σου το γραμμα και γραψον ογδοηκοντα
- ⁸και επηνεσεν ο κυριος τον οικονομον της αδικιας οτι φρονιμως εποιησεν οτι οι υιοι του αιωνος τουτου φρονιμωτεροι υπερ τους υιους του φωτος εις την γενεαν εαυτων εισιν
- ⁹καγω υμιν λεγω ποιησατε εαυτοις φιλους εκ του μαμωνα της αδικιας ινα οταν εκλιπητε δεξωνται υμας εις τας αιωνιους σκηνας
- ¹⁰ο πιστος εν ελαχιστω και εν πολλω πιστος εστιν και ο εν ελαχιστω αδικος και εν πολλω αδικος εστιν
- ¹¹ει ουν εν τω αδικω μαμωνα πιστοι ουκ εγενεσθε το αληθινον τις υμιν πιστευσει
- ¹²και ει εν τω αλλοτριω πιστοι ουκ εγενεσθε το υμετερον τις υμιν δωσει
- ¹³ουδεις οικητης δυναται δυσι κυριοις δουλευειν η γαρ τον ενα μισησει και τον ετερον αγαπησει η ενος ανθεξεται και του ετερου καταφρονησει ου δυνασθε θεω δουλευειν και μαμωνα
- ¹⁴ηκουον δε ταυτα παντα και οι φαρισαιοι φιλαργυροι υπαρχοντες και εξεμυκτηριζον αυτον
- ¹⁵και ειπεν αυτοις υμεις εστε οι δικαιουντες εαυτους ενωπιον των ανθρωπων ο δε θεος γινωσκει τας καρδιας υμων οτι το εν ανθρωποις υψηλον βδελυγμα ενωπιον του θεου εστιν
- ¹⁶ο νομος και οι προφηται εως ιωαννου απο τοτε η βασιλεια του θεου ευαγγελιζεται και πας εις αυτην βιαζεται
- ¹⁷ευκοπωτερον δε εστιν τον ουρανον και την γην παρελθειν η του νομου μιαν κεραιαν πεσειν
- ¹⁸πας ο απολυων την γυναικα αυτου και γαμων ετεραν μοιχευει και πας ο απολελυμενην απο ανδρος γαμων μοιχευει
- ¹⁹ανθρωπος δε τις ην πλουσιος και ενεδιδυσκετο πορφυραν και βυσσον ευφραινομενος καθ ημεραν λαμπρως
- ²⁰πτωχος δε τις ην ονοματι λαζαρος ος εβεβλητο προς τον πυλωνα αυτου ηλκωμενος

- ²¹ και επιθυμων χορτασθηναι απο των ψιχιων των πιπτοντων απο της τραπεζης του πλουσιου αλλα και οι κυνες ερχομενοι απειλειχον τα ελκη αυτου
- ²² εγενετο δε αποθανειν τον πτωχον και απενεχθηναι αυτον υπο των αγγελων εις τον κολπον του αβρααμ απεθανεν δε και ο πλουσιος και εταφη
- ²³ και εν τω αδη επαρας τους οφθαλμους αυτου υπαρχων εν βασανοις ορα τον αβρααμ απο μακροθεν και λαζαρον εν τοις κολποις αυτου
- ²⁴ και αυτος φωνησας ειπεν πατερ αβρααμ ελεησον με και πεμψον λαζαρον ινα βαψη το ακρον του δακτυλου αυτου υδατος και καταψυξη την γλωσσαν μου οτι οδυνωμαι εν τη φλογι ταυτη
- ²⁵ ειπεν δε αβρααμ τεκνον μνησθητι οτι απελαβες συ τα αγαθα σου εν τη ζωη σου και λαζαρος ομοιως τα κακα νυν δε οδε παρακαλειται συ δε οδυνασαι
- ²⁶ και επι πασιν τουτοις μεταξυ ημων και υμων χασμα μεγα εστηρικται οπως οι θελοντες διαβηναι εντευθεν προς υμας μη δυνωνται μηδε οι εκειθεν προς ημας διαπερωσιν
- ²⁷ ειπεν δε ερωτω ουν σε πατερ ινα πεμψης αυτον εις τον οικον του πατρος μου
- ²⁸ εχω γαρ πεντε αδελφους οπως διαμαρτυρηται αυτοις ινα μη και αυτοι ελθωσιν εις τον τοπον τουτον της βασανου
- ²⁹ λεγει αυτω αβρααμ εχουσιν μωσεα και τους προφητας ακουσατωσαν αυτων
- ³⁰ ο δε ειπεν ουχι πατερ αβρααμ αλλ εαν τις απο νεκρων πορευθη προς αυτους μετανοησουσιν
- ³¹ ειπεν δε αυτω ει μωσεως και των προφητων ουκ ακουουσιν ουδε εαν τις εκ νεκρων αναστη πεισθησονται

Chapter 17

- ¹ειπεν δε προς τους μαθητας ανενδεκτον εστιν του μη ελθειν τα σκανδαλα ουαι δε δι ου ερχεται
- ²λυσιτελει αυτω ει μυλος ονικος περικειται περι τον τραχηλον αυτου και ερριπται εις την θαλασσαν η ινα σκανδαλιση ενα των μικρων τουτων
- ³προσεχετε εαυτοις εαν δε αμαρτη εις σε ο αδελφος σου επιτιμησον αυτω και εαν μετανοηση αφες αυτω
- ⁴και εαν επτακις της ημερας αμαρτη εις σε και επτακις της ημερας επιστρεψη επι σε λεγων μετανω αφησεις αυτω
- ⁵και ειπον οι αποστολοι τω κυριω προσθες ημιν πιστιν
- ⁶ειπεν δε ο κυριος ει ειχετε πιστιν ως κοκκον σιναπεως ελεγετε αν τη συκαμινω ταυτη εκριζωθητι και φυτευθητι εν τη θαλασση και υπηκουσεν αν υμιν
- ⁷τις δε εξ υμων δουλον εχων αροτριωντα η ποιμαινοντα ος εισελθοντι εκ του αγρου ερει ευθεως παρελθων αναπεσαι
- ⁸αλλ ουχι ερει αυτω ετοιμασον τι δειπνησω και περιζωσαμενος διακονει μοι εως φαγω και πιω και μετα ταυτα φαγεσαι και πιεσαι συ
- ⁹μη χαριν εχει τω δουλω εκεινω οτι εποιησεν τα διαταχθεντα αυτω ου δοκω
- ¹⁰ουτως και υμεις οταν ποιησητε παντα τα διαταχθεντα υμιν λεγετε οτι δουλοι αχρειοι εσμεν οτι ο ωφειλομεν ποιησαι πεποιηκαμεν
- ¹¹και εγενετο εν τω πορευεσθαι αυτον εις ιερουσαλημ και αυτος διηρχετο δια μεσου σαμαρειας και γαλιλαιας
- ¹²και εισερχομενου αυτου εις τινα κωμην απηνητησαν αυτω δεκα λεπροι ανδρες οι εστησαν πορρωθεν
- ¹³και αυτοι ηραν φωνην λεγοντες ιησου επιστατα ελεησον ημας
- ¹⁴και ιδων ειπεν αυτοις πορευθεντες επιδειξατε εαυτους τοις ιερουσιν και εγενετο εν τω υπαγειν αυτους εκαθαρισθησαν
- ¹⁵εις δε εξ αυτων ιδων οτι ιαθη υπεστρεψεν μετα φωνης μεγαλης δοξαζων τον θεον
- ¹⁶και επεσεν επι προσωπον παρα τους ποδας αυτου ευχαριστων αυτω και αυτος ην σαμαρειτης
- ¹⁷αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν ουχι οι δεκα εκαθαρισθησαν οι δε εννεα που
- ¹⁸ουχ ευρεθησαν υποστρεψαντες δουναι δοξαν τω θεω ει μη ο αλλογενης ουτος
- ¹⁹και ειπεν αυτω αναστας πορευου η πιστις σου σεσωκεν σε
- ²⁰επερωτηθεις δε υπο των φαρισαιων ποτε ερχεται η βασιλεια του θεου απεκριθη αυτοις και ειπεν ουκ ερχεται η βασιλεια του θεου μετα παρατηρησεως
- ²¹ουδε ερουσιν ιδου ωδε η ιδου εκει ιδου γαρ η βασιλεια του θεου εντος υμων εστιν
- ²²ειπεν δε προς τους μαθητας ελευσονται ημεραι οτε επιθυμησετε μιαν των ημερων του υιου του ανθρωπου ιδειν και ουκ οψεσθε
- ²³και ερουσιν υμιν ιδου ωδε η ιδου εκει μη απελθητε μηδε διωξητε

- ²⁴ ὡσπερ γὰρ ἡ ἀστραπή ἡ ἀστραπτουσα ἐκ τῆς ὑπ οὐρανὸν εἰς τὴν ὑπ οὐρανὸν λαμπεῖ οὕτως ἐστὶ καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ ἡμέρᾳ αὐτοῦ
- ²⁵ πρῶτον δὲ δεῖ αὐτὸν πολλὰ παθεῖν καὶ ἀποδοκιμασθῆναι ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης
- ²⁶ καὶ καθὼς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ νῶε οὕτως ἐστὶ καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου
- ²⁷ ἡσθίων ἐπὶνον ἐγάμουν ἐξεγαμίζοντο ἀχρι ἧς ἡμέρας εἰσηλθὲν νῶε εἰς τὴν κιβωτὸν καὶ ἦλθεν ὁ κατακλυσμὸς καὶ ἀπώλεσεν ἀπαντὰς
- ²⁸ ὁμοίως καὶ ὡς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις λῶτ ἡσθίων ἐπὶνον ἠγοράζον ἐπώλουν ἐφυτεύον ἠκοδομοῦν
- ²⁹ ἡ δὲ ἡμέρα ἐξῆλθεν λῶτ ἀπὸ σοδομῶν ἐβρέξεν πῦρ καὶ θεῖον ἀπ οὐρανοῦ καὶ ἀπώλεσεν ἀπαντὰς
- ³⁰ κατὰ ταῦτα ἐστὶ ἡ ἡμέρα ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀποκαλύπτεται
- ³¹ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὅς ἐστι ἐπὶ τοῦ δωματός καὶ τὰ σκευὴ αὐτοῦ ἐν τῇ οἰκίᾳ μὴ καταβατῶνται αὐτὰ καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγρῷ ὁμοίως μὴ ἐπιστρέψατω εἰς τὰ ὀπίσω
- ³² μνημονεῦτε τῆς γυναῖκος λῶτ
- ³³ ὅς ἐὰν ζητήσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι ἀπολέσει αὐτὴν καὶ ὅς ἐὰν ἀπολέσῃ αὐτὴν ζωογονήσει αὐτὴν
- ³⁴ λέγω ὑμῖν ταῦτα τῇ νυκτὶ ἐσονται δύο ἐπὶ κλίνης μίας ὁ εἰς παραληφθήσεται καὶ ὁ ἕτερος ἀφεθήσεται
- ³⁵ δύο ἐσονται ἀληθούσαι ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἡ μίᾳ παραληφθήσεται καὶ ἡ ἕτερα ἀφεθήσεται
- ³⁶ δύο ἐσονται ἐν τῷ ἀγρῷ ὁ εἰς παραληφθήσεται καὶ ὁ ἕτερος ἀφεθήσεται
- ³⁷ καὶ ἀποκριθέντες λέγουσιν αὐτῷ πού κυριε ὁ δε εἶπεν αὐτοῖς ὅπου τὸ σῶμα ἐκεῖ συναχθήσονται οἱ αἵετοι

Chapter 18

¹ελεγεν δε και παραβολην αυτοις προς το δειν παντοτε προσευχεσθαι και μη εκκακειν
²λεγων κριτης τις ην εν τινι πολει τον θεον μη φοβουμενος και ανθρωπον μη εντρεπομενος
³χηρα δε ην εν τη πολει εκεινη και ηρχετο προς αυτον λεγουσα εκδικησον με απο του
αντιδικου μου
⁴και ουκ ηθελησεν επι χρονον μετα δε ταυτα ειπεν εν εαυτω ει και τον θεον ου φοβουμαι
και ανθρωπον ουκ εντρεπομαι
⁵δια γε το παρεχειν μοι κοπον την χηραν ταυτην εκδικησω αυτην ινα μη εις τελος ερχομενη
υπωπιαζη με
⁶ειπεν δε ο κυριος ακουσατε τι ο κριτης της αδικιας λεγει
⁷ο δε θεος ου μη ποιησει την εκδικησιν των εκλεκτων αυτου των βωωντων προς αυτον
ημερας και νυκτος και μακροθυμων επ αυτοις
⁸λεγω υμιν οτι ποιησει την εκδικησιν αυτων εν ταχει πλην ο υιος του ανθρωπου ελθων
αρα ευρησει την πιστιν επι της γης
⁹ειπεν δε και προς τινας τους πεποιθοτας εφ εαυτοις οτι εισιν δικαιοι και εξουθενουντας
τους λοιπους την παραβολην ταυτην
¹⁰ανθρωποι δυο ανεβησαν εις το ιερον προσευξασθαι ο εις φαρισαιος και ο ετερος τελωνης
¹¹ο φαρισαιος σταθεις προς εαυτον ταυτα προσηυχετο ο θεος ευχαριστω σοι οτι ουκ ειμι
ωσπερ οι λοιποι των ανθρωπων αρπαγες αδικοι μοιχοι η και ως ουτος ο τελωνης
¹²νηστευω δις του σαββατου αποδεκατω παντα οσα κτωμαι
¹³και ο τελωνης μακροθεν εστως ουκ ηθελεν ουδε τους οφθαλμους εις τον ουρανον επαραι
αλλ ετυπτεν εις το στήθος αυτου λεγων ο θεος ιλασθητι μοι τω αμαρτωλω
¹⁴λεγω υμιν κατεβη ουτος δεδικαιωμενος εις τον οικον αυτου η εκεινος οτι πας ο υψων
εαυτον ταπεινωθησεται ο δε ταπεινων εαυτον υψωθησεται
¹⁵προσεφερον δε αυτω και τα βρεφη ινα αυτων απτηται ιδοντες δε οι μαθηται επετιμησαν
αυτοις
¹⁶ο δε ιησους προσκαλεσαμενος αυτα ειπεν αφετε τα παιδια ερχεσθαι προς με και μη
κωλυετε αυτα των γαρ τοιουτων εστιν η βασιλεια του θεου
¹⁷αμην λεγω υμιν ος εαν μη δεζηται την βασιλειαν του θεου ως παιδιον ου μη εισελθη εις
αυτην
¹⁸και επηρωτησεν τις αυτον αρχων λεγων διδασκαλε αγαθε τι ποιησας ζωνν αιωνιον
κληρονομησω
¹⁹ειπεν δε αυτω ο ιησους τι με λεγεις αγαθον ουδεις αγαθος ει μη εις ο θεος
²⁰τας εντολας οιδας μη μοιχευσης μη φονευσης μη κλεψης μη ψευδομαρτυρησης τιμα τον
πατερα σου και την μητερα σου
²¹ο δε ειπεν ταυτα παντα εφυλαξαμην εκ νεοτητας μου
²²ακουσας δε ταυτα ο ιησους ειπεν αυτω ετι εν σοι λειπει παντα οσα εχεις πωλησον και
διαδος πτωχοις και εξεις θησαυρον εν ουρανω και δευρο ακολουθει μοι

²³ ο δε ακουσας ταυτα περιλυπος εγενετο ην γαρ πλουσιος σφοδρα
²⁴ ιδων δε αυτον ο ιησους περιλυπον γενομενον ειπεν πως δυσκολως οι τα χρηματα εχοντες
εισελευσονται εις την βασιλειαν του θεου
²⁵ ευκοπωτερον γαρ εστιν καμηλον δια τρυμαλιας ραφιδος εισελθειν η πλουσιον εις την
βασιλειαν του θεου εισελθειν
²⁶ ειπον δε οι ακουσαντες και τις δυναται σωθηναι
²⁷ ο δε ειπεν τα αδυνατα παρα ανθρωποις δυνατα εστιν παρα τω θεω
²⁸ ειπεν δε ο πετρος ιδου ημεις αφηκαμεν παντα και ηκολουθησαμεν σοι
²⁹ ο δε ειπεν αυτοις αμην λεγω υμιν οτι ουδεις εστιν ος αφηκεν οικιαν η γονεις η αδελφους
η γυναικα η τεκνα ενεκεν της βασιλειας του θεου
³⁰ ος ου μη απολαβη πολλαπλασιονα εν τω καιρω τουτω και εν τω αιωνι τω ερχομενω
ζωην αιωνιον
³¹ παραλαβων δε τους δωδεκα ειπεν προς αυτους ιδου αναβαινομεν εις ιεροσολυμα και
τελεσθησεται παντα τα γεγραμμενα δια των προφητων τω υιω του ανθρωπου
³² παραδοθησεται γαρ τοις εθνεσιν και εμπαιχθησεται και υβρισθησεται και εμπτυσθησεται
³³ και μαστιγωσαντες αποκτενουσιν αυτον και τη ημερα τη τριτη αναστησεται
³⁴ και αυτοι ουδεν τουτων συνηκαν και ην το ρημα τουτο κεκρυμμενον απ αυτων και ουκ
εγινωσκον τα λεγομενα
³⁵ εγενετο δε εν τω εγγιζειν αυτον εις ιεριχω τυφλος τις εκαθητο παρα την οδον προσαιτων
³⁶ ακουσας δε οχλου διαπορευομενου επυνθανετο τι ειη τουτο
³⁷ απηγγειλαν δε αυτω οτι ιησους ο ναζωραιος παρερχεται
³⁸ και εβοησεν λεγων ιησου υιε δαβιδ ελεησον με
³⁹ και οι προαγοντες επετιμων αυτω ινα σιωπηση αυτος δε πολλω μαλλον εκραζεν υιε
δαβιδ ελεησον με
⁴⁰ σταθεις δε ο ιησους εκελευσεν αυτον αχθηναι προς αυτον εγγισαντος δε αυτου
επηρωτησεν αυτον
⁴¹ λεγων τι σοι θελεις ποιησω ο δε ειπεν κυριε ινα αναβλεψω
⁴² και ο ιησους ειπεν αυτω αναβλεψον η πιστις σου σεσωκεν σε
⁴³ και παραχρημα ανεβλεψεν και ηκολουθει αυτω δοξαζων τον θεον και πας ο λαος ιδων
εδωκεν αινον τω θεω

Chapter 19

- ¹και εισελθων διηρχετο την ιεριχω
- ²και ιδου ανηρ ονοματι καλουμενος ζακχαιος και αυτος ην αρχιτελωνης και ουτος ην πλουσιος
- ³και εζητει ιδειν τον ιησουν τις εστιν και ουκ ηδυνατο απο του οχλου οτι τη ηλικια μικρος ην
- ⁴και προδραμων εμπροσθεν ανεβη επι συκομωραιαν ινα ιδη αυτον οτι δι εκεινης ημελλεν διερχεσθαι
- ⁵και ως ηλθεν επι τον τοπον αναβλεψας ο ιησους ειδεν αυτον και ειπεν προς αυτον ζακχαιε σπευσας καταβηθι σημερον γαρ εν τω οικω σου δει με μειναι
- ⁶και σπευσας κατεβη και υπεδεξατο αυτον χαιρων
- ⁷και ιδοντες απαντες διεγογγυζον λεγοντες οτι παρα αμαρτωλω ανδρι εισηλθεν καταλυσαι
- ⁸σταθεις δε ζακχαιος ειπεν προς τον κυριον ιδου τα ημιση των υπαρχοντων μου κυριε διδωμι τοις πτωχοις και ει τινος τι εσυκοφαντησα αποδιδωμι τετραπλουν
- ⁹ειπεν δε προς αυτον ο ιησους οτι σημερον σωτηρια τω οικω τουτω εγενετο καθοτι και αυτος υιος αβρααμ εστιν
- ¹⁰ηλθεν γαρ ο υιος του ανθρωπου ζητησαι και σωσαι το απολωλος
- ¹¹ακουοντων δε αυτων ταυτα προσθεις ειπεν παραβολην δια το εγγυς αυτον ειναι ιερουσαλημ και δοκειν αυτους οτι παραχρημα μελλει η βασιλεια του θεου αναφαινεσθαι
- ¹²ειπεν ουν ανθρωπος τις ευγενης επορευθη εις χωραν μακραν λαβειν εαυτω βασιλειαν και υποστρεψαι
- ¹³καλεσας δε δεκα δουλους εαυτου εδωκεν αυτοις δεκα μνας και ειπεν προς αυτους πραγματευσασθε εως ερχομαι
- ¹⁴οι δε πολιται αυτου εμισουν αυτον και απεστειλαν πρεσβειαν οπισω αυτου λεγοντες ου θελομεν τουτον βασιλευσαι εφ ημας
- ¹⁵και εγενετο εν τω επανελθειν αυτον λαβοντα την βασιλειαν και ειπεν φωνηθηναι αυτω τους δουλους τουτους οις εδωκεν το αργυριον ινα γνω τις τι διεπραγματευσατο
- ¹⁶παρεγενετο δε ο πρωτος λεγων κυριε η μνα σου προσειργασατο δεκα μνας
- ¹⁷και ειπεν αυτω ευ αγαθε δουλε οτι εν ελαχιστω πιστος εγενου ισθι εξουσιαν εχων επανω δεκα πολεων
- ¹⁸και ηλθεν ο δευτερος λεγων κυριε η μνα σου εποιησεν πεντε μνας
- ¹⁹ειπεν δε και τουτω και συ γινου επανω πεντε πολεων
- ²⁰και ετερος ηλθεν λεγων κυριε ιδου η μνα σου ην ειχον αποκειμενην εν σουδαριω
- ²¹εφοβουμην γαρ σε οτι ανθρωπος αυστηρος ει αιρεις ο ουκ εθηκας και θεριζεις ο ουκ εσπειρας
- ²²λεγει δε αυτω εκ του στοματος σου κρινω σε πονηρε δουλε ηδεις οτι εγω ανθρωπος αυστηρος ειμι αιρων ο ουκ εθηκα και θεριζων ο ουκ εσπειρα

- ²³ και διατι ουκ εδωκας το αργυριον μου επι την τραπεζαν και εγω ελθων συν τοκω αν επραξα αυτο
- ²⁴ και τοις παρεστωσιν ειπεν αρατε απ αυτου την μναν και δοτε τω τας δεκα μνας εχοντι
- ²⁵ και ειπον αυτω κυριε εχει δεκα μνας
- ²⁶ λεγω γαρ υμιν οτι παντι τω εχοντι δοθησεται απο δε του μη εχοντος και ο εχει αρθησεται απ αυτου
- ²⁷ πλην τους εχθρους μου εκεινους τους μη θελησαντας με βασιλευσαι επ αυτους αγαγετε ωδε και κατασφαξατε εμπροσθεν μου
- ²⁸ και ειπων ταυτα επορευετο εμπροσθεν αναβαινων εις ιεροσολυμα
- ²⁹ και εγενετο ως ηγγισεν εις βηθφαγη και βηθανιαν προς το ορος το καλουμενον ελαιων απεστειλεν δυο των μαθητων αυτου
- ³⁰ ειπων υπαγετε εις την κατεναντι κωμην εν η εισπορευομενοι ευρησετε πωλον δεδεμενον εφ ον ουδεις πωποτε ανθρωπων εκαθισεν λυσαντες αυτον αγαγετε
- ³¹ και εαν τις υμας ερωτα διατι λυετε ουτως ερειτε αυτω οτι ο κυριος αυτου χρειαν εχει
- ³² απελθοντες δε οι απεσταλμενοι ευρον καθως ειπεν αυτοις
- ³³ λυοντων δε αυτων τον πωλον ειπον οι κυριοι αυτου προς αυτους τι λυετε τον πωλον
- ³⁴ οι δε ειπον ο κυριος αυτου χρειαν εχει
- ³⁵ και ηγαγον αυτον προς τον ιησουν και επιρριψαντες εαυτων τα ιματια επι τον πωλον επεβιβασαν τον ιησουν
- ³⁶ πορευομενου δε αυτου υπεστρωννυον τα ιματια αυτων εν τη οδω
- ³⁷ εγγιζοντος δε αυτου ηδη προς τη καταβασει του ορους των ελαιων ηρξαντο απαν το πληθος των μαθητων χαιροντες αινειν τον θεον φωνη μεγαλη περι πασων ων ειδον δυναμεων
- ³⁸ λεγοντες ευλογημενος ο ερχομενος βασιλευς εν ονοματι κυριου ειρηνη εν ουρανω και δοξα εν υψιστοις
- ³⁹ και τινες των φαρισαιων απο του οχλου ειπον προς αυτον διδασκαλε επιτιμησον τοις μαθηταις σου
- ⁴⁰ και αποκριθεις ειπεν αυτοις λεγω υμιν οτι εαν ουτοι σιωπησωσιν οι λιθοι κεκραξονται
- ⁴¹ και ως ηγγισεν ιδων την πολιν εκλαυσεν επ αυτη
- ⁴² λεγων οτι ει εγνωσ και συ και γε εν τη ημερα σου ταυτη τα προς ειρηνην σου νυν δε εκρυβη απο οφθαλμων σου
- ⁴³ οτι ηξουσιν ημεραι επι σε και περιβαλουσιν οι εχθροι σου χαρακα σοι και περικυκλωσουσιν σε και συνεξουσιν σε παντοθεν
- ⁴⁴ και εδαφιουσιν σε και τα τεκνα σου εν σοι και ουκ αφησουσιν εν σοι λιθον επι λιθω ανθων ουκ εγνωσ τον καιρον της επισκοπησ σου
- ⁴⁵ και εισελθων εις το ιερον ηρξατο εκβαλλειν τους πωλουντας εν αυτω και αγοραζοντας

⁴⁶λεγων αυτοις γεγραπται ο οικος μου οικος προσευχης εστιν υμεις δε αυτον εποιησατε σπηλαιον ληστων

⁴⁷και ην διδασκων το καθ ημεραν εν τω ιερω οι δε αρχιερεις και οι γραμματεις εξητουν αυτον απολεσαι και οι πρωτοι του λαου

⁴⁸και ουχ ευρισκον το τι ποιησωσιν ο λαος γαρ απας εξεκρεματο αυτου ακουων

Chapter 20

¹και εγενετο εν μια των ημερων εκεινων διδασκοντος αυτου τον λαον εν τω ιερω και ευαγγελιζομενου επεστησαν οι αρχιερεις και οι γραμματεις συν τοις πρεσβυτεροις
²και ειπον προς αυτον λεγοντες ειπε ημιν εν ποια εξουσια ταυτα ποιεις η τις εστιν ο δους σοι την εξουσιαν ταυτην
³αποκριθεις δε ειπεν προς αυτους ερωτησω υμας καγω ενα λογον και ειπατε μοι
⁴το βαπτισμα ιωαννου εξ ουρανου ην η εξ ανθρωπων
⁵οι δε συνελογισαντο προς εαυτους λεγοντες οτι εαν ειπωμεν εξ ουρανου ερει διατι ουν ουκ επιστευσατε αυτω
⁶εαν δε ειπωμεν εξ ανθρωπων πας ο λαος καταλιθασει ημας πεπεισμενος γαρ εστιν ιωαννην προφητην ειναι
⁷και απεκριθησαν μη ειδεναι ποθεν
⁸και ο ιησους ειπεν αυτοις ουδε εγω λεγω υμιν εν ποια εξουσια ταυτα ποιω
⁹ηρξατο δε προς τον λαον λεγειν την παραβολην ταυτην ανθρωπος τις εφυτευσεν αμπελωνα και εξεδото αυτον γεωργοις και απεδημησεν χρονους ικανους
¹⁰και εν καιρω απεστειλεν προς τους γεωργους δουλον ινα απο του καρπου του αμπελωνος δωσιν αυτω οι δε γεωργοι δειραντες αυτον εξαπεστειλαν κενον
¹¹και προσεθετο πεμψαι ετερον δουλον οι δε κακεινον δειραντες και ατιμασαντες εξαπεστειλαν κενον
¹²και προσεθετο πεμψαι τριτον οι δε και τουτον τραυματισαντες εξεβαλον
¹³ειπεν δε ο κυριος του αμπελωνος τι ποιησω πεμψω τον υιον μου τον αγαπητον ισως τουτον ιδοντες εντραπησονται
¹⁴ιδοντες δε αυτον οι γεωργοι διελογιζοντο προς εαυτους λεγοντες ουτος εστιν ο κληρονομος δευτε αποκτεινωμεν αυτον ινα ημων γενηται η κληρονομια
¹⁵και εκβαλοντες αυτον εξω του αμπελωνος απεκτειναν τι ουν ποιησει αυτοις ο κυριος του αμπελωνος
¹⁶ελευσεται και απολεσει τους γεωργους τουτους και δωσει τον αμπελωνα αλλοις ακουσαντες δε ειπον μη γενοιτο
¹⁷ο δε εμβλεψας αυτοις ειπεν τι ουν εστιν το γεγραμμενον τουτο λιθον ον απεδοκιμασαν οι οικοδομουντες ουτος εγενηθη εις κεφαλην γωνιας
¹⁸πας ο πεσων επ εκεινον τον λιθον συνθλασθησεται εφ ον δ αν πεση λικμησει αυτον
¹⁹και εζητησαν οι αρχιερεις και οι γραμματεις επιβαλειν επ αυτον τας χειρας εν αυτη τη ωρα και εφοβηθησαν τον λαον εγνωσαν γαρ οτι προς αυτους την παραβολην ταυτην ειπεν
²⁰και παρατηρησαντες απεστειλαν εγκαθετους υποκρινομενους εαυτους δικαιους ειναι ινα επιλαβωνται αυτου λογου εις το παραδουναι αυτον τη αρχη και τη εξουσια του ηγεμονος
²¹και επηρωτησαν αυτον λεγοντες διδασκαλε οιδαμεν οτι ορθως λεγεις και διδασκεις και ου λαμβανεις προσωπον αλλ επ αληθειας την οδον του θεου διδασκεις
²²εξεστιν ημιν καισαρι φορον δουναι η ου

²³κατανοησας δε αυτων την πανουργιαν ειπεν προς αυτους τι με πειραζετε
²⁴επιδειξατε μοι δηναριον τινος εχει εικονα και επιγραφην αποκριθεντες δε ειπον καισαρος
²⁵ο δε ειπεν αυτοις αποδοτε τοις τα καισαρος καισαρι και τα του θεου τω θεω
²⁶και ουκ ισχυσαν επιλαβεσθαι αυτου ρηματος εναντιον του λαου και θαυμασαντες επι τη αποκρισει αυτου εσιγησαν
²⁷προσελθοντες δε τινες των σαδδουκαιων οι αντιλεγοντες αναστασιν μη ειναι επηρωτησαν αυτον
²⁸λεγοντες διδασκαλε μωσης εγραψεν ημιν εαν τινος αδελφος αποθανη εχων γυναικα και ουτος ατεκνος αποθανη ινα λαβη ο αδελφος αυτου την γυναικα και εξαναστηση σπερμα τω αδελφω αυτου
²⁹επτα ουν αδελφοι ησαν και ο πρωτος λαβων γυναικα απεθανεν ατεκνος
³⁰και ελαβεν ο δευτερος την γυναικα και ουτος απεθανεν ατεκνος
³¹και ο τριτος ελαβεν αυτην ωσαυτως δε και οι επτα και ου κατελιπον τεκνα και απεθανον
³²υστερον παντων απεθανεν και η γυνη
³³εν τη ουν αναστασει τινος αυτων γινεται γυνη οι γαρ επτα εσχον αυτην γυναικα
³⁴και αποκριθεις ειπεν αυτοις ο ιησους οι υιοι του αιωνος τουτου γαμουσιν και εκγαμискονται
³⁵οι δε καταξιωθεντες του αιωνος εκεινου τυχειν και της αναστασεως της εκ νεκρων ουτε γαμουσιν ουτε εκγαμискονται
³⁶ουτε γαρ αποθानειν ετι δυνανται ισαγγελοι γαρ εισιν και υιοι εισιν του θεου της αναστασεως υιοι οντες
³⁷οτι δε εγειρονται οι νεκροι και μωσης εμηνυσεν επι της βατου ως λεγει κυριον τον θεον αβρααμ και τον θεον ισαακ και τον θεον ιακωβ
³⁸θεος δε ουκ εστιν νεκρων αλλα ζωντων παντες γαρ αυτω ζωσιν
³⁹αποκριθεντες δε τινες των γραμματεων ειπον διδασκαλε καλως ειπας
⁴⁰ουκετι δε ετολμων επερωταν αυτον ουδεν
⁴¹ειπεν δε προς αυτους πως λεγουσιν τον χριστον υιον δαβιδ ειναι
⁴²και αυτος δαβιδ λεγει εν βιβλω ψαλμων ειπεν ο κυριος τω κυριω μου καθου εκ δεξιων μου
⁴³εως αν θω τους εχθρους σου υποποδιον των ποδων σου
⁴⁴δαβιδ ουν κυριον αυτον καλει και πως υιος αυτου εστιν
⁴⁵ακουοντος δε παντος του λαου ειπεν τοις μαθηταις αυτου
⁴⁶προσεχετε απο των γραμματεων των θελοντων περιπατειν εν στολαις και φιλονυτων ασπασμους εν ταις αγοραις και πρωτοκαθεδριας εν ταις συναγωγαίς και πρωτοκλισιας εν τοις δειπνοις
⁴⁷οι κατεσθιουσιν τας οικιας των χηρων και προφασει μακρα προσευχονται ουτοι ληφονται περισσοτερον κριμα

Chapter 21

¹αναβλεψας δε ειδεν τους βαλλοντας τα δωρα αυτων εις το γαζοφυλακιον πλουσιους
²ειδεν δε και τινα χηραν πενιχραν βαλλουσαν εκει δυο λεπτα
³και ειπεν αληθως λεγω υμιν οτι η χηρα η πτωχη αυτη πλειον παντων εβαλεν
⁴απαντες γαρ ουτοι εκ του περισσευοντος αυτοις εβαλον εις τα δωρα του θεου αυτη δε εκ του υστερηματος αυτης απαντα τον βιον ον ειχεν εβαλεν
⁵και τινων λεγοντων περι του ιερου οτι λιθοις καλοις και αναθημασιν κεκοσμηται ειπεν
⁶ταυτα α θεωρειτε ελευσονται ημεραι εν αις ουκ αφεθησεται λιθος επι λιθω ος ου καταλυθησεται
⁷επηρωτησαν δε αυτον λεγοντες διδασκαλε ποτε ουν ταυτα εσται και τι το σημειον οταν μελλη ταυτα γινεσθαι
⁸ο δε ειπεν βλεπετε μη πλανηθητε πολλοι γαρ ελευσονται επι τω ονοματι μου λεγοντες οτι εγω ειμι και ο καιρος ηγγικεν μη ουν πορευθητε οπισω αυτων
⁹οταν δε ακουσητε πολεμους και ακαταστασιας μη πτοηθητε δει γαρ ταυτα γενεσθαι πρωτον αλλ ουκ ευθεως το τελος
¹⁰τοτε ελεγεν αυτοις εγερθησεται εθνος επι εθνος και βασιλεια επι βασιλειαν
¹¹σεισμοι τε μεγαλοι κατα τοπους και λιμοι και λοιμοι εσονται φοβητρα τε και σημεια απ ουρανου μεγαλα εσται
¹²προ δε τουτων απαντων επιβαλουσιν εφ υμας τας χειρας αυτων και διωξουσιν παραδιδοντες εις συναγωγας και φυλακας αγομενους επι βασιλεις και ηγεμονας ενεκεν του ονοματος μου
¹³αποβησεται δε υμιν εις μαρτυριον
¹⁴θεσθε ουν εις τας καρδιας υμων μη προμελεταν απολογηθηναι
¹⁵εγω γαρ δωσω υμιν στομα και σοφιαν η ου δυνησονται αντειπειν ουδε αντιστηναι παντες οι αντικειμενοι υμιν
¹⁶παραδοθησεσθε δε και υπο γονεων και αδελφων και συγγενων και φιλων και θανατωσουσιν εξ υμων
¹⁷και εσεσθε μισουμενοι υπο παντων δια το ονομα μου
¹⁸και θριξ εκ της κεφαλης υμων ου μη αποληται
¹⁹εν τη υπομονη υμων κτησασθε τας ψυχας υμων
²⁰οταν δε ιδητε κυκλουμενην υπο στρατοπεδων την ιερουσαλημ τοτε γνωτε οτι ηγγικεν η ερημωσις αυτης
²¹τοτε οι εν τη ιουδαια φευγετωσαν εις τα ορη και οι εν μεσω αυτης εκχωρειτωσαν και οι εν ταις χωραις μη εισερχεσθωσαν εις αυτην
²²οτι ημεραι εκδικησεως αυται εισιν του πληρωθηναι παντα τα γεγραμμενα
²³ουαι δε ταις εν γαστρι εχουσαις και ταις θηλαζουσαις εν εκειναις ταις ημεραις εσται γαρ αναγκη μεγαλη επι της γης και οργη εν τω λαω τουτω

- ²⁴ και πεσουνται στοματι μαχαιρας και αιχμαλωτισθησονται εις παντα τα εθνη και ιερουσαλημ εσται πατουμενη υπο εθνων αχρι πληρωθωσιν καιροι εθνων
- ²⁵ και εσται σημεια εν ηλιω και σεληνη και αστροις και επι της γης συνοχη εθνων εν απορια ηχουσης θαλασσης και σαλου
- ²⁶ αποψυχοντων ανθρωπων απο φοβου και προσδοκιας των επερχομενων τη οικουμενη αι γαρ δυναμεις των ουρανων σαλευθησονται
- ²⁷ και τοτε οψονται τον υιον του ανθρωπου ερχομενον εν νεφελη μετα δυναμεως και δοξης πολλης
- ²⁸ αρχομενων δε τουτων γινεσθαι ανακυψατε και επαρατε τας κεφαλας υμων διοτι εγγιζει η απολυτρωσις υμων
- ²⁹ και ειπεν παραβολην αυτοις ιδετε την συκην και παντα τα δενδρα
- ³⁰ οταν προβαλωσιν ηδη βλεποντες αφ εαυτων γινωσκετε οτι ηδη εγγυς το θερος εστιν
- ³¹ ουτως και υμεις οταν ιδητε ταυτα γινομενα γινωσκετε οτι εγγυς εστιν η βασιλεια του θεου
- ³² αμην λεγω υμιν οτι ου μη παρελθη η γενεα αυτη εως αν παντα γενηται
- ³³ ο ουρανος και η γη παρελευσονται οι δε λογοι μου ου μη παρελθωσιν
- ³⁴ προσεχετε δε εαυτοις μηποτε βαρυνθωσιν υμων αι καρδια εν κραιπαλη και μεθη και μεριμναις βιωτικαις και αιφνιδιος εφ υμας επιστη η ημερα εκεινη
- ³⁵ ως παγισ γαρ επελευσεται επι παντας τους καθημενους επι προσωπον πασης της γης
- ³⁶ αγραυνητε ουν εν παντι καιρω δεομενοι ινα καταξιωθητε εκφυγειν ταυτα παντα τα μελλοντα γινεσθαι και σταθηναι εμπροσθεν του υιου του ανθρωπου
- ³⁷ ην δε τας ημερας εν τω ιερω διδασκων τας δε νυκτας εξερχομενος ηυλιζετο εις το ορος το καλουμενον ελαιων
- ³⁸ και πας ο λαος ωρθηριζεν προς αυτον εν τω ιερω ακουειν αυτου

Chapter 22

- ¹ηγγιζεν δε η εορτη των αζυμων η λεγομενη πασχα
²και εζητουν οι αρχιερεις και οι γραμματεις το πως ανελωσιν αυτον εφοβουντο γαρ τον λαον
³εισηλθεν δε ο σατανας εις ιουδαν τον επικαλουμενον ισκαριωτην οντα εκ του αριθμου των δωδεκα
⁴και απελθων συνελαλησεν τοις αρχιερευσιν και τοις στρατηγοις το πως αυτον παραδω αυτοις
⁵και εχαρησαν και συνεθεντο αυτω αργυριον δουναι
⁶και εξωμολογησεν και εζητει ευκαιριαν του παραδουναι αυτον αυτοις ατερ οχλου
⁷ηλθεν δε η ημερα των αζυμων εν η εδει θυεσθαι το πασχα
⁸και απεστειλεν πετρον και ιωαννην ειπων πορευθεντες ετοιμασατε ημιν το πασχα ινα φαγωμεν
⁹οι δε ειπον αυτω που θελεις ετοιμασωμεν
¹⁰ο δε ειπεν αυτοις ιδου εισελθοντων υμων εις την πολιν συναντησει υμιν ανθρωπος κεραμιον υδατος βασταζων ακολουθησατε αυτω εις την οικιαν ου εισπορευεται
¹¹και ερειτε τω οικοδεσποτη της οικιας λεγει σοι ο διδασκαλος που εστιν το καταλυμα οπου το πασχα μετα των μαθητων μου φαγω
¹²κακεινος υμιν δειξει ανωγειον μεγα εστρωμενον εκει ετοιμασατε
¹³απελθοντες δε ευρον καθως ειρηκεν αυτοις και ητοιμασαν το πασχα
¹⁴και οτε εγενετο η ωρα ανεπεσεν και οι δωδεκα αποστολοι συν αυτω
¹⁵και ειπεν προς αυτους επιθυμια επεθυμησα τουτο το πασχα φαγειν μεθ υμων προ του με παθειν
¹⁶λεγω γαρ υμιν οτι ουκετι ου μη φαγω εξ αυτου εως οτου πληρωθη εν τη βασιλεια του θεου
¹⁷και δεξαμενος ποτηριον ευχαριστησας ειπεν λαβετε τουτο και διαμερισατε εαυτοις
¹⁸λεγω γαρ υμιν οτι ου μη πιω απο του γεννηματος της αμπελου εως οτου η βασιλεια του θεου ελθη
¹⁹και λαβων αρτον ευχαριστησας εκλασεν και εδωκεν αυτοις λεγων τουτο εστιν το σωμα μου το υπερ υμων διδομενον τουτο ποιειτε εις την εμην αναμνησιν
²⁰ωσαυτως και το ποτηριον μετα το δειπνησαι λεγων τουτο το ποτηριον η καινη διαθηκη εν τω αιματι μου το υπερ υμων εκχυνομενον
²¹πλην ιδου η χειρ του παραδιδοντος με μετ εμου επι της τραπεζης
²²και ο μεν υιος του ανθρωπου πορευεται κατα το ωρισμενον πλην ουαι τω ανθρωπω εκεινω δι ου παραδιδεται
²³και αυτοι ηρξαντο συζητειν προς εαυτους το τις αρα ειη εξ αυτων ο τουτο μελλων πρασσειν

- ²⁴εγενετο δε και φιλονεικια εν αυτοις το τις αυτων δοκει ειναι μειζων
²⁵ο δε ειπεν αυτοις οι βασιλεις των εθνων κυριευουσιν αυτων και οι εξουσιαζοντες αυτων ευεργεται καλουνται
²⁶υμεις δε ουχ ουτως αλλ ο μειζων εν υμιν γενεσθω ως ο νεωτερος και ο ηγουμενος ως ο διακωνων
²⁷τις γαρ μειζων ο ανακειμενος η ο διακωνων ουχι ο ανακειμενος εγω δε ειμι εν μεσω υμων ως ο διακωνων
²⁸υμεις δε εστε οι διαμεμενηκοτες μετ εμου εν τοις πειρασμοις μου
²⁹καγω διατιθεμαι υμιν καθως διεθετο μοι ο πατηρ μου βασιλειαν
³⁰ινα εσθιητε και πινητε επι της τραπεζης μου εν τη βασιλεια μου και καθισθησθε επι θρονων κρινοντες τας δωδεκα φυλας του ισραηλ
³¹ειπεν δε ο κυριος σιμων σιμων ιδου ο σατανας εξητησατο υμας του σινιασαι ως τον σιτον
³²εγω δε εδεηθην περι σου ινα μη εκλειπη η πιστις σου και συ ποτε επιστρεψας στηριζον τους αδελφους σου
³³ο δε ειπεν αυτω κυριε μετα σου ετοιμος ειμι και εις φυλακην και εις θανατον πορευεσθαι
³⁴ο δε ειπεν λεγω σοι πετρε ου μη φωνησει σημερον αλεκτωρ πριν η τρις απαρνηση μη ειδεναι με
³⁵και ειπεν αυτοις οτε απεστειλα υμας ατερ βαλαντιου και πηρας και υποδηματων μη τινος υστερησατε οι δε ειπον ουδενος
³⁶ειπεν ουν αυτοις αλλα νυν ο εχων βαλαντιον αρατω ομοιως και πηραν και ο μη εχων πωλησατω το ιματιον αυτου και αγορασατω μαχαιραν
³⁷λεγω γαρ υμιν οτι ετι τουτο το γεγραμμενον δει τελεσθηναι εν εμοι το και μετα ανομων ελογισθη και γαρ τα περι εμου τελος εχει
³⁸οι δε ειπον κυριε ιδου μαχαιραι ωδε δυο ο δε ειπεν αυτοις ικανον εστιν
³⁹και εξελθων επορευθη κατα το εθος εις το ορος των ελαιων ηκολουθησαν δε αυτω και οι μαθηται αυτου
⁴⁰γενομενος δε επι του τοπου ειπεν αυτοις προσευχεσθε μη εισελθειν εις πειρασμον
⁴¹και αυτος απεσπασθη απ αυτων ωσει λιθου βολην και θεις τα γονατα προσηυχето
⁴²λεγων πατερ ει βουλει παρενεγκε το ποτηριον τουτο απ εμου πλην μη το θελημα μου αλλα το σον γενεσθω
⁴³ωφθη δε αυτω αγγελος απ ουρανου ενισχυων αυτον
⁴⁴και γενομενος εν αγωνια εκτενεστερον προσηυχето εγενετο δε ο ιδρωσ αυτου ωσει θρομβοι αιματος καταβαινοντες επι την γην
⁴⁵και αναστας απο της προσευχης ελθων προς τους μαθητας αυτου ευρεν αυτους κοιμωμενους απο της λυπης
⁴⁶και ειπεν αυτοις τι καθευδετε ανασταντες προσευχεσθε ινα μη εισελθητε εις πειρασμον

⁴⁷ετι δε αυτου λαλουντος ιδου οχλος και ο λεγομενος ιουδας εις των δωδεκα προηρχετο αυτων και ηγγισεν τω ιησου φιλησαι αυτον
⁴⁸ο δε ιησους ειπεν αυτω ιουδα φιληματι τον υιον του ανθρωπου παραδιδωσ
⁴⁹ιδοντες δε οι περι αυτον το εσομενον ειπον αυτω κυριε ει παταξομεν εν μαχαιρα
⁵⁰και επαταξεν εις τις εξ αυτων τον δουλον του αρχιερεως και αφειλεν αυτου το ους το δεξιον
⁵¹αποκριθεις δε ο ιησους ειπεν εατε εως τουτου και αψαμενος του ωτιου αυτου ιασατο αυτον
⁵²ειπεν δε ο ιησους προς τους παραγενομενους επ αυτον αρχιερεις και στρατηγους του ιερου και πρεσβυτερους ως επι ληστην εξεληλυθατε μετα μαχαιρων και ξυλων
⁵³καθ ημεραν οντος μου μεθ υμων εν τω ιερω ουκ εξετεινατε τας χειρας επ εμε αλλ αυτη υμων εστιν η ωρα και η εξουσια του σκοτους
⁵⁴συλλαβοντες δε αυτον ηγαγον και εισηγαγον αυτον εις τον οικον του αρχιερεως ο δε πετρος ηκολουθει μακροθεν
⁵⁵αψαντων δε πυρ εν μεσω της αυλης και συγκαθισαντων αυτων εκαθητο ο πετρος εν μεσω αυτων
⁵⁶ιδουσα δε αυτον παιδισκη τις καθημενον προς το φως και ατενισασα αυτω ειπεν και ουτος συν αυτω ην
⁵⁷ο δε ηρνησατο αυτον λεγων γυναι ουκ οιδα αυτον
⁵⁸και μετα βραχυ ετερος ιδων αυτον εφη και συ εξ αυτων ει ο δε πετρος ειπεν ανθρωπε ουκ ειμι
⁵⁹και διαστασης ωσει ωρας μιας αλλος τις δισχυριζετο λεγων επ αληθειας και ουτος μετ αυτου ην και γαρ γαλιλαιος εστιν
⁶⁰ειπεν δε ο πετρος ανθρωπε ουκ οιδα ο λεγεις και παραχρημα ετι λαλουντος αυτου εφωνησεν ο αλεκτωρ
⁶¹και στραφεις ο κυριος ενεβλεψεν τω πετρω και υπεμνησθη ο πετρος του λογου του κυριου ως ειπεν αυτω οτι πριν αλεκτορα φωνησαι απαρνηση με τρις
⁶²και εξελθων εξω ο πετρος εκλαυσεν πικρως
⁶³και οι ανδρες οι συνεχοντες τον ιησουν ενεπαιζον αυτω δεροντες
⁶⁴και περικαλυψαντες αυτον ετυπτον αυτου το προσωπον και επηρωτων αυτον λεγοντες προφητευσον τις εστιν ο παισας σε
⁶⁵και ετερα πολλα βλασφημουντες ελεγον εις αυτον
⁶⁶και ως εγενετο ημερα συνηχθη το πρεσβυτεριον του λαου αρχιερεις τε και γραμματαις και ανηγαγον αυτον εις το συνεδριον εαυτων λεγοντες
⁶⁷ει συ ει ο χριστος ειπε ημιν ειπεν δε αυτοις εαν υμιν ειπω ου μη πιστευσητε
⁶⁸εαν δε και ερωτησω ου μη αποκριθητε μοι η απολυσητε
⁶⁹απο του νυν εσται ο υιος του ανθρωπου καθημενος εκ δεξιων της δυναμεως του θεου

⁷⁰ειπον δε παντες συ ουν ει ο υιος του θεου ο δε προς αυτους εφη υμεις λεγετε οτι εγω ειμι
⁷¹οι δε ειπον τι ετι χρειαν εχομεν μαρτυριας αυτοι γαρ ηκουσαμεν απο του στοματος αυτου

Chapter 23

¹ και ανασταν απαν το πληθος αυτων ηγαγεν αυτον επι τον πιλατον
² ηρξαντο δε κατηγορειν αυτου λεγοντες τουτον ευρομεν διαστρεφοντα το εθνος και κωλυοντα καισαρι φορους διδοναι λεγοντα εαυτον χριστον βασιλεα ειναι
³ ο δε πιλατος επηρωτησεν αυτον λεγων συ ει ο βασιλευς των ιουδαιων ο δε αποκριθεις αυτω εφη συ λεγεις
⁴ ο δε πιλατος ειπεν προς τους αρχιερεις και τους οχλους ουδεν ευρισκω αιτιον εν τω ανθρωπω τουτω
⁵ οι δε επισχυον λεγοντες οτι ανασειει τον λαον διδασκων καθ ολης της ιουδαιας αρξαμενος απο της γαλιλαιας εως ωδε
⁶ πιλατος δε ακουσας γαλιλαιαν επηρωτησεν ει ο ανθρωπος γαλιλαιος εστιν
⁷ και επιγνους οτι εκ της εξουσιας ηρωδου εστιν ανεπεμψεν αυτον προς ηρωδην οντα και αυτον εν ιεροσολυμοις εν ταυταις ταις ημεραις
⁸ ο δε ηρωδης ιδων τον ιησουν εχαρη λιαν ην γαρ θελων εξ ικανου ιδειν αυτον δια το ακουειν πολλα περι αυτου και ηλπιζεν τι σημειον ιδειν υπ αυτου γινομενον
⁹ επηρωτα δε αυτον εν λογοις ικανοις αυτος δε ουδεν απεκρινατο αυτω
¹⁰ ειστηκεισαν δε οι αρχιερεις και οι γραμματεις ευτονως κατηγορουντες αυτου
¹¹ εξουθενησας δε αυτον ο ηρωδης συν τοις στρατευμασιν αυτου και εμπαιξας περιβαλων αυτον εσθητα λαμπραν ανεπεμψεν αυτον τω πιλατω
¹² εγενοντο δε φιλοι ο τε πιλατος και ο ηρωδης εν αυτη τη ημερα μετ αλληλων προυπηρχον γαρ εν εχθρα οντες προς εαυτους
¹³ πιλατος δε συγκαλεσαμενος τους αρχιερεις και τους αρχοντας και τον λαον
¹⁴ ειπεν προς αυτους προσηνεγκατε μοι τον ανθρωπον τουτον ως αποστρεφοντα τον λαον και ιδου εγω ενωπιον υμων ανακρινας ουδεν ευρον εν τω ανθρωπω τουτω αιτιον ων κατηγορειτε κατ αυτου
¹⁵ αλλ ουδε ηρωδης ανεπεμψα γαρ υμας προς αυτον και ιδου ουδεν αξιον θανατου εστιν πεπραγμενον αυτω
¹⁶ παιδευσας ουν αυτον απολυσω
¹⁷ αναγκην δε ειχεν απολυειν αυτοις κατα εορτην ενα
¹⁸ ανεκραξαν δε παμπληθει λεγοντες αιρε τουτον απολυσον δε ημιν τον βαραββαν
¹⁹ οστις ην δια στασιν τινα γενομενην εν τη πολει και φονον βεβλημενος εις φυλακην
²⁰ παλιν ουν ο πιλατος προσεφωνησεν θελων απολυσαι τον ιησουν
²¹ οι δε επεφωνουν λεγοντες σταυρωσον σταυρωσον αυτον
²² ο δε τριτον ειπεν προς αυτους τι γαρ κακον εποιοησεν ουτος ουδεν αιτιον θανατου ευρον εν αυτω παιδευσας ουν αυτον απολυσω
²³ οι δε επεκειντο φωναις μεγαλαις αιτουμενοι αυτον σταυρωθηναι και κατισχυον αι φωναι αυτων και των αρχιερεων

²⁴ο δε πιλατος επεκρινεν γενεσθαι το αιτημα αυτων
²⁵απελυσεν δε αυτοις τον δια στασιν και φονον βεβλημενον εις την φυλακην ον ητουντο τον δε ιησουν παρεδωκεν τω θεληματι αυτων
²⁶και ως απηγαγον αυτον επιλαβομενοι σιμωνος τινος κυρηναιου του ερχομενου απ αγρου επεθηκαν αυτω τον σταυρον φερειν οπισθεν του ιησου
²⁷ηκολουθει δε αυτω πολυ πληθος του λαου και γυναικων αι και εκοπτοντο και εθρηνον αυτον
²⁸στραφεις δε προς αυτας ο ιησους ειπεν θυγατερες ιερουσαλημ μη κλαιετε επ εμε πλην εφ εαυτας κλαιετε και επι τα τεκνα υμων
²⁹οτι ιδου ερχονται ημεραι εν αις ερουσιν μακαριαι αι στειραι και κοιλιαι αι ουκ εγεννησαν και μαστοι οι ουκ εθηλασαν
³⁰τοτε αρξονται λεγειν τοις ορεσιν πεσετε εφ ημας και τοις βουνοις καλυψατε ημας
³¹οτι ει εν τω υγρω ξυλω ταυτα ποιουσιν εν τω ξηρω τι γενηται
³²ηγοντο δε και ετεροι δυο κακουργοι συν αυτω αναιρεθηναι
³³και οτε απηλθον επι τον τοπον τον καλουμενον κρانيον εκει εσταυρωσαν αυτον και τους κακουργους ον μεν εκ δεξιων ον δε εξ αριστερων
³⁴ο δε ιησους ελεγεν πατερ αφες αυτοις ου γαρ οιδασιν τι ποιουσιν διαμεριζομενοι δε τα ιματια αυτου εβαλον κληρον
³⁵και ειστηκει ο λαος θεωρων εξεμυκτηριζον δε και οι αρχοντες συν αυτοις λεγοντες αλλους εσωσεν σωσατω εαυτον ει ουτος εστιν ο χριστος ο του θεου εκλεκτος
³⁶ενεπαιζον δε αυτω και οι στρατιωται προσερχομενοι και οξος προσφεροντες αυτω
³⁷και λεγοντες ει συ ει ο βασιλευς των ιουδαιων σωσον σεαυτον
³⁸ην δε και επιγραφη γεγραμμενη επ αυτω γραμμασιν ελληνικois και ρωμαικois και εβραιικois ουτος εστιν ο βασιλευς των ιουδαιων
³⁹εις δε των κρεμασθεντων κακουργων εβλασφημει αυτον λεγων ει συ ει ο χριστος σωσον σεαυτον και ημας
⁴⁰αποκριθεις δε ο ετερος επετιμα αυτω λεγων ουδε φοβη συ τον θεον οτι εν τω αυτω κριματι ει
⁴¹και ημεις μεν δικαιως αξια γαρ ων επραξαμεν απολαμβανομεν ουτος δε ουδεν ατοπον επραξεν
⁴²και ελεγεν τω ιησου μνησθητι μου κυριε οταν ελθης εν τη βασιλεια σου
⁴³και ειπεν αυτω ο ιησους αμην λεγω σοι σημερον μετ εμου εση εν τω παραδεισω
⁴⁴ην δε ωσει ωρα εκτη και σκοτος εγενετο εφ ολην την γην εως ωρας εννατης
⁴⁵και εσκοτισθη ο ηλιος και εσχισθη το καταπετασμα του ναου μεσον
⁴⁶και φωνησας φωνη μεγαλη ο ιησους ειπεν πατερ εις χειρας σου παραθησομαι το πνευμα μου και ταυτα ειπων εξεπνευσεν

- ⁴⁷ιδων δε ο εκατονταρχος το γενομενον εδοξασεν τον θεον λεγων οντως ο ανθρωπος ουτος δικαιος ην
- ⁴⁸και παντες οι συμπαραγενομενοι οχλοι επι την θεωριαν ταυτην θεωρουντες τα γενομενα τυπτοντες εαυτων τα στηθη υπεστρεφον
- ⁴⁹ειστηκεισαν δε παντες οι γνωστοι αυτου μακροθεν και γυναικες αι συνακολουθησασαι αυτω απο της γαλιλαιας ορωσαι ταυτα
- ⁵⁰και ιδου ανηρ ονοματι ιωσηφ βουλευτης υπαρχων ανηρ αγαθος και δικαιος
- ⁵¹ουτος ουκ ην συγκατατεθειμενος τη βουλη και τη πραξει αυτων απο αριμαθαιας πολεως των ιουδαιων ος και προσεδεχετο και αυτος την βασιλειαν του θεου
- ⁵²ουτος προσελθων τω πιλατω ητησατο το σωμα του ιησου
- ⁵³και καθελων αυτο ενετυλιξεν αυτο σινδονι και εθηκεν αυτο εν μνηματι λαξευτω ου ουκ ην ουδεπω ουδεις κειμενος
- ⁵⁴και ημερα ην παρασκευη και σαββατον επεφωσκεν
- ⁵⁵κατακολουθησασαι δε και γυναικες αιτινες ησαν συνεληλυθυιαι αυτω εκ της γαλιλαιας εθεασαντο το μνημειον και ως ετεθη το σωμα αυτου
- ⁵⁶υποστρεψασαι δε ητοιμασαν αρωματα και μυρα και το μεν σαββατον ησυχασαν κατα την εντολην

Chapter 24

¹τη δε μια των σαββατων ορθρου βαθεος ηλθον επι το μνημα φερουσαι α ητοιμασαν αρωματα και τινες συν αυταις
²ευρον δε τον λιθον αποκεκυλισμενον απο του μνημειου
³και εισελθουσαι ουχ ευρον το σωμα του κυριου ιησου
⁴και εγενετο εν τω διαπορεισθαι αυτας περι τουτου και ιδου δυο ανδρες επεστησαν αυταις εν εσθησεσιν αστραπτουσαις
⁵εμφοβων δε γενομενων αυτων και κλινουσων το προσωπον εις την γην ειπον προς αυτας τι ζητειτε τον ζωντα μετα των νεκρων
⁶ουκ εστιν ωδε αλλ ηγερθη μνησθητε ως ελαλησεν υμιν ετι ων εν τη γαλιλαια
⁷λεγων οτι δει τον υιον του ανθρωπου παραδοθηναι εις χειρας ανθρωπων αμαρτωλων και σταυρωθηναι και τη τριτη ημερα αναστηναι
⁸και εμνησθησαν των ρηματων αυτου
⁹και υποστρεψασαι απο του μνημειου απηγγειλαν ταυτα παντα τοις ενδεκα και πασιν τοις λοιποις
¹⁰ησαν δε η μαγδαληνη μαρια και ιωαννα και μαρια ιακωβου και αι λοιπαι συν αυταις αι ελεγον προς τους αποστολους ταυτα
¹¹και εφανησαν ενωπιον αυτων ωσει ληρος τα ρηματα αυτων και ηπιστουν αυταις
¹²ο δε πετρος αναστας εδραμεν επι το μνημειον και παρακυψας βλεπει τα οθονια κειμενα μονα και απηλθεν προς εαυτον θαυμαζων το γεγονος
¹³και ιδου δυο εξ αυτων ησαν πορευομενοι εν αυτη τη ημερα εις κωμην απεχουσαν σταδιους εξηκοντα απο ιερουσαλημ η ονομα εμμαους
¹⁴και αυτοι ωμιλουν προς αλληλους περι παντων των συμβεβηκοτων τουτων
¹⁵και εγενετο εν τω ομιλειν αυτους και συζητειν και αυτος ο ιησους εγγισας συνεπορευετο αυτοις
¹⁶οι δε οφθαλμοι αυτων εκρατουντο του μη επιγνωαι αυτον
¹⁷ειπεν δε προς αυτους τινες οι λογοι ουτοι ους αντιβαλλετε προς αλληλους περιπατουντες και εστε σκυθρωποι
¹⁸αποκριθεις δε ο εις ω ονομα κλεοπας ειπεν προς αυτον συ μονος παροικεις εν ιερουσαλημ και ουκ εγνωσ τα γενομενα εν αυτη εν ταις ημεραις ταυταις
¹⁹και ειπεν αυτοις ποια οι δε ειπον αυτω τα περι ιησου του ναζωραιου ος εγενετο ανηρ προφητης δυνατος εν εργω και λογω εναντιον του θεου και παντος του λαου
²⁰οπως τε παρεδωκαν αυτον οι αρχιερεις και οι αρχοντες ημων εις κριμα θανατου και εσταυρωσαν αυτον
²¹ημεις δε ηλπιζομεν οτι αυτος εστιν ο μελλων λυτρουσθαι τον ισραηλ αλλα γε συν πασιν τουτοις τριτην ταυτην ημεραν αγει σημερον αφ ου ταυτα εγενετο
²²αλλα και γυναικες τινες εξ ημων εξεστησαν ημας γενομεναι ορθριαι επι το μνημειον

- ²³ και μη ευρουσαι το σωμα αυτου ηλθον λεγουσαι και οπτασιαν αγγελων εωρακεναι οι λεγουσιν αυτον ζην
- ²⁴ και απηλθον τινες των συν ημιν επι το μνημειον και ευρον ουτως καθως και αι γυναικες ειπον αυτον δε ουκ ειδον
- ²⁵ και αυτος ειπεν προς αυτους ω ανοητοι και βραδεις τη καρδια του πιστευειν επι πασιν οις ελαλησαν οι προφηται
- ²⁶ ουχι ταυτα εδει παθειν τον χριστον και εισελθειν εις την δοξαν αυτου
- ²⁷ και αρξαμενος απο μωσεως και απο παντων των προφητων διηρμηνευεν αυτοις εν πασαις ταις γραφαις τα περι εαυτου
- ²⁸ και ηγγισαν εις την κωμην ου επορευοντο και αυτος προσεποιειτο πορρωτερω πορευεσθαι
- ²⁹ και παρεβιασαντο αυτον λεγοντες μεινον μεθ ημων οτι προς εσπεραν εστιν και κεκλικεν η ημερα και εισηλθεν του μειναι συν αυτοις
- ³⁰ και εγενετο εν τω κατακλιθηναι αυτον μετ αυτων λαβων τον αρτον ευλογησεν και κλασας επεδιδου αυτοις
- ³¹ αυτων δε διηνοιχθησαν οι οφθαλμοι και επεγνωσαν αυτον και αυτος αφαντος εγενετο απ αυτων
- ³² και ειπον προς αλληλους ουχι η καρδια ημων καιιομενη ην εν ημιν ως ελαλει ημιν εν τη οδω και ως διηνοιγεν ημιν τας γραφας
- ³³ και ανασταντες αυτη τη ωρα υπεστρεψαν εις ιερουσαλημ και ευρον συνηθροισμενους τους ενδεκα και τους συν αυτοις
- ³⁴ λεγοντας οτι ηγερθη ο κυριος οντως και ωφθη σιμωνι
- ³⁵ και αυτοι εξηγουντο τα εν τη οδω και ως εγνωσθη αυτοις εν τη κλασει του αρτου
- ³⁶ ταυτα δε αυτων λαλουντων αυτος ο ιησους εστη εν μεσω αυτων και λεγει αυτοις ειρηνη υμιν
- ³⁷ πτοηθεντες δε και εμφοβοι γενομενοι εδοκουν πνευμα θεωρειν
- ³⁸ και ειπεν αυτοις τι τεταραγμενοι εστε και διατι διαλογισμοι αναβαινουσιν εν ταις καρδιαις υμων
- ³⁹ ιδετε τας χειρας μου και τους ποδας μου οτι αυτος εγω ειμι ψηλαφησατε με και ιδετε οτι πνευμα σαρκα και οστεα ουκ εχει καθως εμε θεωρειτε εχοντα
- ⁴⁰ και τουτο ειπων επεδειξεν αυτοις τας χειρας και τους ποδας
- ⁴¹ ετι δε απιστουντων αυτων απο της χαρας και θαυμαζοντων ειπεν αυτοις εχετε τι βρωσιμον ενθαδε
- ⁴² οι δε επεδωκαν αυτω ιχθυος οπτου μερος και απο μελισσιου κηριου
- ⁴³ και λαβων ενωπιον αυτων εφαγεν
- ⁴⁴ ειπεν δε αυτοις ουτοι οι λογοι ους ελαλησα προς υμας ετι ων συν υμιν οτι δει πληρωθηναι παντα τα γεγραμμενα εν τω νομω μωσεως και προφηταις και ψαλμοις περι εμου
- ⁴⁵ τοτε διηνοιξεν αυτων τον νουν του συνιεναι τας γραφας

⁴⁶ και ειπεν αυτοις οτι ουτως γεγραπται και ουτως εδει παθειν τον χριστον και αναστηναι εκ νεκρων τη τριτη ημερα

⁴⁷ και κηρυχθηναι επι τω ονοματι αυτου μετανοιαν και αφεσιν αμαρτιων εις παντα τα εθνη αρξαμενον απο ιερουσαλημ

⁴⁸ υμεις δε εστε μαρτυρες τουτων

⁴⁹ και ιδου εγω αποστελλω την επαγγελιαν του πατρος μου εφ υμας υμεις δε καθισατε εν τη πολει ιερουσαλημ εως ου ενδυσησθε δυναμιν εξ υψους

⁵⁰ εξηγαγεν δε αυτους εξω εως εις βηθανιαν και επαρας τας χειρας αυτου ευλογησεν αυτους

⁵¹ και εγενετο εν τω ευλογειν αυτον αυτους διεστη απ αυτων και ανεφερετο εις τον ουρανον

⁵² και αυτοι προσκυνησαντες αυτον υπεστρεψαν εις ιερουσαλημ μετα χαρας μεγαλης

⁵³ και ησαν διαπαντος εν τω ιερω αιουντες και ευλογουντες τον θεον αμην

John

Chapter 1

¹εν αρχη ην ο λογος και ο λογος ην προς τον θεον και θεος ην ο λογος
²ουτος ην εν αρχη προς τον θεον
³παντα δι αυτου εγενετο και χωρις αυτου εγενετο ουδε εν ο γεγονεν
⁴εν αυτω ζωη ην και η ζωη ην το φως των ανθρωπων
⁵και το φως εν τη σκοτια φαινει και η σκοτια αυτο ου κατελαβεν
⁶εγενετο ανθρωπος απεσταλμενος παρα θεου ονομα αυτω ιωαννης
⁷ουτος ηλθεν εις μαρτυριαν ινα μαρτυρηση περι του φωτος ινα παντες πιστευσωσιν δι αυτου
⁸ουκ ην εκεινος το φως αλλ ινα μαρτυρηση περι του φωτος
⁹ην το φως το αληθινον ο φωτιζει παντα ανθρωπον ερχομενον εις τον κοσμον
¹⁰εν τω κοσμω ην και ο κοσμος δι αυτου εγενετο και ο κοσμος αυτον ουκ εγνω
¹¹εις τα ιδια ηλθεν και οι ιδιοι αυτον ου παρελαβον
¹²οσοι δε ελαβον αυτον εδωκεν αυτοις εξουσιαν τεκνα θεου γενεσθαι τοις πιστεουσιν εις το ονομα αυτου
¹³οι ουκ εξ αιματων ουδε εκ θεληματος σαρκος ουδε εκ θεληματος ανδρος αλλ εκ θεου εγεννηθησαν
¹⁴και ο λογος σαρξ εγενετο και εσκηνωσεν εν ημιν και εθεασαμεθα την δοξαν αυτου δοξαν ως μονογενους παρα πατρος πληρης χαριτος και αληθειας
¹⁵ιωαννης μαρτυρει περι αυτου και κεκραγεν λεγων ουτος ην ον ειπον ο οπισω μου ερχομενος εμπροσθεν μου γεγονεν οτι πρωτος μου ην
¹⁶και εκ του πληρωματος αυτου ημεις παντες ελαβομεν και χαριν αντι χαριτος
¹⁷οτι ο νομος δια μωσεως εδοθη η χαρις και η αληθεια δια ιησου χριστου εγενετο
¹⁸θεον ουδεις εωρακεν πωποτε ο μονογενης υιος ο ων εις τον κολπον του πατρος εκεινος εξηγησατο
¹⁹και αυτη εστιν η μαρτυρια του ιωαννου οτε απεστειλαν οι ιουδαιοι εξ ιεροσολυμων ιερεις και λευιτας ινα ερωτησωσιν αυτον συ τις ει
²⁰και ωμολογησεν και ουκ ηρνησατο και ωμολογησεν οτι ουκ ειμι εγω ο χριστος
²¹και ηρωτησαν αυτον τι ουν ηλιας ει συ και λεγει ουκ ειμι ο προφητης ει συ και απεκριθη ου
²²ειπον ουν αυτω τις ει ινα αποκρισιν δωμεν τοις πεμψασιν ημας τι λεγεις περι σεαυτου
²³εφη εγω φωνη βοωντος εν τη ερημω ευθυνατε την οδον κυριου καθως ειπεν ησαιας ο προφητης
²⁴και οι απεσταλμενοι ησαν εκ των φαρισαιων
²⁵και ηρωτησαν αυτον και ειπον αυτω τι ουν βαπτιζεις ει συ ουκ ει ο χριστος ουτε ηλιας ουτε ο προφητης

- ²⁶ απεκριθη αυτοις ο ιωαννης λεγων εγω βαπτιζω εν υδατι μεσος δε υμων εστηκεν ον υμεις ουκ οιδατε
- ²⁷ αυτος εστιν ο οπισω μου ερχομενος ος εμπροσθεν μου γεγονεν ου εγω ουκ ειμι αξιος ινα λυσω αυτου τον ιμαντα του υποδηματος
- ²⁸ ταυτα εν βηθαβαρα εγενετο περαν του ιορδανου οπου ην ιωαννης βαπτιζων
- ²⁹ τη επαυριον βλεπει ο ιωαννης τον ιησουν ερχομενον προς αυτον και λεγει ιδε ο αμνος του θεου ο αιρων την αμαρτιαν του κοσμου
- ³⁰ ουτος εστιν περι ου εγω ειπον οπισω μου ερχεται ανηρ ος εμπροσθεν μου γεγονεν οτι πρωτος μου ην
- ³¹ καγω ουκ ηδιν αυτον αλλ ινα φανερωθη τω ισραηλ δια τουτο ηλθον εγω εν τω υδατι βαπτιζων
- ³² και εμαρτυρησεν ιωαννης λεγων οτι τεθεαμαι το πνευμα καταβαινον ωσει περιστεραν εξ ουρανου και εμεινεν επ αυτον
- ³³ καγω ουκ ηδιν αυτον αλλ ο πεμψας με βαπτιζειν εν υδατι εκεινος μοι ειπεν εφ ον αν ιδης το πνευμα καταβαινον και μενον επ αυτον ουτος εστιν ο βαπτιζων εν πνευματι αγιω
- ³⁴ καγω εωρακα και μεμαρτυρηκα οτι ουτος εστιν ο υιος του θεου
- ³⁵ τη επαυριον παλιν εισηκει ο ιωαννης και εκ των μαθητων αυτου δυο
- ³⁶ και εμβλεψας τω ιησου περιπατουντι λεγει ιδε ο αμνος του θεου
- ³⁷ και ηκουσαν αυτου οι δυο μαθηται λαλουντος και ηκολουθησαν τω ιησου
- ³⁸ στραφεις δε ο ιησους και θεασαμενος αυτους ακολουθουντας λεγει αυτοις τι ζητειτε οι δε ειπον αυτω ραββι ο λεγεται ερμηνευομενον διδασκαλε που μενεις
- ³⁹ λεγει αυτοις ερχεσθε και ιδετε ηλθον και ειδον που μενει και παρ αυτω εμειναν την ημεραν εκεινην ωρα δε ην ως δεκατη
- ⁴⁰ ην ανδρεας ο αδελφος σιμωνος πετρου εις εκ των δυο των ακουσαντων παρα ιωαννου και ακολουθησαντων αυτω
- ⁴¹ ευρισκει ουτος πρωτος τον αδελφον τον ιδιον σιμωνα και λεγει αυτω ευρηκαμεν τον μεσσιαν ο εστιν μεθερμηνευομενον ο χριστος
- ⁴² και ηγαγεν αυτον προς τον ιησουν εμβλεψας δε αυτω ο ιησους ειπεν συ ει σιμων ο υιος ιωνα συ κληθηση κηφας ο ερμηνευεται πετρος
- ⁴³ τη επαυριον ηθελησεν ο ιησους εξελθειν εις την γαλιλαιαν και ευρισκει φιλιππον και λεγει αυτω ακολουθει μοι
- ⁴⁴ ην δε ο φιλιππος απο βηθσαιδα εκ της πολεως ανδρεου και πετρου
- ⁴⁵ ευρισκει φιλιππος τον ναθαναηλ και λεγει αυτω ον εγραψεν μωσης εν τω νομω και οι προφηται ευρηκαμεν ιησουν τον υιον του ιωσηφ τον απο ναζαρεθ
- ⁴⁶ και ειπεν αυτω ναθαναηλ εκ ναζαρεθ δυναται τι αγαθον ειναι λεγει αυτω φιλιππος ερχου και ιδε
- ⁴⁷ ειδεν ο ιησους τον ναθαναηλ ερχομενον προς αυτον και λεγει περι αυτου ιδε αληθως ισραηλιτης εν ω δολος ουκ εστιν

⁴⁸λεγει αυτω ναθαναηλ ποθεν με γινωσκεις απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτω προ του σε φιλιππον φωνησαι οντα υπο την συκην ειδον σε

⁴⁹απεκριθη ναθαναηλ και λεγει αυτω ραββι συ ει ο υιος του θεου συ ει ο βασιλευς του ισραηλ

⁵⁰απεκριθη ιησους και ειπεν αυτω οτι ειπον σοι ειδον σε υποκατω της συκης πιστευεις μειζω τουτων οψει

⁵¹και λεγει αυτω αμην αμην λεγω υμιν απ αρτι οψεσθε τον ουρανον ανεωγοτα και τους αγγελους του θεου αναβαινοντας και καταβαινοντας επι τον υιον του ανθρωπου

Chapter 2

¹ και τη ημερα τη τριτη γαμος εγενετο εν κανα της γαλιλαιας και ην η μητηρ του ιησου εκει
² εκληθη δε και ο ιησους και οι μαθηται αυτου εις τον γαμον
³ και υστερησαντος οινου λεγει η μητηρ του ιησου προς αυτον οινον ουκ εχουσιν
⁴ λεγει αυτη ο ιησους τι μοι και σοι γυναι ουπω ηκει η ωρα μου
⁵ λεγει η μητηρ αυτου τοις διακονοις ο τι αν λεγη υμιν ποιησατε
⁶ ησαν δε εκει υδριαι λιθιναι εξ κειμεναι κατα τον καθαρισμον των ιουδαιων χωρουσαι ανα μετρητας δυο η τρεις
⁷ λεγει αυτοις ο ιησους γεμισατε τας υδριας υδατος και εγεμισαν αυτας εως ανω
⁸ και λεγει αυτοις αντλησατε νυν και φερετε τω αρχιτρικλινω και ηνεγκαν
⁹ ως δε εγευσατο ο αρχιτρικλινος το υδωρ οινον γεγενημενον και ουκ ηδει ποθεν εστιν οι δε διακονοι ηδεισαν οι ηντληκοτες το υδωρ φωνει τον νυμφιον ο αρχιτρικλινος
¹⁰ και λεγει αυτω πας ανθρωπος πρωτον τον καλον οινον τιθησιν και οταν μεθυσθωσιν τοτε τον ελασσω συ τετηρηκας τον καλον οινον εως αρτι
¹¹ ταυτην εποιησεν την αρχην των σημειων ο ιησους εν κανα της γαλιλαιας και εφανερωσεν την δοξαν αυτου και επιστευσαν εις αυτον οι μαθηται αυτου
¹² μετα τουτο κατεβη εις καπερναουμ αυτος και η μητηρ αυτου και οι αδελφοι αυτου και οι μαθηται αυτου και εκει εμειναν ου πολλας ημερας
¹³ και εγγυσ ην το πασχα των ιουδαιων και ανεβη εις ιεροσολυμα ο ιησους
¹⁴ και ευρεν εν τω ιερω τους πωλουντας βοας και προβατα και περιστερας και τους κερματιστας καθημενους
¹⁵ και ποιησας φραγελλιον εκ σχοινιων παντας εξεβαλεν εκ του ιερου τα τε προβατα και τους βοας και των κολλυβιστων εξεχεεν το κερμα και τας τραπεζας ανεστρεψεν
¹⁶ και τοις τας περιστερας πωλουσιν ειπεν αρατε ταυτα εντευθεν μη ποιειτε τον οικον του πατρος μου οικον εμποριου
¹⁷ εμνησθησαν δε οι μαθηται αυτου οτι γεγραμμενον εστιν ο ζηλος του οικου σου κατεφαγεν με
¹⁸ απεκριθησαν ουν οι ιουδαιοι και ειπον αυτω τι σημειον δεικνυεις ημιν οτι ταυτα ποιεις
¹⁹ απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτοις λυσατε τον ναον τουτον και εν τρισιν ημεραις εγερω αυτον
²⁰ ειπον ουν οι ιουδαιοι τεσσαρακοντα και εξ ετεσιν ωκοδομηθη ο ναος ουτος και συ εν τρισιν ημεραις εγερεις αυτον
²¹ εκεινος δε ελεγεν περι του ναου του σωματος αυτου
²² οτε ουν ηγερθη εκ νεκρων εμνησθησαν οι μαθηται αυτου οτι τουτο ελεγεν αυτοις και επιστευσαν τη γραφη και τω λογω ω ειπεν ο ιησους
²³ ως δε ην εν ιεροσολυμοις εν τω πασχα εν τη εορτη πολλοι επιστευσαν εις το ονομα αυτου θεωρουντες αυτου τα σημεια α εποιει

²⁴αυτος δε ο ιησους ουκ επιστευεν αυτον αυτοις δια το αυτον γινωσκειν παντας

²⁵και οτι ου χρειαν ειχεν ινα τις μαρτυρηση περι του ανθρωπου αυτος γαρ εγινωσκεν τι ην εν τω ανθρωπω

Chapter 3

- ¹ην δε ανθρωπος εκ των φαρισαιων νικοδημος ονομα αυτω αρχων των ιουδαιων
²ουτος ηλθεν προς τον ιησουν νυκτος και ειπεν αυτω ραββι οιδαμεν οτι απο θεου εληλυθας διδασκαλος ουδεις γαρ ταυτα τα σημεια δυναται ποιειν α συ ποιεις εαν μη η ο θεος μετ αυτου
³απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτω αμην αμην λεγω σοι εαν μη τις γεννηθη ανωθεν ου δυναται ιδειν την βασιλειαν του θεου
⁴λεγει προς αυτον ο νικοδημος πως δυναται ανθρωπος γεννηθηναι γερων ων μη δυναται εις την κοιλιαν της μητρος αυτου δευτερον εισελθειν και γεννηθηναι
⁵απεκριθη ο ιησους αμην αμην λεγω σοι εαν μη τις γεννηθη εξ υδατος και πνευματος ου δυναται εισελθειν εις την βασιλειαν του θεου
⁶το γεγεννημενον εκ της σαρκος σαρξ εστιν και το γεγεννημενον εκ του πνευματος πνευμα εστιν
⁷μη θαυμασης οτι ειπον σοι δει υμας γεννηθηναι ανωθεν
⁸το πνευμα οπου θελει πνει και την φωνην αυτου ακουεις αλλ ουκ οιδας ποθεν ερχεται και που υπαγει ουτως εστιν πας ο γεγεννημενος εκ του πνευματος
⁹απεκριθη νικοδημος και ειπεν αυτω πως δυναται ταυτα γενεσθαι
¹⁰απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτω συ ει ο διδασκαλος του ισραηλ και ταυτα ου γινωσκεις
¹¹αμην αμην λεγω σοι οτι ο οιδαμεν λαλουμεν και ο εωρακαμεν μαρτυρουμεν και την μαρτυριαν ημων ου λαμβανετε
¹²ει τα επιγεια ειπον υμιν και ου πιστευετε πως εαν ειπω υμιν τα επουρανια πιστευσετε
¹³και ουδεις αναβεβηκεν εις τον ουρανον ει μη ο εκ του ουρανου καταβας ο υιος του ανθρωπου ο ων εν τω ουρανω
¹⁴και καθως μωσης υψωσεν τον οφιν εν τη ερημω ουτως υψωθηναι δει τον υιον του ανθρωπου
¹⁵ινα πας ο πιστευων εις αυτον μη αποληται αλλ εχη ζωην αιωνιον
¹⁶ουτως γαρ ηγαπησεν ο θεος τον κοσμον ωστε τον υιον αυτου τον μονογενη εδωκεν ινα πας ο πιστευων εις αυτον μη αποληται αλλ εχη ζων αιωνιον
¹⁷ου γαρ απεστειλεν ο θεος τον υιον αυτου εις τον κοσμον ινα κρινη τον κοσμον αλλ ινα σωθη ο κοσμος δι αυτου
¹⁸ο πιστευων εις αυτον ου κρινεται ο δε μη πιστευων ηδη κεκριται οτι μη πεπιστευκεν εις το ονομα του μονογενους υιου του θεου
¹⁹αυτη δε εστιν η κρισις οτι το φως εληλυθεν εις τον κοσμον και ηγαπησαν οι ανθρωποι μαλλον το σκοτος η το φως ην γαρ πονηρα αυτων τα εργα
²⁰πας γαρ ο φαυλα πρασσων μισει το φως και ουκ ερχεται προς το φως ινα μη ελεγχθη τα εργα αυτου
²¹ο δε ποιων την αληθειαν ερχεται προς το φως ινα φανερωθη αυτου τα εργα οτι εν θεω εστιν ειργασμενα

²²μετα ταυτα ηλθεν ο ιησους και οι μαθηται αυτου εις την ιουδαιαν γην και εκει διετριβεν μετ αυτων και εβαπτιζεν
²³ην δε και ιωαννης βαπτιζων εν αιωνων εγγυς του σαλειμ οτι υδατα πολλα ην εκει και παρεγινοντο και εβαπτιζοντο
²⁴ουπω γαρ ην βεβλημενος εις την φυλακην ο ιωαννης
²⁵εγενετο ουν ζητησις εκ των μαθητων ιωαννου μετα ιουδαιων περι καθαρισμου
²⁶και ηλθον προς τον ιωαννην και ειπον αυτω ραββι ος ην μετα σου περαν του ιορδανου ω συ μεμαρτυρηκας ιδε ουτος βαπτιζει και παντες ερχονται προς αυτον
²⁷απεκριθη ιωαννης και ειπεν ου δυναται ανθρωπος λαμβανειν ουδεν εαν μη η δεδομενον αυτω εκ του ουρανου
²⁸αυτοι υμεις μοι μαρτυρειτε οτι ειπον ουκ ειμι εγω ο χριστος αλλ οτι απεσταλμενος ειμι εμπροσθεν εκεινου
²⁹ο εχων την νυμφην νυμφιος εστιν ο δε φιλος του νυμφιου ο εστηκως και ακουων αυτου χαρα χαιρει δια την φωνην του νυμφιου αυτη ουν η χαρα η εμη πεπληρωται
³⁰εκεινον δει αυξανειν εμε δε ελαττουσθαι
³¹ο ανωθεν ερχομενος επανω παντων εστιν ο ων εκ της γης εκ της γης εστιν και εκ της γης λαλει ο εκ του ουρανου ερχομενος επανω παντων εστιν
³²και ο εωρακεν και ηκουσεν τουτο μαρτυρει και την μαρτυριαν αυτου ουδεις λαμβανει
³³ο λαβων αυτου την μαρτυριαν εσφραγισεν οτι ο θεος αληθης εστιν
³⁴ον γαρ απεστειλεν ο θεος τα ρηματα του θεου λαλει ου γαρ εκ μετρου διδωσιν ο θεος το πνευμα
³⁵ο πατηρ αγαπα τον υιον και παντα δεδωκεν εν τη χειρι αυτου
³⁶ο πιστευων εις τον υιον εχει ζωην αιωνιον ο δε απειθων τω υιω ουκ οψεται ζωην αλλ η οργη του θεου μενει επ αυτον

Chapter 4

¹ως ουν εγνω ο κυριος οτι ηκουσαν οι φαρισαιοι οτι ιησους πλειονας μαθητας ποιει και βαπτιζει η ιωαννης
²και τοιγε ιησους αυτος ουκ εβαπτιζεν αλλ οι μαθηται αυτου
³αφηκεν την ιουδαιαν και απηλθεν παλιν εις την γαλιλαιαν
⁴εδει δε αυτον διερχεσθαι δια της σαμαρειας
⁵ερχεται ουν εις πολιν της σαμαρειας λεγομενην συχαρ πλησιον του χωριου ο εδωκεν ιακωβ ιωσηφ τω υιω αυτου
⁶ην δε εκει πηγη του ιακωβ ο ουν ιησους κεκοπιακως εκ της οδοιποριας εκαθεζετο ουτως επι τη πηγη ωρα ην ωσει εκτη
⁷ερχεται γυνη εκ της σαμαρειας αντλησαι υδωρ λεγει αυτη ο ιησους δος μοι πιειν
⁸οι γαρ μαθηται αυτου απεληλυθεισαν εις την πολιν ινα τροφας αγορασωσιν
⁹λεγει ουν αυτω η γυνη η σαμαρειτις πως συ ιουδαιος ων παρ εμου πιειν αιτεις ουσης γυναικος σαμαρειτιδος ου γαρ συγχρωνται ιουδαιοι σαμαρειταις
¹⁰απεκριθη ιησους και ειπεν αυτη ει ηδεις την δωρεαν του θεου και τις εστιν ο λεγων σοι δος μοι πιειν συ αν ητησας αυτον και εδωκεν αν σοι υδωρ ζων
¹¹λεγει αυτω η γυνη κυριε ουτε αντλημα εχεις και το φρεαρ εστιν βαθυ ποθεν ουν εχεις το υδωρ το ζων
¹²μη συ μειζων ει του πατρος ημων ιακωβ ος εδωκεν ημιν το φρεαρ και αυτος εξ αυτου επιεν και οι υιοι αυτου και τα θρεμματα αυτου
¹³απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτη πας ο πινων εκ του υδατος τουτου διψησει παλιν
¹⁴ος δ αν πιη εκ του υδατος ου εγω δωσω αυτω ου μη διψηση εις τον αιωνα αλλα το υδωρ ο δωσω αυτω γενησεται εν αυτω πηγη υδατος αλλομενου εις ζωην αιωνιον
¹⁵λεγει προς αυτον η γυνη κυριε δος μοι τουτο το υδωρ ινα μη διψω μηδε ερχωμαι ενθαδε αντλειν
¹⁶λεγει αυτη ο ιησους υπαγε φωνησον τον ανδρα σου και ελθε ενθαδε
¹⁷απεκριθη η γυνη και ειπεν ουκ εχω ανδρα λεγει αυτη ο ιησους καλως ειπας οτι ανδρα ουκ εχω
¹⁸πεντε γαρ ανδρας εσχες και νυν ον εχεις ουκ εστιν σου ανηρ τουτο αληθες ειρηκας
¹⁹λεγει αυτω η γυνη κυριε θεωρω οτι προφητης ει συ
²⁰οι πατερες ημων εν τουτω τω ορει προσεκυνησαν και υμεις λεγετε οτι εν ιεροσολυμοις εστιν ο τοπος οπου δει προσκυνειν
²¹λεγει αυτη ο ιησους γυναι πιστευσον μοι οτι ερχεται ωρα οτε ουτε εν τω ορει τουτω ουτε εν ιεροσολυμοις προσκυνησετε τω πατρι
²²υμεις προσκυνειτε ο ουκ οιδατε ημεις προσκυνουμεν ο οίδαμεν οτι η σωτηρια εκ των ιουδαιων εστιν
²³αλλ ερχεται ωρα και νυν εστιν οτε οι αληθινοι προσκυνηται προσκυνησουσιν τω πατρι εν πνευματι και αληθεια και γαρ ο πατηρ τοιουτους ζητει τους προσκυνουντας αυτον

²⁴ πνευμα ο θεος και τους προσκυνουντας αυτον εν πνευματι και αληθεια δει προσκυνειν
²⁵ λεγει αυτω η γυνη οιδα οτι μεσσιας ερχεται ο λεγομενος χριστος οταν ελθη εκεινος
αναγγελει ημιν παντα
²⁶ λεγει αυτη ο ιησους εγω ειμι ο λαλων σοι
²⁷ και επι τουτω ηλθον οι μαθηται αυτου και εθαυμασαν οτι μετα γυναικος ελαλει ουδεις
μεντοι ειπεν τι ζητεις η τι λαλεις μετ αυτης
²⁸ αφηκεν ουν την υδριαν αυτης η γυνη και απηλθεν εις την πολιν και λεγει τοις ανθρωποις
²⁹ δευτε ιδετε ανθρωπον ος ειπεν μοι παντα οσα εποιησα μητι ουτος εστιν ο χριστος
³⁰ εξηλθον ουν εκ της πολεως και ηρχοντο προς αυτον
³¹ εν δε τω μεταξυ ηρωτων αυτον οι μαθηται λεγοντες ραββι φαγε
³² ο δε ειπεν αυτοις εγω βρωσιν εχω φαγειν ην υμεις ουκ οιδατε
³³ ελεγον ουν οι μαθηται προς αλληλους μη τις ηνεγκεν αυτω φαγειν
³⁴ λεγει αυτοις ο ιησους εμον βρωμα εστιν ινα ποιω το θελημα του πεμψαντος με και
τελειωσω αυτου το εργον
³⁵ ουχ υμεις λεγετε οτι ετι τετραμηνον εστιν και ο θερισμος ερχεται ιδου λεγω υμιν επαρατε
τους οφθαλμους υμων και θεασασθε τας χωρας οτι λευκαι εισιν προς θερισμον ηδη
³⁶ και ο θεριζων μισθον λαμβανει και συναγει καρπον εις ζωην αιωνιον ινα και ο σπειρων
ομου χαιρη και ο θεριζων
³⁷ εν γαρ τουτω ο λογος εστιν αληθινος οτι αλλος εστιν ο σπειρων και αλλος ο θεριζων
³⁸ εγω απεστειλα υμας θεριζειν ο ουχ υμεις κεκοπιακατε αλλοι κεκοπιακασιν και υμεις εις
τον κοπον αυτων εισεληλυθατε
³⁹ εκ δε της πολεως εκεινης πολλοι επιστευσαν εις αυτον των σαμαρειτων δια τον λογον
της γυναικος μαρτυρουσης οτι ειπεν μοι παντα οσα εποιησα
⁴⁰ ως ουν ηλθον προς αυτον οι σαμαρειται ηρωτων αυτον μιναι παρ αυτοις και εμεινεν
εκει δυο ημερας
⁴¹ και πολλω πλειους επιστευσαν δια τον λογον αυτου
⁴² τη τε γυναικι ελεγον οτι ουκετι δια την σην λαλιαν πιστευομεν αυτοι γαρ ακηκοαμεν
και οιδαμεν οτι ουτος εστιν αληθως ο σωτηρ του κοσμου ο χριστος
⁴³ μετα δε τας δυο ημερας εξηλθεν εκειθεν και απηλθεν εις την γαλιλαιαν
⁴⁴ αυτος γαρ ο ιησους εμαρτυρησεν οτι προφητης εν τη ιδια πατριδι τιμην ουκ εχει
⁴⁵ οτε ουν ηλθεν εις την γαλιλαιαν εδεξαντο αυτον οι γαλιλαιοι παντα εωρακοτες α
εποιησεν εν ιεροσολυμοις εν τη εορτη και αυτοι γαρ ηλθον εις την εορτην
⁴⁶ ηλθεν ουν ο ιησους παλιν εις την κανα της γαλιλαιας οπου εποιησεν το υδωρ οινον και
ην τις βασιλικος ου ο υιος ησθενει εν καπερναουμ
⁴⁷ ουτος ακουσας οτι ιησους ηκει εκ της ιουδαιας εις την γαλιλαιαν απηλθεν προς αυτον
και ηρωτα αυτον ινα καταβη και ιασηται αυτου τον υιον ημελλεν γαρ αποθνησκειν
⁴⁸ ειπεν ουν ο ιησους προς αυτον εαν μη σημεια και τερατα ιδητε ου μη πιστευσητε

⁴⁹λεγει προς αυτον ο βασιλικος κυριε καταβηθι πριν αποθανειν το παιδιον μου

⁵⁰λεγει αυτω ο ιησους πορευου ο υιος σου ζη και επιστευσεν ο ανθρωπος τω λογω ω ειπεν αυτω ιησους και επορευετο

⁵¹ηδη δε αυτου καταβαινοντος οι δουλοι αυτου απηνητησαν αυτω και απηγγειλαν λεγοντες οτι ο παις σου ζη

⁵²επυθετο ουν παρ αυτων την ωραν εν η κομψοτερον εσχεν και ειπον αυτω οτι χθες ωραν εβδομην αφηκεν αυτον ο πυρετος

⁵³εγνω ουν ο πατηρ οτι εν εκεινη τη ωρα εν η ειπεν αυτω ο ιησους οτι ο υιος σου ζη και επιστευσεν αυτος και η οικια αυτου ολη

⁵⁴τουτο παλιν δευτερον σημειον εποιησεν ο ιησους ελθων εκ της ιουδαιας εις την γαλιλαιαν

Chapter 5

- ¹μετα ταυτα ην εορτη των ιουδαιων και ανεβη ο ιησους εις ιεροσολυμα
- ²εστιν δε εν τοις ιεροσολυμοις επι τη προβατικη κολυμβηθρα η επιλεγομενη εβραιστι βηθεσδα πεντε στοας εχουσα
- ³εν ταυταις κατεκειτο πληθος πολυ των ασθενουντων τυφλων χωλων ξηρων εκδεχομενων την του υδατος κινησιν
- ⁴αγγελος γαρ κατα καιρον κατεβαινεν εν τη κολυμβηθρα και εταρασσεν το υδωρ ο ουν πρωτος εμβας μετα την ταραχην του υδατος υγιης εγινετο ω δηποτε κατειχετο νοσηματι
- ⁵ην δε τις ανθρωπος εκει τριακοντα και οκτω ετη εχων εν τη ασθενεια
- ⁶τουτον ιδων ο ιησους κατακειμενον και γνους οτι πολυν ηδη χρονον εχει λεγει αυτω θελεις υγιης γενεσθαι
- ⁷απεκριθη αυτω ο ασθενων κυριε ανθρωπον ουκ εχω ινα οταν ταραχθη το υδωρ βαλλη με εις την κολυμβηθραν εν ω δε ερχομαι εγω αλλος προ εμου καταβαινει
- ⁸λεγει αυτω ο ιησους εγειραι αρον τον κραββατον σου και περιπατει
- ⁹και ευθεως εγενετο υγιης ο ανθρωπος και ηρεν τον κραββατον αυτου και περιεπατει ην δε σαββατον εν εκεινη τη ημερα
- ¹⁰ελεγον ουν οι ιουδαιοι τω τεθεραπευμενω σαββατον εστιν ουκ εξεστιν σοι αραι τον κραββατον
- ¹¹απεκριθη αυτοις ο ποιησας με υγιη εκεινος μοι ειπεν αρον τον κραββατον σου και περιπατει
- ¹²ηρωτησαν ουν αυτον τις εστιν ο ανθρωπος ο ειπων σοι αρον τον κραββατον σου και περιπατει
- ¹³ο δε ιαθεις ουκ ηδει τις εστιν ο γαρ ιησους εξενευσεν οχλου οντος εν τω τοπω
- ¹⁴μετα ταυτα ευρισκει αυτον ο ιησους εν τω ιερω και ειπεν αυτω ιδε υγιης γεγονας μηκετι αμαρτανε ινα μη χειρον τι σοι γενηται
- ¹⁵απηλθεν ο ανθρωπος και ανηγγειλεν τοις ιουδαιοις οτι ιησους εστιν ο ποιησας αυτον υγιη
- ¹⁶και δια τουτο εδιωκον τον ιησουν οι ιουδαιοι και εζητουν αυτον αποκτειναι οτι ταυτα εποιει εν σαββατω
- ¹⁷ο δε ιησους απεκρινατο αυτοις ο πατηρ μου εως αρτι εργαζεται καγω εργαζομαι
- ¹⁸δια τουτο ουν μαλλον εζητουν αυτον οι ιουδαιοι αποκτειναι οτι ου μονον ελυεν το σαββατον αλλα και πατερα ιδιον ελεγεν τον θεον ισον εαυτον ποιων τω θεω
- ¹⁹απεκρινατο ουν ο ιησους και ειπεν αυτοις αμην αμην λεγω υμιν ου δυναται ο υιος ποιειν αφ εαυτου ουδεν εαν μη τι βλεπη τον πατερα ποιουντα α γαρ αν εκεινος ποιη ταυτα και ο υιος ομοιως ποιει
- ²⁰ο γαρ πατηρ φιλει τον υιον και παντα δεικνυσιν αυτω α αυτος ποιει και μειζονα τουτων δειξει αυτω εργα ινα υμεις θαυμαζητε
- ²¹ωσπερ γαρ ο πατηρ εγειρει τους νεκρους και ζωοποιει ουτως και ο υιος ους θελει ζωοποιει

²² ουδε γαρ ο πατηρ κρινει ουδενα αλλα την κρισιν πασαν δεδωκεν τω υιω
²³ ινα παντες τιμωσιν τον υιον καθως τιμωσιν τον πατερα ο μη τιμων τον υιον ου τιμα τον πατερα τον πεμψαντα αυτον
²⁴ αμην αμην λεγω υμιν οτι ο τον λογον μου ακουων και πιστευων τω πεμψαντι με εχει ζωην αιωνιον και εις κρισιν ουκ ερχεται αλλα μεταβεβηκεν εκ του θανατου εις την ζωην
²⁵ αμην αμην λεγω υμιν οτι ερχεται ωρα και νυν εστιν οτε οι νεκροι ακουσονται της φωνης του υιου του θεου και οι ακουσαντες ζησονται
²⁶ ωσπερ γαρ ο πατηρ εχει ζωην εν εαυτω ουτως εδωκεν και τω υιω ζωην εχειν εν εαυτω
²⁷ και εξουσιαν εδωκεν αυτω και κρισιν ποιειν οτι υιος ανθρωπου εστιν
²⁸ μη θαυμαζετε τουτο οτι ερχεται ωρα εν η παντες οι εν τοις μνημειοις ακουσονται της φωνης αυτου
²⁹ και εκπορευσονται οι τα αγαθα ποιησαντες εις αναστασιν ζωης οι δε τα φαυλα πραξαντες εις αναστασιν κρισεως
³⁰ ου δυναμαι εγω ποιειν απ εμαυτου ουδεν καθως ακουω κρινω και η κρισις η εμη δικαια εστιν οτι ου ζητω το θελημα το εμον αλλα το θελημα του πεμψαντος με πατρος
³¹ εαν εγω μαρτυρω περι εμαυτου η μαρτυρια μου ουκ εστιν αληθης
³² αλλος εστιν ο μαρτυρων περι εμου και οιδα οτι αληθης εστιν η μαρτυρια ην μαρτυρει περι εμου
³³ υμεις απεσταλκατε προς ιωαννην και μεμαρτυρηκεν τη αληθεια
³⁴ εγω δε ου παρα ανθρωπου την μαρτυριαν λαμβανω αλλα ταυτα λεγω ινα υμεις σωθητε
³⁵ εκεινος ην ο λυχνος ο καιομενος και φαινων υμεις δε ηθελησατε αγαλλιασθηναι προς ωραν εν τω φωτι αυτου
³⁶ εγω δε εχω την μαρτυριαν μειζω του ιωαννου τα γαρ εργα α εδωκεν μοι ο πατηρ ινα τελειωσω αυτα αυτα τα εργα α εγω ποιω μαρτυρει περι εμου οτι ο πατηρ με απεσταλκεν
³⁷ και ο πεμψας με πατηρ αυτος μεμαρτυρηκεν περι εμου ουτε φωνην αυτου ακηκοατε πωποτε ουτε ειδος αυτου εωρακατε
³⁸ και τον λογον αυτου ουκ εχετε μενοντα εν υμιν οτι ον απεστειλεν εκεινος τουτω υμεις ου πιστευετε
³⁹ ερευνατε τας γραφας οτι υμεις δοκειτε εν αυταις ζωην αιωνιον εχειν και εκειναι εισιν αι μαρτυρουσαι περι εμου
⁴⁰ και ου θελετε ελθειν προς με ινα ζωην εχητε
⁴¹ δοξαν παρα ανθρωπων ου λαμβανω
⁴² αλλ εγνωκα υμας οτι την αγαπην του θεου ουκ εχετε εν εαυτοις
⁴³ εγω εληλυθα εν τω ονοματι του πατρος μου και ου λαμβανετε με εαν αλλος ελθη εν τω ονοματι τω ιδιω εκεινον ληψεσθε
⁴⁴ πως δυνασθε υμεις πιστευσαι δοξαν παρα αλληλων λαμβανοντες και την δοξαν την παρα του μονου θεου ου ζητειτε

⁴⁵μη δοκειτε οτι εγω κατηγορησω υμων προς τον πατερα εστιν ο κατηγορων υμων μωσης
εις ον υμεις ηλπικατε

⁴⁶ει γαρ επιστευετε μωση επιστευετε αν εμοι περι γαρ εμου εκεινος εγραψεν

⁴⁷ει δε τοις εκεινου γραμμασιν ου πιστευετε πως τοις εμοις ρημασιν πιστευσετε

Chapter 6

¹μετα ταυτα απηλθεν ο ιησους περαν της θαλασσης της γαλιλαιας της τιβεριαδος
²και ηκολουθει αυτω οχλος πολυς οτι εωρων αυτου τα σημεια α εποiei επι των ασθενουντων
³αηλθεν δε εις το ορος ο ιησους και εκει εκαθητο μετα των μαθητων αυτου
⁴ην δε εγγυς το πασχα η εορτη των ιουδαιων
⁵επαρας ουν ο ιησους τους οφθαλμους και θεασαμενος οτι πολυς οχλος ερχεται προς αυτον λεγει προς τον φιλιππον ποθεν αγορασομεν αρτους ινα φαγωσιν ουτοι
⁶τουτο δε ελεγεν πειραζων αυτον αυτος γαρ ηδει τι εμελλεν ποιειν
⁷απεκριθη αυτω φιλιππος διακοσιων δηναριων αρτοι ουκ αρκουσιν αυτοις ινα εκαστος αυτων βραχυ τι λαβη
⁸λεγει αυτω εις εκ των μαθητων αυτου ανδρας ο αδελφος σιμωνος πετρου
⁹εστιν παιδαριον εν ωδε ο εχει πεντε αρτους κριθινους και δυο οψαρια αλλα ταυτα τι εστιν εις τοσουτους
¹⁰ειπεν δε ο ιησους ποιησατε τους ανθρωπους αναπεσειν ην δε χορτος πολυς εν τω τοπω ανεπεσον ουν οι ανδρες τον αριθμον ωσει πεντακιςχιλιοι
¹¹ελαβεν δε τους αρτους ο ιησους και ευχαριστησας διεδωκεν τοις μαθηταις οι δε μαθηται τοις ανακειμενοις ομοιως και εκ των οψαριων οσον ηθελον
¹²ως δε ενεπληθησαν λεγει τοις μαθηταις αυτου συναγαγετε τα περισσευσαντα κλασματα ινα μη τι αποληται
¹³συνηγαγον ουν και εγεμισαν δωδεκα κοφινους κλασματων εκ των πεντε αρτων των κριθινων α επερισσευσεν τοις βεβρωκοσιν
¹⁴οι ουν ανθρωποι ιδοντες ο εποιησεν σημειον ο ιησους ελεγον οτι ουτος εστιν αληθως ο προφητης ο ερχομενος εις τον κοσμον
¹⁵ιησους ουν γνους οτι μελλουσιν ερχεσθαι και αρπαζειν αυτον ινα ποιησωσιν αυτον βασιλεα ανεχωρησεν παλιν εις το ορος αυτος μονος
¹⁶ως δε οψια εγενετο κατεβησαν οι μαθηται αυτου επι την θαλασσαν
¹⁷και εμβαντες εις το πλοιον ηρχοντο περαν της θαλασσης εις καπερναουμ και σκοτια ηδη εγεγονει και ουκ εληλυθει προς αυτους ο ιησους
¹⁸η τε θαλασσα ανεμου μεγαλου πνεοντος διηγειρετο
¹⁹εληλακοτες ουν ως σταδιους εικοσιπεντε η τριακοντα θεωρουσιν τον ιησουν περιπατουντα επι της θαλασσης και εγγυς του πλοιου γινομενον και εφοβηθησαν
²⁰ο δε λεγει αυτοις εγω ειμι μη φοβεισθε
²¹ηθελον ουν λαβειν αυτον εις το πλοιον και ευθεως το πλοιον εγενετο επι της γης εις ην υπηγον
²²τη επαυριον ο οχλος ο εστηκως περαν της θαλασσης ιδων οτι πλοιαριον αλλο ουκ ην εκει ει μη εν εκεινο εις ο ενεβησαν οι μαθηται αυτου και οτι ου συνεισηλθεν τοις μαθηταις αυτου ο ιησους εις το πλοιαριον αλλα μονοι οι μαθηται αυτου απηλθον

²³ αλλά δε ηλθεν πλοιαρια εκ τιβεριαδος εγγυς του τοπου οπου εφαγον τον αρτον ευχαριστησαντος του κυριου
²⁴ οτε ουν ειδεν ο οχλος οτι ιησους ουκ εστιν εκει ουδε οι μαθηται αυτου ενεβησαν και αυτοι εις τα πλοια και ηλθον εις καπερναουμ ζητουντες τον ιησουν
²⁵ και ευροντες αυτον περαν της θαλασσης ειπον αυτω ραββι ποτε ωδε γεγονας
²⁶ απεκριθη αυτοις ο ιησους και ειπεν αμην αμην λεγω υμιν ζητειτε με ουχ οτι ειδετε σημεια αλλ οτι εφαγετε εκ των αρτων και εχορτασθητε
²⁷ εργαζεσθε μη την βρωσιν την απολλυμενην αλλα την βρωσιν την μενουσαν εις ζωην αιωνιον ην ο υιος του ανθρωπου υμιν δωσει τουτον γαρ ο πατηρ εσφραγισεν ο θεος
²⁸ ειπον ουν προς αυτον τι ποιωμεν ινα εργαζωμεθα τα εργα του θεου
²⁹ απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτοις τουτο εστιν το εργον του θεου ινα πιστευσητε εις ον απεστειλεν εκεινος
³⁰ ειπον ουν αυτω τι ουν ποιεις συ σημειον ινα ιδωμεν και πιστευσωμεν σοι τι εργαζη
³¹ οι πατερες ημων το μαννα εφαγον εν τη ερημω καθως εστιν γεγραμμενον αρτον εκ του ουρανου εδωκεν αυτοις φαγειν
³² ειπεν ουν αυτοις ο ιησους αμην αμην λεγω υμιν ου μωσης δεδωκεν υμιν τον αρτον εκ του ουρανου αλλ ο πατηρ μου διδωσιν υμιν τον αρτον εκ του ουρανου τον αληθινον
³³ ο γαρ αρτος του θεου εστιν ο καταβαινων εκ του ουρανου και ζωην διδους τω κοσμω
³⁴ ειπον ουν προς αυτον κυριε παντοτε δος ημιν τον αρτον τουτον
³⁵ ειπεν δε αυτοις ο ιησους εγω ειμι ο αρτος της ζωης ο ερχομενος προς με ου μη πειναση και ο πιστευων εις εμε ου μη διψηση πωποτε
³⁶ αλλ ειπον υμιν οτι και εωρακατε με και ου πιστευετε
³⁷ παν ο διδωσιν μοι ο πατηρ προς εμε ηξει και τον ερχομενον προς με ου μη εκβαλω εξω
³⁸ οτι καταβεβηκα εκ του ουρανου ουχ ινα ποιω το θελημα το εμον αλλα το θελημα του πεμψαντος με
³⁹ τουτο δε εστιν το θελημα του πεμψαντος με πατρος ινα παν ο δεδωκεν μοι μη απολεσω εξ αυτου αλλα αναστησω αυτο εν τη εσχατη ημερα
⁴⁰ τουτο δε εστιν το θελημα του πεμψαντος με ινα πας ο θεωρων τον υιον και πιστευων εις αυτον εχη ζωην αιωνιον και αναστησω αυτον εγω τη εσχατη ημερα
⁴¹ εγογγυζον ουν οι ιουδαιοι περι αυτου οτι ειπεν εγω ειμι ο αρτος ο καταβας εκ του ουρανου
⁴² και ελεγον ουχ ουτος εστιν ιησους ο υιος ιωσηφ ου ημεις οίδαμεν τον πατερα και την μητερα πως ουν λεγει ουτος οτι εκ του ουρανου καταβεβηκα
⁴³ απεκριθη ουν ο ιησους και ειπεν αυτοις μη γογγυζετε μετ αλληλων
⁴⁴ ουδεις δυναται ελθειν προς με εαν μη ο πατηρ ο πεμψας με ελκυση αυτον και εγω αναστησω αυτον τη εσχατη ημερα
⁴⁵ εστιν γεγραμμενον εν τοις προφηταις και εσονται παντες διδακτοι του θεου πας ουν ο ακουσας παρα του πατρος και μαθων ερχεται προς με

⁴⁶ ουχ οτι τον πατερα τις εωρακεν ει μη ο ων παρα του θεου ουτος εωρακεν τον πατερα
⁴⁷ αμην αμην λεγω υμιν ο πιστευων εις εμε εχει ζωην αιωνιον
⁴⁸ εγω ειμι ο αρτος της ζωης
⁴⁹ οι πατερες υμων εφαγον το μαννα εν τη ερημω και απεθανον
⁵⁰ ουτος εστιν ο αρτος ο εκ του ουρανου καταβαινων ινα τις εξ αυτου φαγη και μη αποθανη
⁵¹ εγω ειμι ο αρτος ο ζων ο εκ του ουρανου καταβας εαν τις φαγη εκ τουτου του αρτου
ζησεται εις τον αιωνα και ο αρτος δε ον εγω δωσω η σαρξ μου εστιν ην εγω δωσω υπερ
της του κοσμου ζωης
⁵² εμαχοντο ουν προς αλληλους οι ιουδαιοι λεγοντες πως δυναται ουτος ημιν δουναι την
σαρκα φαγειν
⁵³ ειπεν ουν αυτοις ο ιησους αμην αμην λεγω υμιν εαν μη φαγητε την σαρκα του υιου του
ανθρωπου και πιητε αυτου το αιμα ουκ εχετε ζωην εν εαυτοις
⁵⁴ ο τρωγων μου την σαρκα και πινων μου το αιμα εχει ζωην αιωνιον και εγω αναστησω
αυτον τη εσχατη ημερα
⁵⁵ η γαρ σαρξ μου αληθως εστιν βρωσις και το αιμα μου αληθως εστιν ποσις
⁵⁶ ο τρωγων μου την σαρκα και πινων μου το αιμα εν εμοι μενει καγω εν αυτω
⁵⁷ καθως απεστειλεν με ο ζων πατηρ καγω ζω δια τον πατερα και ο τρωγων με κακεινος
ζησεται δι εμε
⁵⁸ ουτος εστιν ο αρτος ο εκ του ουρανου καταβας ου καθως εφαγον οι πατερες υμων το
μαννα και απεθανον ο τρωγων τουτον τον αρτον ζησεται εις τον αιωνα
⁵⁹ ταυτα ειπεν εν συναγωγη διδασκων εν καπερναουμ
⁶⁰ πολλοι ουν ακουσαντες εκ των μαθητων αυτου ειπον σκληρος εστιν ουτος ο λογος τις
δυναται αυτου ακουειν
⁶¹ ειδως δε ο ιησους εν εαυτω οτι γογγυζουσιν περι τουτου οι μαθηται αυτου ειπεν αυτοις
τουτο υμας σκανδαλιζει
⁶² εαν ουν θεωρητε τον υιον του ανθρωπου αναβαινοντα οπου ην το προτερον
⁶³ το πνευμα εστιν το ζωοποιουν η σαρξ ουκ ωφελει ουδεν τα ρηματα α εγω λαλω υμιν
πνευμα εστιν και ζωη εστιν
⁶⁴ αλλ εισιν εξ υμων τινες οι ου πιστευουσιν ηδει γαρ εξ αρχης ο ιησους τινες εισιν οι μη
πιστευοντες και τις εστιν ο παραδωσων αυτον
⁶⁵ και ελεγεν δια τουτο ειρηκα υμιν οτι ουδεις δυναται ελθειν προς με εαν μη η δεδομενον
αυτω εκ του πατρος μου
⁶⁶ εκ τουτου πολλοι απηλθον των μαθητων αυτου εις τα οπισω και ουκετι μετ αυτου
περιεπατουν
⁶⁷ ειπεν ουν ο ιησους τοις δωδεκα μη και υμεις θελετε υπαγειν
⁶⁸ απεκριθη ουν αυτω σιμων πετρος κυριε προς τινα απελευσομεθα ρηματα ζωης αιωνιου
εχεις

⁶⁹ και ημεις πεπιστευκαμεν και εγνωκαμεν οτι συ ει ο χριστος ο υιος του θεου του ζωντος

⁷⁰ απεκριθη αυτοις ο ιησους ουκ εγω υμας τους δωδεκα εξελεξαμην και εξ υμων εις διαβολος
εστιν

⁷¹ ελεγεν δε τον ιουδαν σιμωνος ισκαριωτην ουτος γαρ ημελλεν αυτον παραδιδοναι εις
ων εκ των δωδεκα

Chapter 7

¹ και περιεπατει ο ιησους μετα ταυτα εν τη γαλιλαια ου γαρ ηθελεν εν τη ιουδαια περιπατειν οτι εζητουν αυτον οι ιουδαιοι αποκτειναι
² ην δε εγγυς η εορτη των ιουδαιων η σκηνοπηγια
³ ειπον ουν προς αυτον οι αδελφοι αυτου μεταβηθι εντευθεν και υπαγε εις την ιουδαιαν ινα και οι μαθηται σου θεωρησωσιν τα εργα σου α ποιεις
⁴ ουδεις γαρ εν κρυπτω τι ποιει και ζητει αυτος εν παρρησια ειναι ει ταυτα ποιεις φανερωσον σεαυτον τω κοσμω
⁵ ουδε γαρ οι αδελφοι αυτου επιστευον εις αυτον
⁶ λεγει ουν αυτοις ο ιησους ο καιρος ο εμος ουπω παρεστιν ο δε καιρος ο υμετερος παντοτε εστιν ετοιμος
⁷ ου δυναται ο κοσμος μισειν υμας εμε δε μισει οτι εγω μαρτυρω περι αυτου οτι τα εργα αυτου πονηρα εστιν
⁸ υμεις αναβητε εις την εορτην ταυτην εγω ουπω αναβαινω εις την εορτην ταυτην οτι ο καιρος ο εμος ουπω πεπληρωται
⁹ ταυτα δε ειπων αυτοις εμεινεν εν τη γαλιλαια
¹⁰ ως δε ανεβησαν οι αδελφοι αυτου τοτε και αυτος ανεβη εις την εορτην ου φανερωσ αλλ ως εν κρυπτω
¹¹ οι ουν ιουδαιοι εζητουν αυτον εν τη εορτη και ελεγον που εστιν εκεινος
¹² και γογγυσμος πολυς περι αυτου ην εν τοις οχλοις οι μεν ελεγον οτι αγαθος εστιν αλλοι δε ελεγον ου αλλα πλανα τον οχλον
¹³ ουδεις μεντοι παρρησια ελαλει περι αυτου δια τον φοβον των ιουδαιων
¹⁴ ηδη δε της εορτης μεσουσης ανεβη ο ιησους εις το ιερον και εδιδασκεν
¹⁵ και εθαυμαζον οι ιουδαιοι λεγοντες πως ουτος γραμματα οιδεν μη μεμαθηκως
¹⁶ απεκριθη αυτοις ο ιησους και ειπεν η εμη διδαχη ουκ εστιν εμη αλλα του πεμψαντος με
¹⁷ εαν τις θελη το θελημα αυτου ποιειν γνωσεται περι της διδαχης ποτερον εκ του θεου εστιν η εγω απ εμαυτου λαλω
¹⁸ ο αφ εαυτου λαλων την δοξαν την ιδιαν ζητει ο δε ζητων την δοξαν του πεμψαντος αυτον ουτος αληθης εστιν και αδικια εν αυτω ουκ εστιν
¹⁹ ου μωσης δεδωκεν υμιν τον νομον και ουδεις εξ υμων ποιει τον νομον τι με ζητειτε αποκτειναι
²⁰ απεκριθη ο οχλος και ειπεν δαιμονιον εχεις τις σε ζητει αποκτειναι
²¹ απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτοις εν εργον εποιησα και παντες θαυμαζετε
²² δια τουτο μωσης δεδωκεν υμιν την περιτομην ουχ οτι εκ του μωσεως εστιν αλλ εκ των πατερων και εν σαββατω περιτεμνετε ανθρωπον
²³ ει περιτομην λαμβανει ανθρωπος εν σαββατω ινα μη λυθη ο νομος μωσεως εμοι χολατε οτι ολον ανθρωπον υγιη εποιησα εν σαββατω

²⁴μη κρινετε κατ οψιν αλλα την δικαιαν κρισιν κρινατε
²⁵ελεγον ουν τινες εκ των ιεροσολυμιτων ουχ ουτος εστιν ον ζητουσιν αποκτειναι
²⁶και ιδε παρρησια λαλει και ουδεν αυτω λεγουσιν μηποτε αληθως εγνωσαν οι αρχοντες
 οτι ουτος εστιν αληθως ο χριστος
²⁷αλλα τουτον οιδαμεν ποθεν εστιν ο δε χριστος οταν ερχηται ουδεις γινωσκει ποθεν εστιν
²⁸εκραξεν ουν εν τω ιερω διδασκων ο ιησους και λεγων καμε οιδατε και οιδατε ποθεν ειμι
 και απ εμαυτου ουκ εληλυθα αλλ εστιν αληθινος ο πεμψας με ον υμεις ουκ οιδατε
²⁹εγω δε οιδα αυτον οτι παρ αυτου ειμι κακεινος με απεστειλεν
³⁰εζητουν ουν αυτον πιασαι και ουδεις επεβαλεν επ αυτον την χειρα οτι ουπω εληλυθει
 η ωρα αυτου
³¹πολλοι δε εκ του οχλου επιστευσαν εις αυτον και ελεγον οτι ο χριστος οταν ελθη μητι
 πλειονα σημεια τουτων ποιησει ων ουτος εποιησεν
³²ηκουσαν οι φαρισαιοι του οχλου γογγυζοντος περι αυτου ταυτα και απεστειλαν οι
 φαρισαιοι και οι αρχιερεις υπηρετας ινα πιασωσιν αυτον
³³ειπεν ουν αυτοις ο ιησους ετι μικρον χρονον μεθ υμων ειμι και υπαγω προς τον πεμψαντα
 με
³⁴ζητησετε με και ουχ ευρησετε και οπου ειμι εγω υμεις ου δυνασθε ελθειν
³⁵ειπον ουν οι ιουδαιοι προς εαυτους που ουτος μελλει πορευεσθαι οτι ημεις ουχ ευρησομεν
 αυτον μη εις την διασποραν των ελληνων μελλει πορευεσθαι και διδασκειν τους ελληνας
³⁶τις εστιν ουτος ο λογος ον ειπεν ζητησετε με και ουχ ευρησετε και οπου ειμι εγω υμεις
 ου δυνασθε ελθειν
³⁷εν δε τη εσχατη ημερα τη μεγαλη της εορτης ειστηκει ο ιησους και εκραξεν λεγων εαν
 τις διψα ερχεσθω προς με και πινετω
³⁸ο πιστευων εις εμε καθως ειπεν η γραφη ποταμοι εκ της κοιλιας αυτου ρευσουσιν υδατος
 ζωντος
³⁹τουτο δε ειπεν περι του πνευματος ου εμελλον λαμβανειν οι πιστευοντες εις αυτον ουπω
 γαρ ην πνευμα αγιον οτι ο ιησους ουδεπω εδοξασθη
⁴⁰πολλοι ουν εκ του οχλου ακουσαντες τον λογον ελεγον ουτος εστιν αληθως ο προφητης
⁴¹αλλοι ελεγον ουτος εστιν ο χριστος αλλοι δε ελεγον μη γαρ εκ της γαλιλαιας ο χριστος
 ερχεται
⁴²ουχι η γραφη ειπεν οτι εκ του σπερματος δαβιδ και απο βηθλεεμ της κωμης οπου ην
 δαβιδ ο χριστος ερχεται
⁴³σχισμα ουν εν τω οχλω εγενετο δι αυτον
⁴⁴τινες δε ηθελον εξ αυτων πιασαι αυτον αλλ ουδεις επεβαλεν επ αυτον τας χειρας
⁴⁵ηλθον ουν οι υπηρεται προς τους αρχιερεις και φαρισαιους και ειπον αυτοις εκεινοι διατι
 ουκ ηγαγετε αυτον
⁴⁶απεκριθησαν οι υπηρεται ουδεποτε ουτως ελαλησεν ανθρωπος ως ουτος ο ανθρωπος

- ⁴⁷ απεκριθησαν ουν αυτοις οι φαρισαιοι μη και υμεις πεπλανησθε
⁴⁸ μη τις εκ των αρχοντων επιστευσεν εις αυτον η εκ των φαρισαιων
⁴⁹ αλλ ο οχλος ουτος ο μη γινωσκων τον νομον επικαταρατοι εισιν
⁵⁰ λεγει νικοδημος προς αυτους ο ελθων νυκτος προς αυτον εις ων εξ αυτων
⁵¹ μη ο νομος ημων κρινει τον ανθρωπον εαν μη ακουση παρ αυτου προτερον και γνω τι
ποιει
⁵² απεκριθησαν και ειπον αυτω μη και συ εκ της γαλιλαιας ει ερευνησον και ιδε οτι προφητης
εκ της γαλιλαιας ουκ εγηγεραται
⁵³ και επορευθη εκαστος εις τον οικον αυτου

Chapter 8

- ¹ιησους δε επορευθη εις το ορος των ελαιων
²ορθρου δε παλιν παρεγενετο εις το ιερον και πας ο λαος ηρχετο προς αυτον και καθισας
εδιδασκεν αυτους
³αγουσιν δε οι γραμματεις και οι φαρισαιοι προς αυτον γυναικα εν μοιχεια κατειλημμενην
και στησαντες αυτην εν μεσω
⁴λεγουσιν αυτω διδασκαλε αυτη η γυνη κατειληφθη επαυτοφωρω μοιχευομενη
⁵εν δε τω νομω μωσης ημιν ενετειλατο τας τοιαυτας λιθοβολεισθαι συ ουν τι λεγεις
⁶τουτο δε ελεγον πειραζοντες αυτον ινα εχωσιν κατηγορειν αυτου ο δε ιησους κατω κυψας
τω δακτυλω εγραφεν εις την γην μη προσποιουμενος
⁷ως δε επεμενον ερωτωντες αυτον ανακυψας ειπεν προς αυτους ο αναμαρτητος υμων
πρωτος τον λιθον επ αυτη βαλετω
⁸και παλιν κατω κυψας εγραφεν εις την γην
⁹οι δε ακουσαντες και υπο της συνειδησεως ελεγχομενοι εξηρχοντο εις καθ εις αρξαμενοι
απο των πρεσβυτερων εως των εσχατων και κατελειφθη μονος ο ιησους και η γυνη εν
μεσω εστωσα
¹⁰ανακυψας δε ο ιησους και μηδεν θεασαμενος πλην της γυναικος ειπεν αυτη η γυνη που
εισιν εκεινοι οι κατηγοροι σου ουδεις σε κατεκρινεν
¹¹η δε ειπεν ουδεις κυριε ειπεν δε αυτη ο ιησους ουδε εγω σε κατακρινω πορευου και μηκετι
αμαρτανε
¹²παλιν ουν ο ιησους αυτοις ελαλησεν λεγων εγω ειμι το φως του κοσμου ο ακολουθων
εμοι ου μη περιπατησει εν τη σκοτια αλλ εξει το φως της ζωης
¹³ειπον ουν αυτω οι φαρισαιοι συ περι σεαυτου μαρτυρεις η μαρτυρια σου ουκ εστιν αληθης
¹⁴απεκριθη ιησους και ειπεν αυτοις καν εγω μαρτυρω περι εμαυτου αληθης εστιν η μαρτυρια
μου οτι οίδα ποθεν ηλθον και που υπαγω υμεις δε ουκ οιδατε ποθεν ερχομαι και που υπαγω
¹⁵υμεις κατα την σαρκα κρινετε εγω ου κρινω ουδενα
¹⁶και εαν κρινω δε εγω η κρισις η εμη αληθης εστιν οτι μονος ουκ ειμι αλλ εγω και ο
πεμψας με πατηρ
¹⁷και εν τω νομω δε τω υμετερω γεγραπται οτι δυο ανθρωπων η μαρτυρια αληθης εστιν
¹⁸εγω ειμι ο μαρτυρων περι εμαυτου και μαρτυρει περι εμου ο πεμψας με πατηρ
¹⁹ελεγον ουν αυτω που εστιν ο πατηρ σου απεκριθη ο ιησους ουτε εμε οιδατε ουτε τον
πατερα μου ει εμε ηδειτε και τον πατερα μου ηδειτε αν
²⁰ταυτα τα ρηματα ελαλησεν ο ιησους εν τω γαζοφυλακιω διδασκων εν τω ιερω και ουδεις
επιασεν αυτον οτι ουπω εληλυθει η ωρα αυτου
²¹ειπεν ουν παλιν αυτοις ο ιησους εγω υπαγω και ζητησετε με και εν τη αμαρτια υμων
αποθανεισθε οπου εγω υπαγω υμεις ου δυνασθε ελθειν
²²ελεγον ουν οι ιουδαιοι μητι αποκτενει εαυτον οτι λεγει οπου εγω υπαγω υμεις ου δυνασθε
ελθειν

²³ και ειπεν αυτοις υμεις εκ των κατω εστε εγω εκ των ανω ειμι υμεις εκ του κοσμου τουτου εστε εγω ουκ ειμι εκ του κοσμου τουτου
²⁴ ειπον ουν υμιν οτι αποθανεισθε εν ταις αμαρτιαις υμων εαν γαρ μη πιστευσητε οτι εγω ειμι αποθανεισθε εν ταις αμαρτιαις υμων
²⁵ ελεγον ουν αυτω συ τις ει και ειπεν αυτοις ο ιησους την αρχην ο τι και λαλω υμιν
²⁶ πολλα εχω περι υμων λαλειν και κρινειν αλλ ο πεμψας με αληθης εστιν καγω α ηκουσα παρ αυτου ταυτα λεγω εις τον κοσμον
²⁷ ουκ εγνωσαν οτι τον πατερα αυτοις ελεγεν
²⁸ ειπεν ουν αυτοις ο ιησους οταν υψωση τον υιον του ανθρωπου τοτε γνωσεσθε οτι εγω ειμι και απ εμαυτου ποιω ουδεν αλλα καθως εδιδαξεν με ο πατηρ μου ταυτα λαλω
²⁹ και ο πεμψας με μετ εμου εστιν ουκ αφηκεν με μονον ο πατηρ οτι εγω τα αρεστα αυτω ποιω παντοτε
³⁰ ταυτα αυτου λαλουντος πολλοι επιστευσαν εις αυτον
³¹ ελεγεν ουν ο ιησους προς τους πεπιστευκοτας αυτω ιουδαιους εαν υμεις μεινητε εν τω λογω τω εμω αληθως μαθηται μου εστε
³² και γνωσεσθε την αληθειαν και η αληθεια ελευθερωσει υμας
³³ απεκριθησαν αυτω σπερμα αβρααμ εσμεν και ουδενι δεδουλευκαμεν πωποτε πως συ λεγεις οτι ελευθεροι γενησεσθε
³⁴ απεκριθη αυτοις ο ιησους αμην αμην λεγω υμιν οτι πας ο ποιων την αμαρτιαν δουλος εστιν της αμαρτιας
³⁵ ο δε δουλος ου μενει εν τη οικια εις τον αιωνα ο υιος μενει εις τον αιωνα
³⁶ εαν ουν ο υιος υμας ελευθερωση οντως ελευθεροι εσεσθε
³⁷ οιδα οτι σπερμα αβρααμ εστε αλλα ζητειτε με αποκτειναι οτι ο λογος ο εμος ου χωρει εν υμιν
³⁸ εγω ο εωρακα παρα τω πατρι μου λαλω και υμεις ουν ο εωρακατε παρα τω πατρι υμων ποιειτε
³⁹ απεκριθησαν και ειπον αυτω ο πατηρ ημων αβρααμ εστιν λεγει αυτοις ο ιησους ει τεκνα του αβρααμ ητε τα εργα του αβρααμ εποιειτε αν
⁴⁰ νυν δε ζητειτε με αποκτειναι ανθρωπον ος την αληθειαν υμιν λελαληκα ην ηκουσα παρα του θεου τουτου αβρααμ ουκ εποιησεν
⁴¹ υμεις ποιειτε τα εργα του πατρος υμων ειπον ουν αυτω ημεις εκ πορνειας ου γεγεννημεθα ενα πατερα εχομεν τον θεον
⁴² ειπεν αυτοις ο ιησους ει ο θεος πατηρ υμων ην ηγαπατε αν εμε εγω γαρ εκ του θεου εξηλθον και ηκω ουδε γαρ απ εμαυτου εληλυθα αλλ εκεινος με απεστειλεν
⁴³ διατι την λαλιαν την εμην ου γινωσκετε οτι ου δυνασθε ακουειν τον λογον τον εμον
⁴⁴ υμεις εκ πατρος του διαβολου εστε και τας επιθυμιας του πατρος υμων θελετε ποιειν εκεινος ανθρωποκτονος ην απ αρχης και εν τη αληθεια ουχ εστηκεν οτι ουκ εστιν αληθεια εν αυτω οταν λαλη το ψευδος εκ των ιδιων λαλει οτι ψευστης εστιν και ο πατηρ αυτου

- ⁴⁵εγω δε οτι την αληθειαν λεγω ου πιστευετε μοι
⁴⁶τις εξ υμων ελεγει με περι αμαρτιας ει δε αληθειαν λεγω διατι υμεις ου πιστευετε μοι
⁴⁷ο ων εκ του θεου τα ρηματα του θεου ακουει δια τουτο υμεις ουκ ακουετε οτι εκ του θεου ουκ εστε
⁴⁸απεκριθησαν ουν οι ιουδαιοι και ειπον αυτω ου καλως λεγομεν ημεις οτι σαμαρειτης ει συ και δαιμονιον εχεις
⁴⁹απεκριθη ιησους εγω δαιμονιον ουκ εχω αλλα τιμω τον πατερα μου και υμεις ατιμαζετε με
⁵⁰εγω δε ου ζητω την δοξαν μου εστιν ο ζητων και κρινων
⁵¹αμην αμην λεγω υμιν εαν τις τον λογον τον εμον τηρηση θανατον ου μη θεωρηση εις τον αιωνα
⁵²ειπον ουν αυτω οι ιουδαιοι νυν εγνωκαμεν οτι δαιμονιον εχεις αβρααμ απεθανεν και οι προφηται και συ λεγεις εαν τις τον λογον μου τηρηση ου μη γευσεται θανατου εις τον αιωνα
⁵³μη συ μειζων ει του πατρος ημων αβρααμ οστις απεθανεν και οι προφηται απεθανον τινα σεαυτον συ ποιεις
⁵⁴απεκριθη ιησους εαν εγω δοξαζω εμαυτον η δοξα μου ουδεν εστιν εστιν ο πατηρ μου ο δοξαζων με ον υμεις λεγετε οτι θεος υμων εστιν
⁵⁵και ουκ εγνωκατε αυτον εγω δε οίδα αυτον και εαν ειπω οτι ουκ οίδα αυτον εσομαι ομοιος υμων ψευστης αλλ οίδα αυτον και τον λογον αυτου τηρω
⁵⁶αβρααμ ο πατηρ υμων ηγαλλιασατο ινα ιδη την ημεραν την εμην και ειδεν και εχαρη
⁵⁷ειπον ουν οι ιουδαιοι προς αυτον πενηκοντα ετη ουπω εχεις και αβρααμ εωρακας
⁵⁸ειπεν αυτοις ο ιησους αμην αμην λεγω υμιν πριν αβρααμ γενεσθαι εγω ειμι
⁵⁹ηραν ουν λιθους ινα βαλωσιν επ αυτον ιησους δε εκρυβη και εξηλθεν εκ του ιερου διελθων δια μεσου αυτων και παρηγεν ουτως

Chapter 9

- ¹ και παραγων ειδεν ανθρωπον τυφλον εκ γενετης
² και ηρωτησαν αυτον οι μαθηται αυτου λεγοντες ραββι τις ημαρτεν ουτος η οι γονεις αυτου ινα τυφλος γεννηθη
³ απεκριθη ο ιησους ουτε ουτος ημαρτεν ουτε οι γονεις αυτου αλλ ινα φανερωθη τα εργα του θεου εν αυτω
⁴ εμε δει εργαζεσθαι τα εργα του πεμψαντος με εως ημερα εστιν ερχεται νυξ οτε ουδεις δυναται εργαζεσθαι
⁵ οταν εν τω κοσμω ω φως ειμι του κοσμου
⁶ ταυτα ειπων επτυσεν χαμαι και εποιησεν πηλον εκ του πτυσματος και επεχρισεν τον πηλον επι τους οφθαλμους του τυφλου
⁷ και ειπεν αυτω υπαγε νιψαι εις την κολυμβηθραν του σιλωαμ ο ερμηνευεται απεσταλμενος απηλθεν ουν και ενιψατο και ηλθεν βλεπων
⁸ οι ουν γειτονες και οι θεωρουντες αυτον το προτερον οτι τυφλος ην ελεγον ουχ ουτος εστιν ο καθημενος και προσαιτων
⁹ αλλοι ελεγον οτι ουτος εστιν αλλοι δε οτι ομοιος αυτω εστιν εκεινος ελεγεν οτι εγω ειμι
¹⁰ ελεγον ουν αυτω πως ανεωχθησαν σου οι οφθαλμοι
¹¹ απεκριθη εκεινος και ειπεν ανθρωπος λεγομενος ιησους πηλον εποιησεν και επεχρισεν μου τους οφθαλμους και ειπεν μοι υπαγε εις την κολυμβηθραν του σιλωαμ και νιψαι απελθων δε και νιψαμενος ανεβλεψα
¹² ειπον ουν αυτω που εστιν εκεινος λεγει ουκ οίδα
¹³ αγουσιν αυτον προς τους φαρισαιους τον ποτε τυφλον
¹⁴ ην δε σαββατον οτε τον πηλον εποιησεν ο ιησους και ανεωξεν αυτου τους οφθαλμους
¹⁵ παλιν ουν ηρωτων αυτον και οι φαρισαιοι πως ανεβλεψεν ο δε ειπεν αυτοις πηλον επεθηκεν επι τους οφθαλμους μου και ενιψαμην και βλεπω
¹⁶ ελεγον ουν εκ των φαρισαιων τινες ουτος ο ανθρωπος ουκ εστιν παρα του θεου οτι το σαββατον ου τηρει αλλοι ελεγον πως δυναται ανθρωπος αμαρτωλος τοιαυτα σημεια ποιειν και σχισμα ην εν αυτοις
¹⁷ λεγουσιν τω τυφλω παλιν συ τι λεγεις περι αυτου οτι ηνοιξεν σου τους οφθαλμους ο δε ειπεν οτι προφητης εστιν
¹⁸ ουκ επιστευσαν ουν οι ιουδαιοι περι αυτου οτι τυφλος ην και ανεβλεψεν εως ουτου εφωνησαν τους γονεις αυτου του αναβλεψαντος
¹⁹ και ηρωτησαν αυτους λεγοντες ουτος εστιν ο υιος υμων ον υμεις λεγετε οτι τυφλος εγεννηθη πως ουν αρτι βλεπει
²⁰ απεκριθησαν αυτοις οι γονεις αυτου και ειπον οίδαμεν οτι ουτος εστιν ο υιος ημων και οτι τυφλος εγεννηθη
²¹ πως δε νυν βλεπει ουκ οίδαμεν η τις ηνοιξεν αυτου τους οφθαλμους ημεις ουκ οίδαμεν αυτος ηλικιαν εχει αυτον ερωτησατε αυτος περι αυτου λαλησει

²² ταυτα ειπον οι γονεις αυτου οτι εφοβουντο τους ιουδαιους ηδη γαρ συνετεθειντο οι ιουδαιοι ινα εαν τις αυτον ομολογηση χριστον αποσυναγωγος γενηται
²³ δια τουτο οι γονεις αυτου ειπον οτι ηλικιαν εχει αυτον ερωτησατε
²⁴ εφωνησαν ουν εκ δευτερου τον ανθρωπον ος ην τυφλος και ειπον αυτω δος δοξαν τω θεω ημεις οίδαμεν οτι ο ανθρωπος ουτος αμαρτωλος εστιν
²⁵ απεκριθη ουν εκεινος και ειπεν ει αμαρτωλος εστιν ουκ οιδα εν οιδα οτι τυφλος ων αρτι βλεπω
²⁶ ειπον δε αυτω παλιν τι εποιησεν σοι πως ηνοιξεν σου τους οφθαλμους
²⁷ απεκριθη αυτοις ειπον υμιν ηδη και ουκ ηκουσατε τι παλιν θελετε ακουειν μη και υμεις θελετε αυτου μαθηται γενεσθαι
²⁸ ελοιδορησαν ουν αυτον και ειπον συ ει μαθητης εκεινου ημεις δε του μωσεως εσμεν μαθηται
²⁹ ημεις οίδαμεν οτι μωση λελαληκεν ο θεος τουτον δε ουκ οίδαμεν ποθεν εστιν
³⁰ απεκριθη ο ανθρωπος και ειπεν αυτοις εν γαρ τουτω θαυμαστον εστιν οτι υμεις ουκ οιδατε ποθεν εστιν και ανεωξεν μου τους οφθαλμους
³¹ οίδαμεν δε οτι αμαρτωλων ο θεος ουκ ακουει αλλ εαν τις θεοσεβης η και το θελημα αυτου ποιη τουτου ακουει
³² εκ του αιωνος ουκ ηκουσθη οτι ηνοιξεν τις οφθαλμους τυφλου γεγεννημενου
³³ ει μη ην ουτος παρα θεου ουκ ηδυνατο ποιειν ουδεν
³⁴ απεκριθησαν και ειπον αυτω εν αμαρτιας συ εγεννηθης ολος και συ διδασκεις ημας και εξεβαλον αυτον εξω
³⁵ ηκουσεν ο ιησους οτι εξεβαλον αυτον εξω και ευρων αυτον ειπεν αυτω συ πιστευεις εις τον υιον του θεου
³⁶ απεκριθη εκεινος και ειπεν τις εστιν κυριε ινα πιστευσω εις αυτον
³⁷ ειπεν δε αυτω ο ιησους και εωρακας αυτον και ο λαλων μετα σου εκεινος εστιν
³⁸ ο δε εφη πιστευω κυριε και προσεκυνησεν αυτω
³⁹ και ειπεν ο ιησους εις κριμα εγω εις τον κοσμον τουτον ηλθον ινα οι μη βλεποντες βλεπωσιν και οι βλεποντες τυφλοι γενωνται
⁴⁰ και ηκουσαν εκ των φαρισαιων ταυτα οι οντες μετ αυτου και ειπον αυτω μη και ημεις τυφλοι εσμεν
⁴¹ ειπεν αυτοις ο ιησους ει τυφλοι ητε ουκ αν ειχετε αμαρτιαν νυν δε λεγετε οτι βλεπομεν η ουν αμαρτια υμων μενει

Chapter 10

- ¹αμην αμην λεγω υμιν ο μη εισερχομενος δια της θυρας εις την αυλην των προβατων
αλλα αναβαινων αλλαχοθεν εκεινος κλεπτης εστιν και ληστης
- ²ο δε εισερχομενος δια της θυρας ποιμην εστιν των προβατων
- ³τουτω ο θυρωρος ανοιγει και τα προβατα της φωνης αυτου ακουει και τα ιδια προβατα
καλει κατ ονομα και εξαγει αυτα
- ⁴και οταν τα ιδια προβατα εκβαλη εμπροσθεν αυτων πορευεται και τα προβατα αυτω
ακολουθει οτι οιδασιν την φωνην αυτου
- ⁵αλλοτριω δε ου μη ακολουθησωσιν αλλα φευξονται απ αυτου οτι ουκ οιδασιν των
αλλοτριων την φωνην
- ⁶ταυτην την παροιμιαν ειπεν αυτοις ο ιησους εκεινοι δε ουκ εγνωσαν τινα ην α ελαλει
αυτοις
- ⁷ειπεν ουν παλιν αυτοις ο ιησους αμην αμην λεγω υμιν οτι εγω ειμι η θυρα των προβατων
- ⁸παντες οσοι προ εμου ηλθον κλεπται εισιν και λησται αλλ ουκ ηκουσαν αυτων τα προβατα
- ⁹εγω ειμι η θυρα δι εμου εαν τις εισελθη σωθησεται και εισελευσεται και εξελευσεται και
νομην ευρησει
- ¹⁰ο κλεπτης ουκ ερχεται ει μη ινα κλεψη και θυση και απολεση εγω ηλθον ινα ζωην εχωσιν
και περισσον εχωσιν
- ¹¹εγω ειμι ο ποιμην ο καλος ο ποιμην ο καλος την ψυχην αυτου τιθησιν υπερ των προβατων
- ¹²ο μισθωτος δε και ουκ ων ποιμην ου ουκ εισιν τα προβατα ιδια θεωρει τον λυκον
ερχομενον και αφησιν τα προβατα και φευγει και ο λυκος αρπαζει αυτα και σκορπιζει τα
προβατα
- ¹³ο δε μισθωτος φευγει οτι μισθωτος εστιν και ου μελει αυτω περι των προβατων
- ¹⁴εγω ειμι ο ποιμην ο καλος και γινωσκω τα εμα και γινωσκομαι υπο των εμων
- ¹⁵καθως γινωσκει με ο πατηρ καγω γινωσκω τον πατερα και την ψυχην μου τιθημι υπερ
των προβατων
- ¹⁶και αλλα προβατα εχω α ουκ εστιν εκ της αυλης ταυτης κακεινα με δει αγαγειν και της
φωνης μου ακουσουσιν και γενησεται μια ποιμνη εις ποιμην
- ¹⁷δια τουτο ο πατηρ με αγαπα οτι εγω τιθημι την ψυχην μου ινα παλιν λαβω αυτην
- ¹⁸ουδεις αιρει αυτην απ εμου αλλ εγω τιθημι αυτην απ εμαυτου εξουσιαν εχω θειναι αυτην
και εξουσιαν εχω παλιν λαβειν αυτην ταυτην την εντολην ελαβον παρα του πατρος μου
- ¹⁹σχισμα ουν παλιν εγενετο εν τοις ιουδαιοις δια τους λογους τουτους
- ²⁰ελεγον δε πολλοι εξ αυτων δαιμονιον εχει και μαινεται τι αυτου ακουετε
- ²¹αλλοι ελεγον ταυτα τα ρηματα ουκ εστιν δαιμονιζομενου μη δαιμονιον δυναται τυφλων
οφθαλμους ανοιγειν
- ²²εγενετο δε τα εγκαινια εν τοις ιεροσολυμοις και χειμων ην
- ²³και περιεπατει ο ιησους εν τω ιερω εν τη στοα του σολομωντος

- ²⁴ εκκυκλωσαν ουν αυτον οι ιουδαιοι και ελεγον αυτω εως ποτε την ψυχην ημων αιρεις ει
συ ει ο χριστος ειπε ημιν παρηρησια
- ²⁵ απεκριθη αυτοις ο ιησους ειπον υμιν και ου πιστευετε τα εργα α εγω ποιω εν τω ονοματι
του πατρος μου ταυτα μαρτυρει περι εμου
- ²⁶ αλλ υμεις ου πιστευετε ου γαρ εστε εκ των προβατων των εμων καθως ειπον υμιν
- ²⁷ τα προβατα τα εμα της φωνης μου ακουει καγω γινωσκω αυτα και ακολουθουσιν μοι
- ²⁸ καγω ζωην αιωνιον διδωμι αυτοις και ου μη απολωνται εις τον αιωνα και ουχ αρπασει
τις αυτα εκ της χειρος μου
- ²⁹ ο πατηρ μου ος δεδωκεν μοι μειζων παντων εστιν και ουδεις δυναται αρπαζειν εκ της
χειρος του πατρος μου
- ³⁰ εγω και ο πατηρ εν εσμεν
- ³¹ εβαστασαν ουν παλιν λιθους οι ιουδαιοι ινα λιθασωσιν αυτον
- ³² απεκριθη αυτοις ο ιησους πολλα καλα εργα εδειξα υμιν εκ του πατρος μου δια ποιον
αυτων εργων λιθαζετε με
- ³³ απεκριθησαν αυτω οι ιουδαιοι λεγοντες περι καλου εργου ου λιθαζομεν σε αλλα περι
βλασφημιας και οτι συ ανθρωπος ων ποιεις σεαυτον θεον
- ³⁴ απεκριθη αυτοις ο ιησους ουκ εστιν γεγραμμενον εν τω νομω υμων εγω ειπα θεοι εστε
- ³⁵ ει εκεινους ειπεν θεους προς ους ο λογος του θεου εγενετο και ου δυναται λυθηναι η
γραφη
- ³⁶ ον ο πατηρ ηγιασεν και απεστειλεν εις τον κοσμον υμεις λεγετε οτι βλασφημεις οτι ειπον
υιος του θεου ειμι
- ³⁷ ει ου ποιω τα εργα του πατρος μου μη πιστευετε μοι
- ³⁸ ει δε ποιω καν εμοι μη πιστευητε τοις εργοις πιστευσατε ινα γνωτε και πιστευσητε οτι
εν εμοι ο πατηρ καγω εν αυτω
- ³⁹ εζητουν ουν παλιν αυτον πιασαι και εξηλθεν εκ της χειρος αυτων
- ⁴⁰ και απηλθεν παλιν περαν του ιορδανου εις τον τοπον οπου ην ιωαννης το πρωτον
βαπτιζων και εμεινεν εκει
- ⁴¹ και πολλοι ηλθον προς αυτον και ελεγον οτι ιωαννης μεν σημειον εποιησεν ουδεν παντα
δε οσα ειπεν ιωαννης περι τουτου αληθη ην
- ⁴² και επιστευσαν πολλοι εκει εις αυτον

Chapter 11

¹ην δε τις ασθενων λαζαρος απο βηθανιας εκ της κωμης μαριας και μαρθας της αδελφης αυτης
²ην δε μαρια η αλειψασα τον κυριον μυρω και εκμαξασα τους ποδας αυτου ταις θριξιν αυτης ης ο αδελφος λαζαρος ησθενει
³απεστειλαν ουν αι αδελφαι προς αυτον λεγουσαι κυριε ιδε ον φιλεις ασθενει
⁴ακουσας δε ο ιησους ειπεν αυτη η ασθενεια ουκ εστιν προς θανατον αλλ υπερ της δοξης του θεου ινα δοξασθη ο υιος του θεου δι αυτης
⁵ηγαπα δε ο ιησους την μαρθαν και την αδελφην αυτης και τον λαζαρον
⁶ως ουν ηκουσεν οτι ασθενει τοτε μεν εμεινεν εν ω ην τοπω δυο ημερας
⁷επειτα μετα τουτο λεγει τοις μαθηταις αγωμεν εις την ιουδαιαν παλιν
⁸λεγουσιν αυτω οι μαθηται ραββι νυν εξητουν σε λιθασαι οι ιουδαιοι και παλιν υπαγεις εκει
⁹απεκριθη ο ιησους ουχι δωδεκα εισιν ωραι της ημερας εαν τις περιπατη εν τη ημερα ου προσκοπτει οτι το φως του κοσμου τουτου βλεπει
¹⁰εαν δε τις περιπατη εν τη νυκτι προσκοπτει οτι το φως ουκ εστιν εν αυτω
¹¹ταυτα ειπεν και μετα τουτο λεγει αυτοις λαζαρος ο φιλος ημων κεκοιμηται αλλα πορευομαι ινα εξυπνισω αυτον
¹²ειπον ουν οι μαθηται αυτου κυριε ει κεκοιμηται σωθησεται
¹³ειρηκει δε ο ιησους περι του θανατου αυτου εκεινοι δε εδοξαν οτι περι της κοιμησεως του υπνου λεγει
¹⁴τοτε ουν ειπεν αυτοις ο ιησους παρρησια λαζαρος απεθανεν
¹⁵και χαιρω δι υμας ινα πιστευσητε οτι ουκ ημην εκει αλλ αγωμεν προς αυτον
¹⁶ειπεν ουν θωμας ο λεγομενος διδυμος τοις συμμαθηταις αγωμεν και ημεις ινα αποθανωμεν μετ αυτου
¹⁷ελθων ουν ο ιησους ευρεν αυτον τεσσαρας ημερας ηδη εχοντα εν τω μνημειω
¹⁸ην δε η βηθανια εγγυς των ιεροσολυμων ως απο σταδιων δεκαπεντε
¹⁹και πολλοι εκ των ιουδαιων εληλυθεισαν προς τας περι μαρθαν και μαριαν ινα παραμυθησωνται αυτας περι του αδελφου αυτων
²⁰η ουν μαρθα ως ηκουσεν οτι ο ιησους ερχεται υπηνητησεν αυτω μαρια δε εν τω οικω εκαθεζετο
²¹ειπεν ουν η μαρθα προς τον ιησουν κυριε ει ης ωδε ο αδελφος μου ουκ αν ετεθνηκει
²²αλλα και νυν οίδα οτι οσα αν αιτηση τον θεον δωσει σοι ο θεος
²³λεγει αυτη ο ιησους αναστησεται ο αδελφος σου
²⁴λεγει αυτω μαρθα οίδα οτι αναστησεται εν τη αναστασει εν τη εσχατη ημερα
²⁵ειπεν αυτη ο ιησους εγω ειμι η αναστασις και η ζωη ο πιστευων εις εμε καν αποθανη ζησεται

²⁶ και πας ο ζων και πιστευων εις εμε ου μη αποθανη εις τον αιωνα πιστευεις τουτο
²⁷ λεγει αυτω ναι κυριε εγω πεπιστευκα οτι συ ει ο χριστος ο υιος του θεου ο εις τον κοσμον
ερχομενος
²⁸ και ταυτα ειπουσα απηλθεν και εφωνησεν μαριαν την αδελφην αυτης λαθρα ειπουσα ο
διδασκαλος παρεστιν και φωνει σε
²⁹ εκεινη ως ηκουσεν εγειρεται ταχυ και ερχεται προς αυτον
³⁰ ουπω δε εληλυθει ο ιησους εις την κωμην αλλ ην εν τω τοπω οπου υπηνητησεν αυτω η
μαρθα
³¹ οι ουν ιουδαιοι οι οντες μετ αυτης εν τη οικια και παραμυθουμενοι αυτην ιδοντες την
μαριαν οτι ταχεως ανεστη και εξηλθεν ηκολουθησαν αυτη λεγοντες οτι υπαγει εις το
μνημειον ινα κλαυση εκει
³² η ουν μαρια ως ηλθεν οπου ην ο ιησους ιδουσα αυτον επεσεν εις τους ποδας αυτου
λεγουσα αυτω κυριε ει ης ωδε ουκ αν απεθανεν μου ο αδελφος
³³ ιησους ουν ως ειδεν αυτην κλαιουσαν και τους συνελθοντας αυτη ιουδαιους κλαιοντας
ενεβριμησατο τω πνευματι και εταραξεν εαυτον
³⁴ και ειπεν που τεθεικατε αυτον λεγουσιν αυτω κυριε ερχου και ιδε
³⁵ εδακρυσεν ο ιησους
³⁶ ελεγον ουν οι ιουδαιοι ιδε πως εφιλει αυτον
³⁷ τινες δε εξ αυτων ειπον ουκ ηδυνατο ουτος ο ανοιξας τους οφθαλμους του τυφλου
ποιησαι ινα και ουτος μη αποθανη
³⁸ ιησους ουν παλιν εμβριμωμενος εν εαυτω ερχεται εις το μνημειον ην δε σπηλαιον και
λιθος επεκειτο επ αυτω
³⁹ λεγει ο ιησους αρατε τον λιθον λεγει αυτω η αδελφη του τεθνηκοτος μαρθα κυριε ηδη
οζει τεταρταιος γαρ εστιν
⁴⁰ λεγει αυτη ο ιησους ουκ ειπον σοι οτι εαν πιστευσης οψει την δοξαν του θεου
⁴¹ ηραν ουν τον λιθον ου ην ο τεθνηκως κειμενος ο δε ιησους ηρεν τους οφθαλμους ανω
και ειπεν πατερ ευχαριστω σοι οτι ηκουσας μου
⁴² εγω δε ηδειν οτι παντοτε μου ακουεις αλλα δια τον οχλον τον περιστωτα ειπον ινα
πιστευσωσιν οτι συ με απεστειλας
⁴³ και ταυτα ειπων φωνη μεγαλη εκραυγασεν λαζαρε δευρο εξω
⁴⁴ και εξηλθεν ο τεθνηκως δεδεμενος τους ποδας και τας χειρας κειριαις και η οψις αυτου
σουδαριω περιεδεδετο λεγει αυτοις ο ιησους λυσατε αυτον και αφετε υπαγειν
⁴⁵ πολλοι ουν εκ των ιουδαιων οι ελθοντες προς την μαριαν και θεασαμενοι α εποιησεν ο
ιησους επιστευσαν εις αυτον
⁴⁶ τινες δε εξ αυτων απηλθον προς τους φαρισαιους και ειπον αυτοις α εποιησεν ο ιησους
⁴⁷ συνηγαγον ουν οι αρχιερεις και οι φαρισαιοι συνεδριον και ελεγον τι ποιουμεν οτι ουτος
ο ανθρωπος πολλα σημεια ποιει

⁴⁸εαν αφωμεν αυτον ουτως παντες πιστευσουσιν εις αυτον και ελευσονται οι ρωμαιοι και αρουσιν ημων και τον τοπον και το εθνος

⁴⁹εις δε τις εξ αυτων καιαφας αρχιερευς ων του ενιαυτου εκεινου ειπεν αυτοις υμεις ουκ οιδατε ουδεν

⁵⁰ουδε διαλογιζεσθε οτι συμφερει ημιν ινα εις ανθρωπος αποθανη υπερ του λαου και μη ολον το εθνος αποληται

⁵¹τουτο δε αφ εαυτου ουκ ειπεν αλλα αρχιερευς ων του ενιαυτου εκεινου προεφητευσεν οτι εμελλεν ο ιησους αποθνησκειν υπερ του εθνους

⁵²και ουχ υπερ του εθνους μονον αλλ ινα και τα τεκνα του θεου τα διεσκορπισμενα συναγαγη εις εν

⁵³απ εκεινης ουν της ημερας συνεβουλευσαντο ινα αποκτεινωσιν αυτον

⁵⁴ιησους ουν ουκ ετι παρησια περιεπατει εν τοις ιουδαιοις αλλα απηλθεν εκειθεν εις την χωραν εγγυς της ερημου εις εφραιμ λεγομενην πολιν κακει διετριβεν μετα των μαθητων αυτου

⁵⁵ην δε εγγυς το πασχα των ιουδαιων και ανεβησαν πολλοι εις ιεροσολυμα εκ της χωρας προ του πασχα ινα αγνισωσιν εαυτους

⁵⁶εζητουν ουν τον ιησουν και ελεγον μετ αλληλων εν τω ιερω εστηκοτες τι δοκει υμιν οτι ου μη ελθη εις την εορτην

⁵⁷δεδωκεισαν δε και οι αρχιερεις και οι φαρισαιοι εντολην ινα εαν τις γνω που εστιν μηνυση οπως πιασωσιν αυτον

Chapter 12

- ¹ο ουν ιησους προ εξ ημερων του πασχα ηλθεν εις βηθανιαν οπου ην λαζαρος ο τεθνηκως ον ηγειρεν εκ νεκρων
- ²εποιησαν ουν αυτω δειπνον εκει και η μαρθα διηκονει ο δε λαζαρος εις ην των συνανακειμενων αυτω
- ³η ουν μαρια λαβουσα λιτραν μυρου ναρδου πιστικης πολυτιμου ηλειψεν τους ποδας του ιησου και εξεμαξεν ταις θριξιν αυτης τους ποδας αυτου η δε οικια επληρωθη εκ της οσμης του μυρου
- ⁴λεγει ουν εις εκ των μαθητων αυτου ιουδας σιμωνος ισκαριωτης ο μελλων αυτον παραδιδουαι
- ⁵διατι τουτο το μυρον ουκ επραθη τριακοσιων δηναριων και εδοθη πτωχοις
- ⁶ειπεν δε τουτο ουχ οτι περι των πτωχων εμελεν αυτω αλλα οτι κλεπτης ην και το γλωσσοκομον ειχεν και τα βαλλομενα εβασταζεν
- ⁷ειπεν ουν ο ιησους αφες αυτην εις την ημεραν του ενταφιασμου μου τετηρηκεν αυτο
- ⁸τους πτωχους γαρ παντοτε εχετε μεθ εαυτων εμε δε ου παντοτε εχετε
- ⁹εγνω ουν οχλος πολυς εκ των ιουδαιων οτι εκει εστιν και ηλθον ου δια τον ιησουν μονον αλλ ινα και τον λαζαρον ιδωσιν ον ηγειρεν εκ νεκρων
- ¹⁰εβουλευσαντο δε οι αρχιερεις ινα και τον λαζαρον αποκτεινωσιν
- ¹¹οτι πολλοι δι αυτον υπηγον των ιουδαιων και επιστευον εις τον ιησουν
- ¹²τη επαυριον οχλος πολυς ο ελθων εις την εορτην ακουσαντες οτι ερχεται ο ιησους εις ιεροσολυμα
- ¹³ελαβον τα βαια των φοινικων και εξηλθον εις υπαντησιν αυτω και εκραζον ωσαννα ευλογημενος ο ερχομενος εν ονοματι κυριου ο βασιλευς του ισραηλ
- ¹⁴ευρων δε ο ιησους οναριον εκαθισεν επ αυτο καθως εστιν γεγραμμενον
- ¹⁵μη φοβου θυγατερ σιων ιδου ο βασιλευς σου ερχεται καθημενος επι πωλον ονου
- ¹⁶ταυτα δε ουκ εγνωσαν οι μαθηται αυτου το πρωτον αλλ οτε εδοξασθη ο ιησους τοτε εμνησθησαν οτι ταυτα ην επ αυτω γεγραμμενα και ταυτα εποιησαν αυτω
- ¹⁷εμαρτυρει ουν ο οχλος ο ων μετ αυτου οτε τον λαζαρον εφωνησεν εκ του μνημειου και ηγειρεν αυτον εκ νεκρων
- ¹⁸δια τουτο και υπηνητησεν αυτω ο οχλος οτι ηκουσεν τουτο αυτον πεποιηκεναι το σημειον
- ¹⁹οι ουν φαρισαιοι ειπον προς εαυτους θεωρειτε οτι ουκ ωφελειτε ουδεν ιδε ο κοσμος οπισω αυτου απηλθεν
- ²⁰ησαν δε τινες ελληνες εκ των αναβαινοντων ινα προσκυνησωσιν εν τη εορτη
- ²¹ουτοι ουν προσηλθον φιλιππω τω απο βηθσαιδα της γαλιλαιας και ηρωτων αυτον λεγοντες κυριε θελομεν τον ιησουν ιδειν
- ²²ερχεται φιλιππος και λεγει τω ανδρα και παλιν ανδρας και φιλιππος λεγουσιν τω ιησου
- ²³ο δε ιησους απεκρινατο αυτοις λεγων εληλυθεν η ωρα ινα δοξασθη ο υιος του ανθρωπου

- ²⁴ αμην αμην λεγω υμιν εαν μη ο κοκκος του σιτου πεσων εις την γην αποθανη αυτοσ μονοσ μενει εαν δε αποθανη πολυν καρπον φερει
- ²⁵ ο φιλων την ψυχην αυτου απολεσει αυτην και ο μισων την ψυχην αυτου εν τω κοσμω τουτω εις ζωην αιωνιον φυλαξει αυτην
- ²⁶ εαν εμοι διακονη τις εμοι ακολουθειτω και οπου ειμι εγω εκει και ο διακονοσ ο εμοσ εσται και εαν τις εμοι διακονη τιμησει αυτον ο πατηρ
- ²⁷ νυν η ψυχη μου τεταρακται και τι ειπω πατερ σωσον με εκ της ωρασ ταυτησ αλλα δια τουτο ηλθον εις την ωραν ταυτην
- ²⁸ πατερ δοξασον σου το ονομα ηλθεν ουν φωνη εκ του ουρανου και εδοξασα και παλιν δοξασω
- ²⁹ ο ουν οχλοσ ο εστωσ και ακουσασ ελεγεν βροντην γεγονεναι αλλοι ελεγον αγγελοσ αυτω λελαληκεν
- ³⁰ απεκριθη ο ιησουσ και ειπεν ου δι εμε αυτη η φωνη γεγονεν αλλα δι υμασ
- ³¹ νυν κρισισ εστιν του κοσμου τουτου νυν ο αρχων του κοσμου τουτου εκβληθησεται εξω
- ³² καγω εαν υψωθω εκ της γησ παντασ ελκυσω προς εμαυτον
- ³³ τουτο δε ελεγεν σημαινων ποιω θανατω ημελλεν αποθνησκειν
- ³⁴ απεκριθη αυτω ο οχλοσ ημεισ ηκουσαμεν εκ του νομου οτι ο χριστοσ μενει εις τον αιωνα και πωσ συ λεγεισ οτι δει υψωθηναι τον υιον του ανθρωπου τισ εστιν ουτοσ ο υιοσ του ανθρωπου
- ³⁵ ειπεν ουν αυτοισ ο ιησουσ ετι μικρον χρονον το φωσ μεθ υμων εστιν περιπατειτε εωσ το φωσ εχετε ινα μη σκοτια υμασ καταλαβη και ο περιπατων εν τη σκοτια ουκ οιδεν που υπαγει
- ³⁶ εωσ το φωσ εχετε πιστευετε εις το φωσ ινα υιοι φωτοσ γενησθε ταυτα ελαλησεν ο ιησουσ και απελθων εκρυβη απ αυτων
- ³⁷ τοσαυτα δε αυτου σημεια πεποιηκοτοσ εμπροσθεν αυτων ουκ επιστευον εις αυτον
- ³⁸ ινα ο λογοσ ησαιου του προφητου πληρωθη ον ειπεν κυριε τισ επιστευσεν τη ακοη ημων και ο βραχιων κυριου τινη απεκαλυφθη
- ³⁹ δια τουτο ουκ ηδυνατο πιστευειν οτι παλιν ειπεν ησαιασ
- ⁴⁰ τετυφλωκεν αυτων τουσ οφθαλμουσ και πεπωρωκεν αυτων την καρδιαν ινα μη ιδωσιν τοισ οφθαλμοισ και νοησωσιν τη καρδια και επιστραφωσιν και ιασωμαι αυτουσ
- ⁴¹ ταυτα ειπεν ησαιασ οτε ειδεν την δοξαν αυτου και ελαλησεν περι αυτου
- ⁴² ομωσ μεντοι και εκ των αρχοντων πολλοι επιστευσαν εις αυτον αλλα δια τουσ φαρισαιουσ ουχ ωμολογουσ ινα μη αποσυναγωγοι γενωνται
- ⁴³ ηγαπησαν γαρ την δοξαν των ανθρωπων μαλλον ηπερ την δοξαν του θεου
- ⁴⁴ ιησουσ δε εκραξεν και ειπεν ο πιστευων εις εμε ου πιστευει εις εμε αλλ εις τον πεμψαντα με
- ⁴⁵ και ο θεωρων εμε θεωρει τον πεμψαντα με
- ⁴⁶ εγω φωσ εις τον κοσμον εληλυθα ινα πασ ο πιστευων εις εμε εν τη σκοτια μη μεινη

⁴⁷ και εαν τις μου ακουση των ρηματων και μη πιστευση εγω ου κρινω αυτον ου γαρ ηλθον ινα κρινω τον κοσμον αλλ ινα σωσω τον κοσμον

⁴⁸ ο αθετων εμε και μη λαμβανων τα ρηματα μου εχει τον κρινοντα αυτον ο λογος ον ελαλησα εκεινος κρινει αυτον εν τη εσχατη ημερα

⁴⁹ οτι εγω εξ εμαυτου ουκ ελαλησα αλλ ο πεμψας με πατηρ αυτος μοι εντολην εδωκεν τι ειπω και τι λαλησω

⁵⁰ και οιδα οτι η εντολη αυτου ζωη αιωνιος εστιν α ουν λαλω εγω καθως ειρηκεν μοι ο πατηρ ουτως λαλω

Chapter 13

¹προ δε της εορτης του πασχα ειδως ο ιησους οτι εληλυθεν αυτου η ωρα ινα μεταβη εκ του κοσμου τουτου προς τον πατερα αγαπησας τους ιδιους τους εν τω κοσμω εις τελος ηγαπησεν αυτους

²και δειπνου γενομενου του διαβολου ηδη βεβληκοτος εις την καρδιαν ιουδα σιμωνος ισκαριωτου ινα αυτον παραδω

³ειδως ο ιησους οτι παντα δεδωκεν αυτω ο πατηρ εις τας χειρας και οτι απο θεου εξηλθεν και προς τον θεον υπαγει

⁴εγειρεται εκ του δειπνου και τιθησιν τα ιματια και λαβων λεντιον διεζωσεν εαυτον

⁵ειτα βαλλει υδωρ εις τον νιπηρα και ηρξατο νιπτειν τους ποδας των μαθητων και εκμασσειν τω λεντιω ω ην διεζωσμενος

⁶ερχεται ουν προς σιμωνα πετρον και λεγει αυτω εκεινος κυριε συ μου νιπτεις τους ποδας

⁷απεκριθη ιησους και ειπεν αυτω ο εγω ποιω συ ουκ οιδας αρτι γνωση δε μετα ταυτα

⁸λεγει αυτω πετρος ου μη νιψης τους ποδας μου εις τον αιωνα απεκριθη αυτω ο ιησους εαν μη νιψω σε ουκ εχεις μερος μετ εμου

⁹λεγει αυτω σιμων πετρος κυριε μη τους ποδας μου μονον αλλα και τας χειρας και την κεφαλην

¹⁰λεγει αυτω ο ιησους ο λελουμενος ου χρειαν εχει η τους ποδας νιψασθαι αλλ εστιν καθαρος ολος και υμεις καθαροι εστε αλλ ουχι παντες

¹¹ηδει γαρ τον παραδιδοντα αυτον δια τουτο ειπεν ουχι παντες καθαροι εστε

¹²οτε ουν ενιψεν τους ποδας αυτων και ελαβεν τα ιματια αυτου αναπεσων παλιν ειπεν αυτοις γινωσκετε τι πεποιηκα υμιν

¹³υμεις φωνειτε με ο διδασκαλος και ο κυριος και καλως λεγετε ειμι γαρ

¹⁴ει ουν εγω ενιψα υμων τους ποδας ο κυριος και ο διδασκαλος και υμεις οφειλετε αλληλων νιπτειν τους ποδας

¹⁵υποδειγμα γαρ εδωκα υμιν ινα καθως εγω εποιησα υμιν και υμεις ποιητε

¹⁶αμην αμην λεγω υμιν ουκ εστιν δουλος μειζων του κυριου αυτου ουδε αποστολος μειζων του πεμψαντος αυτον

¹⁷ει ταυτα οιδατε μακαριοι εστε εαν ποιητε αυτα

¹⁸ου περι παντων υμων λεγω εγω οιδα ους εξελεξαμην αλλ ινα η γραφη πληρωθη ο τρωγων μετ εμου τον αρτον επηρεν επ εμε την πτερναν αυτου

¹⁹απ αρτι λεγω υμιν προ του γενεσθαι ινα οταν γενηται πιστευσητε οτι εγω ειμι

²⁰αμην αμην λεγω υμιν ο λαμβανων εαν τινα πεμψω εμε λαμβανει ο δε εμε λαμβανων λαμβανει τον πεμψαντα με

²¹ταυτα ειπων ο ιησους εταραχθη τω πνευματι και εμαρτυρησεν και ειπεν αμην αμην λεγω υμιν οτι εις εξ υμων παραδωσει με

²²εβλεπον ουν εις αλληλους οι μαθηται απορουμενοι περι τινος λεγει

²³ην δε ανακειμενος εις των μαθητων αυτου εν τω κολπω του ιησου ον ηγαπα ο ιησους

- ²⁴νευει ουν τουτω σιμων πετρος πυθεσθαι τις αν ειη περι ου λεγει
²⁵επιπεσων δε εκεινος επι το στηθος του ιησου λεγει αυτω κυριε τις εστιν
²⁶αποκρινεται ο ιησους εκεινος εστιν ω εγω βαψας το ψωμιον επιδωσω και εμβαψας το
ψωμιον διδωσιν ιουδα σιμωνος ισκαριωτη
²⁷και μετα το ψωμιον τοτε εισηλθεν εις εκεινον ο σατανας λεγει ουν αυτω ο ιησους ο
ποιεις ποιησον ταχιον
²⁸τουτο δε ουδεις εγνω των ανακειμενων προς τι ειπεν αυτω
²⁹τινες γαρ εδοκουν επει το γλωσσοκομον ειχεν ο ιουδας οτι λεγει αυτω ο ιησους αγορασον
ων χρειαν εχομεν εις την εορτην η τοις πτωχοις ινα τι δω
³⁰λαβων ουν το ψωμιον εκεινος ευθεως εξηλθεν ην δε νυξ
³¹οτε ουν εξηλθεν λεγει ο ιησους νυν εδοξασθη ο υιος του ανθρωπου και ο θεος εδοξασθη
εν αυτω
³²ει ο θεος εδοξασθη εν αυτω και ο θεος δοξασει αυτον εν εαυτω και ευθυς δοξασει αυτον
³³τεκνια ετι μικρον μεθ υμων ειμι ζητησετε με και καθως ειπον τοις ιουδαιοις οτι οπου
υπαγω εγω υμεις ου δυνασθε ελθειν και υμιν λεγω αρτι
³⁴εντολην καινην διδωμι υμιν ινα αγαπατε αλληλους καθως ηγαπησα υμας ινα και υμεις
αγαπατε αλληλους
³⁵εν τουτω γνωσονται παντες οτι εμοι μαθηται εστε εαν αγαπην εχητε εν αλληλοις
³⁶λεγει αυτω σιμων πετρος κυριε που υπαγεις απεκριθη αυτω ο ιησους οπου υπαγω ου
δυνασαι μοι νυν ακολουθησαι υστερον δε ακολουθησεις μοι
³⁷λεγει αυτω ο πετρος κυριε διατι ου δυναμαι σοι ακολουθησαι αρτι την ψυχην μου υπερ
σου θησω
³⁸απεκριθη αυτω ο ιησους την ψυχην σου υπερ εμου θησεις αμην αμην λεγω σοι ου μη
αλεκτωρ φωνησει εως ου απαρνηση με τρις

Chapter 14

- ¹μη ταρασσεσθω υμων η καρδια πιστευετε εις τον θεον και εις εμε πιστευετε
²εν τη οικια του πατρος μου μοναι πολλαι εισιν ει δε μη ειπον αν υμιν πορευομαι ετοιμασαι τοπον υμιν
³και εαν πορευθω και ετοιμασω υμιν τοπον παλιν ερχομαι και παραληψομαι υμας προς εμαυτον ινα οπου ειμι εγω και υμεις ητε
⁴και οπου εγω υπαγω οιδατε και την οδον οιδατε
⁵λεγει αυτω θωμας κυριε ουκ οιδαμεν που υπαγεις και πως δυναμεθα την οδον ειδεναι
⁶λεγει αυτω ο ιησους εγω ειμι η οδος και η αληθεια και η ζωη ουδεις ερχεται προς τον πατερα ει μη δι εμου
⁷ει εγνωκειτε με και τον πατερα μου εγνωκειτε αν και απ αρτι γινωσκετε αυτον και εωρακατε αυτον
⁸λεγει αυτω φιλιππος κυριε δειξον ημιν τον πατερα και αρκει ημιν
⁹λεγει αυτω ο ιησους τοσουτον χρονον μεθ υμων ειμι και ουκ εγνωκας με φιλιππε ο εωρακωσ εμε εωρακεν τον πατερα και πως συ λεγεις δειξον ημιν τον πατερα
¹⁰ου πιστευεις οτι εγω εν τω πατρι και ο πατηρ εν εμοι εστιν τα ρηματα α εγω λαλω υμιν απ εμαυτου ου λαλω ο δε πατηρ ο εν εμοι μενων αυτος ποιει τα εργα
¹¹πιστευετε μοι οτι εγω εν τω πατρι και ο πατηρ εν εμοι ει δε μη δια τα εργα αυτα πιστευετε μοι
¹²αμην αμην λεγω υμιν ο πιστευων εις εμε τα εργα α εγω ποιω κακεινος ποιησει και μειζονα τουτων ποιησει οτι εγω προς τον πατερα μου πορευομαι
¹³και ο τι αν αιτησητε εν τω ονοματι μου τουτο ποιησω ινα δοξασθη ο πατηρ εν τω υιω
¹⁴εαν τι αιτησητε εν τω ονοματι μου εγω ποιησω
¹⁵εαν αγαπατε με τας εντολας τας εμας τηρησατε
¹⁶και εγω ερωτησω τον πατερα και αλλον παρακλητον δωσει υμιν ινα μενη μεθ υμων εις τον αιωνα
¹⁷το πνευμα της αληθειας ο ο κοσμος ου δυναται λαβειν οτι ου θεωρει αυτο ουδε γινωσκει αυτο υμεις δε γινωσκετε αυτο οτι παρ υμιν μενει και εν υμιν εσται
¹⁸ουκ αφησω υμας ορφανους ερχομαι προς υμας
¹⁹ετι μικρον και ο κοσμος με ουκ ετι θεωρει υμεις δε θεωρειτε με οτι εγω ζω και υμεις ζησεσθε
²⁰εν εκεινη τη ημερα γνωσεσθε υμεις οτι εγω εν τω πατρι μου και υμεις εν εμοι καγω εν υμιν
²¹ο εχων τας εντολας μου και τηρων αυτας εκεινος εστιν ο αγαπων με ο δε αγαπων με αγαπηθησεται υπο του πατρος μου και εγω αγαπησω αυτον και εμφανισω αυτω εμαυτον
²²λεγει αυτω ιουδας ουχ ο ισκαριωτης κυριε τι γεγονεν οτι ημιν μελλεις εμφανιζειν σεαυτον και ουχι τω κοσμω

- ²³ απεκριθη ο ιησους και ειπεν αυτω εαν τις αγαπα με τον λογον μου τηρησει και ο πατηρ μου αγαπησει αυτον και προς αυτον ελευσομεθα και μονην παρ αυτω ποιησομεν
- ²⁴ ο μη αγαπων με τους λογους μου ου τηρει και ο λογος ον ακουετε ουκ εστιν εμος αλλα του πεμψαντος με πατρος
- ²⁵ ταυτα λελαληκα υμιν παρ υμιν μενων
- ²⁶ ο δε παρακλητος το πνευμα το αγιον ο πεμψει ο πατηρ εν τω ονοματι μου εκεινος υμας διδαξει παντα και υπομνησει υμας παντα α ειπον υμιν
- ²⁷ ειρηνην αφιημι υμιν ειρηνην την εμην διδωμι υμιν ου καθως ο κοσμος διδωσιν εγω διδωμι υμιν μη ταρασσεσθω υμων η καρδια μηδε δειλιατω
- ²⁸ ηκουσατε οτι εγω ειπον υμιν υπαγω και ερχομαι προς υμας ει ηγαπατε με εχαρητε αν οτι ειπον πορευομαι προς τον πατερα οτι ο πατηρ μου μειζων μου εστιν
- ²⁹ και νυν ειρηκα υμιν πριν γενεσθαι ινα οταν γενηται πιστευσητε
- ³⁰ ουκ ετι πολλα λαλησω μεθ υμων ερχεται γαρ ο του κοσμου τουτου αρχων και εν εμοι ουκ εχει ουδεν
- ³¹ αλλ ινα γνω ο κοσμος οτι αγαπω τον πατερα και καθως ενετειλατο μοι ο πατηρ ουτως ποιω εγειρεσθε αγωμεν εντευθεν

Chapter 15

- ¹εγω ειμι η αμπελος η αληθινη και ο πατηρ μου ο γεωργος εστιν
²παν κλημα εν εμοι μη φερον καρπον αιρει αυτο και παν το καρπον φερον καθαιρει αυτο
 ινα πλειονα καρπον φερη
³ηδη υμεις καθαροι εστε δια τον λογον ον λελαληκα υμιν
⁴μεινατε εν εμοι καγω εν υμιν καθως το κλημα ου δυναται καρπον φερειν αφ εαυτου εαν
 μη μεινη εν τη αμπελω ουτως ουδε υμεις εαν μη εν εμοι μεινητε
⁵εγω ειμι η αμπελος υμεις τα κληματα ο μενων εν εμοι καγω εν αυτω ουτος φερει καρπον
 πολυν οτι χωρις εμου ου δυνασθε ποιειν ουδεν
⁶εαν μη τις μεινη εν εμοι εβληθη εξω ως το κλημα και εξηρανθη και συναγουσιν αυτα και
 εις πυρ βαλλουσιν και καιεται
⁷εαν μεινητε εν εμοι και τα ρηματα μου εν υμιν μεινη ο εαν θελητε αιτησεσθε και γενησεται
 υμιν
⁸εν τουτω εδοξασθη ο πατηρ μου ινα καρπον πολυν φερητε και γενησεσθε εμοι μαθηται
⁹καθως ηγαπησεν με ο πατηρ καγω ηγαπησα υμας μεινατε εν τη αγαπη τη εμη
¹⁰εαν τας εντολας μου τηρησητε μενειτε εν τη αγαπη μου καθως εγω τας εντολας του
 πατρος μου τηρηκα και μενω αυτου εν τη αγαπη
¹¹ταυτα λελαληκα υμιν ινα η χαρα η εμη εν υμιν μεινη και η χαρα υμων πληρωθη
¹²αυτη εστιν η εντολη η εμη ινα αγαπατε αλληλους καθως ηγαπησα υμας
¹³μειζονα ταυτης αγαπην ουδεις εχει ινα τις την ψυχην αυτου θη υπερ των φιλων αυτου
¹⁴υμεις φιλοι μου εστε εαν ποιητε οσα εγω εντελλομαι υμιν
¹⁵ουκετι υμας λεγω δουλους οτι ο δουλος ουκ οιδεν τι ποιει αυτου ο κυριος υμας δε ειρηκα
 φιλους οτι παντα α ηκουσα παρα του πατρος μου εγνωρισα υμιν
¹⁶ουχ υμεις με εξελεξασθε αλλ εγω εξελεξαμην υμας και εθηκα υμας ινα υμεις υπαγητε
 και καρπον φερητε και ο καρπος υμων μενη ινα ο τι αν αιτησητε τον πατερα εν τω ονοματι
 μου δω υμιν
¹⁷ταυτα εντελλομαι υμιν ινα αγαπατε αλληλους
¹⁸ει ο κοσμος υμας μισει γινωσκετε οτι εμε πρωτον υμων μεμισηκεν
¹⁹ει εκ του κοσμου ητε ο κοσμος αν το ιδιον εφιλει οτι δε εκ του κοσμου ουκ εστε αλλ εγω
 εξελεξαμην υμας εκ του κοσμου δια τουτο μισει υμας ο κοσμος
²⁰μνημονευετε του λογου ου εγω ειπον υμιν ουκ εστιν δουλος μειζων του κυριου αυτου
 ει εμε εδιωξαν και υμας διωξουσιν ει τον λογον μου ετηρησαν και τον υμετερον τηρησουσιν
²¹αλλα ταυτα παντα ποιησουσιν υμιν δια το ονομα μου οτι ουκ οιδασιν τον πεμψαντα με
²²ει μη ηλθον και ελαλησα αυτοις αμαρτιαν ουκ ειχον νυν δε προφασιν ουκ εχουσιν περι
 της αμαρτιας αυτων
²³ο εμε μισων και τον πατερα μου μισει

²⁴ ει τα εργα μη εποιησα εν αυτοις α ουδεις αλλος πεποιηκεν αμαρτιαν ουκ ειχον νυν δε και εωρακασιν και μεμισηκασιν και εμε και τον πατερα μου

²⁵ αλλ ινα πληρωθη ο λογος ο γεγραμμενος εν τω νομω αυτων οτι εμισησαν με δωρεαν

²⁶ οταν δε ελθη ο παρακλητος ον εγω πεμψω υμιν παρα του πατρος το πνευμα της αληθειας ο παρα του πατρος εκπορευεται εκεινος μαρτυρησει περι εμου

²⁷ και υμεις δε μαρτυρειτε οτι απ αρχης μετ εμου εστε

Chapter 16

- ¹ταυτα λελαληκα υμιν ινα μη σκανδαλισθητε
²αποσυναγωγους ποιησουσιν υμας αλλ ερχεται ωρα ινα πας ο αποκτεινας υμας δοξη λατρειαν προσφερειν τω θεω
³και ταυτα ποιησουσιν υμιν οτι ουκ εγνωσαν τον πατερα ουδε εμε
⁴αλλα ταυτα λελαληκα υμιν ινα οταν ελθη η ωρα μνημονευητε αυτων οτι εγω ειπον υμιν ταυτα δε υμιν εξ αρχης ουκ ειπον οτι μεθ υμων ημην
⁵νυν δε υπαγω προς τον πεμψαντα με και ουδεις εξ υμων ερωτα με που υπαγεις
⁶αλλ οτι ταυτα λελαληκα υμιν η λυπη πεπληρωκεν υμων την καρδιαν
⁷αλλ εγω την αληθειαν λεγω υμιν συμφερει υμιν ινα εγω απελθω εαν γαρ μη απελθω ο παρακλητος ουκ ελευσεται προς υμας εαν δε πορευθω πεμψω αυτον προς υμας
⁸και ελθων εκεινος ελεγξει τον κοσμον περι αμαρτιας και περι δικαιοσυνης και περι κρισεως
⁹περι αμαρτιας μεν οτι ου πιστευουσιν εις εμε
¹⁰περι δικαιοσυνης δε οτι προς τον πατερα μου υπαγω και ουκ ετι θεωρειτε με
¹¹περι δε κρισεως οτι ο αρχων του κοσμου τουτου κεκριται
¹²ετι πολλα εχω λεγειν υμιν αλλ ου δυνασθε βασταζειν αρτι
¹³οταν δε ελθη εκεινος το πνευμα της αληθειας οδηγησει υμας εις πασαν την αληθειαν ου γαρ λαλησει αφ εαυτου αλλ οσα αν ακουση λαλησει και τα ερχομενα αναγγελοι υμιν
¹⁴εκεινος εμε δοξασει οτι εκ του εμου ληψεται και αναγγελοι υμιν
¹⁵παντα οσα εχει ο πατηρ εμα εστιν δια τουτο ειπον οτι εκ του εμου ληψεται και αναγγελοι υμιν
¹⁶μικρον και ου θεωρειτε με και παλιν μικρον και οψεσθε με οτι εγω υπαγω προς τον πατερα
¹⁷ειπον ουν εκ των μαθητων αυτου προς αλληλους τι εστιν τουτο ο λεγει ημιν μικρον και ου θεωρειτε με και παλιν μικρον και οψεσθε με και οτι εγω υπαγω προς τον πατερα
¹⁸ελεγον ουν τουτο τι εστιν ο λεγει το μικρον ουκ οίδαμεν τι λαλει
¹⁹εγνω ουν ο ιησους οτι ηθελον αυτον ερωταν και ειπεν αυτοις περι τουτου ζητειτε μετ αλληλων οτι ειπον μικρον και ου θεωρειτε με και παλιν μικρον και οψεσθε με
²⁰αμην αμην λεγω υμιν οτι κλαυσετε και θρηνησετε υμεις ο δε κοσμος χαρησεται υμεις δε λυπηθησεσθε αλλ η λυπη υμων εις χαραν γενησεται
²¹η γυνη οταν τικτη λυπην εχει οτι ηλθεν η ωρα αυτης οταν δε γεννηση το παιδιον ουκ ετι μνημονευει της θλιψεως δια την χαραν οτι εγεννηθη ανθρωπος εις τον κοσμον
²²και υμεις ουν λυπην μεν νυν εχετε παλιν δε οψομαι υμας και χαρησεται υμων η καρδια και την χαραν υμων ουδεις αιρει αφ υμων
²³και εν εκεινη τη ημερα εμε ουκ ερωτησετε ουδεν αμην αμην λεγω υμιν οτι οσα αν αιτησητε τον πατερα εν τω ονοματι μου δωσει υμιν

²⁴εως αρτι ουκ ητησατε ουδεν εν τω ονοματι μου αιτειτε και ληψεσθε ινα η χαρα υμων η πεπληρωμενη

²⁵ταυτα εν παροιμιαις λελαληκα υμιν ερχεται ωρα οτε ουκ ετι εν παροιμιαις λαλησω υμιν αλλα παρρησια περι του πατρος αναγγελω υμιν

²⁶εν εκεινη τη ημερα εν τω ονοματι μου αιτησεσθε και ου λεγω υμιν οτι εγω ερωτησω τον πατερα περι υμων

²⁷αυτος γαρ ο πατηρ φιλει υμας οτι υμεις εμε πεφιληκατε και πεπιστευκατε οτι εγω παρα του θεου εξηλθον

²⁸εξηλθον παρα του πατρος και εληλυθα εις τον κοσμον παλιν αφημι τον κοσμον και πορευομαι προς τον πατερα

²⁹λεγουσιν αυτω οι μαθηται αυτου ιδε νυν παρρησια λαλεις και παροιμιαν ουδεμιαν λεγεις

³⁰νυν οιδαμεν οτι οιδας παντα και ου χρειαν εχεις ινα τις σε ερωτα εν τουτω πιστευομεν οτι απο θεου εξηλθες

³¹απεκριθη αυτοις ο ιησους αρτι πιστευετε

³²ιδου ερχεται ωρα και νυν εληλυθεν ινα σκορπισθητε εκαστος εις τα ιδια και εμε μονον αφητε και ουκ ειμι μονος οτι ο πατηρ μετ εμου εστιν

³³ταυτα λελαληκα υμιν ινα εν εμοι ειρηνην εχητε εν τω κοσμω θλιψιν εξετε αλλα θαρσειτε εγω νενικηκα τον κοσμον

Chapter 17

¹ταυτα ελαλησεν ο ιησους και επηρεν τους οφθαλμους αυτου εις τον ουρανον και ειπεν πατερ εληλυθεν η ωρα δοξασον σου τον υιον ινα και ο υιος σου δοξαση σε
²καθως εδωκας αυτω εξουσιαν πασης σαρκος ινα παν ο δεδωκας αυτω δωση αυτοις ζων αιωνιον
³αυτη δε εστιν η αιωνιος ζωη ινα γινωσκωσιν σε τον μονον αληθινον θεον και ον απεστειλας ιησουν χριστον
⁴εγω σε εδοξασα επι της γης το εργον ετελειωσα ο δεδωκας μοι ινα ποιησω
⁵και νυν δοξασον με συ πατερ παρα σεαυτω τη δοξη η ειχον προ του τον κοσμον ειναι παρα σοι
⁶εφανερωσα σου το ονομα τοις ανθρωποις ους δεδωκας μοι εκ του κοσμου σοι ησαν και εμοι αυτους δεδωκας και τον λογον σου τετηρηκασιν
⁷νυν εγνωκαν οτι παντα οσα δεδωκας μοι παρα σου εστιν
⁸οτι τα ρηματα α δεδωκας μοι δεδωκα αυτοις και αυτοι ελαβον και εγνωσαν αληθως οτι παρα σου εξηλθον και επιστευσαν οτι συ με απεστειλας
⁹εγω περι αυτων ερωτω ου περι του κοσμου ερωτω αλλα περι ων δεδωκας μοι οτι σοι εισιν
¹⁰και τα εμα παντα σα εστιν και τα σα εμα και δεδοξασμαι εν αυτοις
¹¹και ουκ ετι ειμι εν τω κοσμω και ουτοι εν τω κοσμω εισιν και εγω προς σε ερχομαι πατερ αγιε τηρησον αυτους εν τω ονοματι σου ους δεδωκας μοι ινα ωσιν εν καθως ημεις
¹²οτε ημην μετ αυτων εν τω κοσμω εγω ετηρουν αυτους εν τω ονοματι σου ους δεδωκας μοι εφυλαξα και ουδεις εξ αυτων απωλετο ει μη ο υιος της απωλειας ινα η γραφη πληρωθη
¹³νυν δε προς σε ερχομαι και ταυτα λαλω εν τω κοσμω ινα εχωσιν την χαραν την εμην πεπληρωμενην εν αυτοις
¹⁴εγω δεδωκα αυτοις τον λογον σου και ο κοσμος εμισησεν αυτους οτι ουκ εισιν εκ του κοσμου καθως εγω ουκ ειμι εκ του κοσμου
¹⁵ουκ ερωτω ινα αρης αυτους εκ του κοσμου αλλ ινα τηρησης αυτους εκ του πονηρου
¹⁶εκ του κοσμου ουκ εισιν καθως εγω εκ του κοσμου ουκ ειμι
¹⁷αγιασον αυτους εν τη αληθεια σου ο λογος ο σος αληθεια εστιν
¹⁸καθως εμε απεστειλας εις τον κοσμον καγω απεστειλα αυτους εις τον κοσμον
¹⁹και υπερ αυτων εγω αγιαζω εμαυτον ινα και αυτοι ωσιν ηγιασμενοι εν αληθεια
²⁰ου περι τουτων δε ερωτω μονον αλλα και περι των πιστευσοντων δια του λογου αυτων εις εμε
²¹ινα παντες εν ωσιν καθως συ πατερ εν εμοι καγω εν σοι ινα και αυτοι εν ημιν εν ωσιν ινα ο κοσμος πιστευση οτι συ με απεστειλας
²²και εγω την δοξαν ην δεδωκας μοι δεδωκα αυτοις ινα ωσιν εν καθως ημεις εν εσμεν
²³εγω εν αυτοις και συ εν εμοι ινα ωσιν τετελειωμενοι εις εν και ινα γινωσκη ο κοσμος οτι συ με απεστειλας και ηγαπησας αυτους καθως εμε ηγαπησας

²⁴πατερ ους δεδωκας μοι θελω ινα οπου ειμι εγω κακεινοι ωσιν μετ εμου ινα θεωρωσιν την δοξαν την εμην ην εδωκας μοι οτι ηγαπησας με προ καταβολης κοσμου

²⁵πατερ δικαιε και ο κοσμος σε ουκ εγνω εγω δε σε εγνω και ουτοι εγνωσαν οτι συ με απεστειλας

²⁶και εγνωρισα αυτοις το ονομα σου και γνωρισω ινα η αγαπη ην ηγαπησας με εν αυτοις η καγω εν αυτοις

Chapter 18

¹ταυτα ειπων ο ιησους εξηλθεν συν τοις μαθηταις αυτου περαν του χειμαρρου των κεδρων οπου ην κηπος εις ον εισηλθεν αυτος και οι μαθηται αυτου
²ηδει δε και ιουδας ο παραδιδους αυτον τον τοπον οτι πολλακις συνηχθη ο ιησους εκει μετα των μαθητων αυτου
³ο ουν ιουδας λαβων την σπειραν και εκ των αρχιερων και φαρισαιων υπηρετας ερχεται εκει μετα φανων και λαμπαδων και οπλων
⁴ιησους ουν ειδωσ παντα τα ερχομενα επ αυτον εξελθων ειπεν αυτοις τινα ζητειτε
⁵απεκριθησαν αυτω ιησουν τον ναζωραιον λεγει αυτοις ο ιησους εγω ειμι εισηκει δε και ιουδας ο παραδιδους αυτον μετ αυτων
⁶ως ουν ειπεν αυτοις οτι εγω ειμι απηλθον εις τα οπισω και επεσον χαμαι
⁷παλιν ουν αυτους επηρωτησεν τινα ζητειτε οι δε ειπον ιησουν τον ναζωραιον
⁸απεκριθη ο ιησους ειπον υμιν οτι εγω ειμι ει ουν εμε ζητειτε αφετε τουτους υπαγειν
⁹ινα πληρωθη ο λογος ον ειπεν οτι ους δεδωκας μοι ουκ απωλεσα εξ αυτων ουδεν
¹⁰σιμων ουν πετρος εχων μαχαιραν ειλκυσεν αυτην και επαισεν τον του αρχιερεως δουλον και απεκοψεν αυτου το ωτιον το δεξιον ην δε ονομα τω δουλω μαλχος
¹¹ειπεν ουν ο ιησους τω πετρω βαλε την μαχαιραν σου εις την θηκην το ποτηριον ο δεδωκεν μοι ο πατηρ ου μη πιω αυτο
¹²η ουν σπειρα και ο χιλιαρχος και οι υπηρεται των ιουδαιων συνελαβον τον ιησουν και εδησαν αυτον
¹³και απηγαγον αυτον προς ανναν πρωτον ην γαρ πενθερος του καιαφα ος ην αρχιερευς του ενιαυτου εκεινου
¹⁴ην δε καιαφας ο συμβουλευσας τοις ιουδαιοις οτι συμφερει ενα ανθρωπον απολεσθαι υπερ του λαου
¹⁵ηκολουθει δε τω ιησου σιμων πετρος και αλλος μαθητης ο δε μαθητης εκεινος ην γνωστος τω αρχιερει και συνεισηλθεν τω ιησου εις την αυλην του αρχιερεως
¹⁶ο δε πετρος εισηκει προς τη θυρα εξω εξηλθεν ουν ο μαθητης ο αλλος ος ην γνωστος τω αρχιερει και ειπεν τη θυρωρω και εισηγαγεν τον πετρον
¹⁷λεγει ουν η παιδισκη η θυρωρος τω πετρω μη και συ εκ των μαθητων ει του ανθρωπου τουτου λεγει εκεινος ουκ ειμι
¹⁸εισηκεισαν δε οι δουλοι και οι υπηρεται ανθρακιαν πεποιηκοτες οτι ψυχος ην και εθερμαινοντο ην δε μετ αυτων ο πετρος εστωσ και θερμαινομενος
¹⁹ο ουν αρχιερευς ηρωτησεν τον ιησουν περι των μαθητων αυτου και περι της διδαχης αυτου
²⁰απεκριθη αυτω ο ιησους εγω παρησια ελαλησα τω κοσμω εγω παντοτε εδιδαξα εν τη συναγωγη και εν τω ιερω οπου παντοτε οι ιουδαιοι συνερχονται και εν κρυπτω ελαλησα ουδεν

²¹τι με επερωτας επερωτησον τους ακηκοοτας τι ελαλησα αυτοις ιδε ουτοι οιδασιν α ειπον
εγω
²²ταυτα δε αυτου ειποντος εις των υπηρετων παρεστηκως εδωκεν ραπισμα τω ιησου ειπων
ουτως αποκρινη τω αρχιερει
²³απεκριθη αυτω ο ιησους ει κακως ελαλησα μαρτυρησον περι του κακου ει δε καλως τι
με δερεις
²⁴απεστειλεν ουν αυτον ο αννας δεδεμενον προς καιαφαν τον αρχιερα
²⁵ην δε σιμων πετρος εστως και θερμαινομενος ειπον ουν αυτω μη και συ εκ των μαθητων
αυτου ει ηρνησατο εκεινος και ειπεν ουκ ειμι
²⁶λεγει εις εκ των δουλων του αρχιερεως συγγενης ων ου απεκοψεν πετρος το ωτιον ουκ
εγω σε ειδον εν τω κηπω μετ αυτου
²⁷παλιν ουν ηρνησατο ο πετρος και ευθεως αλεκτωρ εφωνησεν
²⁸αγουσιν ουν τον ιησουν απο του καιαφα εις το πραιτωριον ην δε πρωια και αυτοι ουκ
εισηλθον εις το πραιτωριον ινα μη μιανθωσιν αλλ ινα φαγωσιν το πασχα
²⁹εξηλθεν ουν ο πιλατος προς αυτους και ειπεν τινα κατηγοριαν φερετε κατα του ανθρωπου
τουτου
³⁰απεκριθησαν και ειπον αυτω ει μη ην ουτος κακοποιος ουκ αν σοι παρεδωκαμεν αυτον
³¹ειπεν ουν αυτοις ο πιλατος λαβετε αυτον υμεις και κατα τον νομον υμων κρινατε αυτον
ειπον ουν αυτω οι ιουδαιοι ημιν ουκ εξεστιν αποκτειναι ουδενα
³²ινα ο λογος του ιησου πληρωθη ον ειπεν σημαινων ποιω θανατω ημελλεν αποθνησκειν
³³εισηλθεν ουν εις το πραιτωριον παλιν ο πιλατος και εφωνησεν τον ιησουν και ειπεν
αυτω συ ει ο βασιλευς των ιουδαιων
³⁴απεκριθη αυτω ο ιησους αφ εαυτου συ τουτο λεγεις η αλλοι σοι ειπον περι εμου
³⁵απεκριθη ο πιλατος μητι εγω ιουδαιος ειμι το εθνος το σον και οι αρχιερεις παρεδωκαν
σε εμοι τι εποιησας
³⁶απεκριθη ο ιησους η βασιλεια η εμη ουκ εστιν εκ του κοσμου τουτου ει εκ του κοσμου
τουτου ην η βασιλεια η εμη οι υπηρεται αν οι εμοι ηγωνιζοντο ινα μη παραδοθω τοις
ιουδαιοις νυν δε η βασιλεια η εμη ουκ εστιν εντευθεν
³⁷ειπεν ουν αυτω ο πιλατος ουκουν βασιλευς ει συ απεκριθη ο ιησους συ λεγεις οτι βασιλευς
ειμι εγω εγω εις τουτο γεγεννημαι και εις τουτο εληλυθα εις τον κοσμον ινα μαρτυρησω
τη αληθεια πας ο ων εκ της αληθειας ακουει μου της φωνης
³⁸λεγει αυτω ο πιλατος τι εστιν αληθεια και τουτο ειπων παλιν εξηλθεν προς τους ιουδαιους
και λεγει αυτοις εγω ουδεμιαν αιτιαν ευρισκω εν αυτω
³⁹εστιν δε συνηθεια υμιν ινα ενα υμιν απολυσω εν τω πασχα βουλεσθε ουν υμιν απολυσω
τον βασιλεα των ιουδαιων
⁴⁰εκραυγασαν ουν παλιν παντες λεγοντες μη τουτον αλλα τον βαραββαν ην δε ο βαραββας
ληστης

Chapter 19

- ¹τοτε ουν ελαβεν ο πιλατος τον ιησουν και εμαστιγωσεν
- ²και οι στρατιωται πλεξαντες στεφανον εξ ακανθων επεθηκαν αυτου τη κεφαλη και ιματιον πορφυρου περιεβαλον αυτον
- ³και ελεγον χαιρε ο βασιλευς των ιουδαιων και εδιδουν αυτω ραπισματα
- ⁴εξηλθεν ουν παλιν εξω ο πιλατος και λεγει αυτοις ιδε αγω υμιν αυτον εξω ινα γνωτε οτι εν αυτω ουδεμιαν αιτιαν ευρισκω
- ⁵εξηλθεν ουν ο ιησους εξω φορων τον ακανθινον στεφανον και το πορφυρου ιματιον και λεγει αυτοις ιδε ο ανθρωπος
- ⁶οτε ουν ειδον αυτον οι αρχιερεις και οι υπηρεται εκραυγασαν λεγοντες σταυρωσον σταυρωσον λεγει αυτοις ο πιλατος λαβετε αυτον υμεις και σταυρωσατε εγω γαρ ουχ ευρισκω εν αυτω αιτιαν
- ⁷απεκριθησαν αυτω οι ιουδαιοι ημεις νομον εχομεν και κατα τον νομον ημων οφειλει αποθανειν οτι εαυτον υιον του θεου εποιησεν
- ⁸οτε ουν ηκουσεν ο πιλατος τουτον τον λογον μαλλον εφοβηθη
- ⁹και εισηλθεν εις το πραιτωριον παλιν και λεγει τω ιησου ποθεν ει συ ο δε ιησους αποκρισιν ουκ εδωκεν αυτω
- ¹⁰λεγει ουν αυτω ο πιλατος εμοι ου λαλεις ουκ οιδας οτι εξουσιαν εχω σταυρωσαι σε και εξουσιαν εχω απολυσαι σε
- ¹¹απεκριθη ο ιησους ουκ ειχες εξουσιαν ουδεμιαν κατ εμου ει μη ην σοι δεδομενον ανωθεν δια τουτου ο παραδιδους με σοι μειζονα αμαρτιαν εχει
- ¹²εκ τουτου εζητει ο πιλατος απολυσαι αυτον ο δε ιουδαιοι εκραζον λεγοντες εαν τουτον απολυσης ουκ ει φιλος του καισαρος πας ο βασιλεα αυτον ποιων αντιλεγει τω καισαρι
- ¹³ο ουν πιλατος ακουσας τουτον τον λογον ηγαγεν εξω τον ιησουν και εκαθισεν επι του βηματος εις τοπον λεγομενον λιθοστρωτον εβραιστι δε γαββαθα
- ¹⁴ην δε παρασκευη του πασχα ωρα δε ωσει εκτη και λεγει τοις ιουδαιοις ιδε ο βασιλευς υμων
- ¹⁵οι δε εκραυγασαν αρον αρον σταυρωσον αυτον λεγει αυτοις ο πιλατος τον βασιλεα υμων σταυρωσω απεκριθησαν οι αρχιερεις ουκ εχομεν βασιλεα ει μη καισαρα
- ¹⁶τοτε ουν παρεδωκεν αυτον αυτοις ινα σταυρωθη παρελαβον δε τον ιησουν και απηγαγον
- ¹⁷και βασταζων τον σταυρον αυτου εξηλθεν εις τον λεγομενον κρανιου τοπον ος λεγεται εβραιστι γολγοθα
- ¹⁸οπου αυτον εσταυρωσαν και μετ αυτου αλλους δυο εντευθεν και εντευθεν μεσον δε τον ιησουν
- ¹⁹εγραψεν δε και τιτλον ο πιλατος και εθηκεν επι του σταυρου ην δε γεγραμμενον ιησους ο ναζωραιος ο βασιλευς των ιουδαιων
- ²⁰τουτον ουν τον τιτλον πολλοι ανεγνωσαν των ιουδαιων οτι εγγυς ην της πολεως ο τοπος οπου εσταυρωθη ο ιησους και ην γεγραμμενον εβραιστι ελληνιστι ρωμαιστι

- ²¹ελεγον ουν τω πιλατω οι αρχιερεις των ιουδαιων μη γραφε ο βασιλευς των ιουδαιων
αλλ οτι εκεινος ειπεν βασιλευς ειμι των ιουδαιων
- ²²απεκριθη ο πιλατος ο γεγραφα γεγραφα
- ²³οι ουν στρατιωται οτε εσταυρωσαν τον ιησουν ελαβον τα ιματια αυτου και εποιησαν
τεσσαρα μερη εκαστω στρατιωτη μερος και τον χιτωνα ην δε ο χιτων αρραφος εκ των
ανωθεν υφαντος δι ολου
- ²⁴ειπον ουν προς αλληλους μη σχισωμεν αυτον αλλα λαχωμεν περι αυτου τινος εσται ινα
η γραφη πληρωθη η λεγουσα διεμερισαντο τα ιματια μου εαυτοις και επι τον ιματισμον
μου εβαλον κληρον οι μεν ουν στρατιωται ταυτα εποιησαν
- ²⁵ειστηκεισαν δε παρα τω σταυρω του ιησου η μητηρ αυτου και η αδελφη της μητρος αυτου
μαρια η του κλωπα και μαρια η μαγδαλινη
- ²⁶ιησους ουν ιδων την μητερα και τον μαθητην παρεστωτα ον ηγαπα λεγει τη μητρι αυτου
γυναι ιδου ο υιος σου
- ²⁷ειτα λεγει τω μαθητη ιδου η μητηρ σου και απ εκεινης της ωρας ελαβεν αυτην ο μαθητης
εις τα ιδια
- ²⁸μετα τουτο ειδως ο ιησους οτι παντα ηδη τετελεσται ινα τελειωθη η γραφη λεγει διψω
- ²⁹σκευος ουν εκειτο οξους μεστον οι δε πλησαντες σπογγον οξους και υσσωπω περιθεντες
προσηνεγκαν αυτου τω στοματι
- ³⁰οτε ουν ελαβεν το οξος ο ιησους ειπεν τετελεσται και κλινας την κεφαλην παρεδωκεν
το πνευμα
- ³¹οι ουν ιουδαιοι επει παρασκευη ην ινα μη μεινη επι του σταυρου τα σωματα εν τω
σαββατω ην γαρ μεγαλη η ημερα εκεινου του σαββατου ηρωτησαν τον πιλατον ινα
κατεαγωσιν αυτων τα σκελη και αρθωσιν
- ³²ηλθον ουν οι στρατιωται και του μεν πρωτου κατεαξαν τα σκελη και του αλλου του
συσταυρωθεντος αυτω
- ³³επι δε τον ιησουν ελθοντες ως ειδον αυτον ηδη τεθνηκοτα ου κατεαξαν αυτου τα σκελη
- ³⁴αλλ εις των στρατιωτων λογχη αυτου την πλευραν ενυξεν και ευθυσ εξηλθεν αιμα και
υδωρ
- ³⁵και ο εωρακως μεμαρτυρηκεν και αληθινη αυτου εστιν η μαρτυρια κακεινος οιδεν οτι
αληθη λεγει ινα υμεις πιστευσητε
- ³⁶εγενετο γαρ ταυτα ινα η γραφη πληρωθη οστουν ου συντριβησεται αυτου
- ³⁷και παλιν ετερα γραφη λεγει οψονται εις ον εξεκεντησαν
- ³⁸μετα δε ταυτα ηρωτησεν τον πιλατον ο ιωσηφ ο απο αριμαθαιας ων μαθητης του ιησου
κεκρυμμενος δε δια τον φοβον των ιουδαιων ινα αρη το σωμα του ιησου και επετρεψεν ο
πιλατος ηλθεν ουν και ηρεν το σωμα του ιησου
- ³⁹ηλθεν δε και νικοδημος ο ελθων προς τον ιησουν νυκτος το πρωτον φερων μιγμα σμυρνης
και αλοης ωσει λιτρας εκατον

⁴⁰ελαβον ουν το σωμα του ιησου και εδησαν αυτο οθονιοις μετα των αρωματων καθως εθος εστιν τοις ιουδαιοις ενταφιαζειν

⁴¹ην δε εν τω τοπω οπου εσταυρωθη κηπος και εν τω κηπω μνημειον καινον εν ω ουδεπω ουδεις ετεθη

⁴²εκει ουν δια την παρασκευην των ιουδαιων οτι εγγυς ην το μνημειον εθηκαν τον ιησουν

Chapter 20

¹τη δε μια των σαββατων μαρια η μαγδαληνη ερχεται πρωι σκοτιας ετι ουσης εις το μνημειον και βλεπει τον λιθον ηρμενον εκ του μνημειου
²τρεχει ουν και ερχεται προς σιμωνα πετρον και προς τον αλλον μαθητην ον εφιλει ο ιησους και λεγει αυτοις ηραν τον κυριον εκ του μνημειου και ουκ οιδαμεν που εθηκαν αυτον
³εξηλθεν ουν ο πετρος και ο αλλος μαθητης και ηρχοντο εις το μνημειον
⁴ετρεχον δε οι δυο ομου και ο αλλος μαθητης προεδραμεν ταχιον του πετρου και ηλθεν πρωτος εις το μνημειον
⁵και παρακυψας βλεπει κειμενα τα οθονια ου μεντοι εισηλθεν
⁶ερχεται ουν σιμων πετρος ακολουθων αυτω και εισηλθεν εις το μνημειον και θεωρει τα οθονια κειμενα
⁷και το σουδαριον ο ην επι της κεφαλης αυτου ου μετα των οθονιων κειμενον αλλα χωρις εντετυλιγμενον εις ενα τοπον
⁸τοτε ουν εισηλθεν και ο αλλος μαθητης ο ελθων πρωτος εις το μνημειον και ειδεν και επιστευσεν
⁹ουδεπω γαρ ηδεισαν την γραφην οτι δει αυτον εκ νεκρων αναστηναι
¹⁰απηλθον ουν παλιν προς εαυτους οι μαθηται
¹¹μαρια δε εισηκει προς το μνημειον κλαιουσα εξω ως ουν εκλαιεν παρεκυψεν εις το μνημειον
¹²και θεωρει δυο αγγελους εν λευκοις καθεζομενους ενα προς τη κεφαλη και ενα προς τοις ποσιν οπου εκειτο το σωμα του ιησου
¹³και λεγουσιν αυτη εκεινοι γυναι τι κλαιεις λεγει αυτοις οτι ηραν τον κυριον μου και ουκ οιδα που εθηκαν αυτον
¹⁴και ταυτα ειπουσα εστραφη εις τα οπισω και θεωρει τον ιησουν εστωτα και ουκ ηδει οτι ο ιησους εστιν
¹⁵λεγει αυτη ο ιησους γυναι τι κλαιεις τινα ζητεις εκεινη δοκουσα οτι ο κηπουρος εστιν λεγει αυτω κυριε ει συ εβαστασας αυτον ειπε μοι που αυτον εθηκας καγω αυτον αρω
¹⁶λεγει αυτη ο ιησους μαρια στραφεισα εκεινη λεγει αυτω ραββουνι ο λεγεται διδασκαλε
¹⁷λεγει αυτη ο ιησους μη μου απτου ουπω γαρ αναβεβηκα προς τον πατερα μου πορευου δε προς τους αδελφους μου και ειπε αυτοις αναβαινω προς τον πατερα μου και πατερα υμων και θεον μου και θεον υμων
¹⁸ερχεται μαρια η μαγδαληνη απαγγελουσα τοις μαθηταις οτι εωρακεν τον κυριον και ταυτα ειπεν αυτη
¹⁹ουσης ουν οψιας τη ημερα εκεινη τη μια των σαββατων και των θυρων κεκλεισμενων οπου ησαν οι μαθηται συνηγμενοι δια τον φοβον των ιουδαιων ηλθεν ο ιησους και εστη εις το μεσον και λεγει αυτοις ειρηνη υμιν

- ²⁰ και τουτο ειπων εδειξεν αυτοις τας χειρας και την πλευραν αυτου εχαρησαν ουν οι μαθηται ιδοντες τον κυριον
- ²¹ ειπεν ουν αυτοις ο ιησους παλιν ειρηνη υμιν καθως απεσταλκεν με ο πατηρ καγω πεμπω υμας
- ²² και τουτο ειπων ενεφουσησεν και λεγει αυτοις λαβετε πνευμα αγιον
- ²³ αν τινων αφητε τας αμαρτιας αφιενται αυτοις αν τινων κρατητε κεκρατηνται
- ²⁴ θωμας δε εις εκ των δωδεκα ο λεγομενος διδυμος ουκ ην μετ αυτων οτε ηλθεν ο ιησους
- ²⁵ ελεγον ουν αυτω οι αλλοι μαθηται εωρακαμεν τον κυριον ο δε ειπεν αυτοις εαν μη ιδω εν ταις χερσιν αυτου τον τυπον των ηλων και βαλω τον δακτυλον μου εις τον τυπον των ηλων και βαλω την χειρα μου εις την πλευραν αυτου ου μη πιστευσω
- ²⁶ και μεθ ημερας οκτω παλιν ησαν εσω οι μαθηται αυτου και θωμας μετ αυτων ερχεται ο ιησους των θυρων κεκλεισμενων και εστη εις το μεσον και ειπεν ειρηνη υμιν
- ²⁷ ειτα λεγει τω θωμα φερε τον δακτυλον σου ωδε και ιδε τας χειρας μου και φερε την χειρα σου και βαλε εις την πλευραν μου και μη γινου απιστος αλλα πιστος
- ²⁸ και απεκριθη ο θωμας και ειπεν αυτω ο κυριος μου και ο θεος μου
- ²⁹ λεγει αυτω ο ιησους οτι εωρακας με θωμα πεπιστευκας μακαριοι οι μη ιδοντες και πιστευσαντες
- ³⁰ πολλα μεν ουν και αλλα σημεια εποιησεν ο ιησους ενωπιον των μαθητων αυτου α ουκ εστιν γεγραμμενα εν τω βιβλιω τουτω
- ³¹ ταυτα δε γεγραπται ινα πιστευσητε οτι ο ιησους εστιν ο χριστος ο υιος του θεου και ινα πιστευοντες ζωην εχητε εν τω ονοματι αυτου

Chapter 21

¹μετα ταυτα εφανερωσεν εαυτον παλιν ο ιησους τοις μαθηταις επι της θαλασσης της τιβεριαδος εφανερωσεν δε ουτως
²ησαν ομου σιμων πετρος και θωμας ο λεγομενος διδυμος και ναθαναηλ ο απο κανα της γαλιλαιας και οι του ζεβεδαιου και αλλοι εκ των μαθητων αυτου δυο
³λεγει αυτοις σιμων πετρος υπαγω αλιευειν λεγουσιν αυτω ερχομεθα και ημεις συν σοι εξηλθον και ανεβησαν εις το πλοιον ευθυσ και εν εκεινη τη νυκτι επιασαν ουδεν
⁴πρωιας δε ηδη γενομενης εστη ο ιησους εις τον αιγιαλον ου μεντοι ηδειςαν οι μαθηται οτι ιησους εστιν
⁵λεγει ουν αυτοις ο ιησους παιδια μη τι προσφαγιον εχετε απεκριθησαν αυτω ου
⁶ο δε ειπεν αυτοις βαλετε εις τα δεξια μερη του πλοιου το δικτυον και ευρησετε εβαλον ουν και ουκ ετι αυτο ελκυσαι ισχυσαν απο του πληθους των ιχθυων
⁷λεγει ουν ο μαθητης εκεινος ον ηγαπα ο ιησους τω πετρω ο κυριος εστιν σιμων ουν πετρος ακουσας οτι ο κυριος εστιν τον επενδυτην διεζωσατο ην γαρ γυμνος και εβαλεν εαυτον εις την θαλασσαν
⁸οι δε αλλοι μαθηται τω πλοιαριω ηλθον ου γαρ ησαν μακραν απο της γης αλλ ως απο πηχων διακοσιων συροντες το δικτυον των ιχθυων
⁹ως ουν απεβησαν εις την γην βλεπουσιν ανθρακιαν κειμενην και οψαριον επικειμενον και αρτον
¹⁰λεγει αυτοις ο ιησους ενεγκατε απο των οψαριων ων επιασατε νυν
¹¹ανεβη σιμων πετρος και ειλικυσεν το δικτυον επι της γης μεστον ιχθυων μεγαλων εκατον πεντηκοντατριων και τοσουτων οντων ουκ εσχισθη το δικτυον
¹²λεγει αυτοις ο ιησους δευτε αριστησατε ουδεις δε ετολμα των μαθητων εξετασαι αυτον συ τις ει ειδοτες οτι ο κυριος εστιν
¹³ερχεται ουν ο ιησους και λαμβανει τον αρτον και διδωσιν αυτοις και το οψαριον ομοιως
¹⁴τουτο ηδη τριτον εφανερωθη ο ιησους τοις μαθηταις αυτου εγερθεις εκ νεκρων
¹⁵οτε ουν ηριστησαν λεγει τω σιμωνι πετρω ο ιησους σιμων ιωνα αγαπας με πλειον τουτων λεγει αυτω ναι κυριε συ οιδας οτι φιλω σε λεγει αυτω βοσκε τα αρνια μου
¹⁶λεγει αυτω παλιν δευτερον σιμων ιωνα αγαπας με λεγει αυτω ναι κυριε συ οιδας οτι φιλω σε λεγει αυτω ποιμαινε τα προβατα μου
¹⁷λεγει αυτω το τριτον σιμων ιωνα φιλεις με ελυπηθη ο πετρος οτι ειπεν αυτω το τριτον φιλεις με και ειπεν αυτω κυριε συ παντα οιδας συ γινωσκεις οτι φιλω σε λεγει αυτω ο ιησους βοσκε τα προβατα μου
¹⁸αμην αμην λεγω σοι οτε ης νεωτερος εζωννυες σεαυτον και περιεπατεις οπου ηθελες οταν δε γηρασης εκτενεις τας χειρας σου και αλλος σε ζωσει και οισει οπου ου θελεις
¹⁹τουτο δε ειπεν σημαινων ποιω θανατω δοξασει τον θεον και τουτο ειπων λεγει αυτω ακολουθει μοι

²⁰ επιστραφεις δε ο πετρος βλεπει τον μαθητην ον ηγαπα ο ιησους ακολουθουντα ος και ανεπεσεν εν τω δειπνω επι το σθηθος αυτου και ειπεν κυριε τις εστιν ο παραδιδους σε
²¹ τουτον ιδων ο πετρος λεγει τω ιησου κυριε ουτος δε τι
²² λεγει αυτω ο ιησους εαν αυτον θελω μενειν εως ερχομαι τι προς σε συ ακολουθει μοι
²³ εξηλθεν ουν ο λογος ουτος εις τους αδελφους οτι ο μαθητης εκεινος ουκ αποθνησκει και ουκ ειπεν αυτω ο ιησους οτι ουκ αποθνησκει αλλ εαν αυτον θελω μενειν εως ερχομαι τι προς σε
²⁴ ουτος εστιν ο μαθητης ο μαρτυρων περι τουτων και γραψας ταυτα και οιδαμεν οτι αληθης εστιν η μαρτυρια αυτου
²⁵ εστιν δε και αλλα πολλα οσα εποιησεν ο ιησους ατινα εαν γραφηται καθ εν ουδε αυτον οιμαι τον κοσμον χωρησαι τα γραφομενα βιβλια αμην

Acts

Chapter 1

- ¹τον μεν πρωτον λογον εποιησαμην περι παντων ω θεοφιλε ων ηρξατο ο ιησους ποιειν τε και διδασκειν
- ²αχρι ης ημερας εντειλαμενος τοις αποστολοις δια πνευματος αγιου ους εξελεξατο ανεληφθη
- ³οις και παρεστησεν εαυτον ζωντα μετα το παθειν αυτον εν πολλοις τεκμηριοις δι ημερων τεσσαρακοντα οπτανομενος αυτοις και λεγων τα περι της βασιλειας του θεου
- ⁴και συναλιζομενος μετ αυτων παρηγγειλεν αυτοις απο ιεροσολυμων μη χωριζεσθαι αλλα περιμενειν την επαγγελιαν του πατρος ην ηκουσατε μου
- ⁵οτι ιωαννης μεν εβαπτισεν υδατι υμεις δε βαπτισθησεσθε εν πνευματι αγιω ου μετα πολλας ταυτας ημερας
- ⁶οι μεν ουν συνελθοντες επηρωτων αυτον λεγοντες κυριε ει εν τω χρονω τουτω αποκαθιστανεις την βασιλειαν τω ισραηλ
- ⁷ειπεν δε προς αυτους ουχ υμων εστιν γνωμαι χρονους η καιρους ους ο πατηρ εθετο εν τη ιδια εξουσια
- ⁸αλλα ληψεσθε δυναμιν επελθοντος του αγιου πνευματος εφ υμας και εσεσθε μοι μαρτυρες εν τε ιερουσαλημ και εν παση τη ιουδαια και σαμαρεια και εως εσχατου της γης
- ⁹και ταυτα ειπων βλεποντων αυτων επηρθη και νεφελη υπελαβεν αυτον απο των οφθαλμων αυτων
- ¹⁰και ως ατενιζοντες ησαν εις τον ουρανον πορευομενου αυτου και ιδου ανδρες δυο παρειστηκεισαν αυτοις εν εσθητι λευκη
- ¹¹οι και ειπον ανδρες γαλιλαιοι τι εστηκατε εμβλεποντες εις τον ουρανον ουτος ο ιησους ο αναληφθεις αφ υμων εις τον ουρανον ουτως ελευσεται ον τροπον εθεασασθε αυτον πορευομενον εις τον ουρανον
- ¹²τοτε υπεστρεψαν εις ιερουσαλημ απο ορους του καλουμενου ελαιωνος ο εστιν εγγυς ιερουσαλημ σαββατου εχον οδον
- ¹³και οτε εισηλθον ανεβησαν εις το υπερων ου ησαν καταμενοντες ο τε πετρος και ιακωβος και ιωαννης και ανδρεας φιλιππος και θωμας βαρθολομαιος και ματθαιος ιακωβος αλφαιου και σιμων ο ζηλωτης και ιουδας ιακωβου
- ¹⁴ουτοι παντες ησαν προσκαρτεροντες ομοθυμαδον τη προσευχη και τη δεησει συν γυναιξιν και μαρια τη μητρι του ιησου και συν τοις αδελφοις αυτου
- ¹⁵και εν ταις ημεραις ταυταις αναστας πετρος εν μεσω των μαθητων ειπεν ην τε οχλος ονοματων επι το αυτο ως εκατον εικοσιν
- ¹⁶ανδρες αδελφοι εδει πληρωθηναι την γραφην ταυτην ην προειπεν το πνευμα το αγιον δια στοματος δαβιδ περι ιουδα του γενομενου οδηγου τοις συλλαβουσιν τον ιησουν
- ¹⁷οτι κατηριθμημενος ην συν ημιν και ελαχεν τον κληρον της διακονιας ταυτης
- ¹⁸ουτος μεν ουν εκτησατο χωριον εκ του μισθου της αδικιας και πρηνης γενομενος ελακησεν μεσος και εξεχυθη παντα τα σπλαγχνα αυτου

¹⁹ και γνωστον εγενετο πασιν τοις κατοικουσιν ιερουσαλημ ωστε κληθηναι το χωριον εκεινο τη ιδια διαλεκτω αυτων ακελδαμα τουτεστιν χωριον αιματος

²⁰ γεγραπται γαρ εν βιβλω ψαλμων γεννηθητω η επαυλις αυτου ερημος και μη εστω ο κατοικων εν αυτη και την επισκοπην αυτου λαβοι ετερος

²¹ δει ουν των συνελθοντων ημιν ανδρων εν παντι χρονω εν ω εισηλθεν και εξηλθεν εφ ημας ο κυριος ιησους

²² αρξαμενος απο του βαπτισματος ιωαννου εως της ημερας ης ανεληφθη αφ ημων μαρτυρα της αναστασεως αυτου γενεσθαι συν ημιν ενα τουτων

²³ και εστησαν δυο ιωσηφ τον καλουμενον βαρσαβαν ος επεκληθη ιουστος και μαθιαν

²⁴ και προσευξαμενοι ειπον συ κυριε καρδιογνωστα παντων αναδειξον εκ τουτων των δυο ον ενα εξελεξω

²⁵ λαβειν τον κληρον της διακονιας ταυτης και αποστολης εξ ης παρεβη ιουδας πορευθησαι εις τον τοπον τον ιδιον

²⁶ και εδωκαν κληρους αυτων και επεσεν ο κληρος επι μαθιαν και συγκατεψηφισθη μετα των ενδεκα αποστολων

Chapter 2

¹ και εν τω συμπληρουσθαι την ημεραν της πεντηκοστης ησαν απαντες ομοθυμαδον επι το αυτο
² και εγενετο αφνω εκ του ουρανου ηχος ωσπερ φερομενης πνοης βιαιας και επληρωσεν ολον τον οικον ου ησαν καθημενοι
³ και ωφθησαν αυτοις διαμεριζομεναι γλωσσαι ωσει πυρος εκαθισεν τε εφ ενα εκαστον αυτων
⁴ και επλησθησαν απαντες πνευματος αγιου και ηρξαντο λαλειν ετεραις γλωσσαις καθως το πνευμα εδιδου αυτοις αποφθεγγεσθαι
⁵ ησαν δε εν ιερουσαλημ κατοικουντες ιουδαιοι ανδρες ευλαβεις απο παντος εθνους των υπο τον ουρανον
⁶ γενομενης δε της φωνης ταυτης συνηλθεν το πληθος και συνεχυθη οτι ηκουον εις εκαστος τη ιδια διαλεκτω λαλουντων αυτων
⁷ εξισταντο δε παντες και εθαυμαζον λεγοντες προς αλληλους ουκ ιδου παντες ουτοι εισιν οι λαλουντες γαλιλαιοι
⁸ και πως ημεις ακουομεν εκαστος τη ιδια διαλεκτω ημων εν η εγεννηθημεν
⁹ παρθοι και μηδοι και ελαμιται και οι κατοικουντες την μεσοποταμιαν ιουδαιαν τε και καππαδοκιαν ποντον και την ασιαν
¹⁰ φρυγιαν τε και παμφυλιαν αιγυπτον και τα μερη της λιβυης της κατα κυρηνην και οι επιδημουντες ρωμαιοι ιουδαιοι τε και προσηλυτοι
¹¹ κρητες και αραβες ακουομεν λαλουντων αυτων ταις ημετεραις γλωσσαις τα μεγαλεια του θεου
¹² εξισταντο δε παντες και διηπορουν αλλος προς αλλον λεγοντες τι αν θελοι τουτο ειναι
¹³ ετεροι δε χλευαζοντες ελεγον οτι γλευκους μεμεστωμενοι εισιν
¹⁴ σταθεις δε πετρος συν τοις ενδεκα επηρεν την φωνην αυτου και απεφθεγγατο αυτοις ανδρες ιουδαιοι και οι κατοικουντες ιερουσαλημ απαντες τουτο υμιν γνωστον εστω και ενωτισασθε τα ρηματα μου
¹⁵ ου γαρ ως υμεις υπολαμβανετε ουτοι μεθουουσιν εστιν γαρ ωρα τριτη της ημερας
¹⁶ αλλα τουτο εστιν το ειρημενον δια του προφητου ιωηλ
¹⁷ και εσται εν ταις εσχαταις ημεραις λεγει ο θεος εκχεω απο του πνευματος μου επι πασαν σαρκα και προφητευσουσιν οι υιοι υμων και αι θυγατερες υμων και οι νεανισκοι υμων ορασεις οψονται και οι πρεσβυτεροι υμων ενυπνια ενυπνιασθησονται
¹⁸ και γε επι τους δουλους μου και επι τας δουλαις μου εν ταις ημεραις εκειναις εκχεω απο του πνευματος μου και προφητευσουσιν
¹⁹ και δωσω τερατα εν τω ουρανω ανω και σημεια επι της γης κατω αιμα και πυρ και ατμιδα καπνου
²⁰ ο ηλιος μεταστραφησεται εις σκοτος και η σεληνη εις αιμα πριν η ελθειν την ημεραν κυριου την μεγαλην και επιφανη

- ²¹ και εσται πας ος αν επικαλεσηται το ονομα κυριου σωθησεται
- ²² ανδρες ισραηλιται ακουσατε τους λογους τουτους ιησουν τον ναζωραιον ανδρα απο του θεου αποδεδειγμενον εις υμας δυναμεσιν και τερασιν και σημειοις οις εποιησεν δι αυτου ο θεος εν μεσω υμων καθως και αυτοι οιδατε
- ²³ τουτον τη ωρισμενη βουλη και προγνωσει του θεου εκδοτον λαβοντες δια χειρων ανομων προσπηξαντες ανειλετε
- ²⁴ ον ο θεος ανεστησεν λυσας τας ωδινας του θανατου καθοτι ουκ ην δυνατον κρατεισθαι αυτον υπ αυτου
- ²⁵ δαβιδ γαρ λεγει εις αυτον προωρωμην τον κυριον ενωπιον μου δια παντος οτι εκ δεξιων μου εστιν ινα μη σαλευθω
- ²⁶ δια τουτο ευφρανθη η καρδια μου και ηγαλλιασατο η γλωσσα μου ετι δε και η σαρξ μου κατασκηνωσει επ ελπιδι
- ²⁷ οτι ουκ εγκαταλειψεις την ψυχην μου εις αδου ουδε δωσεις τον οσιον σου ιδειν διαφθοραν
- ²⁸ εγνωρισας μοι οδους ζωης πληρωσεις με ευφροσυνης μετα του προσωπου σου
- ²⁹ ανδρες αδελφοι εξον ειπειν μετα παρρησιας προς υμας περι του πατριαρχου δαβιδ οτι και ετελευτησεν και εταφη και το μνημα αυτου εστιν εν ημιν αχρι της ημερας ταυτης
- ³⁰ προφητης ουν υπαρχων και ειδως οτι ορκω ωμοσεν αυτω ο θεος εκ καρπου της οσφυος αυτου το κατα σαρκα αναστησειν τον χριστον καθισαι επι του θρονου αυτου
- ³¹ προιδων ελαλησεν περι της αναστασεως του χριστου οτι ου κατελειφθη η ψυχη αυτου εις αδου ουδε η σαρξ αυτου ειδεν διαφθοραν
- ³² τουτον τον ιησουν ανεστησεν ο θεος ου παντες ημεις εσμεν μαρτυρες
- ³³ τη δεξια ουν του θεου υψωθεις την τε επαγγελιαν του αγιου πνευματος λαβων παρα του πατρος εξεχεεν τουτο ο νυν υμεις βλεπετε και ακουετε
- ³⁴ ου γαρ δαβιδ ανεβη εις τους ουρανους λεγει δε αυτος ειπεν ο κυριος τω κυριω μου καθου εκ δεξιων μου
- ³⁵ εως αν θω τους εχθρους σου υποποδιον των ποδων σου
- ³⁶ ασφαλως ουν γινωσκετω πας οικος ισραηλ οτι και κυριον και χριστον αυτον ο θεος εποιησεν τουτον τον ιησουν ον υμεις εσταυρωσατε
- ³⁷ ακουσαντες δε κατενυγησαν τη καρδια ειπον τε προς τον πετρον και τους λοιπους αποστολους τι ποιησομεν ανδρες αδελφοι
- ³⁸ πετρος δε εφη προς αυτους μετανοησατε και βαπτισθητω εκαστος υμων επι τω ονοματι ιησου χριστου εις αφεσιν αμαρτιων και ληψεσθε την δωρεαν του αγιου πνευματος
- ³⁹ υμιν γαρ εστιν η επαγγελια και τοις τεκνοις υμων και πασιν τοις εις μακραν οσους αν προσκαλεσηται κυριος ο θεος ημων
- ⁴⁰ ετεροις τε λογοις πλειοσιν διεμαρτυρετο και παρεκαλει λεγων σωθητε απο της γενεας της σκολιας ταυτης
- ⁴¹ οι μεν ουν ασμενωσ αποδεξαμενοι τον λογον αυτου εβαπτισθησαν και προσετεθησαν τη ημερα εκεινη ψυχαι ωσει τρισχιλια

⁴²ησαν δε προσκατερουντες τη διδαχη των αποστολων και τη κοινωνια και τη κλασει του αρτου και ταις προσευχαις

⁴³εγενετο δε παση ψυχη φοβος πολλα τε τερατα και σημεια δια των αποστολων εγινετο

⁴⁴παντες δε οι πιστευοντες ησαν επι το αυτο και ειχον απαντα κοινα

⁴⁵και τα κτηματα και τας υπαρξεις επιπρασκον και διεμεριζον αυτα πασιν καθοτι αν τις χρειαν ειχεν

⁴⁶καθ ημεραν τε προσκατερουντες ομοθυμαδον εν τω ιερω κλωντες τε κατ οικον αρτον μετελαμβανον τροφης εν αγαλλιασει και αφελοτητι καρδιας

⁴⁷αινουντες τον θεον και εχοντες χαριν προς ολον τον λαον ο δε κυριος προσετιθει τους σωζομενους καθ ημεραν τη εκκλησια

Chapter 3

- ¹επι το αυτο δε πετρος και ιωαννης ανεβαινον εις το ιερον επι την ωραν της προσευχης την εννατην
- ²και τις ανηρ χωλος εκ κοιλιας μητρος αυτου υπαρχων εβασταζετο ον ετιθουν καθ ημεραν προς την θυραν του ιερου την λεγομενην ωραιαν του αιτειν ελεημοσυνην παρα των εισπορευομενων εις το ιερον
- ³ος ιδων πετρον και ιωαννην μελλοντας εισιεναι εις το ιερον ηρωτα ελεημοσυνην
- ⁴ατενισας δε πετρος εις αυτον συν τω ιωαννη ειπεν βλεψον εις ημας
- ⁵ο δε επειχεν αυτοις προσδοκων τι παρ αυτων λαβειν
- ⁶ειπεν δε πετρος αργυριον και χρυσιον ουχ υπαρχει μοι ο δε εχω τουτο σοι διδωμι εν τω ονοματι ιησου χριστου του ναζωραιου εγειραι και περιπατει
- ⁷και πιασας αυτον της δεξιας χειρος ηγειρεν παραχρημα δε εστερεωθησαν αυτου αι βασεις και τα σφυρα
- ⁸και εξαλλομενος εστη και περιεπατει και εισηλθεν συν αυτοις εις το ιερον περιπατων και αλλομενος και αιων τον θεον
- ⁹και ειδεν αυτον πας ο λαος περιπατουντα και αινουντα τον θεον
- ¹⁰επεγινωσκον τε αυτον οτι ουτος ην ο προς την ελεημοσυνην καθημενος επι τη ωραια πυλη του ιερου και επλησθησαν θαμβους και εκστασεως επι τω συμβεβηκοτι αυτω
- ¹¹κρατουντος δε του ιαθεντος χωλου τον πετρον και ιωαννην συνεδραμεν προς αυτους πας ο λαος επι τη στοα τη καλουμενη σολομωντος εκθαμβοι
- ¹²ιδων δε πετρος απεκρινατο προς τον λαον ανδρες ισραηλιται τι θαυμαζετε επι τουτω η ημιν τι ατενιζετε ως ιδια δυναμει η ευσεβεια πεποηκοσιν του περιπατειν αυτον
- ¹³ο θεος αβρααμ και ισαακ και ιακωβ ο θεος των πατερων ημων εδοξασεν τον παιδα αυτου ιησουν ον υμεις παρεδωκατε και ηρνησασθε αυτον κατα προσωπον πιλατου κριναντος εκεινου απολυειν
- ¹⁴υμεις δε τον αγιον και δικαιον ηρνησασθε και ητησασθε ανδρα φονεα χαρισθηναι υμιν
- ¹⁵τον δε αρχηγον της ζωης απεκτεινατε ον ο θεος ηγειρεν εκ νεκρων ου ημεις μαρτυρες εσμεν
- ¹⁶και επι τη πιστει του ονοματος αυτου τουτον ον θεωρειτε και οιδατε εστερεωσεν το ονομα αυτου και η πιστις η δι αυτου εδωκεν αυτω την ολοκληριαν ταυτην απεναντι παντων υμων
- ¹⁷και νυν αδελφοι οιδα οτι κατα αγνοιαν επραξατε ωσπερ και οι αρχοντες υμων
- ¹⁸ο δε θεος α προκατηγγειλεν δια στοματος παντων των προφητων αυτου παθειν τον χριστον επληρωσεν ουτως
- ¹⁹μετανοησατε ουν και επιστρεψατε εις το εξαλειφθηναι υμων τας αμαρτιας οπως αν ελθωσιν καιροι αναψυξεως απο προσωπου του κυριου
- ²⁰και αποστειλη τον προκεκηρυγμενον υμιν ιησουν χριστον

²¹ον δει ουρανον μεν δεξασθαι αχρι χρονων αποκαταστασεως παντων ων ελαλησεν ο θεος δια στοματος παντων αγιων αυτου προφητων απ αιωνος

²²μωσης μεν γαρ προς τους πατερας ειπεν οτι προφητην υμιν αναστησει κυριος ο θεος υμων εκ των αδελφων υμων ως εμε αυτου ακουσεσθε κατα παντα οσα αν λαληση προς υμας

²³εσται δε πασα ψυχη ητις αν μη ακουση του προφητου εκεινου εξολοθρευθησεται εκ του λαου

²⁴και παντες δε οι προφηται απο σαμουηλ και των καθεξης οσοι ελαλησαν και προκατηγγειλαν τας ημερας ταυτας

²⁵υμεις εστε υιοι των προφητων και της διαθηκης ης διεθετο ο θεος προς τους πατερας ημων λεγων προς αβρααμ και τω σπερματι σου ενευλογηθησονται πασαι αι πατριαι της γης

²⁶υμιν πρωτον ο θεος αναστησας τον παιδα αυτου ιησουν απεστειλεν αυτον ευλογουντα υμας εν τω αποστρεφειν εκαστον απο των πονηριων υμων

Chapter 4

- ¹λαλούντων δε αυτων προς τον λαον επεστησαν αυτοις οι ιερεις και ο στρατηγος του ιερου και οι σαδδουκαιοι
- ²διαπονουμενοι δια το διδασκειν αυτους τον λαον και καταγγελλειν εν τω ιησου την αναστασιν την εκ νεκρων
- ³και επεβαλον αυτοις τας χειρας και εθεντο εις τηρησιν εις την αυριον ην γαρ εσπερα ηδη
- ⁴πολλοι δε των ακουσαντων τον λογον επιστευσαν και εγενηθη ο αριθμος των ανδρων ωσει χιλιαδες πεντε
- ⁵εγενετο δε επι την αυριον συναχθηναι αυτων τους αρχοντας και πρεσβυτερους και γραμματεις εις ιερουσαλημ
- ⁶και ανναν τον αρχιερα και καιαφαν και ιωαννην και αλεξανδρον και οσοι ησαν εκ γενους αρχιερατικου
- ⁷και στησαντες αυτους εν τω μεσω επυνθανοντο εν ποια δυναμει η εν ποιω ονοματι εποιησατε τουτο υμεις
- ⁸τοτε πετρος πλησθεις πνευματος αγιου ειπεν προς αυτους αρχοντες του λαου και πρεσβυτεροι του ισραηλ
- ⁹ει ημεις σημερον ανακρινομεθα επι ευεργεσια ανθρωπου ασθενους εν τινι ουτος σεσωσται
- ¹⁰γνωστον εστω πασιν υμιν και παντι τω λαω ισραηλ οτι εν τω ονοματι ιησου χριστου του ναζωραιου ον υμεις εσταυρωσατε ον ο θεος ηγειρεν εκ νεκρων εν τουτω ουτος παρεστηκεν ενωπιον υμων υγιης
- ¹¹ουτος εστιν ο λιθος ο εξουθενηθεις υφ υμων των οικοδομουντων ο γενομενος εις κεφαλην γωνιας
- ¹²και ουκ εστιν εν αλλω ουδενι η σωτηρια ουτε γαρ ονομα εστιν ετερον υπο τον ουρανον το δεδομενον εν ανθρωποις εν ω δει σωθηναι ημας
- ¹³θεωρουντες δε την του πετρου παρρησιαν και ιωαννου και καταλαβομενοι οτι ανθρωποι αγραμματοι εισιν και ιδιωται εθαυμαζον επεγινωσκον τε αυτους οτι συν τω ιησου ησαν
- ¹⁴τον δε ανθρωπον βλεποντες συν αυτοις εστωτα τον τεθεραπευμενον ουδεν ειχον αντειπειν
- ¹⁵κελευσαντες δε αυτους εξω του συνεδριου απελθειν συνεβαλον προς αλληλους
- ¹⁶λεγοντες τι ποιησομεν τοις ανθρωποις τουτοις οτι μεν γαρ γνωστον σημειον γεγονεν δι αυτων πασιν τοις κατοικουσιν ιερουσαλημ φανερον και ου δυναμεθα αρνησασθαι
- ¹⁷αλλ ινα μη επι πλειον διανεμηθη εις τον λαον απειλη απειλησωμεθα αυτοις μηκετι λαλειν επι τω ονοματι τουτω μηδενι ανθρωπων
- ¹⁸και καλεσαντες αυτους παρηγγειλαν αυτοις το καθολου μη φθεγγεσθαι μηδε διδασκειν επι τω ονοματι του ιησου
- ¹⁹ο δε πετρος και ιωαννης αποκριθεντες προς αυτους ειπον ει δικαιον εστιν ενωπιον του θεου υμων ακουειν μαλλον η του θεου κρινατε
- ²⁰ου δυναμεθα γαρ ημεις α ειδομεν και ηκουσαμεν μη λαλειν

- ²¹οι δε προσαπειλησαμενοι απελυσαν αυτους μηδεν ευρισκοντες το πως κολασωνται αυτους δια τον λαον οτι παντες εδοξαζον τον θεον επι τω γεγονοτι
- ²²ετων γαρ ην πλειονων τεσσαρακοντα ο ανθρωπος εφ ον εγεγονει το σημειον τουτο της ιασεως
- ²³απολυθεντες δε ηλθον προς τους ιδιους και απηγγειλαν οσα προς αυτους οι αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι ειπον
- ²⁴οι δε ακουσαντες ομοθυμαδον ηραν φωνην προς τον θεον και ειπον δεσποτα συ ο θεος ο ποιησας τον ουρανον και την γην και την θαλασσαν και παντα τα εν αυτοις
- ²⁵ο δια στοματος δαβιδ του παιδος σου ειπων ινατι εφρυαξαν εθνη και λαοι εμελετησαν κενα
- ²⁶παρεστησαν οι βασιλεις της γης και οι αρχοντες συνηχθησαν επι το αυτο κατα του κυριου και κατα του χριστου αυτου
- ²⁷συνηχθησαν γαρ επ αληθειας επι τον αγιον παιδα σου ιησουν ον εχρισας ηρωδης τε και ποντιος πιλατος συν εθνεσιν και λαοις ισραηλ
- ²⁸ποιησαι οσα η χειρ σου και η βουλη σου προωρισεν γενεσθαι
- ²⁹και τα νυν κυριε επιδε επι τας απειλας αυτων και δος τοις δουλοις σου μετα παρρησιας πασης λαλειν τον λογον σου
- ³⁰εν τω την χειρα σου εκτεινειν σε εις ιασιν και σημεια και τερατα γινεσθαι δια του ονοματος του αγιου παιδος σου ιησου
- ³¹και δεηθεντων αυτων εσαλευθη ο τοπος εν ω ησαν συνηγμενοι και επλησθησαν απαντες πνευματος αγιου και ελαλουν τον λογον του θεου μετα παρρησιας
- ³²του δε πληθους των πιστευσαντων ην η καρδια και η ψυχη μια και ουδ εις τι των υπαρχοντων αυτω ελεγεν ιδιον ειναι αλλ ην αυτοις απαντα κοινα
- ³³και μεγαλη δυναμει απεδιδουν το μαρτυριον οι αποστολοι της αναστασεως του κυριου ιησου χαρις τε μεγαλη ην επι παντας αυτους
- ³⁴ουδε γαρ ενδεης τις υπηρχεν εν αυτοις οσοι γαρ κτητορες χωριων η οικιων υπηρχον πωλουντες εφερον τας τιμας των πιπρασκομενων
- ³⁵και ετιθουν παρα τους ποδας των αποστολων διεδιδοδο δε εκαστω καθοτι αν τις χρειαν ειχεν
- ³⁶ιωσης δε ο επικληθεις βαρναβας υπο των αποστολων ο εστιν μεθερμηνευομενον υιος παρακλησεως λευιτης κυριος τω γενει
- ³⁷υπαρχοντος αυτω αγρου πωλησας ηνεγκεν το χρημα και εθηκεν παρα τους ποδας των αποστολων

Chapter 5

¹ανηρ δε τις ανανιας ονοματι συν σαπφειρη τη γυναικι αυτου επωλησεν κτημα
²και ενοσφισατο απο της τιμης συνειδυιας και της γυναικος αυτου και ενεγκας μερος τι παρα τους ποδας των αποστολων εθηκεν
³ειπεν δε πετρος ανανια διατι επληρωσεν ο σατανας την καρδιαν σου ψευσασθαι σε το πνευμα το αγιον και νοσφισασθαι απο της τιμης του χωριου
⁴ουχι μενον σοι εμενεν και πραθεν εν τη ση εξουσια υπηρχεν τι οτι εθου εν τη καρδια σου το πραγμα τουτο ουκ εψευσω ανθρωποις αλλα τω θεω
⁵ακουων δε ανανιας τους λογους τουτους πεσων εξεψυξεν και εγενετο φοβος μεγας επι παντας τους ακουοντας ταυτα
⁶ανασταντες δε οι νεωτεροι συνεστειλαν αυτον και εξενεγκαντες εθαψαν
⁷εγενετο δε ως ωρων τριων διαστημα και η γυνη αυτου μη ειδυια το γεγονος εισηλθεν
⁸απεκριθη δε αυτη ο πετρος ειπε μοι ει τοσουτου το χωριον απεδοσθε η δε ειπεν ναι τοσουτου
⁹ο δε πετρος ειπεν προς αυτην τι οτι συνεφωνηθη υμιν πειρασαι το πνευμα κυριου ιδου οι ποδες των θαψαντων τον ανδρα σου επι τη θυρα και εξοισουσιν σε
¹⁰επεσεν δε παραχρημα παρα τους ποδας αυτου και εξεψυξεν εισελθοντες δε οι νεανισκοι ευρον αυτην νεκραν και εξενεγκαντες εθαψαν προς τον ανδρα αυτης
¹¹και εγενετο φοβος μεγας εφ ολην την εκκλησιαν και επι παντας τους ακουοντας ταυτα
¹²δια δε των χειρων των αποστολων εγινετο σημεια και τερατα εν τω λαω πολλα και ησαν ομοθυμαδον απαντες εν τη στοα σολομωντος
¹³των δε λοιπων ουδεις ετολμα κολλασθαι αυτοις αλλ εμεγαλυνεν αυτους ο λαος
¹⁴μαλλον δε προσετιθεντο πιστευοντες τω κυριω πληθη ανδρων τε και γυναικων
¹⁵ωστε κατα τας πλατειας εκφερειν τους ασθενεις και τιθεναι επι κλινων και κραββατων ινα ερχομενου πετρου καν η σκια επισκιαση τινι αυτων
¹⁶συνηρχετο δε και το πληθος των περιξ πολεων εις ιερουσαλημ φεροντες ασθενεις και οχλουμενους υπο πνευματων ακαθαρτων οιτινες εθεραπευοντο απαντες
¹⁷αναστας δε ο αρχιερευς και παντες οι συν αυτω η ουσα αιρεσις των σαδδουκαιων επλησθησαν ζηλου
¹⁸και επεβαλον τας χειρας αυτων επι τους αποστολους και εθεντο αυτους εν τηρησει δημοσια
¹⁹αγγελος δε κυριου δια της νυκτος ηνοιξεν τας θυρας της φυλακης εξαγαγων τε αυτους ειπεν
²⁰πορευεσθε και σταθεντες λαλειτε εν τω ιερω τω λαω παντα τα ρηματα της ζωης ταυτης
²¹ακουσαντες δε εισηλθον υπο τον ορθρον εις το ιερον και εδιδασκον παραγενομενος δε ο αρχιερευς και οι συν αυτω συνεκαλεσαν το συνεδριον και πασαν την γερουσιαν των υιων ισραηλ και απεστειλαν εις το δεσμωτηριον αχθηναι αυτους

²²οι δε υπηρεται παραγενομενοι ουχ ευρον αυτους εν τη φυλακη αναστρεψαντες δε απηγγειλαν

²³λεγοντες οτι το μεν δεσμοτηριον ευρομεν κεκλεισμενον εν παση ασφαλεια και τους φυλακας εξω εστωτας προ των θυρων ανοιξαντες δε εσω ουδενα ευρομεν

²⁴ως δε ηκουσαν τους λογους τουτους ο τε ιερευς και ο στρατηγος του ιερου και οι αρχιερεις διηπορουν περι αυτων τι αν γενοιτο τουτο

²⁵παραγενομενος δε τις απηγγειλεν αυτοις λεγων οτι ιδου οι ανδρες ους εθεσθε εν τη φυλακη εισιν εν τω ιερω εστωτες και διδασκοντες τον λαον

²⁶τοτε απελθων ο στρατηγος συν τοις υπηρεταις ηγαγεν αυτους ου μετα βιας εφοβουντο γαρ τον λαον ινα μη λιθασθωσιν

²⁷αγαγοντες δε αυτους εστησαν εν τω συνεδριω και επηρωτησεν αυτους ο αρχιερευς

²⁸λεγων ου παραγγελια παρηγγειλαμεν υμιν μη διδασκειν επι τω ονοματι τουτω και ιδου πεπληρωκατε την ιερουσαλημ της διδαχης υμων και βουλεσθε επαγαγειν εφ ημας το αιμα του ανθρωπου τουτου

²⁹αποκριθεις δε ο πετρος και οι αποστολοι ειπον πειθαρχειν δει θεω μαλλον η ανθρωποις

³⁰ο θεος των πατερων ημων ηγειρεν ιησουν ον υμεις διεχειρισασθε κρεμασαντες επι ξυλου

³¹τουτον ο θεος αρχηγον και σωτηρα υψωσεν τη δεξια αυτου δουναι μετανοιαν τω ισραηλ και αφεσιν αμαρτιων

³²και ημεις εσμεν αυτου μαρτυρες των ρηματων τουτων και το πνευμα δε το αγιον ο εδωκεν ο θεος τοις πειθαρχουσιν αυτω

³³οι δε ακουσαντες διεπριοντο και εβουλευοντο ανελειν αυτους

³⁴αναστας δε τις εν τω συνεδριω φαρισαιος ονοματι γαμαλιηλ νομοδιδασκαλος τιμιος παντι τω λαω εκελευσεν εξω βραχυ τι τους αποστολους ποιησαι

³⁵ειπεν τε προς αυτους ανδρες ισραηλιται προσεχετε εαυτοις επι τοις ανθρωποις τουτοις τι μελλετε πρασσειν

³⁶προ γαρ τουτων των ημερων ανεστη θευδας λεγων ειναι τινα εαυτον ω προσεκολληθη αριθμος ανδρων ωσει τετρακοσιων ος ανηρεθη και παντες οσοι επειθοντο αυτω διελυθησαν και εγενοντο εις ουδεν

³⁷μετα τουτον ανεστη ιουδας ο γαλιλαιος εν ταις ημεραις της απογραφης και απεστησεν λαον ικανον οπισω αυτου κακεινος απωλετο και παντες οσοι επειθοντο αυτω διεσκορπισθησαν

³⁸και τα νυν λεγω υμιν αποστητε απο των ανθρωπων τουτων και εασατε αυτους οτι εαν η εξ ανθρωπων η βουλη αυτη η το εργον τουτο καταλυθησεται

³⁹ει δε εκ θεου εστιν ου δυνασθε καταλυσαι αυτο μηποτε και θεομαχοι ευρεθητε

⁴⁰επεισθησαν δε αυτω και προσκαλεσαμενοι τους αποστολους δειραντες παρηγγειλαν μη λαλειν επι τω ονοματι του ιησου και απελυσαν αυτους

⁴¹οι μεν ουν επορευοντο χαιροντες απο προσωπου του συνεδριου οτι υπερ του ονοματος αυτου κατηξιωθησαν ατιμασθησαι

⁴²πασαν τε ημεραν εν τω ιερω και κατ οικον ουκ επαυοντο διδασκοντες και ευαγγελιζομενοι
ιησουν τον χριστον

Chapter 6

¹εν δε ταις ημεραις ταυταις πληθυνοντων των μαθητων εγενετο γογγυσμος των ελληπιστων προς τους εβραιους οτι παρεθεωρουντο εν τη διακονια τη καθημερινη αι χηραι αυτων

²προσκαλεσαμενοι δε οι δωδεκα το πληθος των μαθητων ειπον ουκ αρεστον εστιν ημας καταλειψαντας τον λογον του θεου διακονειν τραπεζαις

³επισκεψασθε ουν αδελφοι ανδρας εξ υμων μαρτυρουμενους επτα πληρεις πνευματος αγιου και σοφιας ους καταστησομεν επι της χρειας ταυτης

⁴ημεις δε τη προσευχη και τη διακονια του λογου προσκαρτερησομεν

⁵και ηρσεεν ο λογος ενωπιον παντος του πληθους και εξελεξαντο στεφανον ανδρα πληρη πιστεως και πνευματος αγιου και φιλιππον και προχορον και νικανορα και τιμωνα και παρμεναν και νικολαον προσηλυτον αντιοχεια

⁶ους εστησαν ενωπιον των αποστολων και προσευξαμενοι επεθηκαν αυτοις τας χειρας

⁷και ο λογος του θεου ηυξανεν και επληθυνετο ο αριθμος των μαθητων εν ιερουσαλημ σφοδρα πολυς τε οχλος των ιερων υπηκουον τη πιστει

⁸στεφανος δε πληρης πιστεως και δυναμεως εποiei τερατα και σημεια μεγαλα εν τω λαω

⁹ανεστησαν δε τινες των εκ της συναγωγης της λεγομενης λιβερτινων και κυρηναιων και αλεξανδρεων και των απο κιλικιας και ασιας συζητουντες τω στεφανω

¹⁰και ουκ ισχυον αντιστηναι τη σοφια και τω πνευματι ω ελαλει

¹¹τοτε υπεβαλον ανδρας λεγοντας οτι ακηκοαμεν αυτου λαλουντος ρηματα βλασφημα εις μωσην και τον θεον

¹²συνεκινησαν τε τον λαον και τους πρεσβυτερους και τους γραμματεις και επισταντες συνηρπασαν αυτον και ηγαγον εις το συνεδριον

¹³εστησαν τε μαρτυρας ψευδεις λεγοντας ο ανθρωπος ουτος ου παυεται ρηματα βλασφημα λαλων κατα του τοπου του αγιου τουτου και του νομου

¹⁴ακηκοαμεν γαρ αυτου λεγοντος οτι ιησους ο ναζωραιος ουτος καταλυσει τον τοπον τουτον και αλλαξει τα εθη α παρεδωκεν ημιν μωυσης

¹⁵και ατενισαντες εις αυτον απαντες οι καθηζομενοι εν τω συνεδριω ειδον το προσωπον αυτου ωσει προσωπον αγγελου

Chapter 7

- ¹ειπεν δε ο αρχιερευς ει αρα ταυτα ουτως εχει
²ο δε εφη ανδρες αδελφοι και πατερες ακουσατε ο θεος της δοξης ωφθη τω πατρι ημων αβρααμ οντι εν τη μεσοποταμια πριν η κατοικησαι αυτον εν χαρραν
³και ειπεν προς αυτον εξελθε εκ της γης σου και εκ της συγγενειας σου και δευρο εις γην ην αν σοι δειξω
⁴τοτε εξελθων εκ γης χαλδαιων κατωκησεν εν χαρραν κακειθεν μετα το αποθανειν τον πατερα αυτου μετωκισεν αυτον εις την γην ταυτην εις ην υμεις νυν κατοικειτε
⁵και ουκ εδωκεν αυτω κληρονομια εν αυτη ουδε βημα ποδος και επηγγειλατο αυτω δουναι εις κατασχεσιν αυτην και τω σπερματι αυτου μετ αυτον ουκ οντος αυτω τεκνου
⁶ελαλησεν δε ουτως ο θεος οτι εσται το σπερμα αυτου παροικον εν γη αλλοτρια και δουλωσουσιν αυτο και κακωσουσιν ετη τετρακοσια
⁷και το εθνος ω εαν δουλευσωσιν κρινω εγω ειπεν ο θεος και μετα ταυτα εξελευσονται και λατρευσουσιν μοι εν τω τοπω τουτω
⁸και εδωκεν αυτω διαθηκην περιτομης και ουτως εγεννησεν τον ισαακ και περιετεμεν αυτον τη ημερα τη ογδοη και ο ισαακ τον ιακωβ και ο ιακωβ τους δωδεκα πατριαρχας
⁹και οι πατριαρχαι ζηλωσαντες τον ιωσηφ απεδοντο εις αιγυπτον και ην ο θεος μετ αυτου
¹⁰και εξειλετο αυτον εκ πασων των θλιψεων αυτου και εδωκεν αυτω χαριν και σοφιαν εναντιον φαραω βασιλεως αιγυπτου και κατεστησεν αυτον ηγουμενον επ αιγυπτον και ολον τον οικον αυτου
¹¹ηλθεν δε λιμος εφ ολην την γην αιγυπτου και χανααν και θλιψις μεγαλη και ουχ ευρισκον χορτασματα οι πατερες ημων
¹²ακουσας δε ιακωβ οντα σιτα εν αιγυπτω εξαπεστειλεν τους πατερας ημων πρωτον
¹³και εν τω δευτερω ανεγνωρισθη ιωσηφ τοις αδελφοις αυτου και φανερον εγενετο τω φαραω το γενοσ του ιωσηφ
¹⁴αποστειλας δε ιωσηφ μετεκαλεσατο τον πατερα αυτου ιακωβ και πασαν την συγγενειαν αυτου εν ψυχαις εβδομηκοντα πεντε
¹⁵κατεβη δε ιακωβ εις αιγυπτον και ετελευτησεν αυτος και οι πατερες ημων
¹⁶και μετετεθησαν εις σιχεμ και ετεθησαν εν τω μνηματι ο ωνησατο αβρααμ τιμης αργυριου παρα των υιων εμορ του σιχεμ
¹⁷καθως δε ηγγιζεν ο χρονος της επαγγελιας ης ωμοσεν ο θεος τω αβρααμ ηυξησεν ο λαος και επληθυνθη εν αιγυπτω
¹⁸αχρις ου ανεστη βασιλευς ετερος ος ουκ ηδει τον ιωσηφ
¹⁹ουτος κατασοφισαμενος το γενοσ ημων εκακωσεν τους πατερας ημων του ποιειν εκθετα τα βρεφη αυτων εις το μη ζωογονεισθαι
²⁰εν ω καιρω εγεννηθη μωσης και ην αστειος τω θεω ος ανετραφη μηνας τρεις εν τω οικω του πατροσ αυτου

- ²¹εκτεθεντα δε αυτον ανειλετο αυτον η θυγατηρ φαραω και ανεθρεψατο αυτον εαυτη εις υιον
- ²²και επαιδευθη μωσης παση σοφια αιγυπτιων ην δε δυνατος εν λογοις και εν εργοις
- ²³ως δε επληρουτο αυτω τεσσαρακονταετης χρονος ανεβη επι την καρδιαν αυτου επισκεψασθαι τους αδελφους αυτου τους υιους ισραηλ
- ²⁴και ιδων τινα αδικουμενον ημυνατο και εποησεν εκδικησιν τω καταπονουμενω παταξας τον αιγυπτιον
- ²⁵ενομιζεν δε συνιεναι τους αδελφους αυτου οτι ο θεος δια χειρος αυτου διδωσιν αυτοις σωτηριαν οι δε ου συνηκαν
- ²⁶τη δε επιουση ημερα ωφθη αυτοις μαχομενοις και συνηλασεν αυτους εις ειρηνην ειπων ανδρες αδελφοι εστε υμεις ινατι αδικειτε αλληλους
- ²⁷ο δε αδικων τον πλησιον απωσατο αυτον ειπων τις σε κατεστησεν αρχοντα και δικαστην εφ ημας
- ²⁸μη ανελιν με συ θελεις ον τροπον ανειλες χθες τον αιγυπτιον
- ²⁹εφυγεν δε μωσης εν τω λογω τουτω και εγενετο παροικος εν γη μαδιαμ ου εγεννησεν υιους δυο
- ³⁰και πληρωθεντων ετων τεσσαρακοντα ωφθη αυτω εν τη ερημω του ορους σινα αγγελος κυριου εν φλογι πυρος βατου
- ³¹ο δε μωσης ιδων εθαυμασεν το οραμα προσερχομενου δε αυτου κατανοησαι εγενετο φωνη κυριου προς αυτον
- ³²εγω ο θεος των πατερων σου ο θεος αβρααμ και ο θεος ισαακ και ο θεος ιακωβ εντρομος δε γενομενος μωσης ουκ ετολμα κατανοησαι
- ³³ειπεν δε αυτω ο κυριος λυσον το υποδημα των ποδων σου ο γαρ τοπος εν ω εστηκας γη αγια εστιν
- ³⁴ιδων ειδον την κακωσιν του λαου μου του εν αιγυπτω και του στεναγμου αυτων ηκουσα και κατεβην εξελεσθαι αυτους και νυν δευρο αποστειλω σε εις αιγυπτον
- ³⁵τουτον τον μωυσην ον ηρνησαντο ειποντες τις σε κατεστησεν αρχοντα και δικαστην τουτον ο θεος αρχοντα και λυτρωτην απεστειλεν εν χειρι αγγελου του οφθεντος αυτω εν τη βατω
- ³⁶ουτος εξηγαγεν αυτους ποιησας τερατα και σημεια εν γη αιγυπτου και εν ερυθρα θαλασση και εν τη ερημω ετη τεσσαρακοντα
- ³⁷ουτος εστιν ο μωσης ο ειπων τοις υιοις ισραηλ προφητην υμιν αναστησει κυριος ο θεος υμων εκ των αδελφων υμων ως εμε αυτου ακουσεσθε
- ³⁸ουτος εστιν ο γενομενος εν τη εκκλησια εν τη ερημω μετα του αγγελου του λαλουντος αυτω εν τω ορει σινα και των πατερων ημων ος εδεξατο λογια ζωντα δουναι ημιν
- ³⁹ω ουκ ηθελησαν υπηκοοι γενεσθαι οι πατερες ημων αλλ απωσαντο και εστραφησαν ταις καρδιαις αυτων εις αιγυπτον

⁴⁰ ειποντες τω ααρων ποιησον ημιν θεους οι προπορευονται ημων ο γαρ μωσης ουτος ος εξηγαγεν ημας εκ γης αιγυπτου ουκ οίδαμεν τι γεγονεν αυτω
⁴¹ και εμοσχοποιησαν εν ταις ημεραις εκειναις και ανηγαγον θυσιαν τω ειδωλω και ευφραινοντο εν τοις εργοις των χειρων αυτων
⁴² εστρεψεν δε ο θεος και παρεδωκεν αυτους λατρευειν τη στρατια του ουρανου καθως γεγραπται εν βιβλω των προφητων μη σφαγια και θυσιας προσηνεγκατε μοι ετη τεσσαρακοντα εν τη ερημω οικος ισραηλ
⁴³ και ανελαβετε την σκηνην του μολοχ και το αστρον του θεου υμων ρεμφαν τους τυπους ους εποιησατε προσκυνειν αυτοις και μετοικιω υμας επεκεινα βαβυλωνος
⁴⁴ η σκηνη του μαρτυριου ην τοις πατρασιν ημων εν τη ερημω καθως διεταξατο ο λαλων τω μωση ποιησαι αυτην κατα τον τυπον ον εωρακει
⁴⁵ ην και εισηγαγον διαδεξαμενοι οι πατερες ημων μετα ιησου εν τη κατασχεσει των εθνων ων εξωσεν ο θεος απο προσωπου των πατερων ημων εως των ημερων δαβιδ
⁴⁶ ος ευρεν χαριν ενωπιον του θεου και ητησατο ευρειν σκηνωμα τω θεω ιακωβ
⁴⁷ σολομων δε ωκοδομησεν αυτω οικον
⁴⁸ αλλ ουχ ο υψιστος εν χειροποιητοις ναοις κατοικει καθως ο προφητης λεγει
⁴⁹ ο ουρανος μοι θρονος η δε γη υποποδιον των ποδων μου ποιον οικον οικοδομησετε μοι λεγει κυριος η τις τοπος της καταπαυσεως μου
⁵⁰ ουχι η χειρ μου εποιησεν ταυτα παντα
⁵¹ σκληροτραχηλοι και απεριτμητοι τη καρδια και τοις ωσιν υμεις αιει τω πνευματι τω αγιω αντιπιπτετε ως οι πατερες υμων και υμεις
⁵² τινα των προφητων ουκ εδιωξαν οι πατερες υμων και απεκτειναν τους προκαταγγειλαντας περι της ελευσεως του δικαιου ου νυν υμεις προδοται και φονεις γεγενησθε
⁵³ οιτινες ελαβετε τον νομον εις διαταγας αγγελων και ουκ εφυλαξατε
⁵⁴ ακουοντες δε ταυτα διεπριοντο ταις καρδιαις αυτων και εβρυχον τους οδοντας επ αυτον
⁵⁵ υπαρχων δε πληρης πνευματος αγιου ατενισας εις τον ουρανον ειδεν δοξαν θεου και ιησουν εστωτα εκ δεξιων του θεου
⁵⁶ και ειπεν ιδου θεωρω τους ουρανους ανεωγμενους και τον υιον του ανθρωπου εκ δεξιων εστωτα του θεου
⁵⁷ κραξαντες δε φωνη μεγαλη συνεσχον τα ωτα αυτων και ωρμησαν ομοθυμαδον επ αυτον
⁵⁸ και εκβαλοντες εξω της πολεως ελιθοβολουν και οι μαρτυρες απεθεντο τα ιματια αυτων παρα τους ποδας νεανιου καλουμενου σαυλου
⁵⁹ και ελιθοβολουν τον στεφανον επικαλουμενον και λεγοντα κυριε ιησου δεξαι το πνευμα μου
⁶⁰ θεις δε τα γονατα εκραξεν φωνη μεγαλη κυριε μη στησης αυτοις την αμαρτιαν ταυτην και τουτο ειπων εκοιμηθη

Chapter 8

¹σαυλος δε ην συνευδοκων τη αναιρεσει αυτου εγενετο δε εν εκεινη τη ημερα διωγμος μεγας επι την εκκλησιαν την εν ιεροσολυμοις παντες τε διεσπαρησαν κατα τας χωρας της ιουδαιας και σαμαρειας πλην των αποστολων

²συνεκομισαν δε τον στεφανον ανδρες ευλαβεις και εποιησαντο κοπετον μεγαν επ αυτω

³σαυλος δε ελυμαινετο την εκκλησιαν κατα τους οικους εισπορευομενος συρων τε ανδρας και γυναικας παρεδιδου εις φυλακην

⁴οι μεν ουν διασπαρευοντες διηλθον ευαγγελιζομενοι τον λογον

⁵φιλιππος δε κατελθων εις πολιν της σαμαρειας εκηρυσσεν αυτοις τον χριστον

⁶προσειχον τε οι οχλοι τοις λεγομενοις υπο του φιλιππου ομοθυμαδον εν τω ακουειν αυτους και βλεπειν τα σημεια α εποιει

⁷πολλων γαρ των εχοντων πνευματα ακαθαρτα βωντα μεγαλη φωνη εξηρχετο πολλοι δε παραλελυμενοι και χωλοι εθεραπευθησαν

⁸και εγενετο χαρα μεγαλη εν τη πολει εκεινη

⁹ανηρ δε τις ονοματι σιμων προυπηρχεν εν τη πολει μαγευων και εξιστων το εθνος της σαμαρειας λεγων ειναι τινα εαυτον μεγαν

¹⁰ω προσειχον παντες απο μικρου εως μεγαλου λεγοντες ουτος εστιν η δυναμις του θεου η μεγαλη

¹¹προσειχον δε αυτω δια το ικανω χρονω ταις μαγειαις εξεστακεναι αυτους

¹²οτε δε επιστευσαν τω φιλιππω ευαγγελιζομενω τα περι της βασιλειας του θεου και του ονοματος του ιησου χριστου εβαπτιζοντο ανδρες τε και γυναικες

¹³ο δε σιμων και αυτος επιστευσεν και βαπτισθεις ην προσκαρτερων τω φιλιππω θεωρων τε δυναμεις και σημεια γινομενα εξιστατο

¹⁴ακουσαντες δε οι εν ιεροσολυμοις αποστολοι οτι δεδεκται η σαμαρεια τον λογον του θεου απεστειλαν προς αυτους τον πετρον και ιωαννην

¹⁵οιτινες καταβαντες προσηυξαντο περι αυτων οπως λαβωσιν πνευμα αγιον

¹⁶ουπω γαρ ην επ ουδενι αυτων επιπετωκος μονον δε βεβαπτισμενοι υπηρχον εις το ονομα του κυριου ιησου

¹⁷τοτε επετιθουν τας χειρας επ αυτους και ελαμβανον πνευμα αγιον

¹⁸θεασαμενος δε ο σιμων οτι δια της επιθεσεως των χειρων των αποστολων διδοται το πνευμα το αγιον προσηνεγκεν αυτοις χρηματα

¹⁹λεγων δοτε καμοι την εξουσιαν ταυτην ινα ω εαν επιθω τας χειρας λαμβανη πνευμα αγιον

²⁰πετρος δε ειπεν προς αυτον το αργυριον σου συν σοι ειη εις απωλειαν οτι την δωρεαν του θεου ενομισας δια χρηματων κτασθαι

²¹ουκ εστιν σοι μερις ουδε κληρος εν τω λογω τουτω η γαρ καρδια σου ουκ εστιν ευθεια ενωπιον του θεου

²²μετανοησον ουν απο της κακιας σου ταυτης και δεηθητι του θεου ει αρα αφεθησεται σοι η επινοια της καρδιας σου
²³εις γαρ χολην πικριας και συνδεσμον αδικιας ορω σε οντα
²⁴αποκριθεις δε ο σιμων ειπεν δεηθητε υμεις υπερ εμου προς τον κυριον οπως μηδεν επελθη επ εμε ων ειρηκατε
²⁵οι μεν ουν διαμαρτυραμενοι και λαλησαντες τον λογον του κυριου υπεστρεψαν εις ιερουσαλημ πολλας τε κωμας των σαμαρειτων ευηγγελισαντο
²⁶αγγελος δε κυριου ελαλησεν προς φιλιππον λεγων αναστηθι και πορευου κατα μεσημβριαν επι την οδον την καταβαινουσαν απο ιερουσαλημ εις γαζαν αυτη εστιν ερημος
²⁷και αναστας επορευθη και ιδου ανηρ αιθιοψ ευνουχος δυναστης κανδακης της βασιλισσης αιθιοπων ος ην επι πασης της γαζης αυτης ος εληλυθει προσκυνησων εις ιερουσαλημ
²⁸ην τε υποστρεφων και καθημενος επι του αρματος αυτου ανεγινωσκεν τον προφητην ησαιαν
²⁹ειπεν δε το πνευμα τω φιλιππω προσελθε και κολληθητι τω αρματι τουτω
³⁰προσδραμων δε ο φιλιππος ηκουσεν αυτου αναγινωσκοντος τον προφητην ησαιαν και ειπεν αρα γε γινωσκεις α αναγινωσκεις
³¹ο δε ειπεν πως γαρ αν δυναιμην εαν μη τις οδηγηση με παρεκαλεσεν τε τον φιλιππον αναβαντα καθισαι συν αυτω
³²η δε περιοχη της γραφης ην ανεγινωσκεν ην αυτη ως προβατον επι σφαγην ηχθη και ως αμνος εναντιον του κειροντος αυτον αφωνος ουτως ουκ ανοιγει το στομα αυτου
³³εν τη ταπεινωσει αυτου η κρισις αυτου ηρθη την δε γενεαν αυτου τις διηγησεται οτι αιρεται απο της γης η ζωη αυτου
³⁴αποκριθεις δε ο ευνουχος τω φιλιππω ειπεν δεομαι σου περι τινος ο προφητης λεγει τουτο περι εαυτου η περι ετερου τινος
³⁵ανοιξας δε ο φιλιππος το στομα αυτου και αρξαμενος απο της γραφης ταυτης ευηγγελισατο αυτω τον ιησουν
³⁶ως δε επορευοντο κατα την οδον ηλθον επι τι υδωρ και φησιν ο ευνουχος ιδου υδωρ τι κωλυει με βαπτισθηναι
³⁷ειπεν δε ο φιλιππος ει πιστευεις εξ ολης της καρδιας εξεστιν αποκριθεις δε ειπεν πιστευω τον υιον του θεου ειναι τον ιησουν χριστον
³⁸και εκελευσεν στηναι το αρμα και κατεβησαν αμφοτεροι εις το υδωρ ο τε φιλιππος και ο ευνουχος και εβαπτισεν αυτον
³⁹οτε δε ανεβησαν εκ του υδατος πνευμα κυριου ηρπασεν τον φιλιππον και ουκ ειδεν αυτον ουκετι ο ευνουχος επορευετο γαρ την οδον αυτου χαιρων
⁴⁰φιλιππος δε ευρεθη εις αζωτον και διερχομενος ευηγγελιζετο τας πολεις πασας εως του ελθειν αυτον εις καισαρειαν

Chapter 9

¹ο δε σαυλος ετι εμπνεων απειλης και φονου εις τους μαθητας του κυριου προσελθων τω αρχιερει
²ητησατο παρ αυτου επιστολας εις δαμασκον προς τας συναγωγας οπως εαν τινας ευρη της οδου οντας ανδρας τε και γυναικας δεδεμενους αγαγη εις ιερουσαλημ
³εν δε τω πορευεσθαι εγενετο αυτον εγγιζειν τη δαμασκω και εξαιφνης περιηστραψεν αυτον φως απο του ουρανου
⁴και πεσων επι την γην ηκουσεν φωνην λεγουσαν αυτω σαουλ σαουλ τι με διωκεις
⁵ειπεν δε τις ει κυριε ο δε κυριος ειπεν εγω ειμι ιησους ον συ διωκεις σκληρον σοι προς κεντρα λακτιζειν
⁶τρεμων τε και θαμβων ειπεν κυριε τι με θελεις ποιησαι και ο κυριος προς αυτον αναστηθι και εισελθε εις την πολιν και λαληθησεται σοι τι σε δει ποιειν
⁷οι δε ανδρες οι συνοδευοντες αυτω ειστηκεισαν εννεοι ακουοντες μεν της φωνης μηδεν δε θεωρουντες
⁸ηγερθη δε ο σαυλος απο της γης ανεωγμενων δε των οφθαλμων αυτου ουδενα εβλεπεν χειραγωγουντες δε αυτον εισηγαγον εις δαμασκον
⁹και ην ημερας τρεις μη βλεπων και ουκ εφαγεν ουδε ειπεν
¹⁰ην δε τις μαθητης εν δαμασκω ονοματι ανανιας και ειπεν προς αυτον ο κυριος εν οραματι ανανια ο δε ειπεν ιδου εγω κυριε
¹¹ο δε κυριος προς αυτον αναστας πορευθητι επι την ρυμην την καλουμενην ευθειαν και ζητησον εν οικια ιουδα σαυλον ονοματι ταρσεα ιδου γαρ προσευχεται
¹²και ειδεν εν οραματι ανδρα ονοματι ανανιαν εισελθοντα και επιθεντα αυτω χειρα οπως αναβλεψη
¹³απεκριθη δε ο ανανιας κυριε ακηκοα απο πολλων περι του ανδρος τουτου οσα κακα εποιησεν τοις αγιοις σου εν ιερουσαλημ
¹⁴και ωδε εχει εξουσιαν παρα των αρχιερων δησαι παντας τους επικαλουμενους το ονομα σου
¹⁵ειπεν δε προς αυτον ο κυριος πορευου οτι σκευος εκλογης μοι εστιν ουτος του βαστασαι το ονομα μου ενωπιον εθνων και βασιλεων υιων τε ισραηλ
¹⁶εγω γαρ υποδειξω αυτω οσα δει αυτον υπερ του ονοματος μου παθειν
¹⁷απηλθεν δε ανανιας και εισηλθεν εις την οικιαν και επιθεις επ αυτον τας χειρας ειπεν σαουλ αδελφε ο κυριος απεσταλκεν με ιησους ο οφθεις σοι εν τη οδω η ηρχου οπως αναβλεψης και πλησθης πνευματος αγιου
¹⁸και ευθεως απεπεσον απο των οφθαλμων αυτου ωσει λεπιδες ανεβλεψεν τε παραχρημα και αναστας εβαπτισθη
¹⁹και λαβων τροφην ενισχυσεν εγενετο δε ο σαυλος μετα των εν δαμασκω μαθητων ημερας τινας
²⁰και ευθεως εν ταις συναγωγαίς εκηρυσσεν τον χριστον οτι ουτος εστιν ο υιος του θεου

²¹εξίσταντο δε παντες οι ακουοντες και ελεγον ουχ ουτος εστιν ο πορθησας εν ιερουσαλημ τους επικαλουμενους το ονομα τουτο και ωδε εις τουτο εληλυθει ινα δεδεμενους αυτους αγαγη επι τους αρχιερεις

²²σαυλος δε μαλλον ενεδυναμouto και συνεχυνεν τους ιουδαιους τους κατοικουντας εν δαμασκω συμβιβαζων οτι ουτος εστιν ο χριστος

²³ως δε πληρουντο ημεραι ικαναι συνεβουλευσαντο οι ιουδαιοι ανελιν αυτον

²⁴εγνωσθη δε τω σαυλω η επιβουλη αυτων παρετηρουν τε τας πυλας ημερας τε και νυκτος οπως αυτον ανελωσιν

²⁵λαβοντες δε αυτον οι μαθηται νυκτος καθηκαν δια του τειχους χαλασαντες εν σπυριδι

²⁶παραγενομενος δε ο σαυλος εις ιερουσαλημ επειρατο κολλασθαι τοις μαθηταις και παντες εφοβουντο αυτον μη πιστευοντες οτι εστιν μαθητης

²⁷βαρναβας δε επιλαβομενος αυτον ηγαγεν προς τους αποστολους και διηγησατο αυτοις πως εν τη οδω ειδεν τον κυριον και οτι ελαλησεν αυτω και πως εν δαμασκω επαρρησιασατο εν τω ονοματι του ιησου

²⁸και ην μετ αυτων εισπορευομενος και εκπορευομενος εν ιερουσαλημ και παρρησιαζομενος εν τω ονοματι του κυριου ιησου

²⁹ελαλει τε και συνεζητει προς τους ελληνιστας οι δε επεχειρουν αυτον ανελιν

³⁰επιγοντες δε οι αδελφοι κατηγαγον αυτον εις καισαρειαν και εξαπεστειλαν αυτον εις ταρσον

³¹αι μεν ουν εκκλησiai καθ ολης της ιουδαιας και γαλιλαιας και σαμαρειας ειχον ειρηνην οικοδομουμεναι και πορευομεναι τω φοβω του κυριου και τη παρακλησει του αγιου πνευματος πληθυνοντο

³²εγενετο δε πετρον διερχομενον δια παντων κατελθειν και προς τους αγιους τους κατοικουντας λυδδαν

³³ευρεν δε εκει ανθρωπον τινα αινεαν ονοματι εξ ετων οκτω κατακειμενον επι κραββατω ος ην παραλελυμενος

³⁴και ειπεν αυτω ο πετρος αινεα ιαται σε ιησους ο χριστος αναστηθι και στρωσον σεαυτω και ευθεως ανεστη

³⁵και ειδον αυτον παντες οι κατοικουντες λυδδαν και τον σαρωνα οιτινες επεστρεψαν επι τον κυριον

³⁶εν ιοπη δε τις ην μαθητρια ονοματι ταβιθα η διερμηνευομενη λεγεται δορκας αυτη ην πληρης αγαθων εργαων και ελεημοσυνων ων εποiei

³⁷εγενετο δε εν ταις ημεραις εκειναις ασθενησασαν αυτην αποθανειν λουσαντες δε αυτην εθηκαν εν υπερωω

³⁸εγγυς δε ουσης λυδδης τη ιοπη οι μαθηται ακουσαντες οτι πετρος εστιν εν αυτη απεστειλαν δυο ανδρας προς αυτον παρακαλουντες μη οκνησαι διελθειν εως αυτων

³⁹ αναστας δε πετρος συνηλθεν αυτοις ον παραγενομενον ανηγαγον εις το υπερων και παρεστησαν αυτω πασαι αι χηραι κλαιουσαι και επιδεικνυμεναι χιτωνας και ιματια οσα εποιει μετ αυτων οσα η δορκας

⁴⁰ εκβαλων δε εξω παντας ο πετρος θεις τα γονατα προσηυξατο και επιστρεψας προς το σωμα ειπεν ταβιθα αναστηθι η δε ηνοιξεν τους οφθαλμους αυτης και ιδουσα τον πετρον ανεκαθισεν

⁴¹ δους δε αυτη χειρα ανεστησεν αυτην φωνησας δε τους αγιους και τας χηρας παρεστησεν αυτην ζωσαν

⁴² γνωστον δε εγενετο καθ ολης της ιοππης και πολλοι επιστευσαν επι τον κυριον

⁴³ εγενετο δε ημερας ικανας μιναι αυτον εν ιοππη παρα τινι σιμωνι βυρσει

Chapter 10

¹ανηρ δε τις ην εν καισαρεια ονοματι κορνηλιος εκατονταρχης εκ σπειρης της καλουμενης ιταλικης
²ευσεβης και φοβουμενος τον θεον συν παντι τω οικω αυτου ποιων τε ελεημοσυνας πολλας τω λαω και δεομενος του θεου διαπαντος
³ειδεν εν οραματι φανερωσ ωσει ωραν εννατην της ημερας αγγελον του θεου εισελθοντα προς αυτον και ειποντα αυτω κορνηλιε
⁴ο δε ατενισας αυτω και εμφοβος γενομενος ειπεν τι εστιν κυριε ειπεν δε αυτω αι προσευχαι σου και αι ελεημοσυναι σου ανεβησαν εις μνημοσυνον ενωπιον του θεου
⁵και νυν πεμψον εις ιοππην ανδρας και μεταπεμψαι σιμωνα ος επικαλειται πετρος
⁶ουτος ξενιζεται παρα τινι σιμωνι βυρσει ω εστιν οικια παρα θαλασσαν ουτος λαλησει σοι τι σε δει ποιειν
⁷ως δε απηλθεν ο αγγελος ο λαλων τω κορνηλιω φωνησας δυο των οικητων αυτου και στρατιωτην ευσεβη των προσκαρτερουντων αυτω
⁸και εξηγησαμενος αυτοις απαντα απεστειλεν αυτους εις την ιοππην
⁹τη δε επαυριον οδοιπορουντων εκεινων και τη πολει εγγιζοντων ανεβη πετρος επι το δωμα προσευξασθαι περι ωραν εκτην
¹⁰εγενετο δε προσπεινος και ηθελεν γευσασθαι παρασκευαζοντων δε εκεινων επεπεσεν επ αυτον εκστασις
¹¹και θεωρει τον ουρανον ανεωγμενον και καταβαινον επ αυτον σκευος τι ως οθονην μεγαλην τεσσαρσιν αρχαις δεδεμενον και καθιεμενον επι της γης
¹²εν ω υπηρχεν παντα τα τετραποδα της γης και τα θηρια και τα ερπετα και τα πετεινα του ουρανου
¹³και εγενετο φωνη προς αυτον αναστας πετρε θυσον και φαγε
¹⁴ο δε πετρος ειπεν μηδαμως κυριε οτι ουδεποτε εφαγον παν κοινον η ακαθαρτον
¹⁵και φωνη παλιν εκ δευτερου προς αυτον α ο θεος εκαθαρισεν συ μη κοινου
¹⁶τουτο δε εγενετο επι τρις και παλιν ανεληφθη το σκευος εις τον ουρανον
¹⁷ως δε εν εαυτω διηπορει ο πετρος τι αν ειη το οραμα ο ειδεν και ιδου οι ανδρες οι απεσταλμενοι απο του κορνηλιου διερωτησαντες την οικιαν σιμωνος επεστησαν επι τον πυλωνα
¹⁸και φωνησαντες επυνθανοντο ει σιμων ο επικαλουμενος πετρος ενθαδε ξενιζεται
¹⁹του δε πετρου ενθυμουμενου περι του οραματος ειπεν αυτω το πνευμα ιδου ανδρες τρεις ζητουσιν σε
²⁰αλλα αναστας καταβηθι και πορευου συν αυτοις μηδεν διακρινομενος διοτι εγω απεσταλκα αυτους
²¹καταβας δε πετρος προς τους ανδρας τους απεσταλμενους απο του κορνηλιου προς αυτον ειπεν ιδου εγω ειμι ον ζητειτε τις η αιτια δι ην παρεστε

²²οι δε ειπον κορνηλιος εκατονταρχης ανηρ δικαιος και φοβουμενος τον θεον μαρτυρουμενος τε υπο ολου του εθνους των ιουδαιων εχρηματισθη υπο αγγελου αγιου μεταπεμψασθαι σε εις τον οικον αυτου και ακουσαι ρηματα παρα σου

²³εισκαλεσαμενος ουν αυτους εξενισεν τη δε επαυριον ο πετρος εξηλθεν συν αυτοις και τινες των αδελφων των απο της ιοππης συνηλθον αυτω

²⁴και τη επαυριον εισηλθον εις την καισαρειαν ο δε κορνηλιος ην προσδοκων αυτους συγκαλεσαμενος τους συγγενεις αυτου και τους αναγκαιους φιλους

²⁵ως δε εγενετο εισελθειν τον πετρον συναντησας αυτω ο κορνηλιος πεσων επι τους ποδας προσεκυνησεν

²⁶ο δε πετρος αυτον ηγειρεν λεγων αναστηθι καγω αυτος ανθρωπος ειμι

²⁷και συνομιλων αυτω εισηλθεν και ευρισκει συνεληλυθοτας πολλους

²⁸εφη τε προς αυτους υμεις επιστασθε ως αθεμιτον εστιν ανδρι ιουδαιω κολλασθαι η προσερχεσθαι αλλοφυλω και εμοι ο θεος εδειξεν μηδενα κοινον η ακαθαρτον λεγειν ανθρωπον

²⁹διο και αναντιρρητως ηλθον μεταπεμφθεις πυνθανομαι ουν τινι λογω μετεπεμψασθε με

³⁰και ο κορνηλιος εφη απο τεταρτης ημερας μεχρι ταυτης της ωρας ημην νηστευων και την εννατην ωραν προσευχομενος εν τω οικω μου και ιδου ανηρ εστη ενωπιον μου εν εσθητι λαμπρα

³¹και φησιν κορνηλιε εισηκουσθη σου η προσευχη και αι ελεημοσυναι σου εμνησθησαν ενωπιον του θεου

³²πεμψον ουν εις ιοππην και μετακαλεσαι σιμωνα ος επικαλειται πετρος ουτος ξενιζεται εν οικια σιμωνος βυρσεως παρα θαλασσαν ος παραγενομενος λαλησει σοι

³³εξαυτης ουν επεμψα προς σε συ τε καλως εποιησας παραγενομενος νυν ουν παντες ημεις ενωπιον του θεου παρεσμεν ακουσαι παντα τα προστεταγμενα σοι υπο του θεου

³⁴ανοιξας δε πετρος το στομα ειπεν επ αληθειας καταλαμβανομαι οτι ουκ εστιν προσωποληπτης ο θεος

³⁵αλλ εν παντι εθνει ο φοβουμενος αυτον και εργαζομενος δικαιοσυνην δεκτος αυτω εστιν

³⁶τον λογον ον απεστειλεν τοις υιοις ισραηλ ευαγγελιζομενος ειρηνην δια ιησου χριστου ουτος εστιν παντων κυριος

³⁷υμεις οιδατε το γενομενον ρημα καθ ολης της ιουδαιας αρξαμενον απο της γαλιλαιας μετα το βαπτισμα ο εκηρυξεν ιωαννης

³⁸ιησουν τον απο ναζαρεθ ως εχρισεν αυτον ο θεος πνευματι αγιω και δυναμει ος δηλθεν ευεργετων και ιωμενος παντας τους καταδυναστευομενους υπο του διαβολου οτι ο θεος ην μετ αυτου

³⁹και ημεις εσμεν μαρτυρες παντων ων εποιησεν εν τε τη χωρα των ιουδαιων και εν ιερουσαλημ ον ανειλον κρεμασαντες επι ξυλου

⁴⁰τουτον ο θεος ηγειρεν τη τριτη ημερα και εδωκεν αυτον εμφανη γενεσθαι

⁴¹ου παντι τω λαω αλλα μαρτυσιν τοις προκεχειροτονημενοις υπο του θεου ημιν οιτινες συνεφαγομεν και συνεπιομεν αυτω μετα το αναστηναι αυτον εκ νεκρων

⁴²και παρηγγειλεν ημιν κηρυξαι τω λαω και διαμαρτυρασθαι οτι αυτος εστιν ο ωρισμενος υπο του θεου κριτης ζωντων και νεκρων

⁴³τουτω παντες οι προφηται μαρτυρουσιν αφεσιν αμαρτιων λαβειν δια του ονοματος αυτου παντα τον πιστευοντα εις αυτον

⁴⁴ετι λαλουντος του πετρου τα ρηματα ταυτα επεπεσεν το πνευμα το αγιον επι παντας τους ακουοντας τον λογον

⁴⁵και εξεστησαν οι εκ περιτομης πιστοι οσοι συνηλθον τω πετρω οτι και επι τα εθνη η δωρεα του αγιου πνευματος εκκεχυται

⁴⁶ηκουον γαρ αυτων λαλουντων γλωσσαις και μεγαλυνοντων τον θεον τοτε απεκριθη ο πετρος

⁴⁷μητι το υδωρ κωλυσαι δυναται τις του μη βαπτισθηναι τουτους οιτινες το πνευμα το αγιον ελαβον καθως και ημεις

⁴⁸προσεταξεν τε αυτους βαπτισθηναι εν τω ονοματι του κυριου τοτε ηρωτησαν αυτον επιμειναι ημερας τινας

Chapter 11

¹ηκουσαν δε οι αποστολοι και οι αδελφοι οι οντες κατα την ιουδαιαν οτι και τα εθνη εδεξαντο τον λογον του θεου
²και οτε ανεβη πετρος εις ιεροσολυμα διεκρινοντο προς αυτον οι εκ περιτομης
³λεγοντες οτι προς ανδρας ακροβυστιαν εχοντας εισηλθες και συνεφαγες αυτοις
⁴αρξαμενος δε ο πετρος εξετιθετο αυτοις καθεξης λεγων
⁵εγω ημην εν πολει ιοπηη προσευχομενος και ειδον εν εκστασει οραμα καταβαινον σκευος τι ως οθονην μεγαλην τεσσαρσιν αρχαις καθιεμενην εκ του ουρανου και ηλθεν αχρις εμου
⁶εις ην ατενισας κατενοουν και ειδον τα τετραποδα της γης και τα θηρια και τα ερπετα και τα πετεινα του ουρανου
⁷ηκουσα δε φωνης λεγουσης μοι αναστας πετρε θυσον και φαγε
⁸ειπον δε μηδαμως κυριε οτι παν κοινον η ακαθαρτον ουδεποτε εισηλθεν εις το στομα μου
⁹απεκριθη δε μοι φωνη εκ δευτερου εκ του ουρανου α ο θεος εκαθαρισεν συ μη κοινου
¹⁰τουτο δε εγενετο επι τρις και παλιν ανεσπασθη απαντα εις τον ουρανον
¹¹και ιδου εξαυτης τρεις ανδρες επεστησαν επι την οικιαν εν η ημην απεσταλμενοι απο καισαρειας προς με
¹²ειπεν δε μοι το πνευμα συνελθειν αυτοις μηδεν διακρινομενον ηλθον δε συν εμοι και οι εξ αδελφοι ουτοι και εισηλθομεν εις τον οικον του ανδρος
¹³απηγγειλεν τε ημιν πως ειδεν τον αγγελον εν τω οικω αυτου σταθεντα και ειποντα αυτω αποστειλον εις ιοπηην ανδρας και μεταπεμψαι σιμωνα τον επικαλουμενον πετρον
¹⁴ος λαλησει ρηματα προς σε εν οις σωθηση συ και πας ο οικος σου
¹⁵εν δε τω αρξασθαι με λαλειν επεπεσεν το πνευμα το αγιον επ αυτους ωσπερ και εφ ημας εν αρχη
¹⁶εμνησθην δε του ρηματος κυριου ως ελεγεν ιωαννης μεν εβαπτισεν υδατι υμεις δε βαπτισθησεσθε εν πνευματι αγιω
¹⁷ει ουν την ισην δωρεαν εδωκεν αυτοις ο θεος ως και ημιν πιστευσασιν επι τον κυριον ιησουν χριστον εγω δε τις ημην δυνατος κωλυσαι τον θεον
¹⁸ακουσαντες δε ταυτα ησυχασαν και εδοξαζον τον θεον λεγοντες αραγε και τοις εθνεσιν ο θεος την μετανοιαν εδωκεν εις ζωην
¹⁹οι μεν ουν διασπαρεντες απο της θλιψεως της γενομενης επι στεφανω δηληθον εως φοινικης και κυπρου και αντιοχειας μηδενι λαλουντες τον λογον ει μη μονον ιουδαιοις
²⁰ησαν δε τινες εξ αυτων ανδρες κυπριοι και κυρηναιοι οιτινες εισελθοντες εις αντιοχειαν ελαλουν προς τους ελληνιστας ευαγγελιζομενοι τον κυριον ιησουν
²¹και ην χειρ κυριου μετ αυτων πολυς τε αριθμος πιστευσας επεστρεψεν επι τον κυριον
²²ηκουσθη δε ο λογος εις τα ωτα της εκκλησιας της εν ιεροσολυμοις περι αυτων και εξαπεστειλαν βαρναβαν διελθειν εως αντιοχειας
²³ος παραγενομενος και ιδων την χαριν του θεου εχαρη και παρεκαλει παντας τη προθεσει της καρδιας προσμενειν τω κυριω

²⁴ οτι ην ανηρ αγαθος και πληρης πνευματος αγιου και πιστεως και προσετεθη οχλος ικανος τω κυριω

²⁵ εξηλθεν δε εις ταρσον ο βαρναβας αναζητησαι σαυλον

²⁶ και ευρων αυτον ηγαγεν αυτον εις αντιοχειαν εγενετο δε αυτους ενιαυτον ολον συναχθηναι εν τη εκκλησια και διδασκει οχλον ικανον χρηματισαι τε πρωτον εν αντιοχεια τους μαθητας χριστιανους

²⁷ εν ταυταις δε ταις ημεραις κατηλθον απο ιεροσολυμων προφηται εις αντιοχειαν

²⁸ αναστας δε εις εξ αυτων ονοματι αγαβος εσημανεν δια του πνευματος λιμον μεγαν μελλειν εσεσθαι εφ ολην την οικουμενην οστις και εγενετο επι κλαυδιου καισαρος

²⁹ των δε μαθητων καθως ηυπορειτο τις ωρισαν εκαστος αυτων εις διακονιαν πεμψαι τοις κατοικουσιν εν τη ιουδαια αδελφοις

³⁰ ο και εποιησαν αποστειλαντες προς τους πρεσβυτερους δια χειρος βαρναβα και σαυλου

Chapter 12

- ¹κατ'εκεῖνον δὲ τὸν καιρὸν ἐπέβαλεν ἠρώδης ὁ βασιλεὺς τὰς χεῖρας κακῶσαι τινὰς τῶν ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας
- ²ἀνείλεν δὲ ἰακώβον τὸν ἀδελφὸν ἰωάννου μαχαιρᾶ
- ³καὶ ἰδὼν ὅτι ἀρεστὸν ἐστὶν τοῖς ἰουδαίοις προσεθετο συλλαβεῖν καὶ πέτρον ἦσαν δὲ ἡμέραι τῶν ἀζύμων
- ⁴ὄν καὶ πιάσας ἐθετο εἰς φυλακὴν παραδοὺς τεσσαρσὶν τετραδίοις στρατιωτῶν φυλάσσειν αὐτὸν βουλομένης μετὰ τὸ πάσχα ἀναγαγεῖν αὐτὸν τῷ λαῷ
- ⁵ὁ μὲν οὖν πέτρος ἐτήρειτο ἐν τῇ φυλακῇ προσευχῇ δὲ ἦν ἐκτενῆς γινομένη ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας πρὸς τὸν θεὸν ὑπὲρ αὐτοῦ
- ⁶ὅτε δὲ ἐμελλεν αὐτὸν προαγεῖν ὁ ἠρώδης τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ ἦν ὁ πέτρος κοιμώμενος μετὰ δύο στρατιωτῶν δεδεμένος ἀλυσέσιν δύοσιν φυλάκες τε πρὸ τῆς θύρας ἐτήρουν τὴν φυλακὴν
- ⁷καὶ ἰδοὺ ἀγγέλους κυρίου ἐπέστη καὶ φῶς ἐλάμψεν ἐν τῷ οἰκηματί παταξάς δὲ τὴν πλευρὰν τοῦ πέτρου ἠγείρεν αὐτὸν λέγων ἀνάστα ἐν τάχει καὶ ἐξέπεσον αὐτοῦ αἱ ἀλυσεῖς ἐκ τῶν χεῖρων
- ⁸εἶπεν τε ὁ ἀγγέλους πρὸς αὐτὸν περιζῶσαι καὶ υποδησαὶ τὰ σάνδαλα σου ἐποίησεν δὲ οὕτως καὶ λέγει αὐτῷ περιβαλοὺ τὸ ἱμάτιόν σου καὶ ἀκολουθεῖ μοι
- ⁹καὶ ἐξελθὼν ἠκολούθει αὐτῷ καὶ οὐκ ᾔδει ὅτι ἀληθὲς ἐστὶν τὸ γινομένη διὰ τοῦ ἀγγελοῦ ἐδοκεῖ δὲ ὄραμα βλέπειν
- ¹⁰διελθόντες δὲ πρῶτην φυλακὴν καὶ δευτέραν ἦλθον ἐπὶ τὴν πυλὴν τὴν σιδηρὰν τὴν φέρουσαν εἰς τὴν πόλιν ἠτίς αὐτομάτῃ ἠνοιχθῆ αὐτοῖς καὶ ἐξελθόντες προῆλθον ῥυμὴν μίαν καὶ εὐθέως ἀπέστη ὁ ἀγγέλους ἀπ' αὐτοῦ
- ¹¹καὶ ὁ πέτρος γενομένης ἐν ἑαυτῷ εἶπεν νῦν οἶδα ἀληθῶς ὅτι ἐξαπέστειλεν κύριος τὸν ἀγγέλους αὐτοῦ καὶ ἐξείλετο με ἐκ χεῖρος ἠρώδου καὶ πάσης τῆς προσδοκίας τοῦ λαοῦ τῶν ἰουδαίων
- ¹²συνιδὼν τε ἦλθεν ἐπὶ τὴν οἰκίαν μαρίας τῆς μητρὸς ἰωάννου τοῦ ἐπικαλούμενου μαρκου οὗ ἦσαν ἱκανοὶ συνηθροισμένοι καὶ προσευχομένοι
- ¹³κρουσάντος δὲ τοῦ πέτρου τὴν θύραν τοῦ πυλῶνος προσηλθὲν παιδίσκῃ ὑπακούσαι ὀνοματί ροδῆ
- ¹⁴καὶ ἐπιγνοῦσα τὴν φωνὴν τοῦ πέτρου ἀπὸ τῆς χάρας οὐκ ἠνοιξεν τὸν πυλῶνα εἰσδραμούσα δὲ ἀπηγγείλεν εἶσταναι τὸν πέτρον πρὸ τοῦ πυλῶνος
- ¹⁵οἱ δὲ πρὸς αὐτὴν εἶπον μαινῆ ἡ δὲ δισχυρίζετο οὕτως εἶπεν οἱ δ' ἐλέγον ὁ ἀγγέλους αὐτοῦ ἐστὶν
- ¹⁶ὁ δὲ πέτρος ἐπεμένεν κρουῶν ἀνοιζάντες δὲ εἶδον αὐτὸν καὶ ἐξεστήσαν
- ¹⁷κατασεισάς δὲ αὐτοῖς τῇ χεὶρὶ σιγὰν διηγήσατο αὐτοῖς πῶς ὁ κύριος αὐτὸν ἐξήγαγεν ἐκ τῆς φυλακῆς εἶπεν δὲ ἀπαγγείλατε ἰακώβῳ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς ταῦτα καὶ ἐξελθὼν ἐπορευθῆ εἰς ἕτερον τόπον
- ¹⁸γενομένης δὲ ἡμέρας ἦν ταραχὸς οὐκ ὀλίγος ἐν τοῖς στρατιωταῖς τί ἀρα ὁ πέτρος ἐγένετο

¹⁹ ηρωδης δε επιζητησας αυτον και μη ευρων ανακρινας τους φυλακας εκελευσεν απαχθηναι και κατελθων απο της ιουδαιας εις την καισαρειαν διετριβεν

²⁰ ην δε ο ηρωδης θυμομαχων τυριοις και σιδωνιοις ομοθυμαδον δε παρησαν προς αυτον και πεισαντες βλαστον τον επι του κοιτωνος του βασιλεως ητουντο ειρηνην δια το τρεφεσθαι αυτων την χωραν απο της βασιλικης

²¹ τακτη δε ημερα ο ηρωδης ενδυσαμενος εσθητα βασιλικην και καθισας επι του βηματος εδημηγορει προς αυτους

²² ο δε δημοσ επεφωνει θεου φωνη και ουκ ανθρωπου

²³ παραρημα δε επαταξεν αυτον αγγελος κυριου ανθ ων ουκ εδωκεν την δοξαν τω θεω και γενομενος σκωληκοβρωτος εξεψυξεν

²⁴ ο δε λογος του θεου ηυξανεν και επληθυνετο

²⁵ βαρναβας δε και σαυλος υπεστρεψαν εξ ιερουσαλημ πληρωσαντες την διακονιαν συμπαραλαβοντες και ιωαννην τον επικληθεντα μαρκον

Chapter 13

¹ησαν δε τινες εν αντιοχεια κατα την ουσαν εκκλησιαν προφηται και διδασκαλοι ο τε βαρναβας και συμεων ο καλουμενος νιγερ και λουκιος ο κυρηναιος μαναην τε ηρωδου του τετραρχου συντροφος και σαυλος

²λειτουρουντων δε αυτων τω κυριω και νηστεουντων ειπεν το πνευμα το αγιον αφορισατε δη μοι τον τε βαρναβαν και τον σαυλον εις το εργον ο προσκεκλημαι αυτους

³τοτε νηστευσαντες και προσευξαμενοι και επιθεντες τας χειρας αυτοις απελευσαν

⁴ουτοι μεν ουν εκπεμφθεντες υπο του πνευματος του αγιου κατηλθον εις την σελευκειαν εκειθεν τε απεπλευσαν εις την κυπρον

⁵και γενομενοι εν σαλαμινι κατηγγελλον τον λογον του θεου εν ταις συναγωγαις των ιουδαιων ειχον δε και ιωαννην υπηρετην

⁶διελθοντες δε την νησον αχρι παφου ευρον τινα μαγον ψευδοπροφητην ιουδαιον ω ονομα βαριησους

⁷ος ην συν τω ανθυπατω σεργιω παυλω ανδρι συνετω ουτος προσκαλεσαμενος βαρναβαν και σαυλον επεζητησεν ακουσαι τον λογον του θεου

⁸ανθιστατο δε αυτοις ελυμας ο μαγος ουτως γαρ μεθερμηνευεται το ονομα αυτου ζητων διαστρεψαι τον ανθυπατον απο της πιστεως

⁹σαυλος δε ο και παυλος πλησθεις πνευματος αγιου και ατενισας εις αυτον

¹⁰ειπεν ω πληρης παντος δολου και πασης ραδιουργιας υιε διαβολου εχθρε πασης δικαιοσυνης ου παυση διαστρεφων τας οδους κυριου τας ευθειας

¹¹και νυν ιδου χειρ του κυριου επι σε και εση τυφλος μη βλεπων τον ηλιον αχρι καιρου παραρημα δε επεπεσεν επ αυτον αχλυσ και σκοτος και περιαγων εξητει χειραγωγους

¹²τοτε ιδων ο ανθυπατος το γεγονος επιστευσεν εκπλησσομενος επι τη διδαχη του κυριου

¹³αναχθεντες δε απο της παφου οι περι τον παυλον ηλθον εις περγην της παμφυλιας ιωαννης δε αποχωρησας απ αυτων υπεστρεψεν εις ιεροσολυμα

¹⁴αυτοι δε διελθοντες απο της περγης παρεγενοντο εις αντιοχειαν της πισιδιας και εισελθοντες εις την συναγωγην τη ημερα των σαββατων εκαθισαν

¹⁵μετα δε την αναγνωσιν του νομου και των προφητων απεστειλαν οι αρχισυναγωγοι προς αυτους λεγοντες ανδρες αδελφοι ει εστιν λογος εν υμιν παρακλησεως προς τον λαον λεγετε

¹⁶αναστας δε παυλος και κατασεισας τη χειρι ειπεν ανδρες ισραηλιται και οι φοβουμενοι τον θεον ακουσατε

¹⁷ο θεος του λαου τουτου ισραηλ εξελεξατο τους πατερας ημων και τον λαον υψωσεν εν τη παροικια εν γη αιγυπτω και μετα βραχιονος υψηλου εξηγαγεν αυτους εξ αυτης

¹⁸και ως τεσσαρακονταετη χρονον ετροποφορησεν αυτους εν τη ερημω

¹⁹και καθελων εθνη επτα εν γη χανααν κατεκληροδοτησεν αυτοις την γην αυτων

²⁰και μετα ταυτα ως ετεσιν τετρακοσιοις και πενηκοντα εδωκεν κριτας εως σαμουηλ του προφητου

²¹κακειθεν ητησαντο βασιλεα και εδωκεν αυτοις ο θεος τον σαουλ υιον κικ ανδρα εκ φυλης βενιαμιν ετη τεσσαρακοντα
²²και μεταστησας αυτον ηγειρεν αυτοις τον δαβιδ εις βασιλεα ω και ειπεν μαρτυρησας ευρον δαβιδ τον του ιεσσαι ανδρα κατα την καρδιαν μου ος ποιησει παντα τα θεληματα μου
²³τουτου ο θεος απο του σπερματος κατ επαγγελιαν ηγειρεν τω ισραηλ σωτηρα ιησουν
²⁴προκηρυξαντος ιωαννου προ προσωπου της εισοδου αυτου βαπτισμα μετανοιας παντι τω λαω ισραηλ
²⁵ως δε επληρου ο ιωαννης τον δρομον ελεγεν τινα με υπονοειτε ειναι ουκ ειμι εγω αλλ ιδου ερχεται μετ εμε ου ουκ ειμι αξιος το υποδημα των ποδων λυσαι
²⁶ανδρες αδελφοι υιοι γενους αβρααμ και οι εν υμιν φοβουμενοι τον θεον υμιν ο λογος της σωτηριας ταυτης απεσταλη
²⁷οι γαρ κατοικουντες εν ιερουσαλημ και οι αρχοντες αυτων τουτον αγνοησαντες και τας φωνας των προφητων τας κατα παν σαββατον αναγινωσκομενας κριναντες επληρωσαν
²⁸και μηδεμιαν αιτιαν θανατου ευροντες ητησαντο πιλατον αναιρεθηναι αυτον
²⁹ως δε ετελεσαν απαντα τα περι αυτου γεγραμμενα καθελοντες απο του ξυλου εθηκαν εις μνημειον
³⁰ο δε θεος ηγειρεν αυτον εκ νεκρων
³¹ος ωφθη επι ημερας πλειους τοις συναναβασιν αυτω απο της γαλιλαιας εις ιερουσαλημ οιτινες εισιν μαρτυρες αυτου προς τον λαον
³²και ημεις υμας ευαγγελιζομεθα την προς τους πατερας επαγγελιαν γενομενην οτι ταυτην ο θεος εκπεπληρωκεν τοις τεκνοις αυτων ημιν αναστησας ιησουν
³³ως και εν τω ψαλμω τω δευτερω γεγραπται υιος μου ει συ εγω σημερον γεγεννηκα σε
³⁴οτι δε ανεστησεν αυτον εκ νεκρων μηκετι μελλοντα υποστρεφειν εις διαφθοραν ουτως ειρηκεν οτι δωσω υμιν τα οσια δαβιδ τα πιστα
³⁵διο και εν ετερω λεγει ου δωσεις τον οσιον σου ιδειν διαφθοραν
³⁶δαβιδ μεν γαρ ιδια γενεα υπηρετησας τη του θεου βουλη εκοιμηθη και προσετεθη προς τους πατερας αυτου και ειδεν διαφθοραν
³⁷ον δε ο θεος ηγειρεν ουκ ειδεν διαφθοραν
³⁸γνωστον ουν εστω υμιν ανδρες αδελφοι οτι δια τουτου υμιν αφεις αμαρτιων καταγγελλεται
³⁹και απο παντων ων ουκ ηδυνηθητε εν τω νομω μωσεως δικαιοθηναι εν τουτω πας ο πιστευων δικαιουται
⁴⁰βλεπετε ουν μη επεληθ εφ υμας το ειρημενον εν τοις προφηταις
⁴¹ιδετε οι καταφρονηται και θαυμασατε και αφανισθητε οτι εργον εγω εργαζομαι εν ταις ημεραις υμων εργον ω ου μη πιστευσητε εαν τις εκδιηγηται υμιν
⁴²εξιοντων δε εκ της συναγωγης των ιουδαιων παρεκαλουν τα εθνη εις το μεταξυ σαββατον λαληθηναι αυτοις τα ρηματα ταυτα

⁴³λυθεισης δε της συναγωγης ηκολουθησαν πολλοι των ιουδαιων και των σεβομενων προσηλυτων τω παυλω και τω βαρναβα οιτινες προσλαλουντες αυτοις επειθον αυτους επιμενειν τη χαριτι του θεου

⁴⁴τω δε ερχομενω σαββατω σχεδον πασα η πολις συνηχθη ακουσαι τον λογον του θεου

⁴⁵ιδοντες δε οι ιουδαιοι τους οχλους επλησθησαν ζηλου και αντελεγον τοις υπο του παυλου λεγομενοις αντιλεγοντες και βλασφημουντες

⁴⁶παρρησιασαμενοι δε ο παυλος και ο βαρναβας ειπον υμιν ην αναγκαιον πρωτον λαληθηναι τον λογον του θεου επειδη δε απωθεισθε αυτον και ουκ αξιους κρινετε εαυτους της αιωνιου ζωης ιδου στρεφομεθα εις τα εθνη

⁴⁷ουτως γαρ εντεταλται ημιν ο κυριος τεθεικα σε εις φως εθνων του ειναι σε εις σωτηριαν εως εσχατου της γης

⁴⁸ακουοντα δε τα εθνη εχαιρον και εδοξαζον τον λογον του κυριου και επιστευσαν οσοι ησαν τεταγμενοι εις ζωην αιωνιον

⁴⁹διεφερετο δε ο λογος του κυριου δι ολης της χωρας

⁵⁰οι δε ιουδαιοι παρωτρυναν τας σεβομενας γυναικας και τας ευσημονας και τους πρωτους της πολεως και επηγειραν διωγμον επι τον παυλον και τον βαρναβαν και εξεβαλον αυτους απο των οριων αυτων

⁵¹οι δε εκτιναξαμενοι τον κονιορτον των ποδων αυτων επ αυτους ηλθον εις ικονιον

⁵²οι δε μαθηται επληρουντο χαρας και πνευματος αγιου

Chapter 14

¹εγενετο δε εν ικονιω κατα το αυτο εισελθειν αυτους εις την συναγωγην των ιουδαιων και λαλησαι ουτως ωστε πιστευσαι ιουδαιων τε και ελληνων πολυ πληθος
²οι δε απειθουντες ιουδαιοι επηγειραν και εκακωσαν τας ψυχας των εθνων κατα των αδελφων
³ικανον μεν ουν χρονον διετριψαν παρρησιαζομενοι επι τω κυριω τω μαρτυρουντι τω λογω της χαριτος αυτου και διδοντι σημεια και τερατα γινεσθαι δια των χειρων αυτων
⁴εσχισθη δε το πληθος της πολεως και οι μεν ησαν συν τοις ιουδαιοις οι δε συν τοις αποστολοις
⁵ως δε εγενετο ορμη των εθνων τε και ιουδαιων συν τοις αρχουσιν αυτων υβρισαι και λιθοβολησαι αυτους
⁶συνιδοντες κατεφυγον εις τας πολεις της λυκαονιας λυστραν και δερβην και την περιχωρον
⁷κακει ησαν ευαγγελιζομενοι
⁸και τις ανηρ εν λυστροις αδυνατος τοις ποσιν εκαθητο χωλος εκ κοιλιας μητρος αυτου υπαρχων ος ουδεποτε περιεπεπατηκει
⁹ουτος ηκουεν του παυλου λαλουντος ος ατενισας αυτω και ιδων οτι πιστιν εχει του σωθηναι
¹⁰ειπεν μεγαλη τη φωνη αναστηθι επι τους ποδας σου ορθος και ηλλετο και περιεπατει
¹¹οι δε οχλοι ιδοντες ο εποιησεν ο παυλος επηραν την φωνην αυτων λυκαονιστι λεγοντες οι θεοι ομοιωθεντες ανθρωποις κατεβησαν προς ημας
¹²εκαλουν τε τον μεν βαρναβαν δια τον δε παυλον ερμην επειδη αυτος ην ο ηγουμενος του λογου
¹³ο δε ιερευς του διος του οντος προ της πολεως αυτων ταυρους και στεμματα επι τους πυλωνας ενεγκας συν τοις οχλοις ηθελεν θυειν
¹⁴ακουσαντες δε οι αποστολοι βαρναβας και παυλος διαρρηξαντες τα ιματια αυτων εισεπηδησαν εις τον οχλον κραζοντες
¹⁵και λεγοντες ανδρες τι ταυτα ποιειτε και ημεις ομοιοπαθεις εσμεν υμιν ανθρωποι ευαγγελιζομενοι υμας απο τουτων των ματαιων επιστρεφειν επι τον θεον τον ζωντα ος εποιησεν τον ουρανον και την γην και την θαλασσαν και παντα τα εν αυτοις
¹⁶ος εν ταις παρωχημεναις γενεαις ειασεν παντα τα εθνη πορευεσθαι ταις οδοις αυτων
¹⁷και τοι γε ουκ αμαρτυρον εαυτον αφηκεν αγαθοποιων ουρανοθεν ημιν υετους διδους και καιρους καρποφορους επιπλων τροφης και ευφροσυνης τας καρδιας ημων
¹⁸και ταυτα λεγοντες μολις κατεπαυσαν τους οχλους του μη θυειν αυτοις
¹⁹επηλθον δε απο αντιοχειας και ικονιου ιουδαιοι και πεισαντες τους οχλους και λιθασαντες τον παυλον εσυρον εξω της πολεως νομισαντες αυτον τεθναναι
²⁰κυκλωσαντων δε αυτον των μαθητων αναστας εισηλθεν εις την πολιν και τη επαυριον εξηλθεν συν τω βαρναβα εις δερβην

²¹ευαγγελισαμενοι τε την πολιν εκεινην και μαθητευσαντες ικανους υπεστρεψαν εις την λυστραν και ικονιον και αντιοχειαν

²²επιστηριζοντες τας ψυχας των μαθητων παρακαλουντες εμμενειν τη πιστει και οτι δια πολλων θλιψεων δει ημας εισελθειν εις την βασιλειαν του θεου

²³χειροτονησαντες δε αυτοις πρεσβυτερους κατ εκκλησιαν προσευξαμενοι μετα νηστειων παρεθεντο αυτους τω κυριω εις ον πεπιστευκεισαν

²⁴και διελθοντες την πισιδιαν ηλθον εις παμφυλιαν

²⁵και λαλησαντες εν περγη τον λογον κατεβησαν εις ατταλειαν

²⁶κακειθεν απεπλευσαν εις αντιοχειαν οθεν ησαν παραδεδομενοι τη χαριτι του θεου εις το εργον ο επληρωσαν

²⁷παραγενομενοι δε και συναγαγοντες την εκκλησιαν ανηγγειλαν οσα εποιησεν ο θεος μετ αυτων και οτι ηνοιξεν τοις εθνεσιν θυραν πιστεως

²⁸διετριβον δε εκει χρονον ουκ ολιγον συν τοις μαθηταις

Chapter 15

¹και τινες κατελθοντες απο της ιουδαιας εδιδασκον τους αδελφους οτι εαν μη περιτεμνησθε τω εθει μωυσεως ου δυνασθε σωθηναι
²γενομενης ουν στασεως και συζητησεως ουκ ολιγης τω παυλω και τω βαρναβα προς αυτους εταξαν αναβαινειν παυλον και βαρναβαν και τινας αλλους εξ αυτων προς τους αποστολους και πρεσβυτερους εις ιερουσαλημ περι του ζητηματος τουτου
³οι μεν ουν προπεμφθεντες υπο της εκκλησιας διηρχοντο την φοινικην και σαμαρειαν εκδιηγουμενοι την επιστροφην των εθνων και εποιουν χαραν μεγαλην πασιν τοις αδελφοις
⁴παραγενομενοι δε εις ιερουσαλημ απεδεχθησαν υπο της εκκλησιας και των αποστολων και των πρεσβυτερων ανηγγειλαν τε οσα ο θεος εποιησεν μετ αυτων
⁵εξανεστησαν δε τινες των απο της αιρεσεως των φαρισαιων πεπιστευκοτες λεγοντες οτι δει περιτεμνειν αυτους παραγγελλειν τε τηρειν τον νομον μωυσεως
⁶συνηχθησαν δε οι αποστολοι και οι πρεσβυτεροι ιδειν περι του λογου τουτου
⁷πολλης δε συζητησεως γενομενης αναστας πετρος ειπεν προς αυτους ανδρες αδελφοι υμεις επιστασθε οτι αφ ημερων αρχαιων ο θεος εν ημιν εξελεξατο δια του στοματος μου ακουσαι τα εθνη τον λογον του ευαγγελιου και πιστευσαι
⁸και ο καρδιογνωστης θεος εμαρτυρησεν αυτοις δους αυτοις το πνευμα το αγιον καθως και ημιν
⁹και ουδεν διεκρινεν μεταξυ ημων τε και αυτων τη πιστει καθαρισας τας καρδιας αυτων
¹⁰νυν ουν τι πειραζετε τον θεον επιθειναι ζυγον επι τον τραχηλον των μαθητων ον ουτε οι πατερες ημων ουτε ημεις ισχυσαμεν βαστασαι
¹¹αλλα δια της χαριτος κυριου ιησου χριστου πιστευομεν σωθηναι καθ ον τροπον κακεινοι
¹²εσιγησεν δε παν το πληθος και ηκουον βαρναβα και παυλου εξηγουμενων οσα εποιησεν ο θεος σημεια και τερατα εν τοις εθνεσιν δι αυτων
¹³μετα δε το σιγησαι αυτους απεκριθη ιακωβος λεγων ανδρες αδελφοι ακουσατε μου
¹⁴συμμεων εξηγησατο καθως πρωτον ο θεος επεσκεψατο λαβειν εξ εθνων λαον επι τω ονοματι αυτου
¹⁵και τουτω συμφωνουσιν οι λογοι των προφητων καθως γεγραπται
¹⁶μετα ταυτα αναστρεψω και ανοικοδομησω την σκηνην δαβιδ την πεπτωκυιαν και τα κατεσκαμμενα αυτης ανοικοδομησω και ανορθωσω αυτην
¹⁷οπως αν εκζητησωσιν οι καταλοιποι των ανθρωπων τον κυριον και παντα τα εθνη εφ ους επικεκληται το ονομα μου επ αυτους λεγει κυριος ο ποιων ταυτα παντα
¹⁸γνωστα απ αιωνος εστιν τω θεω παντα τα εργα αυτου
¹⁹διο εγω κρινω μη παρενοχλειν τοις απο των εθνων επιστρεφουσιν επι τον θεον
²⁰αλλα επιστειλαι αυτοις του απεχεσθαι απο των αλισγηματων των ειδωλων και της πορνειας και του πνικτου και του αιματος
²¹μωσης γαρ εκ γενεων αρχαιων κατα πολιν τους κηρυσσοντας αυτον εχει εν ταις συναγωγαις κατα παν σαββατον αναγινωσκομενος

²² τότε εδοξεν τοις αποστολοις και τοις πρεσβυτεροις συν ολη τη εκκλησια εκλεξαμενους ανδρας εξ αυτων πεμψαι εις αντιοχειαν συν τω παυλω και βαρναβα ιουδαν τον επικαλουμενον βαρσαβαν και σιλαν ανδρας ηγουμενους εν τοις αδελφοις
²³ γραψαντες δια χειρος αυτων ταδε οι αποστολοι και οι πρεσβυτεροι και οι αδελφοι τοις κατα την αντιοχειαν και συριαν και κιλικιαν αδελφοις τοις εξ εθνων χαιρειν
²⁴ επειδη ηκουσαμεν οτι τινες εξ ημων εξελθοντες εταραξαν υμας λογοις ανασκευαζοντες τας ψυχας υμων λεγοντες περιτεμνεσθαι και τηρειν τον νομον οις ου διεστειλαμεθα
²⁵ εδοξεν ημιν γενομενοις ομοθυμαδον εκλεξαμενους ανδρας πεμψαι προς υμας συν τοις αγαπητοις ημων βαρναβα και παυλω
²⁶ ανθρωποις παραδεδωκοσιν τας ψυχας αυτων υπερ του ονοματος του κυριου ημων ιησου χριστου
²⁷ απεσταλκαμεν ουν ιουδαν και σιλαν και αυτους δια λογου απαγγελοντας τα αυτα
²⁸ εδοξεν γαρ τω αγιω πνευματι και ημιν μηδεν πλεον επιτιθεσθαι υμιν βαρος πλην των επαναγκες τουτων
²⁹ απεχεσθαι ειδωλοθυτων και αιματος και πνικτου και πορνειας εξ ων διατηρουντες εαυτους ευ πραξετε ερρωσθε
³⁰ οι μεν ουν απολυθεντες ηλθον εις αντιοχειαν και συναγαγοντες το πληθος επεδωκαν την επιστολην
³¹ αναγνοντες δε εχαρησαν επι τη παρακλησει
³² ιουδας δε και σιλας και αυτοι προφηται οντες δια λογου πολλου παρεκαλεσαν τους αδελφους και επεστηριξαν
³³ ποιησαντες δε χρονον απελυθησαν μετ ειρηνης απο των αδελφων προς τους αποστολους
³⁴ εδοξεν δε τω σιλα επιμειναι αυτου
³⁵ παυλος δε και βαρναβας διετριβον εν αντιοχεια διδασκοντες και ευαγγελιζομενοι μετα και ετερων πολλων τον λογον του κυριου
³⁶ μετα δε τινας ημερας ειπεν παυλος προς βαρναβαν επιστρεψαντες δη επισκεψωμεθα τους αδελφους ημων κατα πασαν πολιν εν αις κατηγγειλαμεν τον λογον του κυριου πως εχουσιν
³⁷ βαρναβας δε εβουλευσατο συμπαραλαβειν τον ιωαννην τον καλουμενον μαρκον
³⁸ παυλος δε ηξιου τον αποσταντα απ αυτων απο παμφυλιας και μη συνελθοντα αυτοις εις το εργον μη συμπαραλαβειν τουτον
³⁹ εγενετο ουν παροξυσμος ωστε αποχωρισθηναι αυτους απ αλληλων τον τε βαρναβαν παραλαβοντα τον μαρκον εκπλευσαι εις κυπρον
⁴⁰ παυλος δε επιλεξαμενος σιλαν εξηλθεν παραδοθεις τη χαριτι του θεου υπο των αδελφων
⁴¹ διηρχετο δε την συριαν και κιλικιαν επιστηριζων τας εκκλησιας

Chapter 16

¹κατηντησεν δε εις δερβην και λυστραν και ιδου μαθητης τις ην εκει ονοματι τιμοθεος υιος γυναικος τινος ιουδαιας πιστης πατρος δε ελληνος
²ος εμαρτυρειτο υπο των εν λυστροις και ικονιω αδελφων
³τουτον ηβηλησεν ο παυλος συν αυτω εξελθειν και λαβων περιετεμεν αυτον δια τους ιουδαιους τους οντας εν τοις τοποις εκεινοις ηδεισαν γαρ απαντες τον πατερα αυτου οτι ελλην υπηρχεν
⁴ως δε διεπορευοντο τας πολεις παρεδιδουν αυτοις φυλασσειν τα δογματα τα κεκριμενα υπο των αποστολων και των πρεσβυτερων των εν ιερουσαλημ
⁵αι μεν ουν εκκλησiai εστερεουντο τη πιστει και επερισσευον τω αριθμω καθ ημεραν
⁶διελθοντες δε την φρυγιαν και την γαλατικην χωραν κωλυθεντες υπο του αγιου πνευματος λαλησαι τον λογον εν τη ασια
⁷ελθοντες κατα την μυσιαν επειραζον κατα την βιθυνιαν πορευεσθαι και ουκ ειασεν αυτους το πνευμα
⁸παρελθοντες δε την μυσιαν κατεβησαν εις τρωαδα
⁹και οραμα δια της νυκτος ωφθη τω παυλω ανηρ τις ην μακεδων εστως παρακαλων αυτον και λεγων διαβας εις μακεδονιαν βοηθησον ημιν
¹⁰ως δε το οραμα ειδεν ευθεως εξητησαμεν εξελθειν εις την μακεδονιαν συμβιβαζοντες οτι προσκεκληται ημας ο κυριος ευαγγελισασθαι αυτους
¹¹αναχθεντες ουν απο της τρωαδος ευθυδρομησαμεν εις σαμοθρακην τη τε επιουση εις νεαπολιν
¹²εκειθεν τε εις φιλιππους ητις εστιν πρωτη της μεριδος της μακεδονιας πολις κολωνια ημεν δε εν ταυτη τη πολει διατριβοντες ημερας τινας
¹³τη τε ημερα των σαββατων εξηλθομεν εξω της πολεως παρα ποταμον ου ενομιζετο προσευχη ειναι και καθισαντες ελαλουμεν ταις συνελθουσαις γυναιξιν
¹⁴και τις γυνη ονοματι λυδια πορφυροπωλις πολεως θυατειρων σεβομενη τον θεον ηκουεν ης ο κυριος διηνοιξεν την καρδιαν προσεχειν τοις λαλουμενοις υπο του παυλου
¹⁵ως δε εβαπτισθη και ο οικος αυτης παρεκαλεσεν λεγουσα ει κεκρικατε με πιστην τω κυριω ειναι εισελθοντες εις τον οικον μου μεινατε και παρεβιασατο ημας
¹⁶εγενετο δε πορευομενων ημων εις προσευχην παιδισκην τινα εχουσαν πνευμα πυθωνος απαντησαι ημιν ητις εργασιαν πολλην παρειχεν τοις κυριοις αυτης μαντευομενη
¹⁷αυτη κατακολουθησασα τω παυλω και ημιν εκραζεν λεγουσα ουτοι οι ανθρωποι δουλοι του θεου του υψιστου εισιν οιτινες καταγγελλουσιν ημιν οδον σωτηριας
¹⁸τουτο δε εποιει επι πολλας ημερας διαπονηθεις δε ο παυλος και επιστρεψας τω πνευματι ειπεν παραγγελλω σοι εν τω ονοματι ιησου χριστου εξελθειν απ αυτης και εξηλθεν αυτη τη ωρα
¹⁹ιδοντες δε οι κυριοι αυτης οτι εξηλθεν η ελπις της εργασιας αυτων επιλαβομενοι τον παυλον και τον σιλαν ειλκυσαν εις την αγοραν επι τους αρχοντας

²⁰ και προσαγαγοντες αυτους τοις στρατηγοις ειπον ουτοι οι ανθρωποι εκταρασσουν ημων την πολιν ιουδαιοι υπαρχοντες
²¹ και καταγγελλουσιν εθνη α ουκ εξεστιν ημιν παραδεχεσθαι ουδε ποιειν ρωμαιοις ουσιν
²² και συνεπεστη ο οχλος κατ αυτων και οι στρατηγοι περιρρηξαντες αυτων τα ιματια εκελευον ραβδιζειν
²³ πολλας τε επιθεντες αυτοις πληγας εβαλον εις φυλακην παραγγειλαντες τω δεσμοφυλακι ασφαλως τηρειν αυτους
²⁴ ος παραγγελιαν τοιαυτην ειληφως εβαλεν αυτους εις την εσωτεραν φυλακην και τους ποδας αυτων ησφαλισατο εις το ξυλον
²⁵ κατα δε το μεσονυκτιον παυλος και σιλας προσευχομενοι υμνουν τον θεον επηκρωνοντο δε αυτων οι δεσμιοι
²⁶ αφνω δε σεισμος εγενετο μεγας ωστε σαλευθηναι τα θεμελια του δεσμωτηριου ανεωχθησαν τε παραρηματα αι θυραι πασαι και παντων τα δεσμα ανεθη
²⁷ εξυπνος δε γενομενος ο δεσμοφυλαξ και ιδων ανεωγμενας τας θυρας της φυλακης σπασαμενος μαχαιραν εμελλεν εαυτον αναιρειν νομιζων εκπεφευγεναι τους δεσμιους
²⁸ εφωνησεν δε φωνη μεγαλη ο παυλος λεγων μηδεν πραξης σεαυτω κακον απαντες γαρ εσμεν ενθαδε
²⁹ αιτησας δε φωτα εισεπηδησεν και εντρομος γενομενος προσεπεσεν τω παυλω και τω σιλα
³⁰ και προαγαγων αυτους εξω εφη κυριοι τι με δει ποιειν ινα σωθω
³¹ οι δε ειπον πιστευσον επι τον κυριον ιησουν χριστον και σωθησι συ και ο οικος σου
³² και ελαλησαν αυτω τον λογον του κυριου και πασιν τοις εν τη οικια αυτου
³³ και παραλαβων αυτους εν εκεινη τη ωρα της νυκτος ελουσεν απο των πληγων και εβαπτισθη αυτος και οι αυτου παντες παραρηματα
³⁴ αναγαγων τε αυτους εις τον οικον αυτου παρεθηκεν τραπεζαν και ηγαλλιασατο πανοικι πεπιστευκως τω θεω
³⁵ ημερας δε γενομενης απεστειλαν οι στρατηγοι τους ραβδουχους λεγοντες απολυσον τους ανθρωπους εκεινους
³⁶ απηγγειλεν δε ο δεσμοφυλαξ τους λογους τουτους προς τον παυλον οτι απεσταλκασιν οι στρατηγοι ινα απολυθητε νυν ουν εξελθοντες πορευεσθε εν ειρηνη
³⁷ ο δε παυλος εφη προς αυτους δειραντες ημας δημοσια ακατακριτους ανθρωπους ρωμαιους υπαρχοντας εβαλον εις φυλακην και νυν λαθρα ημας εκβαλλουσιν ου γαρ αλλα ελθοντες αυτοι ημας εξαγαγετωσαν
³⁸ ανηγγειλαν δε τοις στρατηγοις οι ραβδουχοι τα ρηματα ταυτα και εφοβηθησαν ακουσαντες οτι ρωμαιοι εισιν
³⁹ και ελθοντες παρεκαλεσαν αυτους και εξαγαγοντες ηρωτων εξελθειν της πολεως
⁴⁰ εξελθοντες δε εκ της φυλακης εισηλθον εις την λυδιαν και ιδοντες τους αδελφους παρεκαλεσαν αυτους και εξηλθον

Chapter 17

¹διοδευσαντες δε την αμφιπολιν και απολλωνιαν ηλθον εις θεσσαλονικην οπου ην η συναγωγή των ιουδαιων
²κατα δε το ειωθος τω παυλω εισηλθεν προς αυτους και επι σαββατα τρια διελεγετο αυτοις απο των γραφων
³διανοιγων και παρατιθεμενος οτι τον χριστον εδει παθειν και αναστηναι εκ νεκρων και οτι ουτος εστιν ο χριστος ιησους ον εγω καταγγελλω υμιν
⁴και τινες εξ αυτων επεισθησαν και προσεκληρωθησαν τω παυλω και τω σιλα των τε σεβομενων ελληνων πολυ πληθος γυναικων τε των πρωτων ουκ ολιγαι
⁵ζηλωσαντες δε οι απειθουντες ιουδαιοι και προσλαβομενοι των αγοραιων τινας ανδρας πονηρους και οχλοποιησαντες εθορυβουν την πολιν επισταντες τε τη οικια ιασονος εξητουν αυτους αγαγειν εις τον δημον
⁶μη ευροντες δε αυτους εσυρον τον ιασονα και τινας αδελφους επι τους πολιταρχας βοωντες οτι οι την οικουμενην αναστατωσαντες ουτοι και ενθαδε παρεισιν
⁷ους υποδεδεκται ιασων και ουτοι παντες απεναντι των δογματων καισαρος πραττουσιν βασιλεα λεγοντες ετερον ειναι ιησουν
⁸εταραξαν δε τον οχλον και τους πολιταρχας ακουοντας ταυτα
⁹και λαβοντες το ικανον παρα του ιασονος και των λοιπων απελυσαν αυτους
¹⁰οι δε αδελφοι ευθεως δια της νυκτος εξεπεμψαν τον τε παυλον και τον σιλαν εις βεριοιαν οιτινες παραγενομενοι εις την συναγωγην των ιουδαιων απηεσαν
¹¹ουτοι δε ησαν ευγενεστεροι των εν θεσσαλονικη οιτινες εδεξαντο τον λογον μετα πασης προθυμιας το καθ ημεραν ανακρινοντες τας γραφας ει εχοι ταυτα ουτως
¹²πολλοι μεν ουν εξ αυτων επιστευσαν και των ελληνιδων γυναικων των ευσχημωνων και ανδρων ουκ ολιγοι
¹³ως δε εγνωσαν οι απο της θεσσαλονικης ιουδαιοι οτι και εν τη βεριοια κατηγγελη υπο του παυλου ο λογος του θεου ηλθον κακει σαλευοντες τους οχλους
¹⁴ευθεως δε τοτε τον παυλον εξαπεστειλαν οι αδελφοι πορευεσθαι ως επι την θαλασσαν υπεμενον δε ο τε σιλας και ο τιμοθεος εκει
¹⁵οι δε καθιστωντες τον παυλον ηγαγον αυτον εως αθηνων και λαβοντες εντολην προς τον σιλαν και τιμοθεον ινα ως ταχιστα ελθωσιν προς αυτον εξηεσαν
¹⁶εν δε ταις αθηναις εκδεχομενου αυτους του παυλου παρωξυνετο το πνευμα αυτου εν αυτω θεωρουντι κατειδωλον ουσαν την πολιν
¹⁷διελεγετο μεν ουν εν τη συναγωγη τοις ιουδαιοις και τοις σεβομενοις και εν τη αγορα κατα πασαν ημεραν προς τους παρατυγχανοντας
¹⁸τινες δε των επικουρειων και των στωικων φιλοσοφων συνεβαλλον αυτω και τινες ελεγον τι αν θελοι ο σπερμολογος ουτος λεγειν οι δε ξενων δαιμονιων δοκει καταγγελευς ειναι οτι τον ιησουν και την αναστασιν αυτοις ευηγγελιζετο

- ¹⁹ επιλαβομενοι τε αυτου επι τον αρειον παγον ηγαγον λεγοντες δυναμεθα γνωσαι τις η καινη αυτη η υπο σου λαλουμενη διδαχη
- ²⁰ ξενιζοντα γαρ τινα εισφερεις εις τας ακοας ημων βουλομεθα ουν γνωσαι τι αν θελοι ταυτα ειναι
- ²¹ αθηναιοι δε παντες και οι επιδημουντες ξενοι εις ουδεν ετερον ευκαιρουν η λεγειν τι και ακουειν καινοτερον
- ²² σταθεις δε ο παυλος εν μεσω του αρειου παγου εφη ανδρες αθηναιοι κατα παντα ως δεισιδαιμονεστερους υμας θεωρω
- ²³ διερχομενος γαρ και αναθεωρων τα σεβασματα υμων ευρον και βωμον εν ω επεγεγραπτο αγνωστω θεω ον ουν αγνοουντες ευσεβειτε τουτον εγω καταγγελλω υμιν
- ²⁴ ο θεος ο ποιησας τον κοσμον και παντα τα εν αυτω ουτος ουρανου και γης κυριος υπαρχων ουκ εν χειροποιητοις ναοις κατοικει
- ²⁵ ουδε υπο χειρων ανθρωπων θεραπευεται προσδεομενος τινος αυτος διδους πασιν ζωην και πνοην και τα παντα
- ²⁶ εποιησεν τε εξ ενος αιματος παν εθνος ανθρωπων κατοικειν επι παν το προσωπον της γης ορισας προτεταγμενους καιρους και τας οροθεσιας της κατοικιας αυτων
- ²⁷ ζητειν τον κυριον ει αρα γε ψηλαφησειαν αυτον και ευροιεν καιτοιγε ου μακραν απο ενος εκαστου ημων υπαρχοντα
- ²⁸ εν αυτω γαρ ζωμεν και κινουμεθα και εσμεν ως και τινες των καθ υμας ποιητων ειρηκασιν του γαρ και γενοσ εσμεν
- ²⁹ γενοσ ουν υπαρχοντες του θεου ουκ οφειλομεν νομιζειν χρυσω η αργυρω η λιθω χαραγματι τεχνης και ενθυμησησ ανθρωπου το θειον ειναι ομοιον
- ³⁰ τους μεν ουν χρονους της αγνοιας υπεριδων ο θεος τα νυν παραγγελλει τοις ανθρωποις πασιν πανταχου μετανοειν
- ³¹ διοτι εστησεν ημεραν εν η μελλει κρινειν την οικουμενην εν δικαιοσυνη εν ανδρι ω ωρισεν πιστιν παρασχων πασιν αναστησας αυτον εκ νεκρων
- ³² ακουσαντες δε αναστασιν νεκρων οι μεν εχλευαζον οι δε ειπον ακουσομεθα σου παλιν περι τουτου
- ³³ και ουτως ο παυλος εξηληθεν εκ μεσου αυτων
- ³⁴ τινες δε ανδρες κολληθεντες αυτω επιστευσαν εν οις και διονυσιος ο αρεοπαγιτης και γυνη ονοματι δαμαρις και ετεροι συν αυτοις

Chapter 18

- ¹μετα δε ταυτα χωρισθεις ο παυλος εκ των αθηνων ηλθεν εις κορινθον
²και ευρων τινα ιουδαιον ονοματι ακυλαν ποντικον τω γενει προσφατως εληλυθοτα απο της ιταλιας και πρισκιλλαν γυναικα αυτου δια το διατεταχεναι κλαυδιον χωριζεσθαι παντας τους ιουδαιους εκ της ρωμης προσηλθεν αυτοις
³και δια το ομοτεχνον ειναι εμενεν παρ αυτοις και ειργαζετο ησαν γαρ σκηνοποιοι την τεχνην
⁴διελεγετο δε εν τη συναγωγη κατα παν σαββατον επειθεν τε ιουδαιους και ελληνας
⁵ως δε κατηλθον απο της μακεδονιας ο τε σιλας και ο τιμοθεος συνειχετο τω πνευματι ο παυλος διαμαρτυρομενος τοις ιουδαιοις τον χριστον ιησουν
⁶αντιτασσομενων δε αυτων και βλασφημουντων εκτιναξαμενος τα ιματια ειπεν προς αυτους το αιμα υμων επι την κεφαλην υμων καθαρος εγω απο του νυν εις τα εθνη πορευσομαι
⁷και μεταβας εκειθεν ηλθεν εις οικιαν τινος ονοματι ιουστου σεβομενου τον θεον ου η οικια ην συνομορουσα τη συναγωγη
⁸κρισπος δε ο αρχισυναγωγος επιστευσεν τω κυριω συν ολω τω οικω αυτου και πολλοι των κορινθιων ακουοντες επιστευον και εβαπτιζοντο
⁹ειπεν δε ο κυριος δι οραματος εν νυκτι τω παυλω μη φοβου αλλα λαλει και μη σιωπησης
¹⁰διοτι εγω ειμι μετα σου και ουδεις επιθησεται σοι του κακωσαι σε διοτι λαος εστιν μοι πολυς εν τη πολει ταυτη
¹¹εκαθισεν τε ενιαυτον και μηνας εξ διδασκων εν αυτοις τον λογον του θεου
¹²γαλλιωνος δε ανθυπατευοντος της αχαιας κατεπεστησαν ομοθυμαδον οι ιουδαιοι τω παυλω και ηγαγον αυτον επι το βημα
¹³λεγοντες οτι παρα τον νομον ουτος αναπειθει τους ανθρωπους σεβεσθαι τον θεον
¹⁴μελλοντος δε του παυλου ανοιγειν το στομα ειπεν ο γαλλιων προς τους ιουδαιους ει μεν ουν ην αδικημα τι η ραδιουργημα πονηρον ω ιουδαιοι κατα λογον αν ηνεσχομην υμων
¹⁵ει δε ζητημα εστιν περι λογου και ονοματων και νομου του καθ υμας οψεσθε αυτοι κριτης γαρ εγω τουτων ου βουλομαι ειναι
¹⁶και απηλασεν αυτους απο του βηματος
¹⁷επιλαβομενοι δε παντες οι ελληνες σωσθενην τον αρχισυναγωγον ετυπτον εμπροσθεν του βηματος και ουδεν τουτων τω γαλλιωνι εμελεν
¹⁸ο δε παυλος ετι προσμεινας ημερας ικανας τοις αδελφοις αποταξαμενος εξεπλει εις την συριαν και συν αυτω πρισκιλλα και ακυλας κειραμενος την κεφαλην εν κεγχραις ειχεν γαρ ευχην
¹⁹κατηντησεν δε εις εφεσον κακεινους κατελιπεν αυτου αυτος δε εισελθων εις την συναγωγην διελεχθη τοις ιουδαιοις
²⁰ερωτωντων δε αυτων επι πλειονα χρονον μειναι παρ αυτοις ουκ επενευσεν

- ²¹ αλλ απεταξατο αυτοις ειπων δει με παντως την εορτην την ερχομενην ποιησαι εις ιεροσολυμα παλιν δε ανακαμψω προς υμας του θεου θελοντος και ανηχθη απο της εφεσου
- ²² και κατελθων εις καισαρειαν αναβας και ασπασαμενος την εκκλησιαν κατεβη εις αντιοχειαν
- ²³ και ποιησας χρονον τινα εξηλθεν διερχομενος καθεξης την γαλατικην χωραν και φρυγιαν επιστηριζων παντας τους μαθητας
- ²⁴ ιουδαιος δε τις απολλως ονοματι αλεξανδρευσ τω γενει ανηρ λογιος κατηντησεν εις εφεσον δυνατος ων εν ταις γραφαις
- ²⁵ ουτος ην κατηχημενος την οδον του κυριου και ζεων τω πνευματι ελαλει και εδιδασκεν ακριβως τα περι του κυριου επισταμενος μονον το βαπτισμα ιωαννου
- ²⁶ ουτος τε ηρξατο παρρησιαζεσθαι εν τη συναγωγη ακουσαντες δε αυτου ακυλας και πρισκιλλα προσελαβοντο αυτον και ακριβεστερον αυτω εξεθεντο την του θεου οδον
- ²⁷ βουλομενου δε αυτου διελθειν εις την αχαιαν προτρεψαμενοι οι αδελφοι εγραψαν τοις μαθηταις αποδεξασθαι αυτον ος παραγενομενος συνεβαλετο πολυ τοις πεπιστευκοσιν δια της χαριτος
- ²⁸ ευτονως γαρ τοις ιουδαιοις διακατηλεγχετο δημοσια επιδεικνυς δια των γραφων εινα τον χριστον ιησουν

Chapter 19

- ¹εγενετο δε εν τω τον απολλω ειναι εν κορινθω παυλον διελθοντα τα ανωτερα κρηματα
ελθειν εις εφεσον και ευρων τινας μαθητας
²ειπεν προς αυτους ει πνευμα αγιον ελαβετε πιστευσαντες οι δε ειπον προς αυτον αλλ ουδε
ει πνευμα αγιον εστιν ηκουσαμεν
³ειπεν τε προς αυτους εις τι ουν εβαπτισθητε οι δε ειπον εις το ιωαννου βαπτισμα
⁴ειπεν δε παυλος ιωαννης μεν εβαπτισεν βαπτισμα μετανοιας τω λαω λεγων εις τον
ερχομενον μετ αυτον ινα πιστευσωσιν τουτεστιν εις τον χριστον ιησουν
⁵ακουσαντες δε εβαπτισθησαν εις το ονομα του κυριου ιησου
⁶και επιθεντος αυτοις του παυλου τας χειρας ηλθεν το πνευμα το αγιον επ αυτους ελαλουν
τε γλωσσαις και προεφητευον
⁷ησαν δε οι παντες ανδρες ωσει δεκαδυο
⁸εισελθων δε εις την συναγωγην επαρησιαζετο επι μηνας τρεις διαλεγομενος και πειθων
τα περι της βασιλειας του θεου
⁹ως δε τινες εσκληρυνοντο και ηπειθουν κακολογουντες την οδον ενωπιον του πληθους
αποστας απ αυτων αφωρισεν τους μαθητας καθ ημεραν διαλεγομενος εν τη σχολη τυραννου
τινος
¹⁰τουτο δε εγενετο επι ετη δυο ωστε παντας τους κατοικουντας την ασιαν ακουσαι τον
λογον του κυριου ιησου ιουδαιους τε και ελληνας
¹¹δυναμεις τε ου τας τυχουσας εποιει ο θεος δια των χειρων παυλου
¹²ωστε και επι τους ασθενουντας επιφερεσθαι απο του χρωτος αυτου σουδαρια η σιμικινθια
και απαλλασσεσθαι απ αυτων τας νοσους τα τε πνευματα τα πονηρα εξερχεσθαι απ αυτων
¹³επεχειρησαν δε τινες απο των περιερχομενων ιουδαιων εξορκιστων ονομαζειν επι τους
εχοντας τα πνευματα τα πονηρα το ονομα του κυριου ιησου λεγοντες ορκιζομεν υμας τον
ιησουν ον ο παυλος κηρυσσει
¹⁴ησαν δε τινες υιοι σκευα ιουδαιου αρχιερεως επτα οι τουτο ποιουντες
¹⁵αποκριθεν δε το πνευμα το πονηρον ειπεν τον ιησουν γινωσκω και τον παυλον επισταμαι
υμεις δε τινες εστε
¹⁶και εφאלλομενος επ αυτους ο ανθρωπος εν ω ην το πνευμα το πονηρον και κατακυριευσας
αυτων ισχυσεν κατ αυτων ωστε γυμνους και τετραυματισμενους εκφυγειν εκ του οικου
εκεινου
¹⁷τουτο δε εγενετο γνωστον πασιν ιουδαιοις τε και ελλησιν τοις κατοικουσιν την εφεσον
και επεπεσεν φοβος επι παντας αυτους και εμεγαλυετο το ονομα του κυριου ιησου
¹⁸πολλοι τε των πεπιστευκοτων ηρχοντο εξομολογουμενοι και αναγγελλοντες τας πραξεις
αυτων
¹⁹ικανοι δε των τα περιεργα πραξαντων συνενεγκαντες τας βιβλους κατεκαιον ενωπιον
παντων και συνεψηφισαν τας τιμας αυτων και ευρον αργυριου μυριαδας πεντε
²⁰ουτως κατα κρατος ο λογος του κυριου ηυξανεν και ισχυεν

²¹ως δε επληρωθη ταυτα εθετο ο παυλος εν τω πνευματι διελθων την μακεδονιαν και αχαιαν πορευεσθαι εις ιερουσαλημ ειπων οτι μετα το γενεσθαι με εκει δει με και ρωμην ιδειν

²²αποστειλας δε εις την μακεδονιαν δυο των διακονουντων αυτω τιμοθεον και εραστον αυτος επεσχεν χρονον εις την ασιαν

²³εγενετο δε κατα τον καιρον εκεινον ταραχος ουκ ολιγος περι της οδου

²⁴δημητριος γαρ τις ονοματι αργυροκοπος ποιων ναους αργυρους αρτεμιδος παρειχετο τοις τεχνιταις εργασιαν ουκ ολιγην

²⁵ους συναθροισας και τους περι τα τοιαυτα εργατας ειπεν ανδρες επιστασθε οτι εκ ταυτης της εργασιας η ευπορια ημων εστιν

²⁶και θεωρειτε και ακουετε οτι ου μονον εφεσου αλλα σχεδον πασης της ασιας ο παυλος ουτος πεισας μετεστησεν ικανον οχλον λεγων οτι ουκ εισιν θεοι οι δια χειρων γινομενοι

²⁷ου μονον δε τουτο κινδυνευει ημιν το μερος εις απελεγμον ελθειν αλλα και το της μεγαλης θεας αρτεμιδος ιερον εις ουδεν λογισθηναι μελλειν τε και καθαιρεισθαι την μεγαλειοτητα αυτης ην ολη η ασια και η οικουμενη σεβεται

²⁸ακουσαντες δε και γενομενοι πληρεις θυμου εκραζον λεγοντες μεγαλη η αρτεμις εφεσιων

²⁹και επλησθη η πολις ολη συγχυσεως ωρμησαν τε ομοθυμαδον εις το θεατρον συναρπασαντες γαιον και αρισταρχον μακεδονας συνεκδημους του παυλου

³⁰του δε παυλου βουλομενου εισελθειν εις τον δημον ουκ ειων αυτον οι μαθηται

³¹τινες δε και των ασιαρχων οντες αυτω φιλοι πεμψαντες προς αυτον παρεκαλουν μη δουναι εαυτον εις το θεατρον

³²αλλοι μεν ουν αλλο τι εκραζον ην γαρ η εκκλησια συγκεχυμενη και οι πλειους ουκ ηδεισαν τινος ενεκεν συνεληλυθεισαν

³³εκ δε του οχλου προεβιβασαν αλεξανδρον προβαλλοντων αυτον των ιουδαιων ο δε αλεξανδρος κατασεισας την χειρα ηθελεν απολογεισθαι τω δημω

³⁴επιγοντων δε οτι ιουδαιος εστιν φωνη εγενετο μια εκ παντων ως επι ωρας δυο κραζοντων μεγαλη η αρτεμις εφεσιων

³⁵καταστειλας δε ο γραμματευσ τον οχλον φησιν ανδρες εφεσιοι τις γαρ εστιν ανθρωπος ος ου γινωσκει την εφεσιων πολιν νεωκορον ουσαν της μεγαλης θεας αρτεμιδος και του διοπετους

³⁶αναντιρρητων ουν οντων τουτων δεον εστιν υμας κατεσταλμενους υπαρχειν και μηδεν προπετες πραττειν

³⁷ηγαγετε γαρ τους ανδρας τουτους ουτε ιεροσυλους ουτε βλασφημουντας την θεαν υμων

³⁸ει μεν ουν δημητριος και οι ουν αυτω τεχνιται προς τινα λογον εχουσιν αγοραιοι αγωνται και ανθυπατοι εισιν εγκαλειτωσαν αλληλοις

³⁹ει δε τι περι ετερων επιζητειτε εν τη εννομω εκκλησια επιλυθησεται

⁴⁰και γαρ κινδυνευομεν εγκαλεισθαι στασεως περι της σημερον μηδενος αιτιου υπαρχοντος περι ου δυνησομεθα αποδουναι λογον της συστροφης ταυτης

⁴¹ και ταυτα ειπων απελυσεν την εκκλησιαν

Chapter 20

¹μετα δε το παυσασθαι τον θορυβον προσκαλεσαμενος ο παυλος τους μαθητας και ασπασαμενος εξηλθεν πορευθηναι εις την μακεδονιαν
²διελθων δε τα μερη εκεινα και παρακαλεσας αυτους λογω πολλω ηλθεν εις την ελλαδα
³ποιησας τε μηνας τρεις γενομενης αυτω επιβουλης υπο των ιουδαιων μελλοντι αναγεσθαι εις την συριαν εγενετο γνωμη του υποστρεφειν δια μακεδονιας
⁴συνειπετο δε αυτω αχρι της ασιας σωπατρος βεροιαιος θεσσαλονικεων δε αρισταρχος και σεκουνδος και γαιος δερβαιος και τιμοθεος ασιανοι δε τυχικος και τροφιμος
⁵ουτοι προελθοντες εμενον ημας εν τρωαδι
⁶ημεις δε εξεπλευσαμεν μετα τας ημερας των αζυμων απο φιλιππων και ηλθομεν προς αυτους εις την τρωαδα αχρισ ημερων πεντε ου διετριψαμεν ημερας επτα
⁷εν δε τη μια των σαββατων συνηγμενων των μαθητων του κλασαι αρτον ο παυλος διελεγετο αυτοις μελλων εξιεναι τη επαυριον παρετεινεν τε τον λογον μεχρι μεσονυκτιου
⁸ησαν δε λαμπαδες ικαναι εν τω υπερω ου ησαν συνηγμενοι
⁹καθημενος δε τις νεανιας ονοματι ευτυχος επι της θυριδος καταφερομενος υπνω βαθει διαλεγομενου του παυλου επι πλειον κατενεχθεις απο του υπνου επεσεν απο του τριστεγου κατω και ηρθη νεκρος
¹⁰καταβας δε ο παυλος επεπεσεν αυτω και συμπεριλαβων ειπεν μη θορυβεισθε η γαρ ψυχη αυτου εν αυτω εστιν
¹¹αναβας δε και κλασας αρτον και γευσαμενος εφ ικανον τε ομιλησας αχρισ αυγης ουτως εξηλθεν
¹²ηγαγον δε τον παιδα ζωντα και παρεκληθησαν ου μετριως
¹³ημεις δε προελθοντες επι το πλοιον ανηχθημεν εις την ασσον εκειθεν μελλοντες αναλαμβανειν τον παυλον ουτως γαρ ην διατεταγμενος μελλων αυτος πεζευειν
¹⁴ως δε συνεβαλεν ημιν εις την ασσον αναλαβοντες αυτον ηλθομεν εις μιτυληνην
¹⁵κακειθεν αποπλευσαντες τη επιουση κατηντησαμεν αντικρυ χιου τη δε ετερα παρεβαλομεν εις σαμον και μειναντες εν τρωγυλλιω τη εχομενη ηλθομεν εις μιλητον
¹⁶εκρινεν γαρ ο παυλος παραπλευσαι την εφεσον οπως μη γενηται αυτω χρονοτριβησαι εν τη ασια εσπευδεν γαρ ει δυνατον ην αυτω την ημεραν της πεντηκοστης γενεσθαι εις ιεροσολυμα
¹⁷απο δε της μιλητου πεμψας εις εφεσον μετεκαλεσατο τους πρεσβυτερους της εκκλησιας
¹⁸ως δε παρεγενοντο προς αυτον ειπεν αυτοις υμεις επιστασθε απο πρωτης ημερας αφ ης επεβην εις την ασιαν πως μεθ υμων τον παντα χρονον εγενομην
¹⁹δουλευων τω κυριω μετα πασης ταπεινοφροσυνης και πολλων δακρυων και πειρασμων των συμβαντων μοι εν ταις επιβουλαις των ιουδαιων
²⁰ως ουδεν υπεστειλαμην των συμφεροντων του μη αναγγειλαι υμιν και διδαξαι υμας δημοσια και κατ οικους

- ²¹διαμαρτυρομενος ιουδαιοις τε και ελλησιν την εις τον θεον μετανοιαν και πιστιν την εις τον κυριον ημων ιησουν χριστον
- ²²και νυν ιδου εγω δεδεμενος τω πνευματι πορευομαι εις ιερουσαλημ τα εν αυτη συναντησοντα μοι μη ειδως
- ²³πλην οτι το πνευμα το αγιον κατα πολιν διαμαρτυρεται λεγον οτι δεσμα με και θλιψεις μενουσιν
- ²⁴αλλ ουδενος λογον ποιουμαι ουδε εχω την ψυχην μου τιμιαν εμαυτω ως τελειωσαι τον δρομον μου μετα χαρας και την διακονιαν ην ελαβον παρα του κυριου ιησου διαμαρτυρασθαι το ευαγγελιον της χαριτος του θεου
- ²⁵και νυν ιδου εγω οιδα οτι ουκετι οψεσθε το προσωπον μου υμεις παντες εν οις δηλθον κηρυσσων την βασιλειαν του θεου
- ²⁶διο μαρτυρομαι υμιν εν τη σημερον ημερα οτι καθαρος εγω απο του αιματος παντων
- ²⁷ου γαρ υπεστειλαμην του μη αναγγειλαι υμιν πασαν την βουλην του θεου
- ²⁸προσεχετε ουν εαυτοις και παντι τω ποιμνιω εν ω υμας το πνευμα το αγιον εθετο επισκοπους ποιμινειν την εκκλησιαν του θεου ην περιεποιησατο δια του ιδιου αιματος
- ²⁹εγω γαρ οιδα τουτο οτι εισελευσονται μετα την αφιξιν μου λυκοι βαρεις εις υμας μη φειδομενοι του ποιμνιου
- ³⁰και εξ υμων αυτων αναστησονται ανδρες λαλουντες διεστραμμενα του αποσπαν τους μαθητας οπισω αυτων
- ³¹διο γρηγορειτε μνημονευοντες οτι τριετιαν νυκτα και ημεραν ουκ επαυσαμην μετα δακρυων νουθετων ενα εκαστον
- ³²και τα νυν παρατιθεμαι υμας αδελφοι τω θεω και τω λογω της χαριτος αυτου τω δυναμενω εποικοδομησαι και δουναι υμιν κληρονομιαν εν τοις ηγιασμενοις πασιν
- ³³αργυριου η χρυσιου η ιματισμου ουδενος επεθυμησα
- ³⁴αυτοι δε γινωσκετε οτι ταις χρειαϊς μου και τοις ουσιν μετ εμου υπηρετησαν αι χειρες αυται
- ³⁵παντα υπεδειξα υμιν οτι ουτως κοπιωντας δει αντιλαμβανεσθαι των ασθενουντων μνημονευειν τε των λογων του κυριου ιησου οτι αυτος ειπεν μακαριον εστιν διδοναι μαλλον η λαμβανειν
- ³⁶και ταυτα ειπων θεις τα γονατα αυτου συν πασιν αυτοις προσηυξατο
- ³⁷ικανος δε εγενετο κλαυθμος παντων και επιπεσοντες επι τον τραχηλον του παυλου κατεφιλον αυτον
- ³⁸οδυνωμενοι μαλιστα επι τω λογω ω ειρηκει οτι ουκετι μελλουσιν το προσωπον αυτου θεωρειν προεπεμπον δε αυτον εις το πλοιον

Chapter 21

¹ως δε εγενετο αναχθηναι ημας αποσπασθεντας απ αυτων ευθυδρομησαντες ηλθομεν εις την κων τη δε εξης εις την ροδον κακειθεν εις παταρα
²και ευροντες πλοιον διαπερων εις φοινικην επιβαντες ανηχθημεν
³αναφαναντες δε την κυπρον και καταλιποντες αυτην ευωνυμον επλεομεν εις συριαν και κατηχθημεν εις τυρον εκεισε γαρ ην το πλοιον αποφορτιζομενον τον γομον
⁴και ανευροντες μαθητας επεμειναμεν αυτου ημερας επτα οιτινες τω παυλω ελεγον δια του πνευματος μη αναβαινειν εις ιερουσαλημ
⁵οτε δε εγενετο ημας εξαρτισαι τας ημερας εξελθοντες επορευομεθα προπεμποντων ημας παντων συν γυναιξιν και τεκνοις εως εξω της πολεως και θεντες τα γονατα επι τον αιγιαλον προσηξαμεθα
⁶και ασπασαμενοι αλληλους επεβημεν εις το πλοιον εκεινοι δε υπεστρεψαν εις τα ιδια
⁷ημεις δε τον πλουν διανυσαντες απο τυρου κατηντησαμεν εις πτολεμαιοδα και ασπασαμενοι τους αδελφους εμειναμεν ημεραν μίαν παρ αυτοις
⁸τη δε επαυριον εξελθοντες οι περι τον παυλον ηλθομεν εις καισαρειαν και εισελθοντες εις τον οικον φιλιππου του ευαγγελιστου του οντος εκ των επτα εμειναμεν παρ αυτω
⁹τουτω δε ησαν θυγατερες παρθενοι τεσσαρες προφητεουσαι
¹⁰επιμενοντων δε ημων ημερας πλειους κατηλθεν τις απο της ιουδαιας προφητης ονοματι αγαβος
¹¹και ελθων προς ημας και αρας την ζωνην του παυλου δησας τε αυτου τας χειρας και τους ποδας ειπεν ταδε λεγει το πνευμα το αγιον τον ανδρα ου εστιν η ζωνη αυτη ουτως δησουσιν εν ιερουσαλημ οι ιουδαιοι και παραδωσουσιν εις χειρας εθνων
¹²ως δε ηκουσαμεν ταυτα παρεκαλουμεν ημεις τε και οι εντοπιοι του μη αναβαινειν αυτον εις ιερουσαλημ
¹³απεκριθη δε ο παυλος τι ποιειτε κλαιοντες και συνθρυπτοντες μου την καρδιαν εγω γαρ ου μονον δεθηναι αλλα και αποθανειν εις ιερουσαλημ ετοιμωσ εχω υπερ του ονοματος του κυριου ιησου
¹⁴μη πειθομενου δε αυτου ησυχασαμεν ειποντες το θελημα του κυριου γενεσθω
¹⁵μετα δε τας ημερας ταυτας αποσκευασαμενοι ανεβαινομεν εις ιερουσαλημ
¹⁶συνηλθον δε και των μαθητων απο καισαρειας συν ημιν αγωντες παρ ω ξενισθωμεν μνασωνι τινι κυπριω αρχαιω μαθητη
¹⁷γενομενων δε ημων εις ιεροσολυμα ασμενωσ εδεξαντο ημασ οι αδελφοι
¹⁸τη δε επιουση εισηει ο παυλος συν ημιν προς ιακωβον παντες τε παρεγενοντο οι πρεσβυτεροι
¹⁹και ασπασαμενος αυτους εξηγειτο καθ εν εκαστον ων εποιησεν ο θεος εν τοις εθνεσιν δια της διακονιασ αυτου
²⁰οι δε ακουσαντες εδοξαζον τον κυριον ειπον τε αυτω θεωρεις αδελφε ποσαι μυριαδες εισιν ιουδαιων των πεπιστευκοτων και παντες ζηλωται του νομου υπαρχουσιν

²¹κατηχηθησαν δε περι σου οτι αποστασιαν διδασκεις απο μωσεως τους κατα τα εθνη παντας ιουδαιους λεγων μη περιτεμνειν αυτους τα τεκνα μηδε τοις εθεσιν περιπατειν
²²τι ουν εστιν παντως δει πληθος συνελθειν ακουσονται γαρ οτι εληλυθας
²³τουτο ουν ποιησον ο σοι λεγομεν εισιν ημιν ανδρες τεσσαρες ευχην εχοντες εφ εαυτων
²⁴τουτους παραλαβων αγνισθητι συν αυτοις και δαπανησον επ αυτοις ινα ξυρησωνται την κεφαλην και γνωσιν παντες οτι ων κατηχηνται περι σου ουδεν εστιν αλλα στοιχεις και αυτος τον νομον φυλασσων
²⁵περι δε των πεπιστευκοτων εθνων ημεις επεστειλαμεν κριναντες μηδεν τοιουτον τηρειν αυτους ει μη φυλασσεσθαι αυτους το τε ειδωλοθυτον και το αιμα και πνικτον και πορνειαν
²⁶τοτε ο παυλος παραλαβων τους ανδρας τη εχομενη ημερα συν αυτοις αγνισθεις εισηει εις το ιερον διαγγελων την εκπληρωσιν των ημερων του αγνισμου εως ου προσηνεχθη υπερ ενος εκαστου αυτων η προσφορα
²⁷ως δε εμελλον αι επτα ημεραι συντελεισθαι οι απο της ασιας ιουδαιοι θεασαμενοι αυτον εν τω ιερω συνεχεον παντα τον οχλον και επεβαλον τας χειρας επ αυτον
²⁸κραζοντες ανδρες ισραηλιται βοηθειτε ουτος εστιν ο ανθρωπος ο κατα του λαου και του νομου και του τοπου τουτου παντας πανταχου διδασκων ετι τε και ελληνας εισηγαγεν εις το ιερον και κεκοινωκεν τον αγιον τοπον τουτον
²⁹ησαν γαρ προεωρακοτες τροφιμον τον εφεσιον εν τη πολει συν αυτω ον ενομιζον οτι εις το ιερον εισηγαγεν ο παυλος
³⁰εκινηθη τε η πολις ολη και εγενετο συνδρομη του λαου και επιλαβομενοι του παυλου ειλκον αυτον εξω του ιερου και ευθεως εκλεισθησαν αι θυραι
³¹ζητουντων δε αυτον αποκτειναι ανεβη φασις τω χιλιαρχω της σπειρης οτι ολη συγκεχυται ιερουσαλημ
³²ος εξαυτης παραλαβων στρατιωτας και εκατονταρχους κατεδραμεν επ αυτους οι δε ιδοντες τον χιλιαρχον και τους στρατιωτας επαυσαντο τυπτοντες τον παυλον
³³τοτε εγγισας ο χιλιαρχος επελαβετο αυτου και εκελευσεν δεθηναι αλυσεσιν δυσιν και επυθανετο τις αν ειη και τι εστιν πεποηκως
³⁴αλλοι δε αλλο τι εβων εν τω οχλω μη δυναμενος δε γνωσαι το ασφαλες δια τον θορυβον εκελευσεν αγεσθαι αυτον εις την παρεμβολην
³⁵οτε δε εγενετο επι τους αναβαθμους συνεβη βασταζεσθαι αυτον υπο των στρατιωτων δια την βιαν του οχλου
³⁶ηκολουθει γαρ το πληθος του λαου κραζον αιρε αυτον
³⁷μελλων τε εισαγεσθαι εις την παρεμβολην ο παυλος λεγει τω χιλιαρχω ει εξεστιν μοι ειπειν τι προς σε ο δε εφη ελληνιστι γινωσκεις
³⁸ουκ αρα συ ει ο αιγυπτιος ο προ τουτων των ημερων αναστατωσας και εξαγαγων εις την ερημον τους τετρακισχιλιους ανδρας των σικαριων
³⁹ειπεν δε ο παυλος εγω ανθρωπος μεν ειμι ιουδαιος ταρσευς της κιλικιας ουκ ασημου πολεως πολιτης δεομαι δε σου επιτρεψον μοι λαλησαι προς τον λαον

⁴⁰ επιτρεψαντος δε αυτου ο παυλος εστως επι των αναβαθμων κατεσεισεν τη χειρι τω λαω πολλης δε σιγης γενομενης προσεφωνησεν τη εβραιδι διαλεκτω λεγων

Chapter 22

- ¹ανδρες αδελφοι και πατερες ακουσατε μου της προς υμας νυν απολογιας
²ακουσαντες δε οτι τη εβραιδι διαλεκτω προσεφωνει αυτοις μαλλον παρεσχον ησυχιαν και φησιν
³εγω μεν ειμι ανηρ ιουδαιος γεγεννημενος εν ταρσω της κιλικιας ανατεθραμμενος δε εν τη πολει ταυτη παρα τους ποδας γαμαλιηλ πεπαιδευμενος κατα ακριβειαν του πατρωου νομου ζηλωτης υπαρχων του θεου καθως παντες υμεις εστε σημερον
⁴ος ταυτην την οδον εδιωξα αχρι θανατου δεσμευων και παραδιδους εις φυλακας ανδρας τε και γυναικας
⁵ως και ο αρχιερευς μαρτυρει μοι και παν το πρεσβυτεριον παρων και επιστολας δεξαμενος προς τους αδελφους εις δαμασκον επορευομην αξων και τους εκεισε οντας δεδεμενους εις ιερουσαλημ ινα τιμωρηθωσιν
⁶εγενετο δε μοι πορευομενω και εγγιζοντι τη δαμασκω περι μεσημβριαν εξαιφνης εκ του ουρανου περιαστραψαι φως ικανον περι εμε
⁷επεσον τε εις το εδαφος και ηκουσα φωνης λεγουσης μοι σαουλ σαουλ τι με διωκεις
⁸εγω δε απεκριθην τις ει κυριε ειπεν τε προς με εγω ειμι ιησους ο ναζωραιος ον συ διωκεις
⁹οι δε συν εμοι οντες το μεν φως εθεασαντο και εμφοβοι εγενοντο την δε φωνην ουκ ηκουσαν του λαλουντος μοι
¹⁰ειπον δε τι ποιησω κυριε ο δε κυριος ειπεν προς με αναστας πορευου εις δαμασκον κακει σοι λαληθησεται περι παντων ων τετακται σοι ποιησαι
¹¹ως δε ουκ ανεβλεπον απο της δοξης του φωτος εκεινου χειραγωγουμενος υπο των συνοντων μοι ηλθον εις δαμασκον
¹²ανανιας δε τις ανηρ ευσεβης κατα τον νομον μαρτυρουμενος υπο παντων των κατοικουντων ιουδαιων
¹³ελθων προς με και επιστας ειπεν μοι σαουλ αδελφε αναβλεψον καγω αυτη τη ωρα ανεβλεψα εις αυτον
¹⁴ο δε ειπεν ο θεος των πατερων ημων προεχειρισατο σε γνωναι το θελημα αυτου και ιδειν τον δικαιον και ακουσαι φωνην εκ του στοματος αυτου
¹⁵οτι εση μαρτυς αυτω προς παντας ανθρωπων ων εωρακας και ηκουσας
¹⁶και νυν τι μελλεις αναστας βαπτισαι και απολουσαι τας αμαρτιας σου επικαλεσαμενος το ονομα του κυριου
¹⁷εγενετο δε μοι υποστρεψαντι εις ιερουσαλημ και προσευχομενου μου εν τω ιερω γενεσθαι με εν εκστασει
¹⁸και ιδειν αυτον λεγοντα μοι σπευσον και εξελθε εν ταχει εξ ιερουσαλημ διοτι ου παραδεχονται σου την μαρτυριαν περι εμου
¹⁹καγω ειπον κυριε αυτοι επιστανται οτι εγω ημην φυλακιζων και δερων κατα τας συναγωγας τους πιστευοντας επι σε

²⁰ και οτε εξεχειτο το αιμα στεφανου του μαρτυρος σου και αυτος ημην εφεστως και συνευδοκων τη αναιρεσει αυτου και φυλασσων τα ιματια των αναιρουντων αυτον
²¹ και ειπεν προς με πορευου οτι εγω εις εθνη μακραν εξαποστελω σε
²² ηκουον δε αυτου αχρι τουτου του λογου και επηραν την φωνην αυτων λεγοντες αιρε απο της γης τον τοιουτον ου γαρ καθηκον αυτον ζην
²³ κραυγαζοντων δε αυτων και ριπτουντων τα ιματια και κονιορτον βαλλοντων εις τον αερα
²⁴ εκελευσεν αυτον ο χιλιαρχος αγεσθαι εις την παρεμβολην ειπων μαστιξιν ανεταζεσθαι αυτον ινα επιγνω δι ην αιτιαν ουτως επεφωνουν αυτω
²⁵ ως δε προτειναν αυτον τοις ιμασιν ειπεν προς τον εστωτα εκατονταρχον ο παυλος ει ανθρωπον ρωμαιον και ακατακριτον εξεστιν υμιν μαστιζειν
²⁶ ακουσας δε ο εκατονταρχος προσελθων απηγγειλεν τω χιλιαρχω λεγων ορα τι μελλεις ποιειν ο γαρ ανθρωπος ουτος ρωμαιος εστιν
²⁷ προσελθων δε ο χιλιαρχος ειπεν αυτω λεγε μοι ει συ ρωμαιος ει ο δε εφη ναι
²⁸ απεκριθη τε ο χιλιαρχος εγω πολλου κεφαλαιου την πολιτειαν ταυτην εκτησαμην ο δε παυλος εφη εγω δε και γεγεννημαι
²⁹ ευθεως ουν απεστησαν απ αυτου οι μελλοντες αυτον ανεταζειν και ο χιλιαρχος δε εφοβηθη επιγνους οτι ρωμαιος εστιν και οτι ην αυτον δεδεκως
³⁰ τη δε επαυριον βουλομενος γνωναι το ασφαλες το τι κατηγορειται παρα των ιουδαιων ελυσεν αυτον απο των δεσμων και εκελευσεν ελθειν τους αρχιερεις και ολον το συνεδριον αυτων και καταγαγων τον παυλον εστησεν εις αυτους

Chapter 23

¹ατενισας δε ο παυλος τω συνεδριω ειπεν ανδρες αδελφοι εγω παση συνειδησει αγαθη πεπολιτευμαι τω θεω αχρι ταυτης της ημερας
²ο δε αρχιερευς ανανιας επεταξεν τοις παρεστωσιν αυτω τυπτειν αυτου το στομα
³τοτε ο παυλος προς αυτον ειπεν τυπτειν σε μελλει ο θεος τοιχε κεκονιαμενε και συ καθη κρινων με κατα τον νομον και παρανομων κελυεις με τυπτεσθαι
⁴οι δε παρεστωτες ειπον τον αρχιερεα του θεου λοιδορεις
⁵εφη τε ο παυλος ουκ ηδειν αδελφοι οτι εστιν αρχιερευς γεγραπται γαρ αρχοντα του λαου σου ουκ ερεις κακως
⁶γνους δε ο παυλος οτι το εν μερος εστιν σαδδουκαιων το δε ετερον φαρισαιων εκραξεν εν τω συνεδριω ανδρες αδελφοι εγω φαρισαιος ειμι υιος φαρισαιου περι ελπιδος και αναστασεως νεκρων εγω κρινομαι
⁷τουτο δε αυτου λαλησαντος εγενετο στασις των φαρισαιων και των σαδδουκαιων και εσχισθη το πληθος
⁸σαδδουκαιοι μεν γαρ λεγουσιν μη ειναι αναστασιν μηδε αγγελον μητε πνευμα φαρισαιοι δε ομολογουσιν τα αμφοτερα
⁹εγενετο δε κραυγη μεγαλη και ανασταντες οι γραμματαις του μερους των φαρισαιων διεμαχοντο λεγοντες ουδεν κακον ευρισκομεν εν τω ανθρωπω τουτω ει δε πνευμα ελαλησεν αυτω η αγγελος μη θεομαχωμεν
¹⁰πολλης δε γενομενης στασεως ευλαβηθεις ο χιλιαρχος μη διασπασθη ο παυλος υπ αυτων εκελευσεν το στρατευμα καταβαν αρπασαι αυτον εκ μεσου αυτων αγειν τε εις την παρεμβολην
¹¹τη δε επιουση νυκτι επιστας αυτω ο κυριος ειπεν θαρσει παυλε ως γαρ διεμαρτυρω τα περι εμου εις ιερουσαλημ ουτως σε δει και εις ρωμην μαρτυρησαι
¹²γενομενης δε ημερας ποιησαντες τινες των ιουδαιων συστροφην ανεθεματισαν εαυτους λεγοντες μητε φαγειν μητε πιειν εως ου αποκτεινωσιν τον παυλον
¹³ησαν δε πλειους τεσσαρακοντα οι ταυτην την συνωμοσιαν πεποιηκοτες
¹⁴οιτινες προσελθοντες τοις αρχιερευσιν και τοις πρεσβυτεροις ειπον αναθεματι ανεθεματισαμεν εαυτους μηδενος γευσασθαι εως ου αποκτεινωμεν τον παυλον
¹⁵νυν ουν υμεις εμφανισατε τω χιλιαρχω συν τω συνεδριω οπως αυριον αυτον καταγαγη προς υμας ως μελλοντας διαγινωσκειν ακριβεστερον τα περι αυτου ημεις δε προ του εγγισαι αυτον ετοιμοι εσμεν του ανελιν αυτον
¹⁶ακουσας δε ο υιος της αδελφης παυλου την ενεδραν παραγενομενος και εισελθων εις την παρεμβολην απηγγειλεν τω παυλω
¹⁷προσκαλεσαμενος δε ο παυλος ενα των εκατονταρχων εφη τον νεανιαν τουτον απαγαγε προς τον χιλιαρχον εχει γαρ τι απαγγειλαι αυτω

- ¹⁸ ο μὲν οὖν παραλαβὼν αὐτὸν ἠγάγετο πρὸς τὸν χιλιάρχον καὶ φησὶν ὁ δεσμιὸς παῦλος προσκαλεσαμένος με ἠρώτησεν τοῦτον τὸν νεανίαν ἀγαγεῖν πρὸς σέ ἐχόντα τι ἀληθεῖαι σοὶ
- ¹⁹ ἐπιλαβομένος δὲ τῆς χειρὸς αὐτοῦ ὁ χιλιάρχος καὶ ἀναχωρήσας κατ' ἰδίαν ἐπυνθάνετο τί ἐστὶν ὃ ἔχεις ἀπαγγεῖλαι μοι
- ²⁰ εἶπεν δὲ ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι συνέθεντο τοῦ ἐρωτῆσαι σέ ὡς αὐρίον εἰς τὸ συνέδριον καταγάγῃς τὸν παῦλον ὡς μέλλοντες τί ἀκριβεστέρον πυνθάνεσθαι περὶ αὐτοῦ
- ²¹ σὺ οὖν μὴ πεισθῆς αὐτοῖς ἐνεδρευούσιν γὰρ αὐτὸν ἐξ αὐτῶν ἄνδρες πλείους τεσσαράκοντα οἵτινες ἀνεθεματίσαν ἑαυτοὺς μὴτε φαγεῖν μὴτε πίνειν ἕως οὗ ἀνέλωσιν αὐτὸν καὶ νῦν εἰσὶν ἐτοιμοὶ εἶσιν προσδεχόμενοι τὴν ἀπο σου ἐπαγγελίαν
- ²² ὁ μὲν οὖν χιλιάρχος ἀπέλυσεν τὸν νεανίαν παραγγείλας μὴδενὶ ἐκλαῆσαι ὅτι ταῦτα ἐνεφάνισας πρὸς με
- ²³ καὶ προσκαλεσαμένος δύο τινὰς τῶν ἑκατοντάρχων εἶπεν ἐτοιμασατέ στρατιώτας διακοσίους ὡς πορευθῶσιν ἕως καισαρείας καὶ ἵππεις ἑβδομηκοντά καὶ δεξιολαβούς διακοσίους ἀπὸ τρίτης ὥρας τῆς νυκτός
- ²⁴ κτήνη τε παραστήσαι ἵνα ἐπιβίβασαντες τὸν παῦλον διασωσῶσιν πρὸς φηλικά τὸν ἡγεμόνα
- ²⁵ γράψας ἐπιστολὴν περιέχουσαν τὸν τύπον τοῦτον
- ²⁶ κλαυδῖος λυσίας τῷ κρατιστῷ ἡγεμονί φηλίκι χαιρεῖν
- ²⁷ τὸν ἄνδρα τοῦτον συλληφθέντα ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων καὶ μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι ὑπ' αὐτῶν ἐπιστάς σὺν τῷ στρατευματι ἐξείλομην αὐτὸν μάθων ὅτι Ῥωμαῖος ἐστὶν
- ²⁸ βουλομένος δὲ γνῶναι τὴν αἰτίαν δι' ἣν ἐνεκαλοῦν αὐτῷ κατηγοροῦν αὐτὸν εἰς τὸ συνέδριον αὐτῶν
- ²⁹ ὃν εὗρον ἐγκαλούμενον περὶ ζητημάτων τοῦ νόμου αὐτῶν μὴδὲν δὲ ἀξίον θανάτου ἢ δεσμῶν ἐγκλήμα ἔχοντα
- ³⁰ μὴνυθείσης δὲ μοι ἐπιβουλῆς εἰς τὸν ἄνδρα μέλλειν ἐσεσθαι ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων ἐξαυτῆς ἐπέμψα πρὸς σέ παραγγείλας καὶ τοῖς κατηγοροῖς λεγεῖν τὰ πρὸς αὐτὸν ἐπὶ σου ἐρρωσο
- ³¹ οἱ μὲν οὖν στρατιῶται κατὰ τὸ διατεταγμένον αὐτοῖς ἀναλαβόντες τὸν παῦλον ἠγάγον διὰ τῆς νυκτός εἰς τὴν ἀντιπατρίδα
- ³² τῇ δὲ ἑπαυρίῳ ἐάσαντες τοὺς ἵππεις πορευεσθαι σὺν αὐτῷ ὑπεστρέψαν εἰς τὴν παρεμβολὴν
- ³³ οἵτινες εἰσελθόντες εἰς τὴν καισαρείαν καὶ ἀναδόντες τὴν ἐπιστολὴν τῷ ἡγεμονί παρεστήσαν καὶ τὸν παῦλον αὐτῷ
- ³⁴ ἀναγνούς δὲ ὁ ἡγεμὼν καὶ ἐπερωτήσας ἐκ ποίας ἐπαρχίας ἐστὶν καὶ πυθόμενος ὅτι ἀπὸ κίλικίας
- ³⁵ διακούσομαι σου ἐφ' ὅταν καὶ οἱ κατηγοροὶ σου παραγενῶνται ἐκέλευσεν τε αὐτὸν ἐν τῷ πραιτωρίῳ τοῦ ἠρώδου φυλασσεσθαι

Chapter 24

¹μετα δε πεντε ημερας κατεβη ο αρχιερευς ανανιας μετα των πρεσβυτερων και ρητορος τερτυλλου τινος οιτινες ενεφανισαν τω ηγεμονι κατα του παυλου

²κληθεντος δε αυτου ηρξατο κατηγορειν ο τερτυλλος λεγων

³πολλης ειρηνης τυγχανοντες δια σου και κατορθωματων γινομενων τω εθνει τουτω δια της σης προνοιας παντη τε και πανταχου αποδεχομεθα κρατιστε φηλιξ μετα πασης ευχαριστιας

⁴ινα δε μη επι πλειον σε εγκοπτω παρακαλω ακουσαι σε ημων συντομως τη ση επιεικεια

⁵ευροντες γαρ τον ανδρα τουτον λοιμον και κινουντα στασιν πασιν τοις ιουδαιοις τοις κατα την οικουμενην πρωτοστατην τε της των ναζωραιων αιρεσεως

⁶ος και το ιερον επειρασεν βεβηλωσαι ον και εκρατησαμεν και κατα τον ημετερον νομον ηθελησαμεν κρινειν

⁷παρελθων δε λυσιας ο χιλιαρχος μετα πολλης βιας εκ των χειρων ημων απηγαγεν

⁸κελευσας τους κατηγορους αυτου ερχεσθαι επι σε παρ ου δυνηση αυτος ανακρινας περι παντων τουτων επιγνωναι ων ημεις κατηγορουμεν αυτου

⁹συνεθεντο δε και οι ιουδαιοι φασκοντες ταυτα ουτως εχειν

¹⁰απεκριθη δε ο παυλος νευσαντος αυτω του ηγεμονος λεγειν εκ πολλων ετων οντα σε κριτην τω εθνει τουτω επισταμενος ευθυμοτερον τα περι εμαυτου απολογουμαι

¹¹δυναμενου σου γνωνα οτι ου πλειους εισιν μοι ημεραι η δεκαδυο αφ ης ανεβην προσκυνησων εν ιερουσαλημ

¹²και ουτε εν τω ιερω ευρον με προς τινα διαλεγομενον η επισυστασιν ποιουντα οχλου ουτε εν ταις συναγωγαις ουτε κατα την πολιν

¹³ουτε παραστησαι δυνανται περι ων νυν κατηγορουσιν μου

¹⁴ομολογω δε τουτο σοι οτι κατα την οδον ην λεγουσιν αιρεσιν ουτως λατρευω τω πατρωω θεω πιστευων πασιν τοις κατα τον νομον και τοις προφηταις γεγραμμενοις

¹⁵ελπιδα εχων εις τον θεον ην και αυτοι ουτοι προσδεχονται αναστασιν μελλειν εσεσθαι νεκρων δικαιων τε και αδικων

¹⁶εν τουτω δε αυτος ασκω απροσκοπον συνειδησιν εχειν προς τον θεον και τους ανθρωπους διαπαντος

¹⁷δι ετων δε πλειονων παρεγενομην ελεημοσυνας ποιησων εις το εθνος μου και προσφορας

¹⁸εν οις ευρον με ηγνισμενον εν τω ιερω ου μετα οχλου ουδε μετα θορυβου τινες απο της ασιας ιουδαιοι

¹⁹ους εδει επι σου παρειναι και κατηγορειν ει τι εχοιεν προς με

²⁰η αυτοι ουτοι ειπατωσαν ει τι ευρον εν εμοι αδικημα σταντος μου επι του συνεδριου

²¹η περι μιας ταυτης φωνης ης εκραξα εστως εν αυτοις οτι περι αναστασεως νεκρων εγω κρινομαι σημερον υφ υμων

²²ακουσας δε ταυτα ο φηλιξ ανεβαλετο αυτους ακριβεστερον ειδως τα περι της οδου ειπων οταν λυσιας ο χιλιαρχος καταβη διαγνωσομαι τα καθ υμας

²³διαταξαμενος τε τω εκατονταρχη τηρεισθαι τον παυλον εχειν τε ανεσιν και μηδενα κωλυειν των ιδιων αυτου υπηρετειν η προσερχεσθαι αυτω

²⁴μετα δε ημερας τινας παραγενομενος ο φηλιξ συν δρουσιλλη τη γυναικι αυτου ουση ιουδαια μετεπεμψατο τον παυλον και ηκουσεν αυτου περι της εις χριστον πιστεως

²⁵διαλεγομενου δε αυτου περι δικαιοσυνης και εγκρατειας και του κριματος του μελλοντος εσεσθαι εμφοβος γενομενος ο φηλιξ απεκριθη το νυν εχον πορευου καιρον δε μεταλαβων μετακαλεσομαι σε

²⁶αμα δε και ελπιζων οτι χρηματα δοθησεται αυτω υπο του παυλου οπως λυση αυτον διο και πυκνοτερον αυτον μεταπεμπομενος ωμιλει αυτω

²⁷διετιας δε πληρωθεισης ελαβεν διαδοχον ο φηλιξ πορκιον φηστον θελων τε χαριτας καταθεσθαι τοις ιουδαιοις ο φηλιξ κατελιπεν τον παυλον δεδεμενον

Chapter 25

- ¹φηστος ουν επιβας τη επαρχια μετα τρεις ημερας ανεβη εις ιεροσολυμα απο καισαρειας
- ²ενεφανισαν δε αυτω ο αρχιερευς και οι πρωτοι των ιουδαιων κατα του παυλου και παρεκαλουν αυτον
- ³αιτουμενοι χαριν κατ αυτου οπως μεταπεμψηται αυτον εις ιερουσαλημ ενεδραν ποιουντες ανελιν αυτον κατα την οδον
- ⁴ο μεν ουν φηστος απεκριθη τηρεισθαι τον παυλον εν καισαρεια εαυτον δε μελλειν εν ταχει εκπορευεσθαι
- ⁵οι ουν δυνατοι εν υμιν φησιν συγκαταβαντες ει τι εστιν ατοπον εν τω ανδρι τουτω κατηγορειτωσαν αυτου
- ⁶διατριψας δε εν αυτοις ημερας πλειους η δεκα καταβας εις καισαρειαν τη επαυριον καθισας επι του βηματος εκελευσεν τον παυλον αχθηναι
- ⁷παραγενομενου δε αυτου περιεστησαν οι απο ιεροσολυμων καταβεβηκοτες ιουδαιοι πολλα και βαρεα αιτιαματα φεροντες κατα του παυλου α ουκ ισχυον αποδειξαι
- ⁸απολογουμενου αυτου οτι ουτε εις τον νομον των ιουδαιων ουτε εις το ιερον ουτε εις καισαρα τι ημαρτον
- ⁹ο φηστος δε τοις ιουδαιοις θελων χαριν καταθεσθαι αποκριθεις τω παυλω ειπεν θελεις εις ιεροσολυμα αναβας εκει περι τουτων κρινεσθαι επ εμου
- ¹⁰ειπεν δε ο παυλος επι του βηματος καισαρος εστως ειμι ου με δει κρινεσθαι ιουδαιους ουδεν ηδικησα ως και συ καλλιον επιγινωσκεις
- ¹¹ει μεν γαρ αδικω και αξιον θανατου πεπραχα τι ου παραιτουμαι το αποθανειν ει δε ουδεν εστιν ων ουτοι κατηγορουσιν μου ουδεις με δυναται αυτοις χαρισασθαι καισαρα επικαλουμαι
- ¹²τοτε ο φηστος συλλαλησας μετα του συμβουλιου απεκριθη καισαρα επικεκλησαι επι καισαρα πορευση
- ¹³ημερων δε διαγενομενων τινων αγριππας ο βασιλευς και βερνικη κατηντησαν εις καισαρειαν ασπασομενοι τον φηστον
- ¹⁴ως δε πλειους ημερας διετριβον εκει ο φηστος τω βασιλει ανεθετο τα κατα τον παυλον λεγων ανηρ τις εστιν καταλελειμμενος υπο φηλικος δεσμιος
- ¹⁵περι ου γενομενου μου εις ιεροσολυμα ενεφανισαν οι αρχιερεις και οι πρεσβυτεροι των ιουδαιων αιτουμενοι κατ αυτου δικην
- ¹⁶προς ους απεκριθην οτι ουκ εστιν εθος ρωμαιοις χαριζεσθαι τινα ανθρωπον εις απωλειαν πριν η ο κατηγορουμενος κατα προσωπον εχοι τους κατηγορους τοπον τε απολογιας λαβοι περι του εγκληματος
- ¹⁷συνελθοντων ουν αυτων ενθαδε αναβολην μηδεμιαν ποιησαμενος τη εξης καθισας επι του βηματος εκελευσα αχθηναι τον ανδρα
- ¹⁸περι ου σταθεντες οι κατηγοροι ουδεμιαν αιτιαν επεφερον ων υπενοουν εγω

- ¹⁹ζητήματα δε τίνα περί τῆς ἰδίας δεισιδαιμονίας εἶχον πρὸς αὐτὸν καὶ περί τινος Ἰησοῦ τεθνηκότος ὃν ἐφασκεν ὁ Παῦλος ζῆν
- ²⁰ἀπορούμενος δὲ ἐγὼ εἰς τὴν περί τούτου ζήτησιν ἐλέγον εἰ βουλοῖτο πορευεσθαι εἰς Ἱερουσαλήμ κακεὶ κρινεσθαι περί τούτων
- ²¹τοῦ δὲ Παύλου ἐπικαλεσαμένου τηρηθῆναι αὐτὸν εἰς τὴν τοῦ Σεβαστοῦ διαγνώσιν ἐκέλευσα τηρεῖσθαι αὐτὸν ἕως οὗ πεμψῶ αὐτὸν πρὸς Καίσαρα
- ²²Ἀγρίππας δὲ πρὸς τὸν Φίστον ἐφη βουλομένην καὶ αὐτὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀκουσαὶ ὁ δὲ αὐρίον φησὶν ἀκουσῆ αὐτοῦ
- ²³τῆ οὖν ἑπαυρίον ἐλθόντος τοῦ Ἀγρίππα καὶ τῆς βερνικῆς μετὰ πολλῆς φαντασίας καὶ εἰσελθόντων εἰς τὸ ἀκροατήριον σὺν τε τοῖς χιλιάρχοις καὶ ἀνδράσιν τοῖς κατ' ἐξοχὴν οὖσιν τῆς πόλεως καὶ κελευσάντος τοῦ Φίστου ἠχθῆ ὁ Παῦλος
- ²⁴καὶ φησὶν ὁ Φίστος Ἀγρίππα βασιλεῦ καὶ πάντες οἱ συμπάροντες ἡμῖν ἄνδρες θεωρεῖτε τούτον περί οὗ πάν τὸ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων ἐνετύχον μοι ἐν τῇ Ἱεροσολυμοῖς καὶ ἐνθάδε ἐπιβῶντες μὴ δεῖν ζῆν αὐτὸν μηκέτι
- ²⁵ἐγὼ δὲ καταλαβομένου μηδὲν ἀξίον θανάτου αὐτὸν πεπραχέναι καὶ αὐτοῦ δὲ τούτου ἐπικαλεσαμένου τὸν Σεβαστὸν ἐκρίνα πεμπεῖν αὐτὸν
- ²⁶περί οὗ ἀσφαλὲς τί γράψαι τῷ κυρίῳ οὐκ ἔχω διὸ προηγάγον αὐτὸν ἐφ' ὑμῶν καὶ μάλιστα ἐπὶ σοῦ βασιλεῦ Ἀγρίππα ὅπως τῆς ἀνακρίσεως γενομένης σχῶ τί γράψαι
- ²⁷ἀλόγον γάρ μοι δοκεῖ πεμποντὰ δεσμίον μὴ καὶ τὰς κατ' αὐτοῦ αἰτίας σημαίνει

Chapter 26

¹αγριππας δε προς τον παυλον εφη επιτρεπεται σοι υπερ σεαυτου λεγειν τοτε ο παυλος απελογειτο εκτεινας την χειρα
²περι παντων ων εγκαλουμαι υπο ιουδαιων βασιλευ αγριππα ηγημαι εμαυτον μακαριον μελλων απολογεισθαι επι σου σημερον
³μαλιστα γνωστην οντα σε ειδως παντων των κατα ιουδαιους εθων τε και ζητηματων διο δεομαι σου μακροθυμωσ ακουσαι μου
⁴την μεν ουν βιωσιν μου την εκ νεοτητος την απ αρχης γενομενην εν τω εθνει μου εν ιεροσολυμοις ισασιν παντες οι ιουδαιοι
⁵προγινωσκοντες με ανωθεν εαν θελωσιν μαρτυρειν οτι κατα την ακριβεστατην αιρεσιν της ημετερας θρησκειας εζησα φαρισαιος
⁶και νυν επ ελπιδι της προς τους πατερας επαγγελιας γενομενης υπο του θεου εστηκα κρινομενος
⁷εις ην το δωδεκαφυλον ημων εν εκτενεια νυκτα και ημεραν λατρευον ελπίζει καταντησαι περι ης ελπιδος εγκαλουμαι βασιλευ αγριππα υπο των ιουδαιων
⁸τι απιστον κρινεται παρ υμιν ει ο θεος νεκρους εγειρει
⁹εγω μεν ουν εδοξα εμαυτω προς το ονομα ιησου του ναζωραιου δειν πολλα εναντια πραξαι
¹⁰ο και εποιησα εν ιεροσολυμοις και πολλους των αγιων εγω φυλακαις κατεκλεισα την παρα των αρχιερων εξουσιαν λαβων αναιρουμενων τε αυτων κατηνεγκα ψηφον
¹¹και κατα πασας τας συναγωγας πολλακις τιμωρων αυτους ηναγκαζον βλασφημειν περισσως τε εμμαινομενος αυτοις εδιωκον εως και εις τας εξω πολεις
¹²εν οις και πορευομενος εις την δαμασκον μετ εξουσιας και επιτροπης της παρα των αρχιερων
¹³ημερας μεσης κατα την οδον ειδον βασιλευ ουρανοθεν υπερ την λαμπροτητα του ηλιου περιλαμψαν με φως και τους συν εμοι πορευομενους
¹⁴παντων δε καταπεσοντων ημων εις την γην ηκουσα φωνην λαλουσαν προς με και λεγουσαν τη εβραιδι διαλεκτω σαουλ σαουλ τι με διωκεις σκληρον σοι προς κεντρα λακτιζειν
¹⁵εγω δε ειπον τις ει κυριε ο δε ειπεν εγω ειμι ιησους ον συ διωκεις
¹⁶αλλα αναστηθι και στηθι επι τους ποδας σου εις τουτο γαρ ωφθην σοι προχειρισασθαι σε υπηρετην και μαρτυρα ων τε ειδες ων τε οφθησομαι σοι
¹⁷εξαιρουμενος σε εκ του λαου και των εθνων εις ους νυν σε αποστελλω
¹⁸ανοιξαι οφθαλμους αυτων και επιστρεψαι απο σκοτους εις φως και της εξουσιας του σατανα επι τον θεον του λαβειν αυτους αφεσιν αμαρτιων και κληρον εν τοις ηγιασμενοις πιστει τη εις εμε
¹⁹οθεν βασιλευ αγριππα ουκ εγενομην απειθησ τη ουρανω οπτασια

²⁰αλλά τοις εν δαμασκω πρωτον και ιεροσολυμοις εις πασαν τε την χωραν της ιουδαιας και τοις εθνεσιν απηγγελλον μετανοειν και επιστρεφειν επι τον θεον αξια της μετανοιας εργα πρασσοντας

²¹ενεκα τουτων με οι ιουδαιοι συλλαβομενοι εν τω ιερω επειρωντο διαχειρισασθαι

²²επικουριας ουν τυχων της παρα του θεου αχρι της ημερας ταυτης εστηκα μαρτυρουμενος μικρω τε και μεγαλω ουδεν εκτος λεγων ων τε οι προφηται ελαλησαν μελλοντων γινεσθαι και μωσης

²³ει παθητος ο χριστος ει πρωτος εξ αναστασεως νεκρων φως μελλει καταγγελλειν τω λαω και τοις εθνεσιν

²⁴ταυτα δε αυτου απολογουμενου ο φηστος μεγαλη τη φωνη εφη μαινη παυλε τα πολλα σε γραμματα εις μανιαν περιτρεπει

²⁵ο δε ου μαινομαι φησιν κρατιστε φηστε αλλ αληθειας και σωφροσυνης ρηματα αποφθεγγομαι

²⁶επισταται γαρ περι τουτων ο βασιλευς προς ον και παρρησιαζομενος λαλω λανθανειν γαρ αυτον τι τουτων ου πειθομαι ουδεν ου γαρ εστιν εν γωνια πεπραγμενον τουτο

²⁷πιστευεις βασιλευ αγριππα τοις προφηταις οίδα οτι πιστευεις

²⁸ο δε αγριππας προς τον παυλον εφη εν ολιγω με πειθεις χριστιανον γενεσθαι

²⁹ο δε παυλος ειπεν ευξαιμην αν τω θεω και εν ολιγω και εν πολλω ου μονον σε αλλα και παντας τους ακουοντας μου σημερον γενεσθαι τοιουτους οποιος καγω ειμι παρεκτος των δεσμων τουτων

³⁰και ταυτα ειποντος αυτου ανεστη ο βασιλευς και ο ηγεμων η τε βερνικη και οι συγκαθημενοι αυτοις

³¹και αναχωρησαντες ελαλουν προς αλληλους λεγοντες οτι ουδεν θανατου αξιον η δεσμων πρασσει ο ανθρωπος ουτος

³²αγριππας δε τω φηστω εφη απολελυσθαι εδυνατο ο ανθρωπος ουτος ει μη επεκεκλητο καισαρα

Chapter 27

¹ως δε εκριθη του αποπλειν ημας εις την ιταλιαν παρεδιδουν τον τε παυλον και τινας ετερους δεσμωτας εκατονταρχη ονοματι ιουλιω σπειρης σεβαστης

²επιβαντες δε πλοιω αδραμυττηνω μελλοντες πλειν τους κατα την ασιαν τοπους ανηχθημεν οντος συν ημιν αρισταρχου μακεδονος θεσσαλονικεως

³τη τε ετερα κατηχθημεν εις σιδωνα φιλανθρωπως τε ο ιουλιος τω παυλω χρησαμενος επετρεψεν προς τους φιλους πορευθεντα επιμελειας τυχειν

⁴κακειθεν αναχθεντες υπεπλευσαμεν την κυπρον δια το τους ανεμους ειναι εναντιους

⁵το τε πελαγος το κατα την κιλικιαν και παμφυλιαν διαπλευσαντες κατηλθομεν εις μυρα της λυκιας

⁶κακει ευρων ο εκατονταρχος πλοιον αλεξανδρινον πλεον εις την ιταλιαν ενεβιβασεν ημας εις αυτο

⁷εν ικαναις δε ημεραις βραδυπλουουντες και μολις γενομενοι κατα την κνιδον μη προσεωντος ημας του ανεμου υπεπλευσαμεν την κρητην κατα σαλμωνην

⁸μολις τε παραλεγομενοι αυτην ηλθομεν εις τοπον τινα καλουμενον καλους λιμενας ω εγγυς ην πολις λασαια

⁹ικανου δε χρονου διαγενομενου και οντος ηδη επισφαλους του πλοος δια το και την νηστειαν ηδη παρεληλυθεναι παρηνει ο παυλος

¹⁰λεγων αυτοις ανδρες θεωρω οτι μετα υβρεως και πολλης ζημιας ου μονον του φορτου και του πλοιου αλλα και των ψυχων ημων μελλειν εσεσθαι τον πλουν

¹¹ο δε εκατονταρχος τω κυβερνητη και τω ναυκληρω επειθετο μαλλον η τοις υπο του παυλου λεγομενοις

¹²ανευθετου δε του λιμενος υπαρχοντος προς παραχειμασιαν οι πλειους εθεντο βουλην αναχθηναι κακειθεν ειπως δυναιντο καταντησαντες εις φοινικα παραχειμασαι λιμενα της κρητης βλεποντα κατα λιβα και κατα χωρον

¹³υποπνευσαντος δε νοτου δοξαντες της προθεσεως κεκρατηκεναι αραντες ασσον παρελεγοντο την κρητην

¹⁴μετ ου πολυ δε εβαλεν κατ αυτης ανεμος τυφωνικος ο καλουμενος ευροκλυδων

¹⁵συναρπασθεντος δε του πλοιου και μη δυναμενου αντοφθαλμειν τω ανεμω επιδοντες εφερομεθα

¹⁶νησιον δε τι υποδραμοντες καλουμενον κλαυδην μολις ισχυσαμεν περικρατεις γενεσθαι της σκαφης

¹⁷ην αραντες βοηθειαις εχρωντο υποζωννυντες το πλοιον φοβουμενοι τε μη εις την συρτιν εκπεσωσιν χαλασαντες το σκευος ουτως εφεροντο

¹⁸σφοδρωσ δε χειμαζομενων ημων τη εξης εκβολην εποιουντο

¹⁹και τη τριτη αυτοχειρες την σκευην του πλοιου ερριψαμεν

²⁰μητε δε ηλιου μητε αστρων επιφαινοντων επι πλειονας ημερας χειμωνος τε ουκ ολιγου επικειμενου λοιπον περιηρειτο πασα ελπις του σωζεσθαι ημας

²¹ πολλης δε ασιτιας υπαρχουσης τοτε σταθεις ο παυλος εν μεσω αυτων ειπεν εδει μεν ω ανδρες πειθαρχησαντας μοι μη αναγεσθαι απο της κρητης κερδησαι τε την υβριν ταυτην και την ζημιαν
²² και τα νυν παραινω υμας ευθυμειν αποβολη γαρ ψυχης ουδεμια εσται εξ υμων πλην του πλοιου
²³ παρεστη γαρ μοι τη νυκτι ταυτη αγγελος του θεου ου ειμι ω και λατρευω
²⁴ λεγων μη φοβου παυλε καισαρι σε δει παραστηναι και ιδου κεχαρισται σοι ο θεος παντας τους πλεοντας μετα σου
²⁵ διο ευθυμειτε ανδρες πιστευω γαρ τω θεω οτι ουτως εσται καθ ον τροπον λελαληται μοι
²⁶ εις νησον δε τινα δει ημας εκπεσειν
²⁷ ως δε τεσσαρεσκαιδεκατη νυξ εγενετο διαφορομενων ημων εν τω αδρια κατα μεσον της νυκτος υπενοουν οι ναυται προσαγειν τινα αυτοις χωραν
²⁸ και βολισαντες ευρον οργυιας εικοσι βραχυ δε διαστησαντες και παλιν βολισαντες ευρον οργυιας δεκαπεντε
²⁹ φοβουμενοι τε μηπως εις τραχεις τοπους εκπεσωμεν εκ πρυμνης ριψαντες αγκυρας τεσσαρας ηυχοντο ημεραν γενεσθαι
³⁰ των δε ναυτων ζητουτων φυγειν εκ του πλοιου και χαλασαντων την σκαφην εις την θαλασσαν προφασει ως εκ πρωρας μελλοντων αγκυρας εκτεινειν
³¹ ειπεν ο παυλος τω εκατονταρχη και τοις στρατιωταις εαν μη ουτοι μεινωσιν εν τω πλοιω υμεις σωθηναι ου δυνασθε
³² τοτε οι στρατιωται απεκοψαν τα σχοινια της σκαφης και ειασαν αυτην εκπεσειν
³³ αχρι δε ου εμελλεν ημερα γινεσθαι παρεκαλει ο παυλος απαντας μεταλαβειν τροφης λεγων τεσσαρεσκαιδεκατην σημερον ημεραν προσδοκωντες ασιτοι διατελειτε μηδεν προσλαβομενοι
³⁴ διο παρακαλω υμας προσλαβειν τροφης τουτο γαρ προς της υμετερας σωτηριας υπαρχει ουδενος γαρ υμων θριξ εκ της κεφαλης πεσειται
³⁵ ειπων δε ταυτα και λαβων αρτον ευχαριστησεν τω θεω ενωπιον παντων και κλασας ηρξατο εσθιειν
³⁶ ευθυμοι δε γενομενοι παντες και αυτοι προσελαβοντο τροφης
³⁷ ημεν δε εν τω πλοιω αι πασαι ψυχαι διακοσμαι εβδομηκονταεξ
³⁸ κορεσθεντες δε τροφης εκουφιζον το πλοιον εκβαλλομενοι τον σιτον εις την θαλασσαν
³⁹ οτε δε ημερα εγενετο την γην ουκ επεγινωσκον κολπον δε τινα κατενοουν εχοντα αιγιαλον εις ον εβουλευσαντο ει δυναιντο εξωσαι το πλοιον
⁴⁰ και τας αγκυρας περιελοντες ειων εις την θαλασσαν αμα ανεντες τας ζευκτηριας των πηδαλιων και επαραντες τον αρτεμονα τη πνευση κατειχον εις τον αιγιαλον
⁴¹ περιπεσοντες δε εις τοπον διθαλασσον επωκειλαν την ναυν και η μεν πρωρα ερεισασα εμεινεν ασαλευτος η δε πρυμνα ελυετο υπο της βιας των κυματων

⁴²των δε στρατιωτων βουλη εγενετο ινα τους δεσμωτας αποκτεινωσιν μητις εκκολυμβησας διαφυγοι

⁴³ο δε εκατονταρχος βουλομενος διασωσαι τον παυλον εκωλυσεν αυτους του βουληματος εκελευσεν τε τους δυναμενους κολυμβαν απορριψαντας πρωτους επι την γην εξιεναι

⁴⁴και τους λοιπους ους μεν επι σανισιν ους δε επι τινων των απο του πλοιου και ουτως εγενετο παντας διασωθηναι επι την γην

Chapter 28

- ¹και διασωθεντες τοτε επεγνωσαν οτι μελιτη η νησος καλειται
- ²οι δε βαρβαροι παρειχον ου την τυχουσαν φιλανθρωπιαν ημιν αναψαντες γαρ πυραν προσελαβοντο παντας ημας δια τον υετον τον εφεστωτα και δια το ψυχος
- ³συστρεψαντος δε του παυλου φρυγανων πληθος και επιθεντος επι την πυραν εχιδνα εκ της θερμης εξελθουσα καθηψεν της χειρος αυτου
- ⁴ως δε ειδον οι βαρβαροι κρεμαμενον το θηριον εκ της χειρος αυτου ελεγον προς αλληλους παντως φονευς εστιν ο ανθρωπος ουτος ον διασωθεντα εκ της θαλασσης η δικη ζην ουκ ειασεν
- ⁵ο μεν ουν αποτιναξας το θηριον εις το πυρ επαθεν ουδεν κακον
- ⁶οι δε προσεδοκων αυτον μελλειν πιμπρασθαι η καταπιπτειν αφνω νεκρον επι πολυ δε αυτων προσδοκωντων και θεωρουντων μηδεν αποπον εις αυτον γινομενον μεταβαλλομενοι ελεγον θεον αυτον ειναι
- ⁷εν δε τοις περι τον τοπον εκεινον υπηρχεν χωρια τω πρωτω της νησου ονοματι ποπλιω ος αναδεξαμενος ημας τρεις ημερας φιλοφρονως εξενισεν
- ⁸εγενετο δε τον πατερα του ποπλιου πυρετοις και δυσεντερια συνεχομενον κατακεισθαι προς ον ο παυλος εισελθων και προσευξαμενος επιθεις τας χειρας αυτω ιασατο αυτον
- ⁹τουτου ουν γενομενου και οι λοιποι οι εχοντες ασθενειας εν τη νησω προσηρχοντο και εθεραπευοντο
- ¹⁰οι και πολλαις τιμαις ετιμησαν ημας και αναγομενοις επεθεντο τα προς την χρεια
- ¹¹μετα δε τρεις μηνας ανηχθημεν εν πλοιω παρακεχειμακοτι εν τη νησω αλεξανδρινω παρασημω διοσκουροις
- ¹²και καταχθεντες εις συρακουσας επεμειναμεν ημερας τρεις
- ¹³οθεν περιελθοντες κατηντησαμεν εις ρηγιον και μετα μιαν ημεραν επιγενομενου νοτου δευτεραιοι ηλθομεν εις ποτιολους
- ¹⁴ου ευροντες αδελφους παρεκληθημεν επ αυτοις επιμειναι ημερας επτα και ουτως εις την ρωμην ηλθομεν
- ¹⁵κακειθεν οι αδελφοι ακουσαντες τα περι ημων εξηλθον εις απαντησιν ημιν αχρις αππιου φορου και τριων ταβερνων ους ιδων ο παυλος ευχαριστησας τω θεω ελαβεν θαρσος
- ¹⁶οτε δε ηλθομεν εις ρωμην ο εκατονταρχος παρεδωκεν τους δεσμιους τω στρατοπεδαρχη τω δε παυλω επετραπη μενειν καθ εαυτον συν τω φυλασσοντι αυτον στρατιωτη
- ¹⁷εγενετο δε μετα ημερας τρεις συγκαλεσασθαι τον παυλον τους οντας των ιουδαιων πρωτους συνελθοντων δε αυτων ελεγεν προς αυτους ανδρες αδελφοι εγω ουδεν εναντιον ποιησας τω λαω η τοις εθεσιν τοις πατρωις δεσμιος εξ ιεροσολυμων παρεδοθην εις τας χειρας των ρωμαιων
- ¹⁸οιτινες ανακριναντες με εβουλοντο απολυσαι δια το μηδεμιαν αιτιαν θανατου υπαρχειν εν εμοι

- ¹⁹αντιλεγοντων δε των ιουδαιων ηναγκασθην επικαλεσασθαι καισαρα ουχ ως του εθνους μου εχων τι κατηγορησαι
- ²⁰δια ταυτην ουν την αιτιαν παρεκαλεσα υμας ιδειν και προσλαλησαι ενεκεν γαρ της ελπιδος του ισραηλ την αλυσιν ταυτην περικειμαι
- ²¹οι δε προς αυτον ειπον ημεις ουτε γραμματα περι σου εδεξαμεθα απο της ιουδαιας ουτε παραγενομενος τις των αδελφων απηγγειλεν η ελαλησεν τι περι σου πονηρον
- ²²αξιουμεν δε παρα σου ακουσαι α φρονεις περι μεν γαρ της αιρεσεως ταυτης γνωστον εστιν ημιν οτι πανταχου αντιλεγεται
- ²³ταξαμενοι δε αυτω ημεραν ηκον προς αυτον εις την ξενιαν πλειονες οις εξετιθετο διαμαρτυρομενος την βασιλειαν του θεου πειθων τε αυτους τα περι του ιησου απο τε του νομου μωσεως και των προφητων απο πρωι εως εσπερας
- ²⁴και οι μεν επειθοντο τοις λεγομενοις οι δε ηπιστουν
- ²⁵ασυμφωνοι δε οντες προς αλληλους απελυοντο ειποντος του παυλου ρημα εν οτι καλως το πνευμα το αγιον ελαλησεν δια ησαιου του προφητου προς τους πατερας ημων
- ²⁶λεγον πορευθητι προς τον λαον τουτον και ειπε ακοη ακουσετε και ου μη συνητε και βλεποντες βλεψετε και ου μη ιδητε
- ²⁷επαχυνθη γαρ η καρδια του λαου τουτου και τοις ωσιν βαρεως ηκουσαν και τους οφθαλμους αυτων εκαμμυσαν μηποτε ιδωσιν τοις οφθαλμοις και τοις ωσιν ακουσωσιν και τη καρδια συνωσιν και επιστρεψωσιν και ιασωμαι αυτους
- ²⁸γνωστον ουν εστω υμιν οτι τοις εθνεσιν απεσταλη το σωτηριον του θεου αυτοι και ακουσονται
- ²⁹και ταυτα αυτου ειποντος απηλθον οι ιουδαιοι πολλην εχοντες εν εαυτοις συζητησιν
- ³⁰εμεινεν δε ο παυλος διετιαν ολην εν ιδιω μισθωματι και απεδεχετο παντας τους εισπορευομενους προς αυτον
- ³¹κηρυσσων την βασιλειαν του θεου και διδασκων τα περι του κυριου ιησου χριστου μετα πασης παρρησιας ακωλυτως

Romans

Chapter 1

- ¹παυλος δουλος ιησου χριστου κλητος αποστολος αφωρισμενος εις ευαγγελιον θεου
²ο προεπηγγειλατο δια των προφητων αυτου εν γραφαις αγιαις
³περι του υιου αυτου του γενομενου εκ σπερματος δαβιδ κατα σαρκα
⁴του ορισθεντος υιου θεου εν δυναμει κατα πνευμα αγιωσυνης εξ αναστασεως νεκρων
ιησου χριστου του κυριου ημων
⁵δι ου ελαβομεν χαριν και αποστολην εις υπακοην πιστεως εν πασιν τοις εθνεσιν υπερ του
ονοματος αυτου
⁶εν οις εστε και υμεις κλητοι ιησου χριστου
⁷πασιν τοις ουσιν εν ρωμη αγαπητοις θεου κλητοις αγιοις χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου
πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
⁸πρωτον μεν ευχαριστω τω θεω μου δια ιησου χριστου υπερ παντων υμων οτι η πιστις
υμων καταγγελλεται εν ολω τω κοσμω
⁹μαρτυς γαρ μου εστιν ο θεος ω λατρευω εν τω πνευματι μου εν τω ευαγγελιω του υιου
αυτου ως αδιαλειπτως μνειαν υμων ποιουμαι
¹⁰παντοτε επι των προσευχων μου δεομενος ειπωσ ηδη ποτε ευοδωθησομαι εν τω θεληματι
του θεου ελθειν προς υμας
¹¹επιποθω γαρ ιδειν υμας ινα τι μεταδω χαρισμα υμιν πνευματικον εις το στηριχθηναι
υμας
¹²τουτο δε εστιν συμπαρακληθηναι εν υμιν δια της εν αλληλοις πιστεως υμων τε και εμου
¹³ου θελω δε υμας αγνοειν αδελφοι οτι πολλακις προεθεμην ελθειν προς υμας και
εκωλυθην αχρι του δευρο ινα καρπον τινα σχω και εν υμιν καθως και εν τοις λοιποις
εθνεσιν
¹⁴ελλησιν τε και βαρβαροις σοφοις τε και ανοητοις οφειλετης ειμι
¹⁵ουτως το κατ εμε προθυμον και υμιν τοις εν ρωμη ευαγγελισασθαι
¹⁶ου γαρ επαισχυνομαι το ευαγγελιον του χριστου δυναμις γαρ θεου εστιν εις σωτηριαν
παντι τω πιστευοντι ιουδαιω τε πρωτον και ελληνι
¹⁷δικαιοσυνη γαρ θεου εν αυτω αποκαλυπτεται εκ πιστεως εις πιστιν καθως γεγραπται ο
δε δικαιος εκ πιστεως ζησεται
¹⁸αποκαλυπτεται γαρ οργη θεου απ ουρανου επι πασαν ασεβειαν και αδικιαν ανθρωπων
των την αληθειαν εν αδικια κατεχοντων
¹⁹διοτι το γνωστον του θεου φανερον εστιν εν αυτοις ο γαρ θεος αυτοις εφανερωσεν
²⁰τα γαρ αορατα αυτου απο κτισεως κοσμου τοις ποιημασιν νοουμενα καθοραται η τε
αιδιος αυτου δυναμις και θειοτης εις το ειναι αυτους αναπολογητους
²¹διοτι γνοντες τον θεον ουχ ως θεον εδοξασαν η ευχαριστησαν αλλ εματαιωθησαν εν
τοις διαλογισμοις αυτων και εσκοτισθη η ασυνετος αυτων καρδια
²²φασκοντες ειναι σοφοι εμωρανθησαν

- ²³ και ηλλαξαν την δοξαν του αφθαρτου θεου εν ομοιωματι εικονος φθαρτου ανθρωπου και πετεινων και τετραποδων και ερπετων
- ²⁴ διο και παρεδωκεν αυτους ο θεος εν ταις επιθυμiais των καρδιων αυτων εις ακαθαρσιαν του ατιμαζεσθαι τα σωματα αυτων εν εαυτοις
- ²⁵ οιτινες μετηλλαξαν την αληθειαν του θεου εν τω ψευδει και εσεβασθησαν και ελατρευσαν τη κτισει παρα τον κτισαντα ος εστιν ευλογητος εις τους αιωνας αμην
- ²⁶ δια τουτο παρεδωκεν αυτους ο θεος εις παθη ατιμιας αι τε γαρ θηλειαι αυτων μετηλλαξαν την φυσικην χρησιν εις την παρα φυσιν
- ²⁷ ομοιως τε και οι αρσενες αφεντες την φυσικην χρησιν της θηλειας εξεκαυθησαν εν τη ορεξει αυτων εις αλληλους αρσενες εν αρσεσιν την ασχημοσυνην κατεργαζομενοι και την αντιμισθιαν ην εδει της πλανης αυτων εν εαυτοις απολαμβανοντες
- ²⁸ και καθως ουκ εδοκιμασαν τον θεον εχειν εν επιγνωσει παρεδωκεν αυτους ο θεος εις αδοκιμον νουν ποιειν τα μη καθηκοντα
- ²⁹ πεπληρωμενους παση αδικια πορνεια πονηρια πλεονεξια κακια μεστους φθονου φονου εριδος δολου κακοηθειας ψιθυριστας
- ³⁰ καταλαλους θεοστυγεις υβριστας υπερηφανους αλαζονας εφευρετας κακων γονευσιν απειθεις
- ³¹ ασυνετους ασυνθετους αστοργους ασπονδους ανελεημονας
- ³² οιτινες το δικαιωμα του θεου επιγνοντες οτι οι τα τοιαυτα πρασσοντες αξιοι θανατου εισιν ου μονον αυτα ποιουσιν αλλα και συνευδοκουσιν τοις πρασσουσιν

Chapter 2

- ¹διο αναπολογητος ει ω ανθρωπε πας ο κρινων εν ω γαρ κρινεις τον ετερον σεαυτον κατακρινεις τα γαρ αυτα πρασσεις ο κρινων
- ²οιδαμεν δε οτι το κριμα του θεου εστιν κατα αληθειαν επι τους τα τοιαυτα πρασσοντας
- ³λογιζη δε τουτο ω ανθρωπε ο κρινων τους τα τοιαυτα πρασσοντας και ποιων αυτα οτι συ εκφευξη το κριμα του θεου
- ⁴η του πλουτου της χρηστοτητος αυτου και της ανοχης και της μακροθυμιας καταφρονεις αγνων οτι το χριστον του θεου εις μετανοιαν σε αγει
- ⁵κατα δε την σκληροτητα σου και αμετανοητον καρδιαν θησαυριζεις σεαυτω οργην εν ημερα οργης και αποκαλυψεως δικαιοκρισιας του θεου
- ⁶ος αποδωσει εκαστω κατα τα εργα αυτου
- ⁷τοις μεν καθ υπομονην εργου αγαθου δοξαν και τιμην και αφθαρσιαν ζητουσιν ζωην αιωνιον
- ⁸τοις δε εξ εριθειας και απειθουσιν μεν τη αληθεια πειθομενοις δε τη αδικια θυμος και οργη
- ⁹θλιψις και στενοχωρια επι πασαν ψυχην ανθρωπου του κατεργαζομενου το κακον ιουδαιου τε πρωτον και ελληνο
- ¹⁰δοξα δε και τιμη και ειρηνη παντι τω εργαζομενω το αγαθον ιουδαιω τε πρωτον και ελληνι
- ¹¹ου γαρ εστιν προσωποληψια παρα τω θεω
- ¹²οσοι γαρ ανομω
- ¹³ου γαρ οι ακροαται του νομου δικαιοι παρα τω θεω αλλ οι ποιηται του νομου δικαιοθησονται
- ¹⁴οταν γαρ εθνη τα μη νομον εχοντα φυσει τα του νομου ποιη ουτοι νομον μη εχοντες εαυτοις εισιν νομος
- ¹⁵οιτινες ενδεικνυνται το εργον του νομου γραπτον εν ταις καρδιας αυτων συμμαρτυρουσης αυτων της συνειδησεως και μεταξυ αλληλων των λογισμων κατηγορουντων η και απολογουμενων
- ¹⁶εν ημερα οτε κρινει ο θεος τα κρυπτα των ανθρωπων κατα το ευαγγελιον μου δια ιησου χριστου
- ¹⁷ιδε συ ιουδαιος επονομαζη και επαναπαυη τω νομω και καυχασαι εν θεω
- ¹⁸και γινωσκεις το θελημα και δοκιμαζεις τα διαφεροντα κατηχουμενος εκ του νομου
- ¹⁹πεποιθας τε σεαυτον οδηγον εινα τυφλων φως των εν σκοτει
- ²⁰παιδευτην αφρονων διδασκαλον νηπιων εχοντα την μορφωσιν της γνωσεως και της αληθειας εν τω νομω
- ²¹ο ουν διδασκων ετερον σεαυτον ου διδασκεις ο κηρυσσων μη κλεπτειν κλεπτεις
- ²²ο λεγων μη μοιχευειν μοιχευεις ο βδελυσσομενος τα ειδωλα ιεροσυλεις

- ²³ος εν νομω καυχασαι δια της παραβασεως του νομου τον θεον ατιμαζεις
²⁴το γαρ ονομα του θεου δι υμας βλασφημειται εν τοις εθνεσιν καθως γεγραπται
²⁵περιτομη μεν γαρ ωφελει εαν νομον πρασσης εαν δε παραβατης νομου ης η περιτομη σου ακροβυστια γεγονεν
²⁶εαν ουν η ακροβυστια τα δικαιωματα του νομου φυλασση ουχι η ακροβυστια αυτου εις περιτομην λογισθησεται
²⁷και κρινει η εκ φυσεως ακροβυστια τον νομον τελουσα σε τον δια γραμματος και περιτομης παραβατην νομου
²⁸ου γαρ ο εν τω φανερω ιουδαιος εστιν ουδε η εν τω φανερω εν σαρκι περιτομη
²⁹αλλ ο εν τω κρυπτω ιουδαιος και περιτομη καρδιας εν πνευματι ου γραμματι ου ο επαινος ουκ εξ ανθρωπων αλλ εκ του θεου

Chapter 3

¹τι ουν το περισσον του ιουδαιου η τις η ωφελεια της περιτομης
²πολυ κατα παντα τροπον πρωτον μεν γαρ οτι επιστευθησαν τα λογια του θεου
³τι γαρ ει ηπιστησαν τινες μη η απιστια αυτων την πιστιν του θεου καταργησει
⁴μη γενοιτο γινεσθω δε ο θεος αληθης πας δε ανθρωπος ψευστης καθως γεγραπται οπως
αν δικαιωθης εν τοις λογοις σου και νικησης εν τω κρινεσθαι σε
⁵ει δε η αδικια ημων θεου δικαιοσυνην συνιστησιν τι ερουμεν μη αδικος ο θεος ο επιφερων
την οργην κατα ανθρωπον λεγω
⁶μη γενοιτο επει πως κρινει ο θεος τον κοσμον
⁷ει γαρ η αληθεια του θεου εν τω εμω ψευσματι επερισσευσεν εις την δοξαν αυτου τι ετι
καγω ως αμαρτωλος κρινομαι
⁸και μη καθως βλασφημουμεθα και καθως φασιν τινες ημας λεγειν οτι ποιησωμεν τα κακα
ινα ελθη τα αγαθα ων το κριμα ενδικον εστιν
⁹τι ουν προεχομεθα ου παντως προητιασαμεθα γαρ ιουδαιους τε και ελληνας παντας υφ
αμαρτιαν ειναι
¹⁰καθως γεγραπται οτι ουκ εστιν δικαιος ουδε εις
¹¹ουκ εστιν ο συνιων ουκ εστιν ο εκζητων τον θεον
¹²παντες εξεκλιναν αμα ηχρειωθησαν ουκ εστιν ποιων χρηστοτητα ουκ εστιν εως ενος
¹³ταφος ανεωγμενος ο λαρυγξ αυτων ταις γλωσσαις αυτων εδολιουσαν ιος ασπιδων υπο
τα χειλη αυτων
¹⁴ων το στομα αρας και πικριας γεμει
¹⁵οξεις οι ποδες αυτων εκχεαι αιμα
¹⁶συντριμμα και ταλαιπωρια εν ταις οδοις αυτων
¹⁷και οδον ειρηνης ουκ εγνωσαν
¹⁸ουκ εστιν φοβος θεου απεναντι των οφθαλμων αυτων
¹⁹οιδαμεν δε οτι οσα ο νομος λεγει τοις εν τω νομω λαλει ινα παν στομα φραγη και υποδικος
γενηται πας ο κοσμος τω θεω
²⁰διοτι εξ εργαων νομου ου δικαιωθησεται πασα σαρξ ενωπιον αυτου δια γαρ νομου
επιγνωσις αμαρτιας
²¹νυνη δε χωρις νομου δικαιοσυνη θεου πεφανερωται μαρτυρουμενη υπο του νομου και
των προφητων
²²δικαιοσυνη δε θεου δια πιστεως ιησου χριστου εις παντας και επι παντας τους πιστευοντας
ου γαρ εστιν διαστολη
²³παντες γαρ ημαρτον και υστερουνται της δοξης του θεου
²⁴δικαιουμενοι δωρεαν τη αυτου χαριτι δια της απολυτρωσεως της εν χριστω ιησου
²⁵ον προεθετο ο θεος ιλαστηριον δια της πιστεως εν τω αυτου αιματι εις ενδειξιν της
δικαιοσυνης αυτου δια την παρεσιν των προγεγονοτων αμαρτηματων

²⁶ εν τη ανοχη του θεου προς ενδειξιν της δικαιοσυνης αυτου εν τω νυν καιρω εις το ειναι αυτον δικαιον και δικαιουντα τον εκ πιστεως ιησου

²⁷ που ουν η καυχησις εξεκλεισθη δια ποιου νομου των εργαων ουχι αλλα δια νομου πιστεως

²⁸ λογιζομεθα ουν πιστει δικαιουσθαι ανθρωπον χωρις εργαων νομου

²⁹ η ιουδαιων ο θεος μονον ουχι δε και εθνων ναι και εθνων

³⁰ επειπερ εις ο θεος ος δικαιωσει περιτομην εκ πιστεως και ακροβυστιαν δια της πιστεως

³¹ νομον ουν καταργουμεν δια της πιστεως μη γενοιτο αλλα νομον ιστωμεν

Chapter 4

- ¹τι ουν ερουμεν αβρααμ τον πατερα ημων ευρηκεναι κατα σαρκα
²ει γαρ αβρααμ εξ εργαων εδικαιωθη εχει καυχημα αλλ ου προς τον θεον
³τι γαρ η γραφη λεγει επιστευσεν δε αβρααμ τω θεω και ελογισθη αυτω εις δικαιοσυνην
⁴τω δε εργαζομενω ο μισθος ου λογιζεται κατα χαριν αλλα κατα το οφειλημα
⁵τω δε μη εργαζομενω πιστευοντι δε επι τον δικαιουντα τον ασεβη λογιζεται η πιστις αυτου εις δικαιοσυνην
⁶καθαπερ και δαβιδ λεγει τον μακαρισμον του ανθρωπου ω ο θεος λογιζεται δικαιοσυνην χωρις εργαων
⁷μακαριοι ων αφεθησαν αι ανομιαι και ων επεκαλυφθησαν αι αμαρτιαι
⁸μακαριος ανηρ ω ου μη λογισηται κυριος αμαρτιαν
⁹ο μακαρισμος ουν ουτος επι την περιτομην η και επι την ακροβυστιαν λεγομεν γαρ οτι ελογισθη τω αβρααμ η πιστις εις δικαιοσυνην
¹⁰πως ουν ελογισθη εν περιτομη οντι η εν ακροβυστια ουκ εν περιτομη αλλ εν ακροβυστια
¹¹και σημειον ελαβεν περιτομης σφραγιδα της δικαιοσυνης της πιστεως της εν τη ακροβυστια εις το ειναι αυτον πατερα παντων των πιστευοντων δι ακροβυστίας εις το λογισθηναι και αυτοις την δικαιοσυνην
¹²και πατερα περιτομης τοις ουκ εκ περιτομης μονον αλλα και τοις στοιχουσιν τοις ιχνεσιν της εν τη ακροβυστια πιστεως του πατρος ημων αβρααμ
¹³ου γαρ δια νομου η επαγγελια τω αβρααμ η τω σπερματι αυτου το κληρονομον αυτον ειναι του κοσμου αλλα δια δικαιοσυνης πιστεως
¹⁴ει γαρ οι εκ νομου κληρονομοι κεκενωται η πιστις και κατηρηται η επαγγελια
¹⁵ο γαρ νομος οργην κατεργαζεται ου γαρ ουκ εστιν νομος ουδε παραβασις
¹⁶δια τουτο εκ πιστεως ινα κατα χαριν εις το ειναι βεβαιαν την επαγγελιαν παντι τω σπερματι ου τω εκ του νομου μονον αλλα και τω εκ πιστεως αβρααμ ος εστιν πατηρ παντων ημων
¹⁷καθως γεγραπται οτι πατερα πολλων εθνων τεθεικα σε κατεναντι ου επιστευσεν θεου του ζωοποιουντος τους νεκρους και καλουντος τα μη οντα ως οντα
¹⁸ος παρ ελπιδα επ ελπιδι επιστευσεν εις το γενεσθαι αυτον πατερα πολλων εθνων κατα το ειρημενον ουτως εσται το σπερμα σου
¹⁹και μη ασθενησας τη πιστει ου κατενοησεν το εαυτου σωμα ηδη νενεκρωμενον εκατονταετης που υπαρχων και την νεκρωσιν της μητρας σαρρας
²⁰εις δε την επαγγελιαν του θεου ου διεκριθη τη απιστια αλλ ενεδυναμωθη τη πιστει δους δοξαν τω θεω
²¹και πληροφορηθεις οτι ο επηγγελται δυνατος εστιν και ποιησαι
²²διο και ελογισθη αυτω εις δικαιοσυνην
²³ουκ εγραφη δε δι αυτον μονον οτι ελογισθη αυτω

²⁴ αλλα και δι ημας οισ μελλει λογιζεσθαι τοις πιστευουσιν επι τον εγειραντα ιησουν τον κυριον ημων εκ νεκρων

²⁵ ος παρεδοθη δια τα παραπτωματα ημων και ηγερθη δια την δικαιοσιν ημων

Chapter 5

¹δικαιωθεντες ουν εκ πιστεως ειρηνην εχομεν προς τον θεον δια του κυριου ημων
 ιησου χριστου
²δι ου και την προσαγωγην εσχηκαμεν τη πιστει εις την χαριν ταυτην εν η εστηκαμεν και
 καυχωμεθα επ ελπιδι της δοξης του θεου
³ου μονον δε αλλα και καυχωμεθα εν ταις θλιψεσιν ειδοτες οτι η θλιψις υπομονην
 κατεργαζεται
⁴η δε υπομονη δοκιμην η δε δοκιμη ελπιδα
⁵η δε ελπις ου καταισχυνει οτι η αγαπη του θεου εκκεχυται εν ταις καρδιαις ημων δια
 πνευματος αγιου του δοθεντος ημιν
⁶ετι γαρ χριστος οντων ημων ασθενων κατα καιρον υπερ ασεβων απεθανεν
⁷μολις γαρ υπερ δικαιου τις αποθανειται υπερ γαρ του αγαθου ταχα τις και τολμα αποθανειν
⁸συνιστησιν δε την εαυτου αγαπην εις ημας ο θεος οτι ετι αμαρτωλων οντων ημων χριστος
 υπερ ημων απεθανεν
⁹πολλω ουν μαλλον δικαιωθεντες νυν εν τω αιματι αυτου σωθησομεθα δι αυτου απο της
 οργης
¹⁰ει γαρ εχθροι οντες κατηλλαγημεν τω θεω δια του θανατου του υιου αυτου πολλω
 μαλλον καταλλαγεντες σωθησομεθα εν τη ζωη αυτου
¹¹ου μονον δε αλλα και καυχωμενοι εν τω θεω δια του κυριου ημων ιησου χριστου δι ου
 νυν την καταλλαγην ελαβομεν
¹²δια τουτο ωσπερ δι ενος ανθρωπου η αμαρτια εις τον κοσμον εισηλθεν και δια της
 αμαρτιας ο θανατος και ουτως εις παντας ανθρωπους ο θανατος διηλθεν εφ ω παντες
 ημαρτον
¹³αχρι γαρ νομου αμαρτια ην εν κοσμω αμαρτια δε ουκ ελλογεται μη οντος νομου
¹⁴αλλ εβασιλευσεν ο θανατος απο αδαμ μεχρι μωσεως και επι τους μη αμαρτησαντας επι
 τω ομοιωματι της παραβασεως αδαμ ος εστιν τυπος του μελλοντος
¹⁵αλλ ουχ ως το παραπτωμα ουτως και το χαρισμα ει γαρ τω του ενος παραπτωματι οι
 πολλοι απεθανον πολλω μαλλον η χαρις του θεου και η δωρεα εν χαριτι τη του ενος
 ανθρωπου ιησου χριστου εις τους πολλους επερισσευσεν
¹⁶και ουχ ως δι ενος αμαρτησαντος το δωρημα το μεν γαρ κριμα εξ ενος εις κατακριμα το
 δε χαρισμα εκ πολλων παραπτωματος εις δικαιομα
¹⁷ει γαρ τω του ενος παραπτωματι ο θανατος εβασιλευσεν δια του ενος πολλω μαλλον οι
 την περισειαν της χαριτος και της δωρεας της δικαιοσυνης λαμβανοντες εν ζωη
 βασιλευσουσιν δια του ενος ιησου χριστου
¹⁸αρα ουν ως δι ενος παραπτωματος εις παντας ανθρωπους εις κατακριμα ουτως και δι
 ενος δικαιοματος εις παντας ανθρωπους εις δικαιοσιν ζωης
¹⁹ωσπερ γαρ δια της παρακοης του ενος ανθρωπου αμαρτωλοι κατεσταθησαν οι πολλοι
 ουτως και δια της υπακοης του ενος δικαιοι κατασταθησονται οι πολλοι

²⁰νομος δε παρεισηλθεν ινα πλεοναση το παραπτωμα ου δε επλεονασεν η αμαρτια
υπερεπερισσευσεν η χαρις

²¹ινα ωσπερ εβασιλευσεν η αμαρτια εν τω θανατω ουτως και η χαρις βασιλευση δια
δικαιοσυνης εις ζωην αιωνιον δια ιησου χριστου του κυριου ημων

Chapter 6

¹τι ουν ερουμεν επιμενουμεν τη αμαρτια ινα η χαρις πλεοναση
²μη γενοιτο οιτινες απεθανομεν τη αμαρτια πως ετι ζησομεν εν αυτη
³η αγνοειτε οτι οσοι εβαπτισθημεν εις χριστον ιησουν εις τον θανατον αυτου εβαπτισθημεν
⁴συνεταφημεν ουν αυτω δια του βαπτισματος εις τον θανατον ινα ωσπερ ηγερθη χριστος εκ νεκρων δια της δοξης του πατρος ουτως και ημεις εν καινοτητι ζωης περιπατησωμεν
⁵ει γαρ συμφυτοι γεγοναμεν τω ομοιωματι του θανατου αυτου αλλα και της αναστασεως εσομεθα
⁶τουτο γινωσκοντες οτι ο παλαιος ημων ανθρωπος συνεσταυρωθη ινα καταργηθη το σωμα της αμαρτιας του μηκετι δουλευειν ημας τη αμαρτια
⁷ο γαρ αποθανων δεδικαιωται απο της αμαρτιας
⁸ει δε απεθανομεν συν χριστω πιστευομεν οτι και συζησομεν αυτω
⁹ειδοτες οτι χριστος εγερθηκε εκ νεκρων ουκετι αποθνησκει θανατος αυτου ουκετι κυριευει
¹⁰ο γαρ απεθανεν τη αμαρτια απεθανεν εφραπαξ ο δε ζη ζη τω θεω
¹¹ουτως και υμεις λογιζεσθε εαυτους νεκρους μεν ειναι τη αμαρτια ζωντας δε τω θεω εν χριστω ιησου τω κυριω ημων
¹²μη ουν βασιλευετω η αμαρτια εν τω θνητω υμων σωματι εις το υπακουειν αυτη εν ταις επιθυμιας αυτου
¹³μηδε παριστανετε τα μελη υμων οπλα αδικιας τη αμαρτια αλλα παραστησατε εαυτους τω θεω ως εκ νεκρων ζωντας και τα μελη υμων οπλα δικαιοσυνης τω θεω
¹⁴αμαρτια γαρ υμων ου κυριευσει ου γαρ εστε υπο νομον αλλ υπο χαριν
¹⁵τι ουν αμαρτησομεν οτι ουκ εσμεν υπο νομον αλλ υπο χαριν μη γενοιτο
¹⁶ουκ οιδατε οτι ω παριστανετε εαυτους δουλους εις υπακοην δουλοι εστε ω υπακουετε ητοι αμαρτιας εις θανατον η υπακοης εις δικαιοσυνην
¹⁷χαρις δε τω θεω οτι ητε δουλοι της αμαρτιας υπηκουσατε δε εκ καρδιας εις ον παρεδοθητε τυπον διδαχης
¹⁸ελευθερωθεντες δε απο της αμαρτιας εδουλωθητε τη δικαιοσυνη
¹⁹ανθρωπινον λεγω δια την ασθeneian της σαρκος υμων ωσπερ γαρ παρεστησατε τα μελη υμων δουλα τη ακαθαρσια και τη ανομια εις την ανομιαν ουτως νυν παραστησατε τα μελη υμων δουλα τη δικαιοσυνη εις αγιασμον
²⁰οτε γαρ δουλοι ητε της αμαρτιας ελευθεροι ητε τη δικαιοσυνη
²¹τινα ουν καρπον ειχετε τοτε εφ οις νυν επαισχυνεσθε το γαρ τελος εκεινων θανατος
²²νυνι δε ελευθερωθεντες απο της αμαρτιας δουλωθεντες δε τω θεω εχετε τον καρπον υμων εις αγιασμον το δε τελος ζων αιωνιον
²³τα γαρ οψωνια της αμαρτιας θανατος το δε χαρισμα του θεου ζωη αιωνιος εν χριστω ιησου τω κυριω ημων

Chapter 7

- ¹η αγνοείτε αδελφοι γινωσκουσιν γαρ νομον λαλω οτι ο νομος κυριευει του ανθρωπου εφ οσον χρονον ζη
- ²η γαρ υπανδρος γυνη τω ζωντι ανδρι δεδεται νομω εαν δε αποθανη ο ανηρ κατηργηται απο του νομου του ανδρος
- ³αρα ουν ζωντος του ανδρος μοιχαλις χρηματισει εαν γενηται ανδρι ετερω εαν δε αποθανη ο ανηρ ελευθερα εστιν απο του νομου του μη ειναι αυτην μοιχαλιδα γενομενην ανδρι ετερω
- ⁴ωστε αδελφοι μου και υμεις εθανατωθητε τω νομω δια του σωματος του χριστου εις το γενεσθαι υμας ετερω τω εκ νεκρων εγερθεντι ινα καρποφορησωμεν τω θεω
- ⁵οτε γαρ ημεν εν τη σαρκι τα παθηματα των αμαρτιων τα δια του νομου ενηργειτο εν τοις μελεσιν ημων εις το καρποφορησαι τω θανατω
- ⁶νυνη δε κατηργηθημεν απο του νομου αποθανοντος εν ω κατειχομεθα ωστε δουλευειν ημας εν καινοτητι πνευματος και ου παλαιοτητι γραμματος
- ⁷τι ουν ερουμεν ο νομος αμαρτια μη γενοιτο αλλα την αμαρτιαν ουκ εγνων ει μη δια νομου την τε γαρ επιθυμιαν ουκ ηδεν ει μη ο νομος ελεγεν ουκ επιθυμησεις
- ⁸αφορμην δε λαβουσα η αμαρτια δια της εντολης κατειργασατο εν εμοι πασαν επιθυμιαν χωρις γαρ νομου αμαρτια νεκρα
- ⁹εγω δε εζων χωρις νομου ποτε ελθουσης δε της εντολης η αμαρτια ανεζησεν εγω δε απεθανον
- ¹⁰και ευρεθη μοι η εντολη η εις ζωην αυτη εις θανατον
- ¹¹η γαρ αμαρτια αφορμην λαβουσα δια της εντολης εξηπατησεν με και δι αυτης απεκτεινεν
- ¹²ωστε ο μεν νομος αγιος και η εντολη αγια και δικαια και αγαθη
- ¹³το ουν αγαθον εμοι γεγονεν θανατος μη γενοιτο αλλα η αμαρτια ινα φανη αμαρτια δια του αγαθου μοι κατεργαζομενη θανατον ινα γενηται καθ υπερβολην αμαρτωλος η αμαρτια δια της εντολης
- ¹⁴οιδαμεν γαρ οτι ο νομος πνευματικος εστιν εγω δε σαρκικος ειμι πεπραμενος υπο την αμαρτιαν
- ¹⁵ο γαρ κατεργαζομαι ου γινωσκω ου γαρ ο θελω τουτο πρασσω αλλ ο μισω τουτο ποιω
- ¹⁶ει δε ο ου θελω τουτο ποιω συμφημι τω νομω οτι καλος
- ¹⁷νυνη δε ουκετι εγω κατεργαζομαι αυτο αλλ η οικουσα εν εμοι αμαρτια
- ¹⁸οιδα γαρ οτι ουκ οικει εν εμοι τουτεστιν εν τη σαρκι μου αγαθον το γαρ θελειν παρακειται μοι το δε κατεργαζεσθαι το καλον ουχ ευρισκω
- ¹⁹ου γαρ ο θελω ποιω αγαθον αλλ ο ου θελω κακον τουτο πρασσω
- ²⁰ει δε ο ου θελω εγω τουτο ποιω ουκετι εγω κατεργαζομαι αυτο αλλ η οικουσα εν εμοι αμαρτια
- ²¹ευρισκω αρα τον νομον τω θελοντι εμοι ποιειν το καλον οτι εμοι το κακον παρακειται
- ²²συνηδομαι γαρ τω νομω του θεου κατα τον εσω ανθρωπον

²³βλεπω δε ετερον νομον εν τοις μελεσιν μου αντιστρατευομενον τω νομω του νοος μου
και αιχμαλωτιζοντα με τω νομω της αμαρτιας τω οντι εν τοις μελεσιν μου

²⁴ταλαιπωρος εγω ανθρωπος τις με ρυσεται εκ του σωματος του θανατου τουτου

²⁵ευχαριστω τω θεω δια ιησου χριστου του κυριου ημων αρα ουν αυτος εγω τω μεν νοι
δουλευω νομω θεου τη δε σαρκι νομω αμαρτιας

Chapter 8

¹ουδεν αρα νυν κατακριμα τοις εν χριστω ιησου μη κατα σαρκα περιπατουσιν αλλα κατα πνευμα
²ο γαρ νομος του πνευματος της ζωης εν χριστω ιησου ηλευθερωσεν με απο του νομου της αμαρτιας και του θανατου
³το γαρ αδυνατον του νομου εν ω ησθενει δια της σαρκος ο θεος τον εαυτου υιον πεμψας εν ομοιωματι σαρκος αμαρτιας και περι αμαρτιας κατεκρινεν την αμαρτιαν εν τη σαρκι
⁴ινα το δικαιοωμα του νομου πληρωθη εν ημιν τοις μη κατα σαρκα περιπατουσιν αλλα κατα πνευμα
⁵οι γαρ κατα σαρκα οντες τα της σαρκος φρονουσιν οι δε κατα πνευμα τα του πνευματος
⁶το γαρ φρονημα της σαρκος θανατος το δε φρονημα του πνευματος ζωη και ειρηνη
⁷διоти το φρονημα της σαρκος εχθρα εις θεον τω γαρ νομω του θεου ουχ υποτασσεται ουδε γαρ δυναται
⁸οι δε εν σαρκι οντες θεω αρεσαι ου δυναται
⁹υμεις δε ουκ εστε εν σαρκι αλλ εν πνευματι ειπερ πνευμα θεου οικει εν υμιν ει δε τις πνευμα χριστου ουκ εχει ουτος ουκ εστιν αυτου
¹⁰ει δε χριστος εν υμιν το μεν σωμα νεκρον δι αμαρτιαν το δε πνευμα ζωη δια δικαιοσυνην
¹¹ει δε το πνευμα του εγειραντος ιησουν εκ νεκρων οικει εν υμιν ο εγειρας τον χριστον εκ νεκρων ζωοποιησει και τα θνητα σωματα υμων δια του ενοικουντος αυτου πνευματος εν υμιν
¹²αρα ουν αδελφοι οφειλεται εσμεν ου τη σαρκι του κατα σαρκα ζην
¹³ει γαρ κατα σαρκα ζητε μελλετε αποθνησκειν ει δε πνευματι τας πραξεις του σωματος θανατουτε ζησεσθε
¹⁴οσοι γαρ πνευματι θεου αγονται ουτοι εισιν υιοι θεου
¹⁵ου γαρ ελαβετε πνευμα δουλειας παλιν εις φοβον αλλ ελαβετε πνευμα υιοθεσιας εν ω κραζομεν αββα ο πατηρ
¹⁶αυτο το πνευμα συμμαρτυρει τω πνευματι ημων οτι εσμεν τεκνα θεου
¹⁷ει δε τεκνα και κληρονομοι κληρονομοι μεν θεου συγκληρονομοι δε χριστου ειπερ συμπασχομεν ινα και συνδοξασθωμεν
¹⁸λογιζομαι γαρ οτι ουκ αξια τα παθηματα του νυν καιρου προς την μελλουσαν δοξαν αποκαλυφθηναι εις ημας
¹⁹η γαρ αποκαταδοκια της κτισεως την αποκαλυψιν των υιων του θεου απεκδεχεται
²⁰τη γαρ ματαιοτητι η κτισις υπεταγη ουχ εκουσα αλλα δια τον υποταξαντα επ ελπιδι
²¹οτι και αυτη η κτισις ελευθερωθησεται απο της δουλειας της φθορας εις την ελευθεριαν της δοξης των τεκνων του θεου
²²οιδαμεν γαρ οτι πασα η κτισις συστεναζει και συνωδινει αχρι του νυν
²³ου μονον δε αλλα και αυτοι την απαρχην του πνευματος εχοντες και ημεις αυτοι εν εαυτοις στεναζομεν υιοθεσιαν απεκδεχομενοι την απολυτρωσιν του σωματος ημων

- ²⁴τη γαρ ελπιδι εσωθημεν ελπις δε βλεπομενη ουκ εστιν ελπις ο γαρ βλεπει τις τι και ελπίζει
- ²⁵ει δε ο ου βλεπομεν ελπίζομεν δι υπομονης απεκδεχομεθα
- ²⁶ωσαυτως δε και το πνευμα συναντιλαμβανεται ταις ασθeneιαις ημων το γαρ τι προσευξομεθα καθο δει ουκ οίδαμεν αλλ αυτο το πνευμα υπερεντυγχανει υπερ ημων στεναγμοις αλαλητοις
- ²⁷ο δε ερευνων τας καρδιας οιδεν τι το φρονημα του πνευματος οτι κατα θεον εντυγχανει υπερ αγιων
- ²⁸οίδαμεν δε οτι τοις αγαπωσιν τον θεον παντα συνεργει εις αγαθον τοις κατα προθεσιν κλητοις ουσιν
- ²⁹οτι ους προεγνω και προωρισεν συμμορφους της εικονος του υιου αυτου εις το ειναι αυτον πρωτοτοκον εν πολλοις αδελφοις
- ³⁰ους δε προωρισεν τουτους και εκαλεσεν και ους εκαλεσεν τουτους και εδικαιωσεν ους δε εδικαιωσεν τουτους και εδοξασεν
- ³¹τι ουν ερουμεν προς ταυτα ει ο θεος υπερ ημων τις καθ ημων
- ³²ος γε του ιδιου υιου ουκ εφεισατο αλλ υπερ ημων παντων παρεδωκεν αυτον πως ουχι και συν αυτω τα παντα ημιν χαρισεται
- ³³τις εγκαλεσει κατα εκλεκτων θεου θεος ο δικαιων
- ³⁴τις ο κατακρινων χριστος ο αποθανων μαλλον δε και εγερθεις ος και εστιν εν δεξια του θεου ος και εντυγχανει υπερ ημων
- ³⁵τις ημας χωρισει απο της αγαπης του χριστου θλιψις η στενοχωρια η διωγμος η λιμος η γυμνοτης η κινδυνος η μαχαιρα
- ³⁶καθως γεγραπται οτι ενεκα σου θανατουμεθα ολην την ημεραν ελογισθημεν ως προβατα σφαγης
- ³⁷αλλ εν τουτοις πασιν υπερνικωμεν δια του αγαπησαντος ημας
- ³⁸πεπεισμαι γαρ οτι ουτε θανατος ουτε ζωη ουτε αγγελιοι ουτε αρχαι ουτε δυναμεις ουτε ενεστωτα ουτε μελλοντα
- ³⁹ουτε υψωμα ουτε βαθος ουτε τις κτισις ετερα δυνησεται ημας χωρισαι απο της αγαπης του θεου της εν χριστω ιησου τω κυριω ημων

Chapter 9

- ¹ αληθειαν λεγω εν χριστω ου ψευδομαι συμμαρτυρουσης μοι της συνειδησεως μου εν πνευματι αγιω
- ² οτι λυπη μοι εστιν μεγαλη και αδιαλειπτος οδυνη τη καρδια μου
- ³ ηυχομην γαρ αυτος εγω αναθεμα ειναι απο του χριστου υπερ των αδελφων μου των συγγενων μου κατα σαρκα
- ⁴ οτινες εισιν ισραηλιται ων η υιοθεσια και η δοξα και αι διαθηκαι και η νομοθεσια και η λατρευια και αι επαγγελιαι
- ⁵ ων οι πατερες και εξ ων ο χριστος το κατα σαρκα ο ων επι παντων θεος ευλογητος εις τους αιωνας αμην
- ⁶ ουχ οιον δε οτι εκπεπτωκεν ο λογος του θεου ου γαρ παντες οι εξ ισραηλ ουτοι ισραηλ
- ⁷ ουδ οτι εισιν σπερμα αβρααμ παντες τεκνα αλλ εν ισαακ κληθησεται σοι σπερμα
- ⁸ τουτεστιν ου τα τεκνα της σαρκος ταυτα τεκνα του θεου αλλα τα τεκνα της επαγγελιας λογιζεται εις σπερμα
- ⁹ επαγγελιας γαρ ο λογος ουτος κατα τον καιρον τουτον ελευσομαι και εσται τη σαρρα υιος
- ¹⁰ ου μονον δε αλλα και ρεβεκκα εξ ενος κοιτην εχουσα ισαακ του πατρος ημων
- ¹¹ μηπω γαρ γεννηθεντων μηδε πραξαντων τι αγαθον η κακον ινα η κατ εκλογην του θεου προθεσις μενη ουκ εξ εργαων αλλ εκ του καλουντος
- ¹² ερρηθη αυτη οτι ο μειζων δουλευσει τω ελασσονι
- ¹³ καθως γεγραπται τον ιακωβ ηγαπησα τον δε ησαυ εμισησα
- ¹⁴ τι ουν ερουμεν μη αδικια παρα τω θεω μη γενοιτο
- ¹⁵ τω γαρ μωση λεγει ελεησω ον αν ελεω και οικτειρησω ον αν οικτειρω
- ¹⁶ αρα ουν ου του θελοντος ουδε του τρεχοντος αλλα του ελεουντος θεου
- ¹⁷ λεγει γαρ η γραφη τω φαραω οτι εις αυτο τουτο εξηγειρα σε οπως ενδειξωμαι εν σοι την δυναμιν μου και οπως διαγγελη το ονομα μου εν παση τη γη
- ¹⁸ αρα ουν ον θελει ελεει ον δε θελει σκληρυνει
- ¹⁹ ερεις ουν μοι τι ετι μεμφεται τω γαρ βουληματι αυτου τις ανθεστηκεν
- ²⁰ μενουγγε ω ανθρωπε συ τις ει ο ανταποκρινομενος τω θεω μη ερει το πλασμα τω πλασαντι τι με εποιησας ουτως
- ²¹ η ουκ εχει εξουσιαν ο κεραμευς του πηλου εκ του αυτου φυραματος ποιησαι ο μεν εις τιμην σκευος ο δε εις ατιμιαν
- ²² ει δε θελων ο θεος ενδειξασθαι την οργην και γνωρισαι το δυνατον αυτου ηνεγκεν εν πολλη μακροθυμια σκευη οργης κατηρτισμενα εις απωλειαν
- ²³ και ινα γνωριση τον πλουτον της δοξης αυτου επι σκευη ελεους α προητοιμασεν εις δοξαν
- ²⁴ ους και εκαλεσεν ημας ου μονον εξ ιουδαιων αλλα και εξ εθνων

²⁵ως και εν τω ωσηε λεγει καλεσω τον ου λαον μου λαον μου και την ουκ ηγαπημενην ηγαπημενην

²⁶και εσται εν τω τοπω ου ερηθη αυτοις ου λαος μου υμεις εκει κληθησονται υιοι θεου ζωντος

²⁷ησαιας δε κραζει υπερ του ισραηλ εαν η ο αριθμος των υιων ισραηλ ως η αμμος της θαλασσης το καταλειμμα σωθησεται

²⁸λογον γαρ συντελων και συντεμνων εν δικαιοσυνη οτι λογον συντετμημενον ποιησει κυριος επι της γης

²⁹και καθως προειρηκεν ησαιας ει μη κυριος σαβαωθ εγκατελιπεν ημιν σπερμα ως σοδομα αν εγενηθημεν και ως γομορρα αν ωμοιωθημεν

³⁰τι ουν ερουμεν οτι εθνη τα μη διωκοντα δικαιοσυνην κατελαβεν δικαιοσυνην δικαιοσυνην δε την εκ πιστεως

³¹ισραηλ δε διωκων νομον δικαιοσυνης εις νομον δικαιοσυνης ουκ εφθασεν

³²διατι οτι ουκ εκ πιστεως αλλ ως εξ εργαων νομου προσεκοψαν γαρ τω λιθω του προσκομματος

³³καθως γεγραπται ιδου τιθημι εν σιων λιθον προσκομματος και πετραν σκανδαλου και πας ο πιστευων επ αυτω ου καταισχυνησεται

Chapter 10

- ¹αδελφοι η μεν ευδοκια της εμης καρδιας και η δεησις η προς τον θεον υπερ του ισραηλ
 εστιν εις σωτηριαν
²μαρτυρω γαρ αυτοις οτι ζηλον θεου εχουσιν αλλ ου κατ επιγνωσιν
³αγνοουντες γαρ την του θεου δικαιοσυνην και την ιδιαν δικαιοσυνην ζητουντες στησαι
 τη δικαιοσυνη του θεου ουχ υπεταγησαν
⁴τελος γαρ νομου χριστος εις δικαιοσυνην παντι τω πιστευοντι
⁵μωσης γαρ γραφει την δικαιοσυνην την εκ του νομου οτι ο ποιησας αυτα ανθρωπος
 ζησεται εν αυτοις
⁶η δε εκ πιστεως δικαιοσυνη ουτως λεγει μη ειπης εν τη καρδια σου τις αναβησεται εις τον
 ουρανον τουτ εστιν χριστον καταγαγειν
⁷η τις καταβησεται εις την αβυσσον τουτ εστιν χριστον εκ νεκρων αναγαγειν
⁸αλλα τι λεγει εγγυς σου το ρημα εστιν εν τω στοματι σου και εν τη καρδια σου τουτ εστιν
 το ρημα της πιστεως ο κηρυσσομεν
⁹οτι εαν ομολογησης εν τω στοματι σου κυριον ιησουν και πιστευσης εν τη καρδια σου οτι
 ο θεος αυτον ηγειρεν εκ νεκρων σωθηση
¹⁰καρδια γαρ πιστευεται εις δικαιοσυνην στοματι δε ομολογεται εις σωτηριαν
¹¹λεγει γαρ η γραφη πας ο πιστευων επ αυτω ου καταισχυνησεται
¹²ου γαρ εστιν διαστολη ιουδαιου τε και ελληνος ο γαρ αυτος κυριος παντων πλουτων εις
 παντας τους επικαλουμενους αυτον
¹³πας γαρ ος αν επικαλεσηται το ονομα κυριου σωθησεται
¹⁴πως ουν επικαλεσσονται εις ον ουκ επιστευσαν πως δε πιστευσουσιν ου ουκ ηκουσαν πως
 δε ακουσουσιν χωρις κηρυσσοντος
¹⁵πως δε κηρυξουσιν εαν μη αποσταλωσιν καθως γεγραπται ως ωραιοι οι ποδες των
 ευαγγελιζομενων ειρηνην των ευαγγελιζομενων τα αγαθα
¹⁶αλλ ου παντες υπηκουσαν τω ευαγγελιω ησαιας γαρ λεγει κυριε τις επιστευσεν τη ακοη
 ημων
¹⁷αρα η πιστις εξ ακοης η δε ακοη δια ρηματος θεου
¹⁸αλλα λεγω μη ουκ ηκουσαν μενουγγε εις πασαν την γην εξηλθεν ο φθογγος αυτων και
 εις τα περατα της οικουμενης τα ρηματα αυτων
¹⁹αλλα λεγω μη ουκ εγνω ισραηλ πρωτος μωσης λεγει εγω παραζηλωσω υμας επ ουκ εθνει
 επι εθνει ασυνητω παροργιω υμας
²⁰ησαιας δε αποτολμα και λεγει ευρεθην τοις εμε μη ζητουσιν εμφανης εγενομην τοις εμε
 μη επερωτωσιν
²¹προς δε τον ισραηλ λεγει ολην την ημεραν εξεπετασα τας χειρας μου προς λαον
 απειθουντα και αντιλεγοντα

Chapter 11

¹λέγω οὖν μὴ ἀπώσατο ὁ θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ μὴ γένοιτο καὶ γὰρ ἐγὼ ἰσραηλῆτις εἰμι ἐκ σπέρματος ἀβραάμ φυλῆς βενιαμὴν

²οὐκ ἀπώσατο ὁ θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ ὃν προέγνω ἢ οὐκ οἶδατε ἐν ἤλια τι λέγει ἡ γραφή ὡς ἐντυγχάνει τῷ θεῷ κατὰ τοῦ ἰσραὴλ λέγων

³κύριε τοὺς προφῆτας σου ἀπεκτείναν καὶ τὰ θυσιαστήρια σου κατέσκαψαν καγὼ ὑπελείφθην μόνος καὶ ζητοῦσιν τὴν ψυχὴν μου

⁴ἀλλὰ τι λέγει αὐτῷ ὁ χρηματισμὸς κατελίπον ἐμαυτῷ ἑπτακισχιλίους ἀνδρας οἰτινες οὐκ ἔκαμψαν γόνυ τῆ βααλ

⁵οὕτως οὖν καὶ ἐν τῷ νῦν καιρῷ λείμμα κατ' ἐκλογὴν χάριτος γέγονεν

⁶εἰ δὲ χάριτι οὐκετι ἐξ ἔργων ἐπεὶ ἡ χάρις οὐκετι γίνεταί χάρις εἰ δὲ ἐξ ἔργων οὐκετι ἐστὶν χάρις ἐπεὶ τὸ ἔργον οὐκετι ἐστὶν ἔργον

⁷τί οὖν ὁ ἐπιζητεῖ ἰσραὴλ τοῦτου οὐκ ἐπέτυχεν ἢ δὲ ἐκλογὴ ἐπέτυχεν οἱ δὲ λοιποὶ ἐπώρωθησαν

⁸καθὼς γεγραπταὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ θεὸς πνεῦμα κατανυξέως ὀφθαλμοῦς τοῦ μὴ βλέπειν καὶ ὠτὰ τοῦ μὴ ἀκούειν ἕως τῆς σημερινῆς ἡμέρας

⁹καὶ δαβὶδ λέγει γενήθητω ἡ τραπεζὰ αὐτῶν εἰς παγίδα καὶ εἰς θήραν καὶ εἰς σκανδάλον καὶ εἰς ἀνταποδομὰ αὐτοῖς

¹⁰σκοτισθητῶσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν τοῦ μὴ βλέπειν καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διαπαντός συγκαμψόν

¹¹λέγω οὖν μὴ ἑπταῖσαν ἵνα πεσῶσιν μὴ γένοιτο ἀλλὰ τῷ αὐτῶν παραπτώματι ἡ σωτηρία τοῖς ἔθνεσιν εἰς τὸ παραζηλωσαὶ αὐτοὺς

¹²εἰ δὲ τὸ παράπτωμα αὐτῶν πλοῦτος κόσμος καὶ τὸ ἠττήμα αὐτῶν πλοῦτος ἐθνῶν πῶσω μᾶλλον τὸ πληρωμὰ αὐτῶν

¹³ὑμῖν γὰρ λέγω τοῖς ἔθνεσιν ἐφ' ὅσον μὲν εἰμι ἐγὼ ἐθνῶν ἀποστολὸς τὴν διακονίαν μου δοξάζω

¹⁴εἰ πῶς παραζηλωσῶ μου τὴν σάρκα καὶ σώσω τινὰς ἐξ αὐτῶν

¹⁵εἰ γὰρ ἡ ἀποβολὴ αὐτῶν καταλλαγὴ κόσμου τις ἢ προσληψὶς εἰ μὴ ζῶν ἐκ νεκρῶν

¹⁶εἰ δὲ ἡ ἀπαρχὴ ἁγία καὶ τὸ φυτόμα καὶ εἰ ἡ ρίζα ἁγία καὶ οἱ κλάδοι

¹⁷εἰ δὲ τινες τῶν κλάδων ἐξεκλάσθησαν σὺ δὲ ἀγριελαιὸς ὢν ἐνεκεντρίσθης ἐν αὐτοῖς καὶ συγκοινωνὸς τῆς ριζῆς καὶ τῆς πίστεως τῆς ἐλαίας ἐγένου

¹⁸μὴ κατακαύχῃ τῶν κλάδων εἰ δὲ κατακαύχασαι οὐ σὺ τὴν ρίζαν βασταζεῖς ἀλλ' ἡ ρίζα σε

¹⁹ἔρεις οὖν ἐξεκλάσθησαν οἱ κλάδοι ἵνα ἐγὼ ἐγκεντρίσθω

²⁰καλῶς τὴν ἀπίστια ἐξεκλάσθησαν σὺ δὲ τὴν πίστει ἐστήκας μὴ ὑψηλοφρονεῖς ἀλλὰ φοβοῦ

²¹εἰ γὰρ ὁ θεὸς τῶν κατὰ φύσιν κλάδων οὐκ ἐφείσατο μήπως οὐδὲ σου φείσεται

²²ἴδε οὖν χρηστοτητα καὶ ἀποτομίαν θεοῦ ἐπὶ μὲν τοὺς πέσοντας ἀποτομίαν ἐπὶ δὲ σε χρηστοτητα εἰάν ἐπιμεινῆς τὴν χρηστοτητὴ ἐπεὶ καὶ σὺ ἐκκοπήσῃ

- ²³ και εκείνοι δε εάν μη επιμεινωσιν τη απιστια εγκεντρισθησονται δυνατος γαρ εστιν ο θεος παλιν εγκεντρισαι αυτους
- ²⁴ ει γαρ συ εκ της κατα φυσιν εξεκοπης αγριελαιου και παρα φυσιν ενεκεντρισθης εις καλλιελαιον ποσω μαλλον ουτοι οι κατα φυσιν εγκεντρισθησονται τη ιδια ελαια
- ²⁵ ου γαρ θελω υμας αγνοειν αδελφοι το μυστηριον τουτο ινα μη ητε παρ εαυτοις φρονιμοι οτι πωρωσις απο μερους τω ισραηλ γεγονεν αχρις ου το πληρωμα των εθνων εισελθη
- ²⁶ και ουτως πας ισραηλ σωθησεται καθως γεγραπται ηξει εκ σιων ο ρυομενος και αποστρεψει ασεβειας απο ιακωβ
- ²⁷ και αυτη αυτοις η παρ εμου διαθηκη οταν αφελωμαι τας αμαρτιας αυτων
- ²⁸ κατα μεν το ευαγγελιον εχθροι δι υμας κατα δε την εκλογην αγαπητοι δια τους πατερας
- ²⁹ αμεταμελητα γαρ τα χαρισματα και η κλησις του θεου
- ³⁰ ωσπερ γαρ και υμεις ποτε ηπειθησατε τω θεω νυν δε ηληθητε τη τουτων απειθεια
- ³¹ ουτως και ουτοι νυν ηπειθησαν τω υμετερω ελεει ινα και αυτοι ελεηθωσιν
- ³² συνεκλεισεν γαρ ο θεος τους παντας εις απειθειαν ινα τους παντας ελεηση
- ³³ ω βαθος πλουτου και σοφιας και γνωσεως θεου ως ανεξερευνητα τα κριματα αυτου και ανεξιχνιαστοι αι οδοι αυτου
- ³⁴ τις γαρ εγνω νουν κυριου η τις συμβουλος αυτου εγενετο
- ³⁵ η τις προεδωκεν αυτω και ανταποδοθησεται αυτω
- ³⁶ οτι εξ αυτου και δι αυτου και εις αυτον τα παντα αυτω η δοξα εις τους αιωνας αμην

Chapter 12

¹παρακαλω ουν υμας αδελφοι δια των οικτιρμων του θεου παραστησαι τα σωματα υμων θυσιαν ζωσαν αγιαν ευαρεστον τω θεω την λογικην λατρειαν υμων
²και μη συσχηματιζεσθε τω αιωνι τουτω αλλα μεταμορφουσθε τη ανακαινωσει του νοου υμων εις το δοκιμαζειν υμας τι το θελημα του θεου το αγαθον και ευαρεστον και τελειον
³λεγω γαρ δια της χαριτος της δοθεισης μοι παντι τω οντι εν υμιν μη υπερφρονειν παρ ο δει φρονειν αλλα φρονειν εις το σωφρονειν εκαστω ως ο θεος εμερισεν μετρον πιστεως
⁴καθαπερ γαρ εν ενι σωματι μελη πολλα εχομεν τα δε μελη παντα ου την αυτην εχει πραξιν
⁵ουτως οι πολλοι εν σωμα εσμεν εν χριστω ο δε καθ εις αλληλων μελη
⁶εχοντες δε χαρισματα κατα την χαριν την δοθεισαν ημιν διαφορα ειτε προφητειαν κατα την αναλογιαν της πιστεως
⁷ειτε διακονιαν εν τη διακονια ειτε ο διδασκων εν τη διδασκαλια
⁸ειτε ο παρακαλων εν τη παρακλησει ο μεταδιδουσ εν απλοτητι ο προισταμενος εν σπουδη ο ελεων εν ιλαροτητι
⁹η αγαπη ανυποκριτος αποστυγουντες το πονηρον κολλωμενοι τω αγαθω
¹⁰τη φιλαδελφια εις αλληλους φιλοστοργοι τη τιμη αλληλους προηγουμενοι
¹¹τη σπουδη μη οκνηροι τω πνευματι ζεοντες τω κυριω δουλευοντες
¹²τη ελπιδι χαιροντες τη θλιψει υπομενοντες τη προσευχη προσκαρτερουντες
¹³ταις χρεiais των αγιων κοινωνουντες την φιλοξενιαν διωκοντες
¹⁴ευλογειτε τους διωκοντας υμας ευλογειτε και μη καταρασθε
¹⁵χαιρειν μετα χαιροντων και κλαιειν μετα κλαιοντων
¹⁶το αυτο εις αλληλους φρονουντες μη τα υψηλα φρονουντες αλλα τοις ταπεινοις συναπαγομενοι μη γινεσθε φρονημοι παρ εαυτοις
¹⁷μηδενι κακον αντι κακου αποδιδοντες προνοουμενοι καλα ενωπιον παντων ανθρωπων
¹⁸ει δυνατον το εξ υμων μετα παντων ανθρωπων ειρηνευοντες
¹⁹μη εαυτους εκδικουντες αγαπητοι αλλα δοτε τοπον τη οργη γεγραπται γαρ εμοι εκδικησις εγω ανταποδωσω λεγει κυριος
²⁰εαν ουν πεινα ο εχθρος σου ψωμιζε αυτον εαν διψα ποτιζε αυτον τουτο γαρ ποιων ανθρακας πυρος σωρευσεις επι την κεφαλην αυτου
²¹μη νικω υπο του κακου αλλα νικα εν τω αγαθω το κακον

Chapter 13

¹πασα ψυχη εξουσιαις υπερχουσαις υποτασσεσθω ου γαρ εστιν εξουσια ει μη απο θεου
αι δε ουσαι εξουσιαι υπο του θεου τεταγμεναι εισιν
²ωστε ο αντιτασσομενος τη εξουσια τη του θεου διαταγη ανθεστηκεν οι δε ανθεστηκοτες
εαυτοις κριμα ληφονται
³οι γαρ αρχοντες ουκ εισιν φοβος των αγαθων εργαων αλλα των κακων θελεις δε μη
φοβεισθαι την εξουσιαν το αγαθον ποιει και εξεις επαινον εξ αυτης
⁴θεου γαρ διακονος εστιν σοι εις το αγαθον εαν δε το κακον ποιης φοβου ου γαρ εικη την
μαχαιραν φορει θεου γαρ διακονος εστιν εκδικος εις οργην τω το κακον πρασσοντι
⁵διο αναγκη υποτασσεσθαι ου μονον δια την οργην αλλα και δια την συνειδησιν
⁶δια τουτο γαρ και φορους τελειτε λειτουργοι γαρ θεου εισιν εις αυτο τουτο
προσκαρτερουντες
⁷αποδοτε ουν πασιν τας οφειλας τω τον φορον τον φορον τω το τελος το τελος τω τον
φοβον τον φοβον τω την τιμην την τιμην
⁸μηδενι μηδεν οφειλετε ει μη το αγαπαν αλληλους ο γαρ αγαπων τον ετερον νομον
πεπληρωκεν
⁹το γαρ ου μοιχευσεις ου φονευσεις ου κλεψεις ου ψευδομαρτυρησεις ουκ επιθυμησεις και
ει τις ετερα εντολη εν τουτω τω λογω ανακεφαλαιουται εν τω αγαπησεις τον πλησιον σου
ως εαυτον
¹⁰η αγαπη τω πλησιον κακον ουκ εργαζεται πληρωμα ουν νομου η αγαπη
¹¹και τουτο ειδοτες τον καιρον οτι ωρα ημας ηδη εξ υπνου εγερθησαι νυν γαρ εγγυτερον
ημων η σωτηρια η οτε επιστευσαμεν
¹²η νυξ προεκοψεν η δε ημερα ηγγικεν αποθωμεθα ουν τα εργα του σκοτους και ενδυσωμεθα
τα οπλα του φωτος
¹³ως εν ημερα ευσχημονως περιπατησωμεν μη κωμοις και μεθαις μη κοιταις και ασελγειαις
μη εριδι και ζηλω
¹⁴αλλ ενδυσασθε τον κυριον ιησουν χριστον και της σαρκος προνοιαν μη ποιεισθε εις
επιθυμιας

Chapter 14

- ¹τον δε ασθενουντα τη πιστει προσλαμβανεσθε μη εις διακρισεις διαλογισμων
²ος μεν πιστευει φαγειν παντα ο δε ασθενων λαχανα εσθιει
³ο εσθιων τον μη εσθιοντα μη εξουθενειτω και ο μη εσθιων τον εσθιοντα μη κρινετω ο θεος γαρ αυτον προσελαβετο
⁴συ τις ει ο κρινων αλλοτριον οικητην τω ιδιω κυριω στηκει η πιπτει σταθησεται δε δυνατος γαρ εστιν ο θεος στησαι αυτον
⁵ος μεν κρινει ημεραν παρ ημεραν ος δε κρινει πασαν ημεραν εκαστος εν τω ιδιω νοι πληροφορεισθω
⁶ο φρονων την ημεραν κυριω φρονει και ο μη φρονων την ημεραν κυριω ου φρονει ο εσθιων κυριω εσθιει ευχαριστη γαρ τω θεω και ο μη εσθιων κυριω ουκ εσθιει και ευχαριστη τω θεω
⁷ουδεις γαρ ημων εαυτω ζη και ουδεις εαυτω αποθνησκει
⁸εαν τε γαρ ζωμεν τω κυριω ζωμεν εαν τε αποθνησκωμεν τω κυριω αποθνησκομεν εαν τε ουν ζωμεν εαν τε αποθνησκωμεν του κυριου εσμεν
⁹εις τουτο γαρ χριστος και απεθανεν και ανεστη και ανεζησεν ινα και νεκρων και ζωντων κυριευση
¹⁰συ δε τι κρινεις τον αδελφον σου η και συ τι εξουθενεις τον αδελφον σου παντες γαρ παραστησομεθα τω βηματι του χριστου
¹¹γεγραπται γαρ ζω εγω λεγει κυριος οτι εμοι καμψει παν γονυ και πασα γλωσσα εξομολογησεται τω θεω
¹²αρα ουν εκαστος ημων περι εαυτου λογον δωσει τω θεω
¹³μηκετι ουν αλληλους κρινωμεν αλλα τουτο κρινατε μαλλον το μη τιθεναι προσκομμα τω αδελφω η σκανδαλον
¹⁴οιδα και πεπεισμαι εν κυριω ιησου οτι ουδεν κοινον δι εαυτου ει μη τω λογιζομενω τι κοινον ειναι εκεινω κοινον
¹⁵ει δε δια βρωμα ο αδελφος σου λυπειται ουκετι κατα αγαπην περιπατεις μη τω βρωματι σου εκεινον απολλυε υπερ ου χριστος απεθανεν
¹⁶μη βλασφημεισθω ουν υμων το αγαθον
¹⁷ου γαρ εστιν η βασιλεια του θεου βρωσις και ποσις αλλα δικαιοσυνη και ειρηνη και χαρα εν πνευματι αγιω
¹⁸ο γαρ εν τουτοις δουλευων τω χριστω ευαρεστος τω θεω και δοκιμος τοις ανθρωποις
¹⁹αρα ουν τα της ειρηνης διωκωμεν και τα της οικοδομης της εις αλληλους
²⁰μη ενεκεν βρωματος καταλυε το εργον του θεου παντα μεν καθαρα αλλα κακον τω ανθρωπω τω δια προσκοματος εσθιοντι
²¹καλον το μη φαγειν κρεα μηδε πειν οινον μηδε εν ω ο αδελφος σου προσκοπτει η σκανδαλιζεται η ασθενει

²²συ πιστιν εχεις κατα σαυτον εχε ενωπιον του θεου μακαριος ο μη κρινων εαυτον εν ω δοκιμαζει

²³ο δε διακρινομενος εαν φαγη κατακεκριται οτι ουκ εκ πιστεως παν δε ο ουκ εκ πιστεως αμαρτια εστιν

Chapter 15

¹οφειλομεν δε ημεις οι δυνατοι τα ασθενηματα των αδυνατων βασταζειν και μη εαυτοις αρεσκειν
²εκαστος γαρ ημων τω πλησιον αρεσκετω εις το αγαθον προς οικοδομην
³και γαρ ο χριστος ουχ εαυτω ηρεσεν αλλα καθως γεγραπται οι ονειδισμοι των ονειδιζοντων σε επεπεσον επ εμε
⁴οσα γαρ προεγραφη εις την ημετεραν διδασκαλιαν προεγραφη ινα δια της υπομονης και της παρακλησεως των γραφων την ελπιδα εχωμεν
⁵ο δε θεος της υπομονης και της παρακλησεως δωη υμιν το αυτο φρονειν εν αλληλοις κατα χριστον ιησουν
⁶ινα ομοθυμαδον εν ενι στοματι δοξαζητε τον θεον και πατερα του κυριου ημων ιησου χριστου
⁷διο προσλαμβανεσθε αλληλους καθως και ο χριστος προσελαβετο ημας εις δοξαν θεου
⁸λεγω δε ιησουν χριστον διακονον γεγενησθαι περιτομης υπερ αληθειας θεου εις το βεβαιωσαι τας επαγγελιας των πατερων
⁹τα δε εθνη υπερ ελεους δοξασαι τον θεον καθως γεγραπται δια τουτο εξομολογησομαι σοι εν εθνεσιν και τω ονοματι σου ψαλω
¹⁰και παλιν λεγει ευφρανθητε εθνη μετα του λαου αυτου
¹¹και παλιν αινειτε τον κυριον παντα τα εθνη και επαινεσατε αυτον παντες οι λαοι
¹²και παλιν ησαιας λεγει εσται η ριζα του ιεσσαι και ο ανισταμενος αρχειν εθνων επ αυτω εθνη ελπιουσιν
¹³ο δε θεος της ελπιδος πληρωσαι υμας πασης χαρας και ειρηνης εν τω πιστευειν εις το περισσευειν υμας εν τη ελπιδι εν δυναμει πνευματος αγιου
¹⁴πεπεισμαι δε αδελφοι μου και αυτος εγω περι υμων οτι και αυτοι μεστοι εστε αγαθωσυνης πεπληρωμενοι πασης γνωσεως δυναμενοι και αλληλους νουθετειν
¹⁵τολμηροτερον δε εγραψα υμιν αδελφοι απο μερους ως επαναμιμνησκων υμας δια την χαριν την δοθεισαν μοι υπο του θεου
¹⁶εις το ειναι με λειτουργον ιησου χριστου εις τα εθνη ιερουργουντα το ευαγγελιον του θεου ινα γενηται η προσφορα των εθνων ευπροσδεκτος ηγιασμενη εν πνευματι αγιω
¹⁷εχω ουν καυχησιν εν χριστω ιησου τα προς θεον
¹⁸ου γαρ τολμησω λαλειν τι ων ου κατειργασατο χριστος δι εμου εις υπακοην εθνων λογω και εργω
¹⁹εν δυναμει σημειων και τερατων εν δυναμει πνευματος θεου ωστε με απο ιερουσαλημ και κυκλω μεχρι του ιλλυρικου πεπληρωκεναι το ευαγγελιον του χριστου
²⁰ουτως δε φιλοτιμουμενον ευαγγελιζεσθαι ουχ οπου ωνομασθη χριστος ινα μη επ αλλοτριον θεμελιον οικοδομω
²¹αλλα καθως γεγραπται οισ ουκ ανηγγελη περι αυτου οψονται και οι ουκ ακηκοασιν συνησουσιν

- ²²διο και ενεκοπτομην τα πολλα του ελθειν προς υμας
²³νυνη δε μηκετι τοπον εχων εν τοις κλιμασιν τουτοις επιποθιαν δε εχων του ελθειν προς υμας απο πολλων ετων
²⁴ως εαν πορευωμαι εις την σπανιαν ελευσομαι προς υμας ελπίζω γαρ διαπορευομενος θεασασθαι υμας και υφ υμων προπεμφθηναι εκει εαν υμων πρωτον απο μερους εμπλησθω
²⁵νυνη δε πορευομαι εις ιερουσαλημ διακονων τοις αγιοις
²⁶ευδοκησαν γαρ μακεδονια και αχαια κοινωνιαν τινα ποιησασθαι εις τους πτωχους των αγιων των εν ιερουσαλημ
²⁷ευδοκησαν γαρ και οφειλεται αυτων εισιν ει γαρ τοις πνευματικοις αυτων εκοινωνησαν τα εθνη οφειλουσιν και εν τοις σαρκικοις λειτουργησαι αυτοις
²⁸τουτο ουν επιτελεσας και σφραγισαμενος αυτοις τον καρπον τουτον απελευσομαι δι υμων εις την σπανιαν
²⁹οιδα δε οτι ερχομενος προς υμας εν πληρωματι ευλογιας του ευαγγελιου του χριστου ελευσομαι
³⁰παρακαλω δε υμας αδελφοι δια του κυριου ημων ιησου χριστου και δια της αγαπης του πνευματος συναγωνισασθαι μοι εν ταις προσευχαις υπερ εμου προς τον θεον
³¹ινα ρυσθω απο των απειθουντων εν τη ιουδαια και ινα η διακονια μου η εις ιερουσαλημ ευπροσδεκτος γενηται τοις αγιοις
³²ινα εν χαρα ελθω προς υμας δια θεληματος θεου και συναναπαυσωμαι υμιν
³³ο δε θεος της ειρηνης μετα παντων υμων αμην

Chapter 16

- ¹συνιστημι δε υμιν φοιβην την αδελφην ημων ουσαν διακονον της εκκλησιας της εν κεγχραις
- ²ινα αυτην προσδεξησθε εν κυριω αξιως των αγιων και παραστητε αυτη εν ω αν υμων χρηζη πραγματι και γαρ αυτη προστατις πολλων εγενηθη και αυτου εμου
- ³ασπασασθε πρισκιλλαν και ακυλαν τους συνεργους μου εν χριστω ιησου
- ⁴οιτινες υπερ της ψυχης μου τον εαυτων τραχηλον υπεθηκαν οισ ουκ εγω μονος ευχαριστω αλλα και πασαι αι εκκλησαι των εθνων
- ⁵και την κατ οικον αυτων εκκλησιαν ασπασασθε επαινετον τον αγαπητον μου ος εστιν απαρχη της αχαιας εις χριστον
- ⁶ασπασασθε μαριαμ ητις πολλα εκοπιασεν εις ημας
- ⁷ασπασασθε ανδρονικον και ιουνιαν τους συγγενεις μου και συναιχμαλωτους μου οιτινες εισιν επισημοι εν τοις αποστολοις οι και προ εμου γεγονασιν εν χριστω
- ⁸ασπασασθε αμπλιαν τον αγαπητον μου εν κυριω
- ⁹ασπασασθε ουρβανον τον συνεργον ημων εν χριστω και σταχυν τον αγαπητον μου
- ¹⁰ασπασασθε απελλην τον δοκιμον εν χριστω ασπασασθε τους εκ των αριστοβουλου
- ¹¹ασπασασθε ηροδιωνα τον συγγενη μου ασπασασθε τους εκ των ναρκισσου τους οντας εν κυριω
- ¹²ασπασασθε τρυφαιναν και τρυφωσαν τας κοπιωσας εν κυριω ασπασασθε περσιδα την αγαπητην ητις πολλα εκοπιασεν εν κυριω
- ¹³ασπασασθε ρουφον τον εκλεκτον εν κυριω και την μητερα αυτου και εμου
- ¹⁴ασπασασθε ασυγκριτον φλεγοντα ερμαν πατροβαν ερμην και τους συν αυτοις αδελφους
- ¹⁵ασπασασθε φιλολογον και ιουλιαν νηρεα και την αδελφην αυτου και ολυμπαν και τους συν αυτοις παντας αγιους
- ¹⁶ασπασασθε αλληλους εν φιληματι αγιω ασπαζονται υμας αι εκκλησαι του χριστου
- ¹⁷παρακαλω δε υμας αδελφοι σκοπειν τους τας διχοστασιας και τα σκανδαλα παρα την διδαχην ην υμεις εμαθετε ποιουντας και εκκλινατε απ αυτων
- ¹⁸οι γαρ τοιουτοι τω κυριω ημων ιησου χριστω ου δουλευουσιν αλλα τη εαυτων κοιλια και δια της χρηστολογιας και ευλογιας εξαπατωσιν τας καρδιας των ακακων
- ¹⁹η γαρ υμων υπακοη εις παντας αφικετο χαιρω ουν το εφ υμιν θελω δε υμας σοφους μεν ειναι εις το αγαθον ακεραιους δε εις το κακον
- ²⁰ο δε θεος της ειρηνης συντριψει τον σαταναν υπο τους ποδας υμων εν ταχει η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μεθ υμων αμην
- ²¹ασπαζονται υμας τιμοθεος ο συνεργος μου και λουκιος και ιαπων και σωσιπατρος οι συγγενεις μου
- ²²ασπαζομαι υμας εγω τερτιος ο γραψας την επιστολην εν κυριω
- ²³ασπαζεται υμας γαιος ο ξενος μου και της εκκλησιας ολης ασπαζεται υμας εραστος ο οικονομος της πολεως και κουαρτος ο αδελφος

²⁴η χάρις του κυρίου ημών ιησου χριστου μετα παντων υμων αμην

²⁵τω δε δυναμενω υμας στηριξαι κατα το ευαγγελιον μου και το κηρυγμα ιησου χριστου
κατα αποκαλυψιν μυστηριου χρονοις αιωνιοις σεσιγημενου

²⁶φανερωθεντος δε νυν δια τε γραφων προφητικων κατ επιταγην του αιωνιου θεου εις
υπακοην πιστεως εις παντα τα εθνη γνωρισθεντος

²⁷μονω σοφω θεω δια ιησου χριστου η δοξα εις τους αιωνας αμην

1 Corinthians

Chapter 1

- ¹παυλος κλητος αποστολος ιησου χριστου δια θεληματος θεου και σωσθηνης ο αδελφος
²τη εκκλησια του θεου τη ουση εν κορινθω ηγιασμενοις εν χριστω ιησου κλητοις αγιοις
συν πασιν τοις επικαλουμενοις το ονομα του κυριου ημων ιησου χριστου εν παντι τοπω
αυτων τε και ημων
³χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
⁴ευχαριστω τω θεω μου παντοτε περι υμων επι τη χαριτι του θεου τη δοθειση υμιν εν
χριστω ιησου
⁵οτι εν παντι επλουτισθητε εν αυτω εν παντι λογω και παση γνωσει
⁶καθως το μαρτυριον του χριστου εβεβαιωθη εν υμιν
⁷ωστε υμας μη υστερεισθαι εν μηδενι χαρισματι απεκδεχομενους την αποκαλυψιν του
κυριου ημων ιησου χριστου
⁸ος και βεβαιωσει υμας εως τελους ανεγκλητους εν τη ημερα του κυριου ημων ιησου
χριστου
⁹πιστος ο θεος δι ου εκληθητε εις κοινωνιαν του υιου αυτου ιησου χριστου του κυριου
ημων
¹⁰παρακαλω δε υμας αδελφοι δια του ονοματος του κυριου ημων ιησου χριστου ινα το
αυτο λεγητε παντες και μη η εν υμιν σχισματα ητε δε κατηρτισμενοι εν τω αυτω νοι και
εν τη αυτη γνωμη
¹¹εδηλωθη γαρ μοι περι υμων αδελφοι μου υπο των χλοης οτι εριδες εν υμιν εισιν
¹²λεγω δε τουτο οτι εκαστος υμων λεγει εγω μεν ειμι παυλου εγω δε απολλω εγω δε κηφα
εγω δε χριστου
¹³μεμερισται ο χριστος μη παυλος εσταυρωθη υπερ υμων η εις το ονομα παυλου εβαπτισθητε
¹⁴ευχαριστω τω θεω οτι ουδενα υμων εβαπτισα ει μη κρισπον και γαιον
¹⁵ινα μη τις ειπη οτι εις το εμον ονομα εβαπτισα
¹⁶εβαπτισα δε και τον στεφανα οικον λοιπον ουκ οιδα ει τινα αλλον εβαπτισα
¹⁷ου γαρ απεστειλεν με χριστος βαπτιζειν αλλ ευαγγελιζεσθαι ουκ εν σοφια λογου ινα μη
κενωθη ο σταυρος του χριστου
¹⁸ο λογος γαρ ο του σταυρου τοις μεν απολλυμενοις μωρια εστιν τοις δε σωζομενοις ημιν
δυναμις θεου εστιν
¹⁹γεγραπται γαρ απολω την σοφιαν των σοφων και την συνεσιν των συνετων αθετησω
²⁰που σοφος που γραμματευς που συζητητης του αιωνος τουτου ουχι εμωρανεν ο θεος
την σοφιαν του κοσμου τουτου
²¹επειδη γαρ εν τη σοφια του θεου ουκ εγνω ο κοσμος δια της σοφιας τον θεον ευδοκησεν
ο θεος δια της μωριας του κηρυγματος σωσαι τους πιστευοντας
²²επειδη και ιουδαιοι σημειον αιτουσιν και ελληνες σοφιαν ζητουσιν
²³ημεις δε κηρυσσομεν χριστον εσταυρωμενον ιουδαιοις μεν σκανδαλον ελλησιν δε μωριαν

- ²⁴ αυτοις δε τοις κλητοις ιουδαιοις τε και ελλησιν χριστον θεου δυναμιν και θεου σοφιαν
²⁵ οτι το μωρον του θεου σοφωτερον των ανθρωπων εστιν και το ασθενες του θεου
ισχυροτερον των ανθρωπων εστιν
²⁶ βλεπετε γαρ την κλησιν υμων αδελφοι οτι ου πολλοι σοφοι κατα σαρκα ου πολλοι
δυνατοι ου πολλοι ευγενεις
²⁷ αλλα τα μωρα του κοσμου εξελεξατο ο θεος ινα τους σοφους καταισχυνη και τα ασθενη
του κοσμου εξελεξατο ο θεος ινα καταισχυνη τα ισχυρα
²⁸ και τα αγενη του κοσμου και τα εξουθενημενα εξελεξατο ο θεος και τα μη οντα ινα τα
οντα καταργηση
²⁹ οπως μη καυχησηται πασα σαρξ ενωπιον αυτου
³⁰ εξ αυτου δε υμεις εστε εν χριστω ιησου ος εγενηθη ημιν σοφια απο θεου δικαιοσυνη τε
και αγιασμος και απολυτρωσις
³¹ ινα καθως γεγραπται ο καυχωμενος εν κυριω καυχασθω

Chapter 2

- ¹καγω ελθων προς υμας αδελφοι ηλθον ου καθ υπεροχην λογου η σοφιας καταγγελων υμιν το μαρτυριον του θεου
- ²ου γαρ εκρινα του ειδεναι τι εν υμιν ει μη ιησουν χριστον και τουτον εσταυρωμενον
- ³και εγω εν ασθeneια και εν φοβω και εν τρομω πολλω εγενομην προς υμας
- ⁴και ο λογος μου και το κηρυγμα μου ουκ εν πειθοις ανθρωπινης σοφιας λογοις αλλ εν αποδειξει πνευματος και δυναμεως
- ⁵ινα η πιστις υμων μη η εν σοφια ανθρωπων αλλ εν δυναμει θεου
- ⁶σοφιαν δε λαλουμεν εν τοις τελειοις σοφιαν δε ου του αιωνος τουτου ουδε των αρχοντων του αιωνος τουτου των καταργουμενων
- ⁷αλλα λαλουμεν σοφιαν θεου εν μυστηριω την αποκεκρυμμενην ην προωρισεν ο θεος προ των αιωνων εις δοξαν ημων
- ⁸ην ουδεις των αρχοντων του αιωνος τουτου εγνωκεν ει γαρ εγνωσαν ουκ αν τον κυριον της δοξης εσταυρωσαν
- ⁹αλλα καθως γεγραπται α οφθαλμος ουκ ειδεν και ους ουκ ηκουσεν και επι καρδιαν ανθρωπου ουκ ανεβη α ητοιμασεν ο θεος τοις αγαπωσιν αυτον
- ¹⁰ημιν δε ο θεος απεκαλυψεν δια του πνευματος αυτου το γαρ πνευμα παντα ερευνα και τα βαθη του θεου
- ¹¹τις γαρ οιδεν ανθρωπων τα του ανθρωπου ει μη το πνευμα του ανθρωπου το εν αυτω ουτως και τα του θεου ουδεις οιδεν ει μη το πνευμα του θεου
- ¹²ημεις δε ου το πνευμα του κοσμου ελαβομεν αλλα το πνευμα το εκ του θεου ινα ειδωμεν τα υπο του θεου χαρισθεντα ημιν
- ¹³α και λαλουμεν ουκ εν διδακτοις ανθρωπινης σοφιας λογοις αλλ εν διδακτοις πνευματος αγιου πνευματικοις πνευματικα συγκρινοντες
- ¹⁴ψυχικος δε ανθρωπος ου δεχεται τα του πνευματος του θεου μωρια γαρ αυτω εστιν και ου δυναται γνωσαι οτι πνευματικως ανακρινεται
- ¹⁵ο δε πνευματικος ανακρινει μεν παντα αυτος δε υπ ουδενος ανακρινεται
- ¹⁶τις γαρ εγνω νουν κυριου ος συμβιβασει αυτον ημεις δε νουν χριστου εχομεν

Chapter 3

- ¹και εγω αδελφοι ουκ ηδυνηθην λαλησαι υμιν ως πνευματικοις αλλ ως σαρκικοις ως νηπιοις εν χριστω
- ²γαλα υμας εποτισα και ου βρωμα ουπω γαρ ηδυνασθε αλλ ουτε ετι νυν δυνασθε
- ³ετι γαρ σαρκικοι εστε οπου γαρ εν υμιν ζηλος και ερις και διχοστασιαι ουχι σαρκικοι εστε και κατα ανθρωπον περιπατειτε
- ⁴οταν γαρ λεγη τις εγω μεν ειμι παυλου ετερος δε εγω απολλω ουχι σαρκικοι εστε
- ⁵τις ουν εστιν παυλος τις δε απολλως αλλ η διακονοι δι ων επιστευσατε και εκαστω ως ο κυριος εδωκεν
- ⁶εγω εφυτευσα απολλως εποτισεν αλλ ο θεος ηυξανεν
- ⁷ωστε ουτε ο φυτευων εστιν τι ουτε ο ποτιζων αλλ ο αυξανων θεος
- ⁸ο φυτευων δε και ο ποτιζων εν εισιν εκαστος δε τον ιδιον μισθον ληψεται κατα τον ιδιον κοπον
- ⁹θεου γαρ εσμεν συνεργοι θεου γεωργιον θεου οικοδομη εστε
- ¹⁰κατα την χαριν του θεου την δοθεισαν μοι ως σοφος αρχιτεκτων θεμελιον τεθεικα αλλος δε εποικοδομει εκαστος δε βλεπετω πως εποικοδομει
- ¹¹θεμελιον γαρ αλλον ουδεις δυναται θειναι παρα τον κειμενον ος εστιν ιησους ο χριστος
- ¹²ει δε τις εποικοδομει επι τον θεμελιον τουτον χρυσον αργυρον λιθους τιμιους ξυλα χορτον καλαμην
- ¹³εκαστου το εργον φανερον γενησεται η γαρ ημερα δηλωσει οτι εν πυρι αποκαλυπτεται και εκαστου το εργον οποιον εστιν το πυρ δοκιμασει
- ¹⁴ει τινος το εργον μενει ο επωκοδομησεν μισθον ληψεται
- ¹⁵ει τινος το εργον κατακαησεται ζημιωθησεται αυτος δε σωθησεται ουτως δε ως δια πυρος
- ¹⁶ουκ οιδατε οτι ναος θεου εστε και το πνευμα του θεου οικει εν υμιν
- ¹⁷ει τις τον ναον του θεου φθειρει φθειρει τουτον ο θεος ο γαρ ναος του θεου αγιος εστιν οιτινες εστε υμεις
- ¹⁸μηδεις εαυτον εξαπατατω ει τις δοκει σοφος ειναι εν υμιν εν τω αιωνι τουτω μωρος γενεσθω ινα γενηται σοφος
- ¹⁹η γαρ σοφια του κοσμου τουτου μωρια παρα τω θεω εστιν γεγραπται γαρ ο δρασσομενος τους σοφους εν τη πανουργια αυτων
- ²⁰και παλιν κυριος γινωσκει τους διαλογισμους των σοφων οτι εισιν ματαιοι
- ²¹ωστε μηδεις καυχασθω εν ανθρωποις παντα γαρ υμων εστιν
- ²²ειτε παυλος ειτε απολλως ειτε κηφας ειτε κοσμος ειτε ζωη ειτε θανατος ειτε ενεστωτα ειτε μελλοντα παντα υμων εστιν
- ²³υμεις δε χριστου χριστος δε θεου

Chapter 4

- ¹ουτως ημας λογιζεσθω ανθρωπος ως υπηρετας χριστου και οικονομους μυστηριων θεου
- ²ο δε λοιπον ζητειται εν τοις οικονομοις ινα πιστος τις ευρεθη
- ³εμοι δε εις ελαχιστον εστιν ινα υφ υμων ανακριθω η υπο ανθρωπινης ημερας αλλ ουδε εμαυτον ανακρινω
- ⁴ουδεν γαρ εμαυτω συνοιδα αλλ ουκ εν τουτω δεδικαιωμαι ο δε ανακρινων με κυριος εστιν
- ⁵ωστε μη προ καιρου τι κρινετε εως αν ελθη ο κυριος ος και φωτισει τα κρυπτα του σκοτους και φανερωσει τας βουλας των καρδιων και τοτε ο επαινος γενησεται εκαστω απο του θεου
- ⁶ταυτα δε αδελφοι μετεσχηματισα εις εμαυτον και απολλω δι υμας ινα εν ημιν μαθητε το μη υπερ ο γεγραπται φρονειν ινα μη εις υπερ του ενος φυσιουσθε κατα του ετερου
- ⁷τις γαρ σε διακρινει τι δε χειρις ο ουκ ελαβες ει δε και ελαβες τι καυχασαι ως μη λαβων
- ⁸ηδη κεκορεσμενοι εστε ηδη επλουτησατε χωρις ημων εβασιλευσατε και οφελον γε εβασιλευσατε ινα και ημεις υμιν συμβασιλευσωμεν
- ⁹δοκω γαρ οτι ο θεος ημας τους αποστολους εσχατους απεδειξεν ως επιθανατιους οτι θεατρον εγενηθημεν τω κοσμω και αγγελιοις και ανθρωποις
- ¹⁰ημεις μωροι δια χριστον υμεις δε φρονιμοι εν χριστω ημεις ασθενεις υμεις δε ισχυροι υμεις ενδοξοι ημεις δε ατιμοι
- ¹¹αχρι της αρτι ωρας και πεινωμεν και διψωμεν και γυμνητευομεν και κολαφιζομεθα και αστατουμεν
- ¹²και κοπιωμεν εργαζομενοι ταις ιδιαις χερσιν λοιδορουμενοι ευλογουμεν διωκομενοι ανεχομεθα
- ¹³βλασφημουμενοι παρακαλουμεν ως περικαθαρματα του κοσμου εγενηθημεν παντων περιψημα εως αρτι
- ¹⁴ουκ εντρεπων υμας γραφω ταυτα αλλ ως τεκνα μου αγαπητα νουθετω
- ¹⁵εαν γαρ μυριους παιδαγωγους εχητε εν χριστω αλλ ου πολλους πατερας εν γαρ χριστω ιησου δια του ευαγγελιου εγω υμας εγεννησα
- ¹⁶παρακαλω ουν υμας μιμηται μου γινεσθε
- ¹⁷δια τουτο επεμψα υμιν τιμοθεον ος εστιν τεκνον μου αγαπητον και πιστον εν κυριω ος υμας αναμνησει τας οδους μου τας εν χριστω καθως πανταχου εν παση εκκλησια διδασκω
- ¹⁸ως μη ερχομενου δε μου προς υμας εφυσιωθησαν τινες
- ¹⁹ελευσομαι δε ταχεως προς υμας εαν ο κυριος θεληση και γνωσομαι ου τον λογον των πεφυσιωμενων αλλα την δυναμιν
- ²⁰ου γαρ εν λογω η βασιλεια του θεου αλλ εν δυναμει
- ²¹τι θελετε εν ραβδω ελθω προς υμας η εν αγαπη πνευματι τε πραοτητος

Chapter 5

- ¹ολως ακουεται εν υμιν πορνεια και τοιαυτη πορνεια ητις ουδε εν τοις εθνεσιν ονομαζεται ωστε γυναικα τινα του πατρος εχειν
- ²και υμεις πεφυσιωμενοι εστε και ουχι μαλλον επενθησατε ινα εξαρθη εκ μεσου υμων ο το εργον τουτο ποιησας
- ³εγω μεν γαρ ως απων τω σωματι παρων δε τω πνευματι ηδη κεκρικα ως παρων τον ουτως τουτο κατεργασαμενον
- ⁴εν τω ονοματι του κυριου ημων ιησου χριστου συναχθεντων υμων και του εμου πνευματος συν τη δυναμει του κυριου ημων ιησου χριστου
- ⁵παραδουναι τον τοιουτον τω σατανα εις ολεθρον της σαρκος ινα το πνευμα σωθη εν τη ημερα του κυριου ιησου
- ⁶ου καλον το καυχημα υμων ουκ οιδατε οτι μικρα ζυμη ολον το φυραμα ζυμοι
- ⁷εκκαθαρατε ουν την παλαιαν ζυμην ινα ητε νεον φυραμα καθως εστε αζυμοι και γαρ το πασχα ημων υπερ ημων εθυθη χριστος
- ⁸ωστε εορταζωμεν μη εν ζυμη παλαια μηδε εν ζυμη κακιας και πονηριας αλλ εν αζυμοις ειλικρινειας και αληθειας
- ⁹εγραψα υμιν εν τη επιστολη μη συναναμιγνυσθαι πορνοις
- ¹⁰και ου παντως τοις πορνοις του κοσμου τουτου η τοις πλεονεκταις η αρπαξιν η ειδωλολατραις επει οφειλετε αρα εκ του κοσμου εξελθειν
- ¹¹νυνη δε εγραψα υμιν μη συναναμιγνυσθαι εαν τις αδελφος ονομαζομενος η πορνος η πλεονεκτης η ειδωλολατρης η λοιδορος η μεθυσος η αρπαξ τω τοιουτω μηδε συνεσθιειν
- ¹²τι γαρ μοι και τους εξω κρινειν ουχι τους εσω υμεις κρινετε
- ¹³τους δε εξω ο θεος κρινει και εξαρειτε τον πονηρον εξ υμων αυτων

Chapter 6

- ¹τολμα τις υμων πραγμα εχων προς τον ετερον κρινεσθαι επι των αδικων και ουχι επι των αγιων
- ²ουκ οιδατε οτι οι αγιοι τον κοσμον κρινουσιν και ει εν υμιν κρινεται ο κοσμος αναξιοι εστε κριτηριων ελαχιστων
- ³ουκ οιδατε οτι αγγελους κρινουμεν μητι γε βιωτικα
- ⁴βιωτικα μεν ουν κριτηρια εαν εχητε τους εξουθενημενους εν τη εκκλησια τουτους καθιζετε
- ⁵προς εντροπην υμιν λεγω ουτως ουκ εστιν εν υμιν σοφος ουδε εις ος δυνησεται διακριναι ανα μεσον του αδελφου αυτου
- ⁶αλλα αδελφος μετα αδελφου κρινεται και τουτο επι απιστων
- ⁷ηδη μεν ουν ολως ηττημα εν υμιν εστιν οτι κριματα εχετε μεθ εαυτων διατι ουχι μαλλον αδικεισθε διατι ουχι μαλλον αποστερεισθε
- ⁸αλλα υμεις αδικειτε και αποστερειτε και ταυτα αδελφους
- ⁹η ουκ οιδατε οτι αδικοι βασιλειαν θεου ου κληρονομησουσιν μη πλανασθε ουτε πορνοι ουτε ειδωλολατραι ουτε μοιχοι ουτε μαλακοι ουτε αρσενοκοιται
- ¹⁰ουτε κλεπται ουτε πλεονεκται ουτε μεθυσσοι ου λοιδοροι ουχ αρπαγες βασιλειαν θεου ου κληρονομησουσιν
- ¹¹και ταυτα τινες ητε αλλα απελουσασθε αλλα ηγιασθητε αλλ εδικαιωθητε εν τω ονοματι του κυριου ιησου και εν τω πνευματι του θεου ημων
- ¹²παντα μοι εξεστιν αλλ ου παντα συμφερει παντα μοι εξεστιν αλλ ουκ εγω εξουσιασθησομαι υπο τινος
- ¹³τα βρωματα τη κοιλια και η κοιλια τοις βρωμασιν ο δε θεος και ταυτην και ταυτα καταργησει το δε σωμα ου τη πορνεια αλλα τω κυριω και ο κυριος τω σωματι
- ¹⁴ο δε θεος και τον κυριον ηγειρεν και ημας εξεγερει δια της δυναμεως αυτου
- ¹⁵ουκ οιδατε οτι τα σωματα υμων μελη χριστου εστιν αρας ουν τα μελη του χριστου ποιησω πορνης μελη μη γενοιτο
- ¹⁶η ουκ οιδατε οτι ο κολλωμενος τη πορνη εν σωμα εστιν εσονται γαρ φησιν οι δυο εις σαρκα μιαν
- ¹⁷ο δε κολλωμενος τω κυριω εν πνευμα εστιν
- ¹⁸φευγετε την πορνειαν παν αμαρτημα ο εαν ποιηση ανθρωπος εκτος του σωματος εστιν ο δε πορνευων εις το ιδιον σωμα αμαρτανει
- ¹⁹η ουκ οιδατε οτι το σωμα υμων ναος του εν υμιν αγιου πνευματος εστιν ου εχετε απο θεου και ουκ εστε εαυτων
- ²⁰ηγορασθητε γαρ τιμης δοξασατε δη τον θεον εν τω σωματι υμων και εν τω πνευματι υμων ατινα εστιν του θεου

Chapter 7

- ¹περι δε ων εγραψατε μοι καλον ανθρωπω γυναικος μη απτεσθαι
²δια δε τας πορνειας εκαστος την εαυτου γυναικα εχετω και εκαστη τον ιδιον ανδρα εχετω
³τη γυναικι ο ανηρ την οφειλομενην ευνοιαν αποδιδοτω ομοιως δε και η γυνη τω ανδρι
⁴η γυνη του ιδιου σωματος ουκ εξουσιαζει αλλ ο ανηρ ομοιως δε και ο ανηρ του ιδιου σωματος ουκ εξουσιαζει αλλ η γυνη
⁵μη αποστερειτε αλληλους ει μη τι αν εκ συμφωνου προς καιρον ινα σχολαζητε τη νηστεια και τη προσευχη και παλιν επι το αυτο συνερχησθε ινα μη πειραζη υμας ο σατανας δια την ακρασιαν υμων
⁶τουτο δε λεγω κατα συγγνωμην ου κατ επιταγην
⁷θελω γαρ παντας ανθρωπους ειναι ως και εμαυτον αλλ εκαστος ιδιον χαρισμα εχει εκ θεου ος μεν ουτως ος δε ουτως
⁸λεγω δε τοις αγαμοις και ταις χηραις καλον αυτοις εστιν εαν μεινωσιν ως καγω
⁹ει δε ουκ εγκρατευονται γαμησατωσαν κρεισσον γαρ εστιν γαμησαι η πυρουσθαι
¹⁰τοις δε γεγαμηκοσιν παραγγελλω ουκ εγω αλλ ο κυριος γυναικα απο ανδρος μη χωρισθηναι
¹¹εαν δε και χωρισθη μενετω αγαμος η τω ανδρι καταλλαγητω και ανδρα γυναικα μη αφιεναι
¹²τοις δε λοιποις εγω λεγω ουχ ο κυριος ει τις αδελφος γυναικα εχει απιστον και αυτη συνευδοκει οικειν μετ αυτου μη αφιετω αυτην
¹³και γυνη ητις εχει ανδρα απιστον και αυτος συνευδοκει οικειν μετ αυτης μη αφιετω αυτον
¹⁴ηγιασται γαρ ο ανηρ ο απιστος εν τη γυναικι και ηγιασται η γυνη η απιστος εν τω ανδρι επει αρα τα τεκνα υμων ακαθαρτα εστιν νυν δε αγια εστιν
¹⁵ει δε ο απιστος χωριζεται χωριζεσθω ου δεδουλωται ο αδελφος η η αδελφη εν τοις τοιουτοις εν δε ειρηνη κεκληκεν ημας ο θεος
¹⁶τι γαρ οιδας γυναι ει τον ανδρα σωσεις η τι οιδας ανερ ει την γυναικα σωσεις
¹⁷ει μη εκαστω ως εμερισεν ο θεος εκαστον ως κεκληκεν ο κυριος ουτως περιπατειτω και ουτως εν ταις εκκλησιαις πασαις διατασσομαι
¹⁸περιτεμημενος τις εκληθη μη επισπασθω εν ακροβυστια τις εκληθη μη περιτεμνεσθω
¹⁹η περιτομη ουδεν εστιν και η ακροβυστια ουδεν εστιν αλλα τηρησις εντολων θεου
²⁰εκαστος εν τη κλησει η εκληθη εν ταυτη μενετω
²¹δουλος εκληθης μη σοι μελετω αλλ ει και δυνασαι ελευθερος γενεσθαι μαλλον χρησαι
²²ο γαρ εν κυριω κληθεις δουλος απελευθερος κυριου εστιν ομοιως και ο ελευθερος κληθεις δουλος εστιν χριστου
²³τιμης ηγορασθητε μη γινεσθε δουλοι ανθρωπων
²⁴εκαστος εν ω εκληθη αδελφοι εν τουτω μενετω παρα τω θεω

- ²⁵περι δε των παρθενων επιταγην κυριου ουκ εχω γνωμην δε διδωμι ως ηλημενος υπο κυριου πιστος ειναι
- ²⁶νομιζω ουν τουτο καλον υπαρχειν δια την ενεστωσαν αναγκην οτι καλον ανθρωπω το ουτως ειναι
- ²⁷δεδεσαι γυναικι μη ζητει λυσιν λελυσαι απο γυναικος μη ζητει γυναικα
- ²⁸εαν δε και γημης ουχ ημαρτες και εαν γημη η παρθενος ουχ ημαρτεν θλιψιν δε τη σαρκι εξουσιν οι τοιουτοι εγω δε υμων φειδομαι
- ²⁹τουτο δε φημι αδελφοι οτι ο καιρος συνεσταλμενος το λοιπον εστιν ινα και οι εχοντες γυναικας ως μη εχοντες ωσιν
- ³⁰και οι κλαιοντες ως μη κλαιοντες και οι χαιροντες ως μη χαιροντες και οι αγοραζοντες ως μη κατεχοντες
- ³¹και οι χρωμενοι τω κοσμω τουτω ως μη καταχρωμενοι παραγει γαρ το σχημα του κοσμου τουτου
- ³²θελω δε υμας αμεριμνους ειναι ο αγαμος μεριμνα τα του κυριου πως αρεσει τω κυριω
- ³³ο δε γαμησας μεριμνα τα του κοσμου πως αρεσει τη γυναικι
- ³⁴μεμερισται η γυνη και η παρθενος η αγαμος μεριμνα τα του κυριου ινα η αγια και σωματι και πνευματι η δε γαμησασα μεριμνα τα του κοσμου πως αρεσει τω ανδρι
- ³⁵τουτο δε προς το υμων αυτων συμφερον λεγω ουχ ινα βροχον υμιν επιβαλω αλλα προς το ευσημον και ευπροσεδρον τω κυριω απερισπαστως
- ³⁶ει δε τις ασχημονειν επι την παρθενον αυτου νομιζει εαν η υπερακμος και ουτως οφειλει γινεσθαι ο θελει ποιειτω ουχ αμαρτανει γαμειτωσαν
- ³⁷ος δε εστηκεν εδραιος εν τη καρδια μη εχων αναγκην εξουσιαν δε εχει περι του ιδιου θεληματος και τουτο κεκρικεν εν τη καρδια αυτου του τηρειν την εαυτου παρθενον καλως ποιει
- ³⁸ωστε και ο εκγαμιζων καλως ποιει ο δε μη εκγαμιζων κρεισσον ποιει
- ³⁹γυνη δεδεται νομω εφ οσον χρονον ζη ο ανηρ αυτης εαν δε κοιμηθη ο ανηρ αυτης ελευθερα εστιν ω θελει γαμηθηναι μονον εν κυριω
- ⁴⁰μακαριωτερα δε εστιν εαν ουτως μεινη κατα την εμην γνωμην δοκω δε καγω πνευμα θεου εχειν

Chapter 8

¹περι δε των ειδωλοθυτων οίδαμεν οτι παντες γνωσιν εχομεν η γνωσις φυσιοι η δε αγαπη οικοδομει
²ει δε τις δοκει ειδεναι τι ουδεπω ουδεν εγνωκεν καθως δει γνωσαι
³ει δε τις αγαπα τον θεον ουτος εγνωσται υπ αυτου
⁴περι της βρωσεως ουν των ειδωλοθυτων οίδαμεν οτι ουδεν ειδωλον εν κοσμω και οτι ουδεις θεος ετερος ει μη εις
⁵και γαρ ειπερ εισιν λεγομενοι θεοι ειτε εν ουρανω ειτε επι της γης ωσπερ εισιν θεοι πολλοι και κυριοι πολλοι
⁶αλλ ημιν εις θεος ο πατηρ εξ ου τα παντα και ημεις εις αυτον και εις κυριος ιησους χριστος δι ου τα παντα και ημεις δι αυτου
⁷αλλ ουκ εν πασιν η γνωσις τινες δε τη συνειδησει του ειδωλου εως αρτι ως ειδωλοθυτον εσθιουσιν και η συνειδησις αυτων ασθηνησ ουσα μολυνεται
⁸βρωμα δε ημας ου παριστησιν τω θεω ουτε γαρ εαν φαγωμεν περισσευομεν ουτε εαν μη φαγωμεν υστερουμεθα
⁹βλεπετε δε μηπως η εξουσια υμων αυτη προσκομμα γενηται τοις ασθηνουσιν
¹⁰εαν γαρ τις ιδη σε τον εχοντα γνωσιν εν ειδωλειω κατακειμενον ουχι η συνειδησις αυτου ασθενους οντος οικοδομηθησεται εις το τα ειδωλοθυτα εσθιειν
¹¹και απολειται ο ασθενων αδελφος επι τη ση γνωσει δι ον χριστος απεθανεν
¹²ουτως δε αμαρτανοντες εις τους αδελφους και τυπτοντες αυτων την συνειδησιν ασθηνουσαν εις χριστον αμαρτανετε
¹³διοπερ ει βρωμα σκανδαλιζει τον αδελφον μου ου μη φαγω κρεα εις τον αιωνα ινα μη τον αδελφον μου σκανδαλισω

Chapter 9

- ¹ουκ ειμι αποστολος ουκ ειμι ελευθερος ουχι ιησουν χριστον τον κυριον ημων εωρακα ου το εργον μου υμεις εστε εν κυριω
- ²ει αλλοις ουκ ειμι αποστολος αλλα γε υμιν ειμι η γαρ σφραγισ της εμης αποστολης υμεις εστε εν κυριω
- ³η εμη απολογια τοις εμε ανακρινουσιν αυτη εστιν
- ⁴μη ουκ εχομεν εξουσιαν φαγειν και πιειν
- ⁵μη ουκ εχομεν εξουσιαν αδελφην γυναικα περιαγειν ως και οι λοιποι αποστολοι και οι αδελφοι του κυριου και κηφας
- ⁶η μονος εγω και βαρναβας ουκ εχομεν εξουσιαν του μη εργαζεσθαι
- ⁷τις στρατευεται ιδιοις οψωνιοις ποτε τις φυτευει αμπελωνα και εκ του καρπου αυτου ουκ εσθιει η τις ποιμινει ποιμνην και εκ του γαλακτος της ποιμνης ουκ εσθιει
- ⁸μη κατα ανθρωπον ταυτα λαλω η ουχι και ο νομος ταυτα λεγει
- ⁹εν γαρ τω μωσεως νομω γεγραπται ου φιμωσεις βουν αλωωντα μη των βοων μελει τω θεω
- ¹⁰η δι ημας παντως λεγει δι ημας γαρ εγραφη οτι επ ελπιδι οφειλει ο αροτριων αροτριαν και ο αλωων της ελπιδος αυτου μετεχειν επ ελπιδι
- ¹¹ει ημεις υμιν τα πνευματικα εσπειραμεν μεγα ει ημεις υμων τα σαρκικα θερισομεν
- ¹²ει αλλοι της εξουσιας υμων μετεχουσιν ου μαλλον ημεις αλλ ουκ εχρησαμεθα τη εξουσια ταυτη αλλα παντα στεγομεν ινα μη εγκοπην τινα δωμεν τω ευαγγελιω του χριστου
- ¹³ουκ οιδατε οτι οι τα ιερα εργαζομενοι εκ του ιερου εσθιουσιν οι τω θυσιαστηριω προσεδρευοντες τω θυσιαστηριω συμεριζονται
- ¹⁴ουτως και ο κυριος διεταξεν τοις το ευαγγελιον καταγγελουσιν εκ του ευαγγελιου ζην
- ¹⁵εγω δε ουδενι εχρησαμην τουτων ουκ εγραψα δε ταυτα ινα ουτως γενηται εν εμοι καλον γαρ μοι μαλλον αποθανειν η το καυχημα μου ινα τις κενωση
- ¹⁶εαν γαρ ευαγγελιζωμαι ουκ εστιν μοι καυχημα αναγκη γαρ μοι επικειται ουαι δε μοι εστιν εαν μη ευαγγελιζωμαι
- ¹⁷ει γαρ εκων τουτο πρασσω μισθον εχω ει δε ακων οικονομιαν πεπιστευμαι
- ¹⁸τις ουν μοι εστιν ο μισθος ινα ευαγγελιζομενος αδαπανον θησω το ευαγγελιον του χριστου εις το μη καταχρησασθαι τη εξουσια μου εν τω ευαγγελιω
- ¹⁹ελευθερος γαρ ων εκ παντων πασιν εμαυτον εδουλωσα ινα τους πλειονας κερδησω
- ²⁰και εγενομην τοις ιουδαιοις ως ιουδαιος ινα ιουδαιους κερδησω τοις υπο νομον ως υπο νομον ινα τους υπο νομον κερδησω
- ²¹τοις ανομοις ως ανομος μη ων ανομος θεω αλλ εννομος χριστω ινα κερδησω ανομους
- ²²εγενομην τοις ασθενεσιν ως ασθενης ινα τους ασθενεις κερδησω τοις πασιν γεγονα τα παντα ινα παντως τινας σωσω
- ²³τουτο δε ποιω δια το ευαγγελιον ινα συγκοινωνος αυτου γενωμαι

²⁴ ουκ οιδατε οτι οι εν σταδιω τρεχοντες παντες μεν τρεχουσιν εις δε λαμβανει το βραβειον
ουτως τρεχετε ινα καταλαβητε

²⁵ πας δε ο αγωνιζομενος παντα εγκρατευεται εκεινοι μεν ουν ινα φθαρτον στεφανον
λαβωσιν ημεις δε αφθαρτον

²⁶ εγω τοιουν ουτως τρεχω ως ουκ αδηλως ουτως πυκτευω ως ουκ αερα δερων

²⁷ αλλ υπωπιαζω μου το σωμα και δουλαγωγω μηπως αλλοις κηρυξας αυτος αδοκιμος
γενωμαι

Chapter 10

- ¹ου θελω δε υμας αγνοειν αδελφοι οτι οι πατερες ημων παντες υπο την νεφελην ησαν και παντες δια της θαλασσης διηλθον
- ²και παντες εις τον μωσην εβαπτισαντο εν τη νεφελη και εν τη θαλασση
- ³και παντες το αυτο βρωμα πνευματικον εφαγον
- ⁴και παντες το αυτο πομα πνευματικον επιον επινον γαρ εκ πνευματικης ακολουθουσης πετρας η δε πετρα ην ο χριστος
- ⁵αλλ ουκ εν τοις πλειοσιν αυτων ευδοκησεν ο θεος κατεστρωθησαν γαρ εν τη ερημω
- ⁶ταυτα δε τυποι ημων εγενηθησαν εις το μη ειναι ημας επιθυμητας κακων καθως κακεινοι επεθυμησαν
- ⁷μηδε ειδωλολατραι γινεσθε καθως τινες αυτων ως γεγραπται εκαθισεν ο λαος φαγειν και πιειν και ανεστησαν παιζειν
- ⁸μηδε πορνευωμεν καθως τινες αυτων επορνευσαν και επεσον εν μια ημερα εικοσιτριες χιλιαδες
- ⁹μηδε εκπειραζωμεν τον χριστον καθως και τινες αυτων επειρασαν και υπο των οφειων απωλοντο
- ¹⁰μηδε γογγυζετε καθως και τινες αυτων εγογγυσαν και απωλοντο υπο του ολοθρευτου
- ¹¹ταυτα δε παντα τυποι συνεβαινον εκεινοις εγραφη δε προς νουθεσιαν ημων εις ους τα τελη των αιωνων κατηντησεν
- ¹²ωστε ο δοκων εσταναι βλεπετω μη πεση
- ¹³πειρασμος υμας ουκ ειληφεν ει μη ανθρωπιнос πιστος δε ο θεος ος ουκ εασει υμας πειρασθηναι υπερ ο δυνασθε αλλα ποιησει συν τω πειρασμω και την εκβασιν του δυνασθαι υμας υπενεγκειν
- ¹⁴διοπερ αγαπητοι μου φευγετε απο της ειδωλολατρειας
- ¹⁵ως φρονιμοις λεγω κρινατε υμεις ο φημι
- ¹⁶το ποτηριον της ευλογιας ο ευλογουμεν ουχι κοινωνια του αιματος του χριστου εστιν τον αρτον ον κλωμεν ουχι κοινωνια του σωματος του χριστου εστιν
- ¹⁷οτι εις αρτος εν σωμα οι πολλοι εσμεν οι γαρ παντες εκ του ενος αρτου μετεχομεν
- ¹⁸βλεπετε τον ισραηλ κατα σαρκα ουχι οι εσθιοντες τας θυσιας κοινωνοι του θυσιαστηριου εισιν
- ¹⁹τι ουν φημι οτι ειδωλον τι εστιν η οτι ειδωλοθυτον τι εστιν
- ²⁰αλλ οτι α θυει τα εθνη δαιμονιοις θυει και ου θεω ου θελω δε υμας κοινωνους των δαιμονιων γινεσθαι
- ²¹ου δυνασθε ποτηριον κυριου πινειν και ποτηριον δαιμονιων ου δυνασθε τραπεζης κυριου μετεχειν και τραπεζης δαιμονιων
- ²²η παραζηλουμεν τον κυριον μη ισχυροτεροι αυτου εσμεν
- ²³παντα μοι εξεστιν αλλ ου παντα συμφερει παντα μοι εξεστιν αλλ ου παντα οικοδομει

²⁴μηδεις το εαυτου ζητειτω αλλα το του ετερου εκαστος
²⁵παν το εν μακελλω πωλουμενον εσθιετε μηδεν ανακρινοντες δια την συνειδησιν
²⁶του γαρ κυριου η γη και το πληρωμα αυτης
²⁷ει δε τις καλει υμας των απιστων και θελετε πορευεσθαι παν το παρατιθεμενον υμιν
εσθιετε μηδεν ανακρινοντες δια την συνειδησιν
²⁸εαν δε τις υμιν ειπη τουτο ειδωλοθυτον εστιν μη εσθιετε δι εκεινον τον μηνυσαντα και
την συνειδησιν του γαρ κυριου η γη και το πληρωμα αυτης
²⁹συνειδησιν δε λεγω ουχι την εαυτου αλλα την του ετερου ινα τι γαρ η ελευθερια μου
κρινεται υπο αλλης συνειδησεως
³⁰ει δε εγω χαριτι μετεχω τι βλασφημουμαι υπερ ου εγω ευχαριστω
³¹ειτε ουν εσθιετε ειτε πινετε ειτε τι ποιειτε παντα εις δοξαν θεου ποιειτε
³²απροσκοποι γινεσθε και ιουδαιοις και ελλησιν και τη εκκλησια του θεου
³³καθως καγω παντα πασιν αρεσκω μη ζητων το εμαυτου συμφερον αλλα το των πολλων
ινα σωθωσιν

Chapter 11

- ¹μιμηται μου γινεσθε καθως καγω χριστου
²επαινω δε υμας αδελφοι οτι παντα μου μεμνησθε και καθως παρεδωκα υμιν τας παραδοσεις κατεχετε
³θελω δε υμας ειδεναι οτι παντος ανδρος η κεφαλη ο χριστος εστιν κεφαλη δε γυναικος ο ανηρ κεφαλη δε χριστου ο θεος
⁴πας ανηρ προσευχομενος η προφητευων κατα κεφαλης εχων καταισχυνει την κεφαλην αυτου
⁵πασα δε γυνη προσευχομενη η προφητευουσα ακατακαλυπτω τη κεφαλη καταισχυνει την κεφαλην εαυτης εν γαρ εστιν και το αυτο τη εξυρημενη
⁶ει γαρ ου κατακαλυπτεται γυνη και κειρασθω ει δε αισχρον γυναικι το κειρασθαι η ξυρασθαι κατακαλυπτεσθω
⁷ανηρ μεν γαρ ουκ οφειλει κατακαλυπτεσθαι την κεφαλην εικων και δοξα θεου υπαρχων γυνη δε δοξα ανδρος εστιν
⁸ου γαρ εστιν ανηρ εκ γυναικος αλλα γυνη εξ ανδρος
⁹και γαρ ουκ εκτισθη ανηρ δια την γυναικα αλλα γυνη δια τον ανδρα
¹⁰δια τουτο οφειλει η γυνη εξουσιαν εχειν επι της κεφαλης δια τους αγγελους
¹¹πλην ουτε ανηρ χωρις γυναικος ουτε γυνη χωρις ανδρος εν κυριω
¹²ωσπερ γαρ η γυνη εκ του ανδρος ουτως και ο ανηρ δια της γυναικος τα δε παντα εκ του θεου
¹³εν υμιν αυτοις κρινατε πρεπον εστιν γυναικα ακατακαλυπτων τω θεω προσευχεσθαι
¹⁴η ουδε αυτη η φυσικη διδασκει υμας οτι ανηρ μεν εαν κομα ατιμια αυτω εστιν
¹⁵γυνη δε εαν κομα δοξα αυτη εστιν οτι η κομη αντι περιβολαιου δεδοται αυτη
¹⁶ει δε τις δοκει φιλονεικος ειναι ημεις τοιαυτην συνηθειαν ουκ εχομεν ουδε αι εκκλησιαι του θεου
¹⁷τουτο δε παραγγελλων ουκ επαινω οτι ουκ εις το κρειττον αλλ εις το ηττον συνερχεσθε
¹⁸πρωτον μεν γαρ συνερχομενων υμων εν τη εκκλησια ακουω σχισματα εν υμιν υπαρχειν και μερος τι πιστευω
¹⁹δει γαρ και αιρεσεις εν υμιν ειναι ινα οι δοκιμοι φανεροι γενωνται εν υμιν
²⁰συνερχομενων ουν υμων επι το αυτο ουκ εστιν κυριακον δειπνον φαγειν
²¹εκαστος γαρ το ιδιον δειπνον προλαμβανει εν τω φαγειν και ος μεν πεινα ος δε μεθυει
²²μη γαρ οικιας ουκ εχετε εις το εσθιειν και πινειν η της εκκλησιας του θεου καταφρονειτε και καταισχυνετε τους μη εχοντας τι υμιν ειπω επαινεσω υμας εν τουτω ουκ επαινω
²³εγω γαρ παρελαβον απο του κυριου ο και παρεδωκα υμιν οτι ο κυριος ιησους εν τη νυκτι η παρεδιδοτο ελαβεν αρτον
²⁴και ευχαριστησας εκλασεν και ειπεν λαβετε φαγετε τουτο μου εστιν το σωμα το υπερ υμων κλωμενον τουτο ποιειτε εις την εμην αναμνησιν

- ²⁵ωσαυτως και το ποτηριον μετα το δειπνησαι λεγων τουτο το ποτηριον η καινη διαθηκη
εστιν εν τω εμω αιματι τουτο ποιειτε οσακις αν πινητε εις την εμην αναμνησιν
- ²⁶οσακις γαρ αν εσθητε τον αρτον τουτον και το ποτηριον τουτο πινητε τον θανατον του
κυριου καταγγελλετε αχρις ου αν ελθη
- ²⁷ωστε ος αν εσθη τον αρτον τουτον η πινη το ποτηριον του κυριου αναξιως ενοχος εσται
του σωματος και αιματος του κυριου
- ²⁸δοκιμαζετω δε ανθρωπος εαυτον και ουτως εκ του αρτου εσθιετω και εκ του ποτηριου
πινετω
- ²⁹ο γαρ εσθιων και πινων αναξιως κριμα εαυτω εσθiei και πινει μη διακρινων το σωμα
του κυριου
- ³⁰δια τουτο εν υμιν πολλοι ασθενεις και αρρωστοι και κοιμωνται ικανοι
- ³¹ει γαρ εαυτους διεκρινομεν ουκ αν εκρινομεθα
- ³²κρινομενοι δε υπο κυριου παιδευομεθα ινα μη συν τω κοσμω κατακριθωμεν
- ³³ωστε αδελφοι μου συνερχομενοι εις το φαγειν αλληλους εκδεχεσθε
- ³⁴ει δε τις πεινα εν οικω εσθιετω ινα μη εις κριμα συνερχησθε τα δε λοιπα ως αν ελθω
διαταξομαι

Chapter 12

- ¹περι δε των πνευματικων αδελφοι ου θελω υμας αγνοειν
²οιδατε οτι εθνη ητε προς τα ειδωλα τα αφωνα ως αν ηγεσθε απαγομενοι
³διο γνωριζω υμιν οτι ουδεις εν πνευματι θεου λαλων λεγει αναθεμα ιησουν και ουδεις δυναται ειπειν κυριον ιησουν ει μη εν πνευματι αγιω
⁴διαιρεσεις δε χαρισματων εισιν το δε αυτο πνευμα
⁵και διαιρεσεις διακονιων εισιν και ο αυτος κυριος
⁶και διαιρεσεις ενεργηματων εισιν ο δε αυτος εστιν θεος ο ενεργων τα παντα εν πασιν
⁷εκαστω δε διδοται η φανερωσις του πνευματος προς το συμφερον
⁸ω μεν γαρ δια του πνευματος διδοται λογος σοφιας αλλω δε λογος γνωσεως κατα το αυτο πνευμα
⁹ετερω δε πιστις εν τω αυτω πνευματι αλλω δε χαρισματα ιαματων εν τω αυτω πνευματι
¹⁰αλλω δε ενεργηματα δυναμεων αλλω δε προφητεια αλλω δε διακρισεις πνευματων ετερω δε γενη γλωσσων αλλω δε ερμηνεια γλωσσων
¹¹παντα δε ταυτα ενεργει το εν και το αυτο πνευμα διαιρουν ιδια εκαστω καθως βουλεται
¹²καθαπερ γαρ το σωμα εν εστιν και μελη εχει πολλα παντα δε τα μελη του σωματος του ενος πολλα οντα εν εστιν σωμα ουτως και ο χριστος
¹³και γαρ εν ενι πνευματι ημεις παντες εις εν σωμα εβαπτισθημεν ειτε ιουδαιοι ειτε ελληνες ειτε δουλοι ειτε ελευθεροι και παντες εις εν πνευμα εποτισθημεν
¹⁴και γαρ το σωμα ουκ εστιν εν μελος αλλα πολλα
¹⁵εαν ειπη ο πους οτι ουκ ειμι χειρ ουκ ειμι εκ του σωματος ου παρα τουτο ουκ εστιν εκ του σωματος
¹⁶και εαν ειπη το ους οτι ουκ ειμι οφθαλμος ουκ ειμι εκ του σωματος ου παρα τουτο ουκ εστιν εκ του σωματος
¹⁷ει ολον το σωμα οφθαλμος που η ακοη ει ολον ακοη που η οσφησις
¹⁸νυνι δε ο θεος εθετο τα μελη εν εκαστον αυτων εν τω σωματι καθως ηθελησεν
¹⁹ει δε ην τα παντα εν μελος που το σωμα
²⁰νυν δε πολλα μεν μελη εν δε σωμα
²¹ου δυναται δε οφθαλμος ειπειν τη χειρι χρεια σου ουκ εχω η παλιν η κεφαλη τοις ποσιν χρεια υμων ουκ εχω
²²αλλα πολλω μαλλον τα δοκουντα μελη του σωματος ασθενεστερα υπαρχειν αναγκαια εστιν
²³και α δοκουμεν ατιμοτερα ειναι του σωματος τουτοις τιμην περισσοτεραν περιτιθεμεν και τα ασχημονα ημων ευσημοσυνην περισσοτεραν εχει
²⁴τα δε ευσημονα ημων ου χρεια εχει αλλ ο θεος συνεκερασεν το σωμα τω υστερουντι περισσοτεραν δους τιμην
²⁵ινα μη η σχισμα εν τω σωματι αλλα το αυτο υπερ αλληλων μεριμνωσιν τα μελη

²⁶ και ειτε πασχει εν μελος συμπασχει παντα τα μελη ειτε δοξαζεται εν μελος συγχειρει παντα τα μελη

²⁷ υμεις δε εστε σωμα χριστου και μελη εκ μερους

²⁸ και ους μεν εθετο ο θεος εν τη εκκλησια πρωτον αποστολους δευτερον προφητας τριτον διδασκαλους επειτα δυναμεις ειτα χαρισματα ιαματων αντιληψεις κυβερνησεις γενη γλωσσων

²⁹ μη παντες αποστολοι μη παντες προφηται μη παντες διδασκαλοι μη παντες δυναμεις

³⁰ μη παντες χαρισματα εχουσιν ιαματων μη παντες γλωσσαις λαλουσιν μη παντες διερμηνεουσιν

³¹ ζηλουτε δε τα χαρισματα τα κρειττονα και επι καθ υπερβολην οδον υμιν δεικνυμι

Chapter 13

- ¹εαν ταις γλωσσαις των ανθρωπων λαλω και των αγγελων αγαπην δε μη εχω γεγονα χαλκος ηχων η κυμβαλον αλαλαζον
²και εαν εχω προφητειαν και ειδω τα μυστηρια παντα και πασαν την γνωσιν και εαν εχω πασαν την πιστιν ωστε ορη μεθιστανειν αγαπην δε μη εχω ουδεν ειμι
³και εαν ψωμισω παντα τα υπαρχοντα μου και εαν παραδω το σωμα μου ινα καυθησωμαι αγαπην δε μη εχω ουδεν ωφελουμαι
⁴η αγαπη μακροθυμει χρηστευεται η αγαπη ου ζηλοι η αγαπη ου περπερευεται ου φυσιουται
⁵ουκ ασχημονει ου ζητει τα εαυτης ου παροξυνεται ου λογιζεται το κακον
⁶ου χαιρει επι τη αδικια συγχαιρει δε τη αληθεια
⁷παντα στεγει παντα πιστευει παντα ελπίζει παντα υπομενει
⁸η αγαπη ουδεποτε εκπιπτει ειτε δε προφητεια καταργηθησονται ειτε γλωσσαι παυσονται ειτε γνωσις καταργηθησεται
⁹εκ μερους γαρ γινωσκομεν και εκ μερους προφητευομεν
¹⁰οταν δε ελθη το τελειον τοτε το εκ μερους καταργηθησεται
¹¹οτε ημην νηπιος ως νηπιος ελαλουν ως νηπιος εφρονουν ως νηπιος ελογιζομην οτε δε γεγονα ανηρ κατηγορηκα τα του νηπιου
¹²βλεπομεν γαρ αρτι δι εσοπτρου εν αινιγματι τοτε δε προσωπον προς προσωπον αρτι γινωσκω εκ μερους τοτε δε επιγνωσομαι καθως και επεγνωσθην
¹³νυνι δε μενει πιστις ελπις αγαπη τα τρια ταυτα μειζων δε τουτων η αγαπη

Chapter 14

- ¹διώκετε την αγαπην ζηλουτε δε τα πνευματικα μαλλον δε ινα προφητευητε
²ο γαρ λαλων γλωσση ουκ ανθρωποις λαλει αλλα τω θεω ουδεις γαρ ακουει πνευματι δε λαλει μυστηρια
³ο δε προφητευων ανθρωποις λαλει οικοδομην και παρακλησιν και παραμυθιαν
⁴ο λαλων γλωσση εαυτον οικοδομει ο δε προφητευων εκκλησιαν οικοδομει
⁵θελω δε παντας υμας λαλειν γλωσσαις μαλλον δε ινα προφητευητε μειζων γαρ ο προφητευων η ο λαλων γλωσσαις εκτος ει μη διερμηνευη ινα η εκκλησια οικοδομην λαβη
⁶νυνι δε αδελφοι εαν ελθω προς υμας γλωσσαις λαλων τι υμας ωφελησω εαν μη υμιν λαλησω η εν αποκαλυψει η εν γνωσει η εν προφητεια η εν διδαχη
⁷ομως τα αψυχα φωνην διδοντα ειτε αυλος ειτε κιθαρα εαν διαστολην τοις φθογγοις μη δω πως γνωσθησεται το αυλουμενον η το κιθαριζομενον
⁸και γαρ εαν αδηλον φωνην σαλπιγξ δω τις παρασκευασεται εις πολεμον
⁹ουτως και υμεις δια της γλωσσης εαν μη ευσημον λογον δωτε πως γνωσθησεται το λαλουμενον εσεσθε γαρ εις αερα λαλουντες
¹⁰τοσαυτα ει τυχοι γενη φωνων εστιν εν κοσμω και ουδεν αφωνον
¹¹εαν ουν μη ειδω την δυναμιν της φωνης εσομαι τω λαλουντι βαρβαρος και ο λαλων εν εμοι βαρβαρος
¹²ουτως και υμεις επει ζηλωται εστε πνευματων προς την οικοδομην της εκκλησιας ζητειτε ινα περισσευητε
¹³διοπερ ο λαλων γλωσση προσευχεσθω ινα διερμηνευη
¹⁴εαν γαρ προσευχωμαι γλωσση το πνευμα μου προσευχεται ο δε νους μου ακαρπος εστιν
¹⁵τι ουν εστιν προσευξομαι τω πνευματι προσευξομαι δε και τω νοι ψαλω τω πνευματι ψαλω δε και τω νοι
¹⁶επει εαν ευλογησης τω πνευματι ο αναπληρων τον τοπον του ιδιωτου πως ερει το αμην επι τη ση ευχαριστια επειδη τι λεγεις ουκ οιδεν
¹⁷συ μεν γαρ καλως ευχαριστεις αλλ ο ετερος ουκ οικοδομειται
¹⁸ευχαριστω τω θεω μου παντων υμων μαλλον γλωσσαις λαλων
¹⁹αλλ εν εκκλησια θελω πεντε λογους δια του νοος μου λαλησαι ινα και αλλους κατηχησω η μυριους λογους εν γλωσση
²⁰αδελφοι μη παιδια γινεσθε ταις φρεσιν αλλα τη κακια νηπιαζετε ταις δε φρεσιν τελειοι γινεσθε
²¹εν τω νομω γεγραπται οτι εν ετερογλωσσοις και εν χειλεσιν ετεροις λαλησω τω λαω τουτω και ουδ ουτως εισακουσονται μου λεγει κυριος
²²ωστε αι γλωσσαι εις σημειον εισιν ου τοις πιστευουσιν αλλα τοις απιστοις η δε προφητεια ου τοις απιστοις αλλα τοις πιστευουσιν
²³εαν ουν συνελθη η εκκλησια ολη επι το αυτο και παντες γλωσσαις λαλωσιν εισελθωσιν δε ιδιωται η απιστοι ουκ ερουσιν οτι μαινεσθε

- ²⁴εαν δε παντες προφητευωσιν εισελθη δε τις απιστος η ιδιωτης ελεγχεται υπο παντων ανακρινεται υπο παντων
- ²⁵και ουτως τα κρυπτα της καρδιας αυτου φανερα γινεται και ουτως πεσων επι προσωπον προσκυνησει τω θεω απαγγελων οτι ο θεος οντως εν υμιν εστιν
- ²⁶τι ουν εστιν αδελφοι οταν συνερχησθε εκαστος υμων ψαλμον εχει διδαχην εχει γλωσσαν εχει αποκαλυψιν εχει ερμηνειαν εχει παντα προς οικοδομην γενεσθω
- ²⁷ειτε γλωσση τις λαλει κατα δυο η το πλειστον τρεις και ανα μερος και εις διερμηνευετω
- ²⁸εαν δε μη η διερμηνευτης σιγατω εν εκκλησια εαυτω δε λαλειτω και τω θεω
- ²⁹προφηται δε δυο η τρεις λαλειτωσαν και οι αλλοι διακρινετωσαν
- ³⁰εαν δε αλλω αποκαλυφθη καθημενω ο πρωτος σιγατω
- ³¹δυνασθε γαρ καθ ενα παντες προφητευειν ινα παντες μανθανωσιν και παντες παρακαλωνται
- ³²και πνευματα προφητων προφηταις υποτασσειται
- ³³ου γαρ εστιν ακαταστασιας ο θεος αλλ ειρηνης ως εν πασαις ταις εκκλησιαις των αγιων
- ³⁴αι γυναικες υμων εν ταις εκκλησιαις σιγατωσαν ου γαρ επιτετραπται αυταις λαλειν αλλ υποτασσεσθαι καθως και ο νομος λεγει
- ³⁵ει δε τι μαθειν θελουσιν εν οικω τους ιδιους ανδρας επερωτατωσαν αισχρον γαρ εστιν γυναιξιν εν εκκλησια λαλειν
- ³⁶η αφ υμων ο λογος του θεου εξηλθεν η εις υμας μονους κατηντησεν
- ³⁷ει τις δοκει προφητης ειναι η πνευματικος επιγινωσκετω α γραφω υμιν οτι του κυριου εισιν εντολαι
- ³⁸ει δε τις αγνοει αγνοειτω
- ³⁹ωστε αδελφοι ζηλουτε το προφητευειν και το λαλειν γλωσσαις μη κωλυετε
- ⁴⁰παντα ευσημονως και κατα ταξιν γινεσθω

Chapter 15

¹γνωριζω δε υμιν αδελφοι το ευαγγελιον ο ευηγγελισαμην υμιν ο και παρελαβετε εν ω και εστηκατε
²δι ου και σωζεσθε τινι λογω ευηγγελισαμην υμιν ει κατεχετε εκτος ει μη εικη επιστευσατε
³παρεδωκα γαρ υμιν εν πρωτοις ο και παρελαβον οτι χριστος απεθανεν υπερ των αμαρτιων ημων κατα τας γραφας
⁴και οτι εταφη και οτι εγηγερται τη τριτη ημερα κατα τας γραφας
⁵και οτι ωφθη κηφα ειτα τοις δωδεκα
⁶επειτα ωφθη επανω πεντακοσιοις αδελφοις εφραπαξ εξ ων οι πλειους μενουσιν εως αρτι τινες δε και κοιμηθησαν
⁷επειτα ωφθη ιακωβω ειτα τοις αποστολοις πασιν
⁸εσχατον δε παντων ωσπερι τω εκτρωματι ωφθη καμοι
⁹εγω γαρ ειμι ο ελαχιστος των αποστολων ος ουκ ειμι ικανος καλεισθαι αποστολος διοτι εδιωξα την εκκλησιαν του θεου
¹⁰χαριτι δε θεου ειμι ο ειμι και η χαρις αυτου η εις εμε ου κενη εγενηθη αλλα περισσοτερον αυτων παντων εκοπιασα ουκ εγω δε αλλ η χαρις του θεου η συν εμοι
¹¹ειτε ουν εγω ειτε εκεινοι ουτως κηρυσσομεν και ουτως επιστευσατε
¹²ει δε χριστος κηρυσσεται οτι εκ νεκρων εγηγερται πως λεγουσιν τινες εν υμιν οτι αναστασις νεκρων ουκ εστιν
¹³ει δε αναστασις νεκρων ουκ εστιν ουδε χριστος εγηγερται
¹⁴ει δε χριστος ουκ εγηγερται κενον αρα το κηρυγμα ημων κενη δε και η πιστις υμων
¹⁵ευρισκομεθα δε και ψευδομαρτυρες του θεου οτι εμαρτυρησαμεν κατα του θεου οτι ηγειρεν τον χριστον ον ουκ ηγειρεν ειπερ αρα νεκροι ουκ εγειρονται
¹⁶ει γαρ νεκροι ουκ εγειρονται ουδε χριστος εγηγερται
¹⁷ει δε χριστος ουκ εγηγερται ματαια η πιστις υμων ετι εστε εν ταις αμαρτιαις υμων
¹⁸αρα και οι κοιμηθεντες εν χριστω απωλοντο
¹⁹ει εν τη ζωη ταυτη ηλπικοτες εσμεν εν χριστω μονον ελεεινότεροι παντων ανθρωπων εσμεν
²⁰νυνι δε χριστος εγηγερται εκ νεκρων απαρχη των κεκοιμημενων εγενετο
²¹επειδη γαρ δι ανθρωπου ο θανατος και δι ανθρωπου αναστασις νεκρων
²²ωσπερ γαρ εν τω αδαμ παντες αποθνησκουσιν ουτως και εν τω χριστω παντες ζωοποιηθησονται
²³εκαστος δε εν τω ιδιω ταγματι απαρχη χριστος επειτα οι χριστου εν τη παρουσια αυτου
²⁴ειτα το τελος οταν παραδω την βασιλειαν τω θεω και πατρι οταν καταργηση πασαν αρχην και πασαν εξουσιαν και δυναμιν
²⁵δει γαρ αυτον βασιλευειν αχρις ου αν θη παντας τους εχθρους υπο τους ποδας αυτου
²⁶εσχατος εχθρος καταργειται ο θανατος

²⁷παντα γαρ υπεταξεν υπο τους ποδας αυτου οταν δε ειπη οτι παντα υποτετακται δηλον οτι εκτος του υποταξαντος αυτω τα παντα
²⁸οταν δε υποταγη αυτω τα παντα τοτε και αυτος ο υιος υποταγησεται τω υποταξαντι αυτω τα παντα ινα η ο θεος τα παντα εν πασιν
²⁹επει τι ποιησουσιν οι βαπτιζομενοι υπερ των νεκρων ει ολως νεκροι ουκ εγειρονται τι και βαπτιζονται υπερ των νεκρων
³⁰τι και ημεις κινδυνευομεν πασαν ωραν
³¹καθ ημεραν αποθνησκω νη την υμετεραν καυχησιν ην εχω εν χριστω ιησου τω κυριω ημων
³²ει κατα ανθρωπον εθριομαχησα εν εφεσω τι μοι το οφελος ει νεκροι ουκ εγειρονται φαγωμεν και πιωμεν αυριον γαρ αποθνησκομεν
³³μη πλανασθε φθειρουσιν ηθη χρησθ ομιλιαι κακαι
³⁴εκνηψατε δικαιως και μη αμαρτανετε αγνωσιαν γαρ θεου τινες εχουσιν προς εντροπην υμιν λεγω
³⁵αλλ ερει τις πως εγειρονται οι νεκροι ποιω δε σωματι ερχονται
³⁶αφρον συ ο σπειρεις ου ζωοποιειται εαν μη αποθανη
³⁷και ο σπειρεις ου το σωμα το γενησομενον σπειρεις αλλα γυμνον κοκκον ει τυχοι σιτου η τινος των λοιπων
³⁸ο δε θεος αυτω διδωσιν σωμα καθως ηθελησεν και εκαστω των σπερματων το ιδιον σωμα
³⁹ου πασα σαρξ η αυτη σαρξ αλλα αλλη μεν σαρξ ανθρωπων αλλη δε σαρξ κτηνων αλλη δε ιχθυων αλλη δε πτηνων
⁴⁰και σωματα επουρανια και σωματα επιγεια αλλ ετερα μεν η των επουρανιων δοξα ετερα δε η των επιγειων
⁴¹αλλη δοξα ηλιου και αλλη δοξα σεληνης και αλλη δοξα αστερων αστηρ γαρ αστερος διαφερει εν δοξη
⁴²ουτως και η αναστασις των νεκρων σπειρεται εν φθορα εγειρεται εν αφθαρσια
⁴³σπειρεται εν ατιμια εγειρεται εν δοξη σπειρεται εν ασθενεια εγειρεται εν δυναμει
⁴⁴σπειρεται σωμα ψυχικον εγειρεται σωμα πνευματικον εστιν σωμα ψυχικον και εστιν σωμα πνευματικον
⁴⁵ουτως και γεγραπται εγενετο ο πρωτος ανθρωπος αδαμ εις ψυχην ζωσαν ο εσχατος αδαμ εις πνευμα ζωοποιουν
⁴⁶αλλ ου πρωτον το πνευματικον αλλα το ψυχικον επειτα το πνευματικον
⁴⁷ο πρωτος ανθρωπος εκ γης χοικος ο δευτερος ανθρωπος ο κυριος εξ ουρανου
⁴⁸οιος ο χοικος τοιουτοι και οι χοικοι και οιος ο επουρανιος τοιουτοι και οι επουρανιοι
⁴⁹και καθως εφορεσαμεν την εικονα του χοικου φορεσομεν και την εικονα του επουρανιου

⁵⁰τουτο δε φημι αδελφοι οτι σαρξ και αιμα βασιλειαν θεου κληρονομησαι ου δυνανται ουδε η φθορα την αφθαρσιαν κληρονομει

⁵¹ιδου μυστηριον υμιν λεγω παντες μεν ου κοιμηθησομεθα παντες δε αλλαγησομεθα

⁵²εν ατομω εν ριπη οφθαλμου εν τη εσχατη σαλπιγγι σαλπισει γαρ και οι νεκροι εγερθησονται αφθαρτοι και ημεις αλλαγησομεθα

⁵³δει γαρ το φθαρτον τουτο ενδυσασθαι αφθαρσιαν και το θνητον τουτο ενδυσασθαι αθανασιαν

⁵⁴οταν δε το φθαρτον τουτο ενδυσηται αφθαρσιαν και το θνητον τουτο ενδυσηται αθανασιαν τοτε γενησεται ο λογος ο γεγραμμενος κατεποθη ο θανατος εις νικος

⁵⁵που σου θανατε το κεντρον που σου αδη το νικος

⁵⁶το δε κεντρον του θανατου η αμαρτια η δε δυναμις της αμαρτιας ο νομος

⁵⁷τω δε θεω χαρις τω διδοντι ημιν το νικος δια του κυριου ημων ιησου χριστου

⁵⁸ωστε αδελφοι μου αγαπητοι εδραιοι γινεσθε αμετακινητοι περισσευοντες εν τω εργω του κυριου παντοτε ειδοτες οτι ο κοπος υμων ουκ εστιν κενος εν κυριω

Chapter 16

- ¹περι δε της λογιας της εις τους αγιους ωσπερ διαταξαι τις εκκλησιας της γαλατιας ουτως και υμεις ποιησατε
- ²κατα μιαν σαββατων εκαστος υμων παρ εαυτω τιθετω θησαυριζων ο τι αν ευοδωται ινα μη οταν ελθω τοτε λογιαι γινωνται
- ³οταν δε παραγενωμαι ους εαν δοκιμασητε δι επιστολων τουτους πεμψω απενεγκειν την χαριν υμων εις ιερουσαλημ
- ⁴εαν δε η αξιον του καμε πορευεσθαι συν εμοι πορευονται
- ⁵ελευσομαι δε προς υμας οταν μακεδονιαν διελθω μακεδονιαν γαρ διερχομαι
- ⁶προς υμας δε τυχον παραμενω η και παραχειμασω ινα υμεις με προπεμψητε ου εαν πορευωμαι
- ⁷ου θελω γαρ υμας αρτι εν παροδω ιδειν ελπίζω δε χρονον τινα επιμειναι προς υμας εαν ο κυριος επιτρεπη
- ⁸επιμενω δε εν εφεσω εως της πεντηκοστης
- ⁹θυρα γαρ μοι ανεωγεν μεγαλη και ενεργης και αντικειμενοι πολλοι
- ¹⁰εαν δε ελθη τιμοθεος βλεπετε ινα αφοβως γενηται προς υμας το γαρ εργον κυριου εργαζεται ως και εγω
- ¹¹μη τις ουν αυτον εξουθενηση προπεμψατε δε αυτον εν ειρηνη ινα ελθη προς με εκδεχομαι γαρ αυτον μετα των αδελφων
- ¹²περι δε απολλω του αδελφου πολλα παρεκαλεσα αυτον ινα ελθη προς υμας μετα των αδελφων και παντως ουκ ην θελημα ινα νυν ελθη ελευσεται δε οταν ευκαιρηση
- ¹³γρηγορειτε στηκετε εν τη πιστει ανδριζεσθε κραταιουσθε
- ¹⁴παντα υμων εν αγαπη γινεσθω
- ¹⁵παρακαλω δε υμας αδελφοι οιδατε την οικιαν στεφανα οτι εστιν απαρχη της αχαιας και εις διακονιαν τοις αγιοις εταξαν εαυτους
- ¹⁶ινα και υμεις υποτασσησθε τοις τοιουτοις και παντι τω συνεργουντι και κοπιωντι
- ¹⁷χαιρω δε επι τη παρουσια στεφανα και φουρτουνατου και αχαικου οτι το υμων υστερημα ουτοι ανεπληρωσαν
- ¹⁸ανεπαυσαν γαρ το εμον πνευμα και το υμων επιγινωσκετε ουν τους τοιουτους
- ¹⁹ασπαζονται υμας αι εκκλησιας της ασιας ασπαζονται υμας εν κυριω πολλα ακυλας και πρισκιλλα συν τη κατ οικον αυτων εκκλησια
- ²⁰ασπαζονται υμας οι αδελφοι παντες ασπασασθε αλληλους εν φιληματι αγιω
- ²¹ο ασπασμος τη εμη χειρι παυλου
- ²²ει τις ου φιλει τον κυριον ιησουν χριστον ητω αναθεμα μαραν αθα
- ²³η χαρις του κυριου ιησου χριστου μεθ υμων
- ²⁴η αγαπη μου μετα παντων υμων εν χριστω ιησου αμην

2 Corinthians

Chapter 1

¹παυλος αποστολος ιησου χριστου δια θεληματος θεου και τιμοθεος ο αδελφος τη εκκλησια του θεου τη ουση εν κορινθω συν τοις αγιοις πασιν τοις ουσιν εν ολη τη αχαια
²χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
³ευλογητος ο θεος και πατηρ του κυριου ημων ιησου χριστου ο πατηρ των οικτιρμων και θεος πασης παρακλησεως
⁴ο παρακαλων ημας επι παση τη θλιψει ημων εις το δυνασθαι ημας παρακαλειν τους εν παση θλιψει δια της παρακλησεως ης παρακαλουμεθα αυτοι υπο του θεου
⁵οτι καθως περισσευει τα παθηματα του χριστου εις ημας ουτως δια χριστου περισσευει και η παρακλησις ημων
⁶ειτε δε θλιβομεθα υπερ της υμων παρακλησεως και σωτηριας της ενεργουμενης εν υπομονη των αυτων παθηματων ων και ημεις πασχομεν ειτε παρακαλουμεθα υπερ της υμων παρακλησεως και σωτηριας και η ελπις ημων βεβαια υπερ υμων
⁷ειδοτες οτι ωσπερ κοινωνοι εστε των παθηματων ουτως και της παρακλησεως
⁸ου γαρ θελομεν υμας αγνοειν αδελφοι υπερ της θλιψεως ημων της γενομενης ημιν εν τη ασια οτι καθ υπερβολην εβαρηθημεν υπερ δυναμιν ωστε εξαπορηθηναι ημας και του ζην
⁹αλλα αυτοι εν εαυτοις το αποκριμα του θανατου εσηκαμεν ινα μη πεποιθοτες ωμεν εφ εαυτοις αλλ επι τω θεω τω εγειροντι τους νεκρους
¹⁰ος εκ τηλικουτου θανατου ερρυσατο ημας και ρυεται εις ον ηλπικαμεν οτι και ετι ρυσεται
¹¹συνυπουργουντων και υμων υπερ ημων τη δεησει ινα εκ πολλων προσωπων το εις ημας χαρισμα δια πολλων ευχαριστηθη υπερ ημων
¹²η γαρ καυχησις ημων αυτη εστιν το μαρτυριον της συνειδησεως ημων οτι εν απλοτητι και ειλικρινεια θεου ουκ εν σοφια σαρκικη αλλ εν χαριτι θεου ανεστραφημεν εν τω κοσμω περισσοτερω δε προς υμας
¹³ου γαρ αλλα γραφομεν υμιν αλλ η α αναγινωσκετε η και επιγινωσκετε ελπίζω δε οτι και εως τελους επιγνωσεσθε
¹⁴καθως και επεγνωτε ημας απο μερους οτι καυχημα υμων εσμεν καθαπερ και υμεις ημων εν τη ημερα του κυριου ιησου
¹⁵και ταυτη τη πεποιθησει εβουλομην προς υμας ελθειν προτερον ινα δευτεραν χαριν εχητε
¹⁶και δι υμων διελθειν εις μακεδονιαν και παλιν απο μακεδονιας ελθειν προς υμας και υφ υμων προπεμφθηναι εις την ιουδαιαν
¹⁷τουτο ουν βουλευομενος μη τι αρα τη ελαφρια εχρησαμην η α βουλευομαι κατα σαρκα βουλευομαι ινα η παρ εμοι το ναι ναι και το ου ου
¹⁸πιστος δε ο θεος οτι ο λογος ημων ο προς υμας ουκ εγενετο ναι και ου
¹⁹ο γαρ του θεου υιος ιησους χριστος ο εν υμιν δι ημων κηρυχθεις δι εμου και σιλουανου και τιμοθεου ουκ εγενετο ναι και ου αλλα ναι εν αυτω γεγονεν

²⁰οσαι γαρ επαγγελιαι θεου εν αυτω το ναι και εν αυτω το αμην τω θεω προς δοξαν δι ημων

²¹ο δε βεβαιων ημας συν υμιν εις χριστον και χριστας ημας θεος

²²ο και σφραγισαμενος ημας και δους τον αρραβωνα του πνευματος εν ταις καρδιαις ημων

²³εγω δε μαρτυρα τον θεον επικαλουμαι επι την εμην ψυχην οτι φειδομενος υμων ουκετι ηλθον εις κορινθον

²⁴ουχ οτι κυριευομεν υμων της πιστεως αλλα συνεργοι εσμεν της χαρας υμων τη γαρ πιστει εστηκατε

Chapter 2

¹εκρινα δε εμαυτω τουτο το μη παλιν ελθειν εν λυπη προς υμας
²ει γαρ εγω λυπω υμας και τις εστιν ο ευφραινων με ει μη ο λυπουμενος εξ εμου
³και εγραψα υμιν τουτο αυτο ινα μη ελθων λυπην εχω αφ ων εδει με χαιρειν πεποιθως
επι παντας υμας οτι η εμη χαρα παντων υμων εστιν
⁴εκ γαρ πολλης θλιψεως και συνοχης καρδιας εγραψα υμιν δια πολλων δακρυων ουχ ινα
λυπηθητε αλλα την αγαπην ινα γνωτε ην εχω περισσοτερω εις υμας
⁵ει δε τις λελυπηκεν ουκ εμε λελυπηκεν αλλ απο μερους ινα μη επιβαρω παντας υμας
⁶ικανον τω τοιουτω η επιτιμια αυτη η υπο των πλειονων
⁷ωστε τουναντιον μαλλον υμας χαρισασθαι και παρακαλεσαι μηπως τη περισσοτερα λυπη
καταποθη ο τοιουτος
⁸διο παρακαλω υμας κυρωσαι εις αυτον αγαπην
⁹εις τουτο γαρ και εγραψα ινα γνω την δοκιμην υμων ει εις παντα υπηκοοι εστε
¹⁰ω δε τι χαριζεσθε και εγω και γαρ εγω ει τι κεχαρισμαι ω κεχαρισμαι δι υμας εν προσωπω
χριστου
¹¹ινα μη πλεονεκτηθωμεν υπο του σατανα ου γαρ αυτου τα νοηματα αγνοουμεν
¹²ελθων δε εις την τρωαδα εις το ευαγγελιον του χριστου και θυρας μοι ανεωγμενης εν
κυριω
¹³ουκ εσχηκα ανεσιν τω πνευματι μου τω μη ευρειν με τιτον τον αδελφον μου αλλα
αποταξαμενος αυτοις εξηλθον εις μακεδονιαν
¹⁴τω δε θεω χαρις τω παντοτε θριαμβευοντι ημας εν τω χριστω και την οσμην της γνωσεως
αυτου φανερουντι δι ημων εν παντι τοπω
¹⁵οτι χριστου ευωδια εσμεν τω θεω εν τοις σωζομενοις και εν τοις απολλυμενοις
¹⁶οις μεν οσμη θανατου εις θανατον οις δε οσμη ζωης εις ζωην και προς ταυτα τις ικανος
¹⁷ου γαρ εσμεν ως οι πολλοι καπηλευοντες τον λογον του θεου αλλ ως εξ ειλικρινειας
αλλ ως εκ θεου κατενωπιον του θεου εν χριστω λαλουμεν

Chapter 3

- ¹αρχομεθα παλιν εαυτους συνιστανειν η μη χρηζομεν ως τινες συστατικων επιστολων προς υμας η εξ υμων συστατικων
- ²η επιστολη ημων υμεις εστε εγγεγραμμενη εν ταις καρδιαις ημων γινωσκομενη και αναγινωσκομενη υπο παντων ανθρωπων
- ³φανερουμενοι οτι εστε επιστολη χριστου διακονηθεισα υφ ημων εγγεγραμμενη ου μελανι αλλα πνευματι θεου ζωντος ουκ εν πλαξιν λιθιναις αλλ εν πλαξιν καρδιας σαρκιναις
- ⁴πεποιθησιν δε τοιαυτην εχομεν δια του χριστου προς τον θεον
- ⁵ουχ οτι ικανοι εσμεν αφ εαυτων λογισασθαι τι ως εξ εαυτων αλλ η ικανοτης ημων εκ του θεου
- ⁶ος και ικανωσεν ημας διακονους καινης διαθηκης ου γραμματος αλλα πνευματος το γαρ γραμμα αποκτεινει το δε πνευμα ζωοποιει
- ⁷ει δε η διακονια του θανατου εν γραμμασιν εντετυπωμενη εν λιθοις εγενηθη εν δοξη ωστε μη δυνασθαι ατενισαι τους υιους ισραηλ εις το προσωπον μωσεως δια την δοξαν του προσωπου αυτου την καταργουμενην
- ⁸πως ουχι μαλλον η διακονια του πνευματος εσται εν δοξη
- ⁹ει γαρ η διακονια της κατακρισεως δοξα πολλω μαλλον περισσευει η διακονια της δικαιοσυνης εν δοξη
- ¹⁰και γαρ ουδε δεδοξασται το δεδοξασμενον εν τουτω τω μερει ενεκεν της υπερβαλλουσης δοξης
- ¹¹ει γαρ το καταργουμενον δια δοξης πολλω μαλλον το μενον εν δοξη
- ¹²εχοντες ουν τοιαυτην ελπιδα πολλη παρρησια χρωμεθα
- ¹³και ου καθαπερ μωσης ετιθει καλυμμα επι το προσωπον εαυτου προς το μη ατενισαι τους υιους ισραηλ εις το τελος του καταργουμενου
- ¹⁴αλλ επωρωθη τα νοηματα αυτων αχρι γαρ της σημερον το αυτο καλυμμα επι τη αναγνωσει της παλαιας διαθηκης μενει μη ανακαλυπτομενον ο τι εν χριστω καταργειται
- ¹⁵αλλ εως σημερον ηνικα αναγινωσκεται μωσης καλυμμα επι την καρδιαν αυτων κειται
- ¹⁶ηνικα δ αν επιστρεψη προς κυριον περιαιρειται το καλυμμα
- ¹⁷ο δε κυριος το πνευμα εστιν ου δε το πνευμα κυριου εκει ελευθερια
- ¹⁸ημεις δε παντες ανακεκαλυμμενω προσωπω την δοξαν κυριου κατοπτριζομενοι την αυτην εικονα μεταμορφουμεθα απο δοξης εις δοξαν καθαπερ απο κυριου πνευματος

Chapter 4

- ¹δια τουτο εχοντες την διακονιαν ταυτην καθως ηληθημεν ουκ εκκακουμεν
²αλλ απειπαμεθα τα κρυπτα της αισχυνης μη περιπατουντες εν πανουργια μηδε δολουντες τον λογον του θεου αλλα τη φανερωσει της αληθειας συνιστωντες εαυτους προς πασαν συνειδησιν ανθρωπων ενωπιον του θεου
³ει δε και εστιν κεκαλυμμενον το ευαγγελιον ημων εν τοις απολλυμενοις εστιν κεκαλυμμενον
⁴εν οις ο θεος του αιωνος τουτου ετυφλωσεν τα νοηματα των απιστων εις το μη αυγασαι αυτοις τον φωτισμον του ευαγγελιου της δοξης του χριστου ος εστιν εικων του θεου
⁵ου γαρ εαυτους κηρυσσομεν αλλα χριστον ιησουν κυριον εαυτους δε δουλους υμων δια ιησουν
⁶οτι ο θεος ο ειπων εκ σκοτους φως λαμψαι ος ελαμψεν εν ταις καρδιαις ημων προς φωτισμον της γνωσεως της δοξης του θεου εν προσωπω ιησου χριστου
⁷εχομεν δε τον θησαυρον τουτον εν οστρακινοις σκευεσιν ινα η υπερβολη της δυναμεως η του θεου και μη εξ ημων
⁸εν παντι θλιβομενοι αλλ ου στενοχωρουμενοι απορουμενοι αλλ ουκ εξαπορουμενοι
⁹διωκομενοι αλλ ουκ εγκαταλειπομενοι καταβαλλομενοι αλλ ουκ απολλυμενοι
¹⁰παντοτε την νεκρωσιν του κυριου ιησου εν τω σωματι περιφεροντες ινα και η ζωη του ιησου εν τω σωματι ημων φανερωθη
¹¹αι γαρ ημεις οι ζωντες εις θανατον παραδιδομεθα δια ιησουν ινα και η ζωη του ιησου φανερωθη εν τη θνητη σαρκι ημων
¹²ωστε ο μεν θανατος εν ημιν ενεργειται η δε ζωη εν υμιν
¹³εχοντες δε το αυτο πνευμα της πιστεως κατα το γεγραμμενον επιστευσα διο ελαλησα και ημεις πιστευομεν διο και λαλουμεν
¹⁴ειδοτες οτι ο εγειρας τον κυριον ιησουν και ημας δια ιησου εγερει και παραστησει συν υμιν
¹⁵τα γαρ παντα δι υμας ινα η χαρις πλεονασασα δια των πλειονων την ευχαριστιαν περισσευση εις την δοξαν του θεου
¹⁶διο ουκ εκκακουμεν αλλ ει και ο εξω ημων ανθρωπος διαφθειρεται αλλ ο εσωθεν ανακαινιουται ημερα και ημερα
¹⁷το γαρ παραυτικα ελαφρον της θλιψεως ημων καθ υπερβολην εις υπερβολην αιωνιον βαρος δοξης κατεργαζεται ημιν
¹⁸μη σκοπουντων ημων τα βλεπομενα αλλα τα μη βλεπομενα τα γαρ βλεπομενα προσκαιρα τα δε μη βλεπομενα αιωνια

Chapter 5

¹οιδαμεν γαρ οτι εαν η επιγειος ημων οικια του σκηνους καταλυθη οικοδομην εκ θεου εχομεν οικιαν αχειροποιητον αιωνιον εν τοις ουρανοις
²και γαρ εν τω σκεπη στεναζομεν το οικητηριον ημων το εξ ουρανου επενδυσασθαι επιποθουντες
³ειγε και ενδυσασμενοι ου γυμνοι ευρεθησομεθα
⁴και γαρ οι οντες εν τω σκεπη στεναζομεν βαρουμενοι εφ ω ου θελομεν εκδυσασθαι αλλ επενδυσασθαι ινα καταποθη το θνητον υπο της ζωης
⁵ο δε κατεργασαμενος ημας εις αυτο τουτο θεος ο και δους ημιν τον αρραβωνα του πνευματος
⁶θαρρουντες ουν παντοτε και ειδοτες οτι ενδημουντες εν τω σωματι εκδημουμεν απο του κυριου
⁷δια πιστεως γαρ περιπατουμεν ου δια ειδους
⁸θαρρουμεν δε και ευδοκουμεν μαλλον εκδημησαι εκ του σωματος και ενδημησαι προς τον κυριον
⁹διο και φιλοτιμουμεθα ειτε ενδημουντες ειτε εκδημουντες ευαρεστοι αυτω ειναι
¹⁰τους γαρ παντας ημας φανερωθηναι δει εμπροσθεν του βηματος του χριστου ινα κοιμισθαι εκαστος τα δια του σωματος προς α επραξεν ειτε αγαθον ειτε κακον
¹¹ειδοτες ουν τον φοβον του κυριου ανθρωπους πειθομεν θεω δε πεφανερωμεθα ελπίζω δε και εν ταις συνειδησεσιν υμων πεφανερωσθαι
¹²ου γαρ παλιν εαυτους συνιστανουμεν υμιν αλλα αφορμην διδοντες υμιν καυχηματος υπερ ημων ινα εχητε προς τους εν προσωπω καυχωμενους και ου καρδια
¹³ειτε γαρ εξεστημεν θεω ειτε σωφρονουμεν υμιν
¹⁴η γαρ αγαπη του χριστου συνεχει ημας κριναντας τουτο οτι ει εις υπερ παντων απεθανεν αρα οι παντες απεθανον
¹⁵και υπερ παντων απεθανεν ινα οι ζωντες μηκει εαυτοις ζωσιν αλλα τω υπερ αυτων αποθανοντι και εγερθεντι
¹⁶ωστε ημεις απο του νυν ουδενα οιδαμεν κατα σαρκα ει δε και εγνωκαμεν κατα σαρκα χριστον αλλα νυν ουκετι γινωσκομεν
¹⁷ωστε ει τις εν χριστω καινη κτισις τα αρχαια παρηλθεν ιδου γεγονεν καινα τα παντα
¹⁸τα δε παντα εκ του θεου του καταλλαξαντος ημας εαυτω δια ιησου χριστου και δοντος ημιν την διακονιαν της καταλλαγης
¹⁹ως οτι θεος ην εν χριστω κοσμον καταλασσων εαυτω μη λογιζομενος αυτοις τα παραπτωματα αυτων και θεμενος εν ημιν τον λογον της καταλλαγης
²⁰υπερ χριστου ουν πρεσβευομεν ως του θεου παρακαλουντος δι ημων δεομεθα υπερ χριστου καταλλαγητε τω θεω
²¹τον γαρ μη γνοντα αμαρτιαν υπερ ημων αμαρτιαν εποιησεν ινα ημεις γινωμεθα δικαιοσυνη θεου εν αυτω

Chapter 6

- ¹συνεργουντες δε και παρακαλουμεν μη εις κενον την χαριν του θεου δεξασθαι υμας
²λεγει γαρ καιρω δεκτω επηκουσα σου και εν ημερα σωτηριας εβοηθησα σοι ιδου νυν καιρος ευπροσδεκτος ιδου νυν ημερα σωτηριας
³μηδεμιαν εν μηδενι διδοντες προσκοπην ινα μη μωμηθη η διακονια
⁴αλλ εν παντι συνιστωντες εαυτους ως θεου διακονοι εν υπομονη πολλη εν θλιψεσιν εν αναγκαις εν στενοχωριας
⁵εν πληγαις εν φυλακαις εν ακαταστασιαις εν κοποις εν αγρυπνιαις εν νηστειαις
⁶εν αγνοτητι εν γνωσει εν μακροθυμια εν χρηστοτητι εν πνευματι αγιω εν αγαπη ανυποκριτω
⁷εν λογω αληθειας εν δυναμει θεου δια των οπλων της δικαιοσυνης των δεξιων και αριστερων
⁸δια δοξης και ατιμιας δια δυσφημιας και ευφημιας ως πλανοι και αληθεις
⁹ως αγνοουμενοι και επιγινωσκομενοι ως αποθνησκοντες και ιδου ζωμεν ως παιδευομενοι και μη θανατουμενοι
¹⁰ως λυπουμενοι αιει δε χαιροντες ως πτωχοι πολλους δε πλουτιζοντες ως μηδεν εχοντες και παντα κατεχοντες
¹¹το στομα ημων ανεωγεν προς υμας κορινθιοι η καρδια ημων πεπλατυνται
¹²ου στενοχωρεισθε εν ημιν στενοχωρεισθε δε εν τοις σπλαγχνοις υμων
¹³την δε αυτην αντιμισθιαν ως τεκνοις λεγω πλατυνητε και υμεις
¹⁴μη γινεσθε ετεροζυγουντες απιστοις τις γαρ μετοχη δικαιοσυνη και ανομια τις δε κοινωνια φωτι προς σκοτος
¹⁵τις δε συμφωνησις χριστω προς βελιαλ η τις μερις πιστω μετα απιστου
¹⁶τις δε συγκαταθεσις ναω θεου μετα ειδωλων υμεις γαρ ναος θεου εστε ζωντος καθως ειπεν ο θεος οτι ενοικησω εν αυτοις και εμπεριπατησω και εσομαι αυτων θεος και αυτοι εσονται μοι λαος
¹⁷διο εξελθετε εκ μεσου αυτων και αφορισθητε λεγει κυριος και ακαθαρτου μη απτεσθε καγω εισδεξομαι υμας
¹⁸και εσομαι υμιν εις πατερα και υμεις εσεσθε μοι εις υιους και θυγατερας λεγει κυριος παντοκρατωρ

Chapter 7

¹ταυτας ουν εχοντες τας επαγγελιας αγαπητοι καθαρισωμεν εαυτους απο παντος μολυσμου σαρκος και πνευματος επιτελουντες αγιωσυνην εν φοβω θεου
²χωρησατε ημας ουδενα ηδικησαμεν ουδενα εφθειραμεν ουδενα επλεονεκτησαμεν
³ου προς κατακρισιν λεγω προειρηκα γαρ οτι εν ταις καρδιαις ημων εστε εις το συναποθανειν και συζην
⁴πολλη μοι παρρησια προς υμας πολλη μοι καυχησις υπερ υμων πεπληρωμαι τη παρακλησει υπερπερισσευομαι τη χαρα επι παση τη θλιψει ημων
⁵και γαρ ελθοντων ημων εις μακεδονιαν ουδεμιαν εσχηκεν ανεσιν η σαρξ ημων αλλ εν παντι θλιβομενοι εξωθεν μαχαι εσωθεν φοβοι
⁶αλλ ο παρακαλων τους ταπεινους παρεκαλεσεν ημας ο θεος εν τη παρουσια τιτου
⁷ου μονον δε εν τη παρουσια αυτου αλλα και εν τη παρακλησει η παρεκληθη εφ υμιν αναγγελων ημιν την υμων επιποθησιν τον υμων οδυρμον τον υμων ζηλον υπερ εμου ωστε με μαλλον χαρηναι
⁸οτι ει και ελυπησα υμας εν τη επιστολη ου μεταμελομαι ει και μετεμελομην βλεπω γαρ οτι η επιστολη εκεινη ει και προς ωραν ελυπησεν υμας
⁹νυν χαιρω ουχ οτι ελυπηθητε αλλ οτι ελυπηθητε εις μετανοιαν ελυπηθητε γαρ κατα θεον ινα εν μηδενι ζημιωθητε εξ ημων
¹⁰η γαρ κατα θεον λυπη μετανοιαν εις σωτηριαν αμεταμελητον κατεργαζεται η δε του κοσμου λυπη θανατον κατεργαζεται
¹¹ιδου γαρ αυτο τουτο το κατα θεον λυπηθηναι υμας ποσην κατειργασατο υμιν σπουδην αλλα απολογιαν αλλα αγανακτησιν αλλα φοβον αλλα επιποθησιν αλλα ζηλον αλλ εκδικησιν εν παντι συνεστησατε εαυτους αγνους ειναι εν τω πραγματι
¹²αρα ει και εγραψα υμιν ουχ εινεκεν του αδικησαντος ουδε εινεκεν του αδικηθεντος αλλ εινεκεν του φανερωθηναι την σπουδην ημων την υπερ υμων προς υμας ενωπιον του θεου
¹³δια τουτο παρακεκλημεθα επι τη παρακλησει υμων περισσοτερωσ δε μαλλον εχαρημεν επι τη χαρα τιτου οτι αναπεπαυται το πνευμα αυτου απο παντων υμων
¹⁴οτι ει τι αυτω υπερ υμων κεκαυχημαι ου κατησχυνθην αλλ ως παντα εν αληθεια ελαλησαμεν υμιν ουτως και η καυχησις ημων η επι τιτου αληθεια εγενηθη
¹⁵και τα σπλαγχνα αυτου περισσοτερωσ εις υμας εστιν αναμιμνησκομενου την παντων υμων υπακοην ως μετα φοβου και τρομου εδεξασθε αυτον
¹⁶χαιρω ουν οτι εν παντι θαρρω εν υμιν

Chapter 8

- ¹γνωριζομεν δε υμιν αδελφοι την χαριν του θεου την δεδομενην εν ταις εκκλησιαις της μακεδονιας
- ²οτι εν πολλη δοκιμη θλιψεως η περισσεια της χαρας αυτων και η κατα βαθους πτωχεια αυτων επερισσευσεν εις τον πλουτον της απλοτητος αυτων
- ³οτι κατα δυναμιν μαρτυρω και υπερ δυναμιν αυθαιρετοι
- ⁴μετα πολλης παρακλησεως δεομενοι ημων την χαριν και την κοινωνιαν της διακονιας της εις τους αγιους δεξασθαι ημας
- ⁵και ου καθως ηλπισαμεν αλλ εαυτους εδωκαν πρωτον τω κυριω και ημιν δια θεληματος θεου
- ⁶εις το παρακαλεσαι ημας τιτον ινα καθως προενηρξατο ουτως και επιτελεση εις υμας και την χαριν ταυτην
- ⁷αλλ ωσπερ εν παντι περισσευετε πιστει και λογω και γνωσει και παση σπουδη και τη εξ υμων εν ημιν αγαπη ινα και εν ταυτη τη χαριτι περισσευητε
- ⁸ου κατ επιταγην λεγω αλλα δια της ετερων σπουδης και το της υμετερας αγαπης γνησιον δοκιμαζων
- ⁹γνωσκετε γαρ την χαριν του κυριου ημων ιησου χριστου οτι δι υμας επτωχευσεν πλουσιος ων ινα υμεις τη εκεινου πτωχεια πλουτησητε
- ¹⁰και γνωμην εν τουτω διδωμι τουτο γαρ υμιν συμφερει οιτινες ου μονον το ποιησαι αλλα και το θελειν προενηρξασθε απο περυσι
- ¹¹νυν δε και το ποιησαι επιτελεσατε οπως καθαπερ η προθυμια του θελειν ουτως και το επιτελεσαι εκ του εχειν
- ¹²ει γαρ η προθυμια προκειται καθο εαν εχη τις ευπροσδεκτος ου καθο ουκ εχει
- ¹³ου γαρ ινα αλλοις ανεσις υμιν δε θλιψις αλλ εξ ισοτητος εν τω νυν καιρω το υμων περισσευμα εις το εκεινων υστερημα
- ¹⁴ινα και το εκεινων περισσευμα γενηται εις το υμων υστερημα οπως γενηται ισοτης
- ¹⁵καθως γεγραπται ο το πολυ ουκ επλεονασεν και ο το ολιγον ουκ ηλαττονησεν
- ¹⁶χαρις δε τω θεω τω διδοντι την αυτην σπουδην υπερ υμων εν τη καρδια τιτου
- ¹⁷οτι την μεν παρακλησιν εδεξατο σπουδαιοτερος δε υπαρχων αυθαιρετος εξηλθεν προς υμας
- ¹⁸συνεπεμψαμεν δε μετ αυτου τον αδελφον ου ο επαиноς εν τω ευαγγελιω δια πασων των εκκλησιων
- ¹⁹ου μονον δε αλλα και χειροτονηθεις υπο των εκκλησιων συνεκδημος ημων συν τη χαριτι ταυτη τη διακονουμενη υφ ημων προς την αυτου του κυριου δοξαν και προθυμιαν υμων
- ²⁰στελλομενοι τουτο μη τις ημας μωμησηται εν τη αδροτητι ταυτη τη διακονουμενη υφ ημων
- ²¹προνοουμενοι καλα ου μονον ενωπιον κυριου αλλα και ενωπιον ανθρωπων

²²συνεπεμψαμεν δε αυτοις τον αδελφον ημων ον εδοκιμασαμεν εν πολλοις πολλακις σπουδαιον οντα νυνι δε πολυ σπουδαιοτερον πεποιθησει πολλη τη εις υμας

²³ειτε υπερ τιτου κοινωνος εμοσ και εις υμας συνεργος ειτε αδελφοι ημων αποστολοι εκκλησιων δοξα χριστου

²⁴την ουν ενδειξιν της αγαπης υμων και ημων καυχησεωσ υπερ υμων εις αυτους ενδειξασθε και εις προσωπον των εκκλησιων

Chapter 9

- ¹περι μεν γαρ της διακονιας της εις τους αγιους περισσον μοι εστιν το γραφειν υμιν
²οιδα γαρ την προθυμιαν υμων ην υπερ υμων καυχωμαι μακεδοσιν οτι αχαια παρεσκευασται
απο περυσι και ο εξ υμων ζηλος ηρεθισεν τους πλειονας
³επεμψα δε τους αδελφους ινα μη το καυχημα ημων το υπερ υμων κενωθη εν τω μερει
τουτω ινα καθως ελεγον παρεσκευασμενοι ητε
⁴μηπως εαν ελθωσιν συν εμοι μακεδονες και ευρωσιν υμας απαρασκευαστους
καταισχυνθωμεν ημεις ινα μη λεγωμεν υμεις εν τη υποστασει ταυτη της καυχησης
⁵αναγκαιον ουν ηγησαμην παρακαλεσαι τους αδελφους ινα προελθωσιν εις υμας και
προκαταρτισωσιν την προκατηγγελημενην ευλογιαν υμων ταυτην ετοιμην ειναι ουτως ως
ευλογιαν και μη ωσπερ πλεονεξιαν
⁶τουτο δε ο σπειρων φειδομενως φειδομενως και θερισει και ο σπειρων επ ευλογιας επ
ευλογιας και θερισει
⁷εκαστος καθως προαιρειται τη καρδια μη εκ λυπης η εξ αναγκης ιλαρον γαρ δοτην αγαπα
ο θεος
⁸δυνατος δε ο θεος πασαν χαριν περισσευσαι εις υμας ινα εν παντι παντοτε πασαν
αυταρκειαν εχοντες περισσευητε εις παν εργον αγαθον
⁹καθως γεγραπται εσκορπισεν εδωκεν τοις πενησιν η δικαιοσυνη αυτου μενει εις τον αιωνα
¹⁰ο δε επιχορηγων σπερμα τω σπειροντι και αρτον εις βρωσιν χορηγησαι και πληθυναι
τον σπορον υμων και αυξησαι τα γεννηματα της δικαιοσυνης υμων
¹¹εν παντι πλουτιζομενοι εις πασαν απλοτητα ητις κατεργαζεται δι ημων ευχαριστιαν τω
θεω
¹²οτι η διακονια της λειτουργιας ταυτης ου μονον εστιν προσαναπληρουσα τα υστερηματα
των αγιων αλλα και περισσευουσα δια πολλων ευχαριστιων τω θεω
¹³δια της δοκιμης της διακονιας ταυτης δοξαζοντες τον θεον επι τη υποταγη της ομολογιας
υμων εις το ευαγγελιον του χριστου και απλοτητι της κοινωνιας εις αυτους και εις παντας
¹⁴και αυτων δεησει υπερ υμων επιποθουντων υμας δια την υπερβαλλουσαν χαριν του
θεου εφ υμιν
¹⁵χαρις δε τω θεω επι τη ανεκδιγητω αυτου δωρεα

Chapter 10

- ¹αυτος δε εγω παυλος παρακαλω υμας δια της πραοτητος και επιεικειας του χριστου
 ος κατα προσωπον μεν ταπεινος εν υμιν απων δε θαρρω εις υμας
²δεομαι δε το μη παρων θαρρησαι τη πεποιθησει η λογιζομαι τολμησαι επι τινας τους
 λογιζομενους ημας ως κατα σαρκα περιπατουντας
³εν σαρκι γαρ περιπατουντες ου κατα σαρκα στρατευομεθα
⁴τα γαρ οπλα της στρατειας ημων ου σαρκικα αλλα δυνατα τω θεω προς καθαιρεσιν
 οχυρωματων
⁵λογισμους καθαιρουντες και παν υψωμα επαιρομενον κατα της γνωσεως του θεου και
 αιχμαλωτιζοντες παν νοημα εις την υπακοην του χριστου
⁶και εν ετοιμω εχοντες εκδικησαι πασαν παρακοην οταν πληρωθη υμων η υπακοη
⁷τα κατα προσωπον βλεπετε ει τις πεποιθεν εαυτω χριστου ειναι τουτο λογιζεσθω παλιν
 αφ εαυτου οτι καθως αυτος χριστου ουτως και ημεις χριστου
⁸εαν τε γαρ και περισσοτερον τι καυχησωμαι περι της εξουσιας ημων ης εδωκεν ο κυριος
 ημιν εις οικοδομην και ουκ εις καθαιρεσιν υμων ουκ αισχυνθησομαι
⁹ινα μη δοξω ως αν εκφοβειν υμας δια των επιστολων
¹⁰οτι αι μεν επιστολαι φησιν βαρειαι και ισχυραι η δε παρουσια του σωματος ασθενης και
 ο λογος εξουθενημενος
¹¹τουτο λογιζεσθω ο τοιουτος οτι οιοι εσμεν τω λογω δι επιστολων αποντες τοιουτοι και
 παροντες τω εργω
¹²ου γαρ τολμωμεν εγκριναι η συγκριναι εαυτους τισιν των εαυτους συνιστανοντων αλλα
 αυτοι εν εαυτοις εαυτους μετρουντες και συγκρινοντες εαυτους εαυτοις ου συνιουσιν
¹³ημεις δε ουχι εις τα αμετρα καυχησομεθα αλλα κατα το μετρον του κανονος ου εμερισεν
 ημιν ο θεος μετρου εφικεσθαι αχρι και υμων
¹⁴ου γαρ ως μη εφικνουμενοι εις υμας υπερεκτεινομεν εαυτους αχρι γαρ και υμων
 εφθασαμεν εν τω ευαγγελιω του χριστου
¹⁵ουκ εις τα αμετρα καυχωμενοι εν αλλοτριois κοποις ελπιδα δε εχοντες αυξανομενης της
 πιστεως υμων εν υμιν μεγαλυνθηναι κατα τον κανονα ημων εις περισσειαν
¹⁶εις τα υπερεκεινα υμων ευαγγελισασθαι ουκ εν αλλοτριω κανονι εις τα ετοιμα
 καυχησασθαι
¹⁷ο δε καυχωμενος εν κυριω καυχασθω
¹⁸ου γαρ ο εαυτον συνιστων εκεινος εστιν δοκιμος αλλ ον ο κυριος συνιστησιν

Chapter 11

- ¹οφελον ανειχεσθε μου μικρον τη αφροσυνη αλλα και ανεχεσθε μου
²ζηλω γαρ υμας θεου ζηλω ηρμωσαμην γαρ υμας ενι ανδρι παρθενον αγνην παραστησαι
τω χριστω
³φοβουμαι δε μηπως ως ο οφισ ευαν εξηπατησεν εν τη πανουργια αυτου ουτως φθαρη τα
νοηματα υμων απο της απλοτητος της εις τον χριστον
⁴ει μεν γαρ ο ερχομενος αλλον ιησουν κηρυσσει ον ουκ εκηρυξαμεν η πνευμα ετερον
λαμβανετε ο ουκ ελαβετε η ευαγγελιον ετερον ο ουκ εδεξασθε καλως ηνειχεσθε
⁵λογιζομαι γαρ μηδεν υστερηκεναι των υπερ λιαν αποστολων
⁶ει δε και ιδιωτης τω λογω αλλ ου τη γνωσει αλλ εν παντι φανερωθεντες εν πασιν εις
υμας
⁷η αμαρτιαν εποιησα εμαυτον ταπεινων ινα υμεις υψωθητε οτι δωρεαν το του θεου
ευαγγελιον ευηγγελισαμην υμιν
⁸αλλας εκκλησιας εσυλησα λαβων οψωνιον προς την υμων διακονιαν
⁹και παρων προς υμας και υστερηθεις ου κατεναρκησα ουδενος το γαρ υστερημα μου
προσανεπληρωσαν οι αδελφοι ελθοντες απο μακεδονιας και εν παντι αβαρη υμιν εμαυτον
ετηρησα και τηρησω
¹⁰εστιν αληθεια χριστου εν εμοι οτι η καυχησις αυτη ου φραγησεται εις εμε εν τοις κλιμασιν
της αχαιας
¹¹διατι οτι ουκ αγαπω υμας ο θεος οιδεν
¹²ο δε ποιω και ποιησω ινα εκκοψω την αφορμην των θελοντων αφορμην ινα εν ω
καυχωνται ευρεθωσιν καθως και ημεις
¹³οι γαρ τοιουτοι ψευδαποστολοι εργαται δολιοι μετασχηματιζομενοι εις αποστολους
χριστου
¹⁴και ου θαυμαστον αυτος γαρ ο σατανας μετασχηματιζεται εις αγγελον φωτος
¹⁵ου μεγα ουν ει και οι διακονοι αυτου μετασχηματιζονται ως διακονοι δικαιοσυνης ων
το τελος εσται κατα τα εργα αυτων
¹⁶παλιν λεγω μη τις με δοξη αφρονα ειναι ει δε μηγε καν ως αφρονα δεξασθε με ινα μικρον
τι καγω καυχησωμαι
¹⁷ο λαλω ου λαλω κατα κυριον αλλ ως εν αφροσυνη εν ταυτη τη υποστασει της καυχησεως
¹⁸επει πολλοι καυχωνται κατα την σαρκα καγω καυχησομαι
¹⁹ηδεως γαρ ανεχεσθε των αφρονων φρονιμοι οντες
²⁰ανεχεσθε γαρ ει τις υμας καταδουλοι ει τις κατεσθιει ει τις λαμβανει ει τις επαιρεται ει
τις υμας εις προσωπον δερει
²¹κατα ατιμιαν λεγω ως οτι ημεις ησθενησαμεν εν ω δ αν τις τολμα εν αφροσυνη λεγω
τολμω καγω
²²εβραιοι εισιν καγω ισραηλιται εισιν καγω σπερμα αβρααμ εισιν καγω

- ²³ διακονοι χριστου εισιν παραφρονων λαλω υπερ εγω εν κοποις περισσοτερω εν πληγαις υπερβαλλοντως εν φυλακαις περισσοτερω εν θανατοις πολλακις
- ²⁴ υπο ιουδαιων πεντακις τεσσαρακοντα παρα μιαν ελαβον
- ²⁵ τρις ερραβδισθην απαξ ελιθασθην τρις εναυαγησα νυχθημερον εν τω βυθω πεποιηκα
- ²⁶ οδοιποριας πολλακις κινδυνους ποταμων κινδυνους ληστων κινδυνους εκ γενους κινδυνους εξ εθνων κινδυνους εν πολει κινδυνους εν ερημια κινδυνους εν θαλασση κινδυνους εν ψευδαδελφοις
- ²⁷ εν κοπω και μοχθω εν αγρυπνιαις πολλακις εν λιμω και διψει εν νηστειαις πολλακις εν ψυχει και γυμνοτητι
- ²⁸ χωρις των παρεκτος η επισυστασις μου η καθ ημεραν η μεριμνα πασων των εκκλησιων
- ²⁹ τις ασθενει και ουκ ασθενω τις σκανδαλιζεται και ουκ εγω πυρουμαι
- ³⁰ ει καυχασθαι δει τα της ασθενειας μου καυχησομαι
- ³¹ ο θεος και πατηρ του κυριου ημων ιησου χριστου οιδεν ο ων ευλογητος εις τους αιωνας οτι ου ψευδομαι
- ³² εν δαμασκω ο εθναρχης αρετα του βασιλεως εφρουρει την δαμασκηνων πολιν πιασαι με θελων
- ³³ και δια θυριδος εν σαργανη εχαλασθην δια του τειχους και εξεφυγον τας χειρας αυτου

Chapter 12

¹καυχασθαι δη ου συμφερει μοι ελευσομαι γαρ εις οπτασιας και αποκαλυψεις κυριου
²οιδα ανθρωπον εν χριστω προ ετων δεκατεσσαρων ειτε εν σωματι ουκ οιδα ειτε εκτος του σωματος ουκ οιδα ο θεος οιδεν αρπαγεντα τον τοιουτον εως τριτου ουρανου
³και οιδα τον τοιουτον ανθρωπον ειτε εν σωματι ειτε εκτος του σωματος ουκ οιδα ο θεος οιδεν
⁴οτι ηρπαγη εις τον παραδεισον και ηκουσεν αρρητα ρηματα α ουκ εξον ανθρωπω λαλησαι
⁵υπερ του τοιουτου καυχησομαι υπερ δε εμαυτου ου καυχησομαι ει μη εν ταις ασθeneιας μου
⁶εαν γαρ θελησω καυχησασθαι ουκ εσομαι αφρων αληθειαν γαρ ερω φειδομαι δε μη τις εις εμε λογισηται υπερ ο βλεπει με η ακουει τι εξ εμου
⁷και τη υπερβολη των αποκαλυψεων ινα μη υπεрайρωμαι εδοθη μοι σκολοψ τη σαρκι αγγελος σαταν ινα με κολαφιζη ινα μη υπεрайρωμαι
⁸υπερ τουτου τρις τον κυριον παρεκαλεσα ινα αποστη απ εμου
⁹και ειρηκεν μοι αρκει σοι η χαρις μου η γαρ δυναμις μου εν ασθeneια τελειουται ηδιστα ουν μαλλον καυχησομαι εν ταις ασθeneιας μου ινα επισκηνωση επ εμε η δυναμις του χριστου
¹⁰διο ευδοκω εν ασθeneιας εν υβρεσιν εν αναγκαις εν διωγμοις εν στενοχωριας υπερ χριστου οταν γαρ ασθενω τοτε δυνατος ειμι
¹¹γεγονα αφρων καυχωμενος υμεις με ηναγκασατε εγω γαρ ωφειλον υφ υμων συνιστασθαι ουδεν γαρ υστερησα των υπερ λιαν αποστολων ει και ουδεν ειμι
¹²τα μεν σημεια του αποστολου κατειργασθη εν υμιν εν παση υπομονη εν σημειοις και τερασιν και δυναμεσιν
¹³τι γαρ εστιν ο ηττηθητε υπερ τας λοιπας εκκλησιας ει μη οτι αυτος εγω ου κατεναρκησα υμων χαρισασθε μοι την αδικιαν ταυτην
¹⁴ιδου τριτον ετοιμως εχω ελθειν προς υμας και ου καταναρκησω υμων ου γαρ ζητω τα υμων αλλ υμας ου γαρ οφειλει τα τεκνα τοις γονευσιν θησαυριζειν αλλ οι γονεις τοις τεκνοις
¹⁵εγω δε ηδιστα δαπανησω και εκδαπανηθησομαι υπερ των ψυχων υμων ει και περισσοτερω υμας αγαπων ηττον αγαπωμαι
¹⁶εστω δε εγω ου κατεβαρησα υμας αλλ υπαρχων πανουργος δολω υμας ελαβον
¹⁷μη τινα ων απεσταλκα προς υμας δι αυτου επλεονεκτησα υμας
¹⁸παρεκαλεσα τιτον και συναπεστειλα τον αδελφον μη τι επλεονεκτησεν υμας τιτος ου τω αυτω πνευματι περιεπατησαμεν ου τοις αυτοις ιχνεσιν
¹⁹παλιν δοκειτε οτι υμιν απολογουμεθα κατενωπιον του θεου εν χριστω λαλουμεν τα δε παντα αγαπητοι υπερ της υμων οικοδομης
²⁰φοβουμαι γαρ μηπως ελθων ουχι οιους θελω ευρω υμας καγω ευρεθω υμιν οιον ου θελετε μηπως ερεις ζηλοι θυμοι εριθειαι καταλαλια ψιθυρισμοι φυσισεις ακαταστασιαι

²¹μη παλιν ελθοντα με ταπεινωση ο θεος μου προς υμας και πενθησω πολλους των προημαρτηκοτων και μη μετανοησαντων επι τη ακαθαρσια και πορνεια και ασελγεια η επραξαν

Chapter 13

¹τρίτον τουτο ερχομαι προς υμας επι στοματος δυο μαρτυρων και τριων σταθησεται παν ρημα
²προειρηκα και προλεγω ως παρων το δευτερον και απων νυν γραφω τοις προημαρτηκοσιν και τοις λοιποις πασιν οτι εαν ελθω εις το παλιν ου φεισομαι
³επει δοκιμην ζητειτε του εν εμοι λαλουντος χριστου ος εις υμας ουκ ασθενει αλλα δυνατει εν υμιν
⁴και γαρ ει εσταυρωθη εξ ασθενειας αλλα ζη εκ δυναμεως θεου και γαρ και ημεις ασθενουμεν εν αυτω αλλα ζησομεθα συν αυτω εκ δυναμεως θεου εις υμας
⁵εαυτους πειραζετε ει εστε εν τη πιστει εαυτους δοκιμαζετε η ουκ επιγινωσκετε εαυτους οτι ιησους χριστος εν υμιν εστιν ει μη τι αδοκιμοι εστε
⁶ελπιζω δε οτι γνωσεσθε οτι ημεις ουκ εσμεν αδοκιμοι
⁷ευχομαι δε προς τον θεον μη ποιησαι υμας κακον μηδεν ουχ ινα ημεις δοκιμοι φανωμεν αλλ ινα υμεις το καλον ποιητε ημεις δε ως αδοκιμοι ωμεν
⁸ου γαρ δυναμεθα τι κατα της αληθειας αλλ υπερ της αληθειας
⁹χαιρομεν γαρ οταν ημεις ασθενωμεν υμεις δε δυνατοι ητε τουτο δε και ευχομεθα την υμων καταρτισιν
¹⁰δια τουτο ταυτα απων γραφω ινα παρων μη αποτομως χρησωμαι κατα την εξουσιαν ην εδωκεν μοι ο κυριος εις οικοδομην και ουκ εις καθαιρεσιν
¹¹λοιπον αδελφοι χαιρετε καταρτιζεσθε παρακαλεισθε το αυτο φρονειτε ειρηνευετε και ο θεος της αγαπης και ειρηνης εσται μεθ υμων
¹²ασπασασθε αλληλους εν αγιω φιληματι
¹³ασπαζονται υμας οι αγιοι παντες
¹⁴η χαρις του κυριου ιησου χριστου και η αγαπη του θεου και η κοινωνια του αγιου πνευματος μετα παντων υμων αμην

Galatians

Chapter 1

- ¹παυλος αποστολος ουκ απ ανθρωπων ουδε δι ανθρωπου αλλα δια ιησου χριστου και θεου πατρος του εγειραντος αυτον εκ νεκρων
- ²και οι συν εμοι παντες αδελφοι ταις εκκλησιαις της γαλατιας
- ³χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος και κυριου ημων ιησου χριστου
- ⁴του δοντος εαυτον υπερ των αμαρτιων ημων οπως εξεληται ημας εκ του ενεστωτος αιωνος πονηρου κατα το θελημα του θεου και πατρος ημων
- ⁵ω η δοξα εις τους αιωνας των αιωνων αμην
- ⁶θαυμαζω οτι ουτως ταχεως μετατιθεσθε απο του καλεσαντος υμας εν χαριτι χριστου εις ετερον ευαγγελιον
- ⁷ο ουκ εστιν αλλο ει μη τινες εισιν οι ταρασσοντες υμας και θελοντες μεταστρεψαι το ευαγγελιον του χριστου
- ⁸αλλα και εαν ημεις η αγγελος εξ ουρανου ευαγγελιζηται υμιν παρ ο ευηγγελισαμεθα υμιν αναθεμα εστω
- ⁹ως προειρηκαμεν και αρτι παλιν λεγω ει τις υμας ευαγγελιζεται παρ ο παρελαβετε αναθεμα εστω
- ¹⁰αρτι γαρ ανθρωπους πειθω η τον θεον η ζητω ανθρωποις αρεσκειν ει γαρ ετι ανθρωποις ηρεσκον χριστου δουλος ουκ αν ημην
- ¹¹γνωριζω δε υμιν αδελφοι το ευαγγελιον το ευαγγελισθεν υπ εμου οτι ουκ εστιν κατα ανθρωπον
- ¹²ουδε γαρ εγω παρα ανθρωπου παρελαβον αυτο ουτε εδιδαχθην αλλα δι αποκαλυψεως ιησου χριστου
- ¹³ηκουσατε γαρ την εμην αναστροφην ποτε εν τω ιουδαισμο οτι καθ υπερβολην εδιωκον την εκκλησιαν του θεου και επορθουν αυτην
- ¹⁴και προεκοπτον εν τω ιουδαισμο υπερ πολλους συνηλικιωτας εν τω γενει μου περισσοτερως ζηλωτης υπαρχων των πατρικων μου παραδοσεων
- ¹⁵οτε δε ευδοκησεν ο θεος ο αφορισας με εκ κοιλιας μητρος μου και καλεσας δια της χαριτος αυτου
- ¹⁶αποκαλυψαι τον υιον αυτου εν εμοι ινα ευαγγελιζωμαι αυτον εν τοις εθνεσιν ευθεως ου προσανεθεμην σαρκι και αιματι
- ¹⁷ουδε ανηλθον εις ιεροσολυμα προς τους προ εμου αποστολους αλλ ανηλθον εις αραβιαν και παλιν υπεστρεψα εις δαμασκον
- ¹⁸επειτα μετα ετη τρια ανηλθον εις ιεροσολυμα ιστορησαι πετρον και επεμεινα προς αυτον ημερας δεκαπεντε
- ¹⁹ετερον δε των αποστολων ουκ ειδον ει μη ιακωβον τον αδελφον του κυριου
- ²⁰α δε γραφω υμιν ιδου ενωπιον του θεου οτι ου ψευδομαι
- ²¹επειτα ηλθον εις τα κλιματα της συριας και της κιλικιας
- ²²ημην δε αγνοουμενος τω προσωπω ταις εκκλησιαις της ιουδαιας ταις εν χριστω

²³μονον δε ακουοντες ησαν οτι ο διωκων ημας ποτε νυν ευαγγελιζεται την πιστιν ην ποτε
επορθει

²⁴και εδοξαζον εν εμοι τον θεον

Chapter 2

¹επειτα δια δεκατεσσαρων ετων παλιν ανεβην εις ιεροσολυμα μετα βαρναβα συμπαραλαβων και τιτον
²ανεβην δε κατα αποκαλυψιν και ανεθεμην αυτοις το ευαγγελιον ο κηρυσσω εν τοις εθνεσιν κατ ιδιαν δε τοις δοκουσιν μηπως εις κενον τρεχω η εδραμον
³αλλ ουδε τιτος ο συν εμοι ελληνων ηναγκασθη περιτμηθηναι
⁴δια δε τους παρεισακτους ψευδαδελφους οιτινες παρεισηλθον κατασκοπησαι την ελευθεριαν ημων ην εχομεν εν χριστω ιησου ινα ημας καταδουλωσωνται
⁵οις ουδε προς ωραν ειξαμεν τη υποταγη ινα η αληθεια του ευαγγελιου διαμεινη προς υμας
⁶απο δε των δοκουντων ειναι τι οποιοι ποτε ησαν ουδεν μοι διαφερει προσωπον θεος ανθρωπου ου λαμβανει εμοι γαρ οι δοκουντες ουδεν προσανεθεντο
⁷αλλα τουναντιον ιδοντες οτι πεπιστευμαι το ευαγγελιον της ακροβυστιας καθως πετρος της περιτομης
⁸ο γαρ ενεργησας πετρω εις αποστολην της περιτομης ενηργησεν και εμοι εις τα εθνη
⁹και γνοντες την χαριν την δοθεισαν μοι ιακωβος και κηφας και ιωαννης οι δοκουντες στυλοι ειναι δεξιας εδωκαν εμοι και βαρναβα κοινωνιας ινα ημεις εις τα εθνη αυτοι δε εις την περιτομην
¹⁰μονον των πτωχων ινα μνημονευωμεν ο και εσπουδασα αυτο τουτο ποιησαι
¹¹οτε δε ηλθεν πετρος εις αντιοχειαν κατα προσωπον αυτω αντεστην οτι κατεγνωσμενος ην
¹²προ του γαρ ελθειν τινας απο ιακωβου μετα των εθνων συνησθιεν οτε δε ηλθον υπεστελλεν και αφωριζεν εαυτον φοβουμενος τους εκ περιτομης
¹³και συνυπεκριθησαν αυτω και οι λοιποι ιουδαιοι ωστε και βαρναβας συναπηχθη αυτων τη υποκρισει
¹⁴αλλ οτε ειδον οτι ουκ ορθοποδουσιν προς την αληθειαν του ευαγγελιου ειπον τω πετρω εμπροσθεν παντων ει συ ιουδαιος υπαρχων εθνικως ζης και ουκ ιουδαιικως τι τα εθνη αναγκαζεις ιουδαιζειν
¹⁵ημεις φυσει ιουδαιοι και ουκ εξ εθνων αμαρτωλοι
¹⁶ειδοτες οτι ου δικαιουται ανθρωπος εξ εργαων νομου εαν μη δια πιστεως ιησου χριστου και ημεις εις χριστον ιησουν επιστευσαμεν ινα δικαιωθωμεν εκ πιστεως χριστου και ουκ εξ εργαων νομου διοτι ου δικαιωθησεται εξ εργαων νομου πασα σαρξ
¹⁷ει δε ζητουντες δικαιωθηναι εν χριστω ευρεθημεν και αυτοι αμαρτωλοι αρα χριστος αμαρτιας διακονος μη γενοιτο
¹⁸ει γαρ α κατελυσα ταυτα παλιν οικοδομω παραβατην εμαυτον συνιστημι
¹⁹εγω γαρ δια νομου νομω απεθανον ινα θεω ζησω
²⁰χριστω συνεσταυρωμαι ζω δε ουκετι εγω ζη δε εν εμοι χριστος ο δε νυν ζω εν σαρκι εν πιστει ζω τη του υιου του θεου του αγαπησαντος με και παραδοντος εαυτον υπερ εμου

²¹ ουκ αθετω την χαριν του θεου ει γαρ δια νομου δικαιοσυνη αρα χριστος δωρεαν απεθανεν

Chapter 3

¹ω ανοητοι γαλαται τις υμας εβασκανεν τη αληθεια μη πειθεσθαι οις κατ οφθαλμους ιησους χριστος προεγραφη εν υμιν εσταυρωμενος
²τουτο μονον θελω μαθειν αφ υμων εξ εργαων νομου το πνευμα ελαβετε η εξ ακοης πιστεωσ
³ουτως ανοητοι εστε εναρξαμενοι πνευματι νυν σαρκι επιτελεισθε
⁴τοσαυτα επαθετε εικη ειγε και εικη
⁵ο ουν επιχορηγων υμιν το πνευμα και ενεργων δυναμεις εν υμιν εξ εργαων νομου η εξ ακοης πιστεωσ
⁶καθως αβρααμ επιστευσεν τω θεω και ελογισθη αυτω εις δικαιοσυνην
⁷γινωσκετε αρα οτι οι εκ πιστεωσ ουτοι εισιν υιοι αβρααμ
⁸προιδουσα δε η γραφη οτι εκ πιστεωσ δικαιοι τα εθνη ο θεος προευηγγελισατο τω αβρααμ οτι ευλογηθησονται εν σοι παντα τα εθνη
⁹ωστε οι εκ πιστεωσ ευλογουνται συν τω πιστω αβρααμ
¹⁰οσοι γαρ εξ εργαων νομου εισιν υπο καταραν εισιν γεγραπται γαρ επικαταρατος πασ οσ ουκ εμμενει εν πασιν τοις γεγραμμενοις εν τω βιβλιω του νομου του ποιησαι αυτα
¹¹οτι δε εν νομω ουδεις δικαιουται παρα τω θεω δηλον οτι ο δικαιος εκ πιστεωσ ζησεται
¹²ο δε νομος ουκ εστιν εκ πιστεωσ αλλ ο ποιησας αυτα ανθρωπος ζησεται εν αυτοις
¹³χριστος ημασ εξηγορασεν εκ της καταρας του νομου γενομενος υπερ ημων καταρα γεγραπται γαρ επικαταρατος πασ ο κρεμαμενος επι ξυλου
¹⁴ινα εις τα εθνη η ευλογια του αβρααμ γενηται εν χριστω ιησου ινα την επαγγελιαν του πνευματος λαβωμεν δια της πιστεωσ
¹⁵αδελφοι κατα ανθρωπον λεγω ομως ανθρωπου κεκυρωμενην διαθηκην ουδεις αθετει η επιδιασσεται
¹⁶τω δε αβρααμ ερρηθησαν αι επαγγελιαι και τω σπερματι αυτου ου λεγει και τοις σπερμασιν ως επι πολλων αλλ ως εφ ενος και τω σπερματι σου οσ εστιν χριστος
¹⁷τουτο δε λεγω διαθηκην προκεκυρωμενην υπο του θεου εις χριστον ο μετα ετη τετρακοσια και τριακοντα γεγωνσ νομος ουκ ακυροι εις το καταργησαι την επαγγελιαν
¹⁸ει γαρ εκ νομου η κληρονομια ουκετι εξ επαγγελιασ τω δε αβρααμ δι επαγγελιασ κεχαρισται ο θεος
¹⁹τι ουν ο νομος των παραβασεων χαριν προσετεθη αχρις ου ελθη το σπερμα ω επηγγελται διαταγεισ δι αγγελων εν χειρι μεσιτου
²⁰ο δε μεσιτης ενος ουκ εστιν ο δε θεος εις εστιν
²¹ο ουν νομος κατα των επαγγελιων του θεου μη γενοιτο ει γαρ εδοθη νομος ο δυναμενος ζωοποιησαι οντως αν εκ νομου ην η δικαιοσυνη
²²αλλα συνεκλεισεν η γραφη τα παντα υπο αμαρτιαν ινα η επαγγελια εκ πιστεωσ ιησου χριστου δοθη τοις πιστευουσιν
²³προ του δε ελθειν την πιστιν υπο νομον εφρουρουμεθα συγκεκλεισμενοι εις την μελλουσαν πιστιν αποκαλυφθηναι

- ²⁴ ωστε ο νομος παιδαγωγος ημων γεγονεν εις χριστον ινα εκ πιστεως δικαιωθωμεν
²⁵ ελθουσης δε της πιστεως ουκετι υπο παιδαγωγον εσμεν
²⁶ παντες γαρ υιοι θεου εστε δια της πιστεως εν χριστω ιησου
²⁷ οσοι γαρ εις χριστον εβαπτισθητε χριστον ενεδυσασθε
²⁸ ουκ ενι ιουδαιος ουδε ελλην ουκ ενι δουλος ουδε ελευθερος ουκ ενι αρσεν και θηλυ
παντες γαρ υμεις εις εστε εν χριστω ιησου
²⁹ ει δε υμεις χριστου αρα του αβρααμ σπερμα εστε και κατ επαγγελιαν κληρονομοι

Chapter 4

- ¹λέγω δε εφ' ὅσον χρόνον ὁ κληρονομὸς νηπιὸς ἐστὶν οὐδὲν διαφέρει δούλου κυρίου πάντων ὧν
- ²ἀλλὰ ὑπὸ ἐπιτροπῶν ἐστὶν καὶ οἰκονομοὺς ἀχρι τῆς προθεσμίας τοῦ πατρὸς
- ³οὕτως καὶ ἡμεῖς ὅτε ἡμεῖν νηπιοὶ ὑπὸ τὰ στοιχεῖα τοῦ κόσμου ἡμεῖν δεδουλωμένοι
- ⁴ὅτε δὲ ἦλθεν τὸ πληρῶμα τοῦ χρόνου ἐξαπέστειλεν ὁ θεὸς τὸν υἱὸν αὐτοῦ γενομένον ἐκ γυναικὸς γενομένον ὑπὸ νόμον
- ⁵ἵνα τοὺς ὑπὸ νόμον ἐξαγοράσῃ ἵνα τὴν υιοθεσίαν ἀπολάβωμεν
- ⁶ὅτι δεῦτε υἱοὶ ἐξαπέστειλεν ὁ θεὸς τὸ πνεῦμα τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν κράζον ἄββα ὁ πατήρ
- ⁷ὥστε οὐκετι εἶ δούλος ἀλλ' υἱὸς εἶ δεῦ υἱὸς καὶ κληρονομὸς θεοῦ διὰ χριστοῦ
- ⁸ἀλλὰ τότε μὲν οὐκ εἰδοτὲς θεοῦ ἐδουλεύσατε τοῖς μὴ φύσει οὖσιν θεοῖς
- ⁹νῦν δὲ γινόντες θεοῦ μαλλὸν δεῦ γνωσθέντες ὑπὸ θεοῦ πῶς ἐπιστρέφετε πάλιν ἐπὶ τὰ ἀσθενῆ καὶ πτωχὰ στοιχεῖα οἷς πάλιν ἀνωθεν δουλεῦν θέλετε
- ¹⁰ἡμέρας παρατηρήσθε καὶ μηνᾶς καὶ καιροὺς καὶ ἐνιαυτοὺς
- ¹¹φοβουμὶ ὑμᾶς μήπως εἰκὴ κεκοπιακὰ εἰς ὑμᾶς
- ¹²γίνεσθε ὡς ἐγὼ ὅτι καγὼ ὡς ὑμεῖς ἀδελφοί μοι δεομαὶ ὑμῶν οὐδὲν με ἠδίκησατε
- ¹³οἴδατε δὲ ὅτι δι' ἀσθενεῖαν τῆς σαρκὸς εὐηγγελισάμην ὑμῖν τὸ πρότερον
- ¹⁴καὶ τὸν πειρασμὸν μου τὸν ἐν τῇ σαρκὶ μου οὐκ ἐξουθενήσατε οὐδὲ ἐξέπτυσάτε ἀλλ' ὡς ἀγγέλων θεοῦ ἐδέξασθε με ὡς χριστὸν ἰησοῦν
- ¹⁵τίς οὖν ἦν ὁ μακαρισμὸς ὑμῶν μαρτυρῶ γὰρ ὑμῖν ὅτι εἰ δυνατόν τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν ἐξορυξάντες ἀν' ἐδῶκατέ μοι
- ¹⁶ὥστε ἐχθρὸς ὑμῶν γέγονα ἀληθεῶν ὑμῖν
- ¹⁷ζηλοῦσιν ὑμᾶς οὐ καλῶς ἀλλὰ ἐκκλίσαι ὑμᾶς θέλουσιν ἵνα αὐτοὺς ζηλοῦτε
- ¹⁸καλὸν δὲ τὸ ζηλοῦσθαι ἐν καλῶ πάντοτε καὶ μὴ μόνον ἐν τῷ παρεῖναι με πρὸς ὑμᾶς
- ¹⁹τέκνια μου οὖς πάλιν ὠδίνω ἀχρὶς οὐ μορφωθὴ χριστὸς ἐν ὑμῖν
- ²⁰ἠθέλον δὲ παρεῖναι πρὸς ὑμᾶς ἀρτί καὶ ἀλλάξαι τὴν φωνὴν μου ὅτι ἀπορούμαι ἐν ὑμῖν
- ²¹λέγετέ μοι οἱ ὑπὸ νόμον θέλοντες εἶναι τὸν νόμον οὐκ ἀκούετε
- ²²γεγραπταὶ γὰρ ὅτι ἀβραάμ δύο υἱοὺς ἐσχεν ἓνα ἐκ τῆς παιδίσκης καὶ ἓνα ἐκ τῆς ἐλευθερᾶς
- ²³ἀλλ' ὁ μὲν ἐκ τῆς παιδίσκης κατὰ σάρκα γεγεννηταὶ ὁ δὲ ἐκ τῆς ἐλευθερᾶς διὰ τῆς ἐπαγγελίας
- ²⁴αὐτὴ ἐστὶν ἀλληγορούμενα αὐταὶ γὰρ εἰσὶν αἱ δύο διαθήκαι μία μὲν ἀπο ὀρους σινᾶ εἰς δουλείαν γεννώσα ἡτις ἐστὶν ἀγὰρ
- ²⁵τὸ γὰρ ἀγὰρ σινᾶ ὄρος ἐστὶν ἐν τῇ ἀραβίᾳ συστοιχεῖ δὲ τῇ νῦν ἱερουσαλὴμ δουλεῖ δὲ μετὰ τῶν τέκνων αὐτῆς
- ²⁶ἡ δὲ ἀνω ἱερουσαλὴμ ἐλευθερὰ ἐστὶν ἡτις ἐστὶν μήτηρ πάντων ἡμῶν

²⁷ γεγραπται γαρ ευφρανθητι στειρα η ου τικτουσα ρηξον και βοησον η ουκ ωδινουσα οτι
πολλα τα τεκνα της ερημου μαλλον η της εχουσης τον ανδρα

²⁸ ημεις δε αδελφοι κατα ισαακ επαγγελιας τεκνα εσμεν

²⁹ αλλ ωσπερ τοτε ο κατα σαρκα γεννηθεις εδωκεν τον κατα πνευμα ουτως και νυν

³⁰ αλλα τι λεγει η γραφη εκβαλε την παιδισκην και τον υιον αυτης ου γαρ μη κληρονομηση
ο υιος της παιδισκης μετα του υιου της ελευθερας

³¹ αρα αδελφοι ουκ εσμεν παιδισκης τεκνα αλλα της ελευθερας

Chapter 5

- ¹τη ελευθερια ουν η χριστος ημας ηλευθερωσεν στηκετε και μη παλιν ζυγω δουλειας ενεχεσθε
- ²ιδε εγω παυλος λεγω υμιν οτι εαν περιτεμνησθε χριστος υμας ουδεν ωφελησει
- ³μαρτυρομαι δε παλιν παντι ανθρωπω περιτεμνομενω οτι οφειλετης εστιν ολον τον νομον ποιησαι
- ⁴κατηργηθητε απο του χριστου οιτινες εν νομω δικαιουσθε της χαριτος εξεπεσατε
- ⁵ημεις γαρ πνευματι εκ πιστεωσ ελπιδα δικαιοσυνης απεκδεχομεθα
- ⁶εν γαρ χριστω ιησου ουτε περιτομη τι ισχυει ουτε ακροβυστια αλλα πιστις δι αγαπης ενεργουμενη
- ⁷ετρεχετε καλως τις υμας ανεκοψεν τη αληθεια μη πειθεσθαι
- ⁸η πεισμονη ουκ εκ του καλουντος υμας
- ⁹μικρα ζυμη ολον το φυραμα ζυμοι
- ¹⁰εγω πεποιθα εις υμας εν κυριω οτι ουδεν αλλο φρονησετε ο δε ταρασσων υμας βαστασει το κριμα οστις αν η
- ¹¹εγω δε αδελφοι ει περιτομην ετι κηρυσσω τι ετι διωκομαι αρα κατηργηται το σκανδαλον του σταυρου
- ¹²οφελον και αποκοψονται οι αναστατουντες υμας
- ¹³υμεις γαρ επ ελευθερια εκληθητε αδελφοι μονον μη την ελευθεριαν εις αφορμην τη σαρκι αλλα δια της αγαπης δουλευετε αλληλοις
- ¹⁴ο γαρ πασ νομος εν ενι λογω πληρουται εν τω αγαπησεις τον πλησιον σου ως εαυτον
- ¹⁵ει δε αλληλους δακνετε και κατεσθιετε βλεπετε μη υπο αλληλων αναλωθητε
- ¹⁶λεγω δε πνευματι περιπατειτε και επιθυμιαν σαρκος ου μη τελεσητε
- ¹⁷η γαρ σαρξ επιθυμει κατα του πνευματος το δε πνευμα κατα της σαρκος ταυτα δε αντικειται αλληλοις ινα μη α αν θελητε ταυτα ποιητε
- ¹⁸ει δε πνευματι αγεσθε ουκ εστε υπο νομον
- ¹⁹φανερα δε εστιν τα εργα της σαρκος ατινα εστιν μοιχεια πορνεια ακαθαρσια ασελγεια
- ²⁰ειδωλολατρευια φαρμακεια εχθραι ερεις ζηλοι θυμοι εριθειαι διχοστασιαι αιρεσεις
- ²¹φθονοι φονοι μεθαι κωμοι και τα ομοια τουτοις α προλεγω υμιν καθως και προειπον οτι οι τα τοιαυτα πρασσοντες βασιλειαν θεου ου κληρονομησουσιν
- ²²ο δε καρπος του πνευματος εστιν αγαπη χαρα ειρηνη μακροθυμια χρηστοτης αγαθωσυνη πιστις
- ²³πραοτης εγκρατεια κατα των τοιουτων ουκ εστιν νομος
- ²⁴οι δε του χριστου την σαρκα εσταυρωσαν συν τοις παθημασιν και ταισ επιθυμιασ
- ²⁵ει ζωμεν πνευματι πνευματι και στοιχωμεν
- ²⁶μη γινωμεθα κενοδοξοι αλληλους προκαλουμενοι αλληλοις φθονουντες

Chapter 6

- ¹αδελφοι εαν και προληφθη ανθρωπος εν τινι παραπτωματι υμεις οι πνευματικοι καταρτιζετε τον τοιουτον εν πνευματι πραοτητος σκοπων σεαυτον μη και συ πειρασθης
- ²αλληλων τα βαρη βασταζετε και ουτως αναπληρωσατε τον νομον του χριστου
- ³ει γαρ δοκει τις ειναι τι μηδεν ων εαυτον φρεναπατα
- ⁴το δε εργον εαυτου δοκιμαζετω εκαστος και τοτε εις εαυτον μονον το καυχημα εξει και ουκ εις τον ετερον
- ⁵εκαστος γαρ το ιδιον φορτιον βαστασει
- ⁶κοινωνειτω δε ο κατηχουμενος τον λογον τω κατηχουντι εν πασιν αγαθοις
- ⁷μη πλανασθε θεος ου μυκτηριζεται ο γαρ εαν σπειρη ανθρωπος τουτο και θερισει
- ⁸οτι ο σπειρων εις την σαρκα εαυτου εκ της σαρκος θερισει φθοραν ο δε σπειρων εις το πνευμα εκ του πνευματος θερισει ζωνη αιωνιον
- ⁹το δε καλον ποιουντες μη εκκακωμεν καιρω γαρ ιδιω θερισομεν μη εκλυομενοι
- ¹⁰αρα ουν ως καιρον εχομεν εργαζωμεθα το αγαθον προς παντας μαλιστα δε προς τους οικειους της πιστεως
- ¹¹ιδετε πληκοις υμιν γραμμασιν εγραψα τη εμη χειρι
- ¹²οσοι θελουσιν ευπροσωπησαι εν σαρκι ουτοι αναγκαζουσιν υμας περιτεμενεσθαι μονον ινα μη τω σταυρω του χριστου διωκωνται
- ¹³ουδε γαρ οι περιτεμνομενοι αυτοι νομον φυλασσουσιν αλλα θελουσιν υμας περιτεμενεσθαι ινα εν τη υμετερα σαρκι καυχησωνται
- ¹⁴εμοι δε μη γενοιτο καυχασθαι ει μη εν τω σταυρω του κυριου ημων ιησου χριστου δι ου εμοι κοσμος εσταυρωται καγω τω κοσμω
- ¹⁵εν γαρ χριστω ιησου ουτε περιτομη τι ισχυει ουτε ακροβυστια αλλα καινη κτισις
- ¹⁶και οσοι τω κανονι τουτω στοιχησουσιν ειρηνη επ αυτους και ελεος και επι τον ισραηλ του θεου
- ¹⁷του λοιπου κοπους μοι μηδεις παρεχετω εγω γαρ τα στιγματα του κυριου ιησου εν τω σωματι μου βασταζω
- ¹⁸η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μετα του πνευματος υμων αδελφοι αμην

Ephesians

Chapter 1

¹παυλος αποστολος ιησου χριστου δια θεληματος θεου τοις αγιοις τοις ουσιν εν εφεσω και πιστοις εν χριστω ιησου
²χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
³ευλογητος ο θεος και πατηρ του κυριου ημων ιησου χριστου ο ευλογησας ημας εν παση ευλογια πνευματικη εν τοις επουρανοις εν χριστω
⁴καθως εξελεξατο ημας εν αυτω προ καταβολης κοσμου ειναι ημας αγιους και αμωμους κατενωπιον αυτου εν αγαπη
⁵προορισας ημας εις υιοθεσιαν δια ιησου χριστου εις αυτον κατα την ευδοκιαν του θεληματος αυτου
⁶εις επαινον δοξης της χαριτος αυτου εν η εχαριτωσεν ημας εν τω ηγαπημενω
⁷εν ω εχομεν την απολυτρωσιν δια του αιματος αυτου την αφεσιν των παραπτωματων κατα τον πλουτον της χαριτος αυτου
⁸ης επερισσευσεν εις ημας εν παση σοφια και φρονησει
⁹γνωρισας ημιν το μυστηριον του θεληματος αυτου κατα την ευδοκιαν αυτου ην προεθετο εν αυτω
¹⁰εις οικονομιαν του πληρωματος των καιρων ανακεφαλαιωσασθαι τα παντα εν τω χριστω τα τε εν τοις ουρανοις και τα επι της γης
¹¹εν αυτω εν ω και εκληρωθημεν προορισθεντες κατα προθεσιν του τα παντα ενεργουντος κατα την βουλην του θεληματος αυτου
¹²εις το ειναι ημας εις επαινον της δοξης αυτου τους προηλπικοτας εν τω χριστω
¹³εν ω και υμεις ακουσαντες τον λογον της αληθειας το ευαγγελιον της σωτηριας υμων εν ω και πιστευσαντες εσφραγισθητε τω πνευματι της επαγγελιας τω αγιω
¹⁴ος εστιν αρραβων της κληρονομιας ημων εις απολυτρωσιν της περιποιησεως εις επαινον της δοξης αυτου
¹⁵δια τουτο καγω ακουσας την καθ υμας πιστιν εν τω κυριω ιησου και την αγαπην την εις παντας τους αγιους
¹⁶ου παυομαι ευχαριστων υπερ υμων μνειαν υμων ποιουμενος επι των προσευχων μου
¹⁷ινα ο θεος του κυριου ημων ιησου χριστου ο πατηρ της δοξης δωη υμιν πνευμα σοφιας και αποκαλυψεως εν επιγνωσει αυτου
¹⁸πεφωτισμενους τους οφθαλμους της διανοιας υμων εις το ειδεναι υμας τις εστιν η ελπις της κλησεως αυτου και τις ο πλουτος της δοξης της κληρονομιας αυτου εν τοις αγιοις
¹⁹και τι το υπερβαλλον μεγαθος της δυναμεως αυτου εις ημας τους πιστευοντας κατα την ενεργειαν του κρατους της ισχυος αυτου
²⁰ην ενηργησεν εν τω χριστω εγειρας αυτον εκ νεκρων και εκαθισεν εν δεξια αυτου εν τοις επουρανοις
²¹υπερανω πασης αρχης και εξουσιας και δυναμεως και κυριοτητος και παντος ονοματος ονομαζομενου ου μονον εν τω αιωνι τουτω αλλα και εν τω μελλοντι

²² και παντα υπεταξεν υπο τους ποδας αυτου και αυτον εδωκεν κεφαλην υπερ παντα τη εκκλησια

²³ ητις εστιν το σωμα αυτου το πληρωμα του παντα εν πασιν πληρουμενου

Chapter 2

- ¹ και υμας οντας νεκρους τοις παραπτωμασιν και ταις αμαρτιαις
² εν αις ποτε περιπατησατε κατα τον αιωνα του κοσμου τουτου κατα τον αρχοντα της εξουσιας του αερος του πνευματος του νυν ενεργουντος εν τοις υιοις της απειθειας
³ εν οις και ημεις παντες ανεστραφημεν ποτε εν ταις επιθυμιαις της σαρκος ημων ποιουντες τα θεληματα της σαρκος και των διανοιων και ημεν τεκνα φυσει οργης ως και οι λοιποι
⁴ ο δε θεος πλουσιος ων εν ελεει δια την πολλην αγαπην αυτου ην ηγαπησεν ημας
⁵ και οντας ημας νεκρους τοις παραπτωμασιν συνεζωοποιησεν τω χριστω χαριτι εστε σεσωσμενοι
⁶ και συνηγειρεν και συνεκαθισεν εν τοις επουρανιοις εν χριστω ιησου
⁷ ινα ενδειξηται εν τοις αιωσιν τοις επερχομενοις τον υπερβαλλοντα πλουτον της χαριτος αυτου εν χρηστοτητι εφ ημας εν χριστω ιησου
⁸ τη γαρ χαριτι εστε σεσωσμενοι δια της πιστεως και τουτο ουκ εξ υμων θεου το δωρον
⁹ ουκ εξ εργαων ινα μη τις καυχησηται
¹⁰ αυτου γαρ εσμεν ποιημα κτισθεντες εν χριστω ιησου επι εργασις αγαθοις οις προητοιμασεν ο θεος ινα εν αυτοις περιπατησωμεν
¹¹ διο μνημονευετε οτι υμεις ποτε τα εθνη εν σαρκι οι λεγομενοι ακροβυστια υπο της λεγομενης περιτομης εν σαρκι χειροποιητου
¹² οτι ητε εν τω καιρω εκεινω χωρις χριστου απηλλοτριωμενοι της πολιτειας του ισραηλ και ξενοι των διαθηκων της επαγγελιας ελπιδα μη εχοντες και αθεοι εν τω κοσμω
¹³ νυνι δε εν χριστω ιησου υμεις οι ποτε οντες μακραν εγγυς εγενηθητε εν τω αιματι του χριστου
¹⁴ αυτος γαρ εστιν η ειρηνη ημων ο ποιησας τα αμφοτερα εν και το μεσοτοιχον του φραγμου λυσας
¹⁵ την εχθραν εν τη σαρκι αυτου τον νομον των εντολων εν δογμασιν καταργησας ινα τους δυο κτιση εν εαυτω εις ενα καινον ανθρωπον ποιων ειρηνην
¹⁶ και αποκαταλλαξη τους αμφοτερους εν ενι σωματι τω θεω δια του σταυρου αποκτεινας την εχθραν εν αυτω
¹⁷ και ελθων ευηγγελισατο ειρηνην υμιν τοις μακραν και τοις εγγυς
¹⁸ οτι δι αυτου εχομεν την προσαγωγην οι αμφοτεροι εν ενι πνευματι προς τον πατερα
¹⁹ αρα ουν ουκετι εστε ξενοι και παροικοι αλλα συμπολιται των αγιων και οικειοι του θεου
²⁰ εποικοδομηθεντες επι τω θεμελιω των αποστολων και προφητων οντος ακρογωνιαιου αυτου ιησου χριστου
²¹ εν ω πασα η οικοδομη συναρμολογουμενη αυξει εις ναον αγιον εν κυριω
²² εν ω και υμεις συνοικοδομεισθε εις κατοικητηριον του θεου εν πνευματι

Chapter 3

¹τουτου χαριν εγω παυλος ο δεσμιος του χριστου ιησου υπερ υμων των εθνων
²ειγε ηκουσατε την οικονομιαν της χαριτος του θεου της δοθεισης μοι εις υμας
³οτι κατα αποκαλυψιν εγνωρισεν μοι το μυστηριον καθως προεγραψα εν ολιγω
⁴προς ο δυνασθε αναγινωσκοντες νοησαι την συνεσιν μου εν τω μυστηριω του χριστου
⁵ο εν ετεραις γενεαις ουκ εγνωρισθη τοις υιοις των ανθρωπων ως νυν απεκαλυφθη τοις
αγιοις αποστολοις αυτου και προφηταις εν πνευματι
⁶ειναι τα εθνη συγκληρονομα και συσσωμα και συμμετοχα της επαγγελιας αυτου εν τω
χριστω δια του ευαγγελιου
⁷ου εγενομην διακονος κατα την δωρεαν της χαριτος του θεου την δοθεισαν μοι κατα την
ενεργειαν της δυναμεως αυτου
⁸εμοι τω ελαχιστοτερω παντων των αγιων εδοθη η χαρις αυτη εν τοις εθνεσιν
ευαγγελισασθαι τον ανεξιχνιαστον πλουτον του χριστου
⁹και φωτισαι παντας τις η κοινωνια του μυστηριου του αποκεκρυμμενου απο των αιωνων
εν τω θεω τω τα παντα κτισαντι δια ιησου χριστου
¹⁰ινα γνωρισθη νυν ταις αρχαις και ταις εξουσαις εν τοις επουρανιοις δια της εκκλησιας
η πολυποικιλος σοφια του θεου
¹¹κατα προθεσιν των αιωνων ην εποιησεν εν χριστω ιησου τω κυριω ημων
¹²εν ω εχομεν την παρρησιαν και την προσαγωγην εν πεποιθησει δια της πιστεως αυτου
¹³διο αιτουμαι μη εκκακειν εν ταις θλιψεσιν μου υπερ υμων ητις εστιν δοξα υμων
¹⁴τουτου χαριν καμπτω τα γονατα μου προς τον πατερα του κυριου ημων ιησου χριστου
¹⁵εξ ου πασα πατρια εν ουρανοις και επι γης ονομαζεται
¹⁶ινα δωη υμιν κατα τον πλουτον της δοξης αυτου δυναμει κραταιωθηναι δια του
πνευματος αυτου εις τον εσω ανθρωπον
¹⁷κατοικησαι τον χριστον δια της πιστεως εν ταις καρδιαις υμων
¹⁸εν αγαπη ερριζωμενοι και τεθεμελιωμενοι ινα εξισχυσητε καταλαβεσθαι συν πασιν τοις
αγιοις τι το πλατος και μηκος και βαθος και υψος
¹⁹γνωσαι τε την υπερβαλλουσαν της γνωσεως αγαπην του χριστου ινα πληρωθητε εις παν
το πληρωμα του θεου
²⁰τω δε δυναμενω υπερ παντα ποιησαι υπερ εκ περισσου ων αιτουμεθα η νοουμεν κατα
την δυναμιν την ενεργουμενην εν ημιν
²¹αυτω η δοξα εν τη εκκλησια εν χριστω ιησου εις πασας τας γενεας του αιωνος των
αιωνων αμην

Chapter 4

- ¹ παρακαλω ουν υμας εγω ο δεσμιος εν κυριω αξιως περιπατησαι της κλησεως ης εκληθητε
- ² μετα πασης ταπεινοφροσυνης και πραοτητος μετα μακροθυμιας ανεχομενοι αλληλων εν αγαπη
- ³ σπουδαζοντες τηρειν την ενοτητα του πνευματος εν τω συνδεσμω της ειρηνης
- ⁴ εν σωμα και εν πνευμα καθως και εκληθητε εν μια ελπιδι της κλησεως υμων
- ⁵ εις κυριος μια πιστις εν βαπτισμα
- ⁶ εις θεος και πατηρ παντων ο επι παντων και δια παντων και εν πασιν υμιν
- ⁷ ενι δε εκαστω ημων εδοθη η χαρις κατα το μετρον της δωρεας του χριστου
- ⁸ διο λεγει αναβας εις υψος ηχηαλωτευσεν αιχηαλωσιαν και εδωκεν δοματα τοις ανθρωποις
- ⁹ το δε ανεβη τι εστιν ει μη οτι και κατεβη πρωτον εις τα κατωτερα μερη της γης
- ¹⁰ ο καταβας αυτος εστιν και ο αναβας υπερανω παντων των ουρανων ινα πληρωση τα παντα
- ¹¹ και αυτος εδωκεν τους μεν αποστολους τους δε προφητας τους δε ευαγγελιστας τους δε ποιμενας και διδασκαλους
- ¹² προς τον καταρτισμον των αγιων εις εργον διακονιας εις οικοδομην του σωματος του χριστου
- ¹³ μεχρι κατανησωμεν οι παντες εις την ενοτητα της πιστεως και της επιγνωσεως του υιου του θεου εις ανδρα τελειον εις μετρον ηλικιας του πληρωματος του χριστου
- ¹⁴ ινα μηκετι ωμεν νηπιοι κλυδωνιζομενοι και περιφερομενοι παντι ανεμω της διδασκαλιας εν τη κυβεια των ανθρωπων εν πανουργια προς την μεθοδειαν της πλανης
- ¹⁵ αληθευοντες δε εν αγαπη αυξησωμεν εις αυτον τα παντα ος εστιν η κεφαλη ο χριστος
- ¹⁶ εξ ου παν το σωμα συναρμολογουμενον και συμβιβαζομενον δια πασης αφης της επιχορηγιας κατ ενεργειαν εν μετρω ενος εκαστου μερους την αυξησιν του σωματος ποιειται εις οικοδομην εαυτου εν αγαπη
- ¹⁷ τουτο ουν λεγω και μαρτυρομαι εν κυριω μηκετι υμας περιπατειν καθως και τα λοιπα εθνη περιπατει εν ματαιοτητι του νοος αυτων
- ¹⁸ εσκοτισμενοι τη διανοια οντες απηλλοτριωμενοι της ζωης του θεου δια την αγνοιαν την ουσαν εν αυτοις δια την πωρωσιν της καρδιας αυτων
- ¹⁹ οιτινες απηληγηκοτες εαυτους παρεδωκαν τη ασελγεια εις εργασιαν ακαθαρσιας πασης εν πλεονεξια
- ²⁰ υμεις δε ουχ ουτως εμαθετε τον χριστον
- ²¹ ειγε αυτον ηκουσατε και εν αυτω εδιδαχθητε καθως εστιν αληθεια εν τω ιησου
- ²² αποθεσθαι υμας κατα την προτερην αναστροφην τον παλαιον ανθρωπον τον φθειρομενον κατα τας επιθυμιας της απατης
- ²³ ανανεουσθαι δε τω πνευματι του νοος υμων

- ²⁴ και ενδυσασθαι τον καινον ανθρωπον τον κατα θεον κτισθεντα εν δικαιοσυνη και οσιοτητι της αληθειας
- ²⁵ διο αποθεμενοι το ψευδος λαλειτε αληθειαν εκαστος μετα του πλησιον αυτου οτι εσμεν αλληλων μελη
- ²⁶ οργιζεσθε και μη αμαρτανετε ο ηλιος μη επιδυετω επι τω παροργισμω υμων
- ²⁷ μητε διδοτε τοπον τω διαβολω
- ²⁸ ο κλεπτων μηκετι κλεπτετω μαλλον δε κοπιατω εργαζομενος το αγαθον ταις χερσιν ινα εχη μεταδιδοναι τω χρειαν εχοντι
- ²⁹ πας λογος σαπρος εκ του στοματος υμων μη εκπορευεσθω αλλ ει τις αγαθος προς οικοδομην της χρειας ινα δω χαριν τοις ακουουσιν
- ³⁰ και μη λυπειτε το πνευμα το αγιον του θεου εν ω εσφραγισθητε εις ημεραν απολυτρωσεως
- ³¹ πασα πικρια και θυμος και οργη και κραυγη και βλασφημια αρθητω αφ υμων συν παση κακια
- ³² γινεσθε δε εις αλληλους χρηστοι ευσπλαγχνοι χαριζομενοι εαυτοις καθως και ο θεος εν χριστω εχαρισατο υμιν

Chapter 5

- ¹γίνεσθε οὖν μιμηταὶ τοῦ θεοῦ ὡς τέκνα ἀγαπήτα
- ²καὶ περιπατεῖτε ἐν ἀγαπῇ καθὼς καὶ ὁ χριστὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς καὶ παρέδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν προσφορὰν καὶ θυσίαν τῷ θεῷ εἰς ὀσμὴν εὐωδίας
- ³πορνεία δὲ καὶ πᾶσα ἀκαθαρσία ἢ πλεονεξία μὴδὲ ὀνομαζέσθω ἐν ὑμῖν καθὼς πρέπει ἁγίοις
- ⁴καὶ αἰσχροῦ καὶ μωρολογίας ἢ εὐτραπέλια τα οὐκ ἀνηκόντα ἀλλὰ μᾶλλον εὐχαριστία
- ⁵τοῦτο γὰρ ἐστε γινώσκοντες ὅτι πᾶς πόρνος ἢ ἀκαθάρτος ἢ πλεονεκτὴς ὅς ἐστιν εἰδωλόλατρός οὐκ ἔχει κληρονομίαν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ χριστοῦ καὶ θεοῦ
- ⁶μὴδεις ὑμᾶς ἀπατάτω κενοὶς λόγοις διὰ ταῦτα γὰρ ἐρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ θεοῦ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῆς ἀπειθείας
- ⁷μὴ οὖν γίνεσθε συμμετοχοὶ αὐτῶν
- ⁸ἦτε γὰρ ποτε σκοτὸς νῦν δὲ φῶς ἐν κυρίῳ ὡς τέκνα φωτὸς περιπατεῖτε
- ⁹ὁ γὰρ καρπὸς τοῦ πνεύματος ἐν πάσῃ ἀγαθῶσυνῃ καὶ δικαιοσυνῇ καὶ ἀληθείᾳ
- ¹⁰δοκιμάζοντες τί ἐστὶν εὐαρεστον τῷ κυρίῳ
- ¹¹καὶ μὴ συγκοινωνεῖτε τοῖς ἐργοῖς τοῖς ἀκαρποῖς τοῦ σκοτοῦ μᾶλλον δὲ καὶ ἐλεγεῖτε
- ¹²τὰ γὰρ κρυφὰ γινόμενα ὑπὸ αὐτῶν αἰσχρὸν ἐστὶν καὶ λέγειν
- ¹³τὰ δὲ πάντα ἐλεγχόμενα ὑπὸ τοῦ φωτὸς φανεροῦνται πάν γὰρ τὸ φανερούμενον φῶς ἐστὶν
- ¹⁴ὁ δὲ λέγει ἐγείρει ὁ καθυδὼν καὶ ἀναστὰ ἐκ τῶν νεκρῶν καὶ ἐπιφανεῖ σοὶ ὁ χριστὸς
- ¹⁵βλέπετε οὖν πῶς ἀκριβῶς περιπατεῖτε μὴ ὡς ἀσοφοὶ ἀλλ ὡς σοφοὶ
- ¹⁶ἐξαγοραζόμενοι τὸν καιρὸν ὅτι αἱ ἡμέραι πονηραὶ εἰσιν
- ¹⁷διὰ τοῦτο μὴ γίνεσθε ἀφρονεῖς ἀλλὰ συνιέντες τί τὸ θέλημα τοῦ κυρίου
- ¹⁸καὶ μὴ μεθυσκεσθε οἴνῳ ἐν ᾧ ἐστὶν ἀσῶτια ἀλλὰ πληρουσθε ἐν πνεύματι
- ¹⁹λαλοῦντες ἑαυτοῖς ψαλμοῖς καὶ ὕμνοις καὶ ᾠδαῖς πνευματικαῖς ἀδόντες καὶ ψάλλοντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ κυρίῳ
- ²⁰εὐχαριστοῦντες πάντοτε ὑπὲρ πάντων ἐν ὀνόματι τοῦ κυρίου ἡμῶν ἰησοῦ χριστοῦ τῷ θεῷ καὶ πατρὶ
- ²¹ὑποτασσομένοι ἀλλήλοις ἐν φόβῳ θεοῦ
- ²²αἱ γυναῖκες τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ὑποτασσεσθε ὡς τῷ κυρίῳ
- ²³ὅτι ὁ ἀνὴρ ἐστὶν κεφαλὴ τῆς γυναικὸς ὡς καὶ ὁ χριστὸς κεφαλὴ τῆς ἐκκλησίας καὶ αὐτὸς ἐστὶν σωτὴρ τοῦ σώματος
- ²⁴ἀλλ ὡσπερ ἡ ἐκκλησία ὑποτάσσεται τῷ χριστῷ οὕτως καὶ αἱ γυναῖκες τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ἐν παντί
- ²⁵οἱ ἄνδρες ἀγαπάτε τὰς γυναῖκας ἑαυτῶν καθὼς καὶ ὁ χριστὸς ἠγάπησεν τὴν ἐκκλησίαν καὶ ἑαυτὸν παρέδωκεν ὑπὲρ αὐτῆς
- ²⁶ἵνα αὐτὴν ἁγιασῇ καθάρισας τῷ λουτρῷ τοῦ ὕδατος ἐν ῥηματι

²⁷ ινα παραστηση αυτην εαυτω ενδοξον την εκκλησιαν μη εχουσαν σπιλον η ρυτιδα η τι των τοιουτων αλλ ινα η αγια και αμωμος

²⁸ ουτως οφειλουσιν οι ανδρες αγαπαν τας εαυτων γυναικας ως τα εαυτων σωματα ο αγαπων την εαυτου γυναικα εαυτον αγαπα

²⁹ ουδεις γαρ ποτε την εαυτου σαρκα εμισησεν αλλ εκτρεφει και θαλπει αυτην καθως και ο κυριος την εκκλησιαν

³⁰ οτι μελη εσμεν του σωματος αυτου εκ της σαρκος αυτου και εκ των οστων αυτου

³¹ αντι τουτου καταλειψει ανθρωπος τον πατερα αυτου και την μητερα και προσκολληθησεται προς την γυναικα αυτου και εσονται οι δυο εις σαρκα μιαν

³² το μυστηριον τουτο μεγα εστιν εγω δε λεγω εις χριστον και εις την εκκλησιαν

³³ πλην και υμεις οι καθ ενα εκαστος την εαυτου γυναικα ουτως αγαπατω ως εαυτον η δε γυνη ινα φοβηται τον ανδρα

Chapter 6

- ¹τα τέκνα υπακούετε τοις γονευσιν υμών εν κυριω τουτο γαρ εστιν δικαιον
²τιμα τον πατερα σου και την μητερα ητις εστιν εντολη πρωτη εν επαγγελια
³ινα ευ σοι γενηται και εση μακροχρονιος επι της γης
⁴και οι πατερες μη παροργιζετε τα τέκνα υμών αλλ εκτρεφετε αυτα εν παιδεια και νουθεσια κυριου
⁵οι δουλοι υπακούετε τοις κυριοις κατα σαρκα μετα φοβου και τρομου εν απλοτητι της καρδιας υμών ως τω χριστω
⁶μη κατ οφθαλμοδουλειαν ως ανθρωπαρεσκοι αλλ ως δουλοι του χριστου ποιουντες το θελημα του θεου εκ ψυχης
⁷μετ ευνοιας δουλευοντες ως τω κυριω και ουκ ανθρωποις
⁸ειδοτες οτι ο εαν τι εκαστος ποιηση αγαθον τουτο κομιεται παρα του κυριου ειτε δουλος ειτε ελευθερος
⁹και οι κυριοι τα αυτα ποιειτε προς αυτους ανιεντες την απειλην ειδοτες οτι και υμών αυτων ο κυριος εστιν εν ουρανοις και προσωποληψια ουκ εστιν παρ αυτω
¹⁰το λοιπον αδελφοι μου ενδυναμουσθε εν κυριω και εν τω κρατει της ισχυος αυτου
¹¹ενδυσασθε την πανοπλιαν του θεου προς το δυνασθαι υμας στηναι προς τας μεθοδεις του διαβολου
¹²οτι ουκ εστιν ημιν η παλη προς αιμα και σαρκα αλλα προς τας αρχας προς τας εξουσιας προς τους κοσμοκρατορας του σκοτους του αιωνος τουτου προς τα πνευματικα της πονηριας εν τοις επουρανιοις
¹³δια τουτο αναλαβετε την πανοπλιαν του θεου ινα δυνηθητε αντιστηναι εν τη ημερα τη πονηρα και απαντα κατεργασαμενοι στηναι
¹⁴στητε ουν περιζωσαμενοι την οσφυν υμών εν αληθεια και ενδυσασαμενοι τον θωρακα της δικαιοσυνης
¹⁵και υποδησασαμενοι τους ποδας εν ετοιμασια του ευαγγελιου της ειρηνης
¹⁶επι πασιν αναλαβοντες τον θυρεον της πιστεως εν ω δυνησεσθε παντα τα βελη του πονηρου τα πεπυρωμενα σβεσαι
¹⁷και την περικεφαλαιαν του σωτηριου δεξασθε και την μαχαιραν του πνευματος ο εστιν ρημα θεου
¹⁸δια πασης προσευχης και δεησεως προσευχομενοι εν παντι καιρω εν πνευματι και εις αυτο τουτο αγρυπνουντες εν παση προσκαρτερησει και δεησει περι παντων των αγιων
¹⁹και υπερ εμου ινα μοι δοθειη λογος εν ανοιξει του στοματος μου εν παρρησια γνωρισαι το μυστηριον του ευαγγελιου
²⁰υπερ ου πρεσβευω εν αλυσει ινα εν αυτω παρρησιασωμαι ως δει με λαλησαι
²¹ινα δε ειδητε και υμεις τα κατ εμε τι πρασσω παντα υμιν γνωρισει τυχιος ο αγαπητος αδελφος και πιστος διακονος εν κυριω

²²ον επεμψα προς υμας εις αυτο τουτο ινα γνωτε τα περι ημων και παρακαλεση τας καρδιας υμων

²³ειρηνη τοις αδελφοις και αγαπη μετα πιστεως απο θεου πατρος και κυριου ιησου χριστου

²⁴η χαρις μετα παντων των αγαπωντων τον κυριον ημων ιησουν χριστον εν αφθαρσια

Philippians

Chapter 1

¹παυλος και τιμοθεος δουλοι ιησου χριστου πασιν τοις αγιοις εν χριστω ιησου τοις ουσιν εν φιλιπποις συν επισκοποις και διακονοις
²χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
³ευχαριστω τω θεω μου επι παση τη μνεια υμων
⁴παντοτε εν παση δεησει μου υπερ παντων υμων μετα χαρας την δεησιν ποιουμενος
⁵επι τη κοινωνια υμων εις το ευαγγελιον απο πρωτης ημερας αχρι του νυν
⁶πεποιθως αυτο τουτο οτι ο εναρξαμενος εν υμιν εργον αγαθον επιτελεσει αχρις ημερας ιησου χριστου
⁷καθως εστιν δικαιον εμοι τουτο φρονειν υπερ παντων υμων δια το εχειν με εν τη καρδια υμας εν τε τοις δεσμοις μου και τη απολογια και βεβαιωσει του ευαγγελιου συγκοινωνους μου της χαριτος παντας υμας οντας
⁸μαρτυς γαρ μου εστιν ο θεος ως επιποθω παντας υμας εν σπλαγχνοις ιησου χριστου
⁹και τουτο προσευχομαι ινα η αγαπη υμων ετι μαλλον και μαλλον περισσευη εν επιγνωσει και παση αισθησει
¹⁰εις το δοκιμαζειν υμας τα διαφεροντα ινα ητε ειλικρινεις και απροσκοποι εις ημεραν χριστου
¹¹πεπληρωμενοι καρπων δικαιοσυνης των δια ιησου χριστου εις δοξαν και επαινον θεου
¹²γινωσκειν δε υμας βουλομαι αδελφοι οτι τα κατ εμε μαλλον εις προκοπην του ευαγγελιου εληλυθεν
¹³ωστε τους δεσμους μου φανερους εν χριστω γενεσθαι εν ολω τω πραιτωριω και τοις λοιποις πασιν
¹⁴και τους πλειονας των αδελφων εν κυριω πεποιθοτας τοις δεσμοις μου περισσοτερωσ τολμαν αφοβως τον λογον λαλειν
¹⁵τινες μεν και δια φθονον και εριν τινες δε και δι ευδοκιαν τον χριστον κηρυσσουσιν
¹⁶οι μεν εξ εριθειας τον χριστον καταγγελλουσιν ουχ αγνωσ οιομενοι θλιψιν επιφερειν τοις δεσμοις μου
¹⁷οι δε εξ αγαπης ειδοτες οτι εις απολογιαν του ευαγγελιου κειμαι
¹⁸τι γαρ πλην παντι τροπω ειτε προφασει ειτε αληθεια χριστος καταγγελλεται και εν τουτω χαιρω αλλα και χαρησομαι
¹⁹οιδα γαρ οτι τουτο μοι αποβησεται εις σωτηριαν δια της υμων δεησεως και επιχορηγιας του πνευματος ιησου χριστου
²⁰κατα την αποκαραδοκιαν και ελπιδα μου οτι εν ουδενι αισχυνθησομαι αλλ εν παση παρρησια ως παντοτε και νυν μεγαλυνθησεται χριστος εν τω σωματι μου ειτε δια ζωης ειτε δια θανατου
²¹εμοι γαρ το ζην χριστος και το αποθανειν κερδος
²²ει δε το ζην εν σαρκι τουτο μοι καρπος εργου και τι αιρησομαι ου γνωριζω

²³συνεχομαι γαρ εκ των δυο την επιθυμιαν εχων εις το αναλυσαι και συν χριστω ειναι πολλω μαλλον κρεισσον

²⁴το δε επιμενειν εν τη σαρκι αναγκαιοτερον δι υμας

²⁵και τουτο πεποιθως οιδα οτι μενω και συμπαραμενω πασιν υμιν εις την υμων προκοπην και χαραν της πιστεως

²⁶ινα το καυχημα υμων περισσευη εν χριστω ιησου εν εμοι δια της εμης παρουσιας παλιν προς υμας

²⁷μονον αξιως του ευαγγελιου του χριστου πολιτευεσθε ινα ειτε ελθων και ιδων υμας ειτε απων ακουσω τα περι υμων οτι στηκετε εν ενι πνευματι μια ψυχη συναθλωντες τη πιστει του ευαγγελιου

²⁸και μη πτυρομενοι εν μηδενι υπο των αντικειμενων ητις αυτοις μεν εστιν ενδειξις απωλειας υμιν δε σωτηριας και τουτο απο θεου

²⁹οτι υμιν εχαρισθη το υπερ χριστου ου μονον το εις αυτον πιστευειν αλλα και το υπερ αυτου πασχειν

³⁰τον αυτον αγωνα εχοντες οιον ειδετε εν εμοι και νυν ακουετε εν εμοι

Chapter 2

¹εἰ τις οὖν παρακλησῆς ἐν χριστῷ εἰ τι παραμυθίον ἀγαπῆς εἰ τις κοινῶνι πνεύματος
εἰ τίνα σπλαγχνὰ καὶ οἰκτιρμοὶ
²πληρώσατε μοῦ τὴν χαρὰν ἵνα τὸ αὐτὸ φρονήτε τὴν αὐτὴν ἀγαπῆν ἔχοντες συμψυχοὶ τὸ
ἐν φρονούντες
³μηδὲν κατὰ ἐριθειαν ἢ κενοδοξίαν ἀλλὰ τὴ ταπεινοφροσύνη ἀλλήλους ἡγούμενοι
ὑπερέχοντας ἑαυτῶν
⁴μη τὰ ἑαυτῶν ἕκαστος σκοπεῖτε ἀλλὰ καὶ τὰ ἑτέρων ἕκαστος
⁵τούτου γὰρ φρονεῖσθε ἐν ὑμῖν ὁ καὶ ἐν χριστῷ ἰησοῦ
⁶ὅς ἐν μορφῇ θεοῦ ὑπαρχῶν οὐχ ἀρπαγμὸν ἠγήσατο τὸ εἶναι ἴσα θεῷ
⁷ἀλλ ἑαυτὸν ἐκένωσεν μορφῇ δούλου λαβὼν ἐν ὁμοιωματὶ ἀνθρώπων γενομένος
⁸καὶ σχηματὶ ἐυρέθεις ὡς ἀνθρώπος ἐταπεινώσεν ἑαυτὸν γενομένος ὑπηκοὸς μέχρι θανάτου
θανάτου δὲ σταυροῦ
⁹διὸ καὶ ὁ θεὸς αὐτὸν ὑπερύψωσεν καὶ ἐχαρίσατο αὐτῷ ὄνομα τὸ ὑπὲρ πάντων ὀνομάτων
¹⁰ἵνα ἐν τῷ ὀνοματὶ ἰησοῦ πάντων γόνου καμψῆ ἐπουρανίων καὶ ἐπιγείων καὶ καταχθονίων
¹¹καὶ πάσα γλῶσσα ἐξομολογησῆται ὅτι κύριος ἰησοῦς χριστὸς εἰς δόξαν θεοῦ πατρὸς
¹²ὥστε ἀγαπητοὶ μοῦ καθὼς πάντοτε ὑπηκούσατε μὴ ὡς ἐν τῇ παρουσίᾳ μοῦ μόνον ἀλλὰ
νῦν πολλῶν μάλλον ἐν τῇ ἀπουσίᾳ μοῦ μετὰ φόβου καὶ τρόμου τὴν ἑαυτῶν σωτηρίαν
κατεργάζεσθε
¹³ὁ θεὸς γὰρ ἐστὶν ὁ ἐνεργῶν ἐν ὑμῖν καὶ τὸ θελεῖν καὶ τὸ ἐνεργεῖν ὑπὲρ τῆς εὐδοκίας
¹⁴πάντα ποιεῖτε χωρὶς γογγυσμῶν καὶ διαλογισμῶν
¹⁵ἵνα γενησθε ἀμεμπτοὶ καὶ ἀκεραιοὶ τέκνα θεοῦ ἀμώμητα ἐν μέσῳ γενεᾶς σκολίας καὶ
διεστραμμένης ἐν οἷς φαίνεσθε ὡς φωστῆρες ἐν κόσμῳ
¹⁶λόγον ζωῆς ἐπεχόντες εἰς καυχῆμα ἔμοι εἰς ἡμέραν χριστοῦ ὅτι οὐκ εἰς κενὸν ἔδραμον
οὐδὲ εἰς κενὸν ἐκοπιάσα
¹⁷ἀλλ εἰ καὶ σπένδομαι ἐπὶ τῇ θυσίᾳ καὶ λειτουργίᾳ τῆς πίστεως ὑμῶν χαίρω καὶ συγχαίρω
πᾶσιν ὑμῖν
¹⁸τὸ δ αὐτὸ καὶ ὑμεῖς χαίρετε καὶ συγχαίρετε μοι
¹⁹ἐλπίζω δὲ ἐν κυρίῳ ἰησοῦ τιμοθέῳ ταχέως πεμψαὶ ὑμῖν ἵνα καγὼ εὐψύχῳ γένους τὰ περὶ
ὑμῶν
²⁰οὐδὲνα γὰρ ἔχω ἰσοψύχον ὅστις γνήσιως τὰ περὶ ὑμῶν μεριμνήσει
²¹οἱ πάντες γὰρ τὰ ἑαυτῶν ζητοῦσιν οὐ τὰ τοῦ χριστοῦ ἰησοῦ
²²τὴν δὲ δοκιμὴν αὐτοῦ γινώσκετε ὅτι ὡς πατρὶ τέκνον σὺν ἐμοὶ ἐδουλεύσεν εἰς τὸ
εὐαγγέλιον
²³τούτον μὲν οὖν ἐλπίζω πεμψαὶ ὡς ἀν ἀπιδῶ τὰ περὶ ἐμὲ ἐξαυτῆς
²⁴πέποιθα δὲ ἐν κυρίῳ ὅτι καὶ αὐτὸς ταχέως ἐλευσομαι

²⁵ αναγκαιον δε ηγησαμην επαφροδιτον τον αδελφον και συνεργον και συστρατιωτην μου
υμων δε αποστολον και λειτουργον της χρειας μου πεμψαι προς υμας
²⁶ επειδη επιποθων ην παντας υμας και αδημονων διοτι ηκουσατε οτι ησθηνησεν
²⁷ και γαρ ησθηνησεν παραπλησιον θανατω αλλ ο θεος αυτον ηλεισεν ουκ αυτον δε μονον
αλλα και εμε ινα μη λυπην επι λυπη σχω
²⁸ σπουδαιοτερωσ ουν επεμψα αυτον ινα ιδοντες αυτον παλιν χαρητε καγω αλυποτερος ω
²⁹ προσδεχεσθε ουν αυτον εν κυριω μετα πασης χαρας και τους τοιουτους εντιμους εχετε
³⁰ οτι δια το εργον του χριστου μεχρι θανατου ηγγισεν παραβουλευσαμενος τη ψυχη ινα
αναπληρωση το υμων υστερημα της προς με λειτουργιας

Chapter 3

¹το λοιπον αδελφοι μου χαιρετε εν κυριω τα αυτα γραφειν υμιν εμοι μεν ουκ οκνηρον υμιν δε ασφαλες
²βλεπετε τους κυνας βλεπετε τους κακους εργατας βλεπετε την κατατομην
³ημεις γαρ εσμεν η περιτομη οι πνευματι θεω λατρευοντες και καυχωμενοι εν χριστω ιησου και ουκ εν σαρκι πεποιθοτες
⁴καιπερ εγω εχων πεποιθησιν και εν σαρκι ει τις δοκει αλλος πεποιθεναι εν σαρκι εγω μαλλον
⁵περιτομη οκταημερος εκ γενους ισραηλ φυλης βενιαμιν εβραιος εξ εβραιων κατα νομον φαρισαιος
⁶κατα ζηλον διωκων την εκκλησιαν κατα δικαιοσυνην την εν νομω γενομενος αμεμπτος
⁷αλλ ατινα ην μοι κερδη ταυτα ηγημαι δια τον χριστον ζημιαν
⁸αλλα μενουνγε και ηγουμαι παντα ζημιαν ειναι δια το υπερεχον της γνωσεως χριστου ιησου του κυριου μου δι ον τα παντα εξημιωθην και ηγουμαι σκυβαλα ειναι ινα χριστον κερδησω
⁹και ευρεθω εν αυτω μη εχων εμην δικαιοσυνην την εκ νομου αλλα την δια πιστεως χριστου την εκ θεου δικαιοσυνην επι τη πιστει
¹⁰του γνωμαι αυτον και την δυναμιν της αναστασεως αυτου και την κοινωνιαν των παθηματων αυτου συμμορφουμενος τω θανατω αυτου
¹¹ει πως κατανησω εις την εξαναστασιν των νεκρων
¹²ουχ οτι ηδη ελαβον η ηδη τετελειωμαι διωκω δε ει και καταλαβω εφ ω και κατεληφθην υπο του χριστου ιησου
¹³αδελφοι εγω εμαυτον ου λογιζομαι κατειληφεναι εν δε τα μεν οπισω επιλανθανομενος τοις δε εμπροσθεν επεκτεινομενος
¹⁴κατα σκοπον διωκω επι το βραβειον της ανω κλησεως του θεου εν χριστω ιησου
¹⁵οσοι ουν τελειοι τουτο φρονωμεν και ει τι ετερως φρονειτε και τουτο ο θεος υμιν αποκαλυψει
¹⁶πλην εις ο εφθασαμεν τω αυτω στοιχειν κανονι το αυτο φρονειν
¹⁷συμμιμηται μου γινεσθε αδελφοι και σκοπειτε τους ουτως περιπατουντας καθως εχετε τυπον ημας
¹⁸πολλοι γαρ περιπατουσιν ους πολλακις ελεγον υμιν νυν δε και κλαιων λεγω τους εχθρους του σταυρου του χριστου
¹⁹ων το τελος απωλεια ων ο θεος η κοιλια και η δοξα εν τη αισχυνη αυτων οι τα επιγεια φρονουντες
²⁰ημων γαρ το πολιτευμα εν ουρανοις υπαρχει εξ ου και σωτηρα απεκδεχομεθα κυριον ιησουν χριστον

²¹ος μετασχηματισει το σωμα της ταπεινωσεως ημων εις το γενεσθαι αυτο συμμορφον τω σωματι της δοξης αυτου κατα την ενεργειαν του δυνασθαι αυτον και υποταξαι εαυτω τα παντα

Chapter 4

- ¹ωστε αδελφοι μου αγαπητοι και επιποθητοι χαρα και στεφανος μου ουτως στηκετε εν κυριω αγαπητοι
- ²ευοδιαν παρακαλω και συντυχηνη παρακαλω το αυτο φρονειν εν κυριω
- ³και ερωτω και σε συζυγε γνησιε συλλαμβανου αυταις αιτινες εν τω ευαγγελιω συνηθλησαν μοι μετα και κλημεντος και των λοιπων συνεργων μου ων τα ονοματα εν βιβλω ζωης
- ⁴χαιρετε εν κυριω παντοτε παλιν ερω χαιρετε
- ⁵το επιεικες υμων γνωσθητω πασιν ανθρωποις ο κυριος εγγυς
- ⁶μηδεν μεριμνατε αλλ εν παντι τη προσευχη και τη δεησει μετα ευχαριστιας τα αιτηματα υμων γνωριζεσθω προς τον θεον
- ⁷και η ειρηνη του θεου η υπερεχουσα παντα νουν φρουρησει τας καρδιας υμων και τα νοηματα υμων εν χριστω ιησου
- ⁸το λοιπον αδελφοι οσα εστιν αληθη οσα σεμνα οσα δικαια οσα αγνα οσα προσφιλη οσα ευφημα ει τις αρετη και ει τις επαινος ταυτα λογιζεσθε
- ⁹α και εμαθετε και παρελαβετε και ηκουσατε και ειδετε εν εμοι ταυτα πρασσετε και ο θεος της ειρηνης εσται μεθ υμων
- ¹⁰εχαρην δε εν κυριω μεγαλως οτι ηδη ποτε ανεθαλετε το υπερ εμου φρονειν εφ ω και εφρονειτε ηκαιρεισθε δε
- ¹¹ουχ οτι καθ υστερησιν λεγω εγω γαρ εμαθον εν οις ειμι αυταρκης ειναι
- ¹²οιδα και ταπεινουσθαι οιδα και περισσευειν εν παντι και εν πασιν μεμυημαι και χορταζεσθαι και πειναν και περισσευειν και υστερεισθαι
- ¹³παντα ισχυω εν τω ενδυναμουντι με χριστω
- ¹⁴πλην καλως εποιησατε συγκοινωνησαντες μου τη θλιψει
- ¹⁵οιδατε δε και υμεις φιλιππησιοι οτι εν αρχη του ευαγγελιου οτε εξηλθον απο μακεδονιας ουδεμια μοι εκκλησια εκοινωνησεν εις λογον δοσεως και ληψεως ει μη υμεις μονοι
- ¹⁶οτι και εν θεσσαλονικη και απαξ και δις εις την χρειαν μοι επεμψατε
- ¹⁷ουχ οτι επιζητω το δομα αλλ επιζητω τον καρπον τον πλεοναζοντα εις λογον υμων
- ¹⁸απεχω δε παντα και περισσευω πεπληρωμαι δεξαμενος παρα επαφροδιτου τα παρ υμων οσμηνη ευωδιας θυσιαν δεκτηνη ευαρεστον τω θεω
- ¹⁹ο δε θεος μου πληρωσει πασαν χρειαν υμων κατα τον πλουτον αυτου εν δοξη εν χριστω ιησου
- ²⁰τω δε θεω και πατρι ημων η δοξα εις τους αιωνας των αιωνων αμην
- ²¹ασπασασθε παντα αγιον εν χριστω ιησου ασπαζονται υμας οι συν εμοι αδελφοι
- ²²ασπαζονται υμας παντες οι αγιοι μαλιστα δε οι εκ της καισαρος οικιας
- ²³η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μετα παντων υμων αμην

Colossians

Chapter 1

¹παυλος αποστολος ιησου χριστου δια θεληματος θεου και τιμοθεος ο αδελφος
²τοις εν κολοσσαις αγιοις και πιστοις αδελφοις εν χριστω χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου
πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
³ευχαριστουμεν τω θεω και πατρι του κυριου ημων ιησου χριστου παντοτε περι υμων
προσευχομενοι
⁴ακουσαντες την πιστιν υμων εν χριστω ιησου και την αγαπην την εις παντας τους αγιους
⁵δια την ελπιδα την αποκειμενην υμιν εν τοις ουρανοις ην προηκουσατε εν τω λογω της
αληθειας του ευαγγελιου
⁶του παροντος εις υμας καθως και εν παντι τω κοσμω και εστιν καρποφορουμενον καθως
και εν υμιν αφ ης ημερας ηκουσατε και επεγνωτε την χαριν του θεου εν αληθεια
⁷καθως και εμαθετε απο επαφρα του αγαπητου συνδουλου ημων ος εστιν πιστος υπερ
υμων διακονος του χριστου
⁸ο και δηλωσας ημιν την υμων αγαπην εν πνευματι
⁹δια τουτο και ημεις αφ ης ημερας ηκουσαμεν ου παυομεθα υπερ υμων προσευχομενοι
και αιτουμενοι ινα πληρωθητε την επιγνωσιν του θεληματος αυτου εν παση σοφια και
συνεσει πνευματικη
¹⁰περιπατησαι υμας αξιως του κυριου εις πασαν αρεσκειαν εν παντι εργω αγαθω
καρποφορουντες και αυξανομενοι εις την επιγνωσιν του θεου
¹¹εν παση δυναμει δυναμουμενοι κατα το κρατος της δοξης αυτου εις πασαν υπομονην
και μακροθυμιαν μετα χαρας
¹²ευχαριστουντες τω πατρι τω ικανωσαντι ημας εις την μεριδα του κληρου των αγιων εν
τω φωτι
¹³ος ερρυσατο ημας εκ της εξουσιας του σκοτους και μετεστησεν εις την βασιλειαν του
υιου της αγαπης αυτου
¹⁴εν ω εχομεν την απολυτρωσιν δια του αιματος αυτου την αφεσιν των αμαρτιων
¹⁵ος εστιν εικων του θεου του αορατου πρωτοτοκος πασης κτισεως
¹⁶οτι εν αυτω εκτισθη τα παντα τα εν τοις ουρανοις και τα επι της γης τα ορατα και τα
αορατα ειτε θronoi ειτε κυριοτητες ειτε αρχαι ειτε εξουσαι τα παντα δι αυτου και εις αυτον
εκτισται
¹⁷και αυτος εστιν προ παντων και τα παντα εν αυτω συνεστηκεν
¹⁸και αυτος εστιν η κεφαλη του σωματος της εκκλησιας ος εστιν αρχη πρωτοτοκος εκ των
νεκρων ινα γενηται εν πασιν αυτος πρωτευων
¹⁹οτι εν αυτω ευδοκησεν παν το πληρωμα κατοικησαι
²⁰και δι αυτου αποκαταλλαξαι τα παντα εις αυτον ειρηνοποιησας δια του αιματος του
σταυρου αυτου δι αυτου ειτε τα επι της γης ειτε τα εν τοις ουρανοις
²¹και υμας ποτε οντας απηλλοτριωμενους και εχθρους τη διανοια εν τοις εργοις τοις
πονηροις νυνι δε αποκατηλλαξεν

²²εν τω σωματι της σαρκος αυτου δια του θανατου παραστησαι υμας αγιους και αμωμους και ανεγκλητους κατενωπιον αυτου

²³ειγε επιμενετε τη πιστει τεθεμελιωμενοι και εδραιοι και μη μετακινουμενοι απο της ελπιδος του ευαγγελιου ου ηκουσατε του κηρυχθεντος εν παση τη κτισει τη υπο τον ουρανον ου εγενομην εγω παυλος διακονος

²⁴ος νυν χαιρω εν τοις παθημασιν μου υπερ υμων και ανταναπληρω τα υστερηματα των θλιψεων του χριστου εν τη σαρκι μου υπερ του σωματος αυτου ο εστιν η εκκλησια

²⁵ης εγενομην εγω διακονος κατα την οικονομιαν του θεου την δοθεισαν μοι εις υμας πληρωσαι τον λογον του θεου

²⁶το μυστηριον το αποκεκρυμμενον απο των αιωνων και απο των γενεων νυνι δε εφανερωθη τοις αγιοις αυτου

²⁷οις ηθελησεν ο θεος γνωρισαι τις ο πλουτος της δοξης του μυστηριου τουτου εν τοις εθνεσιν ος εστιν χριστος εν υμιν η ελπις της δοξης

²⁸ον ημεις καταγγελλομεν νουθετουντες παντα ανθρωπον και διδασκοντες παντα ανθρωπον εν παση σοφια ινα παραστησωμεν παντα ανθρωπον τελειον εν χριστω ιησου

²⁹εις ο και κοπιω αγωνιζομενος κατα την ενεργειαν αυτου την ενεργουμενην εν εμοι εν δυναμει

Chapter 2

¹θέλω γαρ υμας ειδεναι ηλικον αγωνα εχω περι υμων και των εν λαοδικεια και οσοι ουχ εωρακασιν το προσωπον μου εν σαρκι
²ινα παρακληθωσιν αι καρδιαι αυτων συμβιβασθεντων εν αγαπη και εις παντα πλουτον της πληροφοριας της συνεσεως εις επιγνωσιν του μυστηριου του θεου και πατρος και του χριστου
³εν ω εισιν παντες οι θησαυροι της σοφιας και της γνωσεως αποκρυφוי
⁴τουτο δε λεγω ινα μη τις υμας παραλογιζηται εν πιθανολογια
⁵ει γαρ και τη σαρκι απειμι αλλα τω πνευματι συν υμιν ειμι χαιρων και βλεπων υμων την ταξιν και το στερεωμα της εις χριστον πιστεως υμων
⁶ως συν παρελαβετε τον χριστον ιησουν τον κυριον εν αυτω περιπατειτε
⁷ερριζωμενοι και εποικοδομουμενοι εν αυτω και βεβαιουμενοι εν τη πιστει καθως εδιδαχθητε περισσευοντες εν αυτη εν ευχαριστια
⁸βλεπετε μη τις υμας εσται ο συλαγωγων δια της φιλοσοφιας και κενης απατης κατα την παραδοσιν των ανθρωπων κατα τα στοιχεια του κοσμου και ου κατα χριστον
⁹οτι εν αυτω κατοικει παν το πληρωμα της θεοτητος σωματικως
¹⁰και εστε εν αυτω πεπληρωμενοι ος εστιν η κεφαλη πασης αρχης και εξουσιας
¹¹εν ω και περιετμηθητε περιτομη αχειροποιητω εν τη απεκδυσει του σωματος των αμαρτιων της σαρκος εν τη περιτομη του χριστου
¹²συνταφεντες αυτω εν τω βαπτισματι εν ω και συνηγερθητε δια της πιστεως της ενεργειας του θεου του εγειραντος αυτον εκ των νεκρων
¹³και υμας νεκρους οντας εν τοις παραπτωμασιν και τη ακροβυστια της σαρκος υμων συνεζωοποιησεν συν αυτω χαρισαμενος υμιν παντα τα παραπτωματα
¹⁴εξαλειψας το καθ ημων χειρογραφον τοις δογμασιν ο ην υπεναντιον ημιν και αυτο ηρκεν εκ του μεσου προσηλωσας αυτο τω σταυρω
¹⁵απεκδυσαμενος τας αρχας και τας εξουσιας εδειγματισεν εν παρρησια θριαμβευσας αυτους εν αυτω
¹⁶μη ουν τις υμας κρινετω εν βρωσει η εν ποσει η εν μερει εορτης η νουμηνιας η σαββατων
¹⁷α εστιν σκια των μελλοντων το δε σωμα του χριστου
¹⁸μηδεις υμας καταβραβευετω θελων εν ταπεινοφροσυνη και θρησκεια των αγγελων α μη εωρακεν εμβατευων εικη φυσιουμενος υπο του νοος της σαρκος αυτου
¹⁹και ου κρατων την κεφαλην εξ ου παν το σωμα δια των αφων και συνδεσμων επιχορηγουμενον και συμβιβαζομενον αυξει την αυξησιν του θεου
²⁰ει ουν απεθανετε συν τω χριστω απο των στοιχειων του κοσμου τι ως ζωντες εν κοσμω δογματιζεσθε
²¹μη αψη μηδε γευση μηδε θιγης
²²α εστιν παντα εις φθοραν τη αποχρησει κατα τα ενταλματα και διδασκαλιας των ανθρωπων

²³ ατινα εστιν λογον μεν εχοντα σοφιας εν εθελοθρησκεια και ταπεινοφροσυνη και αφειδια
σωματος ουκ εν τιμη τινι προς πλησμονην της σαρκος

Chapter 3

- ¹εἰ οὖν συνηγεθήτε τῷ χριστῷ τὰ ἀνω ζητεῖτε οὐ ὁ χριστὸς ἐστὶν ἐν δεξιά τοῦ θεοῦ καθημένος
- ²τὰ ἀνω φρονεῖτε μὴ τὰ ἐπὶ τῆς γῆς
- ³ἀπεθάνετε γὰρ καὶ ἡ ζωὴ ὑμῶν κεκρυπταὶ σὺν τῷ χριστῷ ἐν τῷ θεῷ
- ⁴ὅταν ὁ χριστὸς φανερωθῇ ἡ ζωὴ ἡμῶν τότε καὶ ὑμεῖς σὺν αὐτῷ φανερωθήσεσθε ἐν δόξῃ
- ⁵νεκρώσατε οὖν τὰ μέλη ὑμῶν τὰ ἐπὶ τῆς γῆς πορνείαν ἀκαθαρσίαν πάθος ἐπιθυμίαν κακὴν καὶ τὴν πλεονεξίαν ἧτις ἐστὶν εἰδωλολατρεία
- ⁶διὰ ἃ ἐρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ θεοῦ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῆς ἀπειθείας
- ⁷ἐν οἷς καὶ ὑμεῖς περιεπατήσατε ποτε ὅτε ἐζήτε ἐν αὐτοῖς
- ⁸ἄνυμι δὲ ἀποθέσθε καὶ ὑμεῖς τὰ πάντα ὀργὴν θυμὸν κακίαν βλασφημίαν αἰσχρολογίαν ἐκ τοῦ στόματος ὑμῶν
- ⁹μὴ ψευδεσθε εἰς ἀλλήλους ἀπεκδύσαμενοι τὸν παλαιὸν ἀνθρώπον σὺν ταῖς πράξεσιν αὐτοῦ
- ¹⁰καὶ ἐνδύσαμενοι τὸν νέον τὸν ἀνακαινούμενον εἰς ἐπιγνώσιν κατ' εἰκόνα τοῦ κτισάντος αὐτοῦ
- ¹¹οποῦ οὐκ ἐνὶ ἑλλήνι καὶ ἰουδαίῳ περιτομῇ καὶ ἀκροβυστία βαρβάρῳ σκυθῆς δούλῳ ἐλευθέρῳ ἀλλὰ τὰ πάντα καὶ ἐν πάσιν χριστὸς
- ¹²ἐνδύσασθε οὖν ὡς ἐκλεκτοὶ τοῦ θεοῦ ἅγιοι καὶ ἠγαπημένοι σπλαγχνα οἰκτιρῶν χρηστοτήτα ταπεινοφροσύνην πραότητα μακροθυμίαν
- ¹³ἀνεχομένοι ἀλλήλων καὶ χαριζόμενοι ἑαυτοῖς ἐὰν τίς πρὸς τίνα ἐχὴ μομφὴν καθὼς καὶ ὁ χριστὸς ἐχαρίσατο ὑμῖν οὕτως καὶ ὑμεῖς
- ¹⁴ἐπὶ πάσιν δὲ τούτοις τὴν ἀγαπὴν ἧτις ἐστὶν συνδεσμός τῆς τελειότητος
- ¹⁵καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ θεοῦ βραβευέτω ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν εἰς ἡν καὶ ἐκλήθητε ἐν ἐνὶ σωματί καὶ εὐχαριστοὶ γίνεσθε
- ¹⁶ὁ λόγος τοῦ χριστοῦ ἐνοικεῖτω ἐν ὑμῖν πλουσιῶς ἐν πάσῃ σοφίᾳ διδασκόντες καὶ νουθετοῦντες ἑαυτοὺς ψαλμοῖς καὶ ὑμνοῖς καὶ ᾠδαῖς πνευματικαῖς ἐν χάριτι ἄδοντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ κυρίῳ
- ¹⁷καὶ πάν ὅ τι ἀν ποιῆτε ἐν λόγῳ ἢ ἐν ἔργῳ πάντα ἐν ὀνόματι κυρίου ἰησοῦ εὐχαριστοῦντες τῷ θεῷ καὶ πατρὶ δι' αὐτοῦ
- ¹⁸αἱ γυναῖκες ὑποτάσσεσθε τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ὡς ἀνήκεν ἐν κυρίῳ
- ¹⁹οἱ ἄνδρες ἀγαπάτε τὰς γυναῖκας καὶ μὴ πικραίνεσθε πρὸς αὐτάς
- ²⁰τὰ τέκνα ὑπακούετε τοῖς γονεῦσιν κατὰ πάντα τούτο γὰρ ἐστὶν εὐαρεστον τῷ κυρίῳ
- ²¹οἱ πατέρες μὴ ἐρεθίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν ἵνα μὴ ἀθυμώσιν
- ²²οἱ δούλοι ὑπακούετε κατὰ πάντα τοῖς κατὰ σὰρκα κυρίοις μὴ ἐν ὀφθαλμοδουλείᾳ ὡς ἀνθρώπων ἀλλ' ἐν ἀπλοτητί καρδίας φοβούμενοι τὸν θεόν
- ²³καὶ πάν ὅ τι ἐὰν ποιῆτε ἐκ ψυχῆς ἐργάζεσθε ὡς τῷ κυρίῳ καὶ οὐκ ἀνθρώποις

²⁴ειδοτες οτι απο κυριου αποληψεσθε την ανταποδοσιν της κληρονομιας τω γαρ κυριω
χριστω δουλευετε

²⁵ο δε αδικων κομειται ο ηδικησεν και ουκ εστιν προσωποληψια

Chapter 4

- ¹οι κυριοι το δικαιοι και την ισοτητα τοις δουλοις παρεχεσθε ειδοτες οτι και υμεις εχετε κυριον εν ουρανοις
- ²τη προσευχη προσκαρτεριετε γρηγορουντες εν αυτη εν ευχαριστια
- ³προσευχομενοι αμα και περι ημων ινα ο θεοσ ανοιξη ημιν θυραν του λογου λαλησαι το μυστηριον του χριστου δι ο και δεδεμαι
- ⁴ινα φανερωσω αυτο ως δει με λαλησαι
- ⁵εν σοφια περιπατειτε προς τουσ εξω τον καιρον εξαγοραζομενοι
- ⁶ο λογοσ υμων παντοτε εν χαριτι αλατι ηρτυμενοσ ειδεναι πως δει υμασ ενι εκαστω αποκρινεσθαι
- ⁷τα κατ εμε παντα γνωρισει υμιν τυχικοσ ο αγαπητοσ αδελφοσ και πιστοσ διακονοσ και συνδουλοσ εν κυριω
- ⁸ον επεμψα προς υμασ εισ αυτο τουτο ινα γνω τα περι υμων και παρακαλεση τασ καρδιασ υμων
- ⁹συν ονησιμω τω πιστω και αγαπητω αδελφω οσ εστιν εξ υμων παντα υμιν γνωριουσιν τα ωδε
- ¹⁰ασπαζεται υμασ αρισταρχοσ ο συναιχμαλωτοσ μου και μαρκοσ ο ανεψιοσ βαρναβα περι ου ελαβετε εντολασ εαν ελθη προς υμασ δεξασθε αυτον
- ¹¹και ιησουσ ο λεγομενοσ ιουστοσ οι οντεσ εκ περιτομησ ουτοι μονοι συνεργοι εισ την βασιλειαν του θεου οιτινεσ εγενηθησαν μοι παρηγορια
- ¹²ασπαζεται υμασ επαφρασ ο εξ υμων δουλοσ χριστου παντοτε αγωνιζομενοσ υπερ υμων εν ταισ προσευχαισ ινα στητε τελειοι και πεπληρωμενοι εν παντι θεληματι του θεου
- ¹³μαρτυρω γαρ αυτω οτι εχει ζηλον πολυν υπερ υμων και των εν λαοδικεια και των εν ιεραπολει
- ¹⁴ασπαζεται υμασ λουκασ ο ιατροσ ο αγαπητοσ και δημασ
- ¹⁵ασπασασθε τουσ εν λαοδικεια αδελφουσ και νυμφαν και την κατ οικον αυτου εκκλησιαν
- ¹⁶και οταν αναγνωσθη παρ υμιν η επιστολη ποιησατε ινα και εν τη λαοδικεων εκκλησια αναγνωσθη και την εκ λαοδικειας ινα και υμεις αναγνωτε
- ¹⁷και ειπατε αρχιπω βλεπε την διακονιαν ην παρελαβεσ εν κυριω ινα αυτην πληροισ
- ¹⁸ο ασπασμοσ τη εμη χειρι παυλου μνημονευετε μου των δεσμων η χαρισ μεθ υμων αμην

1 Thessalonians

Chapter 1

¹παυλος και σιλουανος και τιμοθεος τη εκκλησια θεσσαλονικεων εν θεω πατρι και κυριω ιησου χριστω χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
²ευχαριστουμεν τω θεω παντοτε περι παντων υμων μνειαν υμων ποιουμενοι επι των προσευχων ημων

³αδιαλειπτως μνημονευοντες υμων του εργου της πιστεως και του κοπου της αγαπης και της υπομονης της ελπιδος του κυριου ημων ιησου χριστου εμπροσθεν του θεου και πατρος ημων

⁴ειδοτες αδελφοι ηγαπημενοι υπο θεου την εκλογην υμων

⁵οτι το ευαγγελιον ημων ουκ εγενηθη εις υμας εν λογω μονον αλλα και εν δυναμει και εν πνευματι αγιω και εν πληροφορια πολλη καθως οιδατε οιοι εγενηθημεν εν υμιν δι υμας

⁶και υμεις μιμηται ημων εγενηθητε και του κυριου δεξαμενοι τον λογον εν θλιψει πολλη μετα χαρας πνευματος αγιου

⁷ωστε γενεσθαι υμας τυπους πασιν τοις πιστευουσιν εν τη μακεδονια και τη αχαια

⁸αφ υμων γαρ εξηχηται ο λογος του κυριου ου μονον εν τη μακεδονια και αχαια αλλα και εν παντι τοπω η πιστις υμων η προς τον θεον εξεληλυθεν ωστε μη χρειαν ημας εχειν λαλειν τι

⁹αυτοι γαρ περι ημων απαγγελουσιν οποιαν εισοδον εσχομεν προς υμας και πως επεστρεψατε προς τον θεον απο των ειδωλων δουλευειν θεω ζωντι και αληθινω

¹⁰και αναμενειν τον υιον αυτου εκ των ουρανων ον ηγειρεν εκ νεκρων ιησουν τον ρυομενον ημας απο της οργης της ερχομενης

Chapter 2

- ¹αυτοι γαρ οιδατε αδελφοι την εισοδον ημων την προς υμας οτι ου κενη γεγονεν
²αλλα και προπαθοντες και υβρισθεντες καθως οιδατε εν φιλιπποις επαρρησιασαμεθα εν τω θεω ημων λαλησαι προς υμας το ευαγγελιον του θεου εν πολλω αγωνι
³η γαρ παρακλησις ημων ουκ εκ πλανης ουδε εξ ακαθαρσιας ουτε εν δολω
⁴αλλα καθως δεδοκιμασαμεθα υπο του θεου πιστευθηναι το ευαγγελιον ουτως λαλουμεν ουχ ως ανθρωποις αρεσκοντες αλλα τω θεω τω δοκιμαζοντι τας καρδιας ημων
⁵ουτε γαρ ποτε εν λογω κολακειας εγενηθημεν καθως οιδατε ουτε εν προφασει πλεονεξιας θεος μαρτυς
⁶ουτε ζητουντες εξ ανθρωπων δοξαν ουτε αφ υμων ουτε απ αλλων δυναμενοι εν βαρει ειναι ως χριστου αποστολοι
⁷αλλ εγενηθημεν ηπιοι εν μεσω υμων ως αν τροφος θαλη τα εαυτης τεκνα
⁸ουτως ιμειρομενοι υμων ευδοκουμεν μεταδουναι υμιν ου μονον το ευαγγελιον του θεου αλλα και τας εαυτων ψυχας διοτι αγαπητοι ημιν γεγενησθε
⁹μημονευετε γαρ αδελφοι τον κοπον ημων και τον μοχθον νυκτος γαρ και ημερας εργαζομενοι προς το μη επιβαρησαι τινα υμων εκηρυξαμεν εις υμας το ευαγγελιον του θεου
¹⁰υμεις μαρτυρες και ο θεος ως οσιως και δικαιως και αμεμπτως υμιν τοις πιστευουσιν εγενηθημεν
¹¹καθαπερ οιδατε ως ενα εκαστον υμων ως πατηρ τεκνα εαυτου παρακαλουντες υμας και παραμυθουμενοι
¹²και μαρτυρουμενοι εις το περιπατησαι υμας αξιως του θεου του καλουντος υμας εις την εαυτου βασιλειαν και δοξαν
¹³δια τουτο και ημεις ευχαριστουμεν τω θεω αδιαλειπτως οτι παραλαβοντες λογον ακοης παρ ημων του θεου εδεξασθε ου λογον ανθρωπων αλλα καθως εστιν αληθως λογον θεου ος και ενεργειται εν υμιν τοις πιστευουσιν
¹⁴υμεις γαρ μιμηται εγενηθητε αδελφοι των εκκλησιων του θεου των ουσων εν τη ιουδαια εν χριστω ιησου οτι ταυτα επαθετε και υμεις υπο των ιδιων συμφυλετων καθως και αυτοι υπο των ιουδαιων
¹⁵των και τον κυριον αποκτειναντων ιησουν και τους ιδιους προφητας και ημας εκδιωξαντων και θεω μη αρεσκοντων και πασιν ανθρωποις εναντιων
¹⁶κωλυοντων ημας τοις εθνεσιν λαλησαι ινα σωθωσιν εις το αναπληρωσαι αυτων τας αμαρτιας παντοτε εφθασεν δε επ αυτους η οργη εις τελος
¹⁷ημεις δε αδελφοι απορφανισθεντες αφ υμων προς καιρον ωρας προσωπω ου καρδια περισσοτερω εσπουδασαμεν το προσωπον υμων ιδειν εν πολλη επιθυμια
¹⁸διο ηθελησαμεν ελθειν προς υμας εγω μεν παυλος και απαξ και δις και ενεκοψεν ημας ο σατανας

¹⁹τις γαρ ημων ελπις η χαρα η στεφανος καυχησεως η ουχι και υμεις εμπροσθεν του κυριου
ημων ιησου χριστου εν τη αυτου παρουσια

²⁰υμεις γαρ εστε η δοξα ημων και η χαρα

Chapter 3

- ¹διο μηκετι στεγοντες ευδοκησαμεν καταλειφθηναι εν αθηναις μονοι
- ²και επεμψαμεν τιμοθεον τον αδελφον ημων και διακονον του θεου και συνεργον ημων εν τω ευαγγελιω του χριστου εις το στηριξαι υμας και παρακαλεσαι υμας περι της πιστεως υμων
- ³τω μηδενα σαινεσθαι εν ταις θλιψεσιν ταυταις αυτοι γαρ οιδατε οτι εις τουτο κειμεθα
- ⁴και γαρ οτε προς υμας ημεν προελεγομεν υμιν οτι μελλομεν θλιβεσθαι καθως και εγενετο και οιδατε
- ⁵δια τουτο καγω μηκετι στεγων επεμψα εις το γνωσαι την πιστιν υμων μηπως επειρασεν υμας ο πειραζων και εις κενον γενηται ο κοπος ημων
- ⁶αρτι δε ελθοντος τιμοθεου προς ημας αφ υμων και ευαγγελισαμενου ημιν την πιστιν και την αγαπην υμων και οτι εχετε μνειαν ημων αγαθην παντοτε επιποθουντες ημας ιδειν καθαπερ και ημεις υμας
- ⁷δια τουτο παρεκληθημεν αδελφοι εφ υμιν επι παση τη θλιψει και αναγκη ημων δια της υμων πιστεως
- ⁸οτι νυν ζωμεν εαν υμεις στηκητε εν κυριω
- ⁹τινα γαρ ευχαριστιαν δυναμεθα τω θεω ανταποδουσαι περι υμων επι παση τη χαρα η χαιρομεν δι υμας εμπροσθεν του θεου ημων
- ¹⁰νυκτος και ημερας υπερ εκπερισσου δεομενοι εις το ιδειν υμων το προσωπον και καταρτισαι τα υστερηματα της πιστεως υμων
- ¹¹αυτος δε ο θεος και πατηρ ημων και ο κυριος ημων ιησους χριστος κατευθυναι την οδον ημων προς υμας
- ¹²υμας δε ο κυριος πλεονασαι και περισσευσαι τη αγαπη εις αλληλους και εις παντας καθαπερ και ημεις εις υμας
- ¹³εις το στηριξαι υμων τας καρδιας αμεμπτους εν αγιωσυνη εμπροσθεν του θεου και πατρος ημων εν τη παρουσια του κυριου ημων ιησου χριστου μετα παντων των αγιων αυτου

Chapter 4

¹το λοιπον ουν αδελφοι ερωτωμεν υμας και παρακαλουμεν εν κυριω ιησου καθως παρελαβετε παρ ημων το πως δει υμας περιπατειν και αρεσκειν θεω ινα περισσευητε μαλλον

²οιδατε γαρ τινας παραγγελιας εδωκαμεν υμιν δια του κυριου ιησου

³τουτο γαρ εστιν θελημα του θεου ο αγιασμος υμων απεχεσθαι υμας απο της πορνειας

⁴ειδεναι εκαστον υμων το εαυτου σκευος κτασθαι εν αγιασμω και τιμη

⁵μη εν παθει επιθυμιας καθαπερ και τα εθνη τα μη ειδοτα τον θεον

⁶το μη υπερβαινειν και πλεονεκτειν εν τω πραγματι τον αδελφον αυτου διοτι εκδικος ο κυριος περι παντων τουτων καθως και προειπαμεν υμιν και διεμαρτυραμεθα

⁷ου γαρ εκαλεσεν ημας ο θεος επι ακαθαρσια αλλ εν αγιασμω

⁸τοιγαρουν ο αθετων ουκ ανθρωπον αθετει αλλα τον θεον τον και δοντα το πνευμα αυτου το αγιον εις ημας

⁹περι δε της φιλαδελφιας ου χρειαν εχετε γραφειν υμιν αυτοι γαρ υμεις θεοδιδακτοι εστε εις το αγαπαν αλληλους

¹⁰και γαρ ποιειτε αυτο εις παντας τους αδελφους τους εν ολη τη μακεδονια παρακαλουμεν δε υμας αδελφοι περισσευειν μαλλον

¹¹και φιλοτιμεισθαι ησυχάζειν και πρασσειν τα ιδια και εργαζεσθαι ταις ιδιαις χερσιν υμων καθως υμιν παρηγγειλαμεν

¹²ινα περιπατητε ευσημονως προς τους εξω και μηδενος χρειαν εχητε

¹³ου θελω δε υμας αγνοειν αδελφοι περι των κεκοιμημενων ινα μη λυπησθε καθως και οι λοιποι οι μη εχοντες ελπιδα

¹⁴ει γαρ πιστευομεν οτι ιησους απεθανεν και ανεστη ουτως και ο θεος τους κοιμηθεντας δια του ιησου αξει συν αυτω

¹⁵τουτο γαρ υμιν λεγομεν εν λογω κυριου οτι ημεις οι ζωντες οι περιλειπομενοι εις την παρουσιαν του κυριου ου μη φθασωμεν τους κοιμηθεντας

¹⁶οτι αυτος ο κυριος εν κελευσματι εν φωνη αρχαγγελου και εν σαλπιγγι θεου καταβησεται απ ουρανου και οι νεκροι εν χριστω αναστησονται πρωτον

¹⁷επειτα ημεις οι ζωντες οι περιλειπομενοι αμα συν αυτοις αρπαγησομεθα εν νεφελαις εις απαντησιν του κυριου εις αερα και ουτως παντοτε συν κυριω εσομεθα

¹⁸ωστε παρακαλειτε αλληλους εν τοις λογοις τουτοις

Chapter 5

- ¹περι δε των χρονων και των καιρων αδελφοι ου χρειαν εχετε υμιν γραφεσθαι
²αυτοι γαρ ακριβως οιδατε οτι η ημερα κυριου ως κλεπτης εν νυκτι ουτως ερχεται
³οταν γαρ λεγωσιν ειρηνη και ασφαλεια τοτε αιφνιδιος αυτοις εφισταται ολεθρος ωσπερ η ωδινη εν γαστρι εχουση και ου μη εκφυγωσιν
⁴υμεις δε αδελφοι ουκ εστε εν σκοτει ινα η ημερα υμας ως κλεπτης καταλαβη
⁵παντες υμεις υιοι φωτος εστε και υιοι ημερας ουκ εσμεν νυκτος ουδε σκοτους
⁶αρα ουν μη καθευδωμεν ως και οι λοιποι αλλα γρηγορωμεν και νηφωμεν
⁷οι γαρ καθευδοντες νυκτος καθευδουσιν και οι μεθυσκομενοι νυκτος μεθουσιν
⁸ημεις δε ημερας οντες νηφωμεν ενδυσαμενοι θωρακα πιστεως και αγαπης και περικεφαλαιαν ελπιδα σωτηριας
⁹οτι ουκ εθετο ημας ο θεος εις οργην αλλ εις περιποιησιν σωτηριας δια του κυριου ημων ιησου χριστου
¹⁰του αποθανοντος υπερ ημων ινα ειτε γρηγορωμεν ειτε καθευδωμεν αμα συν αυτω ζησωμεν
¹¹διο παρακαλειτε αλληλους και οικοδομειτε εις τον ενα καθως και ποιειτε
¹²ερωτωμεν δε υμας αδελφοι ειδεναι τους κοπιωντας εν υμιν και προισταμενους υμων εν κυριω και νουθετουντας υμας
¹³και ηγεισθαι αυτους υπερ εκπερισσου εν αγαπη δια το εργον αυτων ειρηνευετε εν εαυτοις
¹⁴παρακαλουμεν δε υμας αδελφοι νουθετειτε τους ατακτους παραμυθεισθε τους ολιγοψυχους αντεχεσθε των ασθενων μακροθυμειτε προς παντας
¹⁵ορατε μη τις κακον αντι κακου τινη αποδω αλλα παντοτε το αγαθον διωκετε και εις αλληλους και εις παντας
¹⁶παντοτε χαιρετε
¹⁷αδιαλειπτως προσευχεσθε
¹⁸εν παντι ευχαριστειτε τουτο γαρ θελημα θεου εν χριστω ιησου εις υμας
¹⁹το πνευμα μη σβεννυτε
²⁰προφητειας μη εξουθενειτε
²¹παντα δοκιμαζετε το καλον κατεχετε
²²απο παντος ειδους πονηρου απεχεσθε
²³αυτος δε ο θεος της ειρηνης αγιασαι υμας ολοτελεις και ολοκληρον υμων το πνευμα και η ψυχη και το σωμα αμεμπτως εν τη παρουσια του κυριου ημων ιησου χριστου τηρηθειη
²⁴πιστος ο καλων υμας ος και ποιησει
²⁵αδελφοι προσευχεσθε περι ημων
²⁶ασπασασθε τους αδελφους παντας εν φιληματι αγιω
²⁷ορκιζω υμας τον κυριον αναγνωσθηναι την επιστολην πασιν τοις αγιοις αδελφοις
²⁸η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μεθ υμων αμην

2 Thessalonians

Chapter 1

¹παυλος και σιλουανος και τιμοθεος τη εκκλησια θεσσαλονικεων εν θεω πατρι ημων και κυριω ιησου χριστω
²χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
³ευχαριστην οφειλομεν τω θεω παντοτε περι υμων αδελφοι καθως αξιον εστιν οτι υπεραυξανει η πιστις υμων και πλεοναζει η αγαπη ενος εκαστου παντων υμων εις αλληλους
⁴ωστε ημας αυτους εν υμιν καυχασθαι εν ταις εκκλησιαις του θεου υπερ της υπομονης υμων και πιστεως εν πασιν τοις διωγμοις υμων και ταις θλιψεσιν αις ανεχεσθε
⁵ενδειγμα της δικαιας κρισεως του θεου εις το καταξιωθηναι υμας της βασιλειας του θεου υπερ ης και πασχετε
⁶ειπερ δικαιον παρα θεω ανταποδουναι τοις θλιβουσιν υμας θλιψιν
⁷και υμιν τοις θλιβομενοις ανεσιν μεθ ημων εν τη αποκαλυψει του κυριου ιησου απ ουρανου μετ αγγελων δυναμεως αυτου
⁸εν πυρι φλογος διδοντος εκδικησιν τοις μη ειδοσιν θεον και τοις μη υπακουουσιν τω ευαγγελιω του κυριου ημων ιησου χριστου
⁹οιτινες δικην τισουσιν ολεθρον αιωνιον απο προσωπου του κυριου και απο της δοξης της ισχυος αυτου
¹⁰οταν ελθη ενδοξασθηναι εν τοις αγιοις αυτου και θαυμασθηναι εν πασιν τοις πιστευουσιν οτι επιστευθη το μαρτυριον ημων εφ υμας εν τη ημερα εκεινη
¹¹εις ο και προσευχομεθα παντοτε περι υμων ινα υμας αξιωση της κλησεως ο θεος ημων και πληρωση πασαν ευδοκιαν αγαθωσυνης και εργων πιστεως εν δυναμει
¹²οπως ενδοξασθη το ονομα του κυριου ημων ιησου χριστου εν υμιν και υμεις εν αυτω κατα την χαριν του θεου ημων και κυριου ιησου χριστου

Chapter 2

- ¹ερωτωμεν δε υμας αδελφοι υπερ της παρουσιας του κυριου ημων ιησου χριστου και ημων επισυναγωγης επ αυτον
- ²εις το μη ταχεως σαλευθηναι υμας απο του νοος μητε θροεισθαι μητε δια πνευματος μητε δια λογου μητε δι επιστολης ως δι ημων ως οτι ενεστηκεν η ημερα του χριστου
- ³μη τις υμας εξαπατηση κατα μηδενα τροπον οτι εαν μη ελθη η αποστασια πρωτον και αποκαλυφθη ο ανθρωπος της αμαρτιας ο υιος της απωλειας
- ⁴ο αντικειμενος και υπεрайρομενος επι παν το λεγομενον θεον η σεβασμα ωστε αυτον εις τον ναον του θεου ως θεον καθισαι αποδεικνυντα εαυτον οτι εστιν θεος
- ⁵ου μνημονευετε οτι ετι ων προς υμας ταυτα ελεγον υμιν
- ⁶και νυν το κατεχον οιδατε εις το αποκαλυφθηναι αυτον εν τω εαυτου καιρω
- ⁷το γαρ μυστηριον ηδη ενεργειται της ανομιας μονον ο κατεχων αρτι εως εκ μεσου γενηται
- ⁸και τοτε αποκαλυφθησεται ο ανομος ον ο κυριος αναλωσει τω πνευματι του στοματος αυτου και καταργησει τη επιφανεια της παρουσιας αυτου
- ⁹ου εστιν η παρουσια κατ ενεργειαν του σατανα εν παση δυναμει και σημειοις και τερασιν ψευδους
- ¹⁰και εν παση απατη της αδικιας εν τοις απολλυμενοις ανθ ων την αγαπην της αληθειας ουκ εδεξαντο εις το σωθηναι αυτους
- ¹¹και δια τουτο πεμψει αυτοις ο θεος ενεργειαν πλανης εις το πιστευσαι αυτους τω ψευδει
- ¹²ινα κριθωσιν παντες οι μη πιστευσαντες τη αληθεια αλλ ευδοκησαντες εν τη αδικια
- ¹³ημεις δε οφειλομεν ευχαριστην τω θεω παντοτε περι υμων αδελφοι ηγαπημενοι υπο κυριου οτι ειλετο υμας ο θεος απ αρχης εις σωτηριαν εν αγιασμω πνευματος και πιστει αληθειας
- ¹⁴εις ο εκαλεσεν υμας δια του ευαγγελιου ημων εις περιποιησιν δοξης του κυριου ημων ιησου χριστου
- ¹⁵αρα ουν αδελφοι στηκετε και κρατειτε τας παραδοσεις ας εδιδαχθητε ειτε δια λογου ειτε δι επιστολης ημων
- ¹⁶αυτος δε ο κυριος ημων ιησους χριστος και ο θεος και πατηρ ημων ο αγαπησας ημας και δους παρακλησιν αιωνιαν και ελπιδα αγαθην εν χαριτι
- ¹⁷παρακαλεσαι υμων τας καρδιας και στηριξα υμας εν παντι λογω και εργω αγαθω

Chapter 3

- ¹το λοιπον προσευχεσθε αδελφοι περι ημων ινα ο λογος του κυριου τρεχη και δοξαζηται καθως και προς υμας
- ²και ινα ρυσθωμεν απο των ατοπων και πονηρων ανθρωπων ου γαρ παντων η πιστις
- ³πιστος δε εστιν ο κυριος ος στηριξει υμας και φυλαξει απο του πονηρου
- ⁴πεποιθαμεν δε εν κυριω εφ υμας οτι α παραγγελλομεν υμιν και ποιειτε και ποιησετε
- ⁵ο δε κυριος κατευθυναι υμων τας καρδιας εις την αγαπην του θεου και εις την υπομονην του χριστου
- ⁶παραγγελλομεν δε υμιν αδελφοι εν ονοματι του κυριου ημων ιησου χριστου στελλεσθαι υμας απο παντος αδελφου ατακτως περιπατουντος και μη κατα την παραδοσιν ην παρελαβεν παρ ημων
- ⁷αυτοι γαρ οιδατε πως δει μιμεισθαι ημας οτι ουκ ητακτησαμεν εν υμιν
- ⁸ουδε δωρεαν αρτον εφαγομεν παρα τινος αλλ εν κοπω και μοχθω νυκτα και ημεραν εργαζομενοι προς το μη επιβαρησαι τινα υμων
- ⁹ουχ οτι ουκ εχομεν εξουσιαν αλλ ινα εαυτους τυπον δωμεν υμιν εις το μιμεισθαι ημας
- ¹⁰και γαρ οτε ημεν προς υμας τουτο παρηγγελλομεν υμιν οτι ει τις ου θελει εργαζεσθαι μηδε εσθιετω
- ¹¹ακουομεν γαρ τινας περιπατουντας εν υμιν ατακτως μηδεν εργαζομενους αλλα περιεργαζομενους
- ¹²τοις δε τοιουτοις παραγγελλομεν και παρακαλουμεν δια του κυριου ημων ιησου χριστου ινα μετα ησυχιας εργαζομενοι τον εαυτων αρτον εσθιωσιν
- ¹³υμεις δε αδελφοι μη εκκακησητε καλοποιουντες
- ¹⁴ει δε τις ουχ υπακουει τω λογω ημων δια της επιστολης τουτον σημειουσθε και μη συναναμιγνυσθε αυτω ινα εντραπη
- ¹⁵και μη ως εχθρον ηγεισθε αλλα νουθετειτε ως αδελφον
- ¹⁶αυτος δε ο κυριος της ειρηνης δωη υμιν την ειρηνην δια παντος εν παντι τροπω ο κυριος μετα παντων υμων
- ¹⁷ο ασπασμος τη εμη χειρι παυλου ο εστιν σημειον εν παση επιστολη ουτως γραφω
- ¹⁸η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μετα παντων υμων αμην

1 Timothy

Chapter 1

¹παυλος αποστολος ιησου χριστου κατ επιταγην θεου σωτηρος ημων και κυριου ιησου χριστου της ελπιδος ημων
²τιμοθεω γνησιω τεκνω εν πιστει χαρις ελεος ειρηνη απο θεου πατρος ημων και ιησου χριστου του κυριου ημων
³καθως παρεκαλεσα σε προσμειναι εν εφεσω πορευομενος εις μακεδονιαν ινα παραγγειλης τισιν μη ετεροδιδασκαλειν
⁴μηδε προσεχειν μυθους και γενεαλογιας απεραντοις αιτινες ζητησεις παρεχουσιν μαλλον η οικοδομιαν θεου την εν πιστει
⁵το δε τελος της παραγγελιας εστιν αγαπη εκ καθαρης καρδιας και συνειδησεως αγαθης και πιστεως ανυποκριτου
⁶ων τινες αστοχησαντες εξετραπησαν εις ματαιολογιαν
⁷θελοντες ειναι νομοδιδασκαλοι μη νοουντες μητε α λεγουσιν μητε περι τινων διαβεβαιουνται
⁸οιδαμεν δε οτι καλος ο νομος εαν τις αυτω νομιμως χρηται
⁹ειδως τουτο οτι δικαιω νομος ου κειται ανομοις δε και ανυποτακτοις ασεβεισιν και αμαρτωλοις ανοσοις και βεβηλοις πατραλwaiς και μητραλwaiς ανδροφονοις
¹⁰πορνοις αρσενοκοιταις ανδραποδισταις ψευστaiς επιορκοις και ει τι ετερον τη υγιαίνουση διδασκαλια αντικειται
¹¹κατα το ευαγγελιον της δοξης του μακαριου θεου ο επιστευθην εγω
¹²και χαριν εχω τω ενδυναμωσαντι με χριστω ιησου τω κυριω ημων οτι πιστον με ηγησατο θεμενος εις διακονιαν
¹³τον προτερον οντα βλασφημον και διωκτην και υβριστην αλλ ηληθην οτι αγνων εποιησα εν απιστια
¹⁴υπερεπλεονασεν δε η χαρις του κυριου ημων μετα πιστεως και αγαπης της εν χριστω ιησου
¹⁵πιστος ο λογος και πασης αποδοχης αξιος οτι χριστος ιησους ηλθεν εις τον κοσμον αμαρτωλους σωσαι ων πρωτος ειμι εγω
¹⁶αλλα δια τουτο ηληθην ινα εν εμοι πρωτω ενδειξηται ιησους χριστος την πασαν μακροθυμιαν προς υποτυπωσιν των μελλοντων πιστευειν επ αυτω εις ζωνη αιωνιον
¹⁷τω δε βασιλει των αιωνων αφθαρτω αορατω μονω σοφω θεω τιμη και δοξα εις τους αιωνας των αιωνων αμην
¹⁸ταυτην την παραγγελιαν παρατιθεμαι σοι τεκνον τιμοθεε κατα τας προαγουσας επι σε προφητειας ινα στρατευη εν αυταις την καλην στρατειαν
¹⁹εχων πιστιν και αγαθην συνειδησιν ην τινες απωσαμενοι περι την πιστιν εναυαγησαν
²⁰ων εστιν υμεναιος και αλεξανδρος ους παρεδωκα τω σατανα ινα παιδευθωσιν μη βλασφημειν

Chapter 2

- ¹παρακαλω ουν πρωτον παντων ποιεισθαι δεησεις προσευχας εντευξεις ευχαριστιας υπερ παντων ανθρωπων
- ²υπερ βασιλεων και παντων των εν υπεροχη οντων ινα ηρεμον και ησυχιον βιον διαγωμεν εν παση ευσεβεια και σεμνοτητι
- ³τουτο γαρ καλον και αποδεκτον ενωπιον του σωτηρος ημων θεου
- ⁴ος παντας ανθρωπους θελει σωθηναι και εις επιγνωσιν αληθειας ελθειν
- ⁵εις γαρ θεος εις και μεσιτης θεου και ανθρωπων ανθρωπος χριστος ιησους
- ⁶ο δους εαυτον αντιλυτρον υπερ παντων το μαρτυριον καιρις ιδιοις
- ⁷εις ο ετεθην εγω κηρυξ και αποστολος αληθειαν λεγω εν χριστω ου ψευδομαι διδασκαλος εθνων εν πιστει και αληθεια
- ⁸βουλομαι ουν προσευχεσθαι τους ανδρας εν παντι τοπω επαιροντας οσιους χειρας χωρις οργης και διαλογισμου
- ⁹ωσαυτως και τας γυναικας εν καταστολη κοσμιω μετα αιδους και σωφροσυνης κοσμειν εαυτας μη εν πλεγμασιν η χρυσω η μαργαριταις η ιματισμω πολυτελει
- ¹⁰αλλ ο πρεπει γυναιξιν επαγγελλομεναις θεοσεβειαν δι εργατων αγαθων
- ¹¹γυνη εν ησυχια μανθανετω εν παση υποταγη
- ¹²γυναικι δε διδασκειν ουκ επιτρεπω ουδε αυθεντειν ανδρος αλλ ειναι εν ησυχια
- ¹³αδαμ γαρ πρωτος επλασθη ειτα ευα
- ¹⁴και αδαμ ουκ ηπατηθη η δε γυνη απατηθεισα εν παραβασει γεγονεν
- ¹⁵σωθησεται δε δια της τεκνογονιας εαν μεινωσιν εν πιστει και αγαπη και αγιασμω μετα σωφροσυνης

Chapter 3

¹πιστος ο λογος ει τις επισκοπης ορεγεται καλου εργου επιθυμει
²δει ουν τον επισκοπον ανεπιληπτον ειναι μιας γυναικος ανδρα νηφαλιον σωφρονα
κοσμιον φιλοξενον διδακτικον
³μη παροινον μη πληκτην μη αισχροκερδη αλλ επιεικη αμαχον αφιλαργυρον
⁴του ιδιου οικου καλως προισταμενον τεκνα εχοντα εν υποταγη μετα πασης σεμνοτητος
⁵ει δε τις του ιδιου οικου προστηναι ουκ οιδεν πως εκκλησιας θεου επιμελησεται
⁶μη νεοφυτον ινα μη τυφωθεις εις κριμα εμπεση του διαβολου
⁷δει δε αυτον και μαρτυριαν καλην εχειν απο των εξωθεν ινα μη εις ονειδισμον εμπεση
και παγιδα του διαβολου
⁸διακονους ωσαυτως σεμνους μη διλογους μη οινω πολλω προσεχοντας μη αισχροκερδεις
⁹εχοντας το μυστηριον της πιστεως εν καθαρα συνειδησει
¹⁰και ουτοι δε δοκιμαζεσθωσαν πρωτον ειτα διακονειτωσαν ανεγκλητοι οντες
¹¹γυναικας ωσαυτως σεμνας μη διαβολους νηφαλιους πιστας εν πασιν
¹²διακονοι εστωσαν μιας γυναικος ανδρες τεκνων καλως προισταμενοι και των ιδιων
οικων
¹³οι γαρ καλως διακονησαντες βαθμον εαυτοις καλον περιποιουνται και πολλην παρρησιαν
εν πιστει τη εν χριστω ιησου
¹⁴ταυτα σοι γραφω ελπιζων ελθειν προς σε ταχιον
¹⁵εαν δε βραδυνω ινα ειδης πως δει εν οικω θεου αναστρεφεσθαι ητις εστιν εκκλησια θεου
ζωντος στυλος και εδραιωμα της αληθειας
¹⁶και ομολογουμενωσ μεγα εστιν το της ευσεβειας μυστηριον θεος εφανερωθη εν σαρκι
εδικαιωθη εν πνευματι ωφθη αγγελοις εκηρυχθη εν εθνεσιν επιστευθη εν κοσμω ανεληφθη
εν δοξη

Chapter 4

¹το δε πνευμα ρητως λεγει οτι εν υστεροις καιροις αποστησονται τινες της πιστεως προσεχοντες πνευμασιν πλανοις και διδασκαλαις δαιμονιων
²εν υποκρισει ψευδολογων κεκαυτηριασμενων την ιδιαν συνειδησιν
³κωλυοντων γαμειν απεχεσθαι βρωματων α ο θεος εκτισεν εις μεταληψιν μετα ευχαριστιας τοις πιστοις και επεγνωκοσιν την αληθειαν
⁴οτι παν κτισμα θεου καλον και ουδεν αποβλητον μετα ευχαριστιας λαμβανομενον
⁵αγιαζεται γαρ δια λογου θεου και εντευξεως
⁶ταυτα υποτιθεμενος τοις αδελφοις καλος εση διακονος ιησου χριστου εντρεφομενος τοις λογοις της πιστεως και της καλης διδασκαλιας η παρηκολουθηκας
⁷τους δε βεβηλους και γραωδεις μυθους παραιτου γυμναζε δε σεαυτον προς ευσεβειαν
⁸η γαρ σωματικη γυμνασια προς ολιγον εστιν ωφελιμος η δε ευσεβεια προς παντα ωφελιμος εστιν επαγγελιαν εχουσα ζωης της νυν και της μελλουσης
⁹πιστος ο λογος και πασης αποδοχης αξιος
¹⁰εις τουτο γαρ και κοπιωμεν και ονειδιζομεθα οτι ηλπικαμεν επι θεω ζωντι ος εστιν σωτηρ παντων ανθρωπων μαλιστα πιστων
¹¹παραγγελλε ταυτα και διδασκε
¹²μηδεις σου της νεοτητος καταφρονειτω αλλα τυπος γινου των πιστων εν λογω εν αναστροφη εν αγαπη εν πνευματι εν πιστει εν αγνεια
¹³εως ερχομαι προσεχε τη αναγνωσει τη παρακλησει τη διδασκαλια
¹⁴μη αμελει του εν σοι χαρισματος ο εδοθη σοι δια προφητειας μετα επιθεσεως των χειρων του πρεσβυτεριου
¹⁵ταυτα μελετα εν τουτοις ισθι ινα σου η προκοπη φανερα η εν πασιν
¹⁶επεχε σεαυτω και τη διδασκαλια επιμενε αυτοις τουτο γαρ ποιων και σεαυτον σωσεις και τους ακουοντας σου

Chapter 5

¹πρεσβυτερω μη επιπληξης αλλα παρακαλει ως πατερα νεωτερους ως αδελφους
²πρεσβυτερας ως μητερας νεωτερας ως αδελφας εν παση αγνεια
³χηρας τιμα τας οντως χηρας
⁴ει δε τις χηρα τεκνα η εκγονα εχει μανθανετωσαν πρωτον τον ιδιον οικον ευσεβειν και αμοιβας αποδιδοναι τοις προγονοις τουτο γαρ εστιν καλον και αποδεκτον ενωπιον του θεου
⁵η δε οντως χηρα και μεμονωμενη ηλπικεν επι τον θεον και προσμενει ταις δεησεσιν και ταις προσευχαις νυκτος και ημερας
⁶η δε σπαταλωσα ζωσα τεθνηκεν
⁷και ταυτα παραγγελλε ινα ανεπιληπτοι ωσιν
⁸ει δε τις των ιδιων και μαλιστα των οικειων ου προνοει την πιστιν ηρνηται και εστιν απιστου χειρων
⁹χηρα καταλεγεσθω μη ελαττον ετων εξηκοντα γεγονυια ενος ανδρος γυνη
¹⁰εν εργοις καλοις μαρτυρουμενη ει ετεκνοτροφησεν ει εξενοδοχησεν ει αγιων ποδας ενιψεν ει θλιβομενοις επηρκεσεν ει παντι εργω αγαθω επηκολουθησεν
¹¹νεωτερας δε χηρας παραιτου οταν γαρ καταστρηνιασωσιν του χριστου γαμειν θελουσιν
¹²εχουσαι κριμα οτι την πρωτην πιστιν ηθετησαν
¹³αμα δε και αργαι μανθανουσιν περιερχομεναι τας οικιας ου μονον δε αργαι αλλα και φλυαροι και περιεργοι λαλουσαι τα μη δεοντα
¹⁴βουλομαι ουν νεωτερας γαμειν τεκνογονειν οικοδεσποτειν μηδεμιαν αφορμην διδοναι τω αντικειμενω λοιδοριας χαριν
¹⁵ηδη γαρ τινες εξετραπησαν οπισω του σατανα
¹⁶ει τις πιστος η πιστη εχει χηρας επαρκειτω αυταις και μη βαρεισθω η εκκλησια ινα ταις οντως χηραις επαρκεση
¹⁷οι καλως προεστωτες πρεσβυτεροι διπλης τιμης αξιουσθωσαν μαλιστα οι κοπιωντες εν λογω και διδασκαλια
¹⁸λεγει γαρ η γραφη βουν αλωντα ου φιμωσεις και αξιος ο εργατης του μισθου αυτου
¹⁹κατα πρεσβυτερου κατηγοριαν μη παραδεχου εκτος ει μη επι δυο η τριων μαρτυρων
²⁰τους αμαρτανοντας ενωπιον παντων ελεγγε ινα και οι λοιποι φοβον εχωσιν
²¹διαμαρτυρομαι ενωπιον του θεου και κυριου ιησου χριστου και των εκλεκτων αγγελων ινα ταυτα φυλαξης χωρις προκριματος μηδεν ποιων κατα προσκλισιν
²²χειρας ταχεως μηδενι επιτιθει μηδε κοινωνει αμαρτιας αλλοτριαις σεαυτον αγνον τηρει
²³μηκετι υδροποτει αλλ οινω ολιγω χρω δια τον στομαχον σου και τας πυκνας σου ασθενειας
²⁴τινων ανθρωπων αι αμαρτιαι προδηλοι εισιν προαγουσαι εις κρισιν τισιν δε και επακολουθουσιν

²⁵ωσαυτως και τα καλα εργα προδηλα εστιν και τα αλλως εχοντα κρυβηναι ου δυναται

Chapter 6

¹οσοι εισιν υπο ζυγον δουλοι τους ιδιους δεσποτας πασης τιμης αξιους ηγεισθωσαν ινα μη το ονομα του θεου και η διδασκαλια βλασφημηται
²οι δε πιστους εχοντες δεσποτας μη καταφρονειτωσαν οτι αδελφοι εισιν αλλα μαλλον δουλευετωσαν οτι πιστοι εισιν και αγαπητοι οι της ευεργεσιας αντιλαμβανομενοι ταυτα διδασκε και παρακαλει
³ει τις ετεροδιδασκαλει και μη προσερχεται υγιαινουσιν λογοις τοις του κυριου ημων ιησου χριστου και τη κατ ευσεβειαν διδασκαλια
⁴τετυφωται μηδεν επισταμενος αλλα νοσων περι ζητησεις και λογομαχιας εξ ων γινεται φθονος ερις βλασφημιαι υπονοιαι πονηραι
⁵παραδιατριβαι διεφθαρμενων ανθρωπων τον νουν και απεστερημενων της αληθειας νομιζοντων πορισμον ειναι την ευσεβειαν αφιστασο απο των τοιουτων
⁶εστιν δε πορισμος μεγας η ευσεβεια μετα αυταρκειας
⁷ουδεν γαρ εισηνεγκαμεν εις τον κοσμον δηλον οτι ουδε εξενεγκειν τι δυναμεθα
⁸εχοντες δε διατροφας και σκεπασματα τουτοις αρκεσθησομεθα
⁹οι δε βουλομενοι πλουτειν εμπιπτουσιν εις πειρασμον και παγιδα και επιθυμιας πολλας ανοητους και βλαβερας αιτινες βυθιζουσιν τους ανθρωπους εις ολεθρον και απωλειαν
¹⁰ριζα γαρ παντων των κακων εστιν η φιλαργυρια ης τινες ορεγομενοι απεπλανηθησαν απο της πιστεως και εαυτους περιπειραν οδυναις πολλαις
¹¹συ δε ω ανθρωπε του θεου ταυτα φευγε διωκε δε δικαιοσυνην ευσεβειαν πιστιν αγαπην υπομονην πραοτητα
¹²αγωνιζου τον καλον αγωνα της πιστεως επιλαβου της αιωνιου ζωης εις ην και εκληθης και ωμολογησας την καλην ομολογιαν ενωπιον πολλων μαρτυρων
¹³παραγγελλω σοι ενωπιον του θεου του ζωοποιουντος τα παντα και χριστου ιησου του μαρτυρησαντος επι ποντιου πιλατου την καλην ομολογιαν
¹⁴τηρησαι σε την εντολην ασπιλον ανεπιληπτον μεχρι της επιφανειας του κυριου ημων ιησου χριστου
¹⁵ην καιροις ιδιοις δειξει ο μακαριος και μονος δυναστης ο βασιλευς των βασιλευοντων και κυριος των κυριευοντων
¹⁶ο μονος εχων αθανασιαν φως οικων απροσιτον ον ειδεν ουδεις ανθρωπων ουδε ιδειν δυναται ω τιμη και κρατος αιωνιον αμην
¹⁷τοις πλουσιοις εν τω νυν αιωνι παραγγελλε μη υψηλοφρονειν μηδε ηλπικεναι επι πλουτου αδηλοτητι αλλ εν τω θεω τω ζωντι τω παρεχοντι ημιν πλουσιως παντα εις απολαυσιν
¹⁸αγαθοεργειν πλουτειν εν εργοις καλοις ευμεταδοτους ειναι κοινωνικους
¹⁹αποθησαυριζοντας εαυτοις θεμελιον καλον εις το μελλον ινα επιλαβωνται της αιωνιου ζωης

²⁰ω τιμοθεε την παρακαταθηκην φυλαξον εκτρεπομενος τας βεβηλους κενοφωνιας και αντιθεσεις της ψευδωνυμου γνωσεως

²¹ην τινες επαγγελλομενοι περι την πιστιν ηστοχησαν η χαρις μετα σου αμην

2 Timothy

Chapter 1

- ¹παυλος αποστολος ιησου χριστου δια θεληματος θεου κατ επαγγελιαν ζωης της εν χριστω ιησου
- ²τιμοθεω αγαπητω τεκνω χαρις ελεος ειρηνη απο θεου πατρος και χριστου ιησου του κυριου ημων
- ³χαριν εχω τω θεω ω λατρευω απο προγονων εν καθαρα συνειδησει ως αδιαλειπτον εχω την περι σου μνειαν εν ταις δεησεσιν μου νυκτος και ημερας
- ⁴επιποθων σε ιδειν μεμνημενος σου των δακρυων ινα χαρας πληρωθω
- ⁵υπομνησιν λαμβανων της εν σοι ανυποκριτου πιστεως ητις ενωκησεν πρωτον εν τη μαμμη σου λωιδι και τη μητρι σου ευνικη πεπεισμαι δε οτι και εν σοι
- ⁶δι ην αιτιαν αναμιμησκω σε αναζωπυρειν το χαρισμα του θεου ο εστιν εν σοι δια της επιθεσεως των χειρων μου
- ⁷ου γαρ εδωκεν ημιν ο θεος πνευμα δειλιας αλλα δυναμεως και αγαπης και σωφρονισμου
- ⁸μη ουν επαισχυνηθης το μαρτυριον του κυριου ημων μηδε εμε τον δεσμιον αυτου αλλα συγκακοπαθησον τω ευαγγελιω κατα δυναμιν θεου
- ⁹του σωσαντος ημας και καλεσαντος κλησει αγια ου κατα τα εργα ημων αλλα κατ ιδιαν προθεσιν και χαριν την δοθεισαν ημιν εν χριστω ιησου προ χρονων αιωνιων
- ¹⁰φανερωθεισαν δε νυν δια της επιφανειας του σωτηρος ημων ιησου χριστου καταργησαντος μεν τον θανατον φωτισαντος δε ζωην και αφθαρσιαν δια του ευαγγελιου
- ¹¹εις ο ετεθην εγω κηρυξ και αποστολος και διδασκαλος εθνων
- ¹²δι ην αιτιαν και ταυτα πασχω αλλ ουκ επαισχυνομαι οιδα γαρ ω πεπιστευκα και πεπεισμαι οτι δυνατος εστιν την παραθηκην μου φυλαξαι εις εκεινην την ημεραν
- ¹³υποτυπωσιν εχε υγιαινοντων λογων ων παρ εμου ηκουσας εν πιστει και αγαπη τη εν χριστω ιησου
- ¹⁴την καλην παρακαταθηκην φυλαξον δια πνευματος αγιου του ενοικουντος εν ημιν
- ¹⁵οιδας τουτο οτι απεστραφησαν με παντες οι εν τη ασια ων εστιν φυγελλος και ερμογενης
- ¹⁶δωη ελεος ο κυριος τω ονησιφορου οικω οτι πολλακις με ανεψυξεν και την αλυσιν μου ουκ επησχυνθη
- ¹⁷αλλα γενομενος εν ρωμη σπουδαιοτερον εζητησεν με και ευρεν
- ¹⁸δωη αυτω ο κυριος ευρειν ελεος παρα κυριου εν εκεινη τη ημερα και οσα εν εφεσω διηκονησεν βελτιον συ γινωσκεις

Chapter 2

- ¹συ ουν τεκνον μου ενδυναμου εν τη χαριτι τη εν χριστω ιησου
²και α ηκουσας παρ εμου δια πολλων μαρτυρων ταυτα παραθου πιστοις ανθρωποις οιτινες
ικανοι εσονται και ετερους διδαξαι
³συ ουν κακοπαθησον ως καλος στρατιωτης ιησου χριστου
⁴ουδεις στρατευομενος εμπλεκεται ταις του βιου πραγματειαις ινα τω στρατολογησαντι
αρεση
⁵εαν δε και αθλη τις ου στεφανουται εαν μη νομιμως αθληση
⁶τον κοπιωντα γεωργον δει πρωτον των καρπων μεταλαμβανειν
⁷νοει α λεγω δωη γαρ σοι ο κυριος συνεσιν εν πασιν
⁸μνημονευε ιησουν χριστον εγηγερμενον εκ νεκρων εκ σπερματος δαβιδ κατα το ευαγγελιον
μου
⁹εν ω κακοπαθω μεχρι δεσμων ως κακουργος αλλ ο λογος του θεου ου δεδεται
¹⁰δια τουτο παντα υπομενω δια τους εκλεκτους ινα και αυτοι σωτηριας τυχωσιν της εν
χριστω ιησου μετα δοξης αιωνιου
¹¹πιστος ο λογος ει γαρ συναπεθανομεν και συζησομεν
¹²ει υπομενομεν και συμβασιλευσομεν ει αρνουμεθα κακεινος αρνησεται ημας
¹³ει απιστουμεν εκεινος πιστος μενει αρνησασθαι εαυτον ου δυναται
¹⁴ταυτα υπομιμησκει διαμαρτυρομενος ενωπιον του κυριου μη λογομαχειν εις ουδεν
χρησιμον επι καταστροφη των ακουοντων
¹⁵σπουδασον σεαυτον δοκιμον παραστησαι τω θεω εργατην ανεπαισχυντον ορθοτομουντα
τον λογον της αληθειας
¹⁶τας δε βεβηλους κενοφωνιας περιστασο επι πλειον γαρ προκοψουσιν ασεβειας
¹⁷και ο λογος αυτων ως γαγγραινα νομην εξει ων εστιν υμεναιος και φιλητος
¹⁸οιτινες περι την αληθειαν ηστοχησαν λεγοντες την αναστασιν ηδη γεγονεναι και
ανατρεπουσιν την τινων πιστιν
¹⁹ο μεντοι στερεος θεμελιος του θεου εστηκεν εχων την σφραγιδα ταυτην εγνω κυριος
τους οντας αυτου και αποστητω απο αδικιας πας ο ονομαζων το ονομα χριστου
²⁰εν μεγαλη δε οικια ουκ εστιν μονον σκευη χρυσα και αργυρα αλλα και ξυλινα και
οστρακινα και α μεν εις τιμην α δε εις ατιμιαν
²¹εαν ουν τις εκκαθαρη εαυτον απο τουτων εσται σκευος εις τιμην ηγιασμενον και
ευχρηστον τω δεσποτη εις παν εργον αγαθον ητοιμασμενον
²²τας δε νεωτερικας επιθυμιας φευγε διωκε δε δικαιοσυνην πιστιν αγαπην ειρηνην μετα
των επικαλουμενων τον κυριον εκ καθαρας καρδιας
²³τας δε μωρας και απαιδευτους ζητησεις παραιτου ειδως οτι γεννωσιν μαχας
²⁴δουλον δε κυριου ου δει μαχεσθαι αλλ ηπιον ειναι προς παντας διδακτικον ανεξικακον

²⁵εν πραοτητι παιδευοντα τους αντιδιατιθεμενους μηποτε δω αυτοις ο θεος μετανοιαν εις επιγνωσιν αληθειας

²⁶και ανανηψωσιν εκ της του διαβολου παγιδος εξωγρημενοι υπ αυτου εις το εκεινου θελημα

Chapter 3

- ¹τουτο δε γινωσκε οτι εν εσχαταις ημεραις ενστησονται καιροι χαλεποι
²εσονται γαρ οι ανθρωποι φιλαυτοι φιλαργυροι αλαζονες υπερηφανοι βλασφημοι γονευσιν
απειθεις αχαριστοι ανοσιοι
³αστοργοι ασπονδοι διαβολοι ακρατεις ανημεροι αφιλαγαθοι
⁴προδοται προπετεις τετυφωμενοι φιληδονοι μαλλον η φιλοθεοι
⁵εχοντες μορφωσιν ευσεβειας την δε δυναμιν αυτης ηρνημενοι και τουτους αποτρεπου
⁶εκ τουτων γαρ εισιν οι ενδυνοντες εις τας οικιας και αιχμαλωτευοντες τα γυναικαρια
σεσωρευμενα αμαρτιας αγομενα επιθυμιας ποικιλαις
⁷παντοτε μανθανοντα και μηδεποτε εις επιγνωσιν αληθειας ελθειν δυναμενα
⁸ον τροπον δε ιαννης και ιαμβρης αντεστησαν μωυσει ουτως και ουτοι ανθιστανται τη
αληθεια ανθρωποι κατεφθαρμενοι τον νουν αδοκιμοι περι την πιστιν
⁹αλλ ου προκοψουσιν επι πλειον η γαρ ανοια αυτων εκδηλος εσται πασιν ως και η εκεινων
εγενετο
¹⁰συ δε παρηκολουθηκας μου τη διδασκαλια τη αγωγη τη προθεσει τη πιστει τη μακροθυμια
τη αγαπη τη υπομονη
¹¹τοις διωγμοις τοις παθημασιν οια μοι εγενετο εν αντιοχεια εν ικονιω εν λυστροις οιους
διωγμους υπηνεγκα και εκ παντων με ερρυσατο ο κυριος
¹²και παντες δε οι θελοντες ευσεβως ζην εν χριστω ιησου διωχθησονται
¹³πονηροι δε ανθρωποι και γοητες προκοψουσιν επι το χειρον πλανωντες και πλανωμενοι
¹⁴συ δε μενε εν οις εμαθες και επιστωθης ειδως παρα τινος εμαθες
¹⁵και οτι απο βρεφους τα ιερα γραμματα οιδας τα δυναμενα σε σοφισαι εις σωτηριαν δια
πιστεως της εν χριστω ιησου
¹⁶πασα γραφη θεοπνευστος και ωφελιμος προς διδασκαλιαν προς ελεγχον προς
επανορθωσιν προς παιδειαν την εν δικαιοσυνη
¹⁷ινα αρτιος η ο του θεου ανθρωπος προς παν εργον αγαθον εξηρητισμενος

Chapter 4

¹διαμαρτυρομαι ουν εγω ενωπιον του θεου και του κυριου ιησου χριστου του μελλοντος κρινειν ζωντας και νεκρους κατα την επιφανειαν αυτου και την βασιλειαν αυτου
²κηρυξον τον λογον επιστηθι ευκαιρως ακαιρως ελεγξον επιτιμησον παρακαλεσον εν παση μακροθυμια και διδαχη
³εσται γαρ καιρος οτε της υγιαινουσης διδασκαλιας ουκ ανεξονται αλλα κατα τας επιθυμιας τας ιδias εαυτοις επισωρευσουσιν διδασκαλους κνηθομενοι την ακοην
⁴και απο μεν της αληθειας την ακοην αποστρεψουσιν επι δε τους μυθους εκτραπησονται
⁵συ δε νηφε εν πασιν κακοπαθησον εργον ποιησον ευαγγελιστου την διακονιαν σου πληροφορησον
⁶εγω γαρ ηδη σπενδομαι και ο καιρος της εμης αναλυσεως εφεστηκεν
⁷τον αγωνα τον καλον ηγωνισμαι τον δρομον τετελεκα την πιστιν τετηρηκα
⁸λοιπον αποκειται μοι ο της δικαιοσυνης στεφανος ον αποδωσει μοι ο κυριος εν εκεινη τη ημερα ο δικαιος κριτης ου μονον δε εμοι αλλα και πασιν τοις ηγαπηκοσιν την επιφανειαν αυτου
⁹σπουδασον ελθειν προς με ταχεως
¹⁰δημας γαρ με εγκατελιπεν αγαπησας τον νυν αιωνα και επορευθη εις θεσσαλονικην κρησκης εις γαλατιαν τιτος εις δαλματιαν
¹¹λουκας εστιν μονος μετ εμου μαρκον αναλαβων αγε μετα σεαυτου εστιν γαρ μοι ευχρηστος εις διακονιαν
¹²τυχικον δε απεστειλα εις εφεσον
¹³τον φελονην ον απελιπον εν τρωαδι παρα καρπω ερχομενος φερε και τα βιβλια μαλιστα τας μεμβρανας
¹⁴αλεξανδρος ο χαλκευς πολλα μοι κακα ενεδειξατο αποδωη αυτω ο κυριος κατα τα εργα αυτου
¹⁵ον και συ φυλασσου λιαν γαρ ανθεστηκεν τοις ημετεροις λογοις
¹⁶εν τη πρωτη μου απολογια ουδεις μοι συμπαραγενετο αλλα παντες με εγκατελιπον μη αυτοις λογισθειη
¹⁷ο δε κυριος μοι παρεστη και ενεδυναμωσεν με ινα δι εμου το κηρυγμα πληροφορηθη και ακουση παντα τα εθνη και ερρυσθην εκ στοματος λεοντος
¹⁸και ρυσεται με ο κυριος απο παντος εργου πονηρου και σωσει εις την βασιλειαν αυτου την επουρανιον ω η δοξα εις τους αιωνας των αιωνων αμην
¹⁹ασπασαι πρισκαν και ακυλαν και τον ονησιφορου οικον
²⁰εραστος εμεινεν εν κορινθω τροφιμον δε απελιπον εν μιλητω ασθενουντα
²¹σπουδασον προ χειμωνος ελθειν ασπαζεται σε ευβουλος και πουδης και λινος και κλαυδια και οι αδελφοι παντες
²²ο κυριος ιησους χριστος μετα του πνευματος σου η χαρις μεθ υμων αμην

Titus

Chapter 1

¹παυλος δουλος θεου αποστολος δε ιησου χριστου κατα πιστιν εκλεκτων θεου και επιγνωσιν αληθειας της κατ ευσεβειαν
²επ ελπιδι ζωης αιωνιου ην επηγγειλατο ο αψευδης θεος προ χρονων αιωνιων
³εφανερωσεν δε καιροις ιδιοις τον λογον αυτου εν κηρυγματι ο επιστευθην εγω κατ επιταγην του σωτηρος ημων θεου
⁴τιτω γνησιω τεκνω κατα κοινην πιστιν χαρις ελεος ειρηνη απο θεου πατρος και κυριου ιησου χριστου του σωτηρος ημων
⁵τουτου χαριν κατελιπον σε εν κρητη ινα τα λειποντα επιδιορθωση και καταστησης κατα πολιν πρεσβυτερους ως εγω σοι διαταξαμην
⁶ει τις εστιν ανεγκλητος μιας γυναικος ανηρ τεκνα εχων πιστα μη εν κατηγορια ασωτιας η ανυποτακτα
⁷δει γαρ τον επισκοπον ανεγκλητον ειναι ως θεου οικονομον μη αυθαδη μη οργιλον μη παροινον μη πληκτην μη αισχροκερδη
⁸αλλα φιλοξενον φιλαγαθον σωφρονα δικαιον οσιον εγκρατη
⁹αντεχομενον του κατα την διδαχην πιστου λογου ινα δυνατος η και παρακαλειν εν τη διδασκαλια τη υγιαίνουση και τους αντιλεγοντας ελεγχειν
¹⁰εισιν γαρ πολλοι και ανυποτακτοι ματαιολογοι και φρεναπαται μαλιστα οι εκ περιτομης
¹¹ους δει επιστομιζειν οιτινες ολους οικους ανατρεπουσιν διδασκοντες α μη δει αισχρου κερδους χαριν
¹²ειπεν τις εξ αυτων ιδιος αυτων προφητης κρητες αιει ψευσται κακα θηρια γαστερες αργαι
¹³η μαρτυρια αυτη εστιν αληθης δι ην αιτιαν ελεγε αυτους αποτομωσ ινα υγιαίνωσιν εν τη πιστει
¹⁴μη προσεχοντες ιουδαικοις μυθοις και εντολαις ανθρωπων αποστρεφομενων την αληθειαν
¹⁵παντα μεν καθαρα τοις καθαροις τοις δε μεμιασμενοις και απιστοις ουδεν καθαρων αλλα μεμιανται αυτων και ο νους και η συνειδησις
¹⁶θεον ομολογουσιν ειδεναι τοις δε εργοις αρνουνται βδελυκτοι οντες και απειθεις και προς παν εργον αγαθον αδοκιμοι

Chapter 2

- ¹συ δε λαλει α πρεπει τη υγιαinouση διδασκαλια
²πρεσβυτας νηφαλιους ειναι σεμνους σωφρονας υγιαinouτας τη πιστει τη αγαπη τη υπομονη
³πρεσβυτιδας ωσαυτως εν καταστηματι ιεροπρεπεις μη διαβολους μη οινω πολλω δεδουλωμενας καλοδιδασκαλους
⁴ινα σωφρονηζωσιν τας νεας φιλανδρους ειναι φιλοτεκνους
⁵σωφρονας αγνας οικουρους αγαθας υποτασσομενας τοις ιδιοις ανδρασιν ινα μη ο λογος του θεου βλασφημηται
⁶τους νεωτερους ωσαυτως παρακαλει σωφρονειν
⁷περι παντα σεαυτον παρεχομενος τυπον καλων εργαων εν τη διδασκαλια αδιαφθοριαν σεμνοτητα αφθαρσιαν
⁸λογον υγιη ακαταγνωστον ινα ο εξ εναντιας εντραπη μηδεν εχων περι υμων λεγειν φαυλον
⁹δουλους ιδιοις δεσποταις υποτασσεσθαι εν πασιν ευαρεστους ειναι μη αντιλεγοντας
¹⁰μη νοσφιζομενους αλλα πιστιν πασαν ενδεικνυμενους αγαθην ινα την διδασκαλιαν του σωτηρος ημων θεου κοσμωσιν εν πασιν
¹¹επεφανη γαρ η χαρις του θεου η σωτηριος πασιν ανθρωποις
¹²παιδευουσα ημας ινα αρνησαμενοι την ασεβειαν και τας κοσμικας επιθυμιας σωφρονως και δικαιως και ευσεβως ζησωμεν εν τω νυν αιωνι
¹³προσδεχομενοι την μακαριαν ελπιδα και επιφανειαν της δοξης του μεγαλου θεου και σωτηρος ημων ιησου χριστου
¹⁴ος εδωκεν εαυτον υπερ ημων ινα λυτρωσεται ημας απο πασης ανομιας και καθαρηση εαυτω λαον περιουσιον ζηλωτην καλων εργαων
¹⁵ταυτα λαλει και παρακαλει και ελεγχε μετα πασης επιταγης μηδεις σου περιφρονητω

Chapter 3

¹υπομιμνησκε αυτους αρχαις και εξουσιαις υποτασσεσθαι πειθαρχειν προς παν εργον αγαθον ετοιμους ειναι
²μηδενα βλασφημειν αμαχους ειναι επιεικεις πασαν ενδεικνυμενους πραοτητα προς παντας ανθρωπους
³ημεν γαρ ποτε και ημεις ανοητοι απειθεις πλανωμενοι δουλευοντες επιθυμιας και ηδοναις ποικιλαις εν κακια και φθωνω διαγοντες στυγητοι μισουντες αλληλους
⁴οτε δε η χρηστοτης και η φιλανθρωπια επεφανη του σωτηρος ημων θεου
⁵ουκ εξ εργων των εν δικαιοσυνη ων εποησαμεν ημεις αλλα κατα τον αυτου ελεον εσωσεν ημας δια λουτρου παλιγγενεσις και ανακαινωσεως πνευματος αγιου
⁶ου εξεχεεν εφ ημας πλουσιως δια ιησου χριστου του σωτηρος ημων
⁷ινα δικαιωθεντες τη εκεινου χαριτι κληρονομοι γενωμεθα κατ ελπιδα ζωης αιωνιου
⁸πιστος ο λογος και περι τουτων βουλομαι σε διαβεβαιουσθαι ινα φροντιζωσιν καλων εργων προιστασθαι οι πεπιστευκοτες τω θεω ταυτα εστιν τα καλα και ωφελιμα τοις ανθρωποις
⁹μωρας δε ζητησεις και γενεαλογιας και ερεις και μαχας νομικας περιστασο εισιν γαρ ανωφελεις και ματαιοι
¹⁰αιρετικον ανθρωπον μετα μιαν και δευτεραν νουθεσιαν παραιτου
¹¹ειδωσ οτι εξεστραπται ο τοιουτος και αμαρτανει ων αυτοκατακριτος
¹²οταν πεμψω αρτεμαν προς σε η τυχικον σπουδασον ελθειν προς με εις νικοπολιν εκει γαρ κεκρικα παραχειμασαι
¹³ζηναν τον νομικον και απολλω σπουδαιως προπεμψον ινα μηδεν αυτοις λειπη
¹⁴μανθανετωσαν δε και οι ημετεροι καλων εργων προιστασθαι εις τας αναγκαιας χρειας ινα μη ωσιν ακαρποι
¹⁵ασπαζονται σε οι μετ εμου παντες ασπασαι τους φιλοντας ημας εν πιστει η χαρις μετα παντων υμων αμην

Philemon

Chapter 1

¹παυλος δεσμιος χριστου ιησου και τιμοθεος ο αδελφος φιλημονι τω αγαπητω και
συνεργω ημων
²και απφια τη αγαπητη και αρχιππω τω συστρατιωτη ημων και τη κατ οικον σου εκκλησια
³χαρις υμιν και ειρηνη απο θεου πατρος ημων και κυριου ιησου χριστου
⁴ευχαριστω τω θεω μου παντοτε μνειαν σου ποιουμενος επι των προσευχων μου
⁵ακουων σου την αγαπην και την πιστιν ην εχεις προς τον κυριον ιησουν και εις παντας
τους αγιους
⁶οπως η κοινωνια της πιστεως σου ενεργης γενηται εν επιγνωσει παντος αγαθου του εν
υμιν εις χριστον ιησουν
⁷χαραν γαρ εχομεν πολλην και παρακλησιν επι τη αγαπη σου οτι τα σπλαγχνα των αγιων
αναπεπαυται δια σου αδελφε
⁸διο πολλην εν χριστω παρηρησιαν εχων επιτασσειν σοι το ανηκον
⁹δια την αγαπην μαλλον παρακαλω τοιουτους ων ως παυλος πρεσβυτης νυνι δε και δεσμιος
ιησου χριστου
¹⁰παρακαλω σε περι του εμου τεκνου ον εγεννησα εν τοις δεσμοις μου ονησιμον
¹¹τον ποτε σοι αχρηστον νυνι δε σοι και εμοι ευχρηστον ον ανεπεμψα
¹²συ δε αυτον τουτεστιν τα εμα σπλαγχνα προσλαβου
¹³ον εγω εβουλομην προς εμαυτον κατεχειν ινα υπερ σου διακονη μοι εν τοις δεσμοις του
ευαγγελιου
¹⁴χωρις δε της σης γνωμης ουδεν ηθελησα ποιησαι ινα μη ως κατα αναγκην το αγαθον
σου η αλλα κατα εκουσιον
¹⁵ταχα γαρ δια τουτο εχωρισθη προς ωραν ινα αιωνιον αυτον απεχης
¹⁶ουκετι ως δουλον αλλ υπερ δουλον αδελφον αγαπητον μαλιστα εμοι ποσω δε μαλλον
σοι και εν σαρκι και εν κυριω
¹⁷ει ουν εμε εχεις κοινωνον προσλαβου αυτον ως εμε
¹⁸ει δε τι ηδικησεν σε η οφειλει τουτο εμοι ελλογει
¹⁹εγω παυλος εγραψα τη εμη χειρι εγω αποτισω ινα μη λεγω σοι οτι και σεαυτον μοι
προσοφειλεις
²⁰ναι αδελφε εγω σου οναιμην εν κυριω αναπαυσον μου τα σπλαγχνα εν κυριω
²¹πεποιθως τη υπακοη σου εγραψα σοι ειδως οτι και υπερ ο λεγω ποιησεις
²²αμα δε και ετοιμαζε μοι ξενιαν ελπίζω γαρ οτι δια των προσευχων υμων χαρισθησομαι
υμιν
²³ασπαζονται σε επαφρας ο συναιχμαλωτος μου εν χριστω ιησου
²⁴μαρκος αρισταρχος δημας λουκας οι συνεργοι μου
²⁵η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μετα του πνευματος υμων αμην

Hebrews

Chapter 1

¹ πολυμερως και πολυτροπως παλαι ο θεος λαλησας τοις πατρασιν εν τοις προφηταις
επ εσχατων των ημερων τουτων ελαλησεν ημιν εν υιω
² ον εθηκεν κληρονομον παντων δι ου και τους αιωνας εποιησεν
³ ος ων απαυγασμα της δοξης και χαρακτηρ της υποστασεως αυτου φερων τε τα παντα τω
ρηματι της δυναμεως αυτου δι εαυτου καθαρισμον ποιησαμενος των αμαρτιων ημων
εκαθισεν εν δεξια της μεγαλωσυνης εν υψηλοις
⁴ τοσουτω κρειττων γενομενος των αγγελων οσω διαφορωτερον παρ αυτους
κεκληρονομηκεν ονομα
⁵ τινη γαρ ειπεν ποτε των αγγελων υιος μου ει συ εγω σημερον γεγεννηκα σε και παλιν εγω
εσομαι αυτω εις πατερα και αυτος εσται μοι εις υιον
⁶ οταν δε παλιν εισαγαγη τον πρωτοτοκον εις την οικουμενην λεγει και προσκυνησατωσαν
αυτω παντες αγγελοι θεου
⁷ και προς μεν τους αγγελους λεγει ο ποιων τους αγγελους αυτου πνευματα και τους
λειτουργους αυτου πυρος φλογα
⁸ προς δε τον υιον ο θρονος σου ο θεος εις τον αιωνα του αιωνος ραβδος ευθυτητος η ραβδος
της βασιλειας σου
⁹ ηγαπησας δικαιοσυνην και εμισησας ανομιαν δια τουτο εχρισεν σε ο θεος ο θεος σου
ελαιον αγαλλιασεως παρα τους μετοχους σου
¹⁰ και συ κατ αρχας κυριε την γην εθεμελιωσας και εργα των χειρων σου εισιν οι ουρανοι
¹¹ αυτοι απολουνται συ δε διαμενεις και παντες ως ιματιον παλαιωθησονται
¹² και ωσει περιβολαιον ελιξεις αυτους και αλλαγησονται συ δε ο αυτος ει και τα ετη σου
ουκ εκλειψουσιν
¹³ προς τινα δε των αγγελων ειρηκεν ποτε καθου εκ δεξιων μου εως αν θω τους εχθρους
σου υποποδιον των ποδων σου
¹⁴ ουχι παντες εισιν λειτουργικα πνευματα εις διακονιαν αποστελλομενα δια τους μελλοντας
κληρονομειν σωτηριαν

Chapter 2

- ¹δια τουτο δει περισσοτερος ημας προσεχειν τοις ακουσθεισιν μηποτε παραρρωμεν
²ει γαρ ο δι αγγελων λαληθεις λογος εγενετο βεβαιος και πασα παραβασις και παρακοη
ελαβεν ενδικον μισθαποδοσιαν
³πως ημεις εκφευζομεθα τηλικαυτης αμελησαντες σωτηριας ητις αρχην λαβουσα λαλεισθαι
δια του κυριου υπο των ακουσαντων εις ημας εβεβαιωθη
⁴συνεπιμαρτυρουντος του θεου σημειοις τε και τερασιν και ποικιλαις δυναμεσιν και
πνευματος αγιου μερισμοις κατα την αυτου θελησιν
⁵ου γαρ αγγελιοις υπεταξεν την οικουμενην την μελλουσαν περι ης λαλουμεν
⁶διεμαρτυρατο δε που τις λεγων τι εστιν ανθρωπος οτι μιμνησκη αυτου η υιος ανθρωπου
οτι επισκεπη αυτον
⁷ηλαττωσας αυτον βραχυ τι παρ αγγελου δοξη και τιμη εστεφανωσας αυτον και κατεστησας
αυτον επι τα εργα των χειρων σου
⁸παντα υπεταξας υποκατω των ποδων αυτου εν γαρ τω υποταξαι αυτω τα παντα ουδεν
αφηκεν αυτω ανυποτακτον νυν δε ουπω ορωμεν αυτω τα παντα υποτεταγμενα
⁹τον δε βραχυ τι παρ αγγελου ηλαττωμενον βλεπομεν ιησουν δια το παθημα του θανατου
δοξη και τιμη εστεφανωμενον οπως χαριτι θεου υπερ παντος γευσηται θανατου
¹⁰επρεπεν γαρ αυτω δι ον τα παντα και δι ου τα παντα πολλους υιους εις δοξαν αγαγοντα
τον αρχηγον της σωτηριας αυτων δια παθηματων τελειωσαι
¹¹ο τε γαρ αγιαζων και οι αγιαζομενοι εξ ενος παντες δι ην αιτιαν ουκ επαισχυνεται
αδελφους αυτους καλειν
¹²λεγων απαγγελω το ονομα σου τοις αδελφοις μου εν μεσω εκκλησιας υμνησω σε
¹³και παλιν εγω εσομαι πεποιθως επ αυτω και παλιν ιδου εγω και τα παιδια α μοι εδωκεν
ο θεος
¹⁴επει ουν τα παιδια κεκοινωνηκεν σαρκος και αιματος και αυτος παραπλησιως μετεσχεν
των αυτων ινα δια του θανατου καταργηση τον το κρατος εχοντα του θανατου τουτεστιν
τον διαβολον
¹⁵και απαλλαξη τουτους οσοι φοβω θανατου δια παντος του ζην ενοχοι ησαν δουλειας
¹⁶ου γαρ δηπου αγγελων επιλαμβανεται αλλα σπερματος αβρααμ επιλαμβανεται
¹⁷οθεν ωφειλεν κατα παντα τοις αδελφοις ομοιωθηναι ινα ελεμων γενηται και πιστος
αρχιερευς τα προς τον θεον εις το ιλασκεσθαι τας αμαρτιας του λαου
¹⁸εν ω γαρ πεπονθεν αυτος πειρασθεις δυναται τοις πειραζομενοις βοηθησαι

Chapter 3

- ¹οθεν αδελφοι αγιοι κλησεως επουρανιου μετοχοι κατανοησατε τον αποστολον και αρχιερα της ομολογιας ημων χριστον ιησουν
- ²πιστον οντα τω ποιησαντι αυτον ως και μωσης εν ολω τω οικω αυτου
- ³πλειονος γαρ δοξης ουτος παρα μωσην ηξιωται καθ οσον πλειονα τιμην εχει του οικου ο κατασκευασας αυτον
- ⁴πας γαρ οικος κατασκευαζεται υπο τινος ο δε τα παντα κατασκευασας θεος
- ⁵και μωσης μεν πιστος εν ολω τω οικω αυτου ως θεραπων εις μαρτυριον των λαληθησομενων
- ⁶χριστος δε ως υιος επι τον οικον αυτου ου οικος εσμεν ημεις εανπερ την παρρησιαν και το καυχημα της ελπιδος μεχρι τελους βεβαιαν κατασχωμεν
- ⁷διο καθως λεγει το πνευμα το αγιον σημερον εαν της φωνης αυτου ακουσητε
- ⁸μη σκληρυνητε τας καρδιας υμων ως εν τω παραπικρασμω κατα την ημεραν του πειρασμου εν τη ερημω
- ⁹ου επειρασαν με οι πατερες υμων εδοκιμασαν με και ειδον τα εργα μου τεσσαρακοντα ετη
- ¹⁰διο προσωχθισα τη γενεα εκεινη και ειπον αιι πλανωνται τη καρδια αυτοι δε ουκ εγνωσαν τας οδους μου
- ¹¹ως ωμοσα εν τη οργη μου ει εισελευσονται εις την καταπαυσιν μου
- ¹²βλεπετε αδελφοι μηποτε εσται εν τινι υμων καρδια πονηρα απιστιας εν τω αποστηναι απο θεου ζωντος
- ¹³αλλα παρακαλειτε εαυτους καθ εκαστην ημεραν αχρις ου το σημερον καλειται ινα μη σκληρυνθη τις εξ υμων απατη της αμαρτιας
- ¹⁴μετοχοι γαρ γεγοναμεν του χριστου εανπερ την αρχην της υποστασεως μεχρι τελους βεβαιαν κατασχωμεν
- ¹⁵εν τω λεγεσθαι σημερον εαν της φωνης αυτου ακουσητε μη σκληρυνητε τας καρδιας υμων ως εν τω παραπικρασμω
- ¹⁶τινες γαρ ακουσαντες παρεπικραναν αλλ ου παντες οι εξελθοντες εξ αιγυπτου δια μωσεως
- ¹⁷τισιν δε προσωχθισεν τεσσαρακοντα ετη ουχι τοις αμαρτησασιν ων τα κωλα επεσεν εν τη ερημω
- ¹⁸τισιν δε ωμοσεν μη εισελευσεσθαι εις την καταπαυσιν αυτου ει μη τοις απειθησασιν
- ¹⁹και βλεπομεν οτι ουκ ηδυνηθησαν εισελθειν δι απιστιαν

Chapter 4

- ¹φοβηθωμεν ουν μηποτε καταλειπομενης επαγγελιας εισελθειν εις την καταπαυσιν αυτου δοκη τις εξ υμων υστερηκεναι
- ²και γαρ εσμεν ευηγγελισμενοι καθαπερ κακεινοι αλλ ουκ ωφελησεν ο λογος της ακοης εκεινους μη συγκεκραμενος τη πιστει τοις ακουσασι
- ³εισερχομεθα γαρ εις την καταπαυσιν οι πιστευσαντες καθως ειρηκεν ως ωμοσα εν τη οργη μου ει εισελευσονται εις την καταπαυσιν μου καιτοι των εργαων απο καταβολης κοσμου γενηθεντων
- ⁴ειρηκεν γαρ που περι της εβδομης ουτως και κατεπαυσεν ο θεος εν τη ημερα τη εβδομη απο παντων των εργαων αυτου
- ⁵και εν τουτω παλιν ει εισελευσονται εις την καταπαυσιν μου
- ⁶επει ουν απολειπεται τινας εισελθειν εις αυτην και οι προτερον ευαγγελισθεντες ουκ εισηλθον δι απειθειαν
- ⁷παλιν τινα οριζει ημεραν σημερον εν δαβιδ λεγων μετα τοσουτον χρονον καθως ειρηται σημερον εαν της φωνης αυτου ακουσητε μη σκληρυνητε τας καρδιας υμων
- ⁸ει γαρ αυτους ιησους κατεπαυσεν ουκ αν περι αλλης ελαλει μετα ταυτα ημερας
- ⁹αρα απολειπεται σαββατισμος τω λαω του θεου
- ¹⁰ο γαρ εισελθων εις την καταπαυσιν αυτου και αυτος κατεπαυσεν απο των εργαων αυτου ωσπερ απο των ιδιων ο θεος
- ¹¹σπουδασωμεν ουν εισελθειν εις εκεινην την καταπαυσιν ινα μη εν τω αυτω τις υποδειγματι πεση της απειθειας
- ¹²ζων γαρ ο λογος του θεου και ενεργης και τομωτερος υπερ πασαν μαχαιραν διστομον και δικνουμενος αχρι μερισμου ψυχης τε και πνευματος αρμων τε και μυελων και κριτικος ενθυμησεων και εννοιων καρδιας
- ¹³και ουκ εστιν κτισις αφανης ενωπιον αυτου παντα δε γυμνα και τετραχηλισμενα τοις οφθαλμοις αυτου προς ον ημιν ο λογος
- ¹⁴εχοντες ουν αρχιερα μεγαν διεληλυθοτα τους ουρανους ιησουν τον υιον του θεου κρατωμεν της ομολογιας
- ¹⁵ου γαρ εχομεν αρχιερα μη δυναμενον συμπαθησαι ταις ασθeneιαις ημων πεπειρασμενον δε κατα παντα καθ ομοιοτητα χωρις αμαρτιας
- ¹⁶προσερχομεθα ουν μετα παρρησιας τω θρονω της χαριτος ινα λαβωμεν ελεον και χαριν ευρωμεν εις ευκαιρον βοηθειαν

Chapter 5

¹πας γαρ αρχιερευς εξ ανθρωπων λαμβανομενος υπερ ανθρωπων καθισταται τα προς τον θεον ινα προσφερη δωρα τε και θυσιας υπερ αμαρτιων
²μετριοπαθειν δυναμενος τοις αγνοουσιν και πλανωμενοις επει και αυτος περικειται ασθενειαν
³και δια ταυτην οφειλει καθως περι του λαου ουτως και περι εαυτου προσφερειν υπερ αμαρτιων
⁴και ουχ εαυτω τις λαμβανει την τιμην αλλα ο καλουμενος υπο του θεου καθαπερ και ο ααρων
⁵ουτως και ο χριστος ουχ εαυτον εδοξασεν γεννηθηναι αρχιερα αλλ ο λαλησας προς αυτον υιος μου ει συ εγω σημερον γεγεννηκα σε
⁶καθως και εν ετερω λεγει συ ιερευς εις τον αιωνα κατα την ταξιν μελχισεδεκ
⁷ος εν ταις ημεραις της σαρκος αυτου δεησεις τε και ικετηριας προς τον δυναμενον σωζειν αυτον εκ θανατου μετα κραυγης ισχυρας και δακρυων προσενεγκας και εισακουσθεις απο της ευλαβειας
⁸και περ ων υιος εμαθεν αφ ων επαθεν την υπακοην
⁹και τελειωθεις εγενετο τοις υπακουουσιν αυτω πασιν αιτιος σωτηριας αιωνιου
¹⁰προσαγορευθεις υπο του θεου αρχιερευς κατα την ταξιν μελχισεδεκ
¹¹περι ου πολυς ημιν ο λογος και δυσερμηνευτος λεγειν επει νωθροι γεγονατε ταις ακοαις
¹²και γαρ οφειλοντες ειναι διδασκαλοι δια τον χρονον παλιν χρειαν εχετε του διδασκειν υμας τινα τα στοιχεια της αρχης των λογιων του θεου και γεγονατε χρειαν εχοντες γαλακτος και ου στερεας τροφης
¹³πας γαρ ο μετεχων γαλακτος απειρος λογου δικαιοσυνης νηπιος γαρ εστιν
¹⁴τελειων δε εστιν η στερεα τροφη των δια την εξιν τα αισθητηρια γεγυμνασμενα εχοντων προς διακρισιν καλου τε και κακου

Chapter 6

¹δίο αφεντες τον της αρχης του χριστου λογον επι την τελειοτητα φερωμεθα μη παλιν
 θεμελιον καταβαλλομενοι μετανοιας απο νεκρων εργων και πιστεως επι θεον
²βαπτισμων διδαχης επιθεσεως τε χειρων αναστασεως τε νεκρων και κριματος αιωνιου
³και τουτο ποιησομεν εανπερ επιτρεπη ο θεος
⁴αδυνατον γαρ τους απαξ φωτισθεντας γευσαμενους τε της δωρεας της επουρανιου και
 μετοχους γενηθεντας πνευματος αγιου
⁵και καλον γευσαμενους θεου ρημα δυναμεις τε μελλοντος αιωνος
⁶και παραπεσοντας παλιν ανακαινιζειν εις μετανοιαν ανασταυρουντας εαυτοις τον υιον
 του θεου και παραδειγματιζοντας
⁷γη γαρ η πιουσα τον επ αυτης πολλακις ερχομενον υετον και τικτουσα βοτανην ευθετον
 εκεινοις δι ους και γεωργειται μεταλαμβανει ευλογιας απο του θεου
⁸εκφερουσα δε ακανθας και τριβολους αδοκιμος και καταρας εγγυς ης το τελος εις καυσιν
⁹πεπεισμεθα δε περι υμων αγαπητοι τα κρειττονα και εχομενα σωτηριας ει και ουτως
 λαλουμεν
¹⁰ου γαρ αδικος ο θεος επιλαθεσθαι του εργου υμων και του κοπου της αγαπης ης ενδειξασθε
 εις το ονομα αυτου διακονησαντες τοις αγιοις και διακονουντες
¹¹επιθυμουμεν δε εκαστον υμων την αυτην ενδεικνυσθαι σπουδην προς την πληροφοριαν
 της ελπιδος αχρι τελους
¹²ινα μη νωθροι γενησθε μιμηται δε των δια πιστεως και μακροθυμιας κληρονομουντων
 τας επαγγελιας
¹³τω γαρ αβρααμ επαγγειλαμενος ο θεος επει κατ ουδενος ειχεν μειζονος ομοσαι ωμοσεν
 καθ εαυτου
¹⁴λεγων η μην ευλογων ευλογησω σε και πληθυνων πληθυνω σε
¹⁵και ουτως μακροθυμησας επετυχεν της επαγγελιας
¹⁶ανθρωποι μεν γαρ κατα του μειζονος ομνουσιν και πασης αυτοις αντιλογιας περας εις
 βεβαιωσιν ο ορκος
¹⁷εν ω περισσοτερον βουλομενος ο θεος επιδειξαι τοις κληρονομοις της επαγγελιας το
 αμεταθετον της βουλης αυτου εμεσιτευσεν ορκω
¹⁸ινα δια δυο πραγματων αμεταθετων εν οις αδυνατον ψευσασθαι θεον ισχυραν παρακλησιν
 εχωμεν οι καταφυγοντες κρατησαι της προκειμενης ελπιδος
¹⁹ην ως ακυραν εχομεν της ψυχης ασφαλη τε και βεβαιαν και εισερχομενην εις το
 εσωτερον του καταπετασματος
²⁰οπου προδρομος υπερ ημων εισηληθεν ιησους κατα την ταξιν μελχισηδεκ αρχιερευς
 γενομενος εις τον αιωνα

Chapter 7

¹ουτος γαρ ο μελχισεδεκ βασιλευς σαλημ ιερευς του θεου του υψιστου ο συναντησας αβρααμ υποστρεφοντι απο της κοπης των βασιλεων και ευλογησας αυτον
²ω και δεκατην απο παντων εμερισεν αβρααμ πρωτον μεν ερμηνευομενος βασιλευς δικαιοσυνης επειτα δε και βασιλευς σαλημ ο εστιν βασιλευς ειρηνης
³απατωρ αμητωρ αγενεαλογητος μητε αρχην ημερων μητε ζωης τελος εχων αφωμοιωμενος δε τω υιω του θεου μενει ιερευς εις το διηνεκες
⁴θεωρειτε δε πληλικος ουτος ω και δεκατην αβρααμ εδωκεν εκ των ακροθινιων ο πατριαρχης
⁵και οι μεν εκ των υιων λειυ την ιερατειαν λαμβανοντες εντολην εχουσιν αποδεκατου τον λαον κατα τον νομον τουτεστιν τους αδελφους αυτων καιπερ εξεληλυθοτας εκ της οσφυος αβρααμ
⁶ο δε μη γενεαλογουμενος εξ αυτων δεδεκατωκεν τον αβρααμ και τον εχοντα τας επαγγελιας ευλογηκεν
⁷χωρις δε πασης αντιλογιας το ελαττον υπο του κρειττονος ευλογειται
⁸και ωδε μεν δεκατας αποθνησκοντες ανθρωποι λαμβανουσιν εκει δε μαρτυρουμενος οτι ζη
⁹και ως επος ειπειν δια αβρααμ και λειυ ο δεκατας λαμβανων δεδεκατωται
¹⁰ετι γαρ εν τη οσφει του πατρος ην οτε συνητησεν αυτω ο μελχισεδεκ
¹¹ει μεν ουν τελειωσις δια της λειυτικης ιερωσυνης ην ο λαος γαρ επ αυτη νενομοθετητο τις ετι χρεια κατα την ταξιν μελχισεδεκ ετερον ανιστασθαι ιερα και ου κατα την ταξιν ααρων λεγεσθαι
¹²μετατιθεμενης γαρ της ιερωσυνης εξ αναγκης και νομου μεταθεσις γινεται
¹³εφ ον γαρ λεγεται ταυτα φυλης ετερας μετεσχηκεν αφ ης ουδεις προσεσχηκεν τω θυσιαστηριω
¹⁴προδηλον γαρ οτι εξ ιουδα ανατεταλκεν ο κυριος ημων εις ην φυλην ουδεν περι ιερωσυνης μωσης ελαλησεν
¹⁵και περισσοτερον ετι καταδηλον εστιν ει κατα την ομοιοτητα μελχισεδεκ ανισταται ιερευς ετερος
¹⁶ος ου κατα νομον εντολης σαρκικης γεγονεν αλλα κατα δυναμιν ζωης ακαταλυτου
¹⁷μαρτυρει γαρ οτι συ ιερευς εις τον αιωνα κατα την ταξιν μελχισεδεκ
¹⁸αθετησις μεν γαρ γινεται προαγουσης εντολης δια το αυτης ασθενες και ανωφελες
¹⁹ουδεν γαρ ετελειωσεν ο νομος επεισαγωγή δε κρειττονος ελπιδος δι ης εγγιζομεν τω θεω
²⁰και καθ οσον ου χωρις ορκωμοσιας οι μεν γαρ χωρις ορκωμοσιας εισιν ιερεις γεγονοτες
²¹ο δε μετα ορκωμοσιας δια του λεγοντος προς αυτον ωμοσεν κυριος και ου μεταμεληθησεται συ ιερευς εις τον αιωνα κατα την ταξιν μελχισεδεκ
²²κατα τοσουτον κρειττονος διαθηκης γεγονεν εγγυος ιησους
²³και οι μεν πλειονες εισιν γεγονοτες ιερεις δια το θανατω κωλυεσθαι παραμενειν

²⁴ ο δε δια το μενειν αυτον εις τον αιωνα απαραβατον εχει την ιερωσυνην

²⁵ οθεν και σωζειν εις το παντελες δυναται τους προσερχομενους δι αυτου τω θεω παντοτε ζων εις το εντυγχανειν υπερ αυτων

²⁶ τοιουτος γαρ ημιν επρεπεν αρχιερευς οσιος ακακος αμιαντος κεχωρισμενος απο των αμαρτωλων και υψηλοτερος των ουρανων γενομενος

²⁷ ος ουκ εχει καθ ημεραν αναγκην ωσπερ οι αρχιερεις προτερον υπερ των ιδιων αμαρτιων θυσιας αναφερειν επειτα των του λαου τουτο γαρ εποιησεν εφραπαξ εαυτον ανενεγκας

²⁸ ο νομος γαρ ανθρωπους καθιστησιν αρχιερεις εχοντας ασθeneian ο λογος δε της ορκωμοσιας της μετα τον νομον υιον εις τον αιωνα τετελειωμενον

Chapter 8

¹κεφαλαιον δε επι τοις λεγομενοις τοιουτον εχομεν αρχιερα ος εκαθισεν εν δεξια του θρονου της μεγαλωσυνης εν τοις ουρανοις
²των αγιων λειτουργος και της σκηνης της αληθινης ην επηξεν ο κυριος και ουκ ανθρωπος
³πας γαρ αρχιερευς εις το προσφερειν δωρα τε και θυσιας καθισταται οθεν αναγκαιον εχειν τι και τουτον ο προσενεγκη
⁴ει μεν γαρ ην επι γης ουδ αν ην ιερευς οντων των ιερεων των προσφεροντων κατα τον νομον τα δωρα
⁵οιτινες υποδειγματι και σκια λατρευουσιν των επουρανιων καθως κεχηματισται μωσης μελλων επιτελειν την σκηνην ορα γαρ φησιν ποιησης παντα κατα τον τυπον τον δειχθεντα σοι εν τω ορει
⁶νυνη δε διαφορωτερας τετευχεν λειτουργιας οσω και κρειττονος εστιν διαθηκης μεσιτης ητις επι κρειττοσιν επαγγελιας νενομοθετηται
⁷ει γαρ η πρωτη εκεινη ην αμεμπτος ουκ αν δευτερας εζητειτο τοπος
⁸μεμφομενος γαρ αυτοις λεγει ιδου ημεραι ερχονται λεγει κυριος και συντελεσω επι τον οικον ισραηλ και επι τον οικον ιουδα διαθηκην καινην
⁹ου κατα την διαθηκην ην εποιησα τοις πατρασιν αυτων εν ημερα επιλαβομενου μου της χειρος αυτων εξαγαγειν αυτους εκ γης αιγυπτου οτι αυτοι ουκ ενεμειναν εν τη διαθηκη μου καγω ημελησα αυτων λεγει κυριος
¹⁰οτι αυτη η διαθηκη ην διαθησομαι τω οικω ισραηλ μετα τας ημερας εκεινας λεγει κυριος διδους νομους μου εις την διανοιαν αυτων και επι καρδιας αυτων επιγραψω αυτους και εσομαι αυτοις εις θεον και αυτοι εσονται μοι εις λαον
¹¹και ου μη διδαξωσιν εκαστος τον πλησιον αυτου και εκαστος τον αδελφον αυτου λεγων γνωθι τον κυριον οτι παντες ειδησουσιν με απο μικρου αυτων εως μεγαλου αυτων
¹²οτι ιλεως εσομαι ταις αδικιας αυτων και των αμαρτιων αυτων και των ανομιων αυτων ου μη μνησθω ετι
¹³εν τω λεγειν καινην πεπαλαιωκεν την πρωτην το δε παλαιουμενον και γηρασκον εγγυς αφανισμου

Chapter 9

- ¹είχεν μὲν οὖν καὶ ἡ πρώτη δικαιώματα λατρείας τοῦ ἁγίου κοσμικῶν
²σκηνῆς γὰρ κατασκευασθῆ ἡ πρώτη ἐν ἣ ἡ τε λυχνία καὶ ἡ τραπεζὰ καὶ ἡ προθεσὶς τῶν
 ἄρτων ἣτις λέγεται ἁγία
³μετὰ δὲ τὸ δευτέρον καταπετάσμα σκηνῆς ἡ λεγομένη ἁγία ἁγίων
⁴χρυσῶν ἐχούσα θυμιατήριον καὶ τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης περικεκαλυμμένην παντοθεν
 χρυσοῦ ἐν ἣ σταμνος χρυσοῦ ἐχούσα τὸ μάννα καὶ ἡ ράβδος ἀαρῶν ἡ βλαστήσασα καὶ αἱ
 πλάκες τῆς διαθήκης
⁵ὑπερανῶ δὲ αὐτῆς χερουβὶμ δοξῆς κατασκιάζοντα τὸ ἱλαστήριον περὶ ὧν οὐκ ἐστὶν νῦν
 λέγειν κατὰ μέρος
⁶τούτων δὲ οὕτως κατασκευασμένων εἰς μὲν τὴν πρώτην σκηνὴν διαπαντός εἰσίσαι οἱ
 ἱερεῖς τὰς λατρείας ἐπιτελοῦντες
⁷εἰς δὲ τὴν δευτέραν ἀπαξ τοῦ ἐνιαυτοῦ μόνος ὁ ἀρχιερεὺς οὐ χωρὶς αἵματος ὁ προσφέρει
 ὑπὲρ ἑαυτοῦ καὶ τῶν τοῦ λαοῦ ἀγνοημάτων
⁸τοῦτο δηλοῦντος τοῦ πνεύματος τοῦ ἁγίου μὴ πῶς πεφανερῶσθαι τὴν τῶν ἁγίων ὁδὸν ἐπὶ
 τῆς πρώτης σκηνῆς ἐχούσης στασίς
⁹ἣτις παραβολὴ εἰς τὸν καιρὸν τὸν ἐνεσθηκότα καθ' ὃν δῶρα τε καὶ θυσίαι προσφέρονται
 μὴ δυναμεῖν κατὰ συνειδήσιν τελειῶσαι τὸν λατρεύοντα
¹⁰μόνον ἐπὶ βρώμασιν καὶ πομασὶν καὶ διαφοροῖς βαπτισμοῖς καὶ δικαιώμασιν σαρκὸς
 μέχρι καιροῦ διορθώσεως ἐπικείμενα
¹¹χρῖστος δὲ παραγενομένος ἀρχιερεὺς τῶν μελλόντων ἀγαθῶν διὰ τῆς μείζονος καὶ
 τελειότερας σκηνῆς οὐ χειροποιήτου τούτεστιν οὐ ταύτης τῆς κτίσεως
¹²οὐδὲ δι' αἵματος τραγῶν καὶ μόσχων διὰ δὲ τοῦ ἰδίου αἵματος εἰσηλθὲν ἐφαπαξ εἰς τὰ
 ἁγία αἰωνίαν λυτρώσιν εὐραμένος
¹³εἰ γὰρ τὸ αἶμα ταύρων καὶ τραγῶν καὶ σπόδος δαμαλέως ραντίζουσα τοὺς κεκοινωμένους
 ἁγιάζει πρὸς τὴν τῆς σαρκὸς καθαροτητα
¹⁴πόσω μάλλον τὸ αἶμα τοῦ χριστοῦ ὃς διὰ πνεύματος αἰωνίου ἑαυτὸν προσήνεγκεν ἀμώμων
 τῶ θεῷ καθαρῆν τὴν συνειδήσιν ὑμῶν ἀπὸ νεκρῶν ἔργων εἰς τὸ λατρεύειν θεῷ ζῶντι
¹⁵καὶ διὰ τοῦτο διαθήκης καινῆς μεσιτῆς ἐστὶν ὅπως θανάτου γενομένου εἰς ἀπολυτρώσιν
 τῶν ἐπὶ τῇ πρώτῃ διαθήκῃ παραβάσεων τὴν ἐπαγγελίαν λαβῶσιν οἱ κεκλημένοι τῆς αἰωνίου
 κληρονομίας
¹⁶ὅπου γὰρ διαθήκη θάνατον ἀνάγκη φερεσθαι τοῦ διαθεμένου
¹⁷διαθήκη γὰρ ἐπὶ νεκροῖς βεβαία ἐπεὶ μηποτέ ἰσχύει ὅτε ζῆ ὁ διαθεμένος
¹⁸οθεν οὐδ' ἡ πρώτη χωρὶς αἵματος ἐγκεκαινίσται
¹⁹λαλήθεισης γὰρ πάσης ἐντολῆς κατὰ νόμον ὑπο μωσέως παντὶ τῷ λαῷ λαβῶν τὸ αἶμα
 τῶν μόσχων καὶ τραγῶν μετὰ ὕδατος καὶ ἐρίου κοκκίνου καὶ ὑσσωποῦ αὐτὸ τε τὸ βιβλίον
 καὶ πάντα τὸν λαὸν ἐρραντίσεν
²⁰λέγων τοῦτο τὸ αἶμα τῆς διαθήκης ἧς ἐνετείλατο πρὸς ὑμᾶς ὁ θεός

- ²¹ και την σκηνην δε και παντα τα σκευη της λειτουργιας τω αιματι ομοιωσ ερραντισεν
²² και σχεδον εν αιματι παντα καθαριζεται κατα τον νομον και χωρις αιματεκχυσιας ου γινεται αφεσις
²³ αναγκη ουν τα μεν υποδειγματα των εν τοις ουρανοις τουτοις καθαριζεσθαι αυτα δε τα επουρανια κρειττοσιν θυσιας παρα ταυτας
²⁴ ου γαρ εις χειροποιητα αγια εισηλθεν ο χριστος αντιτυπα των αληθινων αλλ εις αυτον τον ουρανον νυν εμφανισθηναι τω προσωπω του θεου υπερ ημων
²⁵ ουδ ινα πολλακις προσφερη εαυτον ωσπερ ο αρχιερευς εισερχεται εις τα αγια κατ ενιαυτον εν αιματι αλλοτριω
²⁶ επει εδει αυτον πολλακις παθειν απο καταβολης κοσμου νυν δε απαξ επι συντελεια των αιωνων εις αθετησιν αμαρτιας δια της θυσιας αυτου πεφανερωται
²⁷ και καθ οσον αποκειται τοις ανθρωποις απαξ αποθανειν μετα δε τουτο κρισις
²⁸ ουτως ο χριστος απαξ προσενεχθεις εις το πολλων ανενεγκειν αμαρτιας εκ δευτερου χωρις αμαρτιας οφθησεται τοις αυτον απεκδεχομενοις εις σωτηριαν

Chapter 10

- ¹σκίαν γὰρ ἔχων ὁ νόμος τῶν μελλόντων ἀγαθῶν οὐκ αὐτὴν τὴν εἰκόνα τῶν πραγμάτων κατ' ἐνιαυτὸν ταῖς αὐταῖς θυσίαις ἀς προσφέρουσιν εἰς τὸ διηνεκές οὐδέποτε δύναται τοὺς προσερχομένους τελειῶσαι
- ²ἐπεὶ οὐκ ἂν ἐπαύσαντο προσφερόμεναι διὰ τὸ μηδεμίαν ἔχειν ἐτι συνειδήσιν ἁμαρτιῶν τοὺς λατρεύοντάς ἀπαξ κεκαθαμένους
- ³ἀλλ' ἐν αὐταῖς ἀναμνήσεις ἁμαρτιῶν κατ' ἐνιαυτὸν
- ⁴ἀδύνατον γὰρ αἷμα ταύρων καὶ τράγων ἀφαιρεῖν ἁμαρτίας
- ⁵ὁ δὲ εἰσερχόμενος εἰς τὸν κόσμον λέγει θυσίαν καὶ προσφοράν οὐκ ἠθέλησας σῶμα δεκατηρίσω μοι
- ⁶ὀλοκαυτώματα καὶ περὶ ἁμαρτίας οὐκ εὐδοκήσας
- ⁷τότε εἶπον ἴδου ἡκώ ἐν κεφαλίδι βιβλίου γεγραπταὶ περὶ ἐμοῦ τοῦ ποιῆσαι ὁ θεὸς τὸ θέλημα σου
- ⁸ἀνωτέρον λέγων ὅτι θυσίαν καὶ προσφοράν καὶ ὀλοκαυτώματα καὶ περὶ ἁμαρτίας οὐκ ἠθέλησας οὐδὲ εὐδοκήσας αἰτινὲς κατὰ τὸν νόμον προσφέρονται
- ⁹τότε εἰρηκὲν ἴδου ἡκώ τοῦ ποιῆσαι ὁ θεὸς τὸ θέλημα σου ἀναίρει τὸ πρῶτον ἵνα τὸ δεύτερον στήσῃ
- ¹⁰ἐν ᾧ θελήματι ἡγιασμένοι ἐσμεν διὰ τῆς προσφοράς τοῦ σώματος τοῦ ἰησοῦ χριστοῦ ἐφ' ἀπαξ
- ¹¹καὶ πᾶς μὲν ἱερεὺς ἐστήκεν καθ' ἡμέραν λειτουργῶν καὶ τὰς αὐτὰς πολλακίς προσφέρων θυσίας αἰτινὲς οὐδέποτε δύναται περιελεῖν ἁμαρτίας
- ¹²αὐτὸς δὲ μίαν ὑπὲρ ἁμαρτιῶν προσενεγκάς θυσίαν εἰς τὸ διηνεκές ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ τοῦ θεοῦ
- ¹³τὸ λοιπὸν ἐκδεχόμενος ἕως τεθῶσιν οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν αὐτοῦ
- ¹⁴μία γὰρ προσφορά τέτελειωκὲν εἰς τὸ διηνεκές τοὺς ἁγιαζομένους
- ¹⁵μαρτυρεῖ δὲ ἡμῖν καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον μετὰ γὰρ τὸ προεἰρηκεῖναι
- ¹⁶αὕτη ἡ διαθήκη ἦν διαθησομένη πρὸς αὐτοὺς μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκεῖνας λέγει κύριος δίδους νόμους μου ἐπὶ καρδίας αὐτῶν καὶ ἐπὶ τῶν διανοιῶν αὐτῶν ἐπιγράψω αὐτοὺς
- ¹⁷καὶ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν καὶ τῶν ἀνομιῶν αὐτῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἐτι
- ¹⁸ὅπου δὲ ἀφῆσις τούτων οὐκετι προσφορά περὶ ἁμαρτίας
- ¹⁹ἔχοντες οὖν ἀδελφοὶ παρρησίαν εἰς τὴν εἰσοδὸν τῶν ἁγίων ἐν τῷ αἵματι ἰησοῦ
- ²⁰ἦν ἐνεκαίνισεν ἡμῖν ὁδὸν προσφατὸν καὶ ζώσαν διὰ τοῦ καταπετασμάτος τούτεστιν τῆς σαρκὸς αὐτοῦ
- ²¹καὶ ἱερεῖα μέγαν ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ
- ²²προσερχόμεθα μετὰ ἀληθινῆς καρδίας ἐν πληροφορίᾳ πίστεως ἐρραντισμένοι τὰς καρδίας ἀπο συνειδήσεως πονηρᾶς καὶ λελούμενοι τὸ σῶμα ὕδατι καθάρῳ
- ²³κατεχόμεν τὴν ὁμολογίαν τῆς ἐλπίδος ἀκλίνη πίστος γὰρ ὁ ἐπαγγειλαμένος

- ²⁴ και κατανωμεν αλληλους εις παροξυσμον αγαπης και καλων εργαων
²⁵ μη εγκαταλειποντες την επισυναγωγην εαυτων καθως εθος τισιν αλλα παρακαλουντες και τοσουτω μαλλον οσω βλεπετε εγγιζουσιν την ημεραν
²⁶ εκουσιως γαρ αμαρτανωντων ημων μετα το λαβειν την επιγνωσιν της αληθειας ουκετι περι αμαρτιων απολειπεται θυσια
²⁷ φοβερα δε τις εκδοχη κρισεως και πυρος ζηλος εσθιειν μελλοντος τους υπεναντιους
²⁸ αθετησας τις νομον μωσεως χωρις οικτιρμων επι δυσιν η τρισιν μαρτυσιν αποθνησκει
²⁹ ποσω δοκειτε χειρονος αξιωθησεται τιμωριας ο τον υιον του θεου καταπατησας και το αιμα της διαθηκης κοινον ηγησαμενος εν ω ηγιασθη και το πνευμα της χαριτος ενυβρισας
³⁰ οιδαμεν γαρ τον ειποντα εμοι εκδικησιν εγω ανταποδωσω λεγει κυριος και παλιν κυριος κρινει τον λαον αυτου
³¹ φοβερον το εμπεσειν εις χειρας θεου ζωντος
³² αναμιμησκεσθε δε τας προτερον ημερας εν αις φωτισθεντες πολλην αθλησιν υπεμεινατε παθηματων
³³ τουτο μεν ονειδισμοις τε και θλιψεσιν θεατριζομενοι τουτο δε κοινωνοι των ουτως αναστρεφομενων γενηθεντες
³⁴ και γαρ τοις δεσμοις μου συνεπαθησατε και την αρπαγην των υπαρχοντων υμων μετα χαρας προσεδεξασθε γινωσκοντες εχειν εν εαυτοις κρειττονα υπαρξιν εν ουρανοις και μενουσαν
³⁵ μη αποβαλητε ουν την παρρησιαν υμων ητις εχει μισθαποδοσιαν μεγαλην
³⁶ υπομονης γαρ εχετε χρειαν ινα το θελημα του θεου ποιησαντες κομισησθε την επαγγελιαν
³⁷ ετι γαρ μικρον οσον οσον ο ερχομενος ηξει και ου χρονιει
³⁸ ο δε δικαιος εκ πιστεως ζησεται και εαν υποστειληται ουκ ευδοκει η ψυχη μου εν αυτω
³⁹ ημεις δε ουκ εσμεν υποστολης εις απωλειαν αλλα πιστεως εις περιποιησιν ψυχης

Chapter 11

- ¹εστιν δε πιστις ελπιζομενων υποστασις πραγματων ελεγχος ου βλεπομενων
²εν ταυτη γαρ εμαρτυρηθησαν οι πρεσβυτεροι
³πιστει νοουμεν κατηρτισθαι τους αιωνας ρηματι θεου εις το μη εκ φαινομενων τα βλεπομενα γεγονεναι
⁴πιστει πλειονα θυσιαν αβελ παρα καιν προσηνεγκεν τω θεω δι ης εμαρτυρηθη ειναι δικαιος μαρτυρουντος επι τοις δωροις αυτου του θεου και δι αυτης αποθανων επι λαλει
⁵πιστει ενωχ μετετεθη του μη ιδειν θανατον και ουχ ευρισκετο διοτι μετεθηκεν αυτον ο θεος προ γαρ της μεταθεσεως αυτου μεμαρτυρηται ευηρεστηκεναι τω θεω
⁶χωρις δε πιστεως αδυνατον ευαρεστησαι πιστευσαι γαρ δει τον προσερχομενον τω θεω οτι εστιν και τοις εκζητουσιν αυτον μισθαποδοτης γινεται
⁷πιστει χρηματισθεις νωε περι των μηδεπω βλεπομενων ευλαβηθεις κατεσκευασεν κιβωτον εις σωτηριαν του οικου αυτου δι ης κατεκρινεν τον κοσμον και της κατα πιστιν δικαιοσυνης εγενετο κληρονομος
⁸πιστει καλουμενος αβρααμ υπηκουσεν εξελθειν εις τον τοπον ον ημελλεν λαμβανειν εις κληρονομιαν και εξηλθεν μη επισταμενος που ερχεται
⁹πιστει παρωκησεν εις την γην της επαγγελιας ως αλλοτριαν εν σκηναις κατοικησας μετα ισαακ και ιακωβ των συγκληρονομων της επαγγελιας της αυτης
¹⁰εξεδεχετο γαρ την τους θεμελιους εχουσαν πολιν ης τεχνιτης και δημιουργος ο θεος
¹¹πιστει και αυτη σαρρα δυναμιν εις καταβολην σπερματος ελαβεν και παρα καιρον ηλικιας ετεκεν επει πιστον ηγησατο τον επαγγειλαμενον
¹²διο και αφ ενος εγεννηθησαν και ταυτα νενεκρωμενου καθως τα αστρα του ουρανου τω πληθει και ωσει αμμος η παρα το χειλος της θαλασσης η αναριθμητος
¹³κατα πιστιν απεθανον ουτοι παντες μη λαβοντες τας επαγγελιας αλλα πορρωθεν αυτας ιδοντες και πεισθεντες και ασπασαμενοι και ομολογησαντες οτι ξενοι και παρεπιδημοι εισιν επι της γης
¹⁴οι γαρ τοιαυτα λεγοντες εμφανιζουσιν οτι πατριδα επιζητουσιν
¹⁵και ει μεν εκεινης εμνημονευον αφ ης εξηλθον ειχον αν καιρον ανακαμψαι
¹⁶νυνη δε κρειττονος ορεγονται τουτεστιν επουρανιου διο ουκ επαισχυνεται αυτους ο θεος θεος επικαλεισθαι αυτων ητοιμασεν γαρ αυτοις πολιν
¹⁷πιστει προσενηνοχεν αβρααμ τον ισαακ πειραζομενος και τον μονογενη προσεφερεν ο τας επαγγελιας αναδεξαμενος
¹⁸προς ον ελαληθη οτι εν ισαακ κληθησεται σοι σπερμα
¹⁹λογισαμενος οτι και εκ νεκρων εγειρειν δυνατος ο θεος οθεν αυτον και εν παραβολη εκομισατο
²⁰πιστει περι μελλοντων ευλογησεν ισαακ τον ιακωβ και τον ησαυ
²¹πιστει ιακωβ αποθνησκων εκαστον των υιων ιωσηφ ευλογησεν και προσεκυνησεν επι το ακρον της ραβδου αυτου

- ²²πιστει ιωσηφ τελευτων περι της εξοδου των υιων ισραηλ εμνημονευσεν και περι των οστων αυτου ενετειλατο
- ²³πιστει μωσης γεννηθεις εκρυβη τριμηνον υπο των πατερων αυτου διοτι ειδον αστειον το παιδιον και ουκ εφοβηθησαν το διαταγμα του βασιλεως
- ²⁴πιστει μωσης μεγας γενομενος ηρνησατο λεγεσθαι υιος θυγατρος φαραω
- ²⁵μαλλον ελομενος συγκακουχεισθαι τω λαω του θεου η προσκαιρον εχειν αμαρτιας απολαυσιν
- ²⁶μειζονα πλουτον ηγησαμενος των εν αιγυπτω θησαυρων τον ονειδισμον του χριστου απεβλεπεν γαρ εις την μισθαποδοσιαν
- ²⁷πιστει κατελιπεν αιγυπτον μη φοβηθεις τον θυμον του βασιλεως τον γαρ αορατον ως ορων εκαρτερησεν
- ²⁸πιστει πεποιηκεν το πασχα και την προσχυσιν του αιματος ινα μη ο ολοθρευων τα πρωτοτοκα θιγη αυτων
- ²⁹πιστει διεβησαν την ερυθραν θαλασσαν ως δια ξηρας ης πειραν λαβοντες οι αιγυπτιοι κατεποθησαν
- ³⁰πιστει τα τειχη ιεριχω επεσεν κυκλωθεντα επι επτα ημερας
- ³¹πιστει ρααβ η πορνη ου συναπωλετο τοις απειθησασιν δεξαμενη τους κατασκοπους μετ ειρηνης
- ³²και τι ετι λεγω επιλειπει γαρ με διηγουμενον ο χρονος περι γεδεων βαρακ τε και σαμψων και ιεφθαε δαβιδ τε και σαμουηλ και των προφητων
- ³³οι δια πιστεως κατηγωνισαντο βασιλειας ειργασαντο δικαιοσυνην επετυχον επαγγελιων εφραξαν στοματα λεοντων
- ³⁴εσβεσαν δυναμιν πυρος εφυγον στοματα μαχαιρας ενεδυναμωθησαν απο ασθειας εγενηθησαν ισχυροι εν πολεμω παρεμβολας εκλιναν αλλοτριων
- ³⁵ελαβον γυναικες εξ αναστασεως τους νεκρους αυτων αλλοι δε ετυμπανισθησαν ου προσδεξαμενοι την απολυτρωσιν ινα κρειττονος αναστασεως τυχωσιν
- ³⁶ετεροι δε εμπαιγμων και μαστιγων πειραν ελαβον ετι δε δεσμων και φυλακης
- ³⁷ελιθασθησαν επρισθησαν επειρασθησαν εν φονω μαχαιρας απεθανον περιηλθον εν μηλωταις εν αιγειοις δερμασιν υστερουμενοι θλιβομενοι κακουχουμενοι
- ³⁸ων ουκ ην αξιος ο κοσμος εν ερημιαις πλανωμενοι και ορεσιν και σπηλαιοις και ταις οπαις της γης
- ³⁹και ουτοι παντες μαρτυρηθεντες δια της πιστεως ουκ εκομισαντο την επαγγελιαν
- ⁴⁰του θεου περι ημων κρειττον τι προβλεψαμενου ινα μη χωρις ημων τελειωθωσιν

Chapter 12

- ¹τοιγαρουν και ημεις τοσουτον εχοντες περικειμενον ημιν νεφος μαρτυρων ογκον αποθεμενοι παντα και την ευπεριστατον αμαρτιαν δι υπομονης τρεχωμεν τον προκειμενον ημιν αγωνα
- ²αφορωντες εις τον της πιστεως αρχηγον και τελειωτην ιησουν ος αντι της προκειμενης αυτω χαρας υπεμεινεν σταυρον αισχυνης καταφρονησας εν δεξια τε του θρονου του θεου εκαθισεν
- ³αναλογισασθε γαρ τον τοιαυτην υπομεμενηκοτα υπο των αμαρτωλων εις αυτον αντιλογιαν ινα μη καμητε ταις ψυχαις υμων εκλυομενοι
- ⁴ουπω μεχρις αιματος αντικατεστητε προς την αμαρτιαν ανταγωνιζομενοι
- ⁵και εκλελησθε της παρακλησεως ητις υμιν ως υιοις διαλεγεται υιε μου μη ολιγωρει παιδειας κυριου μηδε εκλυου υπ αυτου ελεγχομενος
- ⁶ον γαρ αγαπα κυριος παιδευει μαστιγοι δε παντα υιον ον παραδεχεται
- ⁷ει παιδειαν υπομενετε ως υιοις υμιν προσφερεται ο θεος τις γαρ εστιν υιος ον ου παιδευει πατηρ
- ⁸ει δε χωρις εστε παιδειας ης μετοχοι γεγονασιν παντες αρα νοθοι εστε και ουχ υιοι
- ⁹ειτα τους μεν της σαρκος ημων πατερας ειχομεν παιδευτας και ενετρεπομεθα ου πολλω μαλλον υποταγησομεθα τω πατρι των πνευματων και ζησομεν
- ¹⁰οι μεν γαρ προς ολιγας ημερας κατα το δοκουν αυτοις επαιδευον ο δε επι το συμφερον εις το μεταλαβειν της αγιοτητος αυτου
- ¹¹πασα δε παιδεια προς μεν το παρον ου δοκει χαρας ειναι αλλα λυπης υστερον δε καρπον ειρηνικον τοις δι αυτης γεγυμνασμενοις αποδιδωσιν δικαιοσυνης
- ¹²διο τας παρειμενας χειρας και τα παραλελυμενα γονατα ανορθωσατε
- ¹³και τροχιας ορθας ποιησατε τοις ποσιν υμων ινα μη το χωλον εκτραπη ιαθη δε μαλλον
- ¹⁴ειρηνην διωκετε μετα παντων και τον αγιασμον ου χωρις ουδεις οψεται τον κυριον
- ¹⁵επισκοπουντες μη τις υστερων απο της χαριτος του θεου μη τις ριζα πικριας ανω φυουσα ενοχλη και δια ταυτης μιανθωσιν πολλοι
- ¹⁶μη τις πορνος η βεβηλος ως ησαυ ος αντι βρωσεως μιας απεδοδο τα πρωτοτοκια αυτου
- ¹⁷ιστε γαρ οτι και μετεπειτα θελων κληρονομησαι την ευλογιαν απεδοκιμασθη μετανοιας γαρ τοπον ουχ ευρεν καιπερ μετα δακρυων εκζητησας αυτην
- ¹⁸ου γαρ προσεληλυθατε ψηλαφωμενω ορει και κεκαυμενω πυρι και γνοφω και σκοτω και θυελλη
- ¹⁹και σαλπιγγος ηχω και φωνη ρηματων ης οι ακουσαντες παρητησαντο μη προστεθηναι αυτοις λογον
- ²⁰ουκ εφερον γαρ το διαστελλομενον καν θηριον θιγη του ορους λιθοβοληθησεται η βολιδι κατατοξευθησεται
- ²¹και ουτως φοβερον ην το φανταζομενον μωσης ειπεν εκφοβος ειμι και εντρομος

²² αλλά προσεληλυθατε σιων ορει και πολει θεου ζωντος ιερουσαλημ επουρανιω και μυριασιν αγγελων

²³ πανηγυρει και εκκλησια πρωτοτοκων εν ουρανοις απογεγραμμενων και κριτη θεω παντων και πνευμασιν δικαιων τετελειωμενων

²⁴ και διαθηκης νεας μεσιτη ιησου και αιματι ραντισμου κρειττονα λαλουντι παρα το αβελ

²⁵ βλεπετε μη παραιτησηθε τον λαλουντα ει γαρ εκεινοι ουκ εφυγον τον επι της γης παραιτησαμενοι χρηματιζοντα πολλω μαλλον ημεις οι τον απ ουρανων αποστρεφομενοι

²⁶ ου η φωνη την γην εσαλευσεν τοτε νυν δε επηγγελται λεγων ετι απαξ εγω σειω ου μονον την γην αλλα και τον ουρανον

²⁷ το δε ετι απαξ δηλοι των σαλευομενων την μεταθεσιν ως πεποιημενων ινα μεινη τα μη σαλευομενα

²⁸ διο βασιλειαν ασαλευτον παραλαμβανοντες εχωμεν χαριν δι ης λατρευωμεν ευαρεστως τω θεω μετα αιδους και ευλαβειας

²⁹ και γαρ ο θεος ημων πυρ καταναλισκον

Chapter 13

- ¹η φιλαδελφια μενετω
²της φιλοξενιας μη επιλανθανεσθε δια ταυτης γαρ ελαθον τινες ξενισαντες αγγελους
³μιμνησκεσθε των δεσμιων ως συνδεδεμενοι των κακουχουμενων ως και αυτοι οντες εν σωματι
⁴τιμιος ο γαμος εν πασιν και η κοιτη αμιαντος πορνους δε και μοιχους κρινει ο θεος
⁵αφιλαργυρος ο τροπος αρκουμενοι τοις παρουσιν αυτος γαρ ειρηκεν ου μη σε ανω ουδ ου μη σε εγκαταλιπω
⁶ωστε θαρρουντας ημας λεγειν κυριος εμοι βοηθος και ου φοβηθησομαι τι ποιησει μοι ανθρωπος
⁷μνημονευετε των ηγουμενων υμων οιτινες ελαλησαν υμιν τον λογον του θεου ων αναθεωρουντες την εκβασιν της αναστροφης μιμεισθε την πιστιν
⁸ιησους χριστος χθες και σημερον ο αυτος και εις τους αιωνας
⁹διδαχαις ποικιλαις και ξεναις μη περιφερεσθε καλον γαρ χαριτι βεβαιουσθαι την καρδιαν ου βρωμασιν εν οις ουκ ωφεληθησαν οι περιπατησαντες
¹⁰εχομεν θυσιαστηριον εξ ου φαγειν ουκ εχουσιν εξουσιαν οι τη σκηνη λατρευοντες
¹¹ων γαρ εισφερεται ζων το αιμα περι αμαρτιας εις τα αγια δια του αρχιερεως τουτων τα σωματα κατακαιεται εξω της παρεμβολης
¹²διο και ιησους ινα αγιαση δια του ιδιου αιματος τον λαον εξω της πυλης επαθεν
¹³τοιουν εξερχωμεθα προς αυτον εξω της παρεμβολης τον ονειδισμον αυτου φεροντες
¹⁴ου γαρ εχομεν ωδε μενουσαν πολιν αλλα την μελλουσαν επιζητουμεν
¹⁵δι αυτου ουν αναφερωμεν θυσιαν αινεσεως διαπαντος τω θεω τουτεστιν καρπον χειλεων ομολογουντων τω ονοματι αυτου
¹⁶της δε ευποιας και κοινωνιας μη επιλανθανεσθε τοιαυταις γαρ θυσιας ευαρεσταιται ο θεος
¹⁷πειθεσθε τοις ηγουμενοις υμων και υπεικετε αυτοι γαρ αγρυπνουσιν υπερ των ψυχων υμων ως λογον αποδωσοντες ινα μετα χαρας τουτο ποιωσιν και μη στεναζοντες αλυσιτελες γαρ υμιν τουτο
¹⁸προσευχεσθε περι ημων πεποιθαμεν γαρ οτι καλην συνειδησιν εχομεν εν πασιν καλως θελοντες αναστρεφεισθαι
¹⁹περισσοτερως δε παρακαλω τουτο ποιησαι ινα ταχιον αποκατασταθω υμιν
²⁰ο δε θεος της ειρηνης ο αναγαγων εκ νεκρων τον ποιμενα των προβατων τον μεγαν εν αιματι διαθηκης αιωνιου τον κυριον ημων ιησουν
²¹καταρτισαι υμας εν παντι εργω αγαθω εις το ποιησαι το θελημα αυτου ποιων εν υμιν το ευαρεστον ενωπιον αυτου δια ιησου χριστου ω η δοξα εις τους αιωνας των αιωνων αμην
²²παρακαλω δε υμας αδελφοι ανεχεσθε του λογου της παρακλησεως και γαρ δια βραχων επεστειλα υμιν
²³γινωσκετε τον αδελφον τιμοθεον απολελυμενον μεθ ου εαν ταχιον ερχηται οψομαι υμας

²⁴ ασπασασθε παντας τους ηγουμενους υμων και παντας τους αγιους ασπαζονται υμας οι
απο της ιταλιας

²⁵ η χαρις μετα παντων υμων αμην

James

Chapter 1

¹ιακωβος θεου και κυριου ιησου χριστου δουλος ταις δωδεκα φυλαις ταις εν τη διασπορα χαιρειν
²πασαν χαραν ηγησασθε αδελφοι μου οταν πειρασμοις περιπεσητε ποικιλοις
³γινωσκοντες οτι το δοκιμιον υμων της πιστεως κατεργαζεται υπομονην
⁴η δε υπομονη εργον τελειον εχετω ινα ητε τελειοι και ολοκληροι εν μηδενι λειπομενοι
⁵ει δε τις υμων λειπεται σοφιας αιτειτω παρα του διδοντος θεου πασιν απλως και μη ονειδιζοντος και δοθησεται αυτω
⁶αιτειτω δε εν πιστει μηδεν διακρινομενος ο γαρ διακρινομενος εοικεν κλυδωνι θαλασσης ανεμιζομενω και ριπιζομενω
⁷μη γαρ οισεσθω ο ανθρωπος εκεινος οτι ληψεται τι παρα του κυριου
⁸ανηρ διψυχος ακαταστατος εν πασαις ταις οδοις αυτου
⁹καυχασθω δε ο αδελφος ο ταπεινος εν τω υψει αυτου
¹⁰ο δε πλουσιος εν τη ταπεινωσει αυτου οτι ως ανθος χορτου παρελευσεται
¹¹αντειλεν γαρ ο ηλιος συν τω καυσωνι και εξηρανεν τον χορτον και το ανθος αυτου εξεπεσεν και η ευπρεπεια του προσωπου αυτου απωλετο ουτως και ο πλουσιος εν ταις πορειαις αυτου μαρανθησεται
¹²μακαριος ανηρ ος υπομενει πειρασμον οτι δοκιμος γενομενος ληψεται τον στεφανον της ζωης ον επηγγειλατο ο κυριος τοις αγαπωσιν αυτον
¹³μηδεις πειραζομενος λεγετω οτι απο του θεου πειραζομαι ο γαρ θεος απειραστος εστιν κακων πειραζει δε αυτος ουδενα
¹⁴εκαστος δε πειραζεται υπο της ιδιας επιθυμιας εξελκομενος και δελεαζομενος
¹⁵ειτα η επιθυμια συλλαβουσα τικτει αμαρτιαν η δε αμαρτια αποτελεσθαισα αποκειει θανατον
¹⁶μη πλαναςθε αδελφοι μου αγαπητοι
¹⁷πασα δοσις αγαθη και παν δωρημα τελειον ανωθεν εστιν καταβαινον απο του πατρος των φωτων παρ ω ουκ ενι παραλλαγη η τροπης αποσκιασμα
¹⁸βουληθεις απεκυησεν ημας λογω αληθειας εις το ειναι ημας απαρχην τινα των αυτου κτισματων
¹⁹ωστε αδελφοι μου αγαπητοι εστω πας ανθρωπος ταχυς εις το ακουσαι βραδυσ εις το λαλησαι βραδυσ εις οργην
²⁰οργη γαρ ανδρος δικαιοσυνην θεου ου κατεργαζεται
²¹διο αποθεμενοι πασαν ρυπαριαν και περισσειαν κακιας εν πραυτητι δεξασθε τον εμφυτον λογον τον δυναμενον σωσαι τας ψυχας υμων
²²γινεσθε δε ποιηται λογου και μη μονον ακροαται παραλογιζομενοι εαυτους
²³οτι ει τις ακροατης λογου εστιν και ου ποιητης ουτος εοικεν ανδρι κατανοουντι το προσωπον της γενεσεως αυτου εν εσοπτρω

²⁴κατενοησεν γαρ εαυτον και απεληλυθεν και ευθεως επελαθετο οποιος ην

²⁵ο δε παρακυψας εις νομον τελειον τον της ελευθεριας και παραμεινας ουτος ουκ ακροατης επιλησμονης γενομενος αλλα ποιητης εργου ουτος μακαριος εν τη ποιησει αυτου εσται

²⁶ει τις δοκει θρησκος ειναι εν υμιν μη χαλιναγωγων γλωσσαν αυτου αλλ απατων καρδιαν αυτου τουτου ματαιος η θρησκεια

²⁷θρησκεια καθαρα και αμιαντος παρα τω θεω και πατρι αυτη εστιν επισκεπτεσθαι ορφανους και χηρας εν τη θλιψει αυτων ασπιλον εαυτον τηρειν απο του κοσμου

Chapter 2

- ¹αδελφοι μου μη εν προσωποληψιας εχετε την πιστιν του κυριου ημων ιησου χριστου της δοξης
- ²εαν γαρ εισελθη εις την συναγωγην υμων ανηρ χρυσοδακτυλιος εν εσθητι λαμπρα εισελθη δε και πτωχος εν ρυπαρα εσθητι
- ³και επιβλεψητε επι τον φορουντα την εσθητα την λαμπραν και ειπητε αυτω συ καθου ωδε καλως και τω πτωχω ειπητε συ στηθι εκει η καθου ωδε υπο το υποποδιον μου
- ⁴και ου διεκριθητε εν εαυτοις και εγενεσθε κριται διαλογισμων πονηρων
- ⁵ακουσατε αδελφοι μου αγαπητοι ουχ ο θεος εξελεξατο τους πτωχους του κοσμου τουτου πλουσιους εν πιστει και κληρονομους της βασιλειας ης επηγγειλατο τοις αγαπωσιν αυτον
- ⁶υμεις δε ητιμασατε τον πτωχον ουχ οι πλουσιοι καταδυναστεουσιν υμων και αυτοι ελκουσιν υμας εις κριτηρια
- ⁷ουκ αυτοι βλασφημουςιν το καλον ονομα το επικληθεν εφ υμας
- ⁸ει μεντοι νομον τελειτε βασιλικον κατα την γραφην αγαπησεις τον πλησιον σου ως σεαυτον καλως ποιειτε
- ⁹ει δε προσωποληπτειτε αμαρτιαν εργαζεσθε ελεγχομενοι υπο του νομου ως παραβαται
- ¹⁰οστις γαρ ολον τον νομον τηρησει πταισει δε εν ενι γεγονεν παντων ενοχος
- ¹¹ο γαρ ειπων μη μοιχευσης ειπεν και μη φονευσης ει δε ου μοιχευσεις φονευσεις δε γεγονας παραβατης νομου
- ¹²ουτως λαλειτε και ουτως ποιειτε ως δια νομου ελευθεριας μελλοντες κρινεσθαι
- ¹³η γαρ κρισις ανιλεως τω μη ποιησαντι ελεος και κατακαυχεται ελεος κρισεως
- ¹⁴τι το οφελος αδελφοι μου εαν πιστιν λεγη τις εχειν εργα δε μη εχη μη δυναται η πιστις σωσαι αυτον
- ¹⁵εαν δε αδελφος η αδελφη γυμνοι υπαρχωσιν και λειπομενοι ωσιν της εφημερου τροφης
- ¹⁶ειπη δε τις αυτοις εξ υμων υπαγετε εν ειρηνη θερμαινεσθε και χορταζεσθε μη δωτε δε αυτοις τα επιτηδεια του σωματος τι το οφελος
- ¹⁷ουτως και η πιστις εαν μη εργα εχη νεκρα εστιν καθ εαυτην
- ¹⁸αλλ ερει τις συ πιστιν εχεις καγω εργα εχω δειξον μοι την πιστιν σου χωρις των εργαων σου καγω δειξω σοι εκ των εργαων μου την πιστιν μου
- ¹⁹συ πιστευεις οτι ο θεος εις εστιν καλως ποιεις και τα δαιμονια πιστευουσιν και φρισσουσιν
- ²⁰θελεις δε γνωσαι ω ανθρωπε κενε οτι η πιστις χωρις των εργαων νεκρα εστιν
- ²¹αβρααμ ο πατηρ ημων ουκ εξ εργαων εδικαιωθη ανενεγκας ισαακ τον υιον αυτου επι το θυσιαστηριον
- ²²βλεπεις οτι η πιστις συνηργει τοις εργαοις αυτου και εκ των εργαων η πιστις ετελειωθη
- ²³και επληρωθη η γραφη η λεγουσα επιστευσεν δε αβρααμ τω θεω και ελογισθη αυτω εις δικαιοσυνην και φιλος θεου εκληθη
- ²⁴ορατε τοινυν οτι εξ εργαων δικαιουται ανθρωπος και ουκ εκ πιστεως μονον

²⁵ομοιως δε και ρααβ η πορνη ουκ εξ εργαων εδικαιωθη υποδεξαμενη τους αγγελους και ετερα οδω εκβαλουσα

²⁶ωσπερ γαρ το σωμα χωρις πνευματος νεκρον εστιν ουτως και η πιστις χωρις των εργαων νεκρα εστιν

Chapter 3

- ¹μη πολλοι διδασκαλοι γινεσθε αδελφοι μου ειδοτες οτι μειζον κριμα ληψομεθα
²πολλα γαρ πταιομεν απαντες ει τις εν λογω ου πταιει ουτος τελειος ανηρ δυνατος χαλιναγωγησαι και ολον το σωμα
³ιδου των ιππων τους χαλινους εις τα στοματα βαλλομεν προς το πειθεσθαι αυτους ημιν και ολον το σωμα αυτων μεταγομεν
⁴ιδου και τα πλοια τηλικαυτα οντα και υπο σκληρων ανεμων ελαυνομενα μεταγεται υπο ελαχιστου πηδαλιου οπου αν η ορμη του ευθυνοντος βουληται
⁵ουτως και η γλωσσα μικρον μελος εστιν και μεγαλαυχει ιδου ολιγον πυρ ηλικην υλην αναπτει
⁶και η γλωσσα πυρ ο κοσμος της αδικιας ουτως η γλωσσα καθισταται εν τοις μελεσιν ημων η σπιλουσα ολον το σωμα και φλογιζουσα τον τροχον της γενεσεως και φλογιζομενη υπο της γεεννης
⁷πασα γαρ φυσις θηριων τε και πετεινων ερπετων τε και εναλιων δαμαζεται και δεδαμασται τη φυσει τη ανθρωπινη
⁸την δε γλωσσαν ουδεις δυναται ανθρωπων δαμασαι ακατασχετον κακον μεστη ιου θανατηφορου
⁹εν αυτη ευλογουμεν τον θεον και πατερα και εν αυτη καταρωμεθα τους ανθρωπους τους καθ ομοιωσιν θεου γεγονοτας
¹⁰εκ του αυτου στοματος εξερχεται ευλογια και καταρα ου χρη αδελφοι μου ταυτα ουτως γινεσθαι
¹¹μητι η πηγη εκ της αυτης οπης βρυει το γλυκυ και το πικρον
¹²μη δυναται αδελφοι μου συκη ελαιας ποιησαι η αμπελος συκα ουτως ουδεμια πηγη αλυκον και γλυκυ ποιησαι υδωρ
¹³τις σοφος και επιστημων εν υμιν δειξατω εκ της καλης αναστροφης τα εργα αυτου εν πραυτητι σοφιας
¹⁴ει δε ζηλον πικρον εχετε και εριθειαν εν τη καρδια υμων μη κατακαυχασθε και ψευδεσθε κατα της αληθειας
¹⁵ουκ εστιν αυτη η σοφια ανωθεν κατερχομενη αλλ επιγειος ψυχικη δαιμονιωδης
¹⁶οπου γαρ ζηλος και εριθεια εκει ακαταστασια και παν φαυλον πραγμα
¹⁷η δε ανωθεν σοφια πρωτον μεν αγνη εστιν επειτα ειρηνικη επιεικης ευπειθης μεστη ελεους και καρπων αγαθων αδιακριτος και ανυποκριτος
¹⁸καρπος δε της δικαιοσυνης εν ειρηνη σπειρεται τοις ποιουσιν ειρηνην

Chapter 4

- ¹ποθεν πολεμοι και μαχαι εν υμιν ουκ εντευθεν εκ των ηδωνων υμων των στρατευομενων εν τοις μελεσιν υμων
- ²επιθυμειτε και ουκ εχετε φονευετε και ζηλουτε και ου δυνασθε επιτυχειν μαχεσθε και πολεμειτε ουκ εχετε δε δια το μη αιτεισθαι υμας
- ³αιτειτε και ου λαμβανετε διοτι κακως αιτεισθε ινα εν ταις ηδοναις υμων δαπανησητε
- ⁴μοιχοι και μοιχαλιδες ουκ οιδατε οτι η φιλια του κοσμου εχθρα του θεου εστιν ος αν ουν βουληθη φιλος ειναι του κοσμου εχθρος του θεου καθισταται
- ⁵η δοκειτε οτι κενως η γραφη λεγει προς φθονον επιποθει το πνευμα ο κατωκησεν εν ημιν
- ⁶μειζονα δε διδωσιν χαριν διο λεγει ο θεος υπερηφανοις αντιτασεται ταπεινοις δε διδωσιν χαριν
- ⁷υποταγητε ουν τω θεω αντιστητε τω διαβολω και φευζεται αφ υμων
- ⁸εγγισατε τω θεω και εγγιει υμιν καθαρισατε χειρας αμαρτωλοι και αγνισατε καρδιας διψυχοι
- ⁹ταλαιπωρησατε και πενθησατε και κλαυσατε ο γελωσ υμων εις πενθος μεταστραφητω και η χαρα εις κατηφειαν
- ¹⁰ταπεινωθητε ενωπιον του κυριου και υψωσει υμας
- ¹¹μη καταλαλειτε αλληλων αδελφοι ο καταλαλων αδελφου και κρινων τον αδελφον αυτου καταλαλει νομου και κρινει νομον ει δε νομον κρινεις ουκ ει ποιητης νομου αλλα κριτης
- ¹²εις εστιν ο νομοθετης ο δυναμενος σωσαι και απολεσαι συ τις ει ος κρινεις τον ετερον
- ¹³αγε νυν οι λεγοντες σημερον η αυριον πορευσομεθα εις τηνδε την πολιν και ποιησομεν εκει ενιαυτον ενα και εμπορευσομεθα και κερδησομεν
- ¹⁴οιτινες ουκ επιστασθε το της αυριον ποια γαρ η ζωη υμων ατμις γαρ εστιν η προς ολιγον φαινομενη επειτα δε αφανιζομενη
- ¹⁵αντι του λεγειν υμας εαν ο κυριος θεληση και ζησομεν και ποιησομεν τουτο η εκεινο
- ¹⁶νυν δε καυχασθε εν ταις αλαζονειαις υμων πασα καυχησις τοιαυτη πονηρα εστιν
- ¹⁷ειδοτι ουν καλον ποιειν και μη ποιουντι αμαρτια αυτω εστιν

Chapter 5

- ¹αγε νυν οι πλουσιοι κλαυσατε ολολυζοντες επι ταις ταλαιπωριαις υμων ταις επερχομεναις
- ²ο πλουτος υμων σεσηπεν και τα ιματια υμων σητοβρωτα γεγονεν
- ³ο χρυσος υμων και ο αργυρος κατιωται και ο ιος αυτων εις μαρτυριον υμιν εσται και φαγεται τας σαρκας υμων ως πυρ εθησαυρισατε εν εσχαταις ημεραις
- ⁴ιδου ο μισθος των εργατων των αμησαντων τας χωρας υμων ο απεστερημενος αφ υμων κραζει και αι βοαι των θερισαντων εις τα ωτα κυριου σαβαωθ εισεληλυθασιν
- ⁵ετρυφησατε επι της γης και εσπαταλησατε εθρεψατε τας καρδιας υμων ως εν ημερα σφαγης
- ⁶κατεδικασατε εφονευσατε τον δικαιον ουκ αντιτασεται υμιν
- ⁷μακροθυμησατε ουν αδελφοι εως της παρουσιας του κυριου ιδου ο γεωργος εκδεχεται τον τιμιον καρπον της γης μακροθυμων επ αυτω εως αν λαβη υετον πρωιμον και οψιμον
- ⁸μακροθυμησατε και υμεις στηριξατε τας καρδιας υμων οτι η παρουσια του κυριου ηγγικεν
- ⁹μη στεναζετε κατ αλληλων αδελφοι ινα μη κατακριθητε ιδου ο κριτης προ των θυρων εστηκεν
- ¹⁰υποδειγμα λαβετε της κακοπαθειας αδελφοι μου και της μακροθυμιας τους προφητας οι ελαλησαν τω ονοματι κυριου
- ¹¹ιδου μακαριζομεν τους υπομενοντας την υπομονην ιωβ ηκουσατε και το τελος κυριου ειδετε οτι πολυσπλαγχνος εστιν ο κυριος και οικτιρμων
- ¹²προ παντων δε αδελφοι μου μη ομνυετε μητε τον ουρανον μητε την γην μητε αλλον τινα ορκον ητω δε υμων το ναι ναι και το ου ου ινα μη υπο κρισιν πεσητε
- ¹³κακοπαθει τις εν υμιν προσευχεσθω ευθυμει τις ψαλλετω
- ¹⁴ασθενει τις εν υμιν προσκαλεσασθω τους πρεσβυτερους της εκκλησιας και προσευξασθωσαν επ αυτον αλειψαντες αυτον ελαιω εν τω ονοματι του κυριου
- ¹⁵και η ευχη της πιστεως σωσει τον καμνοντα και εγερει αυτον ο κυριος καν αμαρτιας η πεπονηκως αφεθησεται αυτω
- ¹⁶εξομολογεισθε αλληλοις τα παραπτωματα και ευχεσθε υπερ αλληλων οπως ιαθητε πολυ ισχυει δεησις δικαιου ενεργουμενη
- ¹⁷ηλιας ανθρωπος ην ομοιοπαθης ημιν και προσευχη προσηυξατο του μη βρεξαι και ουκ εβρεξεν επι της γης ενιαυτους τρεις και μηνας εξ
- ¹⁸και παλιν προσηυξατο και ο ουρανος υετον εδωκεν και η γη εβλαστησεν τον καρπον αυτης
- ¹⁹αδελφοι εαν τις εν υμιν πλανηθη απο της αληθειας και επιστρεψη τις αυτον
- ²⁰γινωσκετω οτι ο επιστρεψας αμαρτων εκ πλανης οδου αυτου σωσει ψυχην εκ θανατου και καλυψει πληθος αμαρτιων

1 Peter

Chapter 1

¹πετρος αποστολος ιησου χριστου εκλεκτοις παρεπιδημοις διασπορας ποντου γαλατιας
καππαδοκιας ασιας και βιθυνιας
²κατα προγνωσιν θεου πατρος εν αγιασμω πνευματος εις υπακοην και ραντισμον αιματος
ιησου χριστου χαρις υμιν και ειρηνη πληθυνθειη
³ευλογητος ο θεος και πατηρ του κυριου ημων ιησου χριστου ο κατα το πολυ αυτου ελεος
αναγεννησας ημας εις ελπιδα ζωσαν δι αναστασεως ιησου χριστου εκ νεκρων
⁴εις κληρονομιαν αφθαρτον και αμιαντον και αμαραντον τετηρημενην εν ουρανοις εις
υμας
⁵τους εν δυναμει θεου φρουρουμενους δια πιστεως εις σωτηριαν ετοιμην αποκαλυφθηναι
εν καιρω εσχατω
⁶εν ω αγαλλιασθε ολιγον αρτι ει δεον εστιν λυπηθεντες εν ποικιλοις πειρασμοις
⁷ινα το δοκιμιον υμων της πιστεως πολυ τιμιωτερον χρυσιου του απολλυμενου δια πυρος
δε δοκιμαζομενου ευρεθη εις επαινον και τιμην και δοξαν εν αποκαλυψει ιησου χριστου
⁸ον ουκ ιδοντες αγαπατε εις ον αρτι μη ορωντες πιστευοντες δε αγαλλιασθε χαρα
ανεκλαλητω και δεδοξασμενη
⁹κομιζομενοι το τελος της πιστεως υμων σωτηριαν ψυχων
¹⁰περι ης σωτηριας εξεζητησαν και εξηρευνησαν προφηται οι περι της εις υμας χαριτος
προφητευσαντες
¹¹ερευνωντες εις τινα η ποιον καιρον εδηλου το εν αυτοις πνευμα χριστου
προμαρτυρομενον τα εις χριστον παθηματα και τας μετα ταυτα δοξας
¹²οις απεκαλυφθη οτι ουχ εαυτοις ημιν δε διηκονουν αυτα α νυν ανηγγελη υμιν δια των
ευαγγελισαμενων υμας εν πνευματι αγιω αποσταλεντι απ ουρανου εις α επιθυμουσιν
αγγελιοι παρακυψαι
¹³διο αναζωσαμενοι τας οσφυας της διανοιας υμων νηφοντες τελειως ελπισατε επι την
φερομενην υμιν χαριν εν αποκαλυψει ιησου χριστου
¹⁴ως τεκνα υπακοης μη συσχηματιζομενοι ταις προτερον εν τη αγνοια υμων επιθυμιαις
¹⁵αλλα κατα τον καλεσαντα υμας αγιον και αυτοι αγιοι εν παση αναστροφη γενηθητε
¹⁶διοτι γεγραπται αγιοι γενεσθε οτι εγω αγιος ειμι
¹⁷και ει πατερα επικαλεισθε τον απροσωποληπτως κρινοντα κατα το εκαστου εργον εν
φοβω τον της παροικιας υμων χρονον αναστραφητε
¹⁸ειδοτες οτι ου φθαρτοις αργυριω η χρυσιω ελυτρωθητε εκ της ματαιας υμων αναστροφης
πατροπαραδοτου
¹⁹αλλα τιμιω αιματι ως αμνου αμωμου και ασπιλου χριστου
²⁰προεγνωσμενου μεν προ καταβολης κοσμου φανερωθεντος δε επ εσχατων των χρονων
δι υμας
²¹τους δι αυτου πιστευοντας εις θεον τον εγειραντα αυτον εκ νεκρων και δοξαν αυτω
δοντα ωστε την πιστιν υμων και ελπιδα ειναι εις θεον

²²τας ψυχας υμων ηγνικότες εν τη υπακοη της αληθειας δια πνευματος εις φιλαδελφιαν
ανυποκριτον εκ καθαρης καρδιας αλληλους αγαπησατε εκτενωσ

²³αναγεγεννημενοι ουκ εκ σπορας φθαρτης αλλα αφθαρτου δια λογου ζωντος θεου και
μενοντος εις τον αιωνα

²⁴διоти πασα σαρξ ως χορτος και πασα δοξα ανθρωπου ως ανθος χορτου εξηρανθη ο χορτος
και το ανθος αυτου εξεπεσεν

²⁵το δε ρημα κυριου μενει εις τον αιωνα τουτο δε εστιν το ρημα το ευαγγελισθεν εις υμας

Chapter 2

- ¹ αποθεμενοι ουν πασαν κακιαν και παντα δολον και υποκρισεις και φθονους και πασας καταλαλιας
- ² ως αρτιγεννητα βρεφη το λογικον αδολον γαλα επιποθησατε ινα εν αυτω αυξηθητε
- ³ ειπερ εγευσασθε οτι χριστος ο κυριος
- ⁴ προς ον προσερχομενοι λιθον ζωντα υπο ανθρωπων μεν αποδεδοκιμασμενον παρα δε θεω εκλεκτον εντιμον
- ⁵ και αυτοι ως λιθοι ζωντες οικοδομεισθε οικος πνευματικος ιερατευμα αγιον ανενεγκαι πνευματικας θυσιας ευπροσδεκτους τω θεω δια ιησου χριστου
- ⁶ διο και περιεχει εν τη γραφη ιδου τιθημι εν σιων λιθον ακρογωνιαιον εκλεκτον εντιμον και ο πιστευων επ αυτω ου μη καταισχυνη
- ⁷ υμιν ουν η τιμη τοις πιστευουσιν απειθουσιν δε λιθον ον απεδοκιμασαν οι οικοδομουντες ουτος εγεννηθη εις κεφαλην γωνιας
- ⁸ και λιθος προσκομματος και πετρα σκανδαλου οι προσκοπτουσιν τω λογω απειθουντες εις ο και ετεθησαν
- ⁹ υμεις δε γενοσθε εκλεκτον βασιλειον ιερατευμα εθνος αγιον λαος εις περιποιησιν οπως τας αρετας εξαγγειλητε του εκ σκοτους υμας καλεσαντος εις το θαυμαστον αυτου φως
- ¹⁰ οι ποτε ου λαος νυν δε λαος θεου οι ουκ ηληθμενοι νυν δε ελεηθεντες
- ¹¹ αγαπητοι παρακαλω ως παροικους και παρεπιδημους απεχεσθαι των σαρκικων επιθυμιων αιτινες στρατευονται κατα της ψυχης
- ¹² την αναστροφην υμων εν τοις εθνεσιν εχοντες καλην ινα εν ω καταλαλουσιν υμων ως κακοποιων εκ των καλων εργαων εποπτευσαντες δοξασωσιν τον θεον εν ημερα επισκοπης
- ¹³ υποταγητε ουν παση ανθρωπινη κτισει δια τον κυριον ειτε βασιλει ως υπερεχοντι
- ¹⁴ ειτε ηγεμοσιν ως δι αυτου πεμπομενοις εις εκδικησιν μεν κακοποιων επαινον δε αγαθοποιων
- ¹⁵ οτι ουτως εστιν το θελημα του θεου αγαθοποιουντας φιμουν την των αφρονων ανθρωπων αγνωσιαν
- ¹⁶ ως ελευθεροι και μη ως επικαλυμμα εχοντες της κακιας την ελευθεριαν αλλ ως δουλοι θεου
- ¹⁷ παντας τιμησατε την αδελφοτητα αγαπατε τον θεον φοβεισθε τον βασιλεα τιματε
- ¹⁸ οι οικεται υποτασσομενοι εν παντι φοβω τοις δεσποταις ου μονον τοις αγαθοις και επιεικεσιν αλλα και τοις σκολιοις
- ¹⁹ τουτο γαρ χαρις ει δια συνειδησιν θεου υποφερει τις λυπας πασων αδικως
- ²⁰ ποιον γαρ κλεος ει αμαρτανοντες και κολαφιζομενοι υπομενειτε αλλ ει αγαθοποιουντες και πασχοντες υπομενειτε τουτο χαρις παρα θεω
- ²¹ εις τουτο γαρ εκληθητε οτι και χριστος επαθεν υπερ ημων ημιν υπολιμπανων υπογραμμων ινα επακολουθησητε τοις ιχνεσιν αυτου
- ²² ος αμαρτιαν ουκ εποιησεν ουδε ευρεθη δολος εν τω στοματι αυτου

²³ος λοιδουρομενος ουκ αντελοιδορει πασχων ουκ ηπειλει παρεδιδου δε τω κρινοντι δικαιως

²⁴ος τας αμαρτιας ημων αυτος ανηνεγκεν εν τω σωματι αυτου επι το ξυλον ινα ταις αμαρτιας απογενομενοι τη δικαιοσυνη ζησωμεν ου τω μωλωπι αυτου ιαθητε

²⁵ητε γαρ ως προβατα πλανωμενα αλλ επεστραφητε νυν επι τον ποιμενα και επισκοπον των ψυχων υμων

Chapter 3

¹ομοιως αι γυναικες υποτασσομεναι τοις ιδιοις ανδρασιν ινα και ει τινες απειθουσιν τω λογω δια της των γυναικων αναστροφης ανευ λογου κερδηθησονται

²εποπτευσαντες την εν φοβω αγνην αναστροφην υμων

³ων εστω ουχ ο εξωθεν εμπλοκης τριχων και περιθεσεως χρυσιων η ενδυσεως ιματιων κοσμος

⁴αλλ ο κρυπτος της καρδιας ανθρωπος εν τω αφθαρτω του πραεος και ησυχιου πνευματος ο εστιν ενωπιον του θεου πολυτελες

⁵ουτως γαρ ποτε και αι αγιαι γυναικες αι ελπίζουσαι επι τον θεον εκοσμου εαυτας υποτασσομεναι τοις ιδιοις ανδρασιν

⁶ως σαρρα υπηκουσεν τω αβρααμ κυριον αυτον καλουσα ης εγενηθητε τεκνα αγαθοποιουσαι και μη φοβουμεναι μηδεμιαν πτοησιν

⁷οι ανδρες ομοιως συνοικουντες κατα γνωσιν ως ασθενεστερω σκευει τω γυναικειω απονεμοντες τιμην ως και συγκληρονομοι χαριτος ζωης εις το μη εκκοπτεσθαι τας προσευχας υμων

⁸το δε τελος παντες ομοφρονες συμπαθεις φιλαδελφοι ευσπλαγχοι φιλοφρονες

⁹μη αποδιδοντες κακον αντι κακου η λοιδοριαν αντι λοιδοριας τουναντιον δε ευλογουντες ειδοτες οτι εις τουτο εκληθητε ινα ευλογιαν κληρονομησητε

¹⁰ο γαρ θελων ζων αγαπαν και ιδειν ημερας αγαθας παυσατω την γλωσσαν αυτου απο κακου και χειλη αυτου του μη λαλησαι δολον

¹¹εκκλινατω απο κακου και ποιησατω αγαθον ζητησατω ειρηνην και διωξατω αυτην

¹²οτι οι οφθαλμοι κυριου επι δικαιους και ωτα αυτου εις δεησιν αυτων προσωπον δε κυριου επι ποιουντας κακα

¹³και τις ο κακωσων υμας εαν του αγαθου μιμηται γενησθε

¹⁴αλλ ει και πασχοιτε δια δικαιοσυνην μακαριοι τον δε φοβον αυτων μη φοβηθητε μηδε ταραχθητε

¹⁵κυριον δε τον θεον αγιασατε εν ταις καρδιαις υμων ετοιμοι δε αι προς απολογιαν παντι τω αιτουντι υμας λογον περι της εν υμιν ελπιδος μετα πραυτητος και φοβου

¹⁶συνειδησιν εχοντες αγαθην ινα εν ω καταλαλωσιν υμων ως κακοποιων καταισχυνθωσιν οι επηρεαζοντες υμων την αγαθην εν χριστω αναστροφην

¹⁷κρειττον γαρ αγαθοποιουντας ει θελει το θελημα του θεου πασχειν η κακοποιουντας

¹⁸οτι και χριστος απαξ περι αμαρτιων επαθεν δικαιος υπερ αδικων ινα ημας προσαγαγη τω θεω θανατωθεις μεν σαρκι ζωοποιηθεις δε τω πνευματι

¹⁹εν ω και τοις εν φυλακη πνευμασιν πορευθεις εκηρυξεν

²⁰απειθησασιν ποτε οτε απαξ εξεδεχετο η του θεου μακροθυμια εν ημεραις νωε κατασκευαζομενης κιβωτου εις ην ολιγαι τουτεστιν οκτω ψυχαι διεσωθησαν δι υδατος

²¹ω και ημας αντιτυπον νυν σωζει βαπτισμα ου σαρκος αποθεσις ρυπου αλλα συνειδησεως αγαθης επερωτημα εις θεον δι αναστασεως ιησου χριστου

²²ος εστιν εν δεξια του θεου πορευθεις εις ουρανον υποταγεντων αυτω αγγελων και εξουσιων και δυναμεων

Chapter 4

- ¹χριστου ουν παθοντος υπερ ημων σαρκι και υμεις την αυτην εννοιαν οπλισασθε οτι ο παθων εν σαρκι πεπαυται αμαρτιας
- ²εις το μηκετι ανθρωπων επιθυμιας αλλα θεληματι θεου τον επιλοιπον εν σαρκι βιωσαι χρονον
- ³αρκετος γαρ ημιν ο παρεληλυθως χρονος του βιου το θελημα των εθνων κατεργασασθαι πεπορευμενους εν ασελγειας επιθυμιας οιοφλυγιας κωμοις ποτοις και αθεμιτοις ειδωλολατρειας
- ⁴εν ω ξενιζονται μη συντρεχοντων υμων εις την αυτην της ασωτιας αναχυσιν βλασφημουντες
- ⁵οι αποδωσουσιν λογον τω ετοιμως εχοντι κριναι ζωντας και νεκρους
- ⁶εις τουτο γαρ και νεκροις ευηγγελισθη ινα κριθωσιν μεν κατα ανθρωπους σαρκι ζωσιν δε κατα θεον πνευματι
- ⁷παντων δε το τελος ηγγικεν σωφρονησατε ουν και νηψατε εις τας προσευχας
- ⁸προ παντων δε την εις εαυτους αγαπην εκτενη εχοντες οτι η αγαπη καλυψει πληθος αμαρτιων
- ⁹φιλοξενοι εις αλληλους ανευ γογγυσμων
- ¹⁰εκαστος καθως ελαβεν χαρισμα εις εαυτους αυτο διακονουντες ως καλοι οικονομοι ποικιλης χαριτος θεου
- ¹¹ει τις λαλει ως λογια θεου ει τις διακονει ως εξ ισχυος ης χορηγει ο θεος ινα εν πασιν δοξαζηται ο θεος δια ιησου χριστου ω εστιν η δοξα και το κρατος εις τους αιωνας των αιωνων αμην
- ¹²αγαπητοι μη ξενιζεσθε τη εν υμιν πυρωσει προς πειρασμον υμιν γινομενη ως ξενου υμιν συμβαινοντος
- ¹³αλλα καθο κοινωνειτε τοις του χριστου παθημασιν χαιρετε ινα και εν τη αποκαλυψει της δοξης αυτου χαρητε αγαλλιωμενοι
- ¹⁴ει ονειδιζεσθε εν ονοματι χριστου μακαριοι οτι το της δοξης και το του θεου πνευμα εφ υμας αναπαυεται κατα μεν αυτους βλασφημειται κατα δε υμας δοξαζεται
- ¹⁵μη γαρ τις υμων πασχετω ως φονευς η κλεπτης η κακοποιος η ως αλλοτριεπισκοπος
- ¹⁶ει δε ως χριστιανος μη αισχυνεσθω δοξαζετω δε τον θεον εν τω μερει τουτω
- ¹⁷οτι ο καιρος του αρξασθαι το κριμα απο του οικου του θεου ει δε πρωτον αφ ημων τι το τελος των απειθουντων τω του θεου ευαγγελιω
- ¹⁸και ει ο δικαιος μολις σωζεται ο ασεβης και αμαρτωλος που φανειται
- ¹⁹ωστε και οι πασχοντες κατα το θελημα του θεου ως πιστω κτιστη παρατιθεσθωσαν τας ψυχας εαυτων εν αγαθοποιια

Chapter 5

- ¹πρεσβυτερους τους εν υμιν παρακαλω ο συμπρεσβυτερος και μαρτυς των του χριστου παθηματων ο και της μελλουσης αποκαλυπτεσθαι δοξης κοινωνος
- ²ποιμανατε το εν υμιν ποιμνιον του θεου επισκοπουντες μη αναγκαστως αλλ εκουσιως μηδε αισχροκερδως αλλα προθυμως
- ³μηδ ως κατακυριευοντες των κληρων αλλα τυποι γινομενοι του ποιμνιου
- ⁴και φανερωθεντος του αρχιποιμενος κομεισθε τον αμαραντινον της δοξης στεφανον
- ⁵ομοιως νεωτεροι υποταγητε πρεσβυτεροις παντες δε αλληλοις υποτασσομενοι την ταπεινοφροσυνην εγκομβωσασθε οτι ο θεος υπερηφανοις αντιτασεται ταπεινοις δε διδωσιν χαριν
- ⁶ταπεινωθητε ουν υπο την κραταιαν χειρα του θεου ινα υμας υψωση εν καιρω
- ⁷πασαν την μεριμναν υμων επιρριψαντες επ αυτον οτι αυτω μελει περι υμων
- ⁸νηψατε γρηγορησατε οτι ο αντιδικος υμων διαβολος ως λεων ωρυομενος περιπατει ζητων τινα καταπιη
- ⁹ω αντιστητε στερεοι τη πιστει ειδοτες τα αυτα των παθηματων τη εν κοσμω υμων αδελφοτητι επιτελεισθαι
- ¹⁰ο δε θεος πασης χαριτος ο καλεσας ημας εις την αιωνιον αυτου δοξαν εν χριστω ιησου ολιγον παθοντας αυτος καταρτισαι υμας στηριξαι σθενωσαι θεμελιωσαι
- ¹¹αυτω η δοξα και το κρατος εις τους αιωνας των αιωνων αμην
- ¹²δια σιλουανου υμιν του πιστου αδελφου ως λογιζομαι δι ολιγων εγραψα παρακαλων και επιμαρτυρων ταυτην εινα αληθη χαριν του θεου εις ην εστηκατε
- ¹³ασπαζεται υμας η εν βαβυλωνι συνεκλεκτη και μαρκος ο υιος μου
- ¹⁴ασπασασθε αλληλους εν φιληματι αγαπης ειρηνη υμιν πασιν τοις εν χριστω ιησου αμην

2 Peter

Chapter 1

- ¹σιμων πετρος δουλος και αποστολος ιησου χριστου τοις ισοτιμον ημιν λαχουσιν πιστιν εν δικαιοσυνη του θεου ημων και σωτηρος ημων ιησου χριστου
- ²χαρις υμιν και ειρηνη πληθυνθειη εν επιγνωσει του θεου και ιησου του κυριου ημων
- ³ως παντα ημιν της θειας δυναμεως αυτου τα προς ζωην και ευσεβειαν δεδωρημενης δια της επιγνωσεως του καλεσαντος ημας δια δοξης και αρετης
- ⁴δι ων τα μεγαιστα ημιν και τιμια επαγγελματα δεδωρηται ινα δια τουτων γενησθε θειας κοινωνοι φυσεως αποφυγοντες της εν κοσμω εν επιθυμια φθορας
- ⁵και αυτο τουτο δε σπουδην πασαν παρεισενεγκαντες επιχορηγησατε εν τη πιστει υμων την αρετην εν δε τη αρετη την γνωσιν
- ⁶εν δε τη γνωσει την εγκρατειαν εν δε τη εγκρατεια την υπομονην εν δε τη υπομονη την ευσεβειαν
- ⁷εν δε τη ευσεβεια την φιλαδελφιαν εν δε τη φιλαδελφια την αγαπην
- ⁸ταυτα γαρ υμιν υπαρχοντα και πλεοναζοντα ουκ αργους ουδε ακαρπους καθιστησιν εις την του κυριου ημων ιησου χριστου επιγνωσιν
- ⁹ω γαρ μη παρεστιν ταυτα τυφλος εστιν μυωπαζων ληθην λαβων του καθαρισμου των παλαι αυτου αμαρτιων
- ¹⁰διο μαλλον αδελφοι σπουδασατε βεβαιαν υμων την κλησιν και εκλογην ποιεισθαι ταυτα γαρ ποιουντες ου μη πταισητε ποτε
- ¹¹ουτως γαρ πλουσιως επιχορηγηθησεται υμιν η εισοδος εις την αιωνιον βασιλειαν του κυριου ημων και σωτηρος ιησου χριστου
- ¹²διο ουκ αμελησω υμας αιε υπομιμνησκειν περι τουτων καιπερ ειδοτας και εστηριγμενους εν τη παρουση αληθεια
- ¹³δικαιον δε ηγουμαι εφ οσον ειμι εν τουτω τω σκηνωματι διεγειρειν υμας εν υπομνησει
- ¹⁴ειδως οτι ταχινη εστιν η αποθεσις του σκηνωματος μου καθως και ο κυριος ημων ιησους χριστος εδηλωσεν μοι
- ¹⁵σπουδασω δε και εκαστοτε εχειν υμας μετα την εμην εξοδον την τουτων μνημην ποιεισθαι
- ¹⁶ου γαρ σεσοφισμενοις μυθοις εξακολουθησαντες εγνωρισαμεν υμιν την του κυριου ημων ιησου χριστου δυναμιν και παρουσιαν αλλ εποπται γενηθεντες της εκεινου μεγαλειοτητος
- ¹⁷λαβων γαρ παρα θεου πατρος τιμην και δοξαν φωνης ενεχθεισης αυτω τοιασδε υπο της μεγαλοπρεπους δοξης ουτος εστιν ο υιος μου ο αγαπητος εις ον εγω ευδοκησα
- ¹⁸και ταυτην την φωνην ημεις ηκουσαμεν εξ ουρανου ενεχθεισαν συν αυτω οντες εν τω ορει τω αγιω
- ¹⁹και εχομεν βεβαιωτερον τον προφητικον λογον ω καλως ποιειτε προσεχοντες ως λυχνω φαινοντι εν αυχηρω τοπω εως ου ημερα διαυγαση και φωσφορος ανατειλη εν ταις καρδιαις υμων
- ²⁰τουτο πρωτον γινωσκοντες οτι πασα προφητεια γραφης ιδιας επιλυσεως ου γινεται

²¹ου γαρ θεληματι ανθρωπου ηνεχθη ποτε προφητεια αλλ υπο πνευματος αγιου φερομενοι
ελαλησαν αγιοι θεου ανθρωποι

Chapter 2

¹εγενοντο δε και ψευδοπροφηται εν τω λαω ως και εν υμιν εσονται ψευδοδιδασκαλοι οιτινες παρεισαξουσιν αιρεσεις απωλειας και τον αγορασαντα αυτους δεσποτην αρνουμενοι επαγοντες εαυτοις ταχινην απωλειαν

²και πολλοι εξακολουθησουσιν αυτων ταις απωλειαις δι ους η οδος της αληθειας βλασφημηθησεται

³και εν πλεονεξια πλαστοις λογοις υμας εμπορευονται οις το κριμα εκπαλαι ουκ αρχει και η απωλεια αυτων ου νυσταζει

⁴ει γαρ ο θεος αγγελων αμαρτησαντων ουκ εφεισατο αλλα σειραις ζοφου ταρταρωσας παρεδωκεν εις κρισιν τετηρημενους

⁵και αρχαιου κοσμου ουκ εφεισατο αλλ ογδοον νωε δικαιοσυνης κηρυκα εφυλαξεν κατακλυσμον κοσμω ασεβων επαξας

⁶και πολεις σοδομων και γομορρας τεφρωσας καταστροφη κατεκρινεν υποδειγμα μελλοντων ασεβειν τεθεικως

⁷και δικαιον λωτ καταπονουμενον υπο της των αθεσμων εν ασελγεια αναστροφης ερρυσατο

⁸βλεμματι γαρ και ακοη ο δικαιος εγκατοικων εν αυτοις ημεραν εξ ημερας ψυχην δικαιαν ανομοις εργοις εβασανιζεν

⁹οιδεν κυριος ευσεβεις εκ πειρασμων ρυεσθαι αδικους δε εις ημεραν κρισεως κολαζομενους τηρειν

¹⁰μαλιστα δε τους οπισω σαρκος εν επιθυμια μiasμου πορευομενους και κυριοτητος καταφρονοντας τολμηται αυθαδεις δοξας ου τρεμουσιν βλασφημουντες

¹¹οπου αγγελοι ισχυι και δυναμει μειζονες οντες ου φερουσιν κατ αυτων παρα κυριω βλασφημον κρισιν

¹²ουτοι δε ως αλογα ζωα φυσικα γεγεννημενα εις αλωσιν και φθοραν εν οις αγνοουσιν βλασφημουντες εν τη φθορα αυτων καταφθαρησονται

¹³κομιουμενοι μισθον αδικιας ηδονην ηγουμενοι την εν ημερα τρυφην σπιλοι και μωμοι εντρυφωντες εν ταις απαταις αυτων συνευωχουμενοι υμιν

¹⁴οφθαλμους εχοντες μεστους μοιχαλιδος και ακαταπαυστους αμαρτιας δελεαζοντες ψυχας αστηρικτους καρδιαν γεγυμνασμενην πλεονεξιαις εχοντες καταρας τεκνα

¹⁵καταλιποντες την ευθειαν οδον επλανηθησαν εξακολουθησαντες τη οδω του βαλααμ του βοσορ ος μισθον αδικιας ηγαπησεν

¹⁶ελεγξιν δε εσχεν ιδιας παρανομιας υποζυγιον αφωννον εν ανθρωπου φωνη φθεγξαμενον εκωλυσεν την του προφητου παραφρονιαν

¹⁷ουτοι εισιν πηγαι ανυδροι νεφελαι υπο λαϊλαπος ελαυνομεναι οις ο ζοφος του σκοτους εις αιωνα τετηρηται

¹⁸υπερογκα γαρ ματαιοτητος φθεγγομενοι δελεαζουσιν εν επιθυμιαις σαρκος εν ασελγειαις τους οντως αποφυγοντας τους εν πλανη αναστρεφομενους

¹⁹ ελευθεριαν αυτοις επαγγελλομενοι αυτοι δουλοι υπαρχοντες της φθορας ω γαρ τις ηττηται τουτω και δεδουλωται

²⁰ ει γαρ αποφυγοντες τα μiasματα του κοσμου εν επιγνωσει του κυριου και σωτηρος ιησου χριστου τουτοις δε παλιν εμπλακεντες ηττωνται γεγονεν αυτοις τα εσχατα χειρονα των πρωτων

²¹ κρειττον γαρ ην αυτοις μη επεγνωκεναι την οδον της δικαιοσυνης η επιγνουσιν επιστρεψαι εκ της παραδοθειας αυτοις αγιας εντολης

²² συμβεβηκεν δε αυτοις το της αληθους παροιμιας κυων επιστρεψας επι το ιδιον εξεραμα και υς λουσαμενη εις κυλισμα βορβορου

Chapter 3

¹ταυτην ηδη αγαπητοι δευτεραν υμιν γραφω επιστολην εν αις διεγειρω υμων εν υπομνησει την ειλικρινη διανοιαν
²μνησθηναι των προειρημενων ρηματων υπο των αγιων προφητων και της των αποστολων ημων εντολης του κυριου και σωτηρος
³τουτο πρωτον γινωσκοντες οτι ελευσονται επ εσχατου των ημερων εμπαικται κατα τας ιδιας αυτων επιθυμιας πορευομενοι
⁴και λεγοντες που εστιν η επαγγελια της παρουσιας αυτου αφ ης γαρ οι πατερες κοιμηθησαν παντα ουτως διαμενει απ αρχης κτισεως
⁵λανθανει γαρ αυτους τουτο θελοντας οτι ουρανοι ησαν εκπαλαι και γη εξ υδατος και δι υδατος συνεστωσα τω του θεου λογω
⁶δι ων ο τοτε κοσμος υδατι κατακλυσθεις απωλετο
⁷οι δε νυν ουρανοι και η γη τω αυτω λογω τεθησαυρισμενοι εισιν πυρι τηρουμενοι εις ημεραν κρισεως και απωλειας των ασεβων ανθρωπων
⁸εν δε τουτο μη λανθανετω υμας αγαπητοι οτι μια ημερα παρα κυριω ως χιλια ετη και χιλια ετη ως ημερα μια
⁹ου βραδυνει ο κυριος της επαγγελιας ως τινες βραδυτητα ηγουνται αλλα μακροθυμει εις ημας μη βουλομενος τινας απολεσθαι αλλα παντας εις μετανοιαν χωρησαι
¹⁰ηξει δε η ημερα κυριου ως κλεπτης εν νυκτι εν η οι ουρανοι ροιζηδον παρελευσονται στοιχεια δε καυσουμενα λυθησονται και γη και τα εν αυτη εργα κατακαησεται
¹¹τουτων ουν παντων λυομενων ποταπους δει υπαρχειν υμας εν αγιαις αναστροφαις και ευσεβειαις
¹²προσδοκωντας και σπευδοντας την παρουσιαν της του θεου ημερας δι ην ουρανοι πυρουμενοι λυθησονται και στοιχεια καυσουμενα τηκεται
¹³καινους δε ουρανους και γην καινην κατα το επαγγελμα αυτου προσδοκωμεν εν οις δικαιοσυνη κατοικει
¹⁴διο αγαπητοι ταυτα προσδοκωντες σπουδασατε ασπιλοι και αμωμητοι αυτω ευρεθηναι εν ειρηνη
¹⁵και την του κυριου ημων μακροθυμιαν σωτηριαν ηγεισθε καθως και ο αγαπητος ημων αδελφος παυλος κατα την αυτω δοθεισαν σοφιαν εγραψεν υμιν
¹⁶ως και εν πασαις ταις επιστολαις λαλων εν αυταις περι τουτων εν οις εστιν δυσνοητα τινα α οι αμαθεις και αστηρικτοι στρεβλουσιν ως και τας λοιπας γραφας προς την ιδιαν αυτων απωλειαν
¹⁷υμεις ουν αγαπητοι προγινωσκοντες φυλασσεσθε ινα μη τη των αθεσμων πλανη συναπαχθεντες εκπεσητε του ιδιου στηριγμου
¹⁸αυξανετε δε εν χαριτι και γνωσει του κυριου ημων και σωτηρος ιησου χριστου αυτω η δοξα και νυν και εις ημεραν αιωνος αμην

1 John

Chapter 1

¹ο ην απ αρχης ο ακηκοαμεν ο εωρακαμεν τοις οφθαλμοις ημων ο εθεασαμεθα και αι χειρες ημων εψηλαφησαν περι του λογου της ζωης

²και η ζωη εφανερωθη και εωρακαμεν και μαρτυρουμεν και απαγγελλομεν υμιν την ζων την αιωνιον ητις ην προς τον πατερα και εφανερωθη ημιν

³ο εωρακαμεν και ακηκοαμεν απαγγελλομεν υμιν ινα και υμεις κοινωνιαν εχητε μεθ ημων και η κοινωνια δε η ημετερα μετα του πατρος και μετα του υιου αυτου ιησου χριστου

⁴και ταυτα γραφομεν υμιν ινα η χαρα υμων η πεπληρωμενη

⁵και αυτη εστιν η αγγελια ην ακηκοαμεν απ αυτου και αναγγελλομεν υμιν οτι ο θεος φως εστιν και σκοτια εν αυτω ουκ εστιν ουδεμια

⁶εαν ειπωμεν οτι κοινωνιαν εχομεν μετ αυτου και εν τω σκοτει περιπατωμεν ψευδομεθα και ου ποιουμεν την αληθειαν

⁷εαν δε εν τω φωτι περιπατωμεν ως αυτος εστιν εν τω φωτι κοινωνιαν εχομεν μετ αλληλων και το αιμα ιησου χριστου του υιου αυτου καθαριζει ημας απο πασης αμαρτιας

⁸εαν ειπωμεν οτι αμαρτιαν ουκ εχομεν εαυτους πλανωμεν και η αληθεια ουκ εστιν εν ημιν

⁹εαν ομολογωμεν τας αμαρτιας ημων πιστος εστιν και δικαιος ινα αφη ημιν τας αμαρτιας και καθαριση ημας απο πασης αδικιας

¹⁰εαν ειπωμεν οτι ουχ ημαρτηκαμεν ψευστην ποιουμεν αυτον και ο λογος αυτου ουκ εστιν εν ημιν

Chapter 2

¹τεκνία μου ταυτα γραφω υμιν ινα μη αμαρτητε και εαν τις αμαρτη παρακλητον εχομεν προς τον πατερα ιησουν χριστον δικαιον
²και αυτος ιλασμος εστιν περι των αμαρτιων ημων ου περι των ημετερων δε μονον αλλα και περι ολου του κοσμου
³και εν τουτω γινωσκομεν οτι εγνωκαμεν αυτον εαν τας εντολας αυτου τηρωμεν
⁴ο λεγων εγνωκα αυτον και τας εντολας αυτου μη τηρων ψευστης εστιν και εν τουτω η αληθεια ουκ εστιν
⁵ος δ αν τηρη αυτου τον λογον αληθως εν τουτω η αγαπη του θεου τετελειωται εν τουτω γινωσκομεν οτι εν αυτω εσμεν
⁶ο λεγων εν αυτω μενειν οφειλει καθως εκεινος περιεπατησεν και αυτος ουτως περιπατειν
⁷αδελφοι ουκ εντολην καινην γραφω υμιν αλλ εντολην παλαιαν ην ειχετε απ αρχης η εντολη η παλαια εστιν ο λογος ον ηκουσατε απ αρχης
⁸παλιν εντολην καινην γραφω υμιν ο εστιν αληθες εν αυτω και εν υμιν οτι η σκοτια παραγεται και το φως το αληθινον ηδη φαινει
⁹ο λεγων εν τω φωτι ειναι και τον αδελφον αυτου μισων εν τη σκοτια εστιν εως αρτι
¹⁰ο αγαπων τον αδελφον αυτου εν τω φωτι μενει και σκανδαλον εν αυτω ουκ εστιν
¹¹ο δε μισων τον αδελφον αυτου εν τη σκοτια εστιν και εν τη σκοτια περιπατει και ουκ οιδεν που υπαγει οτι η σκοτια ετυφλωσεν τους οφθαλμους αυτου
¹²γραφω υμιν τεκνια οτι αφεωνται υμιν αι αμαρτια δια το ονομα αυτου
¹³γραφω υμιν πατερες οτι εγνωκατε τον απ αρχης γραφω υμιν νεανισκοι οτι νενικηκατε τον πονηρον γραφω υμιν παιδια οτι εγνωκατε τον πατερα
¹⁴εγραψα υμιν πατερες οτι εγνωκατε τον απ αρχης εγραψα υμιν νεανισκοι οτι ισχυροι εστε και ο λογος του θεου εν υμιν μενει και νενικηκατε τον πονηρον
¹⁵μη αγαπατε τον κοσμον μηδε τα εν τω κοσμω εαν τις αγαπα τον κοσμον ουκ εστιν η αγαπη του πατρος εν αυτω
¹⁶οτι παν το εν τω κοσμω η επιθυμια της σαρκος και η επιθυμια των οφθαλμων και η αλαζονεια του βιου ουκ εστιν εκ του πατρος αλλ εκ του κοσμου εστιν
¹⁷και ο κοσμος παραγεται και η επιθυμια αυτου ο δε ποιων το θελημα του θεου μενει εις τον αιωνα
¹⁸παιδια εσχατη ωρα εστιν και καθως ηκουσατε οτι ο αντιχριστος ερχεται και νυν αντιχριστοι πολλοι γεγονασιν οθεν γινωσκομεν οτι εσχατη ωρα εστιν
¹⁹εξ ημων εξηλθον αλλ ουκ ησαν εξ ημων ει γαρ ησαν εξ ημων μεμενηκεισαν αν μεθ ημων αλλ ινα φανερωθωσιν οτι ουκ εισιν παντες εξ ημων
²⁰και υμεις χρισμα εχετε απο του αγιου και οιδατε παντα
²¹ουκ εγραψα υμιν οτι ουκ οιδατε την αληθειαν αλλ οτι οιδατε αυτην και οτι παν ψευδος εκ της αληθειας ουκ εστιν

²²τις εστιν ο ψευστης ει μη ο αρνουμενος οτι ιησους ουκ εστιν ο χριστος ουτος εστιν ο αντιχριστος ο αρνουμενος τον πατερα και τον υιον

²³πας ο αρνουμενος τον υιον ουδε τον πατερα εχει ο ομολογων τον υιον και τον πατερα εχει

²⁴υμεις ουν ο ηκουσατε απ αρχης εν υμιν μενετω εαν εν υμιν μεινη ο απ αρχης ηκουσατε και υμεις εν τω υιω και εν τω πατρι μενειτε

²⁵και αυτη εστιν η επαγγελια ην αυτος επηγγειλατο ημιν την ζωην την αιωνιον

²⁶ταυτα εγραψα υμιν περι των πλανωντων υμας

²⁷και υμεις το χρισμα ο ελαβετε απ αυτου εν υμιν μενει και ου χρειαν εχετε ινα τις διδασκη υμας αλλ ως το αυτο χρισμα διδασκει υμας περι παντων και αληθες εστιν και ουκ εστιν ψευδος και καθως εδιδαξεν υμας μενειτε εν αυτω

²⁸και νυν τεκνια μενετε εν αυτω ινα οταν φανερωθη εχωμεν παρρησιαν και μη αισχυνθωμεν απ αυτου εν τη παρουσια αυτου

²⁹εαν ειδητε οτι δικαιος εστιν γινωσκετε οτι πας ο ποιων την δικαιοσυνην εξ αυτου γεγεννηται

Chapter 3

- ¹ιδετε ποταπην αγαπην δεδωκεν ημιν ο πατηρ ινα τεκνα θεου κληθωμεν δια τουτο ο κοσμος ου γινωσκει ημας οτι ουκ εγνω αυτον
- ²αγαπητοι νυν τεκνα θεου εσμεν και ουπω εφανερωθη τι εσομεθα οιδαμεν δε οτι εαν φανερωθη ομοιοι αυτω εσομεθα οτι οψομεθα αυτον καθως εστιν
- ³και πας ο εχων την ελπιδα ταυτην επ αυτω αγνιζει εαυτον καθως εκεινος αγνος εστιν
- ⁴πας ο ποιων την αμαρτιαν και την ανομιαν ποιει και η αμαρτια εστιν η ανομια
- ⁵και οιδατε οτι εκεινος εφανερωθη ινα τας αμαρτιας ημων αρη και αμαρτια εν αυτω ουκ εστιν
- ⁶πας ο εν αυτω μενων ουχ αμαρτανει πας ο αμαρτανων ουχ εωρακεν αυτον ουδε εγνωκεν αυτον
- ⁷τεκνια μηδεις πλανατω υμας ο ποιων την δικαιοσυνην δικαιος εστιν καθως εκεινος δικαιος εστιν
- ⁸ο ποιων την αμαρτιαν εκ του διαβολου εστιν οτι απ αρχης ο διαβολος αμαρτανει εις τουτο εφανερωθη ο υιος του θεου ινα λυση τα εργα του διαβολου
- ⁹πας ο γεγεννημενος εκ του θεου αμαρτιαν ου ποιει οτι σπερμα αυτου εν αυτω μενει και ου δυναται αμαρτανειν οτι εκ του θεου γεγεννηται
- ¹⁰εν τουτω φανερα εστιν τα τεκνα του θεου και τα τεκνα του διαβολου πας ο μη ποιων δικαιοσυνην ουκ εστιν εκ του θεου και ο μη αγαπων τον αδελφον αυτου
- ¹¹οτι αυτη εστιν η αγγελια ην ηκουσατε απ αρχης ινα αγαπωμεν αλληλους
- ¹²ου καθως καιν εκ του πονηρου ην και εσφαξεν τον αδελφον αυτου και χαριν τινος εσφαξεν αυτον οτι τα εργα αυτου πονηρα ην τα δε του αδελφου αυτου δικαια
- ¹³μη θαυμαζετε αδελφοι μου ει μισει υμας ο κοσμος
- ¹⁴ημεις οιδαμεν οτι μεταβεβηκαμεν εκ του θανατου εις την ζωην οτι αγαπωμεν τους αδελφους ο μη αγαπων τον αδελφον μενει εν τω θανατω
- ¹⁵πας ο μισων τον αδελφον αυτου ανθρωποκτονος εστιν και οιδατε οτι πας ανθρωποκτονος ουκ εχει ζωην αιωνιον εν αυτω μενουσαν
- ¹⁶εν τουτω εγνωκαμεν την αγαπην του θεου οτι εκεινος υπερ ημων την ψυχην αυτου εθηκεν και ημεις οφειλομεν υπερ των αδελφων τας ψυχας τιθεναι
- ¹⁷ος δ αν εχη τον βιον του κοσμου και θεωρη τον αδελφον αυτου χρειαν εχοντα και κλειση τα σπλαγχνα αυτου απ αυτου πως η αγαπη του θεου μενει εν αυτω
- ¹⁸τεκνια μου μη αγαπωμεν λογω μηδε γλωσση αλλ εργω και αληθεια
- ¹⁹και εν τουτω γινωσκομεν οτι εκ της αληθειας εσμεν και εμπροσθεν αυτου πεισομεν τας καρδιας ημων
- ²⁰οτι εαν καταγινωσκη ημων η καρδια οτι μειζων εστιν ο θεος της καρδιας ημων και γινωσκει παντα
- ²¹αγαπητοι εαν η καρδια ημων μη καταγινωσκη ημων παρρησιαν εχομεν προς τον θεον

²² και ο εαν αιτωμεν λαμβανομεν παρ αυτου οτι τας εντολας αυτου τηρουμεν και τα αρεστα ενωπιον αυτου ποιουμεν

²³ και αυτη εστιν η εντολη αυτου ινα πιστευσωμεν τω ονοματι του υιου αυτου ιησου χριστου και αγαπωμεν αλληλους καθως εδωκεν εντολην ημιν

²⁴ και ο τηρων τας εντολας αυτου εν αυτω μενει και αυτος εν αυτω και εν τουτω γινωσκομεν οτι μενει εν ημιν εκ του πνευματος ου ημιν εδωκεν

Chapter 4

¹αγαπητοι μη παντι πνευματι πιστευετε αλλα δοκιμαζετε τα πνευματα ει εκ του θεου εστιν οτι πολλοι ψευδοπροφηται εξεληλυθασιν εις τον κοσμον

²εν τουτω γινωσκετε το πνευμα του θεου παν πνευμα ο ομολογει ιησουν χριστον εν σαρκι εληλυθοτα εκ του θεου εστιν

³και παν πνευμα ο μη ομολογει τον ιησουν χριστον εν σαρκι εληλυθοτα εκ του θεου ουκ εστιν και τουτο εστιν το του αντιχριστου ο ακηκοατε οτι ερχεται και νυν εν τω κοσμω εστιν ηδη

⁴υμεις εκ του θεου εστε τεκνια και νενικηκατε αυτους οτι μειζων εστιν ο εν υμιν η ο εν τω κοσμω

⁵αυτοι εκ του κοσμου εισιν δια τουτο εκ του κοσμου λαλουσιν και ο κοσμος αυτων ακουει

⁶ημεις εκ του θεου εσμεν ο γινωσκων τον θεον ακουει ημων ος ουκ εστιν εκ του θεου ουκ ακουει ημων εκ τουτου γινωσκομεν το πνευμα της αληθειας και το πνευμα της πλανης

⁷αγαπητοι αγαπωμεν αλληλους οτι η αγαπη εκ του θεου εστιν και πας ο αγαπων εκ του θεου γεγεννηται και γινωσκει τον θεον

⁸ο μη αγαπων ουκ εγνω τον θεον οτι ο θεος αγαπη εστιν

⁹εν τουτω εφανερωθη η αγαπη του θεου εν ημιν οτι τον υιον αυτου τον μονογενη απεσταλκεν ο θεος εις τον κοσμον ινα ζησωμεν δι αυτου

¹⁰εν τουτω εστιν η αγαπη ουχ οτι ημεις ηγαπησαμεν τον θεον αλλ οτι αυτος ηγαπησεν ημας και απεστειλεν τον υιον αυτου ιλασμον περι των αμαρτιων ημων

¹¹αγαπητοι ει ουτως ο θεος ηγαπησεν ημας και ημεις οφειλομεν αλληλους αγαπαν

¹²θεον ουδεις πωποτε τεθεαται εαν αγαπωμεν αλληλους ο θεος εν ημιν μενει και η αγαπη αυτου τετελειωμενη εστιν εν ημιν

¹³εν τουτω γινωσκομεν οτι εν αυτω μενομεν και αυτος εν ημιν οτι εκ του πνευματος αυτου δεδωκεν ημιν

¹⁴και ημεις τεθεαμεθα και μαρτυρουμεν οτι ο πατηρ απεσταλκεν τον υιον σωτηρα του κοσμου

¹⁵ος αν ομολογηση οτι ιησους εστιν ο υιος του θεου ο θεος εν αυτω μενει και αυτος εν τω θεω

¹⁶και ημεις εγνωκαμεν και πεπιστευκαμεν την αγαπην ην εχει ο θεος εν ημιν ο θεος αγαπη εστιν και ο μενων εν τη αγαπη εν τω θεω μενει και ο θεος εν αυτω

¹⁷εν τουτω τετελειωται η αγαπη μεθ ημων ινα παρρησιαν εχωμεν εν τη ημερα της κρισεως οτι καθως εκεινος εστιν και ημεις εσμεν εν τω κοσμω τουτω

¹⁸φοβος ουκ εστιν εν τη αγαπη αλλ η τελεια αγαπη εξω βαλλει τον φοβον οτι ο φοβος κολασιν εχει ο δε φοβουμενος ου τετελειωται εν τη αγαπη

¹⁹ημεις αγαπωμεν αυτον οτι αυτος πρωτος ηγαπησεν ημας

²⁰εαν τις ειπη οτι αγαπω τον θεον και τον αδελφον αυτου μιση ψευστης εστιν ο γαρ μη αγαπων τον αδελφον αυτου ον εωρακεν τον θεον ον ουχ εωρακεν πως δυναται αγαπαν

²¹ και ταυτην την εντολην εχομεν απ αυτου ινα ο αγαπων τον θεον αγαπα και τον αδελφον αυτου

Chapter 5

- ¹πας ο πιστευων οτι ιησους εστιν ο χριστος εκ του θεου γεγεννηται και πας ο αγαπων τον γεννησαντα αγαπα και τον γεγεννημενον εξ αυτου
- ²εν τουτω γινωσκομεν οτι αγαπωμεν τα τεκνα του θεου οταν τον θεον αγαπωμεν και τας εντολας αυτου τηρωμεν
- ³αυτη γαρ εστιν η αγαπη του θεου ινα τας εντολας αυτου τηρωμεν και αι εντολαι αυτου βαρειαι ουκ εισιν
- ⁴οτι παν το γεγεννημενον εκ του θεου νικα τον κοσμον και αυτη εστιν η νικη η νικησασα τον κοσμον η πιστις ημων
- ⁵τις εστιν ο νικων τον κοσμον ει μη ο πιστευων οτι ιησους εστιν ο υιος του θεου
- ⁶ουτος εστιν ο ελθων δι υδατος και αιματος ιησους ο χριστος ουκ εν τω υδατι μονον αλλ εν τω υδατι και τω αιματι και το πνευμα εστιν το μαρτυρουν οτι το πνευμα εστιν η αληθεια
- ⁷οτι τρεις εισιν οι μαρτυρουντες εν τω ουρανω ο πατηρ ο λογος και το αγιον πνευμα και ουτοι οι τρεις εν εισιν
- ⁸και τρεις εισιν οι μαρτυρουντες εν τη γη το πνευμα και το υδωρ και το αιμα και οι τρεις εις το εν εισιν
- ⁹ει την μαρτυριαν των ανθρωπων λαμβανομεν η μαρτυρια του θεου μειζων εστιν οτι αυτη εστιν η μαρτυρια του θεου ην μεμαρτυρηκεν περι του υιου αυτου
- ¹⁰ο πιστευων εις τον υιον του θεου εχει την μαρτυριαν εν εαυτω ο μη πιστευων τω θεω ψευστην πεποιηκεν αυτον οτι ου πεπιστευκεν εις την μαρτυριαν ην μεμαρτυρηκεν ο θεος περι του υιου αυτου
- ¹¹και αυτη εστιν η μαρτυρια οτι ζωην αιωνιον εδωκεν ημιν ο θεος και αυτη η ζωη εν τω υιω αυτου εστιν
- ¹²ο εχων τον υιον εχει την ζωην ο μη εχων τον υιον του θεου την ζωην ουκ εχει
- ¹³ταυτα εγραψα υμιν τοις πιστευουσιν εις το ονομα του υιου του θεου ινα ειδητε οτι ζωην εχετε αιωνιον και ινα πιστευητε εις το ονομα του υιου του θεου
- ¹⁴και αυτη εστιν η παρησια ην εχομεν προς αυτον οτι εαν τι αιτωμεθα κατα το θελημα αυτου ακουει ημων
- ¹⁵και εαν οιδαμεν οτι ακουει ημων ο αν αιτωμεθα οιδαμεν οτι εχομεν τα αιτηματα α ητηκαμεν παρ αυτου
- ¹⁶εαν τις ιδη τον αδελφον αυτου αμαρτανοντα αμαρτιαν μη προς θανατον αιτησει και δωσει αυτω ζωην τοις αμαρτανουσιν μη προς θανατον εστιν αμαρτια προς θανατον ου περι εκεινης λεγω ινα ερωτηση
- ¹⁷πασα αδικια αμαρτια εστιν και εστιν αμαρτια ου προς θανατον
- ¹⁸οιδαμεν οτι πας ο γεγεννημενος εκ του θεου ουχ αμαρτανει αλλ ο γεννηθεις εκ του θεου τηρει εαυτον και ο πονηρος ουχ απτεται αυτου
- ¹⁹οιδαμεν οτι εκ του θεου εσμεν και ο κοσμος ολος εν τω πονηρω κειται

²⁰οιδαμεν δε οτι ο υιος του θεου ηκει και δεδωκεν ημιν διανοιαν ινα γινωσκωμεν τον αληθινον και εσμεν εν τω αληθινω εν τω υιω αυτου ιησου χριστω ουτος εστιν ο αληθινος θεος και η ζωη αιωνιος

²¹τεκνια φυλαξατε εαυτους απο των ειδωλων αμην

2 John

Chapter 1

- ¹ο πρεσβυτερος εκλεκτη κυρια και τοις τεκνοις αυτης ους εγω αγαπω εν αληθεια και ουκ εγω μονος αλλα και παντες οι εγνωκοτες την αληθειαν
²δια την αληθειαν την μενουσαν εν ημιν και μεθ ημων εσται εις τον αιωνα
³εσται μεθ υμων χαρις ελεος ειρηνη παρα θεου πατρος και παρα κυριου ιησου χριστου του υιου του πατρος εν αληθεια και αγαπη
⁴εχαρην λιαν οτι ευρηκα εκ των τεκνων σου περιπατοντας εν αληθεια καθως εντολην ελαβομεν παρα του πατρος
⁵και νυν ερωτω σε κυρια ουχ ως εντολην γραφων σοι καινην αλλα ην ειχομεν απ αρχης ινα αγαπωμεν αλληλους
⁶και αυτη εστιν η αγαπη ινα περιπατωμεν κατα τας εντολας αυτου αυτη εστιν η εντολη καθως ηκουσατε απ αρχης ινα εν αυτη περιπατητε
⁷οτι πολλοι πλανοι εισηλθον εις τον κοσμον οι μη ομολογουντες ιησουν χριστον ερχομενον εν σαρκι ουτος εστιν ο πλανος και ο αντιχριστος
⁸βλεπετε εαυτους ινα μη απολεσωμεν α ειργασαμεθα αλλα μισθον πληρη απολαβωμεν
⁹πας ο παραβαινων και μη μενων εν τη διδαχη του χριστου θεον ουκ εχει ο μενων εν τη διδαχη του χριστου ουτος και τον πατερα και τον υιον εχει
¹⁰ει τις ερχεται προς υμας και ταυτην την διδαχην ου φερει μη λαμβανετε αυτον εις οικιαν και χαιρειν αυτω μη λεγετε
¹¹ο γαρ λεγων αυτω χαιρειν κοινωνει τοις εργοις αυτου τοις πονηροις
¹²πολλα εχων υμιν γραφειν ουκ ηβουληθην δια χαρτου και μελανος αλλα ελπιζω ελθειν προς υμας και στομα προς στομα λαλησαι ινα η χαρα ημων η πεπληρωμενη
¹³ασπαζεται σε τα τεκνα της αδελφης σου της εκλεκτης αμην

3 John

Chapter 1

- ¹ο πρεσβυτερος γαιω τω αγαπητω ον εγω αγαπω εν αληθεια
²αγαπητε περι παντων ευχομαι σε ευοδοσθαι και υγιαειν καθως ευοδουται σου η ψυχη
³εχαρην γαρ λιαν ερχομενων αδελφων και μαρτυρουντων σου τη αληθεια καθως συ εν αληθεια περιπατεις
⁴μειζοτεραν τουτων ουκ εχω χαραν ινα ακουω τα εμα τεκνα εν αληθεια περιπατουντα
⁵αγαπητε πιστον ποιεις ο εαν εργαση εις τους αδελφους και εις τους ξενους
⁶οι εμαρτυρησαν σου τη αγαπη ενωπιον εκκλησιας ους καλως ποιησεις προπεμφας αξιως του θεου
⁷υπερ γαρ του ονοματος αυτου εξηλθον μηδεν λαμβανοντες απο των εθνων
⁸ημεις ουν οφειλομεν απολαμβανειν τους τοιουτους ινα συνεργοι γινωμεθα τη αληθεια
⁹εγραψα τη εκκλησια αλλ ο φιλοπρωτευων αυτων διοτρεφης ουκ επιδεχεται ημας
¹⁰δια τουτο εαν ελθω υπομνησω αυτου τα εργα α ποιει λογοις πονηροις φλυαρων ημας και μη αρκουμενος επι τουτοις ουτε αυτος επιδεχεται τους αδελφους και τους βουλομενους κωλυει και εκ της εκκλησιας εκβαλλει
¹¹αγαπητε μη μιμου το κακον αλλα το αγαθον ο αγαθοποιων εκ του θεου εστιν ο δε κακοποιων ουχ εωρακεν τον θεον
¹²δημητριω μεμαρτυρηται υπο παντων και υπ αυτης της αληθειας και ημεις δε μαρτυρουμεν και οιδατε οτι η μαρτυρια ημων αληθης εστιν
¹³πολλα ειχον γραφειν αλλ ου θελω δια μελανος και καλαμου σοι γραψαι
¹⁴ελπιζω δε ευθεως ιδειν σε και στομα προς στομα λαλησομεν ειρηνη σοι ασπαζονται σε οι φιλοι ασπαζου τους φιλους κατ ονομα

Jude

Chapter 1

¹ιουδας ιησου χριστου δουλος αδελφος δε ιακωβου τοις εν θεω πατρι ηγιασμενοις και ιησου χριστω τετηρημενοις κλητοις
²ελεος υμιν και ειρηνη και αγαπη πληθυνθειη
³αγαπητοι πασαν σπουδην ποιουμενος γραφειν υμιν περι της κοινης σωτηριας αναγκην εσχον γραφαι υμιν παρακαλων επαγωνιζεσθαι τη απαξ παραδοθειση τοις αγιοις πιστει
⁴παρεισεδυσαν γαρ τινες ανθρωποι οι παλαι προγεγραμμενοι εις τουτο το κριμα ασεβεις την του θεου ημων χαριν μετατιθεντες εις ασελγειαν και τον μονον δεσποτην θεον και κυριον ημων ιησουν χριστον αρνουμενοι
⁵υπομνησαι δε υμας βουλομαι ειδοτας υμας απαξ τουτο οτι ο κυριος λαον εκ γης αιγυπτου σωσας το δευτερον τους μη πιστευσαντας απωλεσεν
⁶αγγελους τε τους μη τηρησαντας την εαυτων αρχην αλλα απολιποντας το ιδιον οικητηριον εις κρισιν μεγαλης ημερας δεσμοις αιδιοις υπο ζοφον τετηρηκεν
⁷ως σοδομα και γομορρα και αι περι αυτας πολεις τον ομοιον τουτοις τροπον εκπορνευσασαι και απελθουσαι οπισω σαρκος ετερας προκεινται δειγμα πυρος αιωνιου δικην υπεχουσαι
⁸ομοιως μεντοι και ουτοι ενυπνιαζομενοι σαρκα μεν μαινουσιν κυριοτητα δε αθετουσιν δοξας δε βλασφημουσιν
⁹ο δε μιχαηλ ο αρχαγγελος οτε τω διαβολω διακρινομενος διελεγετο περι του μωσεως σωματος ουκ ετολμησεν κρισιν επενεγκειν βλασφημιας αλλ ειπεν επιτιμησαι σοι κυριος
¹⁰ουτοι δε οσα μεν ουκ οιδασιν βλασφημουσιν οσα δε φυσικως ως τα αλογα ζωα επιστανται εν τουτοις φθειρονται
¹¹ουαι αυτοις οτι τη οδω του καιν επορευθησαν και τη πλανη του βαλααμ μισθου εξεχυθησαν και τη αντιλογια του κορε απωλοντο
¹²ουτοι εισιν εν ταις αγαπαις υμων σπιλαδες συνευωχουμενοι υμιν αφοβως εαυτους ποιμαινοντες νεφελαι ανυδροι υπο ανεμων περιφερομεναι δενδρα φθινοπωρινα ακαρπα δις αποθανοντα εκριζωθεντα
¹³κυματα αγρια θαλασσης επαφριζοντα τας εαυτων αισχυνας αστερες πλανηται οις ο ζοφος του σκοτους εις τον αιωνα τετηρηται
¹⁴προεφητευσεν δε και τουτοις εβδομος απο αδαμ ενωχ λεγων ιδου ηλθεν κυριος εν μυριασιν αγιας αυτου
¹⁵ποιησαι κρισιν κατα παντων και εξελεγξαι παντας τους ασεβεις αυτων περι παντων των εργαων ασεβειας αυτων ων ησεβησαν και περι παντων των σκληρων ων ελαλησαν κατα αυτου αμαρτωλοι ασεβεις
¹⁶ουτοι εισιν γογγυσται μεμψιμοιροι κατα τας επιθυμιας αυτων πορευομενοι και το στομα αυτων λαλει υπερογκα θαυμαζοντες προσωπα ωφελειας χαριν
¹⁷υμεις δε αγαπητοι μνησθητε των ρηματων των προειρημενων υπο των αποστολων του κυριου ημων ιησου χριστου

¹⁸ οτι ελεγον υμιν οτι εν εσχατω χρονω εσονται εμπαικται κατα τας εαυτων επιθυμιας πορευομενοι των ασεβειων

¹⁹ ουτοι εισιν οι αποδιοριζοντες εαυτους ψυχικοι πνευμα μη εχοντες

²⁰ υμεις δε αγαπητοι τη αγιωτατη υμων πιστει εποικοδομουντες εαυτους εν πνευματι αγιω προσευχομενοι

²¹ εαυτους εν αγαπη θεου τηρησατε προσδεχομενοι το ελεος του κυριου ημων ιησου χριστου εις ζωην αιωνιον

²² και ους μεν ελεειτε διακρινομενοι

²³ ους δε εν φοβω σωζετε εκ του πυρος αρπαζοντες μισουντες και τον απο της σαρκος εσπιλωμενον χιτωνα

²⁴ τω δε δυναμενω φυλαξαι υμας απταιστους και στησαι κατενωπιον της δοξης αυτου αμωμους εν αγαλλιασει

²⁵ μονω σοφω θεω σωτηρι ημων δοξα και μεγαλωσυνη κρατος και εξουσια και νυν και εις παντας τους αιωνας αμην

Revelation

Chapter 1

¹αποκαλυψις ιησου χριστου ην εδωκεν αυτω ο θεος δειξαι τοις δουλοις αυτου α δει γενεσθαι εν ταχει και εσημανεν αποστειλας δια του αγγελου αυτου τω δουλω αυτου ιωαννη

²ος εμαρτυρησεν τον λογον του θεου και την μαρτυριαν ιησου χριστου οσα τε ειδεν

³μακαριος ο αναγινωσκων και οι ακουοντες τους λογους της προφητειας και τηρουντες τα εν αυτη γεγραμμενα ο γαρ καιρος εγγυς

⁴ιωαννης ταις επτα εκκλησιαις ταις εν τη ασια χαρις υμιν και ειρηνη απο του ο ων και ο ην και ο ερχομενος και απο των επτα πνευματων α εστιν ενωπιον του θρονου αυτου

⁵και απο ιησου χριστου ο μαρτυς ο πιστος ο πρωτοτοκος εκ των νεκρων και ο αρχων των βασιλεων της γης τω αγαπησαντι ημας και λουσαντι ημας απο των αμαρτιων ημων εν τω αιματι αυτου

⁶και εποιησεν ημας βασιλεις και ιερεις τω θεω και πατρι αυτου αυτω η δοξα και το κρατος εις τους αιωνας των αιωνων αμην

⁷ιδου ερχεται μετα των νεφελων και οψεται αυτον πας οφθαλμος και οιτινες αυτον εξεκεντησαν και κοψονται επ αυτον πασαι αι φυλαι της γης ναι αμην

⁸εγω ειμι το α και το ω αρχη και τελος λεγει ο κυριος ο ων και ο ην και ο ερχομενος ο παντοκρατωρ

⁹εγω ιωαννης ο και αδελφος υμων και συγκοινωνος εν τη θλιψει και εν τη βασιλεια και υπομονη ιησου χριστου εγενομην εν τη νησω τη καλουμενη πατμω δια τον λογον του θεου και δια την μαρτυριαν ιησου χριστου

¹⁰εγενομην εν πνευματι εν τη κυριακη ημερα και ηκουσα οπισω μου φωνην μεγαλην ως σαλπιγγος

¹¹λεγουσης εγω ειμι το α και το ω ο πρωτος και ο εσχατος και ο βλεπεις γραφον εις βιβλιον και πεμψον ταις επτα εκκλησιαις ταις εν ασια εις εφεσον και εις σμυρναν και εις περγαμον και εις θυατειρα και εις σαρδεις και εις φιλαδελφειαν και εις λαοδικειαν

¹²και επεστρεψα βλεπειν την φωνην ητις ελαλησεν μετ εμου και επιστρεψας ειδον επτα λυχνιας χρυσας

¹³και εν μεσω των επτα λυχνιων ομοιον υιω ανθρωπου ενδεδυμενον ποδηρη και περιεζωσμενον προς τοις μαστοις ζωνην χρυσην

¹⁴η δε κεφαλη αυτου και αι τριχες λευκαι ωσει εριον λευκον ως χιων και οι οφθαλμοι αυτου ως φλοξ πυρος

¹⁵και οι ποδες αυτου ομοιοι χαλκολιβανω ως εν καμινω πεπυρωμενοι και η φωνη αυτου ως φωνη υδατων πολλων

¹⁶και εχων εν τη δεξια αυτου χειρι αστερας επτα και εκ του στοματος αυτου ρομφαια διστομος οξεια εκπορευομενη και η οψις αυτου ως ο ηλιος φαινει εν τη δυναμει αυτου

¹⁷και οτε ειδον αυτον επεσα προς τους ποδας αυτου ως νεκρος και επεθηκεν την δεξιαν αυτου χειρα επ εμε λεγων μοι μη φοβου εγω ειμι ο πρωτος και ο εσχατος

¹⁸ και ο ζων και εγενομην νεκρος και ιδου ζων ειμι εις τους αιωνας των αιωνων αμην και εχω τας κλεις του αδου και του θανατου

¹⁹ γραψον α ειδες και α εισιν και α μελλει γινεσθαι μετα ταυτα

²⁰ το μυστηριον των επτα αστερων ων ειδες επι της δεξιας μου και τας επτα λυχνιας τας χρυσας οι επτα αστερες αγγελοι των επτα εκκλησιων εισιν και αι επτα λυχνιαι ας ειδες επτα εκκλησιαι εισιν

Chapter 2

¹ τω αγγελω της εφεσινης εκκλησιας γραψον ταδε λεγει ο κρατων τους επτα αστερας εν τη δεξια αυτου ο περιπατων εν μεσω των επτα λυχνιων των χρυσων
² οιδα τα εργα σου και τον κοπον σου και την υπομονην σου και οτι ου δυνη βαστασαι κακους και επειρασω τους φασκοντας εινα αποστολους και ουκ εισιν και ευρες αυτους ψευδεις
³ και εβαστασας και υπομονην εχεις και δια το ονομα μου κεκοπιακας και ου κεκμηκας
⁴ αλλ εχω κατα σου οτι την αγαπην σου την πρωτην αφηκας
⁵ μνημονευε ουν ποθεν εκπεπτωκας και μετανοησον και τα πρωτα εργα ποιησον ει δε μη ερχομαι σοι ταχυ και κινησω την λυχνιαν σου εκ του τοπου αυτης εαν μη μετανοησης
⁶ αλλα τουτο εχεις οτι μισεις τα εργα των νικολαιτων α καγω μισω
⁷ ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησιαις τω νικωντι δωσω αυτω φαγειν εκ του ξυλου της ζωης ο εστιν εν μεσω του παραδεισου του θεου
⁸ και τω αγγελω της εκκλησιας σμυρναιων γραψον ταδε λεγει ο πρωτος και ο εσχατος ος εγενετο νεκρος και εξησεν
⁹ οιδα σου τα εργα και την θλιψιν και την πτωχειαν πλουσιος δε ει και την βλασφημιαν των λεγοντων ιουδαιους εινα εαυτους και ουκ εισιν αλλα συναγωγή του σατανα
¹⁰ μηδεν φοβου α μελλεις πασχειν ιδου μελλει βαλειν εξ υμων ο διαβολος εις φυλακην ινα πειρασθητε και εξετε θλιψιν ημερων δεκα γινου πιστος αχρι θανατου και δωσω σοι τον στεφανον της ζωης
¹¹ ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησιαις ο νικων ου μη αδικηθη εκ του θανατου του δευτερου
¹² και τω αγγελω της εν περγαμω εκκλησιας γραψον ταδε λεγει ο εχων την ρομφαιαν την διστομον την οξειαν
¹³ οιδα τα εργα σου και που κατοικεις οπου ο θρονος του σατανα και κρατεις το ονομα μου και ουκ ηρνησω την πιστιν μου και εν ταις ημεραις εν αις αντιπας ο μαρτυς μου ο πιστος ος απεκτανθη παρ υμιν οπου κατοικει ο σατανας
¹⁴ αλλ εχω κατα σου ολιγα οτι εχεις εκει κρατουντας την διδαχην βαλααμ ος εδιδασκεν τον βαλακ βαλειν σκανδαλον ενωπιον των υιων ισραηλ φαγειν ειδωλοθυτα και πορνευσαι
¹⁵ ουτως εχεις και συ κρατουντας την διδαχην των νικολαιτων ο μισω
¹⁶ μετανοησον ει δε μη ερχομαι σοι ταχυ και πολεμησω μετ αυτων εν τη ρομφαια του στοματος μου
¹⁷ ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησιαις τω νικωντι δωσω αυτω φαγειν απο του μαννα του κεκρυμμενου και δωσω αυτω ψηφον λευκην και επι την ψηφον ονομα καινον γεγραμμενον ο ουδεις εγνω ει μη ο λαμβανων
¹⁸ και τω αγγελω της εν θυατειροις εκκλησιας γραψον ταδε λεγει ο υιος του θεου ο εχων τους οφθαλμους αυτου ως φλογα πυρος και οι ποδες αυτου ομοιοι χαλκολιβανω

- ¹⁹ οίδα σου τα εργα και την αγαπην και την διακονιαν και την πιστιν και την υπομονην σου και τα εργα σου και τα εσχατα πλειονα των πρωτων
- ²⁰ αλλ εχω κατα σου ολιγα οτι εας την γυναικα ιεζαβηλ την λεγουσαν εαυτην προφητιν διδασκειν και πλανασθαι εμους δουλους πορνευσαι και ειδωλοθυτα φαγειν
- ²¹ και εδωκα αυτη χρονον ινα μετανοηση εκ της πορνειας αυτης και ου μετενοησεν
- ²² ιδου εγω βαλλω αυτην εις κλινην και τους μοιχευοντας μετ αυτης εις θλιψιν μεγαλην εαν μη μετανοησωσιν εκ των εργαων αυτων
- ²³ και τα τεκνα αυτης αποκτενω εν θανατω και γνωσονται πασαι αι εκκλησιαι οτι εγω ειμι ο ερευνων νεφρους και καρδιας και δωσω υμιν εκαστω κατα τα εργα υμων
- ²⁴ υμιν δε λεγω και λοιποις τοις εν θυατειροις οσοι ουκ εχουσιν την διδαχην ταυτην και οιτινες ουκ εγνωσαν τα βαθη του σατανα ως λεγουσιν ου βαλω εφ υμας αλλο βαρος
- ²⁵ πλην ο εχετε κρατησατε αχρις ου αν ηξω
- ²⁶ και ο νικων και ο τηρων αχρι τελους τα εργα μου δωσω αυτω εξουσιαν επι των εθνων
- ²⁷ και ποιμανει αυτους εν ραβδω σιδηρα ως τα σκευη τα κεραμικα συντριβεται ως καγω ειληφα παρα του πατρος μου
- ²⁸ και δωσω αυτω τον αστερα τον πρωινον
- ²⁹ ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησαις

Chapter 3

¹και τω αγγελω της εν σαρδεσιν εκκλησιας γραψον ταδε λεγει ο εχων τα επτα πνευματα του θεου και τους επτα αστερας οίδα σου τα εργα οτι το ονομα εχεις οτι ζης και νεκρος ει
²γινου γρηγορων και στηριζον τα λοιπα α μελλει αποθανειν ου γαρ ευρηκα σου τα εργα πεπληρωμενα ενωπιον του θεου
³μνημονευε ουν πως ειληφας και ηκουσας και τηρει και μετανοησον εαν ουν μη γρηγορησης ηξω επι σε ως κλεπτης και ου μη γνωσ ποιαν ωραν ηξω επι σε
⁴εχεις ολιγα ονοματα και εν σαρδεσιν α ουκ εμολυναν τα ιματια αυτων και περιπατησουσιν μετ εμου εν λευκοις οτι αξιοι εισιν
⁵ο νικων ουτος περιβαλειται εν ιματιοις λευκοις και ου μη εξαλειψω το ονομα αυτου εκ της βιβλου της ζωης και εξομολογησομαι το ονομα αυτου ενωπιον του πατρος μου και ενωπιον των αγγελων αυτου
⁶ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησιαις
⁷και τω αγγελω της εν φιλαδελφεια εκκλησιας γραψον ταδε λεγει ο αγιος ο αληθινος ο εχων την κλειδα του δαβιδ ο ανοιγων και ουδεις κλειει και κλειει και ουδεις ανοιγει
⁸οιδα σου τα εργα ιδου δεδωκα ενωπιον σου θυραν ανεωγμενην και ουδεις δυναται κλεισαι αυτην οτι μικραν εχεις δυναμιν και ετηρησας μου τον λογον και ουκ ηρησω το ονομα μου
⁹ιδου διδωμι εκ της συναγωγης του σατανα των λεγοντων εαυτους ιουδαιους ειναι και ουκ εισιν αλλα ψευδονται ιδου ποιησω αυτους ινα ηξωσιν και προσκυνησωσιν ενωπιον των ποδων σου και γνωσιν οτι εγω ηγαπησα σε
¹⁰οτι ετηρησας τον λογον της υπομονης μου καγω σε τηρησω εκ της ωρας του πειρασμου της μελλουσης ερχεσθαι επι της οικουμενης ολης πειρασαι τους κατοικουντας επι της γης
¹¹ιδου ερχομαι ταχυ κρατει ο εχεις ινα μηδεις λαβη τον στεφανον σου
¹²ο νικων ποιησω αυτον στυλον εν τω ναω του θεου μου και εξω ου μη εξελθη ετι και γραψω επ αυτον το ονομα του θεου μου και το ονομα της πολεως του θεου μου της καινης ιερουσαλημ η καταβαινει εκ του ουρανου απο του θεου μου και το ονομα μου το καινον
¹³ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησιαις
¹⁴και τω αγγελω της εκκλησιας λαοδικεων γραψον ταδε λεγει ο αμην ο μαρτυς ο πιστος και αληθινος η αρχη της κτισεως του θεου
¹⁵οιδα σου τα εργα οτι ουτε ψυχρος ει ουτε ζεστος οφελον ψυχρος ειης η ζεστος
¹⁶ουτως οτι χλιαρος ει και ουτε ψυχρος ουτε ζεστος μελλω σε εμεσαι εκ του στοματος μου
¹⁷οτι λεγεις οτι πλουσιος ειμι και πεπλουτηκα και ουδενος χρειαν εχω και ουκ οιδας οτι συ ει ο ταλαιπωρος και ελεεινος και πτωχος και τυφλος και γυμνος
¹⁸συμβουλευω σοι αγορασαι παρ εμου χρυσιον πεπυρωμενον εκ πυρος ινα πλουτησης και ιματια λευκα ινα περιβαλη και μη φανερωθη η αισχυνη της γυμνοτητος σου και κολλουριον εγχρισον τους οφθαλμους σου ινα βλεπης
¹⁹εγω οσους εαν φιλω ελεγχω και παιδευω ζηλωσον ουν και μετανοησον

²⁰ιδου εστηκα επι την θυραν και κρουω εαν τις ακουση της φωνης μου και ανοιξη την θυραν εισελουσομαι προς αυτον και δειπνησω μετ αυτου και αυτος μετ εμου

²¹ο νικων δωσω αυτω καθισαι μετ εμου εν τω θρονω μου ως καγω ενικησα και εκαθισα μετ του πατρος μου εν τω θρονω αυτου

²²ο εχων ους ακουσατω τι το πνευμα λεγει ταις εκκλησαις

Chapter 4

¹μετα ταυτα ειδον και ιδου θυρα ηνεωγμενη εν τω ουρανω και η φωνη η πρωτη ην ηκουσα ως σαλπιγγος λαλουσης μετ εμου λεγουσα αναβα ωδε και δειξω σοι α δει γενεσθαι μετα ταυτα

²και ευθεως εγενομην εν πνευματι και ιδου θρονος εκειτο εν τω ουρανω και επι του θρονου καθημενος

³και ο καθημενος ην ομοιος ορασει λιθω ιασπιδι και σαρδινω και ιρις κυκλοθεν του θρονου ομοια ορασει σμαραγδινω

⁴και κυκλοθεν του θρονου θρονοι εικοσι και τεσσαρες και επι τους θρονους ειδον τους εικοσι και τεσσαρας πρεσβυτερους καθημενους περιβεβλημενους εν ιματιοις λευκοις και εσχον επι τας κεφαλας αυτων στεφανους χρυσους

⁵και εκ του θρονου εκπορευονται αστραπαι και βρονται και φωναί και επτα λαμπαδες πυρος καιομεναι ενωπιον του θρονου αι εισιν τα επτα πνευματα του θεου

⁶και ενωπιον του θρονου θαλασσα υαλινη ομοια κρυσταλλω και εν μεσω του θρονου και κυκλω του θρονου τεσσαρα ζωα γεμοντα οφθαλμων εμπροσθεν και οπισθεν

⁷και το ζων το πρωτον ομοιον λεοντι και το δευτερον ζων ομοιον μοσχω και το τριτον ζων εχον το προσωπον ως ανθρωπος και το τεταρτον ζων ομοιον αετω πετωμενω

⁸και τεσσαρα ζωα εν καθ εαυτο ειχον ανα πτερυγας εξ κυκλοθεν και εσωθεν γεμοντα οφθαλμων και αναπαυσιν ουκ εχουσιν ημερας και νυκτος λεγοντα αγιος αγιος αγιος κυριος ο θεος ο παντοκρατωρ ο ην και ο ων και ο ερχομενος

⁹και οταν δωσουσιν τα ζωα δοξαν και τιμην και ευχαριστιαν τω καθημενω επι του θρονου τω ζωντι εις τους αιωνας των αιωνων

¹⁰πεσουνται οι εικοσι και τεσσαρες πρεσβυτεροι ενωπιον του καθημενου επι του θρονου και προσκυνουσιν τω ζωντι εις τους αιωνας των αιωνων και βαλλουσιν τους στεφανους αυτων ενωπιον του θρονου λεγοντες

¹¹αξιος ει κυριε λαβειν την δοξαν και την τιμην και την δυναμιν οτι συ εκτισας τα παντα και δια το θελημα σου εισιν και εκτισθησαν

Chapter 5

- ¹και ειδον επι την δεξιαν του καθημενου επι του θρονου βιβλιον γεγραμμενον εσωθεν και οπισθεν κατεσφραγισμενον σφραγισιν επτα
- ²και ειδον αγγελον ισχυρον κηρυσσοντα φωνη μεγαλη τις εστιν αξιος ανοιξει το βιβλιον και λυσαι τας σφραγιδας αυτου
- ³και ουδεις ηδυνατο εν τω ουρανω ουδε επι της γης ουδε υποκατω της γης ανοιξει το βιβλιον ουδε βλεπειν αυτο
- ⁴και εγω εκλαιον πολλα οτι ουδεις αξιος ευρεθη ανοιξει και αναγνωσαι το βιβλιον ουτε βλεπειν αυτο
- ⁵και εις εκ των πρεσβυτερων λεγει μοι μη κλαιε ιδου ενικησεν ο λεων ο ων εκ της φυλης ιουδα η ριζα δαβιδ ανοιξει το βιβλιον και λυσαι τας επτα σφραγιδας αυτου
- ⁶και ειδον και ιδου εν μεσω του θρονου και των τεσσαρων ζων και εν μεσω των πρεσβυτερων αρνιον εστηκος ως εσφαγμενον εχον κερατα επτα και οφθαλμους επτα οι εισιν τα επτα του θεου πνευματα τα απεσταλμενα εις πασαν την γην
- ⁷και ηλθεν και ειληφεν το βιβλιον εκ της δεξιας του καθημενου επι του θρονου
- ⁸και οτε ελαβεν το βιβλιον τα τεσσαρα ζωα και οι εικοσιτεσσαρες πρεσβυτεροι επεσον ενωπιον του αρνιου εχοντες εκαστος κιθαρας και φιαλας χρυσας γεμουσας θυμιαματων αι εισιν αι προσευχαι των αγιων
- ⁹και αδουσιν ωδην καινην λεγοντες αξιος ει λαβειν το βιβλιον και ανοιξει τας σφραγιδας αυτου οτι εσφαγης και ηγορασας τω θεω ημας εν τω αιματι σου εκ πασης φυλης και γλωσσης και λαου και εθνους
- ¹⁰και εποιησας ημας τω θεω ημων βασιλεις και ιερεις και βασιλευσομεν επι της γης
- ¹¹και ειδον και ηκουσα φωνην αγγελων πολλων κυκλοθεν του θρονου και των ζων και των πρεσβυτερων και ην ο αριθμος αυτων μυριαδες μυριαδων και χιλιαδες χιλιαδων
- ¹²λεγοντες φωνη μεγαλη αξιον εστιν το αρνιον το εσφαγμενον λαβειν την δυναμιν και πλουτον και σοφιαν και ισχυν και τιμην και δοξαν και ευλογιαν
- ¹³και παν κτισμα ο εστιν εν τω ουρανω και εν τη γη και υποκατω της γης και επι της θαλασσης α εστιν και τα εν αυτοις παντα ηκουσα λεγοντας τω καθημενω επι του θρονου και η ευλογια και η τιμη και η δοξα και το κρατος εις τους αιωνας των αιωνων
- ¹⁴και τα τεσσαρα ζωα ελεγον αμην και οι εικοσιτεσσαρες πρεσβυτεροι επεσαν και προσεκυνησαν ζωντι εις τους αιωνας των αιωνων

Chapter 6

- ¹και ειδον οτε ηνοιξεν το αρνιον μιαν εκ των σφραγιδων και ηκουσα ενος εκ των τεσσαρων ζων λεγοντος ως φωνης βροντης ερχου και βλεπε
- ²και ειδον και ιδου ιππος λευκος και ο καθημενος επ αυτω εχων τοξον και εδοθη αυτω στεφανος και εξηλθεν νικων και ινα νικηση
- ³και οτε ηνοιξεν την δευτεραν σφραγιδα ηκουσα του δευτερου ζου λεγοντος ερχου και βλεπε
- ⁴και εξηλθεν αλλος ιππος πυρρος και τω καθημενω επ αυτω εδοθη αυτω λαβειν την ειρηνην απο της γης και ινα αλληλους σφαξωσιν και εδοθη αυτω μαχαιρα μεγαλη
- ⁵και οτε ηνοιξεν την τριτην σφραγιδα ηκουσα του τριτου ζου λεγοντος ερχου και βλεπε και ειδον και ιδου ιππος μελας και ο καθημενος επ αυτω εχων ζυγον εν τη χειρι αυτου
- ⁶και ηκουσα φωνην εν μεσω των τεσσαρων ζων λεγουσαν χοινιξ σιτου δηναριου και τρεις χοινικες κριθης δηναριου και το ελαιον και τον οινον μη αδικησης
- ⁷και οτε ηνοιξεν την σφραγιδα την τεταρτην ηκουσα φωνην του τεταρτου ζου λεγουσαν ερχου και βλεπε
- ⁸και ειδον και ιδου ιππος χλωρος και ο καθημενος επ αυτω ονομα αυτω ο θανατος και ο αδης ακολουθει μετ αυτου και εδοθη αυτοις εξουσια αποκτειναι επι το τεταρτον της γης εν ρομφαια και εν λιμω και εν θανατω και υπο των θηριων της γης
- ⁹και οτε ηνοιξεν την πεμπτην σφραγιδα ειδον υποκατω του θυσιαστηριου τας ψυχας των εσφαγμενων δια τον λογον του θεου και δια την μαρτυριαν ην ειχον
- ¹⁰και εκραζον φωνη μεγαλη λεγοντες εως ποτε ο δεσποτης ο αγιος και ο αληθινος ου κρινεις και εκδικεις το αιμα ημων απο των κατοικουντων επι της γης
- ¹¹και εδοθησαν εκαστοις στολαι λευκαι και ερρεθη αυτοις ινα αναπαυσωνται ετι χρονον μικρον εως ου πληρωσονται και οι συνδουλοι αυτων και οι αδελφοι αυτων οι μελλοντες αποκτεινεσθαι ως και αυτοι
- ¹²και ειδον οτε ηνοιξεν την σφραγιδα την εκτην και ιδου σεισμος μεγας εγενετο και ο ηλιος εγενετο μελας ως σακκος τριχινος και η σεληνη εγενετο ως αιμα
- ¹³και οι αστερες του ουρανου επεσαν εις την γην ως συκη βαλλει τους ολυνθους αυτης υπο μεγαλου ανεμου σειομενη
- ¹⁴και ουρανος απεχωρισθη ως βιβλιον ειλισσομενον και παν ορος και νησος εκ των τοπων αυτων εκινηθησαν
- ¹⁵και οι βασιλεις της γης και οι μεγαστανες και οι πλουσιοι και οι χιλιαρχοι και οι δυνατοι και πας δουλος και πας ελευθερος εκρυψαν εαυτους εις τα σπηλαια και εις τας πετρας των ορεων
- ¹⁶και λεγουσιν τοις ορεσιν και ταις πετραις πεσετε εφ ημας και κρυψατε ημας απο προσωπου του καθημενου επι του θρονου και απο της οργης του αρνιου
- ¹⁷οτι ηλθεν η ημερα η μεγαλη της οργης αυτου και τις δυναται σταθηναι

Chapter 7

- ¹και μετα ταυτα ειδον τεσσαρας αγγελους εστωτας επι τας τεσσαρας γωνιας της γης κρατουντας τους τεσσαρας ανεμους της γης ινα μη πνεη ανεμος επι της γης μητε επι της θαλασσης μητε επι παν δενδρον
- ²και ειδον αλλον αγγελον αναβαινοντα απο ανατολης ηλιου εχοντα σφραγιδα θεου ζωντος και εκραξεν φωνη μεγαλη τοις τεσσαρσιν αγγελοις οις εδοθη αυτοις αδικησαι την γην και την θαλασσαν
- ³λεγων μη αδικησητε την γην μητε την θαλασσαν μητε τα δενδρα αχρις ου σφραγισωμεν τους δουλους του θεου ημων επι των μετωπων αυτων
- ⁴και ηκουσα τον αριθμον των εσφραγισμενων ρηδ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ πασης φυλης υιων ισραηλ
- ⁵εκ φυλης ιουδα ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης ρουβην ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης γαδ ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι
- ⁶εκ φυλης ασηρ ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης νεφθαλειμ ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης μανασση ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι
- ⁷εκ φυλης συμεων ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης λευι ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης ισαχαρ ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι
- ⁸εκ φυλης ζαβουλων ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης ιωσηφ ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι εκ φυλης βενιαμιν ιβ χιλιαδες εσφραγισμενοι
- ⁹μετα ταυτα ειδον και ιδου οχλος πολυς ον αριθμησαι αυτον ουδεις ηδυνατο εκ παντος εθνους και φυλων και λαων και γλωσσων εστωτες ενωπιον του θρονου και ενωπιον του αρνιου περιβεβλημενοι στολας λευκας και φοινικες εν ταις χερσιν αυτων
- ¹⁰και κραζοντες φωνη μεγαλη λεγοντες η σωτηρια τω θεω ημων τω καθημενω επι του θρονου και τω αρνιω
- ¹¹και παντες οι αγγελοι εστηκεσαν κυκλω του θρονου και των πρεσβυτερων και των τεσσαρων ζωνων και επεσον ενωπιον του θρονου επι προσωπον αυτων και προσεκυνησαν τω θεω
- ¹²λεγοντες αμην η ευλογια και η δοξα και η σοφια και η ευχαριστια και η τιμη και η δυναμις και η ισχυς τω θεω ημων εις τους αιωνας των αιωνων αμην
- ¹³και απεκριθη εις εκ των πρεσβυτερων λεγων μοι ουτοι οι περιβεβλημενοι τας στολας τας λευκας τινες εισιν και ποθεν ηλθον
- ¹⁴και ειρηκα αυτω κυριε συ οιδας και ειπεν μοι ουτοι εισιν οι ερχομενοι εκ της θλιψεως της μεγαλης και επλυναν τας στολας αυτων και ελευκαναν αυτας εν τω αιματι του αρνιου
- ¹⁵δια τουτο εισιν ενωπιον του θρονου του θεου και λατρευουσιν αυτω ημερας και νυκτος εν τω ναω αυτου και ο καθημενος επι του θρονου σκηνωσει επ αυτους
- ¹⁶ου πεινασουσιν ετι ουδε διψησουσιν ετι ουδε μη πεση επ αυτους ο ηλιος ουδε παν καυμα
- ¹⁷οτι το αρνιον το αναμεσον του θρονου ποιμανει αυτους και οδηγησει αυτους επι ζωσας πηγας υδατων και εξαλειψει ο θεος παν δακρυον απο των οφθαλμων αυτων

Chapter 8

- ¹και οτε ηνοιξεν την σφραγιδα την εβδομην εγενετο σιγη εν τω ουρανω ως ημιωριον
- ²και ειδον τους επτα αγγελους οι ενωπιον του θεου εστηκασιν και εδοθησαν αυτοις επτα σαλπιγγες
- ³και αλλος αγγελος ηλθεν και εσταθη επι το θυσιαστηριον εχων λιβανωτον χρυσουν και εδοθη αυτω θυμιαματα πολλα ινα δωση ταις προσευχαις των αγιων παντων επι το θυσιαστηριον το χρυσουν το ενωπιον του θρονου
- ⁴και ανεβη ο καπνος των θυμιαματων ταις προσευχαις των αγιων εκ χειρος του αγγελου ενωπιον του θεου
- ⁵και ειληφεν ο αγγελος το λιβανωτον και εγεμισεν αυτο εκ του πυρος του θυσιαστηριου και εβαλεν εις την γην και εγενοντο φωναι και βρονται και αστραπαι και σεισμος
- ⁶και οι επτα αγγελοι οι εχοντες τας επτα σαλπιγγας ητοιμασαν εαυτους ινα σαλπισωσιν
- ⁷και ο πρωτος αγγελος εσαλπισεν και εγενετο χαλαζα και πυρ μεμιγμενα αιματι και εβληθη εις την γην και το τριτον των δενδρων κατεκαη και πας χορτος χλωρος κατεκαη
- ⁸και ο δευτερος αγγελος εσαλπισεν και ως ορος μεγα πυρι καιομενον εβληθη εις την θαλασσαν και εγενετο το τριτον της θαλασσης αιμα
- ⁹και απεθανεν το τριτον των κτισματων των εν τη θαλασση τα εχοντα ψυχας και το τριτον των πλοιων διεφθαρη
- ¹⁰και ο τριτος αγγελος εσαλπισεν και επεσεν εκ του ουρανου αστηρ μεγας καιομενος ως λαμπας και επεσεν επι το τριτον των ποταμων και επι τας πηγας υδατων
- ¹¹και το ονομα του αστερος λεγεται αφινθος και γινεται το τριτον των υδατων εις αφινθον και πολλοι ανθρωπων απεθανον εκ των υδατων οτι επικρανθησαν
- ¹²και ο τεταρτος αγγελος εσαλπισεν και επληγη το τριτον του ηλιου και το τριτον της σεληνης και το τριτον των αστερων ινα σκοτισθη το τριτον αυτων και η ημερα μη φαινη το τριτον αυτης και η νυξ ομοιως
- ¹³και ειδον και ηκουσα ενος αγγελου πετωμενου εν μεσουρανηματι λεγοντος φωνη μεγαλη ουαι ουαι ουαι τοις κατοικουσιν επι της γης εκ των λοιπων φωνων της σαλπιγγος των τριων αγγελων των μελλοντων σαλπιζειν

Chapter 9

¹και ο πεμπτος αγγελος εσαλπισεν και ειδον αστερα εκ του ουρανου πεπτωκοτα εις την γην και εδοθη αυτω η κλεις του φρεατος της αβυσσου
²και ηνοιξεν το φρεαρ της αβυσσου και ανεβη καπνος εκ του φρεατος ως καπνος καμινου μεγαλης και εσκοτισθη ο ηλιος και ο αηρ εκ του καπνου του φρεατος
³και εκ του καπνου εξηλθον ακριδες εις την γην και εδοθη αυταις εξουσια ως εχουσιν εξουσιαν οι σκορπιοι της γης
⁴και ερρεθη αυταις ινα μη αδικησωσιν τον χορτον της γης ουδε παν χλωρον ουδε παν δενδρον ει μη τους ανθρωπους μονους οιτινες ουκ εχουσιν την σφραγιδα του θεου επι των μετωπων αυτων
⁵και εδοθη αυταις ινα μη αποκτεινωσιν αυτους αλλ ινα βασανισθωσιν μηνας πεντε και ο βασανισμος αυτων ως βασανισμος σκορπιου οταν παιση ανθρωπων
⁶και εν ταις ημεραις εκειναις ζητησουσιν οι ανθρωποι τον θανατον και ουχ ευρησουσιν αυτον και επιθυμησουσιν αποθανειν και φευζεται ο θανατος απ αυτων
⁷και τα ομοιωματα των ακριδων ομοια ιπποις ητοιμασμενοις εις πολεμον και επι τας κεφαλαις αυτων ως στεφανοι ομοιοι χρυσω και τα προσωπα αυτων ως προσωπα ανθρωπων
⁸και ειχον τριχας ως τριχας γυναικων και οι οδοντες αυτων ως λεοντων ησαν
⁹και ειχον θωρακας ως θωρακας σιδηρους και η φωνη των πτερυγων αυτων ως φωνη αρματων ιππων πολλων τρεχοντων εις πολεμον
¹⁰και εχουσιν ουρας ομοιας σκορπιοις και κεντρα ην εν ταις ουραις αυτων και η εξουσια αυτων αδικησαι τους ανθρωπους μηνας πεντε
¹¹και εχουσιν επ αυτων βασιλεα τον αγγελον της αβυσσου ονομα αυτω εβραιστι αβαδδων και εν τη ελληνικη ονομα εχει απολλυων
¹²η ουαι η μια απηλθεν ιδου ερχονται ετι δυο ουαι μετα ταυτα
¹³και ο εκτος αγγελος εσαλπισεν και ηκουσα φωνην μιαν εκ των τεσσαρων κερατων του θυσιαστηριου του χρυσου του ενωπιον του θεου
¹⁴λεγουσαν τω εκτω αγγελω ος ειχε την σαλπιγγα λυσον τους τεσσαρας αγγελους τους δεδεμενους επι τω ποταμω τω μεγαλω ευφρατη
¹⁵και ελυθησαν οι τεσσαρες αγγελοι οι ητοιμασμενοι εις την ωραν και ημεραν και μηνα και ενιαυτον ινα αποκτεινωσιν το τριτον των ανθρωπων
¹⁶και ο αριθμος στρατευματων του ιππικου δυο μυριαδες μυριαδων και ηκουσα τον αριθμον αυτων
¹⁷και ουτως ειδον τους ιππους εν τη ορασει και τους καθημενους επ αυτων εχοντας θωρακας πυρινους και υακινθινους και θειωδεις και αι κεφαλαι των ιππων ως κεφαλαι λεοντων και εκ των στοματων αυτων εκπορευεται πυρ και καπνος και θειον
¹⁸υπο των τριων τουτων απεκτανθησαν το τριτον των ανθρωπων εκ του πυρος και εκ του καπνου και εκ του θειου του εκπορευομενου εκ των στοματων αυτων

¹⁹ η γαρ εξουσια αυτων εν τω στοματι αυτων εστιν και εν ταις ουραις αυτων αι γαρ ουραι αυτων ομοιαι οφεσιν εχουσαι κεφαλας και εν αυταις αδικουσιν

²⁰ και οι λοιποι των ανθρωπων οι ουκ απεκτανθησαν εν ταις πληγαις ταυταις ου μετενοησαν εκ των εργα των χειρων αυτων ινα μη προσκυνησωσιν τα δαιμονια και ειδωλα τα χρυσα και τα αργυρα και τα χαλκα και τα λιθινα και τα ξυλινα α ουτε βλεπειν δυναται ουτε ακουειν ουτε περιπατειν

²¹ και ου μετενοησαν εκ των φονων αυτων ουτε εκ των φαρμακειων αυτων ουτε εκ της πορνειας αυτων ουτε εκ των κλεμματων αυτων

Chapter 10

¹και ειδον αλλον αγγελον ισχυρον καταβαινοντα εκ του ουρανου περιβεβλημενον νεφελην και ιρις επι της κεφαλης και το προσωπον αυτου ως ο ηλιος και οι ποδες αυτου ως στυλοι πυρος

²και ειχεν εν τη χειρι αυτου βιβλαριδιον ανεωγμενον και εθηκεν τον ποδα αυτου τον δεξιον επι την θαλασσαν τον δε ευωνυμον επι την γην

³και εκραξεν φωνη μεγαλη ωσπερ λεων μυκαται και οτε εκραξεν ελαλησαν αι επτα βρονται τας εαυτων φωνας

⁴και οτε ελαλησαν αι επτα βρονται τας φωνας εαυτων εμελλον γραφειν και ηκουσα φωνην εκ του ουρανου λεγουσαν μοι σφραγισον α ελαλησαν αι επτα βρονται και μη ταυτα γραψης

⁵και ο αγγελος ον ειδον εστωτα επι της θαλασσης και επι της γης ηρεν την χειρα αυτου εις τον ουρανον

⁶και ωμοσεν εν τω ζωντι εις τους αιωνας των αιωνων ος εκτισεν τον ουρανον και τα εν αυτω και την γην και τα εν αυτη και την θαλασσαν και τα εν αυτη οτι χρονος ουκ εσται ετι

⁷αλλα εν ταις ημεραις της φωνης του εβδομου αγγελου οταν μελλη σαλπιζειν και τελεσθη το μυστηριον του θεου ως ευηγγελισεν τοις εαυτου δουλοις τοις προφηταις

⁸και η φωνη ην ηκουσα εκ του ουρανου παλιν λαλουσα μετ εμου και λεγουσα υπαγε λαβε το βιβλαριδιον το ηνεωγμενον εν τη χειρι αγγελου του εστωτος επι της θαλασσης και επι της γης

⁹και απηλθον προς τον αγγελον λεγων αυτω δος μοι το βιβλαριδιον και λεγει μοι λαβε και καταφαγε αυτο και πικρανει σου την κοιλιαν αλλ εν τω στοματι σου εσται γλυκυ ως μελι

¹⁰και ελαβον το βιβλαριδιον εκ της χειρος του αγγελου και κατεφαγον αυτο και ην εν τω στοματι μου ως μελι γλυκυ και οτε εφαγον αυτο επικρανθη η κοιλια μου

¹¹και λεγει μοι δει σε παλιν προφητευσαι επι λαοις και εθνεσιν και γλωσσαις και βασιλευσιν πολλοις

Chapter 11

¹και εδοθη μοι καλαμος ομοιος ραβδω και ο αγγελος εισηκει λεγων εγειραι και μετρησον τον ναον του θεου και το θυσιαστηριον και τους προσκυνουντας εν αυτω
²και την αυλην την εξωθεν του ναου εκβαλε εξω και μη αυτην μετρησης οτι εδοθη τοις εθνεσιν και την πολιν την αγιαν πατησουσιν μηνας τεσσαρακοντα δυο
³και δωσω τοις δυσιν μαρτυσιν μου και προφητευσουσιν ημερας χιλιας διακοσιας εξηκοντα περιβεβλημενοι σακκους
⁴ουτοι εισιν αι δυο ελαιαι και αι δυο λυχνιαι αι ενωπιον του θεου της γης εστωσαι
⁵και ει τις αυτους θελη αδικησαι πυρ εκπορευεται εκ του στοματος αυτων και κατεσθιει τους εχθρους αυτων και ει τις αυτους θελη αδικησαι ουτως δει αυτον αποκτανθηναι
⁶ουτοι εχουσιν εξουσιαν κλεισαι τον ουρανον ινα μη βρεχη υετος εν ημεραις αυτων της προφητειας και εξουσιαν εχουσιν επι των υδατων στρεφειν αυτα εις αιμα και παταξαι την γην παση πληγη οσακις εαν θελησωσιν
⁷και οταν τελεσωσιν την μαρτυριαν αυτων το θηριον το αναβαινον εκ της αβυσσου ποιησει πολεμον μετ αυτων και νικησει αυτους και αποκτενει αυτους
⁸και τα πτωματα αυτων επι της πλατειας πολεως της μεγαλης ητις καλειται πνευματικως σοδομα και αιγυπτος οπου και ο κυριος ημων εσταυρωθη
⁹και βλεψουσιν εκ των λαων και φυλων και γλωσσων και εθνων τα πτωματα αυτων ημερας τρεις και ημισυ και τα πτωματα αυτων ουκ αφησουσιν τεθηναι εις μνηματα
¹⁰και οι κατοικουντες επι της γης χαρουσιν επ αυτοις και ευφρανθησονται και δωρα πεμφουσιν αλληλοις οτι ουτοι οι δυο προφηται εβασανισαν τους κατοικουντας επι της γης
¹¹και μετα τας τρεις ημερας και ημισυ πνευμα ζωης εκ του θεου εισηλθεν επ αυτους και εστησαν επι τους ποδας αυτων και φοβος μεγας επεσεν επι τους θεωρουντας αυτους
¹²και ηκουσαν φωνην μεγαλην εκ του ουρανου λεγουσαν αυτοις αναβητε ωδε και ανεβησαν εις τον ουρανον εν τη νεφελη και εθεωρησαν αυτους οι εχθροι αυτων
¹³και εν εκεινη τη ωρα εγενετο σεισμος μεγας και το δεκατον της πολεως επεσεν και απεκτανθησαν εν τω σεισμω ονοματα ανθρωπων χιλιαδες επτα και οι λοιποι εμφοβοι εγενοντο και εδωκαν δοξαν τω θεω του ουρανου
¹⁴η ουαι η δευτερα απηλθεν και ιδου η ουαι η τριτη ερχεται ταχυ
¹⁵και ο εβδομος αγγελος εσαλπισεν και εγενοντο φωναι μεγαλαι εν τω ουρανω λεγουσαι εγενοντο αι βασιλειαι του κοσμου του κυριου ημων και του χριστου αυτου και βασιλευσει εις τους αιωνας των αιωνων
¹⁶και οι εικοσι και τεσσαρες πρεσβυτεροι οι ενωπιον του θεου καθημενοι επι τους θρονους αυτων επεσαν επι τα προσωπα αυτων και προσεκυνησαν τω θεω
¹⁷λεγοντες ευχαριστουμεν σοι κυριε ο θεος ο παντοκρατωρ ο ων και ο ην και ο ερχομενος οτι ειληφας την δυναμιν σου την μεγαλην και εβασιλευσας

¹⁸ και τα εθνη ωργισθησαν και ηλθεν η οργη σου και ο καιρος των νεκρων κριθηναι και δουναι τον μισθον τοις δουλοις σου τοις προφηταις και τοις αγιοις και τοις φοβουμενοις το ονομα σου τοις μικροις και τοις μεγαλοις και διαφθειραι τους διαφθειροντας την γην
¹⁹ και ηνοιγη ο ναος του θεου εν τω ουρανω και ωφθη η κιβωτος της διαθηκης αυτου εν τω ναω αυτου και εγενοντο αστραπαι και φωναι και βρονται και σεισμος και χαλαζα μεγαλη

Chapter 12

¹και σημειον μεγα ωφθη εν τω ουρανω γυνη περιβεβλημενη τον ηλιον και η σεληνη υποκατω των ποδων αυτης και επι της κεφαλης αυτης στεφανος αστερων δωδεκα
²και εν γαστρι εχουσα κραζει ωδινουσα και βασανιζομενη τεκειν
³και ωφθη αλλο σημειον εν τω ουρανω και ιδου δρακων μεγας πυρρος εχων κεφαλας επτα και κερατα δεκα και επι τας κεφαλας αυτου διαδηματα επτα
⁴και η ουρα αυτου συρει το τριτον των αστερων του ουρανου και εβαλεν αυτους εις την γην και ο δρακων εστηκεν ενωπιον της γυναικος της μελλουσης τεκειν ινα οταν τεκη το τεκνον αυτης καταφαγη
⁵και ετεκεν υιον αρρενα ος μελλει ποιμαινειν παντα τα εθνη εν ραβδω σιδηρα και ηρπασθη το τεκνον αυτης προς τον θεον και τον θρονον αυτου
⁶και η γυνη εφυγεν εις την ερημον οπου εχει τοπον ητοιμασμενον απο του θεου ινα εκει τρεφωσιν αυτην ημερας χιλιας διακοσιας εξηκοντα
⁷και εγενετο πολεμος εν τω ουρανω ο μιχαηλ και οι αγγελοι αυτου επολεμησαν κατα του δρακοντος και ο δρακων επολεμησεν και οι αγγελοι αυτου
⁸και ουκ ισχυσαν ουτε τοπος ευρεθη αυτων ετι εν τω ουρανω
⁹και εβληθη ο δρακων ο μεγας ο οφισ ο αρχαιος ο καλουμενος διαβολος και ο σατανας ο πλανων την οικουμενην ολην εβληθη εις την γην και οι αγγελοι αυτου μετ αυτου εβληθησαν
¹⁰και ηκουσα φωνην μεγαλην λεγουσαν εν τω ουρανω αρτι εγενετο η σωτηρια και η δυναμις και η βασιλεια του θεου ημων και η εξουσια του χριστου αυτου οτι κατεβληθη ο κατηγορος των αδελφων ημων ο κατηγορων αυτων ενωπιον του θεου ημων ημερας και νυκτος
¹¹και αυτοι ενικησαν αυτον δια το αιμα του αρνιου και δια τον λογον της μαρτυριας αυτων και ουκ ηγαπησαν την ψυχην αυτων αχρι θανατου
¹²δια τουτο ευφραινεσθε οι ουρανοι και οι εν αυτοις σκηνουντες ουαι τοις κατοικουσιν την γην και την θαλασσαν οτι κατεβη ο διαβολος προς υμας εχων θυμον μεγαν ειδως οτι ολιγον καιρον εχει
¹³και οτε ειδεν ο δρακων οτι εβληθη εις την γην εδιωξεν την γυναικα ητις ετεκεν τον αρρενα
¹⁴και εδοθησαν τη γυναικι δυο πτερυγες του αετου του μεγαλου ινα πετηται εις την ερημον εις τον τοπον αυτης οπου τρεφεται εκει καιρον και καιρους και ημισυ καιρου απο προσωπου του οφεως
¹⁵και εβαλεν ο οφισ οπισω της γυναικος εκ του στοματος αυτου υδωρ ως ποταμον ινα ταυτην ποταμοφορητον ποιηση
¹⁶και εβοηθησεν η γη τη γυναικι και ηνοιξεν η γη το στομα αυτης και κατεπιεν τον ποταμον ον εβαλεν ο δρακων εκ του στοματος αυτου

¹⁷ και ωργισθη ο δρακων επι τη γυναικι και απηλθεν ποιησαι πολεμον μετα των λοιπων του σπερματος αυτης των τηρουντων τας εντολας του θεου και εχοντων την μαρτυριαν του ιησου χριστου

Chapter 13

¹και εσταθην επι την αμμον της θαλασσης και ειδον εκ της θαλασσης θηριον αναβαινον εχον κεφαλας επτα και κερατα δεκα και επι των κερατων αυτου δεκα διαδηματα και επι τας κεφαλας αυτου ονομα βλασφημιας

²και το θηριον ο ειδον ην ομοιον παρδαλει και οι ποδες αυτου ως αρκτου και το στομα αυτου ως στομα λεοντος και εδωκεν αυτω ο δρακων την δυναμιν αυτου και τον θρονον αυτου και εξουσιαν μεγαλην

³και ειδον μιαν των κεφαλων αυτου ως εσφαγμενην εις θανατον και η πληγη του θανατου αυτου εθεραπευθη και εθαυμασεν ολη η γη οπισω του θηριου

⁴και προσεκυνησαν τον δρακοντα ος εδωκεν εξουσιαν τω θηριω και προσεκυνησαν το θηριον λεγοντες τις ομοιος τω θηριω τις δυναται πολεμησαι μετ αυτου

⁵και εδοθη αυτω στομα λαλουν μεγαλα και βλασφημιας και εδοθη αυτω εξουσια ποιησαι μηνας τεσσαρακοντα δυο

⁶και ηνοιξεν το στομα αυτου εις βλασφημιαν προς τον θεον βλασφημησαι το ονομα αυτου και την σκηνην αυτου και τους εν τω ουρανω σκηνουντας

⁷και εδοθη αυτω πολεμον ποιησαι μετα των αγιων και νικησαι αυτους και εδοθη αυτω εξουσια επι πασαν φυλην και γλωσσαν και εθνος

⁸και προσκυνησουσιν αυτω παντες οι κατοικουντες επι της γης ων ου γεγραπται τα ονοματα εν τη βιβλω της ζωης του αρνιου εσφαγμενου απο καταβολης κοσμου

⁹ει τις εχει ους ακουσατω

¹⁰ει τις αιχμαλωσιαν συναγει εις αιχμαλωσιαν υπαγει ει τις εν μαχαιρα αποκτενει δει αυτον εν μαχαιρα αποκτανθηται ωδε εστιν η υπομονη και η πιστις των αγιων

¹¹και ειδον αλλο θηριον αναβαινον εκ της γης και ειχεν κερατα δυο ομοια αρνιω και ελαλει ως δρακων

¹²και την εξουσιαν του πρωτου θηριου πασαν ποιει ενωπιον αυτου και ποιει την γην και τους κατοικουντας εν αυτη ινα προσκυνησωσιν το θηριον το πρωτον ου εθεραπευθη η πληγη του θανατου αυτου

¹³και ποιει σημεια μεγαλα ινα και πυρ ποιη καταβαινειν εκ του ουρανου εις την γην ενωπιον των ανθρωπων

¹⁴και πλανα τους κατοικουντας επι της γης δια τα σημεια α εδοθη αυτω ποιησαι ενωπιον του θηριου λεγων τοις κατοικουσιν επι της γης ποιησαι εικονα τω θηριω ο εχει την πληγην της μαχαιρας και εζησεν

¹⁵και εδοθη αυτω δουναι πνευμα τη εικονι του θηριου ινα και λαληση η εικων του θηριου και ποιηση οσοι αν μη προσκυνησωσιν την εικονα του θηριου ινα αποκτανθωσιν

¹⁶και ποιει παντας τους μικρους και τους μεγαλους και τους πλουσιους και τους πτωχους και τους ελευθερους και τους δουλους ινα δωση αυτοις χαραγμα επι της χειρος αυτων της δεξιας η επι των μετωπων αυτων

¹⁷ και ινα μη τις δυναται αγορασαι η πωλησαι ει μη ο εχων το χαραγμα η το ονομα του θηριου η τον αριθμον του ονοματος αυτου

¹⁸ ωδε η σοφια εστιν ο εχων τον νουν ψηφισατω τον αριθμον του θηριου αριθμος γαρ ανθρωπου εστιν και ο αριθμος αυτου χξς

Chapter 14

¹και ειδον και ιδου αρνιον εστηκος επι το ορος σιων και μετ αυτου εκατον τεσσαρακοντα τεσσαρες χιλιαδες εχουσαι το ονομα του πατρος αυτου γεγραμμενον επι των μετωπων αυτων

²και ηκουσα φωνην εκ του ουρανου ως φωνην υδατων πολλων και ως φωνην βροντης μεγαλης και φωνην ηκουσα κιθαρωδων κιθαριζοντων εν ταις κιθαραις αυτων

³και αδουσιν ως ωδην καινην ενωπιον του θρονου και ενωπιον των τεσσαρων ζων και των πρεσβυτερων και ουδεις ηδυνατο μαθειν την ωδην ει μη αι εκατον τεσσαρακοντα τεσσαρες χιλιαδες οι ηγορασμενοι απο της γης

⁴ουτοι εισιν οι μετα γυναικων ουκ εμολυνθησαν παρθενοι γαρ εισιν ουτοι εισιν οι ακολουθουντες τω αρνιω οπου αν υπαγη ουτοι ηγορασθησαν απο των ανθρωπων απαρχη τω θεω και τω αρνιω

⁵και εν τω στοματι αυτων ουχ ευρεθη δολος αμωμοι γαρ εισιν ενωπιον του θρονου του θεου

⁶και ειδον αλλον αγγελον πετωμενον εν μεσουρανηματι εχοντα ευαγγελιον αιωνιον ευαγγελισαι τους κατοικουντας επι της γης και παν εθνος και φυλην και γλωσσαν και λαον

⁷λεγοντα εν φωνη μεγαλη φοβηθητε τον θεον και δοτε αυτω δοξαν οτι ηλθεν η ωρα της κρισεως αυτου και προσκυνησατε τω ποιησαντι τον ουρανον και την γην και την θαλασσαν και πηγας υδατων

⁸και αλλος αγγελος ηκολουθησεν λεγων επεσεν επεσεν βαβυλων η πολις η μεγαλη οτι εκ του οινου του θυμου της πορνειας αυτης πεποτικεν παντα εθνη

⁹και τριτος αγγελος ηκολουθησεν αυτοις λεγων εν φωνη μεγαλη ει τις το θηριον προσκυνει και την εικονα αυτου και λαμβανει χαραγμα επι του μετωπου αυτου η επι την χειρα αυτου

¹⁰και αυτος πιεται εκ του οινου του θυμου του θεου του κεκερασμενου ακρατου εν τω ποτηριω της οργης αυτου και βασανισθησεται εν πυρι και θειω ενωπιον των αγιων αγγελων και ενωπιον του αρνιου

¹¹και ο καπνος του βασανισμου αυτων αναβαινει εις αιωνας αιωνων και ουκ εχουσιν αναπαυσιν ημερας και νυκτος οι προσκυνουντες το θηριον και την εικονα αυτου και ει τις λαμβανει το χαραγμα του ονοματος αυτου

¹²ωδε υπομονη των αγιων εστιν ωδε οι τηρουντες τας εντολας του θεου και την πιστιν ιησου

¹³και ηκουσα φωνης εκ του ουρανου λεγουσης μοι γραψον μακαριοι οι νεκροι οι εν κυριω αποθνησκοντες απαρτι ναι λεγει το πνευμα ινα αναπαυσωνται εκ των κοπων αυτων τα δε εργα αυτων ακολουθει μετ αυτων

¹⁴και ειδον και ιδου νεφελη λευκη και επι την νεφελην καθημενος ομοιος υιω ανθρωπου εχων επι της κεφαλης αυτου στεφανον χρυσουν και εν τη χειρι αυτου δρεπανον οξυ

¹⁵ και αλλος αγγελος εξηλθεν εκ του ναου κραζων εν μεγαλη φωνη τω καθημενω επι της νεφελης πεμψον το δρεπανον σου και θερισον οτι ηλθεν σοι η ωρα του θερισαι οτι εξηρανθη ο θερισμος της γης

¹⁶ και εβαλεν ο καθημενος επι την νεφελην το δρεπανον αυτου επι την γην και εθερισθη η γη

¹⁷ και αλλος αγγελος εξηλθεν εκ του ναου του εν τω ουρανω εχων και αυτος δρεπανον οξυ

¹⁸ και αλλος αγγελος εξηλθεν εκ του θυσιαστηριου εχων εξουσιαν επι του πυρος και εφωνησεν κραυγη μεγαλη τω εχοντι το δρεπανον το οξυ λεγων πεμψον σου το δρεπανον το οξυ και τρυγησον τους βοτρυας της αμπελου της γης οτι ηκμασαν αι σταφυλαι αυτης

¹⁹ και εβαλεν ο αγγελος το δρεπανον αυτου εις την γην και ετρυγησεν την αμπελον της γης και εβαλεν εις την ληνον του θυμου του θεου την μεγαλην

²⁰ και επατηθη η ληνος εξω της πολεως και εξηλθεν αιμα εκ της ληνου αχρι των χαλινων των ιππων απο σταδιων χιλιων εξακοσιων

Chapter 15

¹και ειδον αλλο σημειον εν τω ουρανω μεγα και θαυμαστον αγγελους επτα εχοντας πληγας επτα τας εσχατας οτι εν αυταις ετελεσθη ο θυμος του θεου
²και ειδον ως θαλασσαν υαλινην μεμιγμενην πυρι και τους νικωντας εκ του θηριου και εκ της εικονος αυτου και εκ του χαραγματος αυτου εκ του αριθμου του ονοματος αυτου εστωτας επι την θαλασσαν την υαλινην εχοντας κιθαρρας του θεου
³και αδουσιν την ωδην μωσεως του δουλου του θεου και την ωδην του αρνιου λεγοντες μεγαλα και θαυμαστα τα εργα σου κυριε ο θεος ο παντοκρατωρ δικαιαι και αληθιναι αι οδοι σου ο βασιλευς των αγιων
⁴τις ου μη φοβηθη σε κυριε και δοξαση το ονομα σου οτι μονος οσιος οτι παντα τα εθνη ηξουσιν και προσκυνησουσιν ενωπιον σου οτι τα δικαιωματα σου εφανερωθησαν
⁵και μετα ταυτα ειδον και ιδου ηνοιγη ο ναος της σκηνης του μαρτυριου εν τω ουρανω
⁶και εξηλθον οι επτα αγγελοι εχοντες τας επτα πληγας εκ του ναου ενδεδυμενοι λινον καθαρων και λαμπρον και περιεζωσμενοι περι τα στηθη ζωνας χρυσας
⁷και εν εκ των τεσσαρων ζωνων εδωκεν τοις επτα αγγελοις επτα φιαλας χρυσας γεμουσας του θυμου του θεου του ζωντος εις τους αιωνας των αιωνων
⁸και εγεμισθη ο ναος καπνου εκ της δοξης του θεου και εκ της δυναμεως αυτου και ουδεις ηδυνατο εισελθειν εις τον ναον αχρι τελεσθωσιν αι επτα πληγαι των επτα αγγελων

Chapter 16

¹ και ηκουσα φωνης μεγαλης εκ του ναου λεγουσης τοις επτα αγγελοις υπαγετε και εκχεατε τας φιαλας του θυμου του θεου εις την γην

² και απηλθεν ο πρωτος και εξεχεεν την φιαλην αυτου επι την γην και εγενετο ελκος κακον και πονηρον εις τους ανθρωπους τους εχοντας το χαραγμα του θηριου και τους τη εικονι αυτου προσκυνουντας

³ και ο δευτερος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου εις την θαλασσαν και εγενετο αιμα ως νεκρου και πασα ψυχη ζωσα απεθανεν εν τη θαλασση

⁴ και ο τριτος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου εις τους ποταμους και εις τας πηγας των υδατων και εγενετο αιμα

⁵ και ηκουσα του αγγελου των υδατων λεγοντος δικαιος κυριε ει ο ων και ο ην και ο εσομενος οτι ταυτα εκρινας

⁶ οτι αιμα αγιων και προφητων εξεχεαν και αιμα αυτοις εδωκας πιειν αξιοι γαρ εισιν

⁷ και ηκουσα αλλου εκ του θυσιαστηριου λεγοντος ναι κυριε ο θεος ο παντοκρατωρ αληθιναι και δικαιαι αι κρισεις σου

⁸ και ο τεταρτος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου επι τον ηλιον και εδοθη αυτω καυματισαι τους ανθρωπους εν πυρι

⁹ και εκαυματισθησαν οι ανθρωποι καυμα μεγα και εβλασφημησαν το ονομα του θεου του εχοντος εξουσιαν επι τας πληγας ταυτας και ου μετενοησαν δουναι αυτω δοξαν

¹⁰ και ο πεμπτος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου επι τον θρονον του θηριου και εγενετο η βασιλεια αυτου εσκοτωμενη και εμασσωντο τας γλωσσας αυτων εκ του πονου

¹¹ και εβλασφημησαν τον θεον του ουρανου εκ των πονων αυτων και εκ των ελκων αυτων και ου μετενοησαν εκ των εργαων αυτων

¹² και ο εκτος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου επι τον ποταμον τον μεγαν τον ευφρατην και εξηρανθη το υδωρ αυτου ινα ετοιμασθη η οδος των βασιλεων των απο ανατολων ηλιου

¹³ και ειδον εκ του στοματος του δρακοντος και εκ του στοματος του θηριου και εκ του στοματος του ψευδοπροφητου πνευματα τρια ακαθαρτα ομοια βατραχοις

¹⁴ εισιν γαρ πνευματα δαιμονων ποιουντα σημεια α εκπορευεται επι τους βασιλεις της γης και της οικουμενης ολης συναγαγειν αυτους εις τον πολεμον της ημερας εκεινης της μεγαλης του θεου του παντοκρατορος

¹⁵ ιδου ερχομαι ως κλεπτης μακαριος ο γρηγορων και τηρων τα ιματια αυτου ινα μη γυμνος περιπατη και βλεπωσιν την ασχημοσυνην αυτου

¹⁶ και συνηγαγεν αυτους εις τον τοπον τον καλουμενον εβραιστι αρμαγεδδων

¹⁷ και ο εβδομος αγγελος εξεχεεν την φιαλην αυτου εις τον αερα και εξηλθεν φωνη μεγαλη απο του ναου του ουρανου απο του θρονου λεγουσα γεγονεν

¹⁸ και εγενοντο φωναι και βρονται και αστραπαι και σεισμος εγενετο μεγας οιος ουκ εγενετο αφ ου οι ανθρωποι εγενοντο επι της γης τηλικουτος σεισμος ουτως μεγας

¹⁹ και εγενετο η πολις η μεγαλη εις τρια μερη και αι πολεις των εθνων επεσον και βαβυλων η μεγαλη εμνησθη ενωπιον του θεου δουναι αυτη το ποτηριον του οινου του θυμου της οργης αυτου

²⁰ και πασα νησος εφυγεν και ορη ουχ ευρεθησαν

²¹ και χαλαζα μεγαλη ως ταλαντιαια καταβαινει εκ του ουρανου επι τους ανθρωπους και εβλασφημησαν οι ανθρωποι τον θεον εκ της πληγης της χαλαζης οτι μεγαλη εστιν η πληγη αυτης σφοδρα

Chapter 17

¹και ηλθεν εις εκ των επτα αγγελων των εχοντων τας επτα φιαλας και ελαλησεν μετ εμου λεγων μοι δευρο δειξω σοι το κριμα της πορνης της μεγαλης της καθημενης επι των υδατων των πολλων

²μεθ ης επορνευσαν οι βασιλεις της γης και εμεθυσθησαν εκ του οινου της πορνειας αυτης οι κατοικουντες την γην

³και απηνεγκεν με εις ερημον εν πνευματι και ειδον γυναικα καθημενην επι θηριον κοκκινον γεμον ονοματων βλασφημιας εχον κεφαλας επτα και κερατα δεκα

⁴και η γυνη ην περιβεβλημενη πορφυρα και κοκκινω και κεχρυσωμενη χρυσω και λιθω τιμιω και μαργαριταις εχουσα χρυσουν ποτηριον εν τη χειρι αυτης γεμον βδελυγματων και ακαθαρτητος πορνειας αυτης

⁵και επι το μετωπον αυτης ονομα γεγραμμενον μυστηριον βαβυλων η μεγαλη η μητηρ των πορνων και των βδελυγματων της γης

⁶και ειδον την γυναικα μεθουσαν εκ του αιματος των αγιων και εκ του αιματος των μαρτυρων ιησου και εθαυμασα ιδων αυτην θαυμα μεγα

⁷και ειπεν μοι ο αγγελος διατι εθαυμασας εγω σοι ερω το μυστηριον της γυναικος και του θηριου του βασταζοντος αυτην του εχοντος τας επτα κεφαλας και τα δεκα κερατα

⁸το θηριον ο ειδες ην και ουκ εστιν και μελλει αναβαινειν εκ της αβυσσου και εις απωλειαν υπαγειν και θαυμασονται οι κατοικουντες επι της γης ων ου γεγραπται τα ονοματα επι το βιβλιον της ζωης απο καταβολης κοσμου βλεποντες το θηριον ο τι ην και ουκ εστιν και περ εστιν

⁹ωδε ο νους ο εχων σοφιαν αι επτα κεφαλαι ορη εισιν επτα οπου η γυνη καθηται επ αυτων

¹⁰και βασιλεις επτα εισιν οι πεντε επεσαν και ο εις εστιν ο αλλος ουπω ηλθεν και οταν ελθη ολιγον αυτον δει μιναι

¹¹και το θηριον ο ην και ουκ εστιν και αυτος ογδοος εστιν και εκ των επτα εστιν και εις απωλειαν υπαγει

¹²και τα δεκα κερατα α ειδες δεκα βασιλεις εισιν οιτινες βασιλειαν ουπω ελαβον αλλ εξουσιαν ως βασιλεις μιαν ωραν λαμβανουσιν μετα του θηριου

¹³ουτοι μιαν γνωμην εχουσιν και την δυναμιν και την εξουσιαν εαυτων τω θηριω διαδιδωσουσιν

¹⁴ουτοι μετα του αρνιου πολεμησουσιν και το αρνιον νικησει αυτους οτι κυριος κυριων εστιν και βασιλευς βασιλεων και οι μετ αυτου κλητοι και εκλεκτοι και πιστοι

¹⁵και λεγει μοι τα υδατα α ειδες ου η πορνη καθηται λαοι και οχλοι εισιν και εθνη και γλωσσαι

¹⁶και τα δεκα κερατα α ειδες επι το θηριον ουτοι μισησουσιν την πορνην και ηρημωμενην ποιησουσιν αυτην και γυμνην και τας σαρκας αυτης φαγονται και αυτην κατακαουσουσιν εν πυρι

¹⁷ ο γαρ θεος εδωκεν εις τας καρδιας αυτων ποιησαι την γνωμην αυτου και ποιησαι μιαν γνωμην και δουναι την βασιλειαν αυτων τω θηριω αχρι τελεσθη τα ρηματα του θεου

¹⁸ και η γυνη ην ειδες εστιν η πολις η μεγαλη η εχουσα βασιλειαν επι των βασιλεων της γης

Chapter 18

¹και μετα ταυτα ειδον αλλον αγγελον καταβαινοντα εκ του ουρανου εχοντα εξουσιαν μεγαλην και η γη εφωτισθη εκ της δοξης αυτου
²και εκραξεν εν ισχυι φωνη μεγαλη λεγων επεσεν επεσεν βαβυλων η μεγαλη και εγενετο κατοικητηριον δαιμονων και φυλακη παντος πνευματος ακαθαρτου και φυλακη παντος ορνεου ακαθαρτου και μεμισημενου
³οτι εκ του οινου του θυμου της πορνειας αυτης πεπωκεν παντα τα εθνη και οι βασιλεις της γης μετ αυτης επορνευσαν και οι εμποροι της γης εκ της δυναμεως του στρηνους αυτης επλουτησαν
⁴και ηκουσα αλλην φωνην εκ του ουρανου λεγουσαν εξελθετε εξ αυτης ο λαος μου ινα μη συγκοινωνησητε ταις αμαρτιας αυτης και ινα μη λαβητε εκ των πληγων αυτης
⁵οτι εκολληθησαν αυτης αι αμαρτιαι αχρι του ουρανου και εμνημονευσεν ο θεος τα αδικηματα αυτης
⁶αποδοτε αυτη ως και αυτη απεδωκεν υμιν και διπλωσατε αυτη διπλα κατα τα εργα αυτης εν τω ποτηριω ω εκερασεν κερασατε αυτη διπλου
⁷οσα εδοξασεν εαυτην και εστρηνιασεν τοσουτον δοτε αυτη βασανισμον και πενθος οτι εν τη καρδια αυτης λεγει καθημαι βασιλισσα και χηρα ουκ ειμι και πενθος ου μη ιδω
⁸δια τουτο εν μια ημερα ηξουσιν αι πληgai αυτης θανατος και πενθος και λιμος και εν πυρι κατακαυθησεται οτι ισχυρος κυριος ο θεος ο κρινων αυτην
⁹και κλαουσονται αυτην και κοψονται επ αυτη οι βασιλεις της γης οι μετ αυτης πορνευσαντες και στρηνιασαντες οταν βλεπωσιν τον καπνον της πυρωσεως αυτης
¹⁰απο μακροθεν εστηκοτες δια τον φοβον του βασανισμου αυτης λεγοντες ουαι ουαι η πολις η μεγαλη βαβυλων η πολις η ισχυρα οτι εν μια ωρα ηλθεν η κρισις σου
¹¹και οι εμποροι της γης κλαιουσιν και πενθουσιν επ αυτη οτι τον γομον αυτων ουδεις αγοραζει ουκετι
¹²γομον χρυσου και αργυρου και λιθου τιμιου και μαργαριτου και βυσσου και πορφυρας και σηρικου και κοκκινου και παν ξυλον θυινον και παν σκευος ελεφαντινον και παν σκευος εκ ξυλου τιμιωτατου και χαλκου και σιδηρου και μαρμαρου
¹³και κιναμωμον και θυμιαματα και μυρον και λιβανον και οινον και ελαιον και σεμιδαλιν και σιτον και κτηνη και προβατα και ιππων και ρεδων και σωματων και ψυχας ανθρωπων
¹⁴και η οπωρα της επιθυμιας της ψυχης σου απηλθεν απο σου και παντα τα λιπαρα και τα λαμπρα απηλθεν απο σου και ουκετι ου μη ευρησης αυτα
¹⁵οι εμποροι τουτων οι πλουτησαντες απ αυτης απο μακροθεν στησονται δια τον φοβον του βασανισμου αυτης κλαιοντες και πενθουντες
¹⁶και λεγοντες ουαι ουαι η πολις η μεγαλη η περιβεβλημενη βυσσινον και πορφυρου και κοκκινον και κεχρυσωμενη εν χρυσω και λιθω τιμιω και μαργαριταις
¹⁷οτι μια ωρα ηρημωθη ο τοσουτος πλουτος και πας κυβερνητης και πας επι των πλοιων ο ομιλος και ναυται και οσοι την θαλασσαν εργαζονται απο μακροθεν εστησαν

¹⁸ και εκραζον ορωντες τον καπνον της πυρωσεως αυτης λεγοντες τις ομοια τη πολει τη μεγαλη

¹⁹ και εβαλον χουν επι τας κεφαλας αυτων και εκραζον κλαιοντες και πενθουντες λεγοντες ουαι ουαι η πολις η μεγαλη εν η επλουτησαν παντες οι εχοντες πλοια εν τη θαλασση εκ της τιμιοτητος αυτης οτι μια ωρα ηρημωθη

²⁰ ευφραινου επ αυτην ουρανε και οι αγιοι αποστολοι και οι προφηται οτι εκρινεν ο θεος το κριμα υμων εξ αυτης

²¹ και ηρεν εις αγγελος ισχυρος λιθον ως μυλον μεγαν και εβαλεν εις την θαλασσαν λεγων ουτως ορμηματι βληθησεται βαβυλων η μεγαλη πολις και ου μη ευρεθη ετι

²² και φωνη κιθαρωδων και μουσικων και αυλητων και σαλπιστων ου μη ακουσθη εν σοι ετι και πας τεχνιτης πασης τεχνης ου μη ευρεθη εν σοι ετι και φωνη μυλου ου μη ακουσθη εν σοι ετι

²³ και φως λυχνου ου μη φανη εν σοι ετι και φωνη νυμφιου και νυμφης ου μη ακουσθη εν σοι ετι οτι οι εμποροι σου ησαν οι μεγαιστανες της γης οτι εν τη φαρμακεια σου επλανηθησαν παντα τα εθνη

²⁴ και εν αυτη αιμα προφητων και αγιων ευρεθη και παντων των εσφαγμενων επι της γης

Chapter 19

¹και μετα ταυτα ηκουσα φωνην οχλου πολλου μεγαλην εν τω ουρανω λεγοντος αλληλουια η σωτηρια και η δοξα και η τιμη και η δυναμις κυριω τω θεω ημων
²οτι αληθιναι και δικαιαι αι κρισεις αυτου οτι εκρινεν την πορνην την μεγαλην ητις εφθειρεν την γην εν τη πορνεια αυτης και εξεδικησεν το αιμα των δουλων αυτου εκ της χειρος αυτης
³και δευτερον ειρηκαν αλληλουια και ο καπνος αυτης αναβαινει εις τους αιωνας των αιωνων
⁴και επεσαν οι πρεσβυτεροι οι εικοσι και τεσσαρες και τα τεσσαρα ζωα και προσεκυνησαν τω θεω τω καθημενω επι του θρονου λεγοντες αμην αλληλουια
⁵και φωνη εκ του θρονου εξηλθεν λεγουσα αινειτε τον θεον ημων παντες οι δουλοι αυτου και οι φοβουμενοι αυτον και οι μικροι και οι μεγαλοι
⁶και ηκουσα ως φωνην οχλου πολλου και ως φωνην υδατων πολλων και ως φωνην βροντων ισχυρων λεγοντας αλληλουια οτι εβασιλευσεν κυριος ο θεος ο παντοκρατωρ
⁷χαιρωμεν και αγαλλιωμεθα και δωμεν την δοξαν αυτω οτι ηλθεν ο γαμος του αρνιου και η γυνη αυτου ητοιμασεν εαυτην
⁸και εδοθη αυτη ινα περιβαληται βυσσινον καθαρων και λαμπρων το γαρ βυσσινον τα δικαιωματα εστιν των αγιων
⁹και λεγει μοι γραψον μακαριοι οι εις το δειπνον του γαμου του αρνιου κεκλημενοι και λεγει μοι ουτοι οι λογοι αληθινοι εισιν του θεου
¹⁰και επεσον εμπροσθεν των ποδων αυτου προσκυνησαι αυτω και λεγει μοι ορα μη συνδουλος σου ειμι και των αδελφων σου των εχοντων την μαρτυριαν του ιησου τω θεω προσκυνησον η γαρ μαρτυρια του ιησου εστιν το πνευμα της προφητειας
¹¹και ειδον τον ουρανον ανεωγμενον και ιδου ιππος λευκος και ο καθημενος επ αυτον καλουμενος πιστος και αληθινος και εν δικαιοσυνη κρινει και πολεμει
¹²οι δε οφθαλμοι αυτου ως φλοξ πυρος και επι την κεφαλην αυτου διαδηματα πολλα εχων ονομα γεγραμμενον ο ουδεις οιδεν ει μη αυτος
¹³και περιβεβλημενος ιματιον βεβαμμενον αιματι και καλειται το ονομα αυτου ο λογος του θεου
¹⁴και τα στρατευματα τα εν τω ουρανω ηκολουθει αυτω εφ ιπποις λευκοις ενδεδυμενοι βυσσινον λευκον και καθαρων
¹⁵και εκ του στοματος αυτου εκπορευεται ρομφαια οξεια ινα εν αυτη πατασση τα εθνη και αυτος ποιμανει αυτους εν ραβδω σιδηρα και αυτος πατει την ληνον του οινου του θυμου και της οργης του θεου του παντοκρατορος
¹⁶και εχει επι το ιματιον και επι τον μηρον αυτου ονομα γεγραμμενον βασιλευς βασιλεων και κυριος κυριων

¹⁷ και ειδον ενα αγγελον εστωτα εν τω ηλιω και εκραξεν φωνη μεγαλη λεγων πασιν τοις ορνεοις τοις πετωμενοις εν μεσουρανηματι δευτε και συναγεσθε εις το δειπνον του μεγαλου θεου

¹⁸ ινα φαγητε σαρκας βασιλεων και σαρκας χιλιαρχων και σαρκας ισχυρων και σαρκας ιππων και των καθημενων επ αυτων και σαρκας παντων ελευθερων τε και δουλων και μικρων και μεγαλων

¹⁹ και ειδον το θηριον και τους βασιλεις της γης και τα στρατευματα αυτων συνηγμενα ποιησαι πολεμον μετα του καθημενου επι του ιππου και μετα του στρατευματος αυτου

²⁰ και επιασθη το θηριον και μετα τουτου ο ψευδοπροφητης ο ποιησας τα σημεια ενωπιον αυτου εν οις επλανησεν τους λαβοντας το χαραγμα του θηριου και τους προσκυνουντας τη εικονι αυτου ζωντες εβληθησαν οι δυο εις την λιμνην του πυρος την καιομενην εν τω θειω

²¹ και οι λοιποι απεκτανθησαν εν τη ρομφαια του καθημενου επι του ιππου τη εκπορευομενη εκ του στοματος αυτου και παντα τα ορνεα εχορτασθησαν εκ των σαρκων αυτων

Chapter 20

- ¹και ειδον αγγελον καταβαινοντα εκ του ουρανου εχοντα την κλειδα της αβυσσου και αλυσιν μεγαλην επι την χειρα αυτου
- ²και εκρατησεν τον δρακοντα τον οφιν τον αρχαιον ος εστιν διαβολος και σατανας και εδησεν αυτον χιλια ετη
- ³και εβαλεν αυτον εις την αβυσσον και εκλεισεν αυτον και εσφραγισεν επανω αυτου ινα μη πλανηση τα εθνη ετι αχρι τελεσθη τα χιλια ετη και μετα ταυτα δει αυτον λυθηναι μικρον χρονον
- ⁴και ειδον θρονους και εκαθισαν επ αυτους και κριμα εδοθη αυτοις και τας ψυχας των πεπελεκισμενων δια την μαρτυριαν ιησου και δια τον λογον του θεου και οιτινες ου προσεκυνησαν τω θηριω ουτε την εικονα αυτου και ουκ ελαβον το χαραγμα επι το μετωπον αυτων και επι την χειρα αυτων και εζησαν και εβασιλευσαν μετα χριστου χιλια ετη
- ⁵οι δε λοιποι των νεκρων ουκ ανεζησαν εως τελεσθη τα χιλια ετη αυτη η αναστασις η πρωτη
- ⁶μακαριος και αγιος ο εχων μερος εν τη αναστασει τη πρωτη επι τουτων ο θανατος ο δευτερος ουκ εχει εξουσιαν αλλ εσονται ιερεις του θεου και του χριστου και βασιλευσουσιν μετ αυτου χιλια ετη
- ⁷και οταν τελεσθη τα χιλια ετη λυθησεται ο σατανας εκ της φυλακης αυτου
- ⁸και εξελευσεται πλανησαι τα εθνη τα εν ταις τεσσαρσιν γωνιαις της γης τον γωγ και τον μαγωγ συναγαγειν αυτους εις πολεμον ων ο αριθμος ως η αμμος της θαλασσης
- ⁹και ανεβησαν επι το πλατος της γης και εκυκλωσαν την παρεμβολην των αγιων και την πολιν την ηγαπημενην και κατεβη πυρ απο του θεου εκ του ουρανου και κατεφαγεν αυτους
- ¹⁰και ο διαβολος ο πλανων αυτους εβληθη εις την λιμνην του πυρος και θειου οπου το θηριον και ο ψευδοπροφητης και βασανισθησονται ημερας και νυκτος εις τους αιωνας των αιωνων
- ¹¹και ειδον θρονον λευκον μεγαν και τον καθημενον επ αυτου ου απο προσωπου εφυγεν η γη και ο ουρανος και τοπος ουχ ευρεθη αυτοις
- ¹²και ειδον τους νεκρους μικρους και μεγαλους εστωτας ενωπιον του θεου και βιβλια ηνεωχθησαν και βιβλιον αλλο ηνεωχθη ο εστιν της ζωης και εκριθησαν οι νεκροι εκ των γεγραμμενων εν τοις βιβλιοις κατα τα εργα αυτων
- ¹³και εδωκεν η θαλασσα τους εν αυτη νεκρους και ο θανατος και ο αδης εδωκαν τους εν αυτοις νεκρους και εκριθησαν εκαστος κατα τα εργα αυτων
- ¹⁴και ο θανατος και ο αδης εβληθησαν εις την λιμνην του πυρος ουτος εστιν ο δευτερος θανατος
- ¹⁵και ει τις ουχ ευρεθη εν τη βιβλω της ζωης γεγραμμενος εβληθη εις την λιμνην του πυρος

Chapter 21

¹και ειδον ουρανον καινον και γην καινην ο γαρ πρωτος ουρανος και η πρωτη γη παρηλθεν και η θαλασσα ουκ εστιν ετι
²και εγω ιωαννης ειδον την πολιν την αγιαν ιερουσαλημ καινην καταβαινουσαν απο του θεου εκ του ουρανου ητοιμασμενην ως νυμφην κεκοσμημενην τω ανδρι αυτης
³και ηκουσα φωνης μεγαλης εκ του ουρανου λεγουσης ιδου η σκηνη του θεου μετα των ανθρωπων και σκηνωσει μετ αυτων και αυτοι λαοι αυτου εσονται και αυτος ο θεος εσται μετ αυτων θεος αυτων
⁴και εξαλειψει ο θεος παν δακρυον απο των οφθαλμων αυτων και ο θανατος ουκ εσται ετι ουτε πενθος ουτε κραυγη ουτε πονος ουκ εσται ετι οτι τα πρωτα απηλθον
⁵και ειπεν ο καθημενος επι του θρονου ιδου καινα παντα ποιω και λεγει μοι γραψον οτι ουτοι οι λογοι αληθινοι και πιστοι εισιν
⁶και ειπεν μοι γεγονεν εγω ειμι το α και το ω η αρχη και το τελος εγω τω διψωντι δωσω εκ της πηγης του υδατος της ζωης δωρεαν
⁷ο νικων κληρονομησει παντα και εσομαι αυτω θεος και αυτος εσται μοι ο υιος
⁸δειλοις δε και απιστοις και εβδελυγμενοις και φονευσιν και πορνοις και φαρμακευσιν και ειδωλολατραις και πασιν τοις ψευδεσιν το μερος αυτων εν τη λιμνη τη καιομενη πυρι και θειω ο εστιν δευτερος θανατος
⁹και ηλθεν προς με εις των επτα αγγελων των εχοντων τας επτα φιαλας τας γεμουσας των επτα πληγων των εσχατων και ελαλησεν μετ εμου λεγων δευρο δειξω σοι την νυμφην του αρνιου την γυναικα
¹⁰και απηνεγκεν με εν πνευματι επ ορος μεγα και υψηλον και εδειξεν μοι την πολιν την μεγαλην την αγιαν ιερουσαλημ καταβαινουσαν εκ του ουρανου απο του θεου
¹¹εχουσαν την δοξαν του θεου και ο φωστηρ αυτης ομοιος λιθω τιμιωτατω ως λιθω ιασπιδι κρυσταλλιζοντι
¹²εχουσαν τε τειχος μεγα και υψηλον εχουσαν πυλωνας δωδεκα και επι τοις πυλωσιν αγγελους δωδεκα και ονοματα επιγεγραμμενα α εστιν των δωδεκα φυλων των υιων ισραηλ
¹³απ ανατολης πυλωνες τρεις απο βορρα πυλωνες τρεις απο νοτου πυλωνες τρεις και απο δυσμων πυλωνες τρεις
¹⁴και το τειχος της πολεως εχον θεμελιους δωδεκα και εν αυτοις ονοματα των δωδεκα αποστολων του αρνιου
¹⁵και ο λαλων μετ εμου ειχεν καλαμον χρυσουν ινα μετρηση την πολιν και τους πυλωνας αυτης και το τειχος αυτης
¹⁶και η πολις τετραγωνος κειται και το μηκος αυτης τοσουτον εστιν οσον και το πλατος και εμετρησεν την πολιν τω καλαμω επι σταδιων δωδεκα χιλιαδων το μηκος και το πλατος και το υψος αυτης ισα εστιν
¹⁷και εμετρησεν το τειχος αυτης εκατον τεσσαρακοντα τεσσαρων πηχων μετρον ανθρωπου ο εστιν αγγελου

- ¹⁸ και ην η ενδομησις του τειχους αυτης ιασπις και η πολις χρυσιον καθαρων ομοια υαλων καθαρων
- ¹⁹ και οι θεμελιοι του τειχους της πολεως παντι λιθω τιμιω κεκοσμημενοι ο θεμελιος ο πρωτος ιασπις ο δευτερος σαπφειρος ο τριτος χαλκηδων ο τεταρτος σμαραγδος
- ²⁰ ο πεμπτος σαρδονυξ ο εκτος σαρδιος ο εβδομος χρυσολιθος ο ογδοος βηρυλλος ο εννατος τοπαζιον ο δεκατος χρυσοπρασος ο ενδεκατος υακινθος ο δωδεκατος αμεθυστος
- ²¹ και οι δωδεκα πυλωνες δωδεκα μαργαριται ανα εις εκαστος των πυλωνων ην εξ ενος μαργαριτου και η πλατεια της πολεως χρυσιον καθαρων ωσ υαλος διαφανης
- ²² και ναον ουκ ειδον εν αυτη ο γαρ κυριος ο θεος ο παντοκρατωρ ναος αυτης εστιν και το αρνιον
- ²³ και η πολις ου χρειαν εχει του ηλιου ουδε της σεληνης ινα φαινωσιν εν αυτη η γαρ δοξα του θεου εφωτισεν αυτην και ο λυχνος αυτης το αρνιον
- ²⁴ και τα εθνη των σωζομενων εν τω φωτι αυτης περιπατησουσιν και οι βασιλεις της γης φερουσιν την δοξαν και την τιμην αυτων εις αυτην
- ²⁵ και οι πυλωνες αυτης ου μη κλεισθωσιν ημερας νυξ γαρ ουκ εσται εκει
- ²⁶ και οισουσιν την δοξαν και την τιμην των εθνων εις αυτην
- ²⁷ και ου μη εισελθη εις αυτην παν κοινουν και ποιουν βδελυγμα και ψευδος ει μη οι γεγραμμενοι εν τω βιβλιω της ζωης του αρνιου

Chapter 22

¹και εδειξεν μοι καθαρων ποταμον υδατος ζωης λαμπρον ως κρυσταλλον εκπορευομενον εκ του θρονου του θεου και του αρνιου
²εν μεσω της πλατειας αυτης και του ποταμου εντευθεν και εντευθεν ξυλον ζωης ποιουν καρπους δωδεκα κατα μηνα ενα εκαστον αποδιδουν τον καρπον αυτου και τα φυλλα του ξυλου εις θεραπειαν των εθνων
³και παν καταναθεμα ουκ εσται ετι και ο θρονος του θεου και του αρνιου εν αυτη εσται και οι δουλοι αυτου λατρευουσιν αυτω
⁴και οψονται το προσωπον αυτου και το ονομα αυτου επι των μετωπων αυτων
⁵και νυξ ουκ εσται εκει και χρειαν ουκ εχουσιν λυχνου και φωτος ηλιου οτι κυριος ο θεος φωτιζει αυτους και βασιλευσουσιν εις τους αιωνας των αιωνων
⁶και ειπεν μοι ουτοι οι λογοι πιστοι και αληθινοι και κυριος ο θεος των αγιων προφητων απεστειλεν τον αγγελον αυτου δειξαι τοις δουλοις αυτου α δει γενεσθαι εν ταχει
⁷ιδου ερχομαι ταχυ μακαριος ο τηρων τους λογους της προφητειας του βιβλιου τουτου
⁸και εγω ιωαννης ο βλεπων ταυτα και ακουων και οτε ηκουσα και εβλεψα επεσα προσκυνησαι εμπροσθεν των ποδων του αγγελου του δεικνυοντος μοι ταυτα
⁹και λεγει μοι ορα μη συνδουλος σου γαρ ειμι και των αδελφων σου των προφητων και των τηρουντων τους λογους του βιβλιου τουτου τω θεω προσκυνησον
¹⁰και λεγει μοι μη σφραγισης τους λογους της προφητειας του βιβλιου τουτου οτι ο καιρος εγγυς εστιν
¹¹ο αδικων αδικησατω ετι και ο ρυπων ρυπωσατω ετι και ο δικαιος δικαιωθητω ετι και ο αγιος αγιασθητω ετι
¹²και ιδου ερχομαι ταχυ και ο μισθος μου μετ εμου αποδουναι εκαστω ως το εργον αυτου εσται
¹³εγω ειμι το α και το ω αρχη και τελος ο πρωτος και ο εσχατος
¹⁴μακαριοι οι ποιουντες τας εντολας αυτου ινα εσται η εξουσια αυτων επι το ξυλον της ζωης και τοις πυλωσιν εισελθωσιν εις την πολιν
¹⁵εξω δε οι κυνες και οι φαρμακοι και οι πορνοι και οι φονεις και οι ειδωλολατραι και πας ο φιλων και ποιων ψευδος
¹⁶εγω ιησους επεμψα τον αγγελον μου μαρτυρησαι υμιν ταυτα επι ταις εκκλησιαις εγω ειμι η ριζα και το γενοσ του δαβιδ ο αστηρ ο λαμπρος και ορθρινος
¹⁷και το πνευμα και η νυμφη λεγουσιν ελθε και ο ακουων ειπατω ελθε και ο διψων ελθετω και ο θελων λαμβανετω το υδωρ ζωης δωρεαν
¹⁸συμμαρτυρομαι γαρ παντι ακουοντι τους λογους της προφητειας του βιβλιου τουτου εαν τις επιτιθη προς ταυτα επιθησει ο θεος επ αυτον τας πληγας τας γεγραμμενας εν βιβλιω τουτω

¹⁹ και εαν τις αφαιρη απο των λογων βιβλου της προφητειας ταυτης αφαιρησει ο θεος το μερος αυτου απο βιβλου της ζωης και εκ της πολεως της αγιας και των γεγραμμενων εν βιβλιω τουτω

²⁰ λεγει ο μαρτυρων ταυτα ναι ερχομαι ταχυ αμην ναι ερχου κυριε ιησου

²¹ η χαρις του κυριου ημων ιησου χριστου μετα παντων υμων αμην